मुंबई ब्रांच.—
गोंडल रसशाळा औषधाश्रम
४१६, कालबादेवी रोड, मुंबई २.

राजकोट शाखा —
गोंडल रसशाळा औषधाश्रम
स। लाखाजी रोड, राजकोट.

हेड ओफीस और कारखाना
रसशाला औषधाश्रम गोंडल—सौराष्ट्र.
(शुद्ध आयुर्वेद औषधोंकी प्रमुख फार्मसी)

मध्य प्रदेश के
सोल डीस्ट्रीब्युटर
नथमल हकमीचंद्र कांकरीया,
बालाघाट

राजस्थान के
सोल डीस्ट्रीब्युटर
राजस्थान आयुर्वेद सदन
(राज,) उदयपुर.

रसशाळा प्रेस-गोंडल

रसोद्धारतंत्रनो
(रस संहिता)

अम्ल पित्त १०१

अरुचि १०४

वमन–छर्दि–उलटी १०५

शरीर का दाह शोष तृषा १०८

मूर्च्छा १११

मद्य (दारु) से होनेवाले दर्द ११३

नासुर नाडीव्रण १८२

भगंदर १८४

विद्रधि अन्तर्विद्रधि बहि विद्रधि केन्सर १८८

गंडमाला गलगंड कंठमाल १९२

वाल्मिक राफी १९५

हृदयरोग और फेफडेंका रोग १९६ ,,

नासा रोग नाकके रोग ३३६

कर्णरोग कानके दर्द ३४०

मूढगर्भ ३७०

योनिरोग जननेन्द्रिय रोग ३७२

गर्भ प्रतिबंध ३८०

स्तनपाक ,,

स्त्रीके दूध धावणका विकार ,,

अ

फ

ब

भ

म

क्ष

रसोद्धार तंत्र

रोगानुक्रमणीका



ग्रन्थ संकेत

इस ग्रन्थमें प्रमाण रूपमें आधारभूत स्वीकार किये हुये ग्रन्थ

भैषज्य रत्नावलि
भावप्रकाश
बृहन्निघंटु रत्नाकर
गदनिग्रह
रसरत्न समुच्चय
रसेन्द्रसार संग्रह
शार्ङ्गधर संहिता
योग रत्नाकर
योग तरंगिणी
वृन्द माधव
चक्रसेन
रसप्रकाश सुधाकर
रसेन्द्र चिंतामणि
रसकामधेनु
रसरत्नाकर
(नित्यनाथसिद्ध)
चरक
सुश्रुत
अष्टांग हृदय
रसराज सुंदर
आयुर्वेद प्रकाश
नाकरत्त
वैद्य जीवन

रसोद्धार तंत्र

प्रस्तावना

आयुर्वेद यह बडा विशाळ शास्त्र है। प्राचीन ऋषि मुनिओने अपने सैकडों वर्षोंका आयुष्य व्यतीत कर प्रजा कल्याणके लिये किया हुआ अनुभव ग्रन्थस्थ करते रहे। हमारे सामने आयुर्वेदकि संहिता ग्रन्थोंसे लेकर छोटे बडे जो सैकडो प्राचीन ग्रन्थ है इनमें सैकडो हस्तलिखित पुस्तकोके रूपमे प्रग्थित है। इनके आधारसे अनेक ग्रन्थ प्रसिद्ध हुये हैं और अनेक अप्रसिद्ध भी है।

आचार्य श्री चरणतीर्थ महाराज (पूर्वाश्रम रामवैद्य जी का शास्त्री) विरचित रसोद्धार तंत्र अथवा रस संहिता यह ग्रन्थ मूल संस्कृतमे गद्यपद्यात्मक ग्रन्थ है। उसका चिकित्साखंड (उपचार पद्धति) गुजरातीमें २० आवृतिमें आजतक ५१००० एकावन हजार पुस्तकें प्रसिद्ध हुई है। आचार्य श्री के ५० सालके शास्त्रीय औषधोंके अनुभवका यह ग्रन्थ निचोड, सत्व है। इस ग्रन्थसे हजारो वैद्य गृहस्थ, व्यापारी और प्रत्येक वर्गके प्रजाजन लाभ उठा रहे है। इस ग्रन्थकी मांग हिंदी अंग्रेजी मराठी भाषाभाषी प्रजाकी ओरसे कई वर्षोंसे होती रही है परंतु छापनेकी अनुकूलता न होनेके कारण अभीतक अन्य भाषामें यह ग्रन्थ प्रसिद्ध न कर सकें, आज हिंदी भाषाभाषी प्रजाके सामने यह ग्रन्थ रखते हुये प्रसन्नता होती है।

इस ग्रन्थकी रचना प्रत्येक प्रजाजन, आयुर्वेदके अभ्यासी, वैद्य चिकित्सक सब कोई रोगके कारण चिन्ह निदान पथ्यापथ्य और शास्त्रीय सिद्ध औषधोसे चिकित्सा कर सके और वैद्येतर वर्ग घरेलु उपचार मारवार सरलतासे कर सके इस प्रकारकी रचना की है। वैसे ही यह ग्रन्थ आयुर्वेदके छात्र और अध्यापकोंके लिये अभ्यासक्रममें और संदर्भ ग्रंथके नाते भी परम उपयोगी है।

इस ग्रन्थमें दिये हुये शास्त्रीय औषधोंकी कृतियोंमें आचार्यश्रीको जो जो अनुभव मिला है तदनुसार घटक द्रव्य उनके प्रमाण और क्रियामे जो परिवर्तन किया है यह ५० सालके अनुभवका परिणाम है।

इस ग्रन्थमें हिंदी भाषामें कहीं भाषा और द्रव्योंके हिन्दी नाममें अपूर्णता मालूम हो उसका संशोधन कर पाठक और चिकित्सक इस ग्रंथका उपयोग करें ऐसी प्रार्थना है।

इस ग्रन्थके अनुवादकि मांग अंग्रेजी मराठी संस्कृत आदि भाषामें आ रही है। भगवतीकी इच्छा और कृपासे जहां तक बन सके प्रसिद्ध करनेकी चेष्टा करेंगे।

इसका उपयोग करनेवाले विद्वान पाठक अभ्यापक अभ्यासी आदिके जो अपना अनुभव हो, लिखेगे तो उपकृत होंगे और दूसरी आवृत्तिमें इसका उपयोग हो सकेगा ।

इस ग्रन्थको कई राज्योने आयुर्वेदिक कोलेज पाठशाळा आदिमें अभ्यासक्रममे रखनेकी इच्छा प्रदर्शित की है उनको धन्यवाद देते है ।

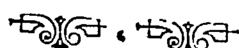
इसकी मांग अधिक होनेसे यह आवृत्ति अल्प समयमे समाप्त होनेका संभव है और इसका पुनर्मुद्रण तत्काल हम न कर सके यह स्वाभाविक है इस लिये यदि कोइ पब्लीशर इस ग्रन्थको प्रसिद्ध करना चाहे तो हम उचित नियमोंसे सम्मति दे सकते है ।

गोंडल

११-६-१९६४

स. २०२० ज्येष्ठ शुक्ल २

रसशाळा औषधाश्रम



॥ रसोद्धार तंत्रं ॥

(रस संहिता)

चिकित्सा खण्डः ॥

अध्याय १

दारिद्र्यगदध्वंसी गौरीशंभू सदा वन्दे ॥
गलद्गुरुशुण्डाहस्तानतजननीतातमग्ररेशं ॥१॥
सकलविकाराणां यद् ज्ञेयो राजा ज्वरः ख्यातः ॥
तस्माज्ज्वराधिकारं प्रथमं वक्ष्ये हिताय वैद्यानां॥२॥

सब रोगोंमे ताप ज्वर यह रोगोंका राजा है । इस लिये ज्वराधिकार पहिले कहते हैं।

ज्वरकी उत्पत्ति

ज्वर ताप होने पर भी यह देवकोटीका एक सत्व है। भूत, प्रेत, पिशाच यक्ष राक्षस आदि सत्त्वोंकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न प्रकारसे कही है इस प्रकार ज्वरकी उत्पत्ति शास्त्रमें वर्णित है। दक्ष प्रजापतिके यज्ञमें सती अपने पति शंकरका अपमान देख कर जल मरी तब कोपायमान हुए रुद्रके भयंकर श्वाससे ज्वर उत्पन्न हुआ है। वह प्राणी मात्रको कष्ट देता है। जन्मके और मृत्युके समय प्राणि मात्रके शरीरमे ज्वर अवश्य घुसता है । तापको देव और मनुष्यके सिवाय और कोई सहन कर सकता नहि। हाथी जैसा बडा प्राणी ज्वर आनेसे कभी नहि बच सकता उसका मृत्यु होता है। कहना चाहिये कि प्रजाके लिये हि ज्वर उत्पन्न हुआ है।

८ प्रकारके ज्वरका भेद

१ वात ज्वर । २ पित्तज्वर । ३ कफज्वर ४ वातपित्तज्वर । ५ वातकफज्वर ६ पित्तकफज्वर । ७ त्रिदोषज्वर । ८ अभिघातादिसे हुआ ज्वर ।

१३ सन्निपात ज्वरके भेद

१ वातप्रधान पित्तकफहीन । २ पित्तप्रधान कफ वातहीन । ३ कफप्रधान पित्तवातहीन । ४ वात पित्तप्रधान कफहीन ५ वातकफप्रधान पित्तहीन । ६ पित्त-कफप्रधान वायुहीन । ७ वायुप्रधान पित्तमध्यम कफहीन । ८ वातप्रधान कफमध्यम पित्तहीन । ९ पित्तप्रधान वायुमध्यम कफहीन १० पित्तप्रधान कफमध्यम वायुहीन।

११ कफप्रधान वायुमध्यम पित्तहीन। १२ कफप्रधान पित्तमध्यम कफहीन। १३ तीन ही दोष प्रधान तीनोंका प्रकोप।

आगन्तुक ज्वर–अभिघात चोट शस्त्रास्त्रका घात चोट प्रहार या ऐसे कारणोंसे आनेवाला ताप भिन्न माना गया है फिर भी इस ज्वरका अन्तर्भाव उपरके ज्वरमें होता है। अर्थात् कार्य कारण परत्वे ऊपरके किसी ज्वरका रुप यह आगन्तुक ज्वर ले लेता है और उसमे एक दो तीन दोषोंका न्यूनाधिक्य भावसे प्रकोप होता है।

ताप ज्वर बुखार

ज्वरकी उष्णता–शरीरकी उष्णता ९७–½ से ९९ की होती है। ९९ से १०२ तक सामान्य ताप, १०२ से १०५ तकका अधिक ताप और १०५ के उपरका भयंकर ताप माना जाता है। ९७–१/२ से घटकर ९६ की शरीरकी उष्णता हो तो यह शरीरमें अपेक्षित उष्णतासे कम मानी जाती है। और ९६ से नीचेकी गरमी यह शरीरको हानि पहुंचानेवाला शित्य कहा जाता है। कई थर्मामीटर ऐसे भी होते है या कई उपचारक रखते है कि वह २–३ डीग्री गरमी ज्यादा बताती है। ताकि रोगी भयविव्हल बन जाता है। और उपचार करनेवालेके आधीन होकर उपचार प्रारंभ करा देता है और १–२ डोझके पीछे सच्ची गरमी मापक यन्त्रसे रोगीको ज्वर उतार देनेका यश प्राप्त कर धन भी प्राप्त करता है। वैद्य लोग तो नाडीकी गतिसे हि तापकी उष्णता नाप लेते हैं।

विद्वान अनुभवी वैद्योंको ज्वर नापनेके यन्त्रकी आवश्यकता नहि रहती। यह नाडी गतिसे ज्वरकी उष्णताका प्रमाण जान लेता है। और ज्वर में जिस प्रकारका दोष प्रकोप हो जानकर और रोगीका ज्वर चिंताजनक हो तो भी कम कह कर आश्वासन देकर चिकित्सा करता है।

कारण चिन्ह

ऋतु बदलनेसे, हवा बिगडनेसे, सूक्ष्म जंतुसे, उदभिज प्राणिज विषसे आघात, चोट, थाप, फुफ्फुस हृदय दिमागका दाह आदि कारणोंसे ज्वर ताप आता है। आहार विहारकी अनियमिततासे दूषित वात पित्त कफ दोष उदरमे आमाशयमें जाकर कोठेके अग्निको बाहर निकालनेकी चेष्टा करता है तब ताप आता है। पसीनेका अवरोध, देह इन्द्रियोंका और मनका सताप इसको ज्वर कहते हैं।

शरीर सुस्त झुका हुआ लगे किसी भी वस्तु पर प्रीति न हो, मुखमुद्रा निस्तेज बने, मुखका स्वाद बिगड जाय, आंखोसे पानीका स्राव हो, ठंडी चीज

पवन या सूर्यके तापकी इच्छा और द्वेष हो, बगासें-जृम्भा आलस्य शरीरका भारीपन, रोमांच, खुराकपर अभाव, आखोंमें अंधेरा, शीतसे शरीरका कांप इत्यादि चिन्ह ज्वर आनेके पूर्व होते हैं। वातप्रकोप जन्य बुखारमें उपरके चिन्हके साथ जमाई ज्यादा आवे। पित्तप्रकोप हो तो उपरके चिन्हों के साथ आखोंकी जलन ज्यादा हो। कफप्रकोपमें उपरके चिन्हके अतिरिक्त अन्न पर अभाव वमनकी इच्छा उत्क्लेद मोळ उबका ज्यादा हो।

साधा बुखार तरुणज्वर नवज्वर

कारण-खुराक ज्यादा खानेसे, अजीर्णसे, ठंडी, सूर्यका ताप, वर्षाके कारण, जागरणसे, ठंडे पानीसे स्नान करनेसे, शरबत आइस्क्रीम बरफ चीवडा बजारका खुराक वेजीटेबल घी आदि अधिक खानेसे, नाटक सीनेमा देखनेके छंदसे, निद्रा अनियमित होनेसे, धूपमें फिरनेसे, शरीर और मनका अधिक परिश्रम करनेसे, ऋतुके परिवर्तनसे बुखार आ जाता है। शरीरका ढीलापन, अन्न पर अभाव, पेटमें भार, मस्तक पीडा, शरीर भारी, पीठकी पीडा, आंखोकी जलन, नाडी गति १ मिनटमें १२० से १३० तक होना, तृषा, शीत होकर शरीर कांपना, मुखशोष, दस्त पिशाबकी अल्पता रुकावट आदि चिन्ह मालूम होते है। कभी उत्क्लेद उबकाके साथ वमन भी होता है। और रोगी बकवाद भी करता है।

ताप उतरनेके लक्षण

पसीना हो, शरीर हलका लघु लगे मुखमें पाक हो, ओठका पाक, छींके आवे, अन्न पर रुचि हो तृषा कम हो मस्तकका भारीपन मिटे कमजोरी दखे।

सामान्य शुश्रूषा

रोगीको स्वच्छ बिछानेपे स्वच्छ मकानमें चारपायी पर शयन कराना रोगीके खंडमे पवनका थोडा आना जाना हो लेकिन उसके शरीर पर पवन न लगे, रोगीकी पास ज्यादा मनुष्योंका बैठने बातेंचितें करने न देना। तृषा ज्यादा लगे तो पर्पटादि हीम पिलाना।

पर्पटी तोला १, धनिया तोला १, द्राक्षा तोला ४, साथ कूट पीस कर उसमे ३०-४० तोला कुएका या ताजा जल छोड कर रांग लपेटे बर्तनमें या मिट्टीके कुलडेमें भर छोडना।

तृषा लगे तो यह पानी कपडछान कर २-४ तोला पिलाना। ताप ज्यादा तपे और उष्णता १०२ से ज्यादा हो तो थोडा नमक डाला हुआ ठंडे पानीके पोते सिर कपालमें धरना। या नदीका सेवाल कपडेके बीचमें रख कर सिर पर

धरना। या बरफकी थैली सिर पर या पेट पर फिराना। रोगीका पेट देखना। बोझा भार हो मलमूत्रका अवरोध हो तो विश्वनाथ हरणकी गोली २ से ६ तक शहदसे देकर उपर गर्मजल या चाय कोफी पिलाना। एक दो दस्त होकर पेटका भार कम होगा प्रारंभमें तरुण ज्वरमें लंघन कराना। जहांतक रोगीका बुखार उतरे और खानेकी इच्छा न हो जब तक कुछ भी खानेको न देना।

दो दिनके पीछे भांप वाष्प लेना। एक आधा घडा पानी भरकर उसमें नीमके पत्ते नकाइन नीमके पत्ते कीडामारी लता करंज आकके पान २० वीस तोले भरकर औटाना। घडेके मुखपर कुछ बर्तन ढकना। पीछे रोगीको खुली चार पाई या खुरशीमें बैठाकर उपर कुछ कपडा ढाक कर घडेका मुंह खोल देना और लकडीसे पानी हिलाते रहना ताकि वाष्प निकल कर रोगीके अंग प्रत्यंगमें फैलकर पसीना छूटेगा। और द्वारसे ज्वर का अंश निकल जायगा। शरीरकी छोटी नसोमें रोमरोममें ज्वरघ्न कडवी वाष्प घुस ताप अटक जायगा। यह सारे शरीरमें इन्जेकशनका काम करेगा। रोगीको ढके हुए कपडेसे घबराहट हो तो बीच बीच में मुखको बाहर निकाल दे रहना लेकिन गलेके नीचे के सारे बदन में वाष्प की क्रिया होती रहे वैसे करना। १५-२० मिनीट के बाद कपडा अलग कर रोगीका शरीर टुवालसे पोंछ कर कोरा कर डालना।

उपवास

रोगीको बुखार आते ही उसके पेटकी दशा कि जांच करना। पेटमें वादी अजीर्ण मलसंचय आदि होना चाहिये बिना पेट बिगडे ताप आता ही नही। ताप आने ह अन्न और दूध बंद कर देना और उपवास प्रारंभ करना। यदि रोगी बुद्धिमान हो और बुखार आते ही खाना बंध कर दे तो ताप चढता नहीं और रुक जाता है। नम्कुन उसकी जीभकी परीक्षा न कराएं ही उसको चार पांची मे पडनेका समय आता है। रोगी अपनेको भूख लगनेको कहे जब ही कुछ मुंग के पानी जैसा प्रवाही देना। पेटमें आमांश या और बिगाड जबतक होगा उपवासमें दरदीको हानि नही पहुचेगी वरना जैसे जैसे उपवास आगे बढेगा ताप ऊतरने लगेगा और रोगी हुशियारी में आने लगेगा। कई मूर्ख लोग रोगीको इच्छा न होने पर और पेटमें भूख न हो फिर भी हठात खुराक दिया करते हैं। इससे बुखार उतरने के बजाय बढता है। डाक्तर लोग भी बुखार वालेको दूध पतला खुराक, साबुदानेकी कांजी इत्यादि देनेकी सिफारिश करते हैं इससे रोगी मरण नजीक जाता है और आयुष्य बलसे ही बच जाता है। कई रोगियों को हमने ३ से १२ दिन तक उपवास कराकर अच्छे कर दिये हैं जिन्हें

डाक्तरोंने छोड़ दिये थे। रोगीके पेटकी जाँचकर आवश्यकतानुसार उपवास कराना पेटे में आमका अंश और बिगाड नष्ट होनेसे रोगीको भूख लगेगी। पीछे प्रवाही खुराक देना यह ठीक होगा। बुखार निकल जाने के पीछे १०-१५ दिन के बाद सब प्रकारका खुराक देना।

लंघन करनेसे शरीर हल्का पडता है, अधो वायु पिशाब दस्तका छुटासा होता है, छाती का भार हलका होता है अच्छे डकार आते हैं गला और मुख स्वच्छ होता है आँभकी मलिनता दूर होती हैं, सुस्ती और बेचेनी मिटती है पसीना आता है, खुराक खाने की इच्छा होती है भूख और तृषा खुलती है।

क्षयका ताप भय क्रोध कामाधता शोक और श्रमका ताप, सगर्भाका ताप, सूर्य की लू लगने से चढा हुआ ताप, सूतिकाका ज्वर असे ताप में लघन कराना नहीं चाहिये। हदसे ज्यादा लघन करनेसे हानि पहुचती है। आवश्यकता से अधिक लंघनसे सांधो के दर्द, आलस्य, खांसी, गला और मुखका शोष अरुचि, तृषा, आंखोंकी कमजोरी, कानों में कुछ बधिरता, मंदता भ्रम आंखोंमें अंधेरा और शरीर और बलकी हानि होते है, इसलिये बुद्धिपूर्वक आवश्यकतानुसार रोगीको लघन कराना उचित है।

बुखार के साथ वमन और अतिसारके चिन्ह देखने में आवे तो औषधसे उसे रुकना नहीं लेकिन अधोवेग कम हो अैसे उपचार करना। बुखार के रोगीको दस्त तो क्वचित् ही होता है। बहुधा दस्त बंध हो जाता है जिस लिये ताप उतारने के औषधमें बहुधा दस्त लाने वाले घटक द्रव्य होते हैं जैसे कि विश्वताप हरण आदि दिये जाते हैं। यदि वमन आदि होते हो तो पर्पटादि हिम देना। पर्पट[1] धनिया, धालीद्राक्ष और नीमकी छाल समभागसे कूटकर रखना। पांच तोला में ४० तोला पानी डाल कर मिट्टीके बरतन में रख छोडना चार घटाके बाद रोगीको थोडा थोडा पिलाना। रोगीको दस्त बंध हो और ज्वरका वेग अधिक हो, पेटमें मल जमा हो तो दोसे छ गोली विश्वताप हरणकी देनेसे दस्त होकर बिगाड निकल जाता है और बुखारका वेग कम हो जाता हैं। पीछे महाज्वरांकुश, त्रिभुवनकीर्ति, त्रिपुरभैरव आदि महासुदर्शन चूर्ण के कवाथ के साथ देने से ताप रुक जाता है।

वातज्वर वायुका ताप

कारण—वातल पदार्थ, वाल, वटाना, चोभडा और गरिष्ठ पदार्थ, चोकना ठंडा रातवासी पदार्थ, बाजारु मीठाइ आदि खानेसे और वर्षाकी ऋतु में

---

१ इसे गुजराती में खडसलिया पीतपापडा कहते हैं।

यह ताप आता है। शरीर में कम्प गला और होठका शोष, मलका अवरोध, शिर, पेट, कमर और, पीठमे दरद, तापका अनियमित चढना उतरना, मुखका बेस्वाद, जंभाइ आना, पेटमें आफरा अजीर्ण रोमांच इत्यादि चिह्न होते हैं।

उपचार—३ से ६ गोली त्रिश्वताप हरणको सुदर्शन के साथ देना और दो दिनके पीछे त्रिभुवन कीर्ति २ से ३ गोली दो वख्त पानीसे देना।

शुंठ्यादि क्वाथ.-कचूरा, हलदी, दारूहलदी देवदार, सोंठ, पींपल काली मिरच, सत्यानाशीके मूल, इलायची गिलोय, कुटकी, पर्पट, जवासा काकडाशिंगी, चिरायता और दशमूल, सम भाग कूटकर रखना। १ से २ तोला कवाथ या फांट पिलानेसे वातज्वर और दूसरे ताव ऊतरते हैं या अटकते हैं।

पित्त ज्वर गरमीका ताप

कारण खट्टे, खारे, गरम, तीखे दाह और क्षोभ करनेवाले पदार्थ खानेसे विगडा हुआ पित्त जठरमे [1] आकर खुराक में मिल रसको दूषित करता है। इससे पित्त गरमीका ताप आता है।

चिह्न-- सारे वदनमें दाह, तृषा, निद्रानाश, मुख कडवा, मूर्छा, कडवा खट्टा वमन, चक्कर, भ्रम, बकवाद, पतले दस्त, पसीना, मलमूत्र और आंखोमें पीलापन, नाडीकी गति १२० से १३० तक, तापकी गरमी १०४ से १०५ तक दिखाइ देते है। पीछे ताप ६–७ दिन तक सतत रहा करता है। बीचमें ४–६ घंटा वेग ज्यादा रहता है। जीभ पर काली छारी जमती है। इस तापसे दरदीको मरणका भय रहता है। और रोग अच्छा होने के पीछे भी कई दिन कमजोर रहता है। इस तावकी अवधि ७–१० या १५ दिनकी है। बीचमे उचित चिकित्सा न होने से दिमाग, जठर, कलेजा और फेफडेमें सूजन होती हैं और रोगी वुरी दशामें पहुच जाता है।

सारवार—रोगीको स्वच्छ बिछानेमें सुलाना, हवा कमरेमें आती जाती रहे लेकिन रोगीके शरीर पर न लगे यह ध्यानमें रखना। रोगीको प्रारंभमें वमन और दस्त होतो उसे बंध नही करना। सिरमें दरद और जलन होता हो तो ठंडे जलके पोता रखना। शोष लगे तो पर्पटादि हिम पिलना।

उपचार—द्राक्षादि क्वाथ—द्राक्ष, हरड, मोथ कुटकी, अमलतास का गर्भ, पर्पट, सहदेवी समानभाग १ से २ तोलाका फांट कर पिलाना। त्रिभुवन कीर्ति २से३ गोली पानीसे। महाचंद्र कला ३ से ४ गोली पानीसे ;

पित्ताशनि रस (रस)—पारद, गंधक सोहागा काली मिरच, कचूरा, गिलोइ, शक्कर, इलायची, कपूर कचली, कूडेकी छाल, रौप्य भस्म, प्रवाल पिष्टि प्रत्येक

---

1 होजरी.

पांच पांच तोला, मोती पिष्टि दो तोला मिलाकर, गिलोई, काली द्राक्ष बडी सौंफ[1] पर्पट इन चारोंको समानभाग कूट क्वाथ कर चार भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना अथवा घोंट कर रखना। मात्रा २ से ३ गोली अथवा ४ से ६ रती अदरखका रस और सहद के साथ अथवा दो दफे कपडछन किये हुए पुराने गुडके पानीके साथ देना। इस ज्वरमें आंखोमें जलन हो तो महामुक्तांजन कृष्ण अथवा नयनसुधाका आंखोमे अंजन करना।

कफज्वर-कफका ताप (सरदीका बुखार)

कारण—गरिष्ठ चीकने पदार्थ, बाजारकी मीठाइ, मिष्टान्न अधिक खानेकी आदत, ठंडे पानीसे स्नान, दिनको सोना, रात्रिका जागरण आदि कारणोंसे और खास कर वसंत ऋतुमें यह बुखार आता है।

चिह्न—शरीर भाररूप लगे, सांधोमें दर्द हो। मीठा खट्टा वमन हो, उत्क्लेद, आलस्य, मुखमें मीठापन दस्तमें सफेद आम पडे, भूख मंद, नींद ज्यादा, कान और नाकमें जडता, चीकनाट लिये पसीना खांसी जुकाम, सिरदर्द नाकसे पानी पडना, दम चढना हीचकी, स्वर बैठ जाना, इत्यादि चिन्ह होते हैं।

दस्तकी कब्जी होकर बुखार आता है साथ खांसी बढने लगती है और फेफडोंमें कफ भर जानेसे बुखार बढता है उचित चिकित्सा होने से दस्त और मुखके द्वारा कफका निकाल हो कर ताप उतरने लगता है। यदि बुखार अधिक दिन चले तो कफके कारण श्वासनलीमें अवरोध होता है, जिससे रोगी बहुत मुश्केलीसे दम ले सकता है। फेफडों के अंतरपडदेमें सूजन होकर छातीमें शूल निकलता है। आगे कभी दरदी बेशुद्ध भी हो जाता है इस दशामें डाक्तर लोग इसे न्यूमोनिया फेफडोंके सूजनका बुखार कहते है। इस दशामें वमन और कफके साथ रोगीको यदि खून गिरने लगे तो दरदी बचना मुश्किल है।

सामान्य सारवार

प्रारंभमें सादा विरेचन औषध अथवा विश्वतांप हरणकी २ से ६ गोली देकर दो चार दस्त होना चाहिये। रोगीको भूख न लगे जब तक कुछ भी खुराक न देना। गरम कर तांबे के बर्तनमे रखा हुआ पानी थोडा थोडा देते रहना भूख लगे जब अदरख काली मिरच नमक डाला हुआ मुंगका पानी देना। बुखार उतर जाय जब थोडा दूध भात खीचडी आदि देना। इस बुखारमें दरदी सहन कर सके इतने दिन लंघन कराना। दो से आठ दिन तक लंघन

---

1 गुजरातीमें 'वरीयाळी' कहते हैं।

आ सकते हैं। इस वक्त ज्वरमें दूध या साबु दानेकी कांजी देना यह न्यूमोनिया या त्रिदोष को आमन्त्रण देना है। छातीपर महालाक्षादि तेल या रसराज लगाकर शेक करना। कल्पतरु रस २ से ४ रती अदरख के रस अथवा तुलसी के पत्तोंके रसके साथ देना।

कफज्वर हर चूर्ण—(र सं.) छोटी पीपल, पीपरीमूल, गजपीपल, सोंठ, चित्रक, चीरू, निर्गुंडीके बीज, इलायची, अजमोद, सरसों, हिंग, भारंगी, पाठा, इन्द्रजव, जीरा, बकाइन नीमकी छाल, मूर्वा, अनीस, कुटकी, वायविडंग सब समभाग कूट कर ३ से ४ मासा दो तीन दफे गरम जलके साथ देना अथवा १ तोलेका क्वाथ करके पिलाना।

विश्वताप हरण—(र त) पारद, गंधक, हरड, पीपल, आकके मूल, कुचला [1] जमाल गोटेकी गोरी, कुटकी निसोथ समभाग लेकर धतूरेके पानके रसमें घोट चनेके समान गोली बनाना। १से२ गोली अदरखके रसके साथ देना। मात्रा २ से ४ गोली तक पानीसे। सब प्रकारके ताप उतरते हैं।

शीतज्वर-टाढिया ताव-मेलेरिया
ऋतु परिवर्तनसे आनेवाला ताप

कारण—ऋतुके परिवर्तनसे, गाढ जंगल में रहनेवालोंको गंदे पानीसे, भेजवाली जमीन में रहनेसे, मच्छर के उपद्रवसे उपयोग में आनेवाले पानीका निकास न होनेसे, ड्रेनेज-भूगर्भ में बुगदा में गंदकीका निकास और सफाई न होनेसे हवा बिगडनेसे सूर्यका ताप कम मिलनेसे, हवा और प्रकाश कम होनेसे, नीच बस्तीवाली गलीओसे, कच्चे वासो, ठंडे और सडे हुये शाक बकाला खानेसे, अजीर्ण होनेसे, अधिक जागरण करनेसे नाटक सिनेमा आदिमे हजारो मनुष्योंके श्वासोच्छ्वास मिलनेसे यह बुखार आता हैं और फैलता है।

चिह्न—शरीर तूटने लगता है, जभाइ आती है, कमर फटती है। आखे जलती है, ललाट और सिरमें दर्द होता, है तृषा लगती है, पिशाब, लाल, वमन, दस्तकी कब्जी। यह बुखार ठंडी लगकर या वैसे ही आता है और अमुक समय आकर उतर जाता, है, फिर आता है। अगर पहिले पसीना होकर ठंडी लग कर बुखार चढता है। कई रोगीको बुखार आने के पहिले ठंडीसे शरीर कांपने लगता है। सूर्यके ताप पर जानेको इच्छा होती है। २-४ रजाइ ओढकर पीछे ठंडी कम होकर ताप चढता है। कइ रोगीको

[1] विषतिंदुक इस गुजरातीमें झेरकोचला कहते हैं।

प्रथम सिर पकड़ता है, दुखता है, चेहरा लाल हो जाता है शरीरको और प्रत्येक अवयवको खूब दबानेकी इच्छा करता है । एक दिन छोड़ दूसरे दिन आता है वह एकाहिक-एकांतरिया; दो दिन छोड़ तीसरे दिन आनेवाला तृतीयक तरीया, और तीन दिन छोड़ चौथे दिन आनेवाला चातुर्थिक-चौथिया ताव कहा जाता है । ये सब विषमज्वरके भेद हैं ।

विषमज्वरहर चूर्ण—(र.स.) सोठ, छोटी कटहरी पुष्करमूळ, काकडाशिंगी, कुटकी, कचुरा, गिलोई आवला दारु हलदी पीपल, काली मिरच, कुलीजन, त्रायमाण, पर्पट, अगरचंदन, धमासा, कूडेको छाल, वंशलोचन, दालचीनी अतीस, देवदार, मोथ पटोल अजवायन चित्रक हरड, पीपरीमूल, नीमकी छाल प्रत्येक चार तोला, चिरायता २० तोला कूटकर २ से ४ माशा पानीके साथ दो से तीन दफे देना ।

त्रिभुवन कीर्ति-(र.सं.)शुद्ध हिंगुल, शुद्ध बछनाग, सोंठ, पीपल, काली मिरच सोहागा, पीपरीमूल, शुद्ध गैरिक समभाग से लेकर तुलसी आदु और धतूरे के पानके रसकी अकेक भावना देकर चने के प्रमाण गोली बांधना । २ से ३ गोली दो वख्त गरम पानीसे दी जाती है । सब प्रकारके ताप उतरते हैं और रुकते हैं ।

रुग्दाह संनिपात (टाइफोइड ताप)
(२१ से २८ दिनोंका ताप)

कारण—गंदे सडे हुए सागभाजी, फल खाने से, गंदे कुऐ के पानी से, कमरे के आसपास मेल और मलमूत्र त्याग होते रहनेसे, वर्षाऋतु के मलिन पूर आये हुये पानी पीनेसे, बरफ शरबत आइसक्रीम अधिक खानेसे आहार, विहारकी अनियमिततासे पहिले आया हुआ सामान्य ताप इस संनिपात ज्वरमे पलट जाता है । यह ताप बहुत करके ५० सालकी उमर तक अधिकतासे आता है । युरोप जैसे ठंडे देशों में इसका उपद्रव अधिक रहता हैं । हिंदुस्थान जैसे गरम देशों में इसका भय कम है ।

चिह्न—यह ताप आते ही रोगी कमजोर हो जाता है । शरीरके अवयवों में और सांधों में दर्द, मस्तककी पीडा, मंदाग्नि, कम्प, ठंडी लगना, दस्त, वमन, नाडीकी गति १२० से १४० होती, है, भूख नष्ट हो जाती है, जीभ पर मल जम जाता है । ताप दिनको १०१ से १०२ तक और शामको १०४ से १०५ तक बढता है । पिशाब कम होता है, नींद कम आती है । तन्द्रा, बेशुद्धि में रोगी पडा रहता है । दस्त पतला, आंतोंकी दाहिनी बाजू में दर्द और गडमड आवाज होता

है। ७ से १२ दिनमें शरीर पर गुलाबी रंगकी फुन्सियां निकल कर सुख जाती है। तीसरे सप्ताह में तापके चिह्न कम होते हुये आराम होने लगता है। इस तापमें भी रोगीको सन्निपात हो जाता है तब दांत पर काले छाले पडते हैं। होठ फटकर खुन निकलना है। बेशुद्धि बढकर ताप जोरसे आता है। आंखकी कीकी बडी होती है। कभी नाकसे और दस्तमें खुन गिरता ताप १०५ से १०७ तक बढना है। तब रोगीकी बचनेकी कम आशा रहती है। कई दफे इस तापके साथ दस्त, मरडा, दस्तमें खुन, आंतों में क्षत पडना लीवर और तिल्ली बढना, फेफडोंकी सुजन आदि होते है। यदि रोगीको असाध्य चिह्न मालुम होने लगे तब तीसरी सप्ताहमें मृत्यु होना संभव है।

पथ्यापथ्य—रोगीको अच्छी हवा प्रकाश और सूर्यका ताप मिलता हो ऐसे कमरे मे रखना। वह रोगी के शरीर पर सीधा न पडे यह ध्यान में रखना। बहारसे देखने आनेवालोंने रोगी के पास शोर नहीं मचाना। रोगीके पास बहार के लोगोंको आने नहीं देना। कपडा बिछाना बदलते रहना। बुखार अधिक जोर में हो तो गुलाबजल के या ठंडे जलके पोते सिर पर रखना। १५—२० दिनके पीछे रोगीको भूख लगे खुराक की इच्छा करे तब मुगका पानी गले हुये भात, काफी, चा आदि देना। बुखार उतर जाने के पीछे ही दूध देना। जो जो चिह्न हो उस प्रत्येक के लिये विचार कर औषधकी योजना करना। रोगीको इस रोगमें कफ ज्यादा निकलता है इसके लिये दूसरे आदमीने रोगी के मुंहसे कपडे के टुकडे लुछ कर कफ निकालना। और थुकदानी में इकठे कर दूर जमीनमां गाड देना।

सन्निपात भैरव—(शा. म अ १२) पारद और गंधक २—२ तोला लेकर कज्जली करें। ताम्र, रौप्य, अभ्रक, वंग नाग और लोह प्रत्येककी भस्म एक एक तोला, सफेद वछनाग (शिंगिया)२ दो तोला मिला कर पीछे शिग्रु[1] अरणि, सोंठ, पीली गर्म और चौलाइ प्रत्येकके रसमें एक एक दिन घोटकर गोला करना कपडेमे लपेट उपर कपड मिट्टी कर उसे नमकसे भरे हुये बरतनमे रख और उस बरतनको वालुका यंत्रमे रख ६ घंटे पकाना पीछे उसमेसे औषध निकालकर १ तोला प्रवाल और आधा तोला शुद्ध वछनाग मिलाकर तगर मुसली जटामांसी सत्यानाशी नेतर फै मूल पीपल नीली तमालपत्र इलायची, चित्रकमूल तुलसी सौंफ देवदारु धतूरा अगस्त्य गोरखमुंडी जुइ और मदनफल प्रत्येकके रसमें अेकेक भावना देकर तैयार करना। ऐसा न हो सके तो उपर लिखी १८

---

1 गुजरातीमे सरगवा,

औषधिको साथ कूटकर उसके क्वाथकी १८ भावना देना। मात्रा २ से ३ रती अदरखके रससे देनेसे सब प्रकारके सन्निपात, न्युमेनिया, फ्लुरसी, द्विदोष ज्वर, त्रिदोष ज्वर आदि ताप उतरते हैं और अटक जाते हैं। आधा तोला चोजेराका रस और एक तोला अदरखका और मरीच के १६ दाने पीस कर साथ इसकी मात्रा देनेको शार्गधर लिखता है।

इस औषधके पाठमें शार्गधरमें आर लिखकर पित्तल भस्म डालना लिखा है। हम अनुभवसे आर को जगह अभ्रक डालते हैं और इस रसको शार्गधरके मतसे कृष्णसर्पके झहरसे दो दफे भावना देना लिखा है। यह वस्तु प्राप्त करना अशक्य होनेसे हम नहीं डालते। सर्पविषके स्थानमें २ तोला सफेद वछनाग (शिंगिया) डालते हैं।

बृहत् कस्तूरी भैरव रस—(भै र.११६) कस्तूरी, कपूर, ताम्र भस्म, धाईके फूल, अतिविष, रौप्य भस्म स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टि, प्रवाल, लोह भस्म, पाठा, वायविडंग, मुस्ता, सोंठ, वाला, हरताल भस्म, अभ्रक भस्म और आंवला सब द्रव्य समान लेना कस्तूरी और कपूरको छोडकर सब वस्तु साथ मिलाकर आकके पके हुये पानके रसकी भावना देकर सुख जाने पर कस्तूरी और कपूर मिलाना। यह औषध अदरख के रससे या तुलसीके रससे सब प्रकारके बुखारमें और सन्निपात ज्वरमें दिया जाता हैं। बिल्व गर्भका चूर्ण जीरा जीरा और शहदके साथ देनेसे आमातिसार, संग्रहणी, ज्वरातिसार, मंदाग्नि, खांसी, प्रमेह जीर्णज्वर आदि शांत होते हैं। भैषज्यरत्नावलीमें सूक्ष्मशिम्बी लिखा है इसके स्थानमें हम अतीस डालते हैं।

ग्रन्थिकादि क्वाथ—पीपलीमूल, इन्द्रजौ, देवदार, गुगल, वायविडंग, भारंगी, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, चित्रक, कायफल, पुष्करमूल, रास्ना हरड, छोटी कटहरी, अजमोद, निर्गुंडीमूल, चिरायता वचा, चवक पहाडमूल सब समभाग कूट १ से २ तोलामें पानी ४० तोला छोड चतुर्थांश रहने पर दिनमें दो दफे अकेला किंवा किसी औषधके अनुपान रूपमे पिलाना। सब प्रकारके सन्निपात न्युमोनिया बेशुद्धि आफरा और सूतिका रोगमे योग्य औषध के साथ या अकेला पिलाया जाता है।

प्रलापक सन्निपात
(१४ दिनका ताप)

कारण—मैलवाली या गंदी जगहमें रहनेसे या गंदी जगहकी या गंदे पदार्थोमें जानेसे, गहरी वस्तोमें रहनेसे यह ताप लागु होता है और इसमें भी यह कारण और चिह्न टाइफोइडके समान देखने में आते है।

चिन्ह—इस तापसे रोगी २-३ दिनमें कमजोर होता है, सिरमें सख्त दर्द ठंडी लगना, शरीरके अवयवोंमे दर्द, आंख लाल आंखोंसे पानी गिरना, ताप वढना, आंखे मुंदना, मुख खुला रखना, उत्तर न दे सकना, बधिरता, जीभ पर काले पड जमे। होठ और दांत पर काली फुन्शिया निकले ताप को गरमी ६-७ दिनके पीछे १०५ तक वढे नाडीकी गति १२० तक हो, ४-६ दिनके पीछे हाथके तलुऐ छाती पेट आदिमे काले रंगकी फुन्शियां और दाग दिखायी दे। नाक और आंतोंसे कभी खुन गिरे। इसमें वात पित्त कफ तीनों का अविरु कोप होनेसे रोगी बकवाद करता है। शरीर कंपता है। दाह और बेशुद्धि बढती है।

पथ्यापथ्य—इसमें भी पथ्यापथ्य टाइफोइड तापके समान समझना।

यह बुखार सांसर्गिक है। रोगीका उच्छिष्ट या खांइ हुइ कोइ चीज दूसरोंने खाना नही। उसके मलमूत्र दूर फेंकना। रोगीको हवा और उजारावाले कमरे में रखना। गुगळ, लोवान नीमके पत्ते घी चावलको मिलाकर धूप करना कपडे बिछाने आदि कडे धूप में रखना ताप के साथ दस्त मुंडा खुन वमन आदि जो चिह्न मालूम हो उनके पर विचार कर औषधोंका योग करना।

त्रैलोक्य चिन्तामणि—(बृ यो त) पारद, माणिक्यपिष्टी, गंधक, मुक्ता, स्वर्ण, रौप्य ताम्र, लोह, अभ्रक, रौप्य माक्षिक, शंख, प्रवाल, प्रत्येककी भस्म और हरताल, मनशील शुद्ध किया हुवा प्रत्येक एक एक तोला लेकर चित्रकके क्वाथकी ७ भावना देना। पीछे निर्गुंडी का क्वाथकी ७ भावना देना। पीछे निर्गुंडीका क्वाथ सुरणका रस थुअर का दूध और आकका दूध प्रत्येककी तीन तीन भावना देना। पीछे सब सबको पीली कोडीयोंमे भर कर उसका मुंह आकके दूध और सोहागा मिला हुआ मिश्रणसे बंध करना। पीछे उसे मटकेमें भर कपड-मिट्टी कर गजपुट अग्नि लगाना। निकाल कर घोंटकर उसमे सबका वजन जितना हो उतना रस सिंदूर डालना और रस सिंदूरसे चतुर्थांश वैंक्रान्त भस्म डालना। पीछे इन सबको मिलाकर शिग्रुमूलकी छालके क्वाथ से ७ भावना देना। पीछे सूख जानेपर ईसका जितना वजन हो उतना विषादि चूर्ण डालना। और पीछे एक दिन तक बिजोरेके रसकी भावना देकर सुखाकर घोंट रखना इसकी मात्रा २ से ४ रती ग्रन्थिकादि क्वाथके साथ अथवा महासुदर्शनके क्वाथसे या अदरखके रस या तुलसीके पानके रससे सब प्रकारके सन्निपात ज्वरने दिया जाता है।

विषादि चूर्ण—अतीष, चित्रक, दालचीनी सोहागा, काली मिर्च हरड, जायफल, लौंग, पीपल सोंठ और शुद्ध वछनाग सब समान भाग कूट कर रखना और यह चूर्ण ऊपर लिखे अनुसार तैयार किये हुए रसमे समान भागसे डालनेका है।

सूचना—इस त्रैलोक्य चिंतामणि रसमें हमने अनुभवसे थोडा परिवर्तन इस प्रकार किया है। वज्र अर्थात् हीरेकी भस्मके स्थानमें माणिक्य पिष्टि का योग किया है। क्योंकि हीरेकी भस्म बनाना और इतने प्रमाणमें मिलाना बडे द्रव्य व्ययका कठिन काम है, यह सबके लिये शक्य नहीं है। और शिग्रुमूलकी ७ भावना देनेके पीछे जो रस तैयार हुवा है उस रसके बराबर विषादिचूर्ण और चतुर्थांश काला वछनाग डालनेका पाठ है लेकिन विषादिचूर्ण के दश द्रव्य और ग्यारहवा वछनाग सब ग्यारह ही द्रव्य समान भाग लेकर कूटकर तैयार शिग्रुमूल भावनासे तैयार किये हुये रसमें यह विषादि चूर्ण समान भागमे मिलाया जाता है और पीछे सबको बिजोरेके रसकी भावना दी जाती है।

इस रसके प्रत्येक द्रव्यका तौल लिखनेके समय हम खीली कौडीका तौल लिख नहीं सके कयोंकि वह छोटी बडी हो सकती है। इसलिये यह औषध बनानेवालोंने गजपुट के पीछे वह कितने तौल में रहना है यह ध्यान में रखकर यह औषध बनाना चाहिये।

इस रसमें समभाग सूत भस्म अर्थात् पारद भस्म डालनेका लिखा है। लेकिन पारद भस्म अनेक किसमकी होती हैं। इसमें किस प्रकारकी पारद भस्म इसमें डालना यह प्रश्न हो जानेसे हम सूत भस्म के स्थान में रस सिन्दूर डालते हैं जो ऐक प्रकारकी कूपीपक्व रक्त वर्णकी रस भस्म ही है।

वातव्याधिज्वर कृमि जठर श्वासामवात शूलानि ॥
वातास्रक्तपित्त क्षय कफकास प्रमेह कुष्ठानि ॥
पांड्वतिसार ग्रहणी श्रुति भग गुदजोत्थ्य प्रशाहतोऽहित ॥१॥
त्रैलोक्य चिंतामणिनामधेयो रसो गदध्वांतविनाशनश्च ॥
नानानुपानैरुपलि प्रयुक्तः षड्गुंजमात्रश्च गुणप्रदः स्यात् ॥२॥

—[*]—

स्थिक सन्निपात

(परिवर्तित ज्वर)-पांच अथवा सात दिनका ताप

कारण—दुष्काळ के समय खराब खुराक लेनेसे अथवा दुष्काळ के पीछे अधिक खुराक लेने से गीच आबादी से, गंदे पानीसे, पेटमे बिगाड होनेसे यह ताप आता है। सांधो में सूजन के साथ पडा सख्त होती है। कफ अधिक। खांसी। नींद कम।

चिह्न—सिरका दर्द, कमर या अवयवोमें पीडा, पानीका शोष, ठंडी, शरीर कपना, कमजोरी, पीठमें दर्द, ताप सतत रहा करे, पसीना आकर बुखार चढे, ताप १०६ तक बढे, कभी कमला और शरीर पीला हो जीभ पर काला और भूरा मल जमे, दस्त कबज, तिल्ली और यकृत बढे, पांच या सात ने दिन ताव उतर जाय और फिर चढे उस प्रकार दो दिन दफे उथला मार कर योग्य औषधसे बुखार जाता है।

चिकित्सा—संनिपात भैरव २ से ३ रती अथवा त्रैलोक्य चिंतामणि ४से६ रती अदरखके रससे अथवा शहदसे देना।

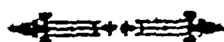
शठयादि क्वाथ—कचूरा, देवदार, हरड, बहिडा, आंवला, निषायरामूल रासना, सोंठ, गिलोय, शतावरी, गुगल समभाग कूट १ से २ तोला का क्वाथ कर दिनमें तीन चार दफे पिलाना। महालाक्षादि तैल शरीरको मर्दन करना। भूख लगे जब साधा खुराक देना। सुदर्शन चूर्णको भाप (बाष्प) देना। दस्त बंध हो तो विश्वताप हरण २ से ६ गोली गरम जलसे लेना।

भुग्ननेत्र संनिपात (फुफ्फुसकी सुजनका ताप)

कारण—शरदीसे, वर्षाऋतुमे नदीके ठंडे जलसे अधिक स्नान करनेसे, तापका उपद्रव हो जब बादी करनेवाले पदार्थ खानेसे, भेजवालो जगहमें रहनेसे, खांसी और पीनस के साथ बुखार आनेसे, बच्चोंकी बडी खांसी ससणी शीतला वराध आदि रोगोसे यह बुखार आता हैं। यह बुखार लागु होनेसे पेट बिगड़ कर फेफडोमें सूजन होती है। यह न्यूमोनियासे मिलता जुलता ताप है। श्वासकी गति बढती है। छातीमे दरद होता है, खांसी आती है। नाडीका वेग बढता है, सिरदर्द, पिशाब कम, दस्त कब्ज, आंखोमें खींच, तन्द्रा, बकवाद श्रवणेन्द्रियकी कमजोरी, कफ चीकना। इस तापकी मुद्दत ८ से २५ दिनकी है।

संनिपात भैरव ३ से ४ रती अथवा त्रैलोक्य चिंतामणि ४ से ६ रती तुलसी रस अथवा अदरख रसके साथ देना और इस प्रत्येक रसका आंखमें अंजन करना और नाकमें डालना। तापका जोर १०४ से १०५ तक बढता है। पसीना आनेसे रोगका बल कम होता है। किसीको खांसी भी नहीं आती। श्वासकी गति मिनिटमें ३०-४० होती हैं। नासिकाके छिद्र ऊंचा नीचा होता हैं। नाडी १२० से १४० तक चलती है। रोगी क्षीण होता है। तब नाडीकी गति भी क्षीण होती है। फेफडोंके जिस भागमें सूजन हो यहां दर्द और शूल आता है। दोनो फेफडोंमें सूजन हो तो तापका जोर बढता है। यदि १०-१२ दिनके पीछे तापका जोर कम होवे रोगी बच जाता हैं और तापका जोर और चिन्ह बढने लगे तो १५-२० दिनमें मृत्यु होता है।

पथ्यापथ्य—खुले हवा प्रकाशवाले कमरेमें रोगीको रखना। उस कमरेमें आरने उपल या सूखे गोबरका अग्नि रात दिन रखना। रोगी शुद्धिमें हो तो देखना कि पेटमें या इसके आजुबाजुमें कहीं दर्द होता है या नहीं। भूख, डकार पेटकी कठिनता और नाडीकी गतिसे पेटमें कितना बिगाड हैं यह देख लेना। डाक्तरोंके मतसे यह जन्तुजन्य बुखार है। आयुर्वेदके मतसे पेटमें बिगडे हुए मलमें स्वाभाविक ही जन्तु पैदा होते हैं और इस रोगको पेदा करते हैं अर्थात् इस बुखारका मुख्य कारण पेटका बिगडना है इस लिये, मलका निकाल करना और लंघन करवाना यह इस रोगकी प्राथमिक चिकित्सा है। यदि रोगी कुछ खुराक मांगे तो मुगका पानी या चावलका पानी नमक हलदी हिंग काली मिरच डालकर थोडा पिलावे। सुदर्शन चूर्णका क्वाथ अथवा पिप्पल्यादि गण क्वाथ, कस्तूरी भैरव, त्रैलोक्य चिंतामणि, संनिपात भैरव, हिरण्यगर्भ पोटली, विश्वताप हरण आदि औषध देना और दशांग और दोषघ्न लेप गरम कर छातीपर लगाना या अलसीका लेप गरम कर छातीपर लगाकर उपर रुइ दाब कर पाटा बांधना। छाती पर और पीठपर कपडेके गोटेसे शेक करना। शरीरपर महालाक्षादि तेल अथवा महानारायण तेल अथवा कल्याण घृतका मालीस करना।



कंठकुब्ज संनिपात

(फेफडोंके पडदेकी सूजन) तेरह दिनका ताप

कारण— खुल्ला ठंडा पवन, वर्षा, शरदी करने वाले आहार विहार, बरफ शरबत आइसक्रीम, जागरण पेटका बिगाड, आदि कारणसे यह बुखार आता है।

चिन्ह— श्वास लेते समय छाती में सूइयां चुभती हो, चीरना हो, काटता हो ऐसी पीडा होती है और खांसी आते वख्त भी वैसा ही दर्द हो उस करवट पर रोगी सो सकता नहीं। दोनों फेफडोंमें दरद हो होता है। जिस ओर दर्द हो उसके करवट को रोगी सो सकता नहि। दोनो फेफडोंमे दर्द हो तो रोगी सीधा सोता है। पिशाब लाल उतरता हैं। इस बुखारसे अच्छा होने के पीछे रोगीको हृदयका दर्द रह जाता है और थइयोंको क्षय रोग भी लागु होता है। श्वासकी गति बढती है। थकता है। खुराक पर अरूचि, सारे बदनमें दर्द, तृषा, सिरमें दर्द, चक्कर हट, कभी शरीर और मस्तकका कंप।

चिकित्सा—अलसीका लेप गरम कर करना। छाती पेट और सिर पर शेक करना। पेटमें बिगाड हो तो हरडके चूर्णसे या विश्वताप हरणसे या जमचोलमे आदिसे एक दो दस्त कराना, लंघन कराना। खुराक देनेकी जरुर हो

अथ मुथंका पानी, बाजरे के आटाकी गुडवाली या नमकवाली पतली राब. भातका पानी नमक हलदी डाला हुआ, पपैया, सूखे गोबरकी अंगेठी रातदिन रखना। गुगलका धूप दो वख्त करना। और महासुदर्शन क्वाथ अथवा शठ्यादि क्वाथ के साथ बृहत् कस्तूरी भैरव अथवा सनिपात भैरव देना। त्रिभुवन कीर्ति त्रिपुर भैरव, हृदयार्णव रस हिंगुलेश्वर और कफकेतू दिया जाता है। मृगमदासव अथवा उत्तम प्रकारका दारु भी दिनमें तीन चार दफे २ से ४ तोला दना ठीका होगा।

इन्फलु अेन्झा
तन्द्रिक सनिपात

अतितन्द्रा तृषा श्वासोऽतिसारः कफकासरुक् ॥
शरीरस्योष्णता शोथो गले कंडुः कफोधिकः ॥१॥
जिह्वा श्यामा श्रुतेर्मान्द्यं क्लमो दाहस्तथाऽधिकः ॥
इन्फ्लुअेन्झा संघकोऽयमनार्यैः कथितो ज्वरः ॥
आयुर्वेदे निगदितो त्रिदोषोत्थश्च तन्द्रिकः ॥२॥

—श्लोकद्वार तत्र

कारण—यह चेपी संक्रामक बुखार है। महामारी (मरकी) से भी जलदी यह बुखार सारे देशमे एकदम फैल जाता है। चाहे जैसे स्वच्छ गावमें भी इसका फैलाव होता है। इस बुखारका पवन चलता हो जब बाजारकी मीठाइ, मिष्टान्न खानेसे, जठराग्नि बिगडनेसे, हमेशा तिक्त-कडवा औषध सेवन नहीं करनेवाले लोगोंको यह बुखार लागु हो जाता है।

चिन्ह—यह बुखार लागु होने से प्रतिश्याय नाकसे पानी पडना, सिर पीठ और संधिा मे दरद होना। प्रारंभमें थोडी ठंडी लगकर ताप भराना। छींके और खासी बढना। छाती फेफडो गलेमें सुजन, हृदयकी कमजोरी श्वास नली के शोथसे मुश्किल से श्वास ले सकना इत्यादि चिन्होके पीछे न्यूमोनिया होकर रोगीका मरण होता है।

पथ्यापथ्य—प्रारंभमें तापके चिन्ह देखनेसे रोगीको लघन करना। ताप का जोर कम होगा वैसे हृदय और फेफडो पर तापकी असर कम होगी। रोगीको भूख लगे जब मगका पानी देना। आठ दिन तक मगके पानीमें आदुका रस हिंग काली मिरच नमक हलदी डाल कर देते रहना। और दस बारह दिनके पीछे दूधमें सोंठ काली मिरच पीपल लोंगका समभाग किया हुआ चूर्ण डाल कर मिलाना। यदि कुछ दूधको मधुर करना हो तो गुड या शहद थोडा डालना। छाती पेट और पीठमें कपडे के गोटेसे शेक करना। गुगलकी धुइ श्वासमे देवे

रहना। छाती और दोनों बाजु में अलसी का लेप कर रुई दाब कर पाटा बांधना सारे बदनमें महालाक्षादि तेल मलना। दस्त लाने के लिये विश्वतार हरण या अश्वचोली गोली २ से ६ देना। शठ्यादि कवाथ, अभयादि कवाथ के साथ संनिपात भैरव कस्तूरी भैरव, त्रैलोक्य चिंतामणि अभ्रक भस्म, चोसठ प्रहरी पीपल मृतसंजीवनी सुरा अथवा ब्रान्डी देना।

ग्रन्थिक संनिपात

(मरकी-प्लेग)

कारण—गंदकी दुर्गंध, अंधेरा, सूर्यप्रकाशका कम मिलना चूहेका बढना अथवा दैवी प्रकोपसे यह रोग प्रगट हो फैलता है। गटर, मोरी अंगनमें दिनरात मैल पेटका विगाड, मलिन मकान इत्यादिसे बढता हैं। चूहा और खिसकोली आदिको यह रोग ऐकदम लागु है और एसे जनावर एक स्थानसे दूसरे स्थानो में दोडते रहनेसे सारे गावमे फैल जाता है। यह रोग कमजोर कृश और वृद्धो को कम होता है जवान स्त्री पुरुषों को और सगर्भा स्त्रीयोंको एकदम लागु हो जाता है। यह रोग शीत और वर्षाऋतुमें उत्पन्न हुआ हो तो भयंकर रूप से फैल जाता है। ग्रीष्म ऋतुमे इसका जोर कम होता है। रक्षे गवाले रोगीको सारवार करनेवाले, देखनेको आले वले सहवास मे रहनेवाले लोग भी, खानपान आहार व्यवहार और औषधमें सावधान न रहे तो उनको भी यह रोग लागु हो जाता है। गांवमें रोग उत्पन्न होनेसे सगर्भा स्त्रीयोंको दूसरे गांव भेज देना चाहिये। गला, बगल, साथल, के मूलमें गांठ-ग्रंथि उत्पन्न होती है।

चिह्न—रोगी चिंतातुर बेचैन, भूखका नाश, स्नायु सांधे अकड जाना हृदयकी गति बढना, ग्रंथि होनेकी जगहमें दर्द शरु होना, मुख चिकना, आंखे निस्तेज, वमन उबका, छाती में घबराहट, सिरका दर्द, दस्त कब्ज इत्यादि चिह्न होते हैं। ठंडी लगकर ताप १०७ तक चढता है। नाडीकी गति अनियमित। श्वास हर मिनिट २० से ४० दफे चले। चमडी सूकी, पसीना बंध, आंखे लाल, कीकी बडी, सुननेमे कमी, पेटमे जलन, तृषा अधिक जीभका बीचका भाग सफेद और जीभका अग्र भाग और आजु बाजुका भाग लाल, अधिक दिन बीतने पर जीभ फरका काली पडे, नाकके अग्रभाग पर कालिमा, तन्द्रा निद्रा घेन बढे, जांघोमें, बगलमें, गरदन पर गांठे दिखा दे। यदि गांठ पक कर फूट जाय तो दरदी बच जाता है। यदि रोगी बच जानेका हो तो गांठ होने के पीछे तापका जोर कम होता है, गांठ पकती है। शुद्धि आती है तन्द्रा

कम होती है, जीभ अच्छी होने लगती है, आंखोकी लालिमा कम होती है। यदि गांठ पकने पर न आवे और तापका जोर कम न हो तो रोगी २-३ दिनमें मृत्युवश होता है। यदि ७ दिन निकल जाय तो बच जानेकी आशा रहती है।

पथ्यापथ्य—यह रोग उत्पन्न होते ही अच्छे आदमियोंने शाकभाजी बकाला खानेका बंध करना। रातवासी अन्नपान नही खाना। दोनों वक्त गरम खोराक खाना। अगर शक्य हो वहांतक ऐक दफे ही भोजन करना। दूध गरम कर पीना।

आरोग्यवर्धनी, महासुदर्शन इत्यादि औषध खाते रहना, प्राणायाम करना। दोनो वख्त दिव्य धूप अथवा गुगळ घी और नीमके पत्तोका धूप करना। शेरीको और घरकी जगह स्वच्छ रखना।

रोग लागु होनेसे रोगीको तीव्र जुलाब देना। इच्छाभेदी ५-६ गोली अथवा अश्वचोली १०-१२ गोली अथवा विषताप हरण ८-१० गोली अथवा ज्वरांतक विरेचन ४ से ६ गोली गरम पानीके साथ देनेसे ५-६ दस्त होकर पेटके बिगाड के साथ प्लेग के जन्तु मर का निकल जाते है और गांठ बैठ जाती है। रोगीको जहां सूर्यका ताप आता हो ऐसे कमरेमें रखना। पानी उबाल कर पिलाना और थोडा गरम ही पिलाते रहना। रोगीको ७ दिन तक कुछ भी खुराक नही देना। यदि दस्त होकर बिगाड निकल गया हो और भूख लगे तो मुंग का पानी नमक हलदी काली मिरच डाल पिलाना। यदि दाह शोष और तृषा लगे तो पर्पटादि हिम थोडा गरम कर पिलाते रहना। गुडका पानी भी देना। रोगीकी सेवा करनेवालोंने हमेशां शरीर पर तिलका तैल मालिश करना। सादा खुराक लेना। एक दफे भोजन करना और शरीर स्वच्छ रखना।

चिकित्सा—प्रारंभमें उपर कहे अनुसार ४-८ दस्त हो जाय ऐसा उपचार करना। महासुदर्शन चूर्ण अथवा शठ्यादि क्वाथके साथ त्रैलोक्य चिंतामणि ४ से ८ रती, संनिपात भैरव ४ से ८ रती देना। रोगीके शरीर पर महालाक्षादि तैलका मर्दन करना। हिरण्यगर्भ १से२ रती घीस कर अदरखके रससे देना।

ज्वरांतक विरेचन—(रस) पारद, गंधक, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, वत्सनाभीके मूल, कुटकी, चिरायता, सेन्धानोन, द्रोणपुष्पी[1] के फूल समभाग लेकर सबके समान शुद्ध किया हुआ जमाल गोटा डाल कर सहदेवी[2] के रसकी

१ द्रोणपुष्पी-गुजरातीमें कुबो। २ सहदेवी गुजरातीमें सेदरडी।

भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली करना। सब प्रकारके तापमें दस्त बंध हो जब मलको निकाल कर बुखारको कम करने के लिये यह औषध उत्तम है।

सन्तामृत पर्पटी—(र सं) पारद ४, गंध-८, लोह ताम्र रौप्य, अभ्रक प्रत्येको भस्म दो दो तोला सुवर्ण भस्म १ तोला विधिवत् पकाकर, ताजे गोबर के योगसे केलाके पत्तोमें दबा कर चौलाई छोटी कटहरी, सत्यनाशी घीकवार, तुलसी, अदरख और धतूरा प्रत्येकको १-१ भावना देकर रखना। २ से ४ रत्ती लशुन के रससे अथवा अदरखके रसमे देना। सब प्रकारके संनिपात ज्वरमें शठयादि क्वाथसे या दूसरे औषध के योगसे दिया जाता है। और संग्रहणी अतिसार पुराना मुरला हृदयरोग, आंतोके रोग कमजोरी आदिमे भी अच्छा फायदा देती है।

प्लेगकी गांठका लेप १—कायफल, सोंठ रास्ना, चित्रक, हलदी, अरणी के पान, इन्द्रायण के फल, देवदार सहजनेकी छाल साथ पीस गरम कर पोल्टीसकी तरह बांध पाटा बाद उपर शेक करना।

प्लेगकी गांठका लेप २—सोंठ, अरणीका मूल, रास्ना बिजोराका मूल दारुहलदी सममाग कूट पानी में पीस गरम कर बडी पोल्टीस के रूपमें गांठके उपर रखना। गांठकी आजुबाजुका १-१ इंच भाग ढक जाय इस तरह करीब १०-१५ तोला लगाकर पाटा बांधना और उपर शेक करना।

तिक्तादि क्वाथ—कुटकी चिरायता पर्पट, गिलोय, कचूरा, रास्ना, छोटी पीपल पुष्कर मूल, त्रायमाण, छोटी कटहरी के मूल, देवदार, बडी हरड, धमासा, भारंगी सब समान भाग लेकर कुट कर १० तोलेमें पक्के तीन सेर पानी छोड उबाल कर १ सेर रहेनेसे कपडछान कर उसमे आधा तोला नमक डाल कर २-२ घंटेके पीसे १।-१। तोला पानी पिलाते रहेनेसे प्लेगका ज्वर कम होता जायगा और रोगी बच जाता है।

सब प्रकारके ज्वरमें दी जानेवाली औषधें

महासुदर्शन चूर्ण—(शार्ङ्ग. म अ. १२, यो त. त. २०)

हरड बहेडा, आंवला, हलदी, दारु हलदी छोटी कटहरी बडी कटहरीके मूल, धमासा, कुटकी पर्पट मोथा त्रायमाण बाला नीमकी छाल, पुष्करमूल मूलैठी मूल [illegible] अजवायन, इन्द्रजौ, भारंगी, सहजनेके बीज फटकीरी बचा-दालचीनी [illegible] कालेवालेका मूल चंदन अतीस बलामूल शालीपर्णी पृश्निपर्णी, [illegible] तगर चित्रक (सीता) देवदार चवक तमालपत्र पटोल जीवक

ऋषभक, लवग वशलोचन, कमलमूल, काकोली, तमालपत्र जायपत्री तालीसपत्र सम भागसे लेकर और सब औषधसे आधे वजनसे चिरायता कूटकर मिला देना। यह सुदर्शन चूर्ण है। वात पित्त कफ एक दोषका, दो दोषका, त्रिदोषका ताप और सब प्रकारका ताप आगन्तुक ताप विषमज्वर घात मे उतरा हुआ जीर्णज्वर सन्निपात ज्वर मनके विकारसे उत्पन्न हुआ ज्वर शीतज्वर एकांतरा तरीया चौथिया मलेरियाका ताप मोह तन्द्रा भ्रम शोथ तृषा श्वास खासी पांडु हृदयरोग कामला नव प्रकारके शूल पेटका शूल आदिमे उत्तम गुणकर्ता है। चढे हुए तापको उतारता है आनेवाले तापको रुकता है

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो ज्योति पतंगाय नमोनम सिद्धिरुद्र आज्ञापयति स्वाहा।

हाथमे सरसेंके दाने चुटकी भर लेकर इस मन्त्रको सात दफे पढकर जिसको एकांतरा तरीया चौथिया ताव आता हो उसे छिडके उसके शरीरपर फेके, सात दफे करनेसे सब ज्वर जाता है।

महाज्वरांकुश रस—(यो. त. र. त. २०) पारद गधक वछनाग कनकबीज प्रत्येक एक एक तोला त्रिकटु (तीनों मिलाकर) ४ तोला सत्यानाशी के पचांग के रसकी भावना ४ देकर गुजा प्रमाण गोलीकर २ से ३ गोली मोसबी के रस से अथवा अदरख के रससे देना। सब प्रकारके ज्वरको उतारता है रुकता है।

हिंगुलेश्वर—(र. सं. ज्वर)

हिंगूल वत्सनाभ च प्रत्येक कर्षमात्रकं। चतुष्कर्षं पिप्पली च मर्दयेत्सर्वमेव च॥१॥
भावनार्द्ररसैर्देया द्विगुञ्जश्चोष्णवारिणा। वातज्वरे प्रशस्तोयमनुपानैर्ज्वरेषु च॥
विविधेष्वतिसारेपि देयो दोषन्निरीक्ष्य हि॥२॥ रस संहिता

हिंगुल तोला १, शुद्ध वछनाग तोला १, छोटी पीपल तोला ४ साथ घोटकर अदरख के रस की भावना देना। १ से २ रती गर्म जलसे देनेसे वात ज्वर मे उत्तम है। अन्य ज्वरो में भी दोष के प्रकोप को देखकर अनुपान योगसे देना। अतिसारमें भी गुण करता है।

रत्नगिरि रस—(भै. र. ज्वर) पारद गधक ताम्रभस्म अभ्रक भस्म सुवर्ण भस्म प्रत्येक १ एक तोला, लोह भस्म तोला आधा, वैकांत भस्म तोला ०। पांच भांगरे के रसमे घोंटकर पर्पटी की तरह पकाकर घोंटना। पीछे सहजना वासा निर्गुडी वना चित्रक भांगरा गोरखमुडी छोटी कटहरी गिलोय अरणी

अगस्थ ब्राह्मी कुटकी ग्वारपाठा प्रत्येक के रसकी तीन तीन भावना देकर गोलाकर ऊपर केलेके पत्ते लपेट ऊपर मिट्टी लपेट कर सुखा कर उस गोलेको वालुका यंत्रमें रख तीन घंटे पकाना। पीछे स्वांगशीत होने पर निकाल घोट कर रखना। ३ से ४ रती इस रसको ८ से १२ रती छोटी पीपलका चूर्ण और २ से ३ मासा धनियाका चूर्ण मिलाकर पानीसे देनेसे एक घंटामें तापको उतारता है।

सब प्रकार के तापको उतारने के लिये और वेशुद्ध रोगीको जागृत करने के लिये उपयोगी है। मरकी प्लेगमें से३ रती यह रस सुदर्शन चूर्ण के साथसे देना न्युमोनिया टाइफोइड आदि सन्निपात ज्वर में उत्तम है। वैसेहि क्षय खासी हृदयरोग फेफडों के रोग जीर्णज्वर आदिमें भी गुणकारी हैं।

हिरण्य गर्भ (हेमगर्भ पोटली)—(र स ज्व) पारद तोला ४, गंधक तोला १२, सुवर्ण भस्म तोला २, रौप्य भस्म तोला ४, ताम्र भस्म तोला ३, मुक्ता पिष्टी, प्रवाल, शंख पिष्टि अभ्रक भस्म लोह भस्म टंकण रससिंदूर प्रत्येक तोला २ दो वैक्रांत भस्म तोला १ सब साथ घोटकर निर्गुंडी निंबू और ग्वारपाठाके रसमें दो दो दिन घोटकर एक एक तोला की सोगठी या गोली बनाकर प्रत्येक गोली को रेशमी कपडेमें बांधकर एक मटकीमें गंधक भर सब गोलीयां उस गंधकमें डुबो कर दाब कर उस मटकी का मुख बंधकर वालुका यंत्रमें रख पकाना। ३ घंटा के बाद अग्नि निकाल कर स्वांगशीत होनेपर मटकी तोड कर गोलीयां निकाल लेना जला हुआ कपडा निकालकर गोली साफ करना। अदरख के रसके साथ १ से २ रती घीस कर पिलाना रोगी वेशुद्धिमें हो तो शिरपर तालुके भागपर अस्त्रासे वाल निकाल छेका देकर उस पर गोली का घीसा हुआ चूर्ण तालु पर घीस खूनमें मिल जाय ऐसा करना। सन्निपात न्युमोनिया सर्पदंश आदिमें गुणकारी है।

महालाक्षादि तैल—(र. सं. ज्व.) आककी या अन्य किसी वृक्षकी कच्ची लाख तोला ४८, चन्दन पडला वाला मूलेठी शतावरी कुटकी देवदार हलदी कुष्ठ मजीठ अगर काला वाला असगंध वलामूल दारुहलदी मोरवेल नागरमोथ इलायची दालचीनी नागकेसर रास्ना तमालपत्र प्रत्येक सोलह सोलह तोला लेकर सब कूट कर उसमें खट्टा दही तोला ८० और पानी सबसे ८ गुना डाल कर पकाना आधा पानी रहनेसे उसमें तिलका तेल अथवा सरसोंका तेल रतल १६ डालकर पानीका अंश जल जाय और द्रव्य सब पक जाय जब उतार लेना। स्वांगशीत होनेपर कपडछान कर रख छोडना। सब प्रकारके ताप उतारने रुकने के लिये उत्तम है और शरीरकी अंदरकी बहारकी जलन दाह शोष खुजली त्वचा विकार आदिमें गुणकारी है।

अतिसार

दस्त ज्यादा होना

कारण—गरिष्ठ और चीकने पदार्थ, रुक्ष, प्रवाही पदार्थ खाना, भोजनकी चीजें ठंडी हो गइ हो ऐसी हरवख्त खानेकी आदत, मिष्टान्न और बाजारकी मीठाई आदि अधिक खाना और खुराक पाचन न होने पर भी भोजन करते रहना। विषविकार, शोक भय बिगडा हुआ पानी पीना, अधिक मद्यपान, पेटमें कृमि जंतुका उपद्रव इत्यादि कारणोंसे और बच्चोंको दांत आते वख्त, दस्तका रोग होता है।

चिह्न—छाती नाभि करवट और पेटमें शूल आना, अधो वायुका अवरोध, आफरा, आदि चिह्न के साथ अतिसार होता है। आम कच्चा दोषवाला हो तो मल जलमें डूब जाता है दुर्गन्ध आती है। चीकनाइ ज्यादा होती है औ पक्वदोष वाला अतिसार हो तो दुर्गन्ध कम, चीकनाइ कम, पानी में तरे और बारवार पतले दस्त होते हैं। दस्तके साथ मुखसे पानी गिरना, अरुचि जीभ पर मैली छारी, पेट पर वायु और शूल, खट्टे दुर्गन्धवाले डकार, कमजोरी और कभी कभी खून का गिरना आदि चिह्न मालूम होते है।

पथ्यापथ्य—खुराक बंध करना पेटमे भार हो, भूख न लगे वहा तक दो तीन दिन उपवास कराना। पीछे पतला और सादा खुराक देना। खीचडी कढी, छाश भात, गेहू बाजरीकी पतली राब, मुंगका पानी आदि रोगीकी प्रकृति और रोगका स्वरूप देख कर देना। भेजवाला मकान, गंदगी, मलिन कपडे, मलिन बिछाने आदि रोगको बढाते हैं। ठंडी ऋतु हो तो अंगीठी पास रखना और कपडे के गोटेसे पेट और पेडू पर शेक करना। महानारायण तेल अथवा महालाक्षादि तेल पेट पर मालिश करना। दस्त बंध होने के पीछे भी १०–१५ दिन तक सादा खुराक देना। बच्चोंका दांत आनेसे या माताके आहार विहारकी अनियमिततासे दस्त होते हो और बच्चा स्तनपान करता हो तो उसकी माताको खानपानमे सम्हाल रखनेक सूचना देना। यदि बच्चेको दूध पिलाया जाता हो तो वायविडंग और सोंठका चूर्ण चुटकी डाल कर पिलाना। बच्चोंको बालरोगघ्नवटी, महागंधक, बालार्क आदि औषध देनेसे दस्त कम हो जाता है।

चिकित्सा—

आनंद भैरव गुटी (र. प्र. अ. ८.)

पकाया हुआ टंकण हिंगुल शुद्ध, शिंगिया वछनाग, काली मिरच और धतूरे के बीज सब समान भाग लेकर, जमीरी निंबु के रसमे घोट कर गुंजा प्रमाण गोली बनाना। सब प्रकार के अतिसार मे दो से तीन गोली पानी के साथ दी जाती है। बच्चोंको आधी या एक गोली देना।

कर्पूर सुंदरी गोली—(र प्र अ ८) कपूर, जायफळ, जायपत्री, कनकबीज, समुद्रशोष के बीज, अकलकरा सोंठ, पीपल, काली मिरच चोपचीनी और लता करंज[१] के बीजकी गीरी (भुन कर अंदरसे गर्भ निकाल कर लेना) प्रत्येक चार चार तोला और भाग २२ तोला, अफीम २१ तोला और शुद्ध वछनाग ११ तोला सबसाथ मिलाकर भांगरेके रससे घोंट कर चना समान गोली बनाना। २ से ३ शहदके साथ देना। इससे सब प्रकार के अतिसार, संग्रहणी, मंदाग्नि, बवासीर आदि रोग मिटते हैं। और इस गोली के सेवनसे अफीमकी आदत भी छूटती है।

स्पष्टीकरण : वर्तमान सरकारी एकसाइज कानूनके अनुसार किसी भी आयुर्वेदिक औषधीमे सेकडा जीतना टका अफीम डाला जाता हो डालना अर्थात कानून बदलता जाता है जिस वख्त जो कानून हो अफीम डालनेका ध्यानमें रखे। अफीम कम होनेसे उसका कुछ गुण औषधमे लानेके लिये रसशाला औषधाश्रममें उपर लिखे एक घाणमें ४० तोला पोस्तका डोडा और २० तोला खसखस कूट कर इसके क्वाथकी भावना दे कर पीछे भांगरेके रस की भावना दी जाती है।

अगस्त्य सूतराज (यो. र. संग्रह.) पारद १ तोला, गंधक १ तोला, शुद्ध हिंगूल २ तोला, अफीम ८ तोला कनक बीज ८ तोला भांगरा के रसकी भावना देकर तैयार किया जाता है। इसकी मात्रा २ रती मे त्रिकटु ४ से ६ रती मिलाय शहदसे देना। उपर पानी पीवे झाडा मरडा संग्रहणी वमन उबका उत्क्लेद शूल मे गुणकारी है। सब अतिसारमे दो मासा जीरा का भुका, १ वाल जायफळका चूर्ण १ रती यह रस मिलाकर पानीसे देना।

---

१ लताकरंज गुजरातीमें काकचीया अथवा काकचा कहते हैं।

चित्रकादि वटी—(भाव अति.) चित्रक पिपलीमूल और यवक्षार प्रत्येक एक १ तोला, पचलवण पाचो मिल ५ तोला, त्रिकटु तीनोमिल ३ तोला, हिंग अजमोदा चवक प्रत्येक एक एक तोला सब साथ कूट बीजोरे के रसकी और दाडिम के रसकी एक एक भावना देकर ३ रती की गोली बनाना। मात्रा ३ गोळी पानीसे देनेसे सब प्रकारका सब दोषका अतिसार मिटता है।

अभयनृसिंह—हिंगुल, शुद्ध वछनाग, सोंठ पीपल काली मिरच जीरा सोहागा पारद गंधक अभ्रक भस्म सब समान भाग लेना और अफीम सब के समान मिश्र कर नीबु के रस की भावना देकर सुखाकर घोटकर तैयार करना। जीराके चूर्ण मे १ रती यह रस मिलाकर शहद से रोग का स्वरूप देखकर दो वख्त या अधिक वख्त देना। अतिसार के साथ ताप हो या न हो सब दोष के सब प्रकार के अतिसारमे उत्तम गुणकारी है।

कपूर रस—(भै. अति) हिंगुल अफीम नागर मोथा, इन्द्रजौ जायफल कपूर सबसमान भाग लेकर घोंट रखना। २ से ३ रती रसमे दो मासा जीरा चूर्ण और शहदसे देना। सब प्रकार के अतिसार संग्रहणी मुरडा अतिसारमे खून गिरना आदि मिटते है।

वृद्धगंगाधर चूर्ण— (भाव. अति) नागरमोथा, अरलूकी छाल, सोंठ धाइ के फुल लोध्र वाळा बेलफलकी गिरी, मोचरस, पाठा, इन्द्रजौ, कूडेकी छाल आमकी गुठली लज्जालु अतीस समभागसे कूट रखना। २ से ४ मासा शहदसे देकर उपर पकाया हुआ चावलका पानी पिलाना। सबप्रकार के अतिसार संग्रहणी आदिरोग मिटते है।

कुटजावलेह— (र. स. अति) कुडाकी छाल अथवा मूल ४०० तोला और भुइआंवली[१] तो १०, मुलैठी का मूल तो १०, नागरमुस्ता तो. १०, वाला तो १०, पाठा १० तोला, चित्रक मूळ तो १०, छोटी कटहरी मूल १० तोला कूट कर उसमें पानी पक्का १ मन डालकर क्वाथ करे। चतुर्थांश रहे जब कपडछान कर इसमें गुड पक्का १ मन डालकर पकावे। कुछ गाढा होदे जब नीचे लिखे द्रव्य डाल कर पकावे। अवलेह जैसा हो जब इसमें शहद पक्का शेर ५ पाच मिला देवे। इन्द्रजौ, अजमोद, लज्जालु, वायविडंग, धनिया, बेलका गर्भ, सोंठ छोटी पीपल, लोध्र, नागकेशर, जामुनकी गुठली, आमकी गुठलीका गर्भ और कुडेकी छाल प्रत्येक शोलह शोलह तोला कूट कर मिला देना। अतिसार संग्रहणी शूल आदिमे उत्तम है।

---

१ भुंईआंवली-संस्कृत में भूम्यामलकी, गुजरातीमे भों आंवली।

संग्रहणी (आंत्रक्षय)

कारण—अतिसारका रोग मिटने के पीछे कइ दिन तक जठराग्नि मंद रहती है, उस समय अजीर्ण करनेवाले गरिष्ट पदार्थ खानेसे, अधिक खुराक लेनेसे जठराग्नि बिगड कर पित्तधरा नामक कला जिसका ग्रहणी नाम है वह बिगड कर यह रोग होता है। अनियमित भोजन, अतिभोजन, अधिक पदयात्रा, मलमूत्र के वेग रुकना, चाय, आइसक्रीम, गुल्फी, बरफ वगैरह अतिशय पीनेकी खांड शक्कर का खुराक अधिक खानेकी आदत इत्यादि कारणसे यह रोग होता है।

चिह्न—इस रोग के रोगी खाया हुआ अन्न पाचन होवे खट्टा बनता है, शरीर रूक्ष सूखा होता है। तृषा ज्यादा लगती है। संग्रहणीका यह मुख्य चिह्न है। आंखमे झांख, कानमें आवाज, पसलियों और सांधोमें शूल, हृदय में पीडा, शरीरकी प्रतिदिन बढती हुई निर्बलता, मलद्वार पर कोइ चीरता हो ऐसी पीडा, खारा और खट्टा रस पर प्रीति, किसी समय पतला तो किसी समय सूखा कष्टके साथ या बिना कष्टको दस्त होना हाथमे पैरमे सूजन। यह दरद दिवसको और रातको शांत रहता है। पार्श्व-करवटमें शूल, मल निकलते समय घडा खाली होता है वैसा आवाज, ताप रहना, सुस्त, लेटा रहनेकी इच्छा ये असाध्य लक्षण माने जाते है।

पथ्यापथ्य—स्नान नही करना। यदि आवश्यकता लगे तो सप्ताहमें ऐकाध दफे थोडासा गरम पानीसे स्नान करना। पानी बहुत पीना नहीं। चिकने पदार्थ, लड्डु जैसे मिष्टान्न, तले हुये पदार्थ, बाजारकी मीठाइ, खांडकी चीजें नही खाना। जो जो खुराक रोगी लेता हैं वह वैसा ही मलद्वारा बाहिर निकलता है। अतः इस रोगके रोगीको पतला, तदन हलका दीपन, वातपित्त कफ नाशक खुराक देना। छोटी चमच घीमें जिरा और हींग डाल कर अग्निसे पकाकर छांछको बघार देना और उसमें सेंधानोन अदरख हरा धनिया मीठानीम डाल कर वह छांछ खुराकके लिये देना। औषध के उपचारसे खुराकका पाचन होने लगे वैसे थोडा थोडा भात खीचडी, कढी मुंगका पानी आदि देना। संग्रहणी में वायु पित्त और कफ जिस दोषका प्राधान्य हो उसका खयाल रखके औषध और अनुपान देते रहना।

आमातिसार-मुरडा

कारण—गरमा गरम खुराक, बहुत तीखे, चिरचिरे, बहुत खट्टे रातवासी सडे हुये, बिना भुख पेटमें डालते रहने कि आदत, बाजारकी चीजें

पर प्रीति आदि कारणोसे अजीर्ण मलावरोध होकर यह रोग होता है। अब आंकडो-चूंक शूल चोट आती है। मंदाग्निवाले और आंतोकी कमजोरी वाले रोगीको यह रोग हर वख्त हो जाता है। अपक्व मल आंतो मे रुककर वहां क्षत पडते हैं, इससे आंतो मे सूजन होकर उसकी वेदनासे शूलके साथ मुरडा होता है। यह रोग मिट जाने के पीछे भी इसकी असर रहा करती है जो वर्षो तक रहती है और कभी कभी उमड कर दूसरे रोगोका कारण बनता है।

चिन्ह—पीडा चौंट शूल के साथ आंकडो आकर मल बाहर निकलना है मल थोडा पूयके साथ पडता है कभी खूनभी गिरता है। रोगी शरीर के भागोंको इधर उधर मरोडता है और असह्य वेदना सहन करता है यह रोग सांक्रमिक चेपी या जंतुओसे उत्पन्न होने की मान्यता ठीक नहि है। कई रोगीको सख्त मुरडा होकर दस्त होते हैं, और कई केसमे मलबंध होकर टुकडे टुकडे से थोडी थोडी देरसे दस्त आता है। दस्तकी हाजत रहा करती है। दस्त करते समय रोगी कणछता है, बैठे रहनेकी इच्छा करता है लेकीन थोडे बुंद या आम या खूनके थोडे बुंद पडते हैं। नाडी की गति बढती है। जीभ पर सुफेद मल जमता है। दो तीन दिन रोग बढकर १० से १५ दिनमे आराम की ओर आने लगता है। तीव्र मुरडा मे शरीर मे थोडा ताप रहता है। भूख मंद होती है। पांवकी पिंडलियो मे गुठले चडते है पेट फूलता है। दस्त मे दुर्गंध रहती है। आंखे गहरी उतरती है। मुरडा १५से२० दिन के पीछे पुराना कहा जाता है। और पीछे संग्रहणीका रूप लेता है।

पथ्यापथ्य—रोगीको स्वच्छ कपडे स्वच्छ बिछाने में रखना। पीनेका पानी गर्म कर ठंडाकर पिलाना। पिण्डलीयोंमे गुठली चढे या दर्द हो तो कपडे के गोटेसे शेक करना। महानारायण, महालाक्षादि टेल पेट जांघकी पिण्डलियां आदिमे मालीस करना। अण्डो के तेलका जुलाब देना। खुराक में दूध मोसंबीका रस देना छांछमे या दही के घोलमे जीरा सेंधानोन धनिया डालकर देना। खुराक मे खीचडी कढी मुंग तुवर या मुंग मठकी पतलीदाल देना।

संग्रहणी मुरडाकी चिकित्सा

लाई चूर्ण—(भाव संग्र) गंधक १ तोला, पारद तोला ०॥, त्रिकटु तीनोमिल ३ तोला, पंचलवण के प्रत्येक लवण डेढ डेढ तोला, हींग जीरा शाहाजीरा प्रत्येक १॥ डेढ डेढ तोला सब साथ विधिवत् मिलाय सबका जितना तौल हो उससे आधे तौलसे अर्थात् ७॥। पौने आठ तोला भांग मिलाकर तैयार करे। मात्रा १ से २ मासा छांछसे दें। सबप्रकार का अतिसार संग्रहणी मिटते है।

पंचामृत पर्पटी (र. म)

चत्वारिंशद् भागा गंधस्य च पारदस्य दश भागाः
कृत्वा कज्जलिकां वै लोहाभ्रस्वर्णमाक्षिकाणि स्युः ॥१॥
प्रत्येकं दशभाग सर्वं संमिश्य लोहमात्रस्थं
गोघृतमथ दशभागं पक्त्वा द्रवितं च ढाल्यमेवैतत् ॥२॥
कदलीदले ह्यधश्चोपरिसंस्थे गोमये च सद्यस्के
यामचतुर्थानन्तरमिति निष्कास्याथ मर्दयेत्खल्वे ॥३॥
कथिता सर्वगदघ्नी पंचामृतपर्पटी भिषङ्मातः ॥
गुंजैकामारभ्य द्वादश गुंजावधि प्रयुञ्जेय ॥४॥
सैंधव जीरकघोलैः संग्रहणी रोगनाशिनी सिद्धा ॥
अथवा मधुनवनीतैरतिसारार्शःक्ष[illegible]पित्तानि ॥५॥
मन्दाग्नि पाण्डुरोग स्त्रीगद जीर्णज्वरादिरोगेषु ॥
नानानुपानयोगैश्चिन्हान्यन्यानि वीक्ष्य योज्येयं ॥६॥
ताम्रभस्म प्रयोगोऽत्र दृष्टो ग्रन्थान्तरेषु च ॥
अस्माभिरनुभूतेयं सिद्धा माक्षिकयोगतः
रोगप्रशमनं सद्यः करोति निरुपद्रवम् ॥७॥

रस संहिता-संग्रहणी ॥

४० तोला गंधक, १० तोला पारद, दोनोंकी कज्जली कर उसमे लोहभस्म अभ्रकभस्म स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक दश दश तोला मिलाना। आरने उपलका मृदु अग्नि कर चुल्हे पर लोहेकी कडाई रख उसमे १० तोला गायका घृत डाल लोहेके तवियासे हिलाना। सब पिघलने पर ताजा गोमय-गायका छाण के उपर बिछाये हुए केलोके पत्ते पर ढाल दें उपर दुसरा पत्ता दाब कर उसके उपर दुसरा गोमय दाब दें। पत्ते के जितने भागमे पर्पटी हो सब दब जाय इस प्रकार गोमय अच्छी तरह दाबे। १२ घंटाके पीछे धीरेसे समालकर गोमय दूर कर दो पत्ते के बीच रही हुइ पर्पटी निकाल कर अच्छो तरह घोंट रखे।

मात्रा १ रत्ती से आरंभ कर १२ रत्ती दी जाती हैं। शहद घृतसे अथवा शहद मक्खनसे देकर उपर जीरा सेंधानोन दहीका मट्ठा पिलावे। प्रारंभमे १ रत्ती ४ दिन तक देवे। ५ वे दिनसे २ रत्ती। १० वे दिनसे ३ रत्ती। १५ वे दिनसे ४ रत्ती। २० वे दिनसे ५ रत्ती इस प्रकार बढायी जाती है। इस प्रकार

देनेसे रोगका शमन हो उस मात्रामे जारी रखे और आवश्यकता के अनुसार मात्रा बढावे या कम करे। इस प्रकार देनेसे संग्रहणी का रोग मिटता है। अतिसार मुरडा पुरानी डीसेंट्री आदि रोग फिर उत्पन्न नहि होता और इसके बीज भी नहि रहता। बवासीर क्षय अम्लपित्त मंदाग्नि पांडुरोग औरतो के रोग अजीर्ण आदि रोगोमें बुद्धिपूर्वक उचित अनुपानसे दी जानेसे प्रत्येक रोगका शमन होता है। रोग मिटनेके पीछे भी पंद्रह वीस दिन तक सेवन करना ठीक होगा।

इस पंचामृत पर्पटीमें ताम्रभस्म का योग कई ग्रन्थो मे लिखा रहता है हमारे अनुभवसे ताम्रभस्म गुणकारी है फिरभी उग्र होनेसे आंतोंको क्षोभ करती है रससंहिताके अनुसार ताम्रके स्थान मे सुवर्ण माक्षिक डालने से बहुत अच्छा गुण करती है। सो इसप्रकार बनाकर अनुभव करे और लिखे रोगोंका शमन कर यश प्राप्त करें।

पंचामृत पर्पटी (भैष. संग्रह. ३८५)

८ तोला गन्धक, ८ तोला पारद, लोह भस्म तोला ४, अभ्रक भस्म तोला २, ताम्र भस्म तोला १ लोहेके बर्तनमें पकाकर पर्पटीकी रीतिसे बनाना। २ रती से प्रारंभ कर ८ से ९ रती तक क्रमसे बढाते हुए रोगी की स्थिति देखकर सेवन करावे। शहद घृतके साथ दी जाती है। सर्वदोषो की संग्रहणी में अतिसार मे अरुचि बवासीर वमन ज्वर के साथका अतिसार नेत्ररोग रक्तस्राव क्षय आदि रोगोमे उत्तम गुणकारी है। जठराग्निको प्रदीप्त करती है।

लोहपर्पटी—(र. सं. मे)

सूतः पलमानः स्यात्तावद् गंधश्च कज्जलीकृत्य ॥
जम्बूफल रस पक्वं लोहं भस्मापि सूतमानं स्यात् ॥ १ ॥
संमर्द्य पर्पटीवद् गोघृतलिप्तेऽयसः कटाहे तत् ॥
मृद्वग्नौ संपाच्यं रंभापत्रेथ गोमयस्थे वै ॥ २ ॥
संढाल्य मर्दयित्वा सेव्या दधिजीरकैरथो मधुना ॥
इयं संग्रणी रोगे संसिद्धा लोहपर्पटी ॥ ३ ॥
दद्याद् गुंजाद्वयी मात्रा यावत्सप्तदिनं भिषक् ॥
पश्चात्प्रतिदिनं चैकां गुंजां यावच्चतुर्दश ॥ ४ ॥
वर्धयेद्रोगशांतिः स्याद् ह्रासयेच्च तथाविधं ॥
असाध्यां ग्रहणीमामातीसारसूतिकागदान ॥ ५ ॥
पांडुप्लीहाग्निमांद्यादि कुष्ठार्शः कामलागदान् ॥
हन्ति वृष्या तथा बल्या रसायनगुणप्रदा ॥ ६ ॥

पारद तोला ४, गंधक तोला ४ दोनों की कज्जली कर जामून के फलके रसमें पकाया हुआ लोह भस्म तोला ४ मिलाय घोट लोहेकी कढाई में गायका घृत चुपड कर उसमे वह मिश्रण डाल, मंदाग्निसे पकाना। गोबर पर रखे हुए केलीके पत्ते पर ढालकर उपर ओर पत्ता गोबर दाब कर स्वांगशीत होने पर घोट रखें। दहीका घोल और जीरे के चूर्ण के साथ २ दो रत्ती मात्रासे प्रारंभ कर ७ दिनतक देना पीछे प्रतिदिन एक एक रत्ती बढाना जहांतक १४ रत्ती एकदिकी मात्रा हो। आराम हो जब तक इस मात्रा से चला रखें। आराम होनेसे फिर एक एक रत्ती प्रतिदिन घटाते हुए बंद कर दें। रोगीका बलाबल शरीरकी स्थिति रोगका स्वरूप रोग के साथ अन्य जो जो चिन्ह देखनेमे आते हो सबका विचार कर उपर लिखी मात्रा मे न्यूनाधिक करना उचित लगे तो करते हुए औषध चालु रखे। और आवश्यकता हो तो अनुपान रोगानुसार बदलते रहें। असाध्य संग्रहणी आमातिसार सूतिकारोग पांडु तिल्ली मंदाग्नि कुष्ठ बवासीर कमला आदि रोगकी शांति होती है यह लोह पर्पटी बल रक्तवर्धक पौष्टिक और रसायन जैसा गुणकरती है।

सुवर्ण पर्पटी (र. सं. यो. र.)

शुद्धरसोऽष्टौ तोलाः स्वर्णदलं तोलकैकमात्रं स्यात् ॥
मर्दनविधिनैकीकृतमथ गन्धस्तोलकाष्टकस्तत्र ॥ १ ॥
क्षिप्त्वा कज्जलिकां कुरु लोहकटाहे घृताक्तदर्व्या तत् ॥
मृद्वग्निना च पक्त्वा गोमयसंस्थे दलेथ रंभायाः ॥ २ ॥
सद्रवस्योपरि पत्रं दत्वा संच्छादयेच्च गोमयतः ॥
स्वांग शीतं ज्ञात्वा निष्काश्य च मर्दयेत् शुभे खल्वे ॥ ३ ॥
गुंजाद्वयमारभ्य स्याद् गुंजादशमिता यथा मात्रा ॥
मधुना कृष्णाचूर्णैः संग्रहणी श्वास कास यक्ष्महरी ॥ ४ ॥
हृद्या मेध्या वृष्या बलशुक्र विवर्धिनी मता सद्य. ॥
रससंहिता प्रयुक्ता सिद्धेयं स्वर्णपर्पटी पथ्या ॥ ५ ॥

शुद्ध पारद ८ तोला सोनाका वर्क तोला १ अथवा सुवर्ण भस्म तोला १ डाल कर घोटे। स्वर्ण पारदमे मिल जाय जब शुद्ध गन्धक ८ तोला मिलाय कज्जली कर लोहेकी कढाईमे गायका घृत चुपड कर मंद अग्निसे पका कर रसरूप होनेसे गोबर पर बिछाये केलीके पत्तेपर ढाल उपर दूसरा पत्ता गोबर दाब स्वांगशीत होनेपर घोट उपयोगमें लें। २ रत्ती मात्रा शहद और छोटी पीपलके चूर्णके साथ प्रारंभ करे दूसरे सप्ताहमे प्रतिदिन एक एक रत्ती बढा कर दश रत्ती प्रति-

दिनको मात्रा रोग शांति हो जाय तक देते रहे । पीछे एक एक रत्ती प्रतिदिन कम करते हुए बन्द करें। संग्रहणी श्वास खांसी क्षय हृदयरोग आदिमें गुणकारी है। हृदय को बलवान करती है बुद्धि रक्त वर्धक, पौष्टिक है बल क्रमको बढ़ाती है। इस पर्पटी मे ग्रन्थान्तरमे सुवर्णवर्क १ तोला डालनेका भी पाठ है। अर्थात् ८ तोला पारद ८ तोला गंधक में १ तोला मे नाका वर्क के स्थान में दो तोला भी डाला जाता है।

सिद्धनाथी कांचन पर्पटी (रसाय नामृत)

शुद्ध पारद में तो १० मे २ तोला स्वर्णभस्म अथवा सोनेका वर्क (पत्ता) डालकर घोटे, मिल जानेसे पीछे उसमें शुद्ध गन्धक तोला २० डाल कज्जली कर पीछे उसमे माणिक्य पिष्टी प्रवाल चन्द्रपुटी अभ्रक भस्म सिध्दन्द्र, लोह भस्म रौप्य भस्म प्रत्येक चार तोला डाल घोट लोहेकी कढाई मे गायका घृत चुपड कर सब मिश्रण डाल मन्द अग्निसे पकाना लोहेके तवेया पराती घी चुपड कर हिलावे। रसरूप प्रवाही हो जानेसे गोबर पर बिछाये केलीके पत्ते पर रसको डाल उपर केलीका पत्ता दाब उपर गोमय दाब दे। १२ या २४ घंटाके पीछे पर्पटी लेकर घोट रखे। मात्रा २ रत्ती से प्रारंभकर यथा बुद्धियन्नोदयसे रोगीकी हालत देखकर आवश्यकताके अनुसार मात्रा बढावे घटाये। शहद मधुमनसे या शहद छोटी पीपलसे या रोगानुसार अनुपानसे देवे। खुराक भी रोगको देखकर देवे। संग्रहणी पुराना मुरदा बेझेरा क्षय कृशता कमजोरी धातुक्षीणता उदर हृदय फेफडोंके रोग आदिमें उत्तम है। बलबुद्धि शुक्रकांति मेधा आयुष्य वर्धक है।

ग्रहणी कपाट (रक्त) (र सं)

रससिंदुर तो १० में सुवर्णका वरख (पत्ता) तो १ डालकर घोट मिल जाने पर उसमे गंधक तोला २० डालकर घोटना। मिश्र हो जानेसे उसमें रौप्य भस्म तो १. कनक बीज तोला २, लोह भस्म तोला ३ साबरसिंग भस्म तो. ४ सफेद सींगिया (श्वेत वत्सनाभ) तो. २. अतिविष, विजया, नागरमोथ फूल मायफल, इन्द्रजौ, कुडेकी छाल प्रत्येक तो. ४ अफीण तो १०, सब साथ मिला कर, कोठेका गर्भ और निंबू और भांगरा प्रत्येक के रसकी एक भावना देकर गुंजा प्रमाण गोली बनाना। मात्रा २ से ३ गोली पानीके साथ देना। दिनमे दो या तीन दफे पानी के साथ देना। रोगका स्वरूप और दोषोंका चिन्ह देखकर मात्रा और समय न्यूनाधिक करना और अनुपानकी आवश्यकता हो इस प्रकार बदलते रहना। संग्रहणी, अतिसार, पुराना मुरदा, शूल, बवासीर रक्तस्राव, गुदभ्रंश आदि रोगोंमें उत्तम गुणकारी है।

ग्रहणी गज केसरी (रस रत्न समुच्चय पृ ३५५ अनुसार)

शुद्ध पारद तोला ५ और शुद्ध गंधक तोला ५ लेकर कज्जली बना कर लोहेकी कढाई में पिघाल कर उसमें कोडी भस्म, सुवर्ण माक्षिक भस्म और शुद्ध गंधक प्रत्येक तो. ५ डाल कर गाय के गोबर पर बिछाये हुये केली के पत्ते पर डाल कर उपर केलीका पत्ता और गोबर दाब देना। २४ घंटा के पीछे निकालकर लोहेकी खरल में घोट कर उसमें सुवर्ण माक्षिक भस्म रफ तो. ५ और अभ्रक भस्म तो, २० डाल कर सबका जितना वजन हो उससे आधे वजन में नीचे लिखा अति विषादि चूर्ण मिला देना। पीछे अरणि, मरेठी (महाराष्ट्री), भांग, अश्वगंधा और पंचकोल (छोटी पीपल, पीपरी मूल चवक चित्रकमूल और सोंठका समभागसे किया हुआ चूर्ण पंचकोल कहा जाता है) प्रत्येकके कवाथ के एक एक भावना देकर छायामे सुखा कर घोट रखना।

नंदी योगीने बनाया हुआ यह रस अमृत समान गुणकारी है। प्रातः और शाम दो दो रती शहदसे या दहींका घोल और जीरे के चूर्णसे देना। पुराना मुरडा. संग्रहणी, आंतों के रोग, हृदय के रोग, आमाशय और पकवाशय के रोग, बवासीर, सब प्रकारके अतिसार, पेटका फूलना, आदिमें उत्तम गुण करता है।

पथ्यमें दहीका घोल और छाछमे सेंधानोन डाल कर गायके घीका बघार दे कर खुराकके लिये देना और साथ लघु रुचिकर ग्राही खुराक देना। खुराकका पाचन होता है, जठराग्नि प्रदीप्त करता है, आमका पाचन होता है और खुराक पर रुचि बढाता है।

रत्नकला चूर्ण—(र. सं.) चिरायता, कुटकी, नागरमोथ, इन्द्रजौ, सोंठ, छोटी पीपल, काली मिरच प्रत्येक तोला ४, कुडेकी छाल तोला ६४, चित्रकमूल तोला २ सब साथ कूटना। दो से चार माशा शहदसे या छाछ के साथ देना।

ग्रहणी हर क्वाथ—(र सं) सोंठ, चित्रकमूलकी छाल, हरड, लताकरंजके बीज, बीलीका गर्भ पुनर्नवा, काली मिरच, शरपुंख, कुडेकी छाल सब समभागसे लेकर कूट कर रखना। मात्रा प्रात. और शामको २ से ४ मासा पानी या शहदसे देना।

संग्रहणी और मुरडामें छाछ

गायके दहींकें हाथसे या रवैसे मथन कर छाछ या घोल बनाना। जैसे वायु प्रधान हो तो सेंधानोन डाल कर, कफप्रधान हो तो नमक और काली मिरच डाल कर और पित्त प्रधान हो तो शक्कर डालकर ली जाती है। संग्रहणीमें खास कर नमक जीरा और हिंगसे गायके घीसे बघार देकर खुराकके रूपमें देना। बवासीर, अतिसार और गुदभ्रंश में भी छाछ हितकारक है।

न तक्रसेवी व्यथते कदाचित् रोगो न तक्राभिहता भवन्ति ।
यथा सुराणाममृतं हिताय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ॥

संग्रहणी अतिसार बवासीर आदिमें समान्य प्रयोग

प्रयोग १ सुबह और शाम खट्टा न हो ऐसा माक्षापन २ से ८ तोला तक्र पिलाना। च्यवनप्राश २ से ४ तोला खिलाना। पंचामृत पर्पटी कुटजावलेहके साथ २ से ४ रती देना।

प्रयोग २ अगस्तिसूतराज तोला ०॥, ग्रहणी गजकेशरी, तोला ०॥, सुवर्ण पर्पटी तोला १ साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना। एक सुबह एक शामको आवश्यकता हो तो एक रातको पानी या शहदसे देना।

प्रयोग ३ अदरखका रस तोला ५, गायका घी तोला ४० में डालकर पकाना, पानी जल जाय जब बर्तनमें भर रखना। यह घी अतिसार संग्रहणी आदि रोगीको भोजन औषध आदिमें देना।

प्रयोग ४ रसौत* अतीस, इन्द्रजौ, कुडेकी छाल सोंठ, धाईके फूल समभाग कुट कर २ से ४ माशा प्रातः सायं शहद से देना। उपर चावलको पकाकर उसका पानी नमक हलदी डालकर खुराकके रुपमें पिलाना।

प्रयोग ५ शंकरलोह भस्म तोला १, अभ्रक भस्म, निश्चंद्र तोला १, प्रवाल चन्द्रपुटी तो १, महाचंद्रकला तोला १ साथ घोटकर ६४ पुडी बनाना सुबह शाम एक एक पुडी लेकर उपर दूध या छाछ पिलाना।

प्रयोग ६ अहिफेनादि वटी:-खारेक या खजूरके बीज तोला २॥, सोंठ तोला २॥, अफीम तोला १॥ साथ पीस निंबूके रसमें चना जैसी गोली बनाना। १ से १ गोली दिनमें दो से तीन दफे देना। अतिसार, संग्रहणी, बच्चोंके दस्त और कोलेरामें भी यह अच्छा काम करती है।

प्रयोग ७ दाडिमके बीज, शाहजीरा और शक्कर प्रत्येक ०। ०। तोला मिलाकर शहदमें खिलाना।

प्रयोग ८ पाठा × अतीस, कुडेकी छाल, धाईके फूल, रसौत, सोंठ, बिलोगर्भ समभाग कुटकर २ से ४ माशा शहदसे देना। उपर चावलका पकाया हुआ पानी खुराकके लिये देना। यह संग्रहणी रोग के अलावा दस्तमें गिरता खून भी बंध होता है। इस चूर्णका क्वाथ करके भी पिलाया जाता है।

---

*रसौत- गुजरातीमें रसवंती, जिसका रस आंखमें अंजन किया जाता है।
×पाठा गुजरातीमें कालीपाट कहते हैं।

बवासीर–अर्शोरोग–मसा

कारण–भूख मंद होने से, अन्न पाचन कम होनेसे, बिगडे हुये वात पित्त कफ दोष मांस मेद आदिको दूषित कर गुदामें विविध आकृतिवाले मांसके अंकुर उत्पन्न करते हैं। क्रोधसे, मलवान के साथ रहनेसे, दिनको सोनेसे, रातको जागरण करनेसे, उभडक+ पांवसे बैठनकी आदतसे, ऊंट और घोडेकी अधिक सवारी, गुड, लाल मिरच, मुंगफली, सिंगदानेका तेल, वेजीटेबल घी और मिलावेंकी गिरी आदि चीजें अधिक खानेकी आदत इत्यादि कारणोंसे बिगडे हुये वात पित्त कफ के साथ वहन होता हुआ रक्त जिन्हासे वहन करनेवाली धमनीओंमें घुसकर गुदामें आकर गुदाकी वलीयोंको दूषित कर मांसके अंकुर उत्पन्न करता है। जब अनेक कारणोंसे जठराग्नि मंद होकर खुराकका पाचन नहीं होता तब बढा हुआ मल गुदाकी वलीओंमें अटकनेसे वलीभी फूल जाती है और वहां मांसके अंकुर उत्पन्न होते हैं। अति स्त्रीसंगसे, कठिन आसनपर बैठे रहनेसे, मलोत्सर्गके समय अधिक बल करनेसे, मलमूत्रका वेग रोकनसे बैठे रहनेकी आदतसे, शारीरिक श्रम कम करना और खुराक अधिक खाना बहुत भारी नमकीली तीखी जलद चीजें खाना आदिसे, जलद दवा या दारू पीनेसे, पाचन क्रिया बिगाडनेवाले कारणोंसे बवासिरका दर्द होता है।

चिह्न–अपान वायु छूटता नहीं है। अपान वायुकी ऊर्ध्व गति होनेसे समान उदान व्यान अपान और प्राण वायुको बिगाड कर जठराग्निको बिगाडता है ताकि बवासीर का रोगी कृश और कांतिहीन होता है। गरम चीज खानेसे जीभ लाल होकर उसमें चाँदा पडते हैं। फिरते घुमते श्वास चढता है, शरीरमें ताप रहता है। मुख और हाथ पाव पर सूजन और नपुंसक जैसी स्थिति, आंखोंमें अंधेरा, मन चिंतातुर, सांधे में दर्द इत्यादि चिह्न मालूम पडते हैं।

सूखा बवासीर–अंकुर सूखे बिना गुदामें दर्द होता है, शूल भोंकता हो ऐसी मंद वेदना होती है। कडे और लाल रंगके होते हैं। अंकुर पर नख मारनेसे मालूम नहीं होता। गायकी जीभ जैसा खरखट। आकृति बोर, रूईके कच्चे फल और खारेक के बीज जैसी होती है। डकार, हस्तकी कब्जी,

---

+ उभडक बैठना–दस्त जाते वक्त जिस प्रकार बैठा जाता है इस प्रकार बैठनेकी आदतको गुजराती में 'उभडक बेसवु' कहते हैं।

जातीको सूजन, खांसी, श्वास, मल सूखा और कभी फेनवाला, चीकना और पीडाके साथ आता है। रोगीकी चमडी-नख आंख मुख काला फिक्का, पीला या सफेद पड जाता है।

खूनी बवासीर—मलके जब स्वासीर दबता है तब गरम खून पडता है। खून अधिक पडनेसे रोगा पीला कृश हड्डीके पिंजर जैसा दीखता है, उत्साह कम होता है। जरासा फिरनेसे दम चढता है। ताकात क्षीण हो जाती है। दस्त कठिन काला सुखा उतरता है। भूख मंद होती है। तीखा चिरचिरा जरा भी खा नहीं सकता। खाने से जीभ आ आती है। दस्तके साथ खून बुंदसे या मलसे मिला हुआ पडता रहता है। अधोवायु नहीं छूटता। निंबु या खट्टे पदार्थ खाने से मुख और पांव पर सूजन आ जाती है।

पथ्यापथ्य—गरिष्ट, अजीर्ण करनेवाली मस्तुल दस्त कब्ज करनेवाली, उदरमें वायुप्रकोप करनेवाली, गरम, दाहक, तीक्ष्ण चीजे खाना नहीं। सादा, लघु, पतला, दीपन पाचन करनेवाला खुराक लेना। दस्त प्रतिदिन साफ आने के लिये बडी हरडका चूर्ण, अमलतासका गर्भ या मधुविरेचन चूर्ण योग्य मात्रासे लेना। दूधका खुराक ज्यादा लेना। छाछ, दहीका मठा शहद घृत डाल कर खुराक के लिये देना अच्छा है। सुरण—जिमीकंद आंवला, सुमवी सफरजन, सीताफल दाल भात खीचडी, गेहुं या जौ की राब मख्खन घडी, गायका घी, खीर, मुंग, हरी और सूखी दाल तूधी, परवल चौलाइ मेथी, मेथीकी भाजी, बेदाणा, आदि हितकारक हैं। लाल मिरच, तैल, मेदोकी चीजे मजारका मीठाई आदि हानिकारक हैं।

चंद्रकला अथवा महाचंद्रकला (यो त पृ २०४)

(यो र. पृ. २९८ मूत्राघात प्रकरण)

शुद्ध पारद ताम्रभस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक चार चार तोला, गंधक ८ तोला। पारद गंधककी कजली कर उसमे ताम्र और अभ्रक मिलाकर नागरमोथ दाडिमका रस, केलडेके पेटका रस, सहदेवी का रस, ग्वारपाठाका रस, पर्पट वाला मुशली, शतावरी प्रत्येक मे एक एक दिन भावना देकर इस औषधके बराबर मोचेका तिक्तादि चूर्ण समान भागसे मिलाना।

तिक्तादि चूर्ण—तिक्ता (कुटकी), गिलोयका सत्व, पर्पट, वाला, छोटी पीपल, चन्दन, और अनन्तमूल (सारिवा) सब समान लेकर कूट कर चूर्ण बनाना। यह चूर्ण समान मिलाकर द्राक्षका रस या क्वाथसे सात भावना देना और चनेको

माफक गोली बनाना। यह रस खुनी या सूके बवासीर, अम्लपित्त, प्रदर, अंतर्दाह, बाह्यदाह, जलन, रक्तमूर्छा (ब्लडप्रेशर),

रक्तमूर्छा रक्तपित्त तापज्वरमनानलः ।
मूत्रकृच्छ्राणि सर्वाणि प्रमेहानपि दुस्तरान् ।

ऊपर या नीचेका रक्तस्राव, शरीरका तपना और गरमीका ज्वर, मूत्रकृच्छ्र प्रमेह आदिको शांत करता है।

योग रत्नाकरमें मुशलीके स्थान में रामशीतला के रसकी भावना देना लिखा है। और तिक्तादि चूर्ण में गजपीपरी छोटी पीपल के स्थानमें माधवी लिखा है।

हम योगतरंगिणी के इस पाठके अनुसार यह औषध बनाते हैं।

अग्निमुख लोह (र. सं)

निसोत, चित्रक, निगुंडी गोरखमुंडी, भुइआंवली, प्रत्येक तो ३२ का क्वाथ कर कपडछन कर इस क्वाथमे वायविडंग तो १२, सोंठ, छोटी पीपल, काली मिरच प्रत्येक तो ३, बडी हरड बहेडे (बिभीतक) आंवला प्रत्येक तो. ५, शिलाजित तो. ४८ सबको बनाये हुये क्वाथ में डालकर पकाना। और घट्ट हो जाने से सूखा कर पावडर रखना या चने प्रमाणकी गोली बनाना ३से६ गोली या ३ से ६ रती पानी के साथ देना। सब प्रकारके सूखे या खूनी बवासीर, मंदाग्नि, पेटके दर्द, अजीर्ण, पांडु रोग, सूजन, रक्तशोष, तिल्ली, लीवर आदि दरदोंमें उत्तम फायदा करता है।

अर्शः कुठार (र. स)

पारद तो. १०, गंधक तो. १०, ताम्र भस्म अभ्रक भस्म, वंग भस्म, माक्षिक भस्म प्रत्येक तो ६, अतीस, बिलगर्भ इन्द्रजौ, करंज के बीज, हरड, चित्रक सैंधानोन, कलिहारी काली मिरच, दंती मूल, निसोथ, स्नुही दूध, पकाया हुआ सोहागा, जवखार, प्रत्येक तो. ४ कूट छान कर मिलाना और सबसे तीन गुना गोमूत्र डाल कर पकाना। घट्ट हो जाय तब चने प्रमाण गोली बनाना। मात्रा २ से ४ गोली पानीमे देनेसे सब प्रकारके बवासीर और गुदाके रोग मिटते हैं।

अर्शकरी केसरी रस (र. स.)

पारद तो. १०, गंधक तो २० कज्जली कर उसमे सूखा शिलाजित तो १०, वंग भस्म शाकर लोह भस्म, सुवर्ण माक्षिक भस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक तो ४ मुक्ता पिष्टि, प्रवाल पिष्टि, माणिक्य पिष्टि, वैक्रान्त पिष्टि, प्रत्येक

के. ८-प्रवको मिलाकर, काला हंसराज, बडी हरड, रसौत, पंचामृत और काली द्राक्ष प्रत्येककी अेक अेक भावना देकर छायामें सुखा घोट कर रखना। मात्रा २ से ६ रती शहद मक्खन के साथ। सब प्रकार के बवासीर, रक्तस्राव, प्रदर आदि रोगमें उत्तम गुणकारी है।

धांकर लोह भस्म-दुर्नामारि लोह (भाव. १७६ अर्शोधिकार)

अच्छे लोह अर्थात् स्टील या गजवेलको मनशील गन्धक पत्तुर और पारद इनको मिलाकर लोह पर लेप करना और अग्निमें पका कर लाल हो जाय जब त्रिफलाके क्वाथमें बुझाना। इस प्रकार सब लोहका चूर्ण हो जाने तक पुनः पुनः मनशील आदिका लेप कर करके त्रिफलाके रसमें बुझाते रहना। सब लोहका चूर्ण हो जाय तब नीचे लिखे औषधके रस या क्वाथमे मिलाकर अेक अेक गजपुट देना। त्रिफला, अदरख, भांग, भांगरा मानकंद भिलावा, चित्रक, सूरण ढाक और थुहर। अच्छी भस्म हो जाने के पीछे घीमें मिलाकर लोहेकी कढाइ में पकाना। २ से ४ रती गायके या भेडियाके दूधसे या शहद और मक्खनसे देनेसे सब प्रकारके बवासीर नष्ट होते हैं। वात पित्त, कुष्ठ, विषम ज्वर, गुल्म, पांडुरोग, ग्रेन, आलस्य, अरुचि, शूल, परिणामशूल प्रमेह सुजन रक्तस्राव, इत्यादि रोगोंको शमन करता है। इस भस्मको दुर्नामारि लोह भी कहते हैं। आयुष्य, बल तेजको बढाता है। वलीपलित नाशक है। सब प्रकारके बवासीर के लिये यह सिद्ध औषध है।

करंजादि चूर्ण (र. सं.)

लता करंज बीजका गर्भ, सोंठ, इन्द्रजो, अरडूसी (वासा) के पत्र, सैंधानोन बडी हरड, चित्रक, समभाग से कूट रखना, मात्रा २ से ४ माशा छाछ के साथ देनेसे सब प्रकार बवासीर मिटते हैं।

बवासीर पर सामान्य औषध (घरेलु औषध)

प्रयोग १ जिमी कंद (सुरण) के उपर दो दो अंगुल सफेद मिट्टी लगाकर अगारामें पकाना पीछे उसमें से सुरण निकालकर टुकडा कर, तिल के तेलमें जीरासे बघार दे कर सैंधानोन छिड़कर छांछ के साथ खिलाना।

प्रयोग २ बडी हरडका चूर्ण और गुड अथवा बडी हरडका चूर्ण और शक्कर मिलाकर २ से ४ माशा दो वक्त छांछ के साथ देना।

प्रयोग ३ इलायची बीज और छीलकाके साथ कूट कर ०। तोला, पानी के साथ खिलाना। अेक मासमें सब प्रकारके मस्सा मिटते हैं।

प्रयोग ४. चमार दूधली के पान तोला १ पीस कर गाय के दूध के साथ खिलाना। खुराकमें चावलको दलकी नमक डाल घी और जीराका बघार देकर गायके दही मथ कर उसके साथ खिलाना। १४ दिनमें मसा मिटता है।

प्रयोग ५. रास्ना तो. ४, छिलकाकी साथकी इलायची तो. ४ पाषाण भेद तो ४॥, शक्कर तो. ४॥ सब साथ कूट कर चार से आठ माशा दिनमें एक या दो दफे दहीके मठेके साथ देना।

प्रयोग ६. रसौत (रसवती) तो. ०। पानीमें पिघालकर दहीमें मिलाकर पिलाना और मसे पर रसौत लगाना। सात दिनमें आराम होता है। गरम चीज खाने न देना।

प्रयोग ७. इन्द्रजौ और शक्कर समभागमें कूट कर आधा तोला दही के साथ देने से गिरता हुआ खून अटकता है।

प्रयोग ८. नागकेसर इन्द्रजौ और शक्कर सब समान लेकर कूट कर चूर्ण बनाना। ८ से १२ माशा पानी के साथ एक या दो दफे देना।

प्रयोग ९. पकाया हुआ सोहागा तो. १॥ पीस कर इसकी १४ पुड़ी बनाना। रोजाना १ खजूर पेंडीको चीर कर बीज निकाल कर १ पुड़ी इसमें भर कर चाब कर खिलाना इसके ऊपर पांच सात पेंडी खजूर की और खिलाना। इस प्रकार १४ दिन तक सोहागेकी १४ पुड़ी खिलानेसे बवासीर मिटता है।

प्रयोग १०. गायके दहीका मट्ठा तो. १० इसमें खजूर तो. ६ डालकर बीज निकाल कर इसमें पानी तो. २० और नागकेसर तो. ०। सब मिलाकर १४ दिन तक पिलानेसे बवासीर मिटे।

प्रयोग ११. गोखरू (सोनापत्री) तो. ४. चावल का धोना। दिन १४ दिन तक खानेसे बवासीर मिटे।

प्रयोग १२. देशी ओषधी बीज (बिना छिलका निकाला हुआ गेहूं) तो २ से ४ को गायका दूध तो ३० और शक्कर तो २॥ मिला २ दो घंटा तक रखना। बादको छान कर पीना। १ मास के प्रयोगसे बवासीर मिटे।

प्रयोग १३. बालछड़ (इंसाफी) का चूर्ण तो. ०। और शक्कर माशा लेकर मिलाकर १४ दिन तक पिलाना।

प्रयोग १४. ऊंटकटारा का चूर्ण तो २ पुराने गुड़में मिलाकर खिलाना। ऊपर छाछ पीना। ७ से १४ दिनमें बवासीर मिटे।

प्रयोग १५. कुड़ेकी छाल और शक्कर समभाग कूट कर तो ०॥ पानीसे देना।

प्रयोग १६. अनारकी छिलका, छाल, नागकेसर, देवदार, इन्द्रजौ, वायबिडंग, कलौंजी, सोंठ, त्रिफला, हींग, काली मिर्च, सब समभागमें चूर्ण करना। पानीके साथ २ से ४ माशा देना।

प्रयोग १७. मजीठ तो. ५ रसौत तो. ५ हिमजी हरड तो. ५. शक्कर तो. १५ सब साथ कूट २ से ६ मासा तक पानीसे १४ दिन देना।

प्रयोग १८ चोलाइकी भाजीका रस (तंडुलीयक तांजळजानी भाजी) तो. ७ शक्कर मिलाकर ७ दिन पिलाना।

प्रयोग १९. पारावत (पारेवा-पक्षी विशेष) की चाक, २से३ मासा दूध के साथ ७ दिन देना॥

मसा पर लगानेका लेप मलम या धुंइ देनेका प्रयोग

मल्हम नं. १-बसीस कच्ची गायके मखनमें घोट कर मस्से पर लगाना।

मल्हम नं. २-नागरमोथ तो. २॥ घी तो ५. दोनों गरम कर उसमें वोदार तो १॥, अफीम तो १॥ धतुरे के पत्ताका रस तो ५ सब को अच्छी तरह घोटना। मलम जैसा हो जाय उसी में भर देना। दिनमें २ दफे लगाना।

लेप नं ३-माल कांगणी के बीजको पानीमें महीन पीस कर मस्से पर लगानेसे रक्तस्राव बंध होता है।

लेप नं. ४-हलदी, कडवी घिसोडी थुहरका दूध, सैंधानोन समभाग लेकर गौमूत्र या पानीमें महीन पीस कर मस्से पर लगाना।

लेप नं ५-करंजके बीज बकरी के मूत्रमें पीस कर मस्से पर लगाना।

लेप नं. ६-सहजना मूल और आकके पान दोनों समभाग पीसकर मस्से पर लगाना।

लेप नं ७-अपामार्ग (अघेडा) का पंचांगको महीन पीस कर लुगदी बनाना गुदा पर बांध कर लंगोट बांधना और रोगी सोता रहे ऐसा करना। ७ दिनमें मसा गिर जाता है।

धुंइ नं. ८-पुरुषका बाल सर्पकी कांचली, आकका मूल, खीजडा (जमीका बडा झाड) का पान समभाग कूट कर धुंइ देने से मसे सूख जाते हैं।

धुंइ नं. ९-बालको सरसोंके तेलमें मिलाकर मसोंको धुंइ देनेसे रक्तस्राव बंध होता है।

धुंइ नं. १०-मेंढके सिंग तो ४, हाथी दांतका चुरा तो ३. देवदाली-कुकडवेल तो ३ अजवायन तो. ७ गधेके सूके लीडे तो. २ शाली (कमोद) के छिलके तो. ३ सब साथ कूटकर धुंइ देना।

लेप नं- ११ बडी हरडको मखनमें घीस कर मस्से पर लगानेसे जलन मिटता है।

लेप नं. १२-अफीम, सफेद बछनाग, कुचला तीनोंका समान भाग लेकर कूटकर, पानीमें महीन पीस मस्से पर लगानेसे सूख जाता।

अजीर्ण

अपचन अग्निमान्द्य मंदाग्नि खुराक पाचन न होना

कारण—जो मूर्ख लोग पशुकी तरह बिना प्रमाण खुराक खाते रहते हैं वे लोग अनेक रोगोंको उत्पन्न करनेवाले अजीर्ण के भोग होते हैं। शरीरको गुण फायेदा करने वाला खुराक खानेवालोंको और भूखको ध्यानमें रखकर प्रमाणसर भोजन करने वालोंको कोई रोग नहि होता। अजीर्ण यह अग्निमांद्य का ही भेद है। मंदाग्नि तात्कालिक पीडा नहि करता लेकिन यह दीर्घकाल तक टिकने वाला और मालुम न पडे इस प्रकार शरीरको हानि पहूंचानेवाला है। जब किसी रोगका हमला होता है तब खयाल होता है कि इसका मूल कारण मंदाग्नि की उपेक्षा है और अजीर्णका परिणाम प्रत्यक्ष सामने आता हैं। पाचन शक्तिसे अधिक खुराक लेनेसे, हरवख्त गरिष्ठ खाने की चीजे खाते रहनेसे, बाजारकी मीठाइ चीवडा आदिकी आदतसे, चाह काफी आइस्क्रीम शरबत बरफ अधिक लेते रहनेसे, दो समयसे अधिक वख्त खानेसे, भोजनका समय अनियमित रखनेसे पाचन न होनेपर खाते रहनेसे, बिना चाबे जल्दी जल्दीसे बडे बडे ग्रास (कोळिया) लेनेसे, अति उपवास करनेसे, भोजनके समय मनप्रसन्न न रहने, क्रोधसे कामोद्दीपन करनेवाले चासीकर खुराके स्वाद का अधिक उपयोगसे, बैठे रहनेकी आदत-व्यवहारसे, अनियमित और अपने शरीरको अनुकूल न हो वैसा खुराक लेते रहनेसे, मलमूत्रका वेग रुकनेसे, इर्षा क्रोध लोभ द्वेष चिंता आदि दुर्गुणोंसे, किसी दर्द के कारण भूख कम लगने पर खुराक लेते रहनेसे, दिनको सोनेकी रातको जागरण करनेकी आदतसे, सीनेमा नाटक अधिक देखनेसे, भोजन करके तुर्त पैदल अधिक चलनेसे आदि कारणो से यह रोग उत्पन्न होता है।

चिन्ह—किसीको दस्त मंद होता है किसीको दस्त अधिक होता हैं। किसीको दो या तीन दिनको दस्त होता हैं। नहि पाचन हुआ खुराक निकल जाता है तब आराम होता है। किसीको कठोन शुष्क दस्त होता है तब भयंकर स्थिति होजाती है। भूख मंद होती है, मुखमें उत्क्लेद वमन की इच्छा रहना, डकार अधिक आना, छातीमें दाह, पेटमे दर्द शूल आफरा वायुदुर्गंधवाला, श्वासका रुंधन घबराहट मस्तकमें दर्द चक्कर आना, शरीर तपना काम काजमें किसीसे बात चित करनेमें निरुत्साह ग्लानि बेचैनी निद्रा कम आदि चिन्ह अजीर्ण वालोंको मालुम होते हैं। यह रोग दीर्घ कालिक होनेसे रोगी दुर्बल कृश कमजोर होता

है। शरीरका तौल कम होता जाता है। शरीर पीलेपन पाण्डु जैसा वर्ण दीखता है और यह रोग दीर्घकाल रहनेसे अतिसार या संग्रहणी का रूप लेता है।

आमाजीर्ण—इस रोगमें शरीर भारी भार रूप लगता है। उत्क्लेद (उबका) आना गाल और नेत्रपर सूजन, खाये हुए खुराकके गंधका डकार आना आदि मालूम होते हैं। **विदग्धाजीर्ण** में भ्रम तृषा शोष मूर्च्छा पित्तका उपद्रव, धुंआ के साथका खट्टा डकार पसीना दाह आदि होते है। **विष्टब्धाजीर्ण** मे शूल पेटमे पीडा आध्मान आफरा चढना पेट फूलना, वायुका उपद्रव मल अधोवायु रुक जाना, शरीर पकड जाना, मन मे घमराहट संधीमे शरीर के भिन्न भिन्न अवयवों में दर्द आदि होते है। **रसशेषाजीर्ण** मे खुराकपर अभाव अप्रीति अरुचि छाती मे भार बेचेनी ग्लानि, किसी कामपर अरुचि आदि मालुम होते हैं।

पथ्यापथ्य—सादा लघु जल्दी पाचन हो वैसा खुराक लेना। जितना पाचन हो उतना जिमना। दस्त पिशाबका वेग रुकना नहि। जागरण साग करना नहि। सीनेमा आदि देखने का व्यसन रखना नहि। हराया सुखा हुवा अधिक प्रमाणमें और बाजारकी मीठाई चीवडा जैसी चीजे खाना नहि। अजीर्ण मालुम पडनेमे खुराकबंध कर देना। उपवास के समय पेटमें कुछ भी नहि डालना। एक सप्ताह मे शरीरका आराम देने के लिये एक दिनकी रजा मांगते है वैसे एक सप्ताह मे पेटको भी आराम देनेके लिये उपवास करना चाहिये पेटको आराम मिलनेसे शरीरके प्रत्येक अवयवोंका भी आराम मिलता है। भोजन के समय बीच बीचमें अेक दो घोंट पानी पीते रहना। अजीर्ण मालुम हो तो एक दो या अधिक उपवास करना। उपवास करनेके पीछे भूख लगे जब उपवास छोड देना और पीछे सादा लघु खुराक लेना। प्रति सप्ताह उपवास करनेकी इच्छा हो उन्होंने किसी तिथि या वार नियत करना। प्रति सप्ताह उपवास न कर सके उन्होंने प्रतिपक्ष पन्द्रह दिनमें एक दिन उपवास करने के लिये अष्टमी या एकादशी जैसी तिथि को अगर तारीख अनुकूल हो उन्होंने प्रत्येक अंग्रेजी मासकी १० मी और आखीरकी तारीख को उपवास करनेका नियम रखना। यदि उपवास के दिन भूख अधिक लगे तो दूध या कुछ फल लेना। भूख न लगेतो पानीके सिवा उपवास मे कुछ भी न लेना। दीर्घकाल के अजीर्ण मंदाग्नि वालोंने उपवास के दिन दीपन पाचन औषध छाछके साथ लेना। हमेशा दो दफे दस्त जानेकी आदत रखना। चाह काफी कोको आदिका व्यसन हो धीरे धीरे छोड देना। दिनमें दो वख्त और शारीरिक परिश्रमका व्यवसाय करने वालोंने प्रातःकाल दूध गुड रोटी गांठीया जैसा नास्ता कर लेना और पीछे दो वख्त जीमना।

मानसिक काम ओफीसका बैठे बैठे दिमागी करनेवालेने दो दफे भोजन करना आजकल प्रातः कालमें चाह या दुध काफी ब्रेड रोटी पुरी बिस्कीट आदि का व्यसन घरेलु हो गया है, जिसकी कोई आवश्यकता नहि है। क्योंकि १० या ११ बजे पर तो उन्हें भोजन करना है। तो इसके पहिले दो तीन घंटा पर पेटमे कोई चीज डालनेकी आवश्यकता नहि। १० बजे भोजन करनेवालेने चाहा काफी दुध भी पेटमे क्यों डालना? ।

रजाके दिन खूब धुमते हैं और खूब खाते पीते है और पेटको विश्रांति देने के अलावा अधिक भार डालते है यह आरोग्य के लिये बाधक है। चाव कर छोटे ग्रास लेकर भोजन करना। भोजन के बीच बीचमे पानी एक दो घोंट पीते रहना छाँछ दूध भोजन के साथ लेना हो तो सारा कटोरा भोजन के पीछे नहि पी जाना लेकिन बीच बीचमें घोंट घोंट पीते रहना। रात्री के भोजन में छाँछ दहीं नहि लेना, दूध ही लेना और दोपहर के भोजन मे छांछ दही लेना। यदि दही लेना हो तो उसका मठा बनाकर रुचि हो तो शकर गुड या शहद तीनोंमेंसे कोई डालना और थोडा घी डालना सब मिलाकर दिनके भोजन मे बीच बीचमे घोंट घोंट लेते रहना। न रात्रौ दधि भुंजीत न च घृतशर्करं। भोजन के समय मन आनन्दमे रखना। भोजन करते समय क्रोध नहि करना। अन्नका तिरस्कार करते नहि जिमना। ठंडी या वर्षा ऋतु में आवश्यक कपडे पहिन ना। ग्रीष्म ऋतुमें खुले बदन या बारीक कपडा पहिने रखना। पानी ठंडा पीने के लिये बर्फ डालनेकी कोई आवश्यकता नहि हैं। हां मजदूरी शारीरिक परिश्रम करने वाले कि जिनको ८ बजे पर काममे चढना है उनको ७ बजेपर कुछ नास्ता करनेकी जरुरत अवश्य है। एसे लोग चाहा गांठीया चाहा ब्रेड चाहा भजिया आदि अधिकता से खाते हैं, उनको चाहिये कि गेहूंकी रोटी या ज्वार बाजरी का रोटला के साथ गुड दुध छांछ खा कर कामपर जावे। और पीछे दुपहरको और शामको भोजन करे। दुपहर के पीछे २ या ३ बजेपर चाहा काफी पीनेकी आदत सब लोगोंको घेर रही है वस्तुतः यह खुराक नहि है पेटमे जाकर खुराकका काम नहि करता वस्तुतः यह मनका खेल है। यदि विश्रांति के समय कुछ पीना हि चाहिये ऐसी इच्छा रहती होतो गुडका या शहदका पानी पी लेना अच्छा है। चाहा आदि न पीनेसे शामको अच्छी भूख लगती है और भूखमें किया हुआ भोजन शरीर को पुष्टि देकर आरोग्य रखता है। रजाका दिन शरीरको विश्रांति देता है लेकीन उस दिन पेटको विश्रांति नहि मिलती सबकी रजाके दिन खूब खा पी कर पेटको परेशान किया जाता है। आईस (बर्फ) का उपयोग नहि करना

छैकौन कोरी मटकीया या गोलामें पानी अच्छा ठंडा रहता है वह पीना। बहुत गरमी पडती हो वैसे प्रदेशमें ताजा निम्बू १ निचोड कर उसमें थोडी शक्कर डालकर एक ग्लास पीना। भोजन के पीछे पान सुपारी लोंग इलायची वडी सौंफ आदि मुख शुद्धि के लिये खाना। मुखवासके पीछे दोतीन घोंट पानी पीना। खुराक दूध शर्बत चाहा काफी पान सुपारी आदि कोई भी चीज खने के पीछे दो तीन घोंट पानी पनेका नियम अवश्य रखना ताकि वैसे पदार्थ के सूक्ष्म अंश दांत मुखमें न रहे और अन्न नलि शुद्ध रहने से अन्न नलीमे वैसे पदार्थ चिपके रहने से अनेक रोग होने का संभव रहता है बच जाय भोजन मे अदरख हरी हलदी काली मीर्च हिंग लोंग निम्बू का टुकडा आदि खाने का नियम रखना।

अग्नितुंडी गोली (शार्ग म. ख. ३०—२२१)

शुद्ध पारद शुद्ध गंधक शुद्ध वछनाग अजमोद बडीहरड बहिडा आमली सज्जीखार यवक्षार चित्रक सैन्धानोन जीरा सौवर्चल (संचल) वायविडंग नमक सोंठ छोटी पीपल काली मिरच सब समान भाग लेकर सबका जितना तोल हो उतना शुद्ध कुचला मिलाय निंबू रससे गोली चना प्रमाण बनाना।- मन्दाग्नि भूख कम लगना अजीर्ण खुराक पाचन न होना पेटका वायु शाफरा आध्मान आदिमे २ से ४ गोली दिन भरमे पानीसे देना। पहरेज खास नहि हैं।

नोट—भैषज्य रत्नावली में शार्गधर का हि पाठ दिया है परंच त्र्यूषण के स्थानमे अर्थात सोंठ पीपल मरीच के स्थान मे भैषज्य रत्नावली कारने टंकन-सोहागा कर दिया है। भैषज्य रत्नावली संग्रह ग्रन्थ होनेसे उसमे जिस मूल ग्रन्थका पाठ दिया हो वहा देना चाहिये था। एसा परिवर्तन करना ठीक नहि।

अजीर्ण कण्टक—(भाव जठराधिकार) सोहागा छोटी पीपल गिलोय शुद्ध हिंगूल प्रत्येक एक शेर काली मिरच २ शेर निम्बू रससे गोली चने प्रमाण बनाना। ३ से ६ गोली पानीसे अजीर्ण नष्ट मिटता है जठराग्नि प्रदीप्त होता है।

क्रव्याद रस वृहत—(र स) पारद तो. १६, गंधक तोला ३२ कज्जली कर उसमे ताम्र भस्म तोला ४ और लोह भस्मे तोला ४ मिलाय पर्पटीकी क्रियासे एरंडी के पत्ते पर ढालना पीछे उसे पीस कर लोहेकी कढाई मे रख कर उसमें पक्का ७ शेर नीबूका रस जलाना रस डालते जाना हिलाते रहना सब रस जल जाय तब रबडी जैसा रहने पर उतार लेना। पीछे उसमे सोंठ छोटी पीपल पीपरीमूल चित्रक अमलवेत प्रत्येक द्रव्य आठ आठ तोला मिलाना और फुलाया हुआ सोहागा ११ तोला सज्जीखार ८ तोला और काली मिरच १२०

तोला मिलाय चनेका खारनो प्रवाही होता है उसकी ७ भावना देना यदि चना क्षार न मिले तो सुरकेकी ७ भावना देना। सुखाकर गोली चने प्रमाण बनाना १ से ६ गोली दिन भरमे देनेसे अजीर्ण मंदाग्नि पेटका वायु शूल गुल्म बवासीर तिल्ली यकृत उदर रोग आदि मिटते हैं।

नोट. इस क्रव्याद रसका पाठ रसरत्न समुच्चय का है इसमे पंचकोल अमलवेतके क्वाथ की ५० भावना देनेका और सबके बराबर टंकण और टंकणसे आधा कृष्ण लवण और सबके बराबर काली मिरच डाल चने के प्रवाही क्षार की भावना ७ देना लिखा है।

भाव प्रकाश मे पंचकोल और चुका (सुरका) की ऐक भावना देनेका और सबको समान टंकण और उतना हि कालीमिरच और काली मिरचसे आधा बिडलवण डालकर चने के क्षार की ७ भावना देना लिखा है रसरत्न समुच्चय अथवा भाव प्रकाश के पाठानुसार क्रव्याद रस बनना चाहे बना सकते है हमारा ५० सालका अनुभूत पाठ यहां उपर दिया हुवा है।

शंखवटी बृहत (र. सं. अजीर्ण) इमलीका क्षार तो ४, पंचलवण का प्रत्येक लवण चार चा। तोला, शंख भस्म आठ ८ तोला, पिपरीमूल चित्रक पारद गंधक छोटी पीपल यवक्षार सज्जीखार काली मिर्च सोंठ शुद्ध वछनाग अजमोद सिकोय हिंग प्रत्येक एक एक तोला मिलाय निम्बू रसकी १ भावना देकर गोली १ से ४ रती बनाना। दिनभरमे २ से ४ गोली पानीसे देनेसे सब प्रकारका अजीर्ण मिटता है। भूख लगती है पेट के सबरोग गुल्म प्लीहा यकृत उदर रोग बवासीर आदिमे उत्तम गुण करती हैं।

नोट—भैषज्य रत्नावली, भाव प्रकाश आदिमे शंखवटी का पाठ भिन्न भिन्न है। यहां रस संहिता का अनुभव सिद्ध पाठ दिया है।

हिंगाष्टक चूर्ण (भाव) सोंठ पीपल मिरच अजमोद सेंधानोन जीरा शाहा जीरा और हिंग सब सम भाग लेकर कूट रखना २ से ३ मासा पानीसें देनेसे पेटके सब रोग मिटते है।

अग्निमुख चूर्ण (भाव) सज्जीखार यवक्षार चित्रक पाठा करंज बीज पंच-लवण इलायची तमालपत्र भारंगी वायविडंग हिंग पुष्करमूल कचूरा दारुहलदी निशोथ नागरमोथ वच इन्द्रजौ कोकम जीरा आंवला हरड कलौजीजीरा अमलवेद इमली के फल का गर्भ अजमोद देवदार छोटी होमणी हरड अतीस प्रियगु हपुषा अमलतासका गर्भ तिल मुष्कक सहेजना कोकिलाक्ष और ढाक इन पांचोंका

क्षार और गोमूत्रमें पकाया मण्डूर सब समान भाग लेकर कूट कर बिजोरा निम्बूके रसमे ३ दिन तक घोटते रहना फिर मरचा और अदरखके रसकी भावना देना। मात्रा २ से ४ मासा पानीसे देना। अजीर्ण गुल्म प्लीहा बवासीर उदररोग अंत्रवृद्धि सारण एपेन्डिक्स पेटकी ग्रन्थी आदिमें उत्तम गुणकारी है। जठराग्निको प्रदीप्त करता है।

लवण भास्कर (भाव अजीर्ण)

नमक ८ तोला, [1]सौवर्चल ५ तोला, [2]बीडनोन सेंधानोन, धनिया छोटीपीपल पिपरीमूल, तमालपत्र, कलौंजी जीरा, तालीसपत्र, नागकेसर चवक, अमलवेत प्रत्येक दो दो तोला, काली मीरच, जीरा, सोंठ प्रत्येक एक एक तोला, दाडिमबीज सुखा ४ तोला (हरा दाडीम बीज हो तो ८ तोला लेना) दालचीनी और इलायची प्रत्येक आधा आधा तोला सब साथ कूट कर रखना यह लवण भास्कर पाव तोला छाँछ या सुरके के साथ लेनेसे वायु कफसे उत्पन्न गुल्म प्लीहा उदररोग मसा-बवासीर मलावरोध-कब्जी भगंदर शूल सूजन श्वास खांसी आम पडना हृदयका रोग पथरी पांडु कृमि और मंदाग्निको मिटाता है खुराक का पाचन करता है।

लवङ्गशर्करा चूर्ण (भाव. अजीर्ण)

इलायची १ तोला, दालचीनी २ तोला, नागकेसर ३ तोला, काली मिरच ४ तोला, छोटी पीपल ५ तोला, सोंठ ६ तोला और सबके बराबर शक्कर कूट कर मात्रा १ से ४ मासा पानीसे सब प्रकारके अजीर्णमे गुणकारी है।

अजीर्णकंटक (र.र.लघु अजीर्ण)

पारद १ तोला, गंधक १ तोला, बच्छनाग १ तोला, काली मिरच ३ तोला मिलाय छोटी कटहरीके फलके रसकी २१ भावना देना पीछे मटरके समान गोली बांधना। १से४ गोलीको पीस या चाब कर उपर [3]तिलपर्णीका मूल एक तोलेको पानीमें पीस उसके साथ मिलाना दिनमे २ या ३ दफे लेनेसे कोलेरा विसूचिका रोग मिटता है सब प्रकारके अजीर्णमे दी जाती है।

---

[1] गुजरातीमे संचळ, [2] बिडनोन-बडागरूं मीठुं, [3] गुजरातीमे तलवणी

अग्निमांद्य-मंदाग्नि

रसशेषाजीर्ण भूख न लगना

अतिशय जलस्य पानान्नियमरहितभोजनेन मनुजानां ॥
मलमूत्रवेगरोधान्निद्राऽनियमात्तथा च जागरणात् ॥१॥
न हि पचति भुक्तमन्नं, पश्चाद्भवति ह्यजीर्णरोगोऽपि ॥
मूलं विविधगदानां तस्माद्रक्ष्यो हि जाठरो वह्निः ॥२॥ र. सं.

"बहु ज्यादा पानी पीनेसे, नियम बिना अनियमित रीतसे जिमनेकी आदतसे, दस्त और पिशाबके वेग रोकनेसे, निंद नियमित न लेनेसे, जागरण करनेसे ऐसे कारणोसे खाया खुराक न पचनेसे जो अजीर्ण होता है जिस अजीर्णसे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं जठराग्नि प्रदीप्त रहे इस प्रकारका आहार विहार विगेरे रखना।

स्वरूप—भूख कम लगना इसे रसशेष अजीर्ण भी कहा है। पाचक इन्द्रिय की क्रिया मे बाधा पहुंचने पर अन्नका पाचन होना चाहिये वैसा होता नहि है। खाया हुआ अन्न पाचन होकर पोषक पदार्थ द्वारा शरीर की वृद्धि और पोषण होता है और तरुणता मिलती है। इस क्रियाको पाचन क्रिया कहा जाता है। अन्न नली (गलाका मार्ग) पक्वाशय छोटे आंत्र और बडे आंत्र इसप्रकार ३० फुट लम्बी नली मुखसे शुरु होकर गुदा तक पहुचती है उसे पचनेन्द्रिय भी कही जाती है। खाया हुआ खुराकका पाचन होकर रस रक्त खून आदिसे परिणाम पाकर शरीरमे फैलाकर शरीरका व्यापार व्यवस्थित चलता है। निरुपयोगी भाग बहार निकल जाता है। अन्न पाचन होना इसका अर्थ यह है कि उसका द्रवण होकर रक्त बनना है। अन्न चाबने मे आता है, तोभि चर्वण क्रिया होती है जब लालोत्पादक पिण्डद्वारा अमृतरस उत्पन्न द्वारा अन्न के साथ मिलकर पेटमे जाता है। वह जठर रसमे मिश्र होकर वहां से यकृतशिरा द्वारा यकृत मे जाता है। वहां विशेष क्रिया होकर रक्त बन कर रक्ताशय हृदय मे जाकर वहांसे सारे शरीर मे फिरता है भ्रमण करता है। इस प्रकार खाये हुए अन्नकी व्यवस्था होती है। किसी कारणसे उसमे विघ्न आता है तब अग्निमांद्य अजीर्ण आदि रोग होकर अन्यान्यरोग उत्पन्न होनेका संभव रहता है।

कारण—चाय काफी कोको बीडी सीगारेट आदिका व्यसन, अतिविषय, बैठे रहनेकी आदत नौकरी या उद्योग मे बैठे रहनेसे शारीरिक व्यायाम न मिलने पर भी गरिष्ठ अन्नपान लेते रहना, औरतोंको पानी पीसना पानी भरना रसोई करना, आंतो और स्नायुओंको बलवान करने वाली परिश्र

कामरुपी कसरत न करना, सीनेमा नाटक देखने के लिये जागरण करना, नियमित निंद्रा न लेना, चाहा काफी अधिक पीते रहना, खांड शक्कर का प्रमाण पेटमे अधिक डालते रहना, हरवखत खाते रहना, दारु मांस अधिक लेना, उपवास कर आंतोको एक सप्ताह या पक्षमे एक वखत आराम न देना इत्यादि कारणोसे जठराग्नि मंद होता है।

चिह्न—खटे डकार आते है। पेटमे वायु भरता है, दस्त होता हैं, या कब्जी होती है। खुराक पर रुचि कम होती है। सिरमे दर्द, जीभपर मलका जमाव, मुखमे चिकनाई, लार परना कभी वमन हो उमई उबका आवे, कभी मुखमे चांदा पडे आंखोमे हाथ पावके तलुओमे जलन हो, छाती मे धडकन घभराहट स्वभाव उग्र तमोगुणी हो, किसी काममे मनका उत्साह न रहे इत्यादि चिन्ह देखने मे आते है।

पथ्यापथ्य—खुब चाव कर खाना। दांत निकालकर चोगठा बना हो उस लोगोने खानेके समय उसे चढाना पीछे उसे साफ कर दांतोमें अन्न कण घुस गये हो निकाल धो कर डिब्बीमे रखना। दिनरात चढाये रखनेसे दांतके पेढे दंतवेष्ट कमजोर होजाते है। दो हि वक्त भोजन करना। ७० सालकी आयुके पीछे एक वक्त हि भोजन करना। शामको दूध या फल लेना ठीक है। फिर भी शामको भूख लगे तो सादा मिताहार करना। दूधसे खीचडी मिला कर खाना। प्रातःकाल चाहा काफी आदि पीनेकी कोई जरुरत नहि है। जिनको १० या ११ बजेके भीतर भोजन करना है उन्हे चाह काफी ब्रेड रोटी पुडी गांठीया आदि नास्ता करने की कोइ आवश्यकता नहि है। शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूर वर्ग मह्नेतकस मनुष्योको कामपर जाने के पहिले कुछ खाना चाहिये क्योंकि उनको बारा बजे तक शारीरिक परिश्रम करना हैं। इन लोगोने प्रातःकाल रोटी दूध, रोटी गुड, रोटी दही, रोटी छांछ आदि अल्प खुराक नास्ताके रुपमे करना चाहिये। नाटक सीनेमा अधिक देखनेसे पेट बिगडता है और उसके बिगडनेसे अनेक रोग के भोग बनने का मोका आता है। इसलिये आहार विहार निद्रा आदिमे नियमित रहेने से शरीर अच्छा रहता है। और जठराग्नि मंद नहि होती।

अग्निदीपन गोली (र सं)

पारद गंधक छोटी पीपल सोंठ हलदी कचूरा जटामांसी हरड आंवला सैंधानोन प्रत्येक एक एक तोला और काली मिरच २ तोला पीस कर नींबु के रसमें दो दिन तक घोंट कर मटर जैसी गोली बनाना। २ से ४ गोली दिन

भरमें खानेसे जठराग्नि प्रदीप्त होता है। भूख लगती है। दस्त साफ आता है मरोड़ मिटता है।

स्वादिष्ट चाटन (र सं.)

अभ्रक भस्म १ तोला, वंग भस्म श्वेत ३ तोला, माक्षिक भस्म रक्त ३ तोला, दालचीनी, काली मीरच रूमीमस्तकी प्रत्येक मात आन तोला अकलकरा ५ तोला, लौंग १० तोला, जायफल ३ तोला, भांग ३ तोला, सोठ १ तोला, बादामगिरी ४० तोला, केशर ३ तोला, इलायची दाने ४ तोला सब कूट कर शहदमे मिलाय अवलेह जैसा बना कर एक मास तक चीनाई मिट्टी बर्तनमे रख छोडना। प्रति सप्ताह हिलाना। एक मासके पीछे ४ से ८ मासा तक प्रतिदिन खानेसे जठराग्नि प्रदीप्त होती है, भूख लगती है, शक्ति आता है, दिमाग हृदय फेफड़ा आदि बलवान होते है।

रसोन वटी (लशुणवटी) (इ. स)

लहसनकी कली छिलका निकाली तोला ४०, हींग सोंठ पीपल काली मिरच अजवायन सेंधानोन जीरा कलोंजीजीरा दाडिमबीज प्रत्येक चार चार तोला और लोबान २ तोला लेकर, पहिले लसूनमें लोबान डाल महिन पीस पीछे सब मिलाय निंबू रससे गोली ४ रतीकी बनावे। सुबे शामको २ से ३ गोली लेनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होता है, खुराक पाचन होता है, दस्त आता है, गेस मिटता हैं। पेटमे वायु नहि रहता। अजीर्णमे बतायी औषध देना। भोजनके पहिले नमक अदरख खाना। अतीस ६ से ८ रती छोटी पीपल ६ से ८ रती मिलाकर पानीसे सुबह ले लेना। हिंगाष्टक चूर्ण अथवा लवण भास्कर २ से ४ मासा पानीसे लेना। च्यवनप्राशके साथ छोटी पीपलका चूर्ण ६ से८ रत्ती लेना।



विसूचिका कोलेरा हैजा महामारी

अतिसारस्तथाछर्दिः पीपासोद्वेष्टनं भ्रमः ॥
वैवर्ण्यं हृदये पीडा दाहः शूलं शिरोरुज. ॥१॥
अस्रुस्र मूत्ररोधश्च कम्पो मूर्च्छा अनिद्रता ॥
विसूच्या. [illegible] चिन्हानि मृत्युरूपो गदोऽस्त्ययं ॥२॥ रस संहिता

कारण—यह रोग भेजवाले प्रदेशमे ग्रीष्म ऋतुमे या वर्षामे उत्पन्न होकर फैलता है। किसी भी प्रदेशमे या ग्राम शहरमे किसी भी कारण उपस्थित न होने पर भी हवा बिगडनेसे मरकी कि तरह फैल जाता है। कभी कभी आहार विहारकी अनियमितासे, रेल्वेकी सफरमे कच्चे ठंडे बासी सडे हुए पदार्थ खानेसे भी यह रोग हो जाता है। लम्बी सफरकी परेशानीसे, खराब गंदा दुर्गंधी तालाव, कुवा या टांकेका पानी पीनेसे अजीर्ण रहते हुए खाते रहनेसे यह रोग होजाता है। हवाके बिगडनेसे फट निकला हुआ यह रोग सांसर्गिक-चेपी है। फीर भी पेटको समालने वाला आदमी रोगी के सहवासमे रहता हुआ भी बच जाता है।

चिन्ह—यह रोग कभी शीघ्रकारी होता है कभी फसा हुआ रोगी, रोग लंबा चलनेसे बच जाता है। शीघ्रकारी मे फसा हुआ रोगी, जलदी मृत्यु-वश होता है। इस रोगमे किसीको दस्त ज्यादा और वमन कमी होता है, किसीको वमन ज्यादा और दस्त कमी होता है। किसीको साथ बुखार भी रहता है। श्वासका रुंधन होता हैं। प्रारंभ मे कठीन गाढा, पीछे पीला पीछे सफेद दस्त होते है। किसीको केवल दस्त हि होते है उलटी वमन बिलकुल नहि होता। और दस्तके साथ पांवकी पिण्डलीयामे गुठली चढती है। किसीको वमन जोरसे होकर प्रथम अन्न पीछे चिकना पानी और पीछे खुन निकलता है। जिस को उलटी कम होती है उसे कोलेराके विषकी ज्यादा असर होती है और रोग भयंकर रूप पकडता हैं, दस्त उलटी के साथ पेटमे कलेजामे नाभीमें पेडुमे दर्द होता है। दस्त उलटी और दर्द बढने के साथ शरीर की गरमी उष्णता कम होती चलती है, स्पर्शसे शरीर ठंडा लगता है। शरीरके गरमी कमी होनेसे तृषा बढती है, पीछे हाथ और पांवमे गुठली चढती है। पहिले पांवकी पिंडलीयामे पीछे हाथ मे और पीछे सारे बदन मे गुठली चढती है जब स्नायु सख्त गाठे गांठे माटे दिखने हैं। आंखे गहरी उतरती हैं। शिकल फिका चिंतातुर, पसीना चिकना, चक्कर, नाडीकी गति क्षीण, पानीकि तृषा ज्यादा, पिसाबबंद,

पकडी त्वचा काले रंगकी, गाल बैठ गये, होठ काला सूखा, दांत खुले दीखे दांतपर छारी जमे, दर्द बढता जाय जब नाडी क्षीण होती हुई अदृश्य होती है। शरीरकी गरमी ९५ से ८५ तक घट जाती है अंतमे मूर्च्छा बेहोशी बढ कर मृत्यु हो जाता है।

रोगी बचने का हो तो औषधका अच्छा परिणाम होने लगता है। दस्त और वमनका समय लंबा होने लगता है। शरीरमे १०१-१०२ तक बुखार चढता है दस्त बंद होने के पीछे एकाध पीलेरंग का दस्त होता है, पिशाब आने लगता है, तृषा कम होती हैं।

कोलेरासे बचनेके नियमः—मरज चलता हो तब हमेशा भूखे पेट नीमके थोडे पत्ते चाब कर खाना अथवा पीस कर पानी मिलाय पी जाना। खुराक कम लेना भूख रहने देना। बन सके तो २४ घंटा मे एक दफे भोजन करना, शामको सूर्यास्त के पहिले खा लेना। दोनो वख्त गर्म खुराक लेना। सुबहका शामको और शामका सुबहको नहि खाना। हरा शाक कम खाना। पानी उबाल कर तांबे के बरतनमे रख कर पीना। दुध गर्म कर पीना। खुराक सादा हलका जलदी पाचन हो एसा लेना। मिष्टान्न बाजारकी मीठाई फरसान नहि खाना। घरमे पकाया हुआ खुराक हि लेना। उपवास नहि करना। दूध हर वख्त गर्म किया हुआ हि बच्चोको पिलाना। फ्रूट या सुखा मेवा कम खाना। जुलाब या दस्त लानेकी दवा लेना नहि। दस्तकी कब्जी रहती हो तो आरोग्य वर्धनी २ से ४ गोली या थोडा हरडका चूर्ण गुड के साथ लेना। मकानकी आजुबाजु और मकान के अंदर सफाई रखना खुली हवा और प्रकाशवाले मकान मे रहना। इस रोगकी हवा चलती हो जब तक नीचे लिखा चाय सुबे शाम पीना अच्छा हैं।

शुंठ्यादी पेय—सोंठ छोटीपीपल काली मिरच दारचीनी लोंग प्रत्येक एक एक तोला सब कूट कर रखना आधा तोला चूर्ण ले तुलसी के पत्ते २ तोला और हरी चाय २ तोला और शकर यथारुचि, पानी ६ कप डाल और १० मिनट के पीछे कपडछान कर वैसे हि घर के छोटे बडे सबने पीना यदि इच्छा हो, इसमे दूध गर्म किया हुआ डालकर चाय या काफी की तरह पीना। हरी चाय न मिले और चाय काफी का व्यसन हो तो वह डालकर चाय बनाकर पीना।

पथ्यापथ्य—रोगीको खुली सुखी हवा प्रकाश वाले कमरे मे रखना। पानी उबाल तांबेके बर्तन मे ठंडा कर पिलाना। कपडे बिछाना दिन मे २-३

दस्त बदलना। मलमूत्र दूर खड्डे मे डालना उस पर राख डाल देना। पांव हाथमें गुठली लगे वहां चपी करना दाबना, तेल मालीस करना। अच्छा तीव्र मद्य पिलाना, मद्य शरीर पर मलना। महानारायण तेल मे थोडा नीलगिरी तेल मिलाय मालीस करना। कस्तूरी रती २ कपूर रती २ लसूनका रस तो ०॥ अदरखका रस तोला ०॥ मद्य या ब्रांडी ५ तोला में मिलाय पिलाना। पेट पेडु और दूसरे जिस भाग मे दर्द होता हो शूल निकलता हो वहां नीलगिरी तेल लसून या प्याज पलांडु का रस या ब्रांडी मर्दन करना। सोंठका कोरा चूर्ण शरीर पर घिसना।

विसूची कालान्तक रस (र. सं.) रससिन्दूर तो ८, पारद तो ४, गंधक तो ४, अभ्रक भस्म तो ६, सोंठ सोहागा चवक चित्रकमूलकी छाल, निर्गुंडीके बीज कनक बीज पिपलीमूल सज्जीखार संचल जवाखार अपामार्ग क्षार कालीमिरच अजमोद, हिंग शंख भस्म शुद्ध वछनाग नागरमोथ जायफल लौंग प्रत्येक दो दो तोला, भांग ८ तोला और अफीम १ तोला सब साथ पीस अदरखका रस निम्बूका रस और तांबूल (विना कत्था चूना लगाये) का रस प्रत्येक की एक एक भावना देकर ३ तीन रती की गोली बनाना। आधा आधा घंटामे २ से ३ गोली नालियरके पानी से देना। दस्त वमन कम होता जाय वैसे गोली देनेका समय बढाना। यह विसूचिका कोलेरा मुरडा संग्रहणी वमन गुल्म प्लीहा यकृत आदि में अच्छा गुण करता है।

विसूची हरी वटी—(र सं.) भुना हुआ धनिया की दाल जो मुखवास रुपमे भोजन के पीछे खायी जाती है, तोला ४, [1]जायपत्री तो ३, जीरा तो ३ अतीस ईन्द्रजौ [2]अजवायन, [3]कुबेराक्षबीजकी मीग लोंग प्रत्येक तोला एक एक, बिडनोन सोंठ बिल्व फलका गर्भ काली मिरच छोटी पीपल पिपलीमूल राल ईलायची हरड प्रत्येक तोला ०॥ आधा सब कूट कर निंबू रसमे २ रती कि गोली बनाना। प्रति पाव पाव घंटा के पीछे एक गोली प्याजके रससे या मद्यसे देनेसे विसूची कोलेरा अतिसार मुरडा संग्रहणी मिटते हैं।

विसूची विजय रस—(र. र स. अ. १६) पारद शुद्ध सोहागा पकाया हुआ समभाग लेकर जायफलकी ७ भावना देना मात्रा १ रतीसे ४ से ६ मासा शक्कर का चूर्ण मिला कर गायके दहींके मटठे के साथ देना।

---

१ जायपत्री गुजरातीमे जावंत्री कही जाती हैं। २ गुजरातीमे अजवायन अजमा जो मसालामे खाया जाता है। ३ कुबेराक्ष—लता करंजके बीज कोपका कर छिलका निकाल गिरी देना। गुजरातीमे कांकचा कांकचिया कहते हैं।

कोलेरामे सामान्य उपचार

विसूची हरांजन (शो त० लघु त० १४) बीजेराकी जड सोंठ पीपल काली मिरच, करंज बीज सबको छांछमे पीस सोगठी बनाना छांछ–तक्रमे घीस अंजन करना ।

अंजन—अपामार्ग ओंगाके पते काली मिरच दोनो समभाग लेकर घोडेके मुखकी (लाला मुखके फेन) मे पीस सोगठी बनाना पानीमे घीस अंजन करने से कोलेरा मिटती है ।

विसुचिकाहर मर्दन—दालचीनी तमालपत्र अेरंडमूल सहजनाका मूल या पत्ती कुष्ट वज शतावरी सब समान भाग लेकर छांछ मे पीस शरीर पर मर्दन करनेसे विसुचिका मिटती है ।

विसुचिका हर तेल—उपर लिखा दालचीनी आदि छह चीजे पांच पांच तोला छांछमे पीस उसमे २ शेर छांछ और पक्का ४ सेर तिलका तेल डालकर पकाना । छांछका जलांश जल जाय घटक द्रव्यों पक जाय जब उतार कर स्वांगशीत होने देना । दुसरे दिन कपडछान कर तेल लेना । इसका सारे बदनमे मर्दन करनेसे विसूचिका मिटती है ।

अदरखका रस तोला २० प्याजका रस तोला २० अफीम तो ०१ का कसुया (प्रवाही) कर सब साथ मिलाय एक एक चम्मच प्रति आधा घंटा पर पिलावे । दस्त वमन कम हो जब समय बढावे अफीमके अभावमें अफीमका अर्क (टिंक्चर ओपीयम) के २ से ७ बुंद रोगका रुप देख कर उपरके प्रवाहीमें मिलाय एक एक तोला पिलाते रहना ।

अग्निदाह—डाम देना–नाभिकी आजु बाजु कुंडली आकार का डाम देना। और सिर परका बाल निकाल तालुमे और गरदन पर ३ डाम देनेसे कोलेरा मिटती हैं । लोहेकी छडीको अग्निमे तपाय उसका छेडा लाल हो जानेसे उपर लिखे स्थानमे अग्निका डाग दिया जाता है ।

कृमिरोग पेटके जन्तु.

कारण—अजीर्णसे अजीर्ण पर और बिना भूख लगे खाते रहने से, अधिक और शरीरको अनुकूल न हो ऐसा अन्न पान लेनेसे, ठंडे पानी भोजनकी आदत से, चीकने ठंडे पदार्थका सेवन, दही और गुड अधिक खानेकी आदतसे, जलचर प्राणीओके मांससे आमाशय और पक्वाशयमे छोटे बडे जंतु उत्पन्न होते है।

चिह्न—ताप शूल हृदय रोग बेचेनी अन्नपर अभाव दस्त पेटमे दर्द कृशता अफारा पेट चढना पेट बडा मोटा होना अन्न पाचन न होना, दस्त ज्यादा होना या दस्तकी कब्जी, गुदा मे खुजली, सिरमे दर्द, निंद कम, दम चढना, आंखे निस्तेज, चेहरा फिका आदि चिन्ह पेटके अंदर कृमि जंतु उत्पन्न होनेसे होते है।

पथ्यापथ्य—मधुर पदार्थ बाजारकी मिठाई बंद करना। हरे या सूखे शाक पत्र छोडना। मांस घी दूध दही पत्तेवाले शाक, खट्टी मधुर चीजें आटाकि चीजे आदि नहि खाना। कडवा तीखा कफनाशक भोजन लेना। तिलका तेल नमक शहद हिंग अजवायन लहसन हलदी कोकम मीठानीम जीरा धनिया, हरा धनिया अदरख आदि भोजनमें लेना।

१ **मुस्तादि क्वाथ**—(योगशतक) नागरमोथा सहजनेकी छाल हरड मूसाकानी बहिडा समभाग कूट उसका १ तोलेका क्वाथ कर उसमे वायविडंग ३ मासा और छोटी पीपलका चूर्ण १ मासा डालकर पिलानेसे कृमि निकल जाते है।

२ **खुरासानी अजमोद का चूर्ण २ से ३ मासा**—मे ४ से ६ मासा गुड मिलाकर रातवासी पानीसे लेनेसे पेटके जंतु निकल जाते हैं।

३ ढाकके बीजका चूर्ण १ से २ मासा शहदसे लेना १२ से १५ दिनमे कृमि निकल जाते।

४ वायविडंगका चूर्ण २ से ४ मास शहदसे १५-२० दिन लेना खुराक मे आवला और ममालावाला मुगका पानी और चावल का खुराक देना.

५ दाडिमकी छाल आधा तोला कूटकर उसमे ४० तो पानी छोड चतुर्थाश रहने पर कपडछान कर उसमे २ से ४ तोला तिलका तेल डालकर पिलाना ३ से ७ दिनमे पेटके किमी निकल जाते है।

६ अर्जुन के फूल वायविडंग [१]कलिहारी भीलावा वाला राल कुष्ट प्रत्येक दस दस तोला चंदन वीस तोला साथ कूट कर यहधूप श्वास मे लेनेसे

[१] गुजरातीमे धोळो शींगडियो वछनाग.

पेट के क्रमि निकल जाते है और शरीर पर मस्तक मे बालमे धुंवा देनेसे जू लीख मर जाती है। बिछाने मे देनेसे खटमल मरजाते है। कमरे मे देनेसे मच्छर भाग जाते है।

७ वायविडंग तोला ०॥ का क्वाथ कर उसको वायविडंगका चूर्ण २ से ३ मास डाल कर पीनेसे अथवा वायविडंग के क्वाथको तिलका तेल २ चम्मचमे विडगका वधार देकर पीनेसे ऐक दो सप्ताह मे जंतु निकल जाते हैं।

८ विडग ईन्द्रजौ ढाक के बीज सममभाग चूर्ण करके २ से ३ मासा गुडके साथ ऐक दो सप्ताह खानेसे पेटके जंतु निकल जावे है।

९ नीमके पत्ते ५ तोलाको पीस उसमे २०–१५ तोला पानी डाल करछान कर शहद मिलाय पीनेसे जंतु मर जाते है।

१० **दांतके क्रिमीपर धूप**—इंद्रायण के पकाफल लेकर उसको निर्धूम अंगारा पर रख नली द्वारा दांत या दाढ पर धूवा देनेसे पीडा मिटती है और जंतु निकल जाते है धूवा देते वखत मुखसे जो लार पड़े वह पानी भरे वर्तनमे पडने देना तो निकले हुए जंतु दिख पडेगे।

११ वैसे हि छोटीया वडी कटहरी के पके फल को तिलका तेल चुपड निर्धूम अंगारा पर रख नली द्वारा धुवा दांत दाढको देनेसे जंतु निकल जाते है पीडा शांत होती है।

१२ धतूरे के पानका रस तोला २० अथवा तांबूल पत्रका रस तोला २० मे पारद तोला १ घोटकर बालमे घीसकर डालनेसे यूका और लिक्षा जू और लीखे मर जाती है निकल जाती है।

१३ धतूरे का पान तोला ४० को पीस कर अथवा धतूरेके पानका रस तोला ४० मे तिलका तेल तो ८० डाल पकाकर पानी जल जानेसे कपड छान कर लेना यह तेल बालमे डालनेसे जूऐ मर कर निकल जाती है।

कीटमर्द रस—(र र स ५१५) पारद १ गंधक २ अजमोद ३, विडंग ४, कुचला शुद्ध ५, ढाक पलाश बीज ६ साथ पीस ६ से १२ रत्ती प्रात साथ शहदसे देनेसे और उपर नागरमोथा १ तोलाका क्वाथ पिलानेसे क्रमि निकल जावे है। यह रस रसरत्न सच्चयका है। भैषज्य रत्नावली कारने इसका नाम क्रिमि मुदगर दे दिया है।

कृमिहरी वटी—(र सं.) पारद गंधक खुरासानी अजमोद [1]अेलीया, कालाजीरा कडुआ, कंपिला ढोकामाली छोटीहरड रेवंचीका शीरा मींढीआवल पलाश बीज इन्द्रजौ लता [2]करंजबीज, चिरायता, कपूर, हिंग, निसोथ, संचळ, वायविडंग जमाल गोटा अमिया हलदी समभाग लेकर पीस बकरीके दूधमें गोली रती प्रमाण करना २ से ३ गोली पानीसे लेनेसे दस्तसे कृमि निकल जाते है।

पलाश बीजादि चूर्ण—(र. सं)ढाककेबीज इन्द्रजौ वायविडंग नीम के बींजकी गिरि चिरायता समभाग लेकर चूर्ण करे २ से ३ माशा चूर्ण गुड के साथ खानेसे ३ दिनमे पेटके किमि निकल जाते है।

---

१ गुज. सोकोतरो ऐळीयो जो कवारपाठा से बनता हैं।
२ गुज कांकचिया कांकचा

पाण्डु रोग कामला

कारण—अति विषय बहुत खट्टे पदार्थ अति नमकीन, अतिमद्यपानकी मिट्टी खानेकी तीक्ष्ण उलट पदार्थ खाने की आदत, अतिरक्तस्राव, जखम, औरतोंको प्रसव के समय ज्यादा खून गिरना अत्यार्तव, संग्रहणी के रोगमे या बवासीर मसामे खून गिरना आदि कारणो से तथा क्षय अर्बुद मूत्रपिंड के रोग, विषम ज्वर मलेरिया का बुखार, यकृत् लीवर के रोग आदिसे वात पित्त कफ दूषित होकर हृदयमे रहे हुए पित्तको बलवान वायु क्षुब्ध करनेसे वह पित्त हृदय मे रही हुई दश धमनी नाडीओं द्वारा सारे शरीर मे फैल कर कफ रक्त मांस आदि धातुओंको दूषित कर त्वचा और मांस के बीच रहने से शरीरका रंग पीला हरा और बहुत करके पांडु सफेद होना है उसे पाण्डुरोग कहा जाता है।

चिह्न—प्रारंभमे हृदयका कम्प त्वचा रूक्ष अरुचि पिसाब पीला पसीना न होना भूख मन्द अंखो पर सूजन दस्त कब्ज आदि चिन्ह होते है। पीछे खून और चरबी कम होती है। शरीर कृश होने लगता है स्वभाव क्रूर होता जाता है। मुखमे पानी ज्यादा आता है अर्थात् अमीरस निकलने लगता है। ठंडी चीजे या शीतस्पर्श अच्छा नहि लगता। बुखार आता है। कान मे आवाज शरीर सफेद फिक्का हाथ पांव मुख पर और कभी सारे बदनमे सूजन होती है। ज्यादा चलने से या सीढी चढनेसे दम चढता है। छाती मे धबकार दस्त कब्ज पेटमे वादी रहती है। रोगी रात दिन उदास रहता है। इस रोगीका रक्तक्षीण हो गया शरीर श्वेत दांत नख आंखे पीले पड गये हो ताप अरुचि वमन उबका तृषा बेचेनी गुदा लिंग योनि पर सूजन शोथ हो पसीना आकर शरीर ठंडा पड जाता हो तो रोगी बच नहि सकता।

मिट्टी खाने से हुये पांडु रोगमें रस रक्त आदि दूषित होते हैं। मिट्टी का पाचन न होनेसे शिराओंके मुखोंको रुक देती है। इन्द्रियोंका बल तेज प्रभाव कार्यक्षमता ओज नष्ट होते है। इससे शक्ति क्षीण होती है चमडीका रंग बदल जाता है। जठराग्नि मन्द होती है।

मिट्टी के पाण्डु रोगमे तन्द्रा आलस्य खांसी श्वास शूल अरुचि, नेत्र गाल मुख पांव नाभि जननेन्द्रिय मे सूजन, कृमिकी उत्पत्ति और खुन कफके साथ पडता है। दस्त होते है।

हलीमक—काला पाण्डु, जिसमे त्वचा और शरीरका रंग पीली मिश्रित हरा काला हो वह हलीमक कहा जाता है। इसमे बल उत्साह जठराग्नि क्षीण

होते है। थोडा ज्वर रहता है। मैथुन मे अप्रीति श्वास तृषा चक्कर आदि चिन्ह मालुम होते है। इसका उपचार पाण्डु रोग के अनुसार हैं। जो चिन्ह अधिक मालुम हो उसे ध्यान मे रख औषधोका योग करना।

पथ्यापथ्य—हमेशा एकदो दस्त हो वैसा करना। खुराक सादा देना आटाका खुराक मिष्टान्न रोटी आदि बंद करना। करेला दुधी सूरण परवल अदरख हरा धनीया जीरा हलदी सैंधानोन आदि देना।

कामला

कारण—पित्तयोग्य मार्गसे न जाता हुआ खूनमे मिलनेसे, पित्तकी नलीमे कुछ पदार्थ घुस कर उसका रास्ता बंद होनेसे, पिताशय की नलीको सूजन या संकोच होनेसे या अन्य कारणो से मार्ग बंद होनेसे. दस्तकी कब्जीसे, चिंता शोक अजीर्ण बुखार विष आदि अति खट्टे अति विदाही गरिष्ट पित्तकारक पदार्थ खानेसे एसे अनेक कारणोसे यह रोग होता है।

चिन्ह—आंखोका सफेद डोला पीला हो। पिशाव पीला उतरे नख चमडो पीली हो, शरीमे बेचेनी सुस्ती, खुजली तृषा आंखे अश्रु पसीना थूक पीले हो दस्त कब्ज, सब पदार्थ पीले दीखे कभी थूकभी पीला होता है। पेटमे वायु वढे। अन्न पाचन न हो हो उकार आवे, शरीर कृश खुराक कम नाकसे वमनमे दस्त मे मुखसे खून, गिरे निद्रा घेन रहे। नाडीका वेग एक मिनीटमे ५० से ६० वखत चले। कम लगके रोगीको वमन अरुचि उबका ताप बेचेनी श्वास खांसी मे चिन्हे दिख ते हो मलमूत्र कालेया पीले हो सूजन चढ गइ हो बाद तृषा आफरा हो जठराग्नि मंद हो ये चिन्ह असाध्य के है।

पथ्यापथ्य—मुख जोजो चिन्ह दिखे उसको चिकित्सा करना। करना। दस्त एकदो होना पिशाव ज्यादा वैसा करना। भारी चिकने पदार्थ खांड शक्करकी चीजे, खट्टे पदार्थ दहीं छाछ, रातवासी खुराक घी दही चरबी वाले पदार्थ खाना नहि। तबीतको अनुकूल हो वैसा खुराक लेना।

पाण्डुरोग और कामलाकी चिकित्सा

पुनर्नवा मण्डूर—(भाव) पुनर्नवा निसोथ सोंठ पीपल काली मिरच वायविडंग देवदार चित्रक कुष्ट हल्दी हरड बहेड़ा आंवला दंतीमूल चवक इन्द्रजौ कुटकी पिपलीमूल नागरमोथा ककड़ासिंगी करवी अजमोदा कायफल प्रत्येक ४ तोला मण्डुर भस्म सबसे दुगुना लेकर सबको कपड छानकर उसमे सबसे ८ गुना गौमूत्र डाल कर पकाना गुड जैसा गाढा होजानेसे ६ रती भारकी गोली बनाना सुबह शाम ३ से ६ गोली पीस कर छांछ या पानी के साथ देना। यह गोली पांडुरोग कामला हलीमक के लिये उत्तम गुणकारी है। अश्विनी कुमारने यह बनाया है। पाण्डुरोग के साथके श्वास खासी सूजन ज्वर शूल आदि उपद्रव भी मिटते है। इसके अलावा दूसरे रोगोंमे भी उत्तम गुणकर्ता है। जैसे कि कुष्ट वातरक्त कृमि बवासीर उदररोग सूजन दम खांसी शूल आदि।

नवायस लोह—(भाव, रस प्रदीप) सोंठ पीपल काली मिरच हरड बहेड़ा आंवला नागरमोथ वायविडंग चित्रक प्रत्येक ४ चार तोला और लोह भस्म ३६ तोला सब साथ घोंट रखना। मात्रा ८ से १८ रत्ती तक दिन भरमे शहद घी छाछ गौमुत्र या पानीके साथ देना। यह पाण्डु रोग कामला और उसके उपद्रवोको नष्ट करता है। और हृदय रोग उदररोग सूजन कृमि कुष्ट भगंदर सूजन शोथ आदि रोगमे भी गुणकर्ता है।

धात्री लोह—(भाव) आंवला लोह भस्म सोठ पीपल काली मिरच हलदी समभाग मिलाना। मात्रा ६ से १२ रत्ती शहद घृतसे या पानीमे देनेसे कामला कुंभ कामला आदि मिटते है।

मण्डूर वज्रक—(भाव) सोंठ पीपल काली मिरच हरड बहेड़ा आंवला नागरमोथ वायविडंग चवक चित्रक दारु हलदी दालचिनी स्वर्णमाक्षिक भस्म पिपली मूल देवदार प्रत्येक चार चार तोला और मण्डूर भस्म काली सबसे दूना मिलाय सबसे ८ गुने गौमूत्रमे पका ४ रती की गोली बनाना। सुबह शाम ८ से १२ गोली तक दी जाती हैं। उपर छांछ १ कटोरा पिलाना। भूख लगने पर खुराक देना। पाण्डुरोग कामलाका खास औषध है। इसके अलावा कुष्टरोग उदररोग सूजन उरुस्तभ बवासीर मसा लीवर और तिल्ली का बढना आदि मे उत्तम गुणकारी है।

लोह रसायन—(रस संहिता) शुद्ध पारद तोला ८, गंधक तोला १६ कजली कर उसने लोह भस्म तोला २८ डाल घोटकर उसको कवारपाठाके रसमे ३ दिन

कालीवन तुलसी के रस की भावना देकर उसमे नीचे लिखो औषधीया मिलाना। अडूसा छाल गिलोय चित्राक हरड बहेडा आंवला निर्गुंडीछाल पलाशबीज विजयसार छाल गली (नोली),¹बबूलके रसवाले पके फल बलामूल शतावरी गोखरु वायविडंग द्रोणपुष्पी नागरमोथ कायफल कुटकी शिलाजीत प्रत्येक दो दो तोला कूट कर मिलाना पीछे त्रिफला के क्वाथकी ३ भावना लोहकी खरलमे या लोहेका कढाइमे रखकर देना। घोंट कर रखना ८ से १२ रती प्रात और शामको पानीसे या छांछसे या गौमूत्रसे देना। पाण्डु रोग कामला हलीमक २ मास सेवन करानेसे मिटते है। और बवासीर उदररोग लीवर प्लीहा कुष्ट खूनका बिगाड सूजन आदि रोगमे गुण करता है।

मधु मण्डूर—(रस संहिता) मण्डुर भस्मको त्रिफलाके क्वाथ को ३ गौमूत्रकी ३, क्षार पाठाकी ४ और पंचामृत की ७ गजपुट देनेसे सिद्ध होता है प्रत्येक रस मे घोंट घोंटकर गजपुट देना। इसकी मात्रा ६ से १२ रति दिन मे २ दफे पानीसे देनेसे २ मास मे पाण्डु रोग कामला आदि मिटते है।

१ शिलाजीत १० से १२ रत्ती गौमूत्र के साथ देनेसे कामला मिटती है।

२ इलायची और पिपलीमूल समभागसे कूट ३ से ४ मासा पानीसे पाण्डुरोग मे देना २१ दिन तक.

३ आरोग्यवर्धनी गुटी तोला ४ मंडुर वटक तेला २ लोह रसायन तोला १ साथ घोंटकर ६४ पुडी बनाना। दिनमे दो वक्त पानीसे देनेसे पाण्डु कामला आदि रोग मिटता है।

४ हरड बहेडा आंवला अडुसाछाल चिरायता नीमकी छाल कुटकी गिलोय समभाग कूट १ तोला का क्वाथ २१ दिन पिलाना पाण्डु कामला मे

५ अपामार्ग के पंचांगकी भस्म जवाखार कुटकी बडी हरड समभाग कूटना ४ से ६ मासा पानीसे २१ दिन देना.

६ चिरायता नीमकी छाल त्रिफला पटोल अडुसा छाल गिलोय पर्पट भांगरा समभाग १ तोला का क्वाथ पिलाना.

७ लोह भस्म तोला १ आरोग्य वर्धनी तोला ४ शंख भस्म तोला १ साबर सींग भस्म तोला १ साथ घोंट ६४ पुडी कर दिन मे २ वख्त देना।

८ *द्रोणपुष्पी के रसका अंजन करनेसे कामला मिटता है यह रस १ से २ तोला पिलायाभी जाता है।

---

* द्रोणपुष्पी गुजराती कुबो

१ बबुलके फल-गुजराती बावळना पाकेवा परडिया।

२ पंचामृत-दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, समभाग मिलानेसे बनता है।

रक्तपित्त–रक्तस्राव

रक्त—खुनका स्राव किसी भी स्थानसे खुनका गिरना।

कारण—बहुत गर्म तीक्ष्ण तीखे बहुत खटे बहुत नमुकिन क्षारवाले दाह पित्त करने वाले पदार्थ अधिक सेवन करनेसे, क्रोध शोक भयसे अधिक परिश्रमसे, अपनी प्रकृतिसे विरुद्ध अन्नपान खानेसे आदि अनेक कारणोंसे दूषित हुआ रस पित्तको विगाडता है और बिगडा हुआ पित्त खून मे दाह करता है जब मुखसे गुदासे योनि लिंग आदिसे रक्तस्राव होता है।

चिन्ह—खून गिरनेवाला हो जब सिरका दर्द अरुचि ठंडे पदार्थकी इच्छा, खटे डकार, खांसी श्वास ताप हृदयका धबराहट शरीर पीला होना दाह तृषा सिरका तपना अक्सर अरुचि कृशता मनकी कमजोरी दातके मसूढों मे सूजन इस तरह भिन्न भिन्न स्थानोसे खून गिरनेसे भिन्न भिन्न चिन्ह दिखायी देते है। आमाशय विगडा हो तो नाक या मुखसे खुन गिरता है। पक्वाशय दूषित होनेसे दस्त द्वारा खुन गिरता है। और दोनो दूषित हुआ हो तो दोनो स्थानसे खून गिरता है।

हथियार आदिसे खून गिरना—छूरी चप्पु अस्त्र तलवार आदिका घाव होनेसे, नसे फटनेसे टूटनेसे बहुत ठंडीसे बहुत श्रमसे, बहुत भार उठानेसे गर्म अलद दवा खानेसे, दारु अधिक पीनेसे किसी स्थानमे अवयवमे खुन चढनेसे आदि कारणोसे खुन गिरता है।

मुखसे रक्तस्राव—होता है जब दांतमे मसूढोसे जीभसे तालुसे गिरता है। होजरी से गिरता है जब वमन उलटी से खुन गिरता है। वह खून कुछ काला रंगका घेरा लाल होता है। और अधिक प्रमाण मे गिरता है। साथ कुछ खुराक मिला हुआ रहता है। खुन गिरनेके पहिले उबका आता है। कलेजे पर सूजन आती है चक्कर आता है। आंखो मे अंधेरा आता है। खून थोडी देर होजरी मे रहकर उलटी द्वारा बाहर निकलता है। यह खून लाल होता है। होजरी पर लगनेसे क्षत होनेसे कलेजा यकृत के रोगसे, मूत्रपिंडके रोगसे आदि कारणोसे खुन उलटी-वमन द्वारा गिरता है।

फेफडा (फुफ्फुस) से खुन गिरनेका कारण छातीपर मार लगनेसे असह्य बोझ उठानेसे ताकातसे अधिक दोडनेसे पर्वत आदि चढनेसे खांसीसे औरतोंको ऋतु बंध होनेसे क्षयरोगसे उरःक्षतसे आदि कारणोसे फेफडोंसे खुन गिरता है।

पिशावसे रक्तस्राव—तब होता है जब कमर दोनो पार्श्व और पेट पर लकडी आदिका मार पडता है। ऊंची जगहसे गिरनेसे धूळमे लंबी सफर करने

से, मूत्रपिंडमे पथरी जमनेसे दाह जैसे जलद पदार्थो का अधिक उपयोगमे आदि कारणोसे पिशाव द्वारा खुन गिरता है। पिशाब होने के पहिले खुन गिरे तो मूत्रमार्गसे, पिशाबके साथ मिलाहुआ खुन हो तो मूत्रपिंडसे, पिशाव आजानेके पीछे खुन गिरे या खुनके साथ पिशाव अंतमे उतरे तो मूत्राशयसे खुन गिरा हुआ समझना।

पथ्यापथ्य—जागरण करना नहि। दाहकारने वाले पदार्थ बेगन पीयाज लसून लालमिरच तेल बाजार ी मीठाई गरिष्ट पदार्थ पाचन मे बाधा हो ऐसी चीजोंसे दूर रहना। सादा समशीतोष्ण खुराक लेना। मुग चना गेहुं चावल आदि धान्य कोबीज फुलावर नोलकोल मूली पधी सूरण तुरिया घीसोटा मेथी चौलाइकी भजी परवल आदि शाक हितकर है। छाछ-तक्र दहीका मट्ठा, शक्कर चांगेरीघृत, वासावलेह कल्याणघृत, और अपनी प्रकृतिके अनुकुल हो ऐसी चीजे खाना। ज्यादा परिश्रम नहि करना धुपमे घुमना नहि। ठंडे पानीसे स्नान नहि करना सेवाल बांधना। अपनी शक्तिसे अधिक बोझ उठाना नहि। दौडना नहि। नाकमे खुन गिरता हो तो मस्तक पर ठंडा पानी छिडकना।

महाचंद्रकला—(र स -रपूरयुक्त) पारद गंधक अभ्रक भस्म लोह भस्म वंगभस्म यशद भस्म रौप्य भस्म पकाया हुआ पार्टया सोहागा प्रत्येक तोला ६, अमृता सत्व पर्पट चिरायता छोटी पीपल वाला गोरखमुंडी इलाइची बबुलका गोंद नीमका गोंद टाकका फुल केलीका कंद कमल बीजकी गिरि प्रत्येक तोला ३ तीन सब साथ मिलाकर बबूलकी पत्ती द्राक्ष काली सहदेवी (सेदरडी) पर्पट (गु खडसलये पित्तपापडो, नागरमोथा वैथ (कपित्थ कोठानो रस) गोजिव्हा (गोपथरी) प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देकर सुखाकर उसमे कपूर तोला ८ मिलाकर पानीसे चने प्रमाण गोली बनाना। मात्रा २ स ४ गोली दिनमे ग्यारे दफे देना। ऊपर द्राक्षका पानी या च्यवनप्राश जीवन या कुटज अवलेह के साथ या पानी देना। किसी भी स्थानसे गिरता रक्त अटकता है। दाह दाहज्वर मूत्रकृच्छ्र पिशाबकी जलन पिशाबमे खुन गिरना खुनकी छर्दि वमन उबका हृदयमे पेटमे जलन दिमागका तपना गर्म रहना आदि मिटता है।

सुधा पर्पटी—(र स रक्तपित्ते) मुक्ताशुक्तिकी पिष्टी, प्रवाल चंद्रपुटी, स्फटिक पिष्टी जहरमोहरा पिष्टी रौप्य भस्म यशद भस्म सुवर्ण माक्षिक भस्म रक्त रत्नेन्द्र पांच पांच तोला पारद तोला २५, गंधक तोला ७० कज्जली कर एक लोहेकी कडाहीमे १० तोला गायका घी छोडकर गर्म होनेसे कज्जली डालना धीमी आंचमे रस हो जाय अब सब भस्म डाल देना लोहे के तवेथासे हिलाना सब

मिल जाय जब गोबरके उपर बिछाया केली के पते पर डाल उपर दूसरा पता डाल कर उपर गोवर दाद देना। स्वांगशीत हे नेसे २४ घंटा के पीछे निकालना। घोंट कर नीचे के रसकी भावना ३ देना। काली द्राक्ष हरा धनिया (कोथमीर), मीठे नीमके पते, सफेद चदनका चूरा, नीमकीछाल अशन वृक्षकी (विजयसार) छाल प्रत्येक पाच पांच तोला लेकर कूटकर रात्को मिट्टीके वर्तनमे पानीमे भिगो रखे प्रात: कालको हाथसे मर्दन कर कपड छान कर कूचा फेकदे प्रवाही पर्पटी में डाल एकदिन घोंटकर सुखने पर फिर उपर लिखी छह चीजे पान पांच तोला लेकर उपर लिखे अनुसार भावना देना इस प्रकार ३ भावना देकर सुखाकर रखे। एक दिनकी मात्रा ३ से १२ रती तक शहद घृत मक्खन आदिसे दी जाती है। उपर द्राक्षासव अथवा रक्तस्राव हर फांट पिलवे। किसीभी स्थानसे गिरता खुन रुक जाता है। छातीसे नाकसे मूत्र इन्द्रीसे दस्तसे गिरता खुन रुके। औरतोंको अधिक ऋतु स्राव होता हो सफेद पानी गिरता और इस कारण कमताकात कम्मर आदि मे दर्द दाह आखोंकर जलन सिर धूमना चक्कर अम्लपित्त छातीका दाह पिशाव कि जलन, गुदभ्रंश गुदा बाहर निकल पिडा करता, योनिकंद आदि रोगमे गुणकारी है।

रक्तस्रावहर फांट—बडकी छाल, विजयसार (अंजन वृक्ष)की छाल, नीमकी छाल, काली द्राक्ष, अशोककी छाल समभाग लेकर कुट कर रखना रातको अच्छे वर्तनमे १ से २ तोलाको २० तोला पानीमे भिगो रखे। प्रात: मर्दन कर कपड छान कर शीशीमे भरले, उसमे ३ बडा चमचा (प्राय ३ तोला) शहद मिला कर किसी भी रक्तस्राव की औषध की मात्राके साथ २ या ३ दफे पिलावे। अथवा अकेला फांट भी पिला सकते हैं।

रक्तपित्तांकुश रस (र. सं.) पारद तोला १०, गंधक तोला १०, रससिंदूर टंकण पकाया हुआ, फिटकिरी बडी हरड आंवला इलायची, चिनिकबाला (सीतल चीनी) नागर मोथ अडूसा (वासा) प्रत्येक तोला ५ ले सब साथ कूटकर पर्पट और मधुयष्टी मूलके काथ की एक एक भावना देकर रखदें। मात्रा ३ से ८ रती शहद, या मक्खन या पकाये चावल के पानी से रोगका स्वरूप रोगीके शरीरकी स्थिति देखकर दी जाती है। सब जगहसे गिरता खुन रुकता है।

रक्त स्तंभन रस—(र सं.) पारद गंधक प्रवाल चन्द्रपुटी अहरमोहरा स्फटिक पिष्टि मुक्ताशुक्ति पिष्टी लोहा भस्म स्वर्ण माक्षिक भस्म सोहागा पकाया हुआ सब समभाग लेकर कूट मिलाकर बहदेरो वाला द्राक्ष और गावजवान (गौ पाथरी) प्रत्येक दश तोला लेकर काथ कर ३ भावना देना मात्रा ३ से

६ रती पानी या शहदसे गिरता रक्त रुके औरतों के अत्यार्तव रक्तप्रदर श्वेत प्रदर मिटे।

उशीरासव—(' स.) काली या लाल द्राक्ष रतल २०, को कूट कर एक मिट्टीके या लकड़ी के वर्तन मे डाल उसमे पानी रतल २०० मे पकावे २ घंटा पका कर मिट्टी की या लकड़ की कोठे मे भरदे। उसमे शक्कर १० रतल डाले। वाला तोला १८०, धाईफल तोला १००, कमल गोटाकी गिरी कमल पुष्प गुलाव फूल चमेलीके फूल लौंग इलायची शीतलचीनी मजीठ धमासा वबूलकी छाल शाल्मली छाल ढाकके फूल कपूर वायवरणा जामुनके बीज प्रत्येक औषधी बीस बीस तोला लेकर कूट कर मिलावे कोठीका मुख बंद करदे। आठ आठ दिन के पीछे खोल कर हिलावे दो महिना पीछे कपड छान कर अच्छे वरतनमे भर दे। २ से १० तोला तक की मात्रा दी जाती है। सब जगहसे गिरता खून रुकता है और हृदय फेफड़ा आते दिमाग को ताकत देता है।

बोल पर्पटी—(र स) पारद सेर एक गंधक सेर एक ले कर कज्जली कर पर्पटीकी रीतीसे पकाकर घोटकर उसमे हीराबोल आधाशेर और मिलाकर त्रिफलाके क्वाथकी भावना १ देकर घोटकर रखे मात्रा ३ से ६ रती। मधुघृतसे या मधु मक्खन से देना। सब जगहसे गिरता खून थमें। रक्तश्वेत प्रदर मिटे।

सुधानिधि रस—(यो र.) पारद गंधक स्वर्णमाक्षिक भस्म लोह भस्म सम भाग लेकर लोह के वरतनमे डाल त्रिफलाके क्वाथ की भावना देना। सुख जानेपर घोटना। मात्रा ३ से ४ रती शहदसे देना रक्तस्राव छूटके।

रक्तपित्तके सामान्य प्रयोग—मुक्तादि मिश्रण, मुक्ता पिष्टी तोलो ०॥ महाचंद्रकला तोला १, प्रवाल चंद्र पुटी तोला १॥, बोल पर्पटी तोलो ०॥, अमृता सत्व तोला ३ सव साथ मिलाकर ६४ पुडी बनावे। ३से४ समय पानीसे या शहदसे दे।

प्रवालाक्षादि मिश्रण—प्रवाल चंद्रपुटी तोला २, मुक्ता पिष्टि सुधा पर्पटी जहर मोहरा पिष्टि, क्षमामृतलोह प्रत्येक एक एक तोला सव साथ ले मिलाकर घोटकर ६४ पुडो बनावे २ वक्त शक्कर या च्यवनप्राश ओदनसे दें।

प्रयोग १—शाहजीरा, इन्द्रजौ मेढासींगी वीलीगर्भ नागकेसर इलायची सोंफ समभाग कूटकर ०। तोला दिनमे २ या ३ दफे शहदसे दे।

प्रयोग २—नदी का सेवाल और काली मिट्टी मिलाकर सिरपर लगानेसे नाकसे गिरता खून बंद हो।

प्रयोग ३—धनिया आमला वासा पत्र द्राक्ष पितपापड़ा (पर्पट) सममाग कूटकर २ तोलाको २० तोला पानीमें रातको भिगो रखे प्रातःकाल कपड़छान कर २ से ३ तोला शहद मिलाय दिनमें २ दफे पीवें।

प्रयोग ४—वाला धनीया सफेद चन्दनका बुरादा मुलैठी मूल गिलोय सममाग कूटकर २ तोलाका क्वाथ पीवे।

प्रयोग ५—नीली (गली) का मूल आधा तोला पीस कर चावलके ओसामण मे शहद या शकर मिलाकर देना।

प्रयोग ६—सफेद चन्दन को घंस कर ०। तोला लेकर चावलके ओसामन (पानी) मे शहद मिलाकर देना।

प्रयोग ७—अनारकी छाल, कूड़ेकी छाल, (कूटजत्वक्) आधा आधा तोला से कूट कर २० तोला पानीसे पका कर आधा रहने पर कपड़छानकर शहद मिलाकर २ दफे पीवें।

प्रयोग ८—कूडेकी छाल नागरमोथा, कोमल छोटे बिल्विके फल अतीस वाला सम भागसे कूट कर १ तोलाका क्वाथ या फांट कर शहद या शकर मिलाकर पिलाना।

प्रयोग ९—सुखे आंवलाको घीमें पकाकर (तल कर) छाछमे पीसकर सिरपर छातीपर पेटपर लगाना लेप करना तो उस स्थानसे गिरता खून थमे।

प्रयोग १०—अडूसी (वासा) जीरा मुलैठी मूल (यष्टिमधु) द्राक्ष सममाग ले कूटकर ०॥ तोलमे १० तोला पानीमे भीगोकर पीना।

प्रयोग ११—दूर्वा कमल बीजकी गिरी बबूलकी पत्ती, ओंगा (अपामार्ग) का पान सममाग कूट ०। से ०॥ तोला पानीसे देना।

रक्तपित्तशासनावलेह—(र. सं.) अडूसी (वासा) के पान रतल १० लेकर ६० रतल पानीमे क्वाथ करना आधा रहने पर कपड़ छान कर उसमे शकर रतल ४० डाल कर पकाना पीछे उसमे पूरे केलेका खमण रतल २० डाल कर पकाना घट्ट होनेसे उसमे मलावीज कत्था इलायची नागकेशर सफेद चंदन का बुरादा हरड आंवला काली मीरच सोंठ छोटी पीपल धनिया जीरा शाहजीरा शतावरी प्रत्येक ८ आठ तोला अष्टवर्ग २४ तोला मिलाकर अवलेह जैसा होनेसे उतारना। २ से ४ तोलाकी मात्रा है। रक्तस्राव प्रदर प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्रपिंड-गुरदेके रोग जलन अम्लपित्त छातीका दाह शरीर तपना आदि मिटता है।

क्षयरोग—राजयक्ष्मा

कारण-क्षयरोग वंशानुगत है ऐसी मान्यता सर्वथा सत्य नहि। सबके लिये सची नहि सिद्ध होती है। मधुर पदार्थ खानेकी बहुत आदत, बहुत नीचे चिर गिरे, बहुत गरम उष्ण पदार्थ या भोजन, हर वख्त अजीर्ण होना, बाजारकी चीजो मीठाई आदि अधिक खाना, अधिक चाह पीनेका व्यसन, अति विषय अधिक श्रम अधिक दारु पीनेकी आदत आदि कारणोंसे क्षय रोगका भोग बनता है। खांसी बुखार श्वासका रोग बहुत समय तक जारी रहनेसे जीर्ण होकर क्षय हो कर लेता है। किसी रोगसे शरीर कमजोर हुआ हो उस समय खाने पीनेकी सांसारिक व्यवहारकी मर्यादा न रखनेसे यह दर्द होता है। भेजवाले गन्दगीके संसर्ग वाले, बिना खुली हवा प्रकाशवाले मकानोंमें रहनेवाले को, टके दांतवाले, खाये हुए अन्यके उच्छिष्ट खानेसे, क्षय रोगीके संसर्गसे, अति जागरणसे, सिनेमा नाटक हमेशा देखने वालोंको हजारो मनुष्योंके समूहमें रहने वालोंको, बहुत गान संगीत, उच्च स्वरसे अधिक भाषण करनेसे रेलवे आदिकी मुसाफरीसे खुल्ला मक्खी आदि जंतुओसे दूषित सडा हुआ बासी खुराक आदिके भक्षणसे यह रोग होता है। एलोपेथि पद्धति के अनुसार टयुबर क्ल बासिल जंतुओ शरीरमें दाखल होनेसे क्षय रोग होता है यह बात यथार्थ नहि है। वस्तुतः क्षय रोग उत्पन्न करनेवाले कारणोंसे हि शरीर में क्षयोत्पादक जंतु उत्पन्न होते है। आहार विहार औषधों के उचित व्यवहारसे क्षय रोगसे दूषित अवयवका भाग कम होता जाता है वैसे स्वाभाविक हि इस के जंतुओ नष्ट हो कर रोग मिटता है।

यह रोग प्राय २० से ४० वर्षकी आयुवालोंको अधिक होता है। औरतोंको प्रसव कालमें संभाल न रखनेसे यह रोग लागू हो जाता है। वर्तमान समयमें सुधरी हुई और सुखी कुटुंबकी औरतें कुचेष्टाकी आदतमें पडनेसे, कुछ भी परिश्रम और घरेलु काम का व्यायाम भी न होनेसे, सीनेमा आदि अधिक देखनेके कारण बुरे मार्गपर चढ जानेसे, आमाशय पेट आंतें हृदय फेफडा बिगडकर औरतोंको यह रोग लागू हो जाता है। चक्की पीसना, कूटना पानी भरना रसोई बनाना असे घरेलु काम करनेवाली औरतों के अवयव सुदृढ नीरोगी रहेनेसे उनको यह रोग नहि होता। इस कारण ग्राम प्रजाकी अपेक्षा शहरोंकी प्रजामें यह रोग अधिक मात्रा मे होता है। ग्रामोंमे खुल्ली हवा शुद्ध पानी परिश्रमवाला जीवन, अंदर [illegible] ठूंसनेकी खुराकका अभाव, सीनेमा नाटक आदि स्वास्थ्य बिगाडने वाले विलासी

जीवन बनाने वाले साधनोंके अभाव, शुद्ध दूध घी मिलना आदिसे प्राय प्रजा इस रोग से कुछ अंशमे बच जाती है। स्त्रीओ की अपेक्षा पुरुषोंको प्रायः ज्यादा यह रोग होता है। ब्रह्मचर्यका नाश भी इस रोगका कारण बनता है। वीर्य रक्षणसे होनेवाले लाभसे वर्तमान युवक विद्यार्थी लोग अज्ञात रहेनेसे प्रायः विद्यार्थी दशामे ब्रह्मचर्यको नष्ट कर अपने शरीरके भविष्यके सुखको नष्ट करते हैं। छात्र छात्राओका सह शिक्षण भी एक महत्वका कारण हैं। अभ्यास करनेवाले छात्रो के हस्तदोष या असे अन्य कारणोसे वीर्यक्षय होनेसे दर्मा क्षय रोगका भोग बनते हैं और अपने भावी गृहस्थाश्रम सुखमें आग लगाते हैं। इस बातका अनुभव और पश्चात्ताप गृहस्थी जीवन के समय होता है। इस बातसे छात्रा विद्यार्थिनी वर्ग भी परे नहि है। पुख्त आयुके लोग भी विषय सुखमे हि संसारका सार्थक समझते हैं और अैसे व्यवहार के साथ सच्चे घी दूध आदि पुष्ट खुराक के अभावसे और बाजीकर औषध के बिना सेवन विषयासक्त रहेनेसे भी क्षय रोगसे पकडे जाते हैं। बहुत उपवाससे, मल मूत्रादिके वेग रुकनेकी और अजीर्ण करनेवाले पदार्थ खानेकी आदतसे इस रोगका आक्रमण होना संभव है। अनुलोम क्षयमे पहिले रस रक्त मांस मेद मज्जा अस्थि वीर्य ओजका क्षय क्रमसे होता है और प्रतिलोम क्षयमे पहेले वीर्यका नाश होनेसे अस्थि मज्जा मेद मांस रक्त रसका क्षय होकर यह रोग होता है। अनुलोम क्षयकी अपेक्षा प्रतिलोम क्षय रोगीको जलदी घेर लेता है। वृद्धावस्थासे, बहुत पंथसे चलनेसे, शोकसे, बहुत कसरत व्यायामसे, विशेष प्रकारके व्रण गलेकी ग्रन्थी गांठे आदि कारणोसे भी क्षय रोग होता है।

चिन्ह—इस रोगकी तीन अवस्था है। प्रथमावस्थामे लंबे समय तक खांसी चालु रहकर पतला कफ गिरता है। फेफडों मे क्षत पडता है। दूसरी अवस्थामें नाडी एक मीनटमे ११० से १२० चलती है। चमडी सूखी और गरम होती है। छातीमे दर्द नाभिके नीचे दोनो ओर दर्द घबराहट शूल, अनियमित समयपर पसीना होता है। दिनो दिन शरीर कृश होता है। जठराग्नि मन्द होता है। दस्त किसी को ज्यादा किसी को कम होता है। स्वभाव चीढिया दंतस उग्र क्रोधी होता हैं। खांसी बहुत आकर कफ गिरनेसे थोडी देर आराम मिलता है। आंखे सफेद होती हैं। शरीर कमजोर होते हुए भी विषय सुखकी इच्छा होती है। रोगी स्वप्नोंमें सूखी नदियां, जलसे वृक्ष देखता है। और पार्श्वमे पीडा हाथ पांवमे जलन सब अंगोसें ताप कमजोरी सारे बदनमे शोथ अन्नपर अभाव श्वास खांसी रक्तमिश्रित कफ स्वरभंग ये प्रमुख

चिन्ह है। वायु प्रधान क्षयमे स्वरभंग शूल कांधा पसलीमें पार्श्वमे पीडा, पित्तप्रधानमे ताप-बुखार का जोर जलन कफमे खुन, कफप्रधानमे शिर भारी सिरका दर्द खुराक पर द्वेष खांसी के साथ सफेद कफ ज्यादा गिरना आदि चिन्ह होते हैं।

क्षयरोगीको प्रारंभमे ताप ९९से १०० तक होता है पीछे बढकर १०२से १०५ तक पहूंचता है। और कम ज्यादा होता रहता है। खांसी बढनेसे नाडीकी गति १२० तक एक मीनीटमे चलती है। बहुत करके प्रातःकालमे ताप कम होता है और शामको बढता है और रातको बहुत पसीना होता है। प्रारंभमे एक फुफ्फुसमे शोथ होकर सडा होता है। पीछे दोनो फुफ्फुस सडते हैं।

असाध्य चिन्ह—खुराक पर अरुचि श्वास दम, सख्त खांसी खुन गिरना स्वर बैठ जाना, तपका जोर, बलका प्रतिदिन नाश खुराक ज्यादा लेने पर कमजोरी बढना, वृषण और पेट पर सूजन दस्त आवे सफेद ऊर्ध्व श्वास हरवख्त वीर्यस्राव आदि असाध्य चिन्ह है।

अति विषय जन्य क्षय—जननेंद्रिय और अंडकोषमे पीडा विषय भोगने अशक्त होने पर भी यत्न करनेसे वीर्य बहुत अल्प पतला और कमी वीर्य के बजाय खुन के बुंद गिरे, शरीर फिक्का सफेद हो। वीर्य क्षीण होने के पीछे मेद मांस रक्त और रस यह धातुओ एक के पीछे एक क्षीण होती है और यह रोग असाध्य होता है।

उरःक्षत—बहुत भार उठानेसे, बलवान के साथ लडनेसे, उंचेसे गिरनेसे, बैल घोडा हाथी ऊंट जैसे बलवान जनावरोंको काबूमे रखने के प्रयत्नसे, लंबा प्रवास पांव चलकर करनेसे, लंबी वेगवाली नदी तैरनेसे, बडी छलंग मारनेसे आदि कारणोंसे हृदय पर आघात होकर उरःक्षत होता है छाती चीराती हुई फटती हुई लगे। छातीमे असह्य दर्द हो, पसलीयो मे शूल कंप ताप, कमजोरी, कृशता, खुराक पर अभाव, जठराग्नि मंद, मन उदास, दस्त पतला, खांसी में कफ काला पीला गाठोंवाला खुन मिश्रित पडे इत्यादि उरःक्षत के लक्षण है।

पथ्यापथ्य—शारीरिक श्रम कम करना आराम विश्रांति लेना। रोगी अशक्त हो तो दस्त जानेका नजदीक रखना। रोगी के रहने के मकान पर दुर्गंध किसी चीजकी न आवे ऐसी संभाल रखना, बिछाना कपडा बदलते रहना, कम बोलना, मनको दूसरी बातो मे रखना, रोगका चिंतन चिंता न करना। धैर्य रखना, ब्रह्मचर्य पालन करना। औरतोंका सहवास कम रखना। उसे एकांतवास न देना।

शरीर पर ठंडी लगने नही देना। सुखी हवा वाले मकानमें रखना। हवा प्रकाश ज्यादा आवे ऐसा करना लेकीन रोगीके शरीर पर सीधी हवा न लगे यह सावधानी रखनी। पीनेका पानी नीमकी छाल २-४ तोला और निर्मलीके बीज पांच-सात डालकर वह पानी पीलाना। ठंडी ऋतु और वर्षा में कमरे मे अंगीठी रखना। रोगी को अच्छा लगे तो छाती या अन्य भाग पर कपडे के गोटेसे या अन्य साधन से सेंक करना। ग्रीष्म ऋतु हो तो रोगीको एक दो दिनमे गर्म जलसे स्नान करा कर तुर्त शरीर पोंछ डालना।

खुराक मे सादा जलदी पाचन हो ऐसा देना। गाय और बकरीका दूध चावल खीचडी मुंग चना तुवेरकी दाल गेहुं बाजरी आदि धान्य परवल करेला घीसोडा दूधीका शाक, फलमें पपैया चीकु मोठा मोसंबी द्राक्ष आदि देना। एक कप दूध मे १ से २ चना प्रमाण सेंधानान या नमक मिलाकर पिलाना। यह दुध और धारोष्ण-तुर्त दोया हुआ बिना गर्म किया उत्तम गुणकारी है। भूख न होतो खुराक कम देना। दूध पाचन न होता हो तो उसमे थोडी शक्कर और चाहा या कोफी डालकर देना। औषधसे खुराक पाचन होने लगे तब खुराक बढाना। मुंग चावलकी अच्छी तरह पकायी हुइ नमक हलदी काली मीर्च डाल बनायी हुई खीचडी के साथ दूध मिला कर देना बहुत गुणकारी बृहण शक्तिप्रद है। दूधमे उचित प्रमाणमे नमक डालकर पीना पिलाना चरक मतानुसार बृंहण है और क्षयरोगीको नमकवाला दूध देना फुफ्फुस हृदय आंतोके लिये गुणकारी है।

धारोष्ण स्नेहसंयुक्त पीत्वा सलवणं पयः॥
नरः स्निह्यति पीत्वा वा सद्यश्च लफाणितं॥ चरक

इस तरह बहुत स्थानोमे दूधमे नमक डाल कर पीनेका लिखा है। नमकके स्थानमे सेंधानोन भी डाला जाता है। सौराष्ट्र काठियावाड मे मुगकी दाल और देशी चावलकी हलदी नमक डाल कर बनायी हुई खीचडी मे दूध मिलाय रात्री का वालु रात्रि भोजन प्रत्येक ग्राम और घरमे पाया जाता हैं। लाखो मनुष्य रात्रि भोजनमे खीचडी दूध मिला खाते है। दूध मे शक्कर मिलाना स्वाभाविक सार्वजनिक हैं परंतु खुराक मे दूध के साथ नमक मिलाना या नमक न खुराक में दूध मिलाकर खाना पथ्य गुणकारी और क्षय रोगी के लिये तो अमृतरूप जीवनदाता है। क्षय पीडित मांसाहारी के लिये बकरी का जंगली पशु का मांस या उसका प्रवाही गुणकारी है। क्षयरोगी के लिये पानी जहा तक हो सके कूए का पिलाना। कुआ भी ऐसा हो जिस के उपर दिनको सूर्यका ताप और

-रात्रिको चंद्रका प्रकाश पड़ता हो । जलको कपड छान कर तामे के पात्रमे भर रख क्षयरोगीको देना । हमेशां तिलके तेलसे बना हुआ सुगंधी तेल अथवा महालाक्षादि तेल दो वख्त सारे बदनमे मालीस करना । गर्म जलसे स्नान करना रोगी के कमरे मे दिव्यधूप दो समय करना ।

दिव्य धूप—नागर मोथ ४ राल ३, गुडर कपूर काचली ३, हीराबोळ ३, वाला ४, मिश्री ४, हलदी २, जटामासी ७, चंदन सफेद काचूरा १०, पांदडीया धूप १०, तिलक, तेल ४, गुगल ६८, घी २, इस प्रकार लिखे भागसे सब चीजे लेकर कूटकर साथ मिलाना यहधूप कमरेमें करनेसे भूतप्रेत पिशाच भाग जाते हैं हवा शुद्ध होती है। क्षय रोगी नित्य हुक्का या चिलमसे इस धूपका धुआ श्वासमे लेनेसे क्षय रोग केन्सर मिटता है।

रसराज रस—(र स) पारद ४ तोला, गंधक २ तोला, मोतीकी छीपको भस्म अभ्रकभस्म पीलीकोडी की भस्म हाथी दांतकी भस्म ताम्र भस्म स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक एक एक तोला साथ मिलाय वासा और अरणी पत्तेके रसकी एक एक भावना देकर सुख जाने पर उसमे छोटी पीपल ४ तोला कालीमीरच २ तोला सोंठ १ तोला लोंग २ तोला मिलाकर शीशी मे भरना । ३ से ६ रती पानी दुध या शहदसे देना कास श्वास हृदयरोग क्षय में गुणकारी है ।

रसराज रस: शक्तिबलायु पुष्टिवर्धन ॥

श्लेष्मशृंगाक लघु—(र सं) रससिंदूर तोला ८, अभ्रक भस्म तो. ८, ताम्र भस्म तो ४, रौप्य भस्म तो २, सुवर्ण भस्म तोला ०१, मन शील शुद्ध तो ४, हरताल शुद्ध तोला ४, शुक्ति भस्म शंख भस्म सावरसींग भस्म प्रत्येक तोला ८ पीली कौडी भस्म तोला ४० सोहागा पकाया हुआ तोला ८ सब साथ मिलाय बकरीके दूधमे घोंट गोला बनाय शराव संपुटमें कपड मिट्टीकर वालुका यंत्रमे ४ प्रहर पकाना । स्वागशीत होने पर औषध निकाल घोंट कर रखना । मात्रा ३ से ६ रती प्रातः साय छोटो पीपल और कालीमीर्च तीन तीन रती मिलाय शहदसे देना। खांसी कफ क्षय फेफडेका हृदयका रोग उरःक्षत आदिमे गुणकारी है।

स्वर्ण वसंत मालती वृहत् (र स) स्वर्ण भस्म १० तोला, उत्तम प्रकारके बरसाई मोतीकी पिष्टि २० तोला, पूर्ण चंद्रोदय षड्गुण गंधक जारित ३० तोला, काली मिरच ४०, तोला, यशद भस्म रक्त ८० तोला, सब साथ मिलाकर मख्खनसे मलहम जैसा पिंड बनाना । पथ्थरकी खरलमें सब डालकर पीछे कागदी निंबूके रस डाल डाल कर घोंटते रहना । १८ दिन तक रात दिन

घोटनेसे मक्खनका स्नेह अर्थात् घीका अंश नष्ट हो जाता है और औषधमें खटाइ आ जाती है। तब आधी रतीकी गोली बनाना अथवा आधे आधे तोलेकी सोगठी बनाना। मात्रा २ से ४ गोली अथवा १ से २ रती शहद और छोटी पीपलके चूर्ण के साथ देनें से वात पित्त कफ के प्रकोपका क्षय रोग, श्वास, खांसी, जीर्णज्वर उन्माद मूर्छा, अपस्मार संग्रहणी रोगमें उत्तम गुण करती है। स्मृति मेधा आयुष्य आरोग्य कांति पुष्टि और बलको बढाती है।

सिद्धः श्रेष्ठ; बृहत्स्वर्णवसंतमालती वरा।
विश्वगुप्त्या गुणै स्वीयैः लेखनाद् सर्वदोषहृत् ॥

स्वर्ण वसंत मालती नं. १—(र. स.) इसमें स्वर्ण भस्मके स्थानमें स्वर्णका वर्ख और पूर्ण चन्द्रोदय के स्थानमें रससिंदूर डाला जाता है। और मुक्ता को खरड कम मूल्य की डाली जाती है। बाकी विशेष कृति और गुणधर्म उपर लिखी स्वर्ण वसंत मालती बृहत् जैसा ही है।

स्वर्ण वसंत मालती न. २—(र. स) इसमे स्वर्ण भस्म या स्वर्णका वर्ख पांच तोला, स्वर्ण माक्षिक स्वत पांच तोला कम मूल्यके मोती २० तोला, रूमी सिंगरफ ३० तोला, काली मिरच ४० तोला, शुद्ध खपर ८० तोला। सबको मक्खनसे पिंड बनाकर १८ दिनतक निंबूके रससे घोटनेसे घीका अंश नष्ट हो जाता है। पीछे एक रतीकी गोली अथवा आधे तोलेकी सोगठी बनाकर उपयोगमें ले। सोगठी हो तो १ से २ रती तक पानीसे घीसकर इसमे शहद और छोटी पीपलका चूर्ण ४ से ६ रती मिलाकर देना उपर इच्छा हो वह पीवे गोली २ से ४ दी जती है।

क्षयकुठारक रस—(र स) पारद गंधक स्वर्ण भस्म मुक्ता पन्ना स्फटिक प्रवाल और माणिक्य प्रत्येककी पिष्टि, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, रौप्य भस्म, तालचन्द्रोदय, सिद्ध हरताल भस्म प्रत्येक चार चार तोला, सोंठ पीपल, काली मिरच, पीपलीमूल, सुगन्धी कुष्ठ, कचुरा, कपूर काचली, काकडा शींगी, लताकरजके मीजकी गीरी, लौंग, इलायची, दालचीनी, धमासाका मूल, शतावरी, विदारी कंद असगंध, तुलसी बीज कनक बीज प्रत्येक दो दो तोला, सब मिलाकर तुलसीका रस, अरडुसका रस और ब्राह्मीका रस प्रत्येकका एक एक भावना दे कर सुख जाने पर घोंट कर इसमें अंबर १ तोला, कस्तूरी १ तोला, केशर १ तोला और भीमसेनी कपूर ४ तोला मिलाकर घोटकर रखना। मात्रा ६ से ८ रती शहद, घृतसे या दूधसे दी जाती है। इसके सेवनसे क्षयरोग, जीर्णज्वर, हृदय और फेफडोंके रोग नष्ट-

होते हैं। और हृदय बंध होनेका (हार्ट फेल्येोर) का भय नही रहता और फेफडों, आंतों मूत्राशय आदि अवयव बलवान होते हैं। विविध प्रकारके प्रमेह रोगमें भी अच्छा गुण देता है।

स्वर्ण भूपति—(यो. र. स्वर्णयुक्त) पारद १० तोला, गंधक १० तोला, ताम्रभस्म, २० तोला, अभ्रक भस्म लोह भस्म, स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, शुद्ध बछनाग, कांत लोह भस्म प्रत्येक १०-१० तोला। सब मिलाकर हंसपादीके रससे १ दिन मर्दन कर एक एक मासाकी गोली बनाकर सूख जानेपर कांचकी शीशीमे भर उसे कपडमट्टी कर वालुकायंत्रमें १२ घंटा तक पकाना। स्वांगशीत होनेसे शीशीसे सब औषध निकालकर घोट कर रखना। मात्रा २ से ४ रती, छोटी पीपलका चूर्ण ६ से ८ रती, अदरखका रस अधा तोला सब मिलाकर खाना। उपर दूध पीना। क्षय, आमवात धनुर्वा, पंगुवात, आढयवात, अग्निमांद्य, कटिवात उदरशूल गुल्म उदावर्त संग्रहणी, उदररोग, मूत्ररोग, मूत्रकृच्छ्रं भगंदर कुष्ट, विद्रधि, (केन्सर) कास, श्वास, सब प्रकारके ताप, पांडुरोग, इत्यादिमें उत्तम गुणकर्ता है। **सर्वरोगविनाशाय शस्यते स्वर्णभूपतिः** ॥

शृंगाराभ्र—(स्वर्णयुक्त र. सं) अभ्रक भस्म तो ८, पारद, गंधक, पकाया हुआ सोहागा, नागकेशर, जायपत्री, कपूर, लोंग तमालपत्र, स्वर्ण भस्म, प्रत्येक एक एक तोला, तालीसपत्र, नागरमोथ, कुष्ठ, जटामासी, दालचीनी, धाइके फूल, इलायची सोंठ कालीमिरच, हरड बडी, बहेडा आंवळा, गजपीपर प्रत्येक दो दो तोला, और छोटी पीपल १० तोला, सब मिलाकर तुलसी के रसमें घोटकर सुखाना। जायपत्री कपूर लोंग दालचीनी इलायची ऐसे सुगंधी द्रव्य पीछेसे डालकर घोटकर रखना। शहद और घृतके साथ ३ से ६ रती तक दो समय दिया जाता है। क्षय श्वास कास पांडु उदररोग, शोथ, जीर्णज्वर, संग्रहणी मंदाग्नि, अरुचि इत्यादिमें दीया जाता है। बळ और शक्ति बढाता हैं। इसके सतत सेवनसे मनुष्य नीरोगी रहकर सौ वर्षका दीर्घायुषी होता है।

वासावलेह—(र.स)१० रतल अडूसा (वासा)के हरे पत्ते लेकर कुटकर ४० रतल पानीमें उबालना। आधा पानी रहने पर कपडछान कर उसमें गुड रतल २० डालकर पकाना। घट्ट होने पर उसमें नीचे लिखी औषधियोंका चूर्ण डालकर धीमी आंचसे पकाना। अवलेह जैसा हो जानेपर चुल्हेसे उतारकर ठंडा हो जाय तब दूसरे दिन अच्छे चीनाइ मिट्टके बरतनमे भर देना। इसमें डालनेकी औषधिः— सोंठ, शाहजीरा, कलौंजी जीरा, जीरा, पीपलीमूल, काकडासिंगी

कुटकी, हरड, धनिया, भारगी, अतीस, लौंग, अभ्रक भस्म, शंख भस्म शुक्ति भस्म, मुईआमली, धमासा प्रत्येक दो दो तोला कुटकर मैदेके हवालेसे छानकर उपर लिखे मुताबिक डालना। मात्रा १ से ४ तोला तक हृदयरोग श्वास दमा खांसी, फेफडोके रोग आदिमें उत्तम गुणकारी है।

जातीफलादि गुटिका—(जाती फलादि चूर्ण) (र. स.) जायफल, वायविडंग चित्रक, सोंठ तगर, तालीसपत्र, सफेद चंदन, लौंग, कलौंजी जीरा, कपूर, हरड, बहेडा, आंवळा, काली मिरच, छोटी पीपल, वंशलोचन, दालचीनी तमालपत्र, इलायची नागकेशर प्रत्येक तीन तीन तोला। भांग तो.२८ सबके बराबर शक्कर मिलाकर शहदमें ६–६ रतीकी गोली बनाना। मुखमें रख कर रस उतारना अथवा ४से८ गोली की मात्रामें देना। क्षय खांसी दम संग्रहणी अतिसार, मुरछा, पीनस, प्रतिश्याय, मंदाग्निमें गुणकारी है। शहदमें गोली न बनाकर चूर्ण रखा जाय तो इसे जातीफलादि चूर्ण कहा जाता है इसकी मात्रा २ मासा।

महालाक्षादि तैल—(लाक्षादि तैल) (र. सं) (शां ज्वराधिकारे) पीपल या अन्य वृक्षकी लाख तो ४० कुटकर उसमें १० सेर पानी डालकर पकाना। चतुर्थांश रहनेपर कपडछान कर उसमें तिलका तेल रतल पांच डालकर पकाना और इसमें दहीका पानी (मस्तु) रतल ५ डालना और कुष्ठ, मधुयष्टि, देवदार, हलदी, नागरमोथ, मोरबेल, कुटकी, सफेद चंदन, प्रियंगु, हिमकंद, (दुधियो हेमकंद, रास्ना प्रत्येक चार चार तोला लेकर दहींके पानीमें पीसकर तेलमें डालना। पीछे धीमी आंचसे पकाना। पानीका भाग जल जाय जब कपडछान कर रख लेना। इसके मर्दन करनेसे जीर्णज्वर, क्षय, विषमज्वर, दाह, हाथ-पांव और शरीरका जलन मिटता है। बच्चोंको, वृद्धोको और सगर्भा स्त्रियोंको मर्दन करनेसे शरीर नीरोगी रहता है।

क्षयरोग के सामान्य प्रयोग

नीचे लीखे प्रत्येक प्रयोग खांसी, श्वास, दमा हृदयके भिन्न भिन्न रोग, क्षयरोग, सर्दी कफ फेफडोंके रोग आदिमे दिये जाते हैं और बलवर्धक पौष्टिक है। क्षयरोगी के लिये एक सालके पुराना धान्य, द्विदल (कठोल) विगेरे खाना गुणकारी है।

१ अभ्रक भस्म सहस्रपुटी तो. ०।, सावरसिंग भस्म तो. १, महालक्ष्मी विलास तो. ०॥, क्षय कुशांक तो. ०॥, छोटी पीपल तो. २ सब साथ मिलाकर

४८ पुटी बनाना । एक सुबह एक शामको ४ माशा त्रिफलादि चूर्ण के साथ मिलाकर लेना ।

२ महाराज मृगांक तो १, अभ्रक भस्म १०० पुटी तो २, शुक्ति भस्म तो. २, ताम्र पर्पटी तो १, सुवर्ण वसन्त मालती तो ०॥, और छोटी पीपल तो. २ । सब पीसकर ६४ पुडी बनाना एक सुबह एक शामको शहदसे या दूधसे लेकर ऊपर वासावलेह १ से २ तोला खिलाना । ऊपर दूध पीना ।

३ दालचीनी, सोंठ नागरमोथ, इलायची धनिया, आंवला, हलदी और अजमोद सब समानभाग लेकर कूट कर गुडमें गोली बनाना । इसका धुआं हुक्कामें या चुंगीमें पीना ।

४ अडूसाका (वासा) मूल, जीवन्ती (खरखोडीका फल) बदंती (क्षुप) के पंचाग मुलेठी का मूल, कचूरा, छोटी कटे हरीके मूल, सब समभाग कूटकर एक तोलामें २० तोला पानी डालकर रातको भिगो रखना । सुबह कपड छान कर अकेला या किसी दवाइके साथ दो दफे देना ।

५ छोटी कटहरी फल, बडी कटहरी फल मोय इमली (भूम्याफलकी) गोरखमुंडी, हलदी, तिलपर्णी (तलवणो) रसौत (रसवती) सब साथ कूट सबके बराबर गुगळ मिला र गुडसे सोगठी बनाना । और इसका धुआं हुक्कासे या चीलमसे पिलाना । दिनमें दो तीन दफे पिलाना ।

६ दिव्य धूप २० तोला तमाखुकी सूखी पत्ती १० तोला, सुगंधी कुष्ठ ४ तोला सबको कूट कर उसमें एक २० तोला मिलाकर महीन कूटकर रखना । धुआ हुक्के या चीलमसे पीनेसे क्षय आदि रोगमें बहुत लाभ होता है ।

७ कुडाकी छाल अडूसाके पान भारंगी और जीरा समभाग कूटकर १ तोलाका क्वाथ बनाकर शहद डालकर पिलाना ।

८ अभ्रक भस्म तो २, शिलाजतु रसायेग तो १ सुवर्ण पर्पटी तो. १, वातचिंतामणि वृहत् तो ०॥ सप्तामृत लोह तो १ काली मिरच तोला २, सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना । कंटकारी अवलेह अथवा च्यवनप्राश अथवा वासावलेहके साथ देना ।

९. अर्जुनकी छाल, आणिकका मूल, अडूसाके पान, असगंध दारुहलदी, शखावली, सब समभाग लेकर कूटकर रखना । एक तोलामें २० तोला पानी डालकर रातको भिगो रखना । दिनको दो दफे पिलाना ।

१०—नमक तो. २० को पीसकर आकके दूधमें भिगोकर सुखजाने पर पानी वाला नालियेर (श्रीफळ) के उपरकी रेषा सब निकाल कर आसके स्थानमें छिद्र कर पानी निकाल कर उसमे नमक भर देना। जितना समा शके दाब दाब कर भरना। पीछे छिद्र के स्थानमें मुच दे कर नालियेरको सात कपडमिट्टी करना पीछे गजपुट अग्निमें पकाना। पीछे खोल कर खोपरा (टोपरा) के साथ नमक निकाल लेना। उसको पीस कर रखना। २ से ४ रती दो वख्त देनेसे ताप खासी क्षय श्वासमें उत्तम लाभ होता है।

खांसी कास कफ।

उदानानुगत प्राणो भिन्नकांस्यस्वनो मुखात्।
दुष्टो निरेति सहसा स दोष कास संज्ञितः॥

कारण:—श्वासनलिमें धूल वगैरह पदार्थ जानेसे, आती हुइ छींकको रुकनेसे दाह करनेवाले गरम ठंडा, वायुकर्ता रातवासी आदि पदार्थ खानेसे ठंडे पानीसे स्नान करनेसे, ठंडा पवन लगनेसे, आघातसे, चोटसे, अतिभोजन, गरिष्ठ भोजन, अजीर्ण पर भोजन करनेसे आदि कारणोंसे खांसीका रोग उत्पन्न होता है।

चिह्न-गलेमें खुजली जैसा होकर खासी आवे। कफ कष्टसे छूटे जब कुछ अच्छा लगे। शरीरमें थोडा ताप रहे। अन्नपर अभाव। गलेमे छोटा अंकुर चुभता हो ऐसा लगे।

वायुकी खांसीमे : हृदय गला और मुख सुखा होता है। हृदय पसलियां और मस्तकमें शूल निकले। घबराहट, बेचेनी, स्वर बैठ जाना, खासीका वेग अधिक, पीडा हो, दर्द हो, खासी सूखी आवे, स्वर बैठ जाय। दस्त सूखा हो।

पित्तकी खांसी—छातीमे जलन, ताप बुखार, मुखमे शोष, मुखका स्वाद कडुआ, तृषा अधिक, पीले रंगका तीखा कडुआ वमन, रोगीका रंग पीलापन लिये, आंखोमे जलन शरीरमें जलन दाह कफ पीला दस्त पतला।

कफकी खांसी—कफ निकलनेमे कष्ट कम, छातीमे दर्द कम, मस्तक दिमाग छातीमे बोझ, गलेमे कफका अधिक जमाव मुख चिकना शरीरमे सुस्ती ग्लानि पीनस वमन अरुचि दस्त चिकना कफ सफेद।

उर:क्षतकी खांसी—अपनी शक्तिसे अधिक वलका काम करनेसे, अधिक भाषण, अधिक गाना, अधिक बोझ उठाना, अधिक समय तैरना, बैल घोडा आदि पशुके साथ लढना उनको कावुमे लेनेके लिये वलका अधिक उपयोग करना आदिसे हृदयमे क्षत व्रण होकर खासी आती है। इसमे कफ पीला काला सूखा गांठेवाला सडा हुआ पडता है। कफ निकालते गलेमे छातीमे दर्द हो छातीमे शूल निकले, श्वास दमा, तृषा आदि होकर दिनोदिन शरीर क्षीण हो छातीसे और पिशावसे खून गिरे।

क्षयकी खांसी—अतिविषय अनियमित भोजन वाजारु चीजोकी आदत, चायका अधिक व्यसन, अधिक दु:ख शोक, चिंता मानसिक संताप, अमुक रोगसे क्षीणता आदि कारणोसे क्षयकी खांसी होती है। इसमे दुर्गंधवाला पीला हरा सफेद कफ गिरे, बुखार रहे, कमजोरी अधिक लगे, खुराक पर अरुचि मंदाग्नि, सांधोमें दर्द आदि चिन्ह होते है।

पथ्यापथ्य—खांसी वाले रोगीने अपने शरीरको ठंडी लगने न देना, शीत ऋतु हो या शरीर ठंडी सहन न कर सकता हो तो गर्म या मोटा कपडा पहिनना। शरदी करनेवाले, गरिष्ट पदार्थ, खांड शक्कर के मिष्टान, अजीर्ण करनेवाले अन्नपान नहि खाना। स्त्रीसंग नहि करना। पवनका धक्का लगे इस प्रकार चलना नहि। सींगदानेका-मुंगफलीका तेल अचार लाल मिरच नहि खाना। जलदी पाचन हो ऐसा ताजा वनाया खुराक लेना। दुध अधिक लेना ताजा धारोष्ण दुध मिले तो बिना गर्म किये बिना शक्कर डाले पीना। दुधमे थोडा नमक डालकर पीना। दूधमें गुड मिलाय पीना अच्छा है। खीचडी चावल सब प्रकार दाल गेहु वाजरी जव चना आदि खाना। शाकमे सूरण दुधी तुरीया करेला बेंगन परवल सिंग मेथी चौलाइ आदि, फलोंमे चीकु मीठे मोसबी सफरजन हरी द्राक्ष पपैया आदि। सूखा मेवामे द्राक्ष बादाम पिस्ता आदि गुणकारी है। चा काफी का व्यसन हो तो बिना पानी डाले निखालस दुधमे थोडी शक्कर चाय या काफी डालकर एक या दो वखत पीना। हुक्केकी तमाखुमे गूगल घृत गुड अथवा दिव्य धूप के साथ गुड मिलाय इसका धुवा हुक्केसे या चिलमसे पीना। छातीपर कपडे के गोटेसे या अन्य साधनसे सेक करना। शरीरपर महालाक्षादि तेल अथवा महानाराण तेल अथवा भृंगराज तेल मालीस करना।

रसेन्द्र गुटिका—(र स) पारद गंधक अभ्रक भस्म ताम्रभस्म शुद्धहरिताल लोह भस्म अतिविष कालीमीरच सब समान भाग लेकर साथ मिलाय भांगरा

निगुंडी सहंजना मूलेठी मूल निंबुरस ढाकका फुल काकमाची प्रत्येकके रस या क्वाथसे एक एक भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना। मात्रा २ से ६ गोली मे २ से ४ मासा सितोपलादि चूर्ण अथवा तालीसादि चूर्ण मिलाय शहद दूध या पानीसे देना। सब किसमकी खांसीमे गलेके रोगमे गुणकारी है।

गुण महोदधि—(र स) पारद गंधक लोहभस्म ताम्रभस्म बंगभस्म अभ्रक भस्म शुद्ध वछनाग दालचीनी प्रत्येक एक एक भाग, तमाल पत्र सोंठ छोटी पीपल कालो मीरच नागरमोथ वायविडंग नागकेशर निगुंडी चोक इलायची पीपलीमूल मुरदासींगी वंशलोचन प्रत्येक दो दो भाग लेकर जलपिप्पली (रतवेलीयो) निंबु और तुलसीके रसकी एक एक भावना देकर दो रती की गोली बनाना अथवा घोटकर रखना ६ से ८ रती अथवा ३ से ४ गोली शहद या दूध से दो या तीन समय देना। खांसी श्वास छाती के फडोका रोग श्वासनली स्वरनलीका सूजन स्वरभंग आदिमे गुणकारी हैं।

अर्कवटी—(र सं) आकका फूल २० तोला लवंग सोंठ छोटी पीपल कालो मीरच जायफल प्रत्येक ५ पांच तोला सब मिलाय पानीसे २ रती की गोली बनाना मुखमे रख रस उतारना।

मधु यष्ट्यादि गुटी—(र. स) मूलेठी मधु यष्टी का घन (सीरा) २० तोला, तज तमाल सोंठ पीपल कालो मीरच लवंग सावरसींग भस्म शुक्ति भस्म कुष्ट प्रत्येक चार चार तोला अदरख के रस मे गोली ३ रतीकी बनाना मुखमे रख रस उतारना खांसी स्वर भंग श्वास नलीको सूजन [illegible] मिटे।

शृंगाराभ्र—(र. सं) अभ्रक भस्म निश्चन्द्र तोला ३२, कपूर जायपत्री नागरमोथ गजपीपल तमालपत्र लवंग जटामासी तालीसपत्र तज नागकेसर कुष्ट धाइफूल प्रत्येक एक एक तोला, हरड आंवला बहेडा सोंठ पीपलछोटी काली मीरच प्रत्येक आधा आधा तोला इलायची २ तोला जायफल २ तोला, गंधक ४ तोला, पारद २ तोला सबसाथ विधिवत घोंट कर अडूसी (वासा) के पतेके रसकी भावना देकर सूख जाने पर घोंट रखना। मात्रा ३ से ६ रती दिनमे दो या तीन वार शहद दूध या पानीसे देना। पीछे तांबुल पानमे अदरख दो मासा डाल कर चाव कर खा जाना उपर पानी पीना। कास श्वास हिक्का वमन तृषा पीनस क्षय रोगको मिटाता हैं। विशेषतः मंदाग्नि ज्वर उदररोग सूजन मेदवृद्धि नेत्ररोग प्रमेह शूल अम्लपित्त पाडुरोग रक्तस्राव आमवात आदि रोगपे भी उत्तम गुणकारी प्रतीत हुआ है। बल्य कृष्य नाडीकर और पुष्पातन देनेवाला है।

वाजीकरश्च बल्यो लब्ध्वाजनविष रंजनो भोगी ॥
शृंगाराभ्रः सततं आरोग्यायुष्यवर्धनो भवति ॥ १ ॥

मुक्ता रसायन—(चरक चि अ श्लो. १२२ से १२५) मुक्ता प्रवाल वैडूर्य शंख स्फटिक प्रत्येककी पिष्टी, शुद्ध काला सुरमा, पारद गंधक आकके फूल इन्द्रायणी नमक सेंधानोन, ताम्र भस्म रौप्य भस्म, लोहभस्म कमल पुष्प, कसेरुम जायफल, शणबीज अपामार्ग बीज सब समभाग लेकर साथ मिलाय रख ले। प्रातः साय ४ से ६ रती मात्रा शहद घृतसे लेनेसे कास श्वास हिक्काका शमन होता है और यह अंजन करनेसे तिमिर काच नीलीक पुष्पक आखका मेल चिपडा आखकी खुजली, आख उठना आदि रोग मिटते है।

खदिरसारादि गोली—(र स) खेरसार या कथा ८ भाग, पुष्करमूल काकडाशृंगी कायफल भारंगी, हरड, लवंग सोठ, छोटी पीपल कालीमीरच अतिस अजवायन, धमासा, गिलोय, छोटी कटहरीका फल, बडी कटहरी फल बहिडा सब एक एक भाग लेना। साथ मिलाय कर कपूर ८ भाग मिलाय पानीसे गोली चने प्रमाण बनाना। कास श्वास स्वरभंग हिक्का आदिमे गुणकारी है।

मिश्रण १ अभ्रक भस्म तोला १, ताम्रपर्पटी तोला १, चोसठ पोरी पीपल तोला , साधरसिंग भस्म तोला २, हलदी तोला २ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी कर २ वख्त शहद दुध या पानीसे देना। सब प्रकार के खासी के रोगमे देना। प्रत्येक पुडी के साथ ३ से ४ मासा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर लेनेसे अधिक लाभ होता है।

मिश्रण २—शुक्र भस्म तोला १ शृंगाराभ्र तोला १ सुवर्ण पर्पटी तोला " सुवर्ण माक्षीक भस्म तोला १, अभ्रमरस बृहत तोला १॥ सोंठ तोला १ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनादे। दो वख्त दूध शहद या पानीसे सब कास श्वास मे उत्तम है। प्रत्येक पुडी के साथ तालीसादि चूर्ण ३से४ मासा मिलाकर लेनेसे अधिक लाभ होता है।

चोपचीन्यादि बटी—चोपचीनी बडी सोंफ सज्जीखार एरंडी बीजका गर्भ काली मुसली समभाग लेकर गौमूत्रमे गोली ३ रतीकी कर १ से ३ देना।

अहिफेनादि वटी—अफीम छोटीपीपल अडूसा मूल भारंगी सोंठ काली मिरच लवंग दालचीनी कपूरकाचली जायफल जवखार मूलैठी मूल नमक अजमा वायविडंग हलदी सब समान भाग मिलाय शहदमे गोली ३ रतीकी बनाना १से ३ गोली मुखमें रख रस उतारना

लवंगादि चूर्ण-गोली—लवंग ४० तोला सोंठ छोटीपीपल कालीमिरच अडूसी पत्र छोटी कटहरीफल नागरमोथ कचूरा पिपलीमूल हलदी जवखार कर्कट शृंगी कुलींजन प्रत्येक दस दस तोला साथ कूट रखना शहदसे २ से ३ मासा खांसी श्वास हिक्का मिटे। शहदसे या गुड़से गोली १ मासाकी बनाना।

बालकफारि गुटी—(र स) पारद तोला १० गंधक तोला १०, सोंठ छोटी पीपल कालीमिर्च वायविडंग जवखार सोहागा पकाया प्रत्येक तोला ८ हीमजी हरड एरंडो के तेलमें तली हुई तोला २४, कत्था तोला ५६ कर्कट शृंगी कपूर काचली सागर गोटाकी गिरि (कांकचोयानां मोज लता करंज बीज गर्भ), लवंग प्रत्येक तेला १० अमाल गोटा गीरी शुद्ध तोला २० सब साथ मिलाय भृंगराज के पते के रसमे मुग जैसी गोली बनाना बच्चोंको १ से २ गोली पानीमें पीस देना कास बडी खांसी कफ शरदी दमा छाती में कफका जमाव आदि मिटते है। और बडी उम्रके लोगोंको ४ से ६ गोली गरमजलसे दी जाती है।

महाराजमृगांक—(र. सं. क्षये) स्वर्णभस्म तोला १, रससिंदूर तोला २, मुक्तापिष्टी तो ३, गंधक तोला ४, स्वर्ण माक्षिक भस्म तो. ५, प्रवाल पिष्टि तो. ६, पकाया सोहागा तो २, शंख शुक्ति, कौडी खापर सिंगरफ वैक्रांत त्रिभंग अभ्रक आठों चीजेंकी भस्म प्रत्येक २ दो तोला लेकर सब मिलाय नीमके पंचांगके क्वाथ या रससे ३ दिन घोंट गोलाकर उपर केली के पत्ते लपेट धागा बांधकर उपर मिट्टीका लेप एक एक अंगुल करना लवण यंत्रमें गोला रख २४ घंटा पकाना। स्वांगशीत होनेके पीछे निकाल कर घोंटकर रखना। प्रातः साय ३ से ४ रती छोटी पीपल और काली मिर्च के चूर्ण ६ से ८ रती के साथ शहद घृतसे या दूधसे दिनमे २ या ३ समय देना। ४० दिन सेवन करनेसे क्षयरोग मिटता है। रोग अधिक बढा हुआ हो, दोनो फेफडे बिगड गये हो तो रोगीकी शारीरिक स्थिति रोगका स्वरूप देखकर आराम हो जबतक देते रहना। इस औषधसे कृशता हृदय फेफडेकी सूजन उर क्षत खांसी कफ जीर्णज्वर मिटते है। रोगी बलवान पुष्ट होता है।

शिलाजतु प्रयोग—(र स.) शिलाजीत वायविडंग लोहभस्म १०० पुटी बडी हरड स्वर्णमाक्षिक भस्म सब समान भाग लेकर घोंट कर रखे। ३ से ४ रती शहद घृतसे देनेसे क्षय खांसी श्वास दम कमजोरीमें उत्तम फायदा होता है।

सुवर्ण पर्पटी—(र. स.) सोनाका वर्क (पत्ते ४ तोला लेकर ३२ तोला शुद्ध पारदमें घोंटना सोना मिल जाय जब ३२ तोला शुद्ध गंधक लेना। लोहेकी

कढाईमें १० तोला गायका घी छोड पीघल जानेपर उसमे ३२ तोला गंधक छोड उसका रस हो जानेसे सुवर्ण पारदकी पिष्टि डाल कर लोहेके तवेथामे हिलाना सम मिल जाय जल हरे गोबरके उपर बिछाये केलीके पते पर त्वरासे डालकर उपर पत्ता और हरा गोबर दाब देना। २४ घटे के पीछे गोबर अलग कर केलीके २ पत्तों केबीच की पर्पटी निकल कर घोटकर शीशी में भर देना। माशा २से४ रत्ती ३ से ८ मासा त्रिफलादि चूर्ण और शहद घृतमे देना अथवा चोसठ प्रहरी पीपल ६ से ८ रती से मिलाय शहदसे देना। क्षय रोगमें उत्तम गुणकारी है। और संग्रहणी अतिसार मदाग्नि पांडु जीर्णज्वर और वृद्धलोग जवान बच्चे छोटा आदि सबकी किसी भी रोगकी कमजोरी मे कमताकातमे कृशता क्षीणतामे परम गुणकारी है।



श्वास दमा

कारण—वमन, विष, विषविकार पांडुरोग, अजीर्ण, ताप धूप, धुआ, मर्मस्थानमे आघात, ठंडा पवन छातीमे लगना, गंधकका धुंआं, आघात, ठंडे पानीसे नहाना आदि अनेक कारणोंसे यह रोग होता है। फुफ्फुसोंके बाहरकी पतली धमनी नाडियां बिगडनेसे उनमे बाहरी श्वासका यथोचित आगमन होता नही और फुफ्फुसोकी विषकी हवा सरलतासे बाहर निकल सकती नहीं। इस कारण यह रोग होता है। विशेष रोगोके चिह्न के रूपमे भी यह रोग हो जाता है।

चिन्ह—किसीको ठंडी ऋतुमें, किसीको वर्षामे और किसीको सब ऋतुमें यह रोग हो जाता है और बहुत वर्षोंतक रहता है। प्रत्येक वर्षमें अमुक समय पर उमड आता है। बहुत करके रातके समय ज्यादा होता है। जब रोगी नींदसे जाग जाता है। छातीमे एक प्रकारका आवाज निकलता है। पहिले खांसी आकर दम बढता है। कफ निकल जाने मे आराम रहता है। स्वरनलीमें एक प्रकारका आवाज निकलता है। पहिले खांसी आकर दम बढता है। कफ निकल जानेसे थोडा आराम रहता है। छातीमे घबराहट, संकोच, दाब धडका, जलन, पीडा, दर्द आदि होवे हैं। फिरने फिरनेमें तकलीफ होती है। पीछली रातको दर्द और पकडता है। पाचन अच्छा नही होता। दस्तकी कब्जी रहती है। श्वास चढे जब पहिले खांसी बहुत आकर रोगी बेचैन हो जाता है। पसीना

लगता है। अंदर आनेवाला श्वास छूंका और बहार निकलनेवाला श्वास लंबा होता है। लमणोमें दर्द पेटमें और कावटमें शून्य, कामकाजमें निरुत्साह मुखमुद्रा चिंताग्रस्त आदि चिह्न होते हैं।

पथ्यापथ्य—अजीर्ण होने न देना। बादी करनेवाली चीज छोडना। खोट शक्करकी चीजे, बजारकी मीठाई, मुंगफलीका तेल घी, दही छाछ आइस्क्रीम, बरफ आदि नहीं खाना। रोगीको सूर्या हवा प्रकाशवाले कमरेमें रखना। आस-पास मक्खी भेज न होने देना। जागरण नहीं करना। घी और चरबीवाले पदार्थ कम खाना। गाय, बेटी गधी, ऊटनी इनका दूध लाभदायक है। ठंडा और सामने देखवाला पवन लेना नहि। प्राणायाम करना। एक समय भोजन करना। गरम जलसे नहाना।

श्वास कुठार (यो र प्र १५८)—पारद गंधक शुद्ध बछनाग टंकण शुद्ध मनशील, प्रत्येक तोला ५ पांच और कालीमिरच तोला ४०, सोंठ तोला, २, छोटी पीपल तोला २, काली मिरच तोला २, सब साथ मिलाकर ८ दिन तक घोंट कर रखे। मात्रा—१ से २ रत्ती कत्था चूना लगाया पानमें डाल खिलाना। दिनमें २ या ३ वार देना उपर दूध पवे। श्वास दमा कास खांसी, मंदाग्नि, कफके रोग मूर्छा अपस्मार मृगीके देना ०। से ०॥ रती बिना कत्था चूना लगाये पानमें पीसकर अथवा दूध पिलावे। बच्चोंके कफ सरदी भराणी बडी खांसीमें अच्छा फायदा होता है।

श्वास कालेश्वर (महाकालेश्वर) (र प्र)—पारद, गंधक, अभ्रक भस्म, ताम्रभस्म, लोहभस्म वंगभस्म माक्षिक भस्म, हिंगुल शुद्ध वत्सनाभ शुद्ध कुचला जायफल जायपत्री, लवंग, तज, इलायची नागकेसर, धतूर बीज, वंश लोचन, समुद्रफीण शुद्ध, सोंठ प्रत्येक द्रव्य दो दो तोला, त्रिफला १० तोला, काली मिरच ६ तोला, छोटी पीपल ६ तोला सब साथ घोटकर अदरखके रसकी १ भावना देकर सुखाकर घोंट रखें। मात्रा २ से ३ रत्ती शहदसे या वासा-वलेहसे देना। सब प्रकारकी खांसी दम क्षय गलेके रोग मंदाग्नि अनिद्रा कमजोरी आदि मिटते है। शक्ति आती है।

ताम्र पर्पटी—(र. म) ताम्र भस्म तोला १२ पारद तोला २४, गंधक तोला २४ पहिले गंधकको पिघाल कर रस हो जाने से उसमे पारद डालकर तवेथासे हिलाना। मिल जाय अब ताम्र भस्म डाल कर पर्पटी की रीतिसे गोबर और के केलोके पत्ते के बीच दबाकर २४ घटे के पीछे निकाल कर घोटकर

उसमे छोटी पीपल का महीन चूर्ण तोला १२ मिलाकर घोंट कर रखना मात्रा ३ से ४ रती शहद घृतसे देना। श्वास खांसी हृदय के रोग शरदी कफ ज्वररोग शूल पेटकी पीडा गुल्म आदि मिटते है।

सूर्यावर्त—(र स) ताम्र भस्म पारद गंधक प्रत्येक तोला १०, शंख भस्म शुक्ति भस्म सोंठ पीपल काली मीरच लवंग इलायची तज प्रत्येक तोला ५ सब साथ घोंट कर रखना। ३ से ४ रती तुलसी के १५-२० पत्ते के साथ अथवा तांबुल पानकी पट्टी के साथ देना सब प्रकारका श्वासका रोग खांसी हिचकी मिटे।

श्वास चिन्तामणि बृहत्—(स्वर्णयुक्त र सं) पारद गंधक ताम्र भस्म शुक्ति भस्म शंख भस्म प्रत्येक पांच पांच तोला, सुवर्ण भस्म रौप्य भस्म मुक्ता पिष्टी प्रत्येक एक एक तोला, माक्षिक भस्म तोला ६, सोहागा वत्सनाभ सोंठ पीपल काली मिरच मनशील कनकबीज प्रत्येक चार चार तोला साथ मिलाय घोंट कर छोटी या बडी करहरी के फलके रसकी निगुंडी रससे और अदरख की एक एक भावना देकर सुखा कर घोंट रखना मात्रा ३ से ४ रती शहद घृतमे या दूधसे या शहद से देकर पानकी पट्टी खिलाना। इसका धुंआ भी चिल्ममे पिलाया जाता है।

कासश्वासेश्वराभ्र—(र स) अभ्रक भस्म तोला ३० पारद तोला १० गंधक तोला १०, रससिंदूर तोला ५, कांस्य भस्म तोला ५ सब साथ मिलाकर घोंट कर नीचे की वस्तु के क्वाथ की ४ भावना देना। भांगरी कन्फ पत्र अडसी कमौदी बकायन नीम निगुंडी पीपलीमूल अदरख चित्रक चवक तज लौंग प्रत्येक तोला ४ लेकर कुट कर ४ भाग कर एक भागका क्वाथ कर भावना देना। इसतरह ४ भावना देना पीछे सुखाकर घोंट रखना। मात्रा ३ से ४ रती शहदसे देना। श्वास छाती के रोग छातीकी कमजोरी खांसी बच्चो के फेंफडों के हृदयरोग शरदी पीनस जुकाम आदिमे अच्छा लाभ देता है।

श्वास गजसिंह--(कस्तूरीयुक्त र सं) ताम्रभस्म पारद गंधक प्रत्येक तोला १०, अभ्रक भस्म मूलैठी मूल सोंठ पीपल पीपरी मूल तथा मिरच लौंग इलायची केसर कुलिजन शक्कलकरा तज चंदन का तेल अथवा चूरा प्रत्येक एक एक तोला मावरसिंग भस्म तो ६, मल्ल भस्म तो १॥, कस्तुरी तो. २ पहिले पारद गंधक ताम्र भस्मकी पर्पटी बनाकर दुसरी वस्तु मिलाना। सब किसमका श्वास दम खांसी हृदयरोगमे उत्तम गुणककारी है।

वासादि क्वाथ—(र सं) अडूसेके पत्ते हलदी धनिया गिलोय भारंगी पीपल सोंठ कटहरीकामूल समभाग लेकर कुटकर १ तोलाका क्वाथ कर पिलाना।

ऊर्ध्वश्वासारि—(र सं) शुद्ध पारद गंधक ताम्र भस्म लोहभस्म, वंगभस्म, चित्रक सोंठ छोटीपीपल, काली मिरच, असगंध, हरड़, बहेडा आंवला, छोटी कटेरी मूल, हलदी अकलकरा बड़ी अजमोद, लवंग, नागरमोथ, कनक बीज, सैंधव जवाखार, इलायची जीरा, मुलेठी, अजवायन, चीनीकबाला, प्रत्येक १ एकभाग, दन्ती शुद्ध ५ भाग विजया ५ भाग, और गुगळ ५ भाग मिलाकर बड़ी कटहरी के रससे भावना देकर दो दो रत्तीकी गोली बनाना अथवा घोंट कर रखना मात्रा ३ से ४ गोली अथवा ६ से ८ रत्ती दो या तीन समय पानीसे या शहदमे लेना।

चिंतामणि चूर्ण—(र. सं) रास्ना, बलाबीज, पद्मकाष्ठ, देवदार, हरड़, बहेडा, आंवला सोंठ पीपल, काली मिरच, वायविडंग समभागसे मिलाना। दो समय ३ से ४ मशा शहद अथवा घी के साथ देना।

श्वास के सामान्य उपाय

प्रयोग १ श्वास कालेश्वर तो ०॥, सावरशिंग भस्म तो १, अग्निरस तो. ०॥ अष्टामृत पपटी तो १. लोंग तो २ सब साथ मिला कर ६४ पुडी बनाना। दो वक्त वासावलेह अथवा शहद अथवा पानी के साथ देना।

प्रयोग २. ताम्र पर्पटी तो ०॥ सुवर्ण वसंत मालती ०॥ अभ्रक भस्म तो १ शुक्ति भस्म तो १ श्वासकुठार तो १ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी करना। दो समय शहद या पानीसे।

प्रयोग ३ अभ्रक भस्म तो. १, ताम्र भस्म तो. ०॥ पंचेश्वर पर्पटी तो १, चौसटपोरी पीपर तो ३ सावरशिंग भस्म तो २ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी करना। दो वखत शहद या पानीसे देना।

प्रयोग ४ धतूरे का पान तो २ छायामे सुखाकर उसमे दिव्य धूप तो ४ और गुड तो. ४ सब मिलाकर टीकिया बनाना। इसका धुआं हुक्केसे या चोलीमसे लेना।

प्रयोग ५ बहेडेकी छालका चूर्ण सेर १ में ८ शेर गौमूत्र डाल पकाकर घट्ट होनेसे दो मा माशाकी गोली बनाना। २ से ४ गोली पानी या शहदसे देना।

प्रयोग ६ अजवायन २ से ४ माशा गडरियाका दूध तो. २० और हल्दी तो ०॥ सब साथ मिलाकर पिलाना।

प्रयोग ७ देवदार, बलामूल, जटामांसी समभाग ले सबको साथ पीस कर २-२ माशाकी टीकिया बनाना। सुखाकर टीकियाको गाय के घृतमें भिगो कर हुक्का या चीलमसे धूम्र पीना।

प्रयोग ८. दशमूलादि क्वाथ दशमूळ कचूरा रास्ना छोटी पीपल, सोंठ पुष्कर मूळ काकडा शिंगी भुंआी आवलो, भारंगी गिलोय लौंग त्रिकूट सब समान भाग लेकर कुटकर १ या २ तोलाका क्वाथ या फांट बनाकर पीना। श्वास हृदयका जकडाना पसलियोंका शूल, हिक्का, खांसी में उत्तम गुणकारी है।

प्रयोग ९. केलीका, फुल, डोलरका फूल शिरीषका फूल और छोटी पीपल सब समानभाग लेकर कुटकर रखना २ से ४ माशा पकते चावलका ओसामण (पांनो)-चावलके मडसे देना।

प्रयोग १० हलदी, काली मिरच, काली द्राक्ष, छोटी पीपल रास्ना कचूरा सब समान भाग कूट गुडमें २-२ वालकी गोली बनाना। २ से ४ गोली १ तोला सरसोंके तेलमें मिलाकर खा लेना। उपर गरम पांनी पीना।



हिक्का हीचकी

कारण-अजीर्णसे उदावर्त वायुकी ऊर्ध्वगति होनेसे, हिस्टीरीयासे दस्तकी कबजीसे रुक्ष, ठंडे, वासी भोजनसे मलमूत्रका वेग रुक जाने से अजीर्ण पर भोजन करनेसे आम बढनेसे अभिघात और आघातसे क्षयरोगसे और कोइ भी रोग भयंकर रुप पकडनेसे यह रोग उत्पन्न होता है।

चिह्न-अन्नजा क्षुद्रा यमला महती, गंभीरा ये पांच प्रकारकी हिक्का होती है। पहली दो साध्य है और सामान्य उपचार से मिट जाती है। यमला कष्ट साध्य है। यह हीचकी आनेके समय मस्तक और ग्रीवाका कंप होता है, पेट चढता है तृषा लगती है। वमन और दस्त होता है, जभाई और हीचकीका वेग दोनों साथ आता है। यह हीचकी अन्न पचन हो जब उठती है। इसका दूसरा नाम वेगिनी और परिणामवती भी है। महती हीचकी असाध्य है। यह आते समय भ्रूकुटी शंख (कान और नेत्रके बीचका भाग-लमणा)

बन्द हो जते है आंखो में पानी भरता है। रोगी बोल नही सकता। स्मरण शक्ति नष्ट होती है। इस हीचकीका शब्द वेग और बल अधिक होता है। गंभीरा हीचकी भी असाध्य मानी जाती है। यह पक्वाशय और नाभिसे ऊठती है। यह आती है जब गंभीर नाद जैसा शब्द होता है। दूसरे लक्षण महती जैसे हैं।

पथ्यपाथ्य-साधारण हीचकी में प्राणायाम कराना। वायु अधिक करनेवाली चीज नही खाना। उपवास कराना। आश्चर्य जनक बाते करके रोगीको भय उत्पन्न और आनंद वढाना। साधा खुराक देना। इलायचीके छिलकेका धुंआ हुक्केसे या चुंगीसे पिलाना। वायुका अनुलोचन हो दस्त पिशाव ज्यादा हो ऐसा उपचार करना। उष्ण वीर्य औषध और अनुपान हितकारक होता है।

सर्वमंगला वटी—(र. सं) पारद, गंधक अभ्रक भस्म ताम्र भस्म शंख भस्म कांस्य भस्म प्रत्येक ४ चार तोला, रससिंदुर शुद्ध मनशील छोटी पीपल, सोंठ ईलायची, काली मिरच, पीपरीमूल प्रत्येक ६ छह तोला, अदरख, तुलसी पत्र धतूरे का पान निर्गुंडीका पान और अडूसी के पान प्रत्येक १० दस तोला लेकर कूट कर कमाथ करना। उसको ३ भावना देना। और रती रतीकी की गोली बनाना। २ से ४ गोली शहदसे देना और हुक्का या चीलम से धुआं पिलाना।

हिक्का हीचकी के सामान्य प्रयोग

प्रयोग १ सोंठ, कालीमिरच, कुटकी, पीपरीमूल, छोटी पीपल, सेधानोन जीरा, कचूरा, काकडा सिंगी निसोथ, काला नमक कुष्ठ सब समान भागसे कूट कर बीजोरा निंबूके रसकी भावना दे कर रखना। मात्रा २ से ४ आशा पानीसे देना। हिचकी श्वास खासी और मंदाग्नि मिटे।

प्रयोग २. गाय के सींग का धुआं पीना।

प्रयोग ३ इलायची कूटकर उसका धुआ पीना।

प्रयोग ४. अच्छी हींग तो. १ में उडदका आटा तो० ५ डाल आधा आधा तोला की टीकिया बनाना। छायामे सुखाना। उसका धुआ पीना।

प्रयोग ५ भारंगी और सोंठ सम भाग मिला कर पावसे आधा तोला गरम जलसे देना।

प्रयोग ६. सर्वेश्वर पर्पटी, साबरसिंग भस्म, चोसठ पोरी पीपर। चन्द्रप्रभा समान भाग मिलाकार ४ से ६ रती शहद या पानीसे देना।

प्रयोग ७ पद्माख छोटी पीपल, इलायची और मयूर के पींछे इनको सममाग ले कर कूटकर मिट्टीकी हंडीमे डाल अंतरधुम जलाकर उस भस्म ८ से १० रत्ती शहदसे देना।

प्रयोग ८. कायफलको कूट कर २ से ४ मासा शहदसे देना।

प्रयोग ९. हलदी मयूरपिच्छ और राल समानभाग कूटकर इसका धुआं पिलना।

प्रयोग १०. मोरपिच्छकी भस्म २ से ३ रत्ती और छोटी पीपल ४ से ६ रत्ती अदरख के रससे शहद डालकर देना।

प्रयोग ११ तुलसीके पत्तेका रस १ से २ तोला पिलना।

प्रयोग १२ विजयसारकी छाल (अंजन वृक्षकी छाल) और हलदी क्षुप सममाग कूट कर ४-६ माशा पानीसे देना। अथवा उसमे गुड मिला कर इसका धुआं पिलाना।

प्रयोग १३ छोटी पीपल और सहंजनेका मूल सममाग कूट कर ०। से ०॥ तोला पानीसे देना।

प्रयोग १४ अभ्रामृत पर्पटी तो १, लौंग तो २, सितोपलादि चूर्ण तो. ३, सांभरसिंग भस्म कपूर, इलायची प्रत्येक तो. २ जायफल तो १, सब साथ कूट मिलाकर २ से ४ माशा गुड के साथ दो से तीन दफे देना।

मुखरोग मुखके अंदर के रोग गलेके रोग तथा स्वरभंग

विपोच्चैर्भाषणाजीर्णास्यशनैरतिशीतलैः ॥
अभिघातादिभिर्दोषा गलस्रोतःसु दूषिताः ॥
कुर्युर्नानागलगदान् स्थिताः स्वरवहेष्वपि ॥
गलकर्णयोः शोथ स्वरभंगादिकान्गदान् ॥ र. सं. ॥

कारण तथा चिह्न—अजीर्ण दस्तकी कबजी सरदी पवन ज्यादा गरम पदार्थ ज्यादा खाना और पित्त प्रधान रोग आदिसे और आम बिगडनेसे संग्रहणी के रोगसे मुखका रोग होता है। गलेकी सूजन अंदर और बहार होती है। जिससे पानी भी नही उत्तर सकता। ताप भी रहता है। आवाज बैठ जाता है।

स्वर भंग, जोरसे भाषण करनेसे, बोलनेसे, गानेसे, विष विकारसे अजीर्ण पर भोजन करनेसे खांसी क्षय कैन्सर जैसे रोगसे ऋतु बदलेनेसे शरदी लग जानेसे, और अन्य कारणसे यह रोग होता है।

स्वरभंगमे वायुकोप हो तो मुख आंखे मूत्र और मळ कुछ काले रंग के हो, मुख सूखा हो गद्दे जैसा स्वर निकले। पित्तप्रकोप हो तो. आंख मुख मळ मूत्र कुछ पीले रंग के हो। बोलते समय गलेमें दाह और जलन हो। कफ प्रकोप में कंठ कफसे रुक जाय। बहुत श्रमसे थोडा बोल सके। नाकसे श्वास कष्टसे ले सके। क्षय के स्वरभंगमें स्वरके साथ धुआं निकलता हो वैसा भास हो और स्वर एकदम बैठ जाय। स्वरभंगका रोगी क्षीण हो वृद्ध हो, कमजोर हो कृश हो लंबे समयसे रोगसे पीडित हो और तीनों दोषो के चिह्न दीखते हो वह असाध्य माना जाता है।

पथ्यापथ्य--पसीना निकलनेकी दवा, जुलाबकी, वमन की दवा देना। औषध के कुल्ला कराना। अंदरके भागमें दवाइ लगाना और गलेमें किसी भागपर खुनका जमाव होकर सुजन हो तो नस्तासे खुन निकलवाना। नस्य देना हुक्कासे या चीलमसे दिव्यधूपका श्वासमे धुआं देना। मुंग, जव, कुलथी उडद, जंगली मांस, परवल दूधी, चावल पुराने धान्य गरम पानी, कडुआ रस हितकारक है। तीखे पदार्थ मत्स्य, ग्राम्य मांस, दही, गुड रुक्ष पदार्थ कठिन खुराक, कफकारक पदार्थ बाजारकी मीठाइ आदि हानिकारक है।

मुखके रोगसे बाहर के भागमे गाल गला या कंठ पर सूजन और पीडा हो तो दशांग लेप अथवा दोषघ्न लेपसे तिगुनी सफेद मिट्टी मिलाकर पानीमें पीस लेप करना और उपर पाटा बांध देना।

कल्याण भैरव रस—(र. सं) पारद, गंधक, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म प्रत्येक तो ८ मोतीकी पिष्टि तो. २ सबको साथ मिलाकर चोकवार भांगरा अडुसी, छोटी कटहरी, ब्राह्मी, और गिलोय प्रत्येक के रस या क्वाथकी एक एक भावना दे कर रती प्रमाण गोली बनाना। २ से ६ गोली पीसकर पानीसे या शहदसे देना। गले के अंदरकी सूजन, दाह जलना गलेके काकडेकी (Toncil) सूजन स्वरभंग श्वास हृदयके रोग, क्षय, हिक्का, मसा, अतिसार संग्रहणी जीर्णज्वर इसमें फायदा होता है।

कल्याण घृत—इंद्रायण मूळ तो. १०, बहेडा, तो. १५ देवदार तो. १५, हळदी तो १५, अनंतमुल तो. १५, इलायची तो. १५, दाडमफुल तो. १५,

तमाल पत्र तो. १५, ब्राह्मीहरी तो १५, स्वर्ण क्षुप तो. १५, हरड १५, आमलो तो १५, कलोंजी जीरा तो १५, धवलो तो.१५, दारुहळदर तो १५, कमळमुळ तो.१५, मजीठ तो. १५, छोटी कटहरी तो १५, अतिविष तो १५, चमेलीपान तो. १५, सबको कूट पानीमे २४ घंटा भिगो कर उसमें घी रतल तीन डालकर पानी जलजाय तबतक पकाना। मुख जीभ स्वरनली श्वास नलीके रोग स्वरभंग गलेका सूजन मुखपाकमें, उन्माद पागलपन दिमागका दर्द मस्तक पीडा अपस्मार मृगी हृदयरोग आदिमे उत्तम फायदा करता है।

किन्नरकंठ रस—(र स) पारद गन्धक, अभ्रक भस्म, माक्षिक भस्म लोह भस्म प्रत्येक १–१ तोला, वैक्रान्त भस्म ०। तो सुवर्ण भस्म २ आनी भार, रौप्य भस्म ०॥ तो चन्द्रप्रभा लोह शिलाजित वाली १० तो. बडी हरड २ तो सब साथ मिलाकर अडूसो (वांसा), भारंगी, छोटी कटहरी, अदरख और ब्राह्मी प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देना चनेके प्रमाण गोली बनाना। मुखके रोग, स्वरभंग खांसीश्वास गले के रोग आदिमे २ से ४ गोली शहदसे या पानीसे देना।

सारस्वती अवलेह—(र. स) हरी ब्राह्मी तो ६०, कटहरीका पचांग गिलोय भांगरा, वासा. बलापंचांग. मुलैठी पचांग प्रत्येक तो ३०, लेकर सबको कूटकर ८ गुने पानीमे पकाकर चतुर्थांश पानी रहने पर कपडछान कर उसमें शक्कर शहद और गुड प्रत्येक ६–६ रतल डालकर पकाना। कुछ गाढा होनेपर उसमे हलदी आंबा हलदी पीपलीमूल आंवली हरड शिलाजित, सोंठ, छोटी पीपल काली मिरच, अजमोद मुलैठीका शिरा कुष्ठ निशोथ सैंधानोन बच अभ्रक भस्म प्रवाल पिष्टि प्रत्येक तो ६–६ डालकर पकाना अवलेह जैसा होनेसे उतार कर स्वांगशीत हो जानेसे अच्छे बरतनमें भर देना। मात्रा १ से २ तोला खिलाकर उपर गरम दुध पिलाना। गलेके रोग, गलेकी अंदर या बाहरकी सूजन स्वरभंग, खांसी, श्वास छातीं के रोग पीनस, गलेका कावडा (Toncil) की सूजन जिव्हास्तंभ उन्माद पागलपन आदिमें उत्तम गुणकारी है। बुद्धि स्मृति मेधा बढते है।



गलेके अन्य रोग

रोहिणी—यह रोग गलेमे होता है। वात पित्त कफ दूषित होकर गलेके मांस खुन को बिगाड कर गलेको रुक रखने वाले अंकुर उत्पन्न होते हैं। यह असाध्य हैं। **वातप्रधान रोहिणी** मे जीभ मे चारो ओर पीडा हो मांसांकुर गलेको रुक दे, रोगी ७ दिनमे मर जाता हैं। **पित्तप्रधान** रोहिणी मे जलन पाक बुखार और मासांकुर जल्दी निकल आवे, ५ दिनमे रोगी मरण पावे।

कफरोहिणी—मे श्वासमार्ग गलेका मार्ग रुक जाय पकनेमे विलंब हो कठिन चिकना खुजली के साथके अंकुर निकले, ३ दिनमे रोगी मर जाय। **त्रिदोष रोहिणी**—मे तीनो दोषोके न्यूनाधिक चिन्ह दिखे इसको अस्पताल मे पहुचा कर ओपरेशन कराकर अंकुरोको काटना चाहिये ताकि श्वासकी गति और खुराक रुक न जाय और बचजाने की आशा रहे। काटनेके पीछे कल्याण घृत खुराक के रुपमे देना, दिनभर १० तोला तक दिया जाता है। बब्बूल की छाल, विजयसार (असनवृक्ष) की छाल, रुदती क्षुप, हल्दी नीमकी छाल सब सम भाग कुट कर ६ तोला मे ३ लोटा पानी डाल पिलाते रहना। रसालादि वटी ३ से ६ पानी मे पीस पिलाना बाह्य भाग मे दशांग या दोषघ्न लेप लगाना

कंठशालूक—बेर जैसी कंटक युक्त पीडाकारी स्थिर कठिन कफजन्य ग्रन्थी गलेमे होती है यह शस्त्रसाध्य है।

अधिजिह्व—जीभके अग्र भाग जैसा जीभके उपर के भागमे या नीचे के भागमे कफरक्त प्रकोपसे सूजन होती है। यह पके तो रोगी का मरण होता है। यह सूजन जीभ के उपर हो तो असाध्य है, नीचे होतो साध्य माना जाता है।

वलय-लंबा और मोटा शोथ कफजन्य होता है। इसमे अन्न मार्ग रुक जाता है असाध्य है।

बलास—कफवात प्रकोपसे गलेमे सूजन होती है। इसमे दम चढता है पीडा होती है असाध्य है।

एकवृन्द—गोलाइ लिये मोटा दाह खुजलीवाला शोथ पकता है दाबनेसे मृदु पोचा लगता हैं। इसमे रक्तका प्रकोप होता है।

शतघ्नी—रोहिणीसे मिलता हुआ रोग है। चिन्ह उपचार वैसा हि हैं।

गलायु—आंवलेके बीज जैसा कठीन स्थिर पीडा यम, कफरक्त प्रकोप जन्य, अन्नको रुकनेवाली ग्रन्थी होती है शस्त्रसाध्य है।

कठविद्रधि—सारे गलेमे अंदरके भागमे सूजन फैल जाय पीडा जलन दर्द है।

गलौघ—गलेको प्राणवायुसे श्वासोच्छ्वासको रुकने वाला कफ और रक्त जन्य शोथ है।

स्वरघ्न—आखमे अंधेरा आवे, श्वासकी गति अधिक हो, स्वर बैठ जाय, गला सूखे। खुराक या पान उतारनेमे रोगीको कष्ट हो।

मांसतान—गलेमे चारों ओर सूजन फैल जाय। असह्य पीडा हो यह त्रिदोष प्रकोपसे होता है इससे थोडे घंटोमे रोगी मर जाता है।

विदारी—दाह पीडा के साथ गलेमें लाल सुर्ख रंगकी सूजन हो, उस भागमे मांस सडकर बिखर जाता है। पस पूय निकले। पितप्रकोपसे होता है।

चिकित्सा—किसी भी प्रकारकि रोहिणोको यन्त्रसे खुन निकलवाना। २ लोटा पानीमे १ तोला नमक और ३ तोला गर्म दिया घी डालकर कुल्ला कराना। षडबिंदु तेल अथवा महालाक्षादि तेल ५–१० मिनीट मुखमे रख कुल्ला करना। नागकेसर चिनीकबाला कपूर सममाग मिलाकर शहद मे मिलाकर पीछो ब्रशसे गलेमे लगाना। नीमकी छाल बडकी छाल अशोक की छाल अर्जनवृक्षकि छाल कदती क्षुय समभागसे कुटकर २० तोलामे ४–५ लोटा पानी डाल कर रख छोडना इस पानीसे कुल्ला कराना यह पानी पिलाते रहना। षडबिंदु तेल के या कल्यणघृत के या महालाक्षादि तेल के बुद नाकमे हर वख्त डालते रहना। नीचेकी औषध सब प्रकार के गलेके रोगमे लाभकारी है।

दार्वी क्वाथ—दारुहलदी नीमकी छाल रसौत इंद्रजौ बडो हरड सममाग कुट रखे। २ तोला का क्वाथ या फांट पिलाना।

तिक्तादि क्वाथ—कुटकी अतीस दारुहलदी पाठा नागर मोथ इंद्रजौ सममाग लेकर कूट २ से ३ तोलाका क्वाथ या फांट पिलाना।

यवक्षारादि गुटी—जवाखार, तमालपत्र पाठा रसोत दारु हलदी छोटी पीपल सममाग कूटकर शहदसे गोली बनाना। गलेके सब रोगमे २ से ६ गोली देना।

प्रवालादि मिश्रण—प्रवाल पिष्टी चन्द्रपुटी तोला २, जवाहर मोहरा पिष्टी तोला १, अमृता सत्व तोला २, महाचन्द्रवाला तो १, रसालादि वटी तो. १ साथ मिलाकर २ से ६ रती शहदसे या कल्याण घृतसे गलेके सब रोगमे दिनमे ३ या ४ दफे देना।

गलरोगहर तेल अथवा घी—सफेद फूलकी अपराजिता (गुज, गरणी) का पंचांग तोला ४०, वायविडंग निसोथ सेंधानोन दारुहलदी प्रत्येक तोला १० सब साथ कूटकर उसमे ब्राह्मी हरी तोला २० डाल कर उसमे १० रतल पानी डाल १२ घंटा भीगो रखना। पीछे उसमे १० रतल तिलका तेल अथवा १० रतल गायका घी डाल कर पकाना। पानी का अंश सब जाय जब कपडछान करना। तेल बनाया हो तो कुल्ला करना, घी हो तो २ से ४ तोला तक दिन भरमे खिलाना। घी गायका न मिले तो कोइ भी घी लेना लेकिन वेजीटेबल घी मिलाया न हो। गलेके सब रोगोमे यह तेल या घी बहुत लाभकारक है।

दिव्य धूपका धूआ हुक्केसे या च्लीम पिलाना। नीमकी अंतर छाल १० या १५ तोला कूटकर ४ से ५ लोटा पानी मे भिगो रखना पीछे दिन रात वही पानी गले के सब रोगमे पिलाते रहना।

गलेका काकडा (टोन्सील) काकडा पर सूजन हो, बढा हो लाल हो गया हो, कभी उसमेसे खुनका धागा देखनेमे आता हो तो इस पर धमासा तोला १० मे ८० तोला पानी डालकर क्वाथ कर आधा रहेनेसे कपडछान कर कुल्ला करनेसे सूजन मिट जाती है, बढा हुआ कम होता है। और काकडा के कारण जो पीडा दर्द खाने पीनेमे तकलीफ होता हो दूर होती है और काकडा असल हालतमे आ जाता है।

प्रयोग १–धमासा तोला १०, रुद्रती क्षुप पंचांग तोला ५ शरपुंखा पंचांग तोला ३, नीमकी छाल तोला १०, बीजयसार (अजन वृक्ष) की छाल तोला १० सब कुट कर रातको १० रतल अथवा ५ लोटा पानीमे भिगो रखना। दूसरे दिन इसमे से थोडा थोडा पानी कपडछान कर सात आठ दफे कुल्ला करना और पिलाना। इस प्रकार १ सप्ताह करनेसे टोनसीलकी सब शिकायते मिटती है और ओपरेशन नहि करना पडता॥

प्रयोग २–दंत रोगमें बताया दंतमंजन को भी दतौन (बबुलके या बलके दंत धावन) से टोनसील पर घीस कर साथे पानीसे या उपर बताये पानीसे कुल्ला करनेसे १५ से २० दिन मे सब शिकायतें मिटती है।

गलेका चांदा (गला आजाना) गलेका अंदरका भाग लाल होकर उसपर सूजन होती है। उसपर चिकनी छारी जमती है। उसमे चांदा पडता है। गलेका द्वार तालुआ चोरिया आदि लाल हो जाता है। गलेमे दर्द होता है। गला सूखता है। कोइ भी चीज गलेके नीचे उतारनेमे कष्ट होता है। स्वर बंद जाता है। ताप रहता है। तेल लाल मिरच दाह करनेवाले तीन पदार्थ खानेसे गर्म भोजन लेनेसे सपदंशसे या चिवातसे दारु अधिक पीनेसे यह रोग होता है।

गलेके रोग पर सामान्य औषध

प्र–१ कुटकी अतीस देवदार नागरमोथ इन्द्रजौ द्राक्ष दारुहल्दी सम भाग कूट १ तोलाका क्वाथ कर १–२ तोला शहद मिलाकर २–३ दफे पिलाना.

प्र–२ पाठा रसौत दूर्वा तेजबल दाक्ष हरड बहेडा आंवला समभाग कूट ४–५ तोला काथकर कुल्ला करना और पिलाना।

प्र–३ खेरसारादि गुटी या रसावादि गुटी मुखमे रख रस उतारना.

प्र ४ प्रवालपिष्टी तोला २, जहर मोहरा पिष्टि तोला १, अमृता सत्व तो ४, साथ घोट कर ८ से १२ रती शहदसे या मक्खनसे २ वखत देना पीछे उपर दिया हुआ क्वाथ या फांट पिलाना।

प्र –५ नागचपाका पत्ता छायामे सुखा कर हंडीमे भर कपड मिट्टीकर चुल्हापर चढाकर पकाना भस्म हो जायगी। ४ मासा भस्म देनेसे स्वर–भंग मिट कर आवाज खुल जाता है।

प्र–६ तज तोला १, इलायची तो २, छोटीपीपल तोला. २, वंशलोचन तोला ३, समुद्र फेन तोला ४, शक्कर तोला ८, सब साथ कूट कर ३ से ६ मासा शहदसे देनेसे आवाज खुलता है स्वरभंग मिटता है।

प्र-७ आंवला इलायची कुलिंजन नवीरा कत्था सोरोक्षार चन्द्रप्रभा गुटी सब समान भाग घोटकर गुडसे या शहदसे गो ली४ से ६ रतीको बनाना। मुखमे रख रस ऊतारना स्वरभंग मिटता है गले के रोगमे फायदा होता हैं।

दांत के रोग

मनुष्यको दांत उमरमे दो वखत फूटते है निकलते है। स्तन पय बच्चोको छह माससे तीन वर्ष तककी आयुमे दांत आते है, वह दुधिया दांत कहा जाता है। यह दांत पांच छह वर्षकी आयुमे गिरने लगते हैं और कायमी दांत निकलने लगते है। १७ से १८ वर्ष तककी आयुमे सब दांत निकल जाते हैं। दांत डाढ, दो वेनिया कुतरिया और काटनेवाला ऐसा भेद दांत मे होता है। प्रत्येक दांतमे पोल होती है। उसमे मज्जा भरी रहती है। वह पोलाण दांतका अंतिम भाग–मूलके अग्र भाग तक और छेडा मूलके छिद्र द्वारा रक्त शिरा द्वारा दांतको पोषण मिलता है। उसमे वात पित्त कफ दोषके कारण बिगाड होता है जब दांतके भिन्न भिन्न रोग उत्पन्न होते है।

कारण—हर वक्त खा खा करनेसे-खाते रहनेसे, पेटके बिगाडसे, दस्तकी कब्जीसे, खट्टे पदार्थ अधिक खानेकी आदतसे, दतौन-दन्त धावन न करनेसे, अजीर्णसे अति गरमागरम पदार्थ और अति ठंडे पदार्थ खानेपीनेकी आदतसे, तमाखु-जर्दा चाहा कोफी के अधिक अभ्याससे ऐसे अनेक कारणोसे दांत के रोग होते हैं।

दांतकी खेरी—तमाखू-जर्दा पान सोपारी अधिक खानेकी आदतसे, दात साफ रखने की बेदरकारीसे मेल जम कर सडता है। दांतकी पोलमे अन्न या कोइ चीज घुसकर वह सडनेसे भी दांतमे सडा होता है। क्षार पदार्थ दांत पर जमता है। दांत पर खेरी जमनेसे पोलमे सूजन और सडा होकर दांत हिलते हैं और पीछे गिर जाते है। खेरी पीली या सफेद होती है। चुटकी मे लेकर चोलनेसे कांदसी जैसी भुकी हो जाती है। खेरी वाले मनुष्यको मुख दुंगधवाला रहता है। दांतसे पूय-पस निकलता है।

शिलादि मंजन—मिनसील, तोला ५, गेरु-गैरिक तोला ५, जवाखार सेंधानोन इलायची तज तेजबल प्रत्येक तोला २०, कपूर तोला १० अमिया हलदी तोला ४०, हलदी तोला २०, सफेद मिट्टी तोला १०० सब मिलाकर दतौन से दातोपर मसूढोंकी हानि न पहूचे इस तरह मंजन करे और गर्मपानीमे थोडा डाल कुल्ला करे तो दात के बहूतसे रोग मिटते हैं।

दांतका शूल दांतमे दर्द

कारण-दांतका मूल सडनेसे अजीर्णसे अकस्मातसे पाचन शक्ति मंद होनेसे खट्टा और मधुर पदार्थ अधिक खानेसे यह दर्द होता है, जब निंद कम आती है, खुराक लेना कठिन होता है। दांतमे सुइ भोकने जैसी पीडा जलन आदि होता है मगर मंदमंद पीडा होती रहती है। बीचके किसी दांतमें डाढमे या सब दांतोमे पीडा होती है जब रोगी पागल जैसा बन जाता है। पीडा थोडी कम हो जब कुछ आराम मिलता है।

उपचार—महानारायण तेल का गंडूष मुखमे रख मुखमे इधर उधर घुमाकर १० से १५ मिनट के पीछे थूक देना। इस तरह सुबह शाम दो दफे करना।

पलाश बीजादि मंजन-ढाकके बीज १० तोला, छोटी पीपल, सोंठ मरीच बच अजवाइन हरड सेंधानोन प्रत्येक पांच पांच तोला, पुनर्नवा मूल और हलदी बीस बीस तोला, समुद्रनफेन ४० तोला सब घोंट कर रखना दांतपर लगाना। गर्मपानीमे डाल कुल्ला करना।

दांतका गढ ग्रन्थि—कारण–दांतके मूलमे पढा होनेसे, खेरी जमनेसे यह दर्द दांतके मूलमे' होता है और छोटो जैसी ग्रन्थी लगती है। यह पक कर पस निकलता है। उसमे पीडा अधिक हो तो गाल और गलेमे सूजन होती है। पस निकलने के बाद दर्द कुछ कम होता है।

दशन संस्कार चूर्ण—सोठ, बडी हरड, नागरमोथ, कत्था, सुपारीका कोलसा, कालीमिरच, दालचीनी लौंग, गेरु सब समान भाग लेकर और सबके समान सफेद मिट्टी मिलाकर रखना, दोनो समय दांत पर लगाकर गर्म पानीमें थोडा सोहागा डाल कर कुगला करना।

दांतकी पोल—दांत साफ न रखने से, खटे पदार्थ ज्यादा खानेसे, दांतोके बीच अन्नका कण रह जानेसे दांतमे पढा होता है और दांतके अंदर के भागमे' सडा होकर वहा उत्पन्न हुये जन्तु दांतके अणुओको खा कर दांतमें पोल हो जाती हैं वह बढनेसे दांतके मूल सड जाते है. वह बढनेसे दातके मूल बिल्कुल कमजोर हो जाते हैं, जिससे दांतके उपरका भाग पड जाता है या निर्जीव होता है।

दंतमशी—माजूफळ तो ४. कथ्था तो. १, छोटी हरड तो ३, कच्ची सुवर्ण माक्षिक तो ०॥, मंडूर भस्म तो ०॥, पकाया हुआ नीलाथोथा तो, ०॥, रुमीमस्तकी तो ०॥, संगे जरद तो १॥, ईलायची दाना तो १, कपूर तो ०॥ सब साथ कूट कर कपडछान कर रखना और दोनो वखत दांतपर घीसना और गर्म जलमें थेडा डाल कर कुगला करना.।

दांतके पेढां (मसूढों दन्तवेष्ट के दर्द)

कारण—कमजोरी, अजीर्ण खट्टामीठा पदार्थ ज्यादा खानेकी आदत बुखार पेटका दर्द बहुत दफे खाते रहना अन्न के कण या दूसरी कोइ चीज घुस जाना गर्मी उपदंश आदि कारणोसे मसूढो (दंतवेष्ट) में सूजन हो कर लाल हो जाते है और [illegible] कम होते होते दांतके मूल खुल्ले हो जाते हैं, इस प्रकार थोडे या बहुत दांतो के मसूढो बिगडते है। बहुत करके मुखके आगले दांत जो वस्तुको काटते, [illegible] और उपरकी दाढोके मसूढे ज्यादा बिगडते हैं, जब मसूढोमे [illegible] पस निकलता हैं, मुखमे दुर्गंध आती है और खाने [illegible] ती है।

कुष्ठादि मंजन—कुष्ठ, दारुहल्दी हल्दी लोध्र, नागरमोथ, मजीठ, पाठ। कुटकी, मालकांगुनी (ज्योतिष्मती), अजवाइन, बच, सैंधानोन, छोटी हरड, गेरू सब कूट, कपडछान कर दांतको घीसना और गरम पानीमे थोडा डाल कर कुगला करना.

कासीसादि मंजन—त्रिफलामे पकायी हुइ कसीस, कथ्था, माजूफळ, चीकनी सुपारी, सैंधानोन, चीनीकबाला, कालीमिरच, इलायची, हरड पथ्थिडा, आंवळा, दाडिमकी छाल, गेरु और बदामके छीलकेका कोयला सब समान भाग लेकर कूट कपडछान कर रखना, घीसना कुगला करना।

मसूढोंसे लोही और पस

निकलना (पायोरिया)

कसीसादि घर्षण—कसीस लोध्र, छोटी पीपल, मनशील, प्रियंगु तेजबल तमालपत्र, कुष्ठ, हल्दी, समभाग कूट कर रखना, इसका मंजन और कुगला करनेसे पायोरिया, पस मिटता है। महानारायण तैल अथवा महालाक्षादि अथवा सफेद सरसोंका तेल या तिलका तेल इनमेसे कोइ तेल, मुख मे दो चार तोला रखकर इधर उधर घुमाकर १०से१५ मिनिट तक रखकर थूक देना और गरम पानीसे कुगला करना.

१ तोला अदरख और १० तोला सहदेवीका क्वाथ कर कुगला करनेसे मुख और दांतके बहुतसे रोग मिटते हैं।

१ तोला अदरख, ३ तोला सफेद सरसो और ४ तोला त्रिफला उसमें चार लोटा पानी डालकर पकाकर रखना कुगला करना।

दांत-हिलना

कारण—खानपान नियमित न रखनेसे, दांत साफ रखनेकी असावधानीसे उपदंश के कारण, उपदंशादि रोगमे पारदवाली दवासे मुहं लेनेसे, बहुत गरम चीजे खानेसे, दांत के मूल कमजोर होकर दात हिलते है। जब दांतोमें दर्द होता है। खानेमें तकलीफ होती हैं। ठंडा पानी या ठंडी चीज खाने पीनेसे या शरदी लगनेसे दांतोंमें शूल और दर्द होता है और इसकी पीडासे बुखार आ जाता है। सिरमें दर्द होता है और बेचेनी होती है।

दंतदृढीकरण मंजन—कपूर तो. ५, माजुफळ तो. १०, कथ्था तो. ८, बब्बुलके फळ तो. २०, झील (वज्रदंती) तो. १०, पारद तो ४, गंधक तो.

८, नागरमोथ तो. ८, गुलर उदुंबर छाल), तो. १०, समुद्रफेन तो १० सब साथ कूट मर्दन कर रखना दांतो पर लगाना और पानीमे डाल कर कुगला करना।

प्र १ हिंगोट(इंगुदी) के मूलकी छाल और कुटकी समभाग कुटकर बारीक कपडेकी पोटली मे या रुई के बीच रखकर दांत या दाढमें रखने मे दांतकी भन्नी मिटती हैं और हिलते दांत मजबूत होते है।

प्र. २, वायविडंग कटहरी के बीज धमासा समभाग कूटकर पांच तोला यह चूर्ण चार रतल पानीमें पकाकर रख छोडना पीछे उसका कुगला दिनमे पांच सात दफे करनेसे दांत और दाढके सब रोगमें लाभ होता है.

प्र ३, नवसार और काली मिरच समभाग कूटकर रुइ के बीचमें ४-५ रती डालकर दांत के उपर रखनेसे दर्द मिटता है ।

प्र.४, १ तोला कपूरमें पांच तोला नीलगीरी तेल- डाल कर धूपमें रखनेसे कपूर पिगल जाता है। रुइका फोया भिगोकर दाढ और दांत पर रखनेसे दांतको पीडा और अन्य दर्द शांत होते है ।

राजमणी मंजन—सच्चे मोती, सच्चे प्रवाल, स्वर्ण माक्षिक भस्म लाल, कच्ची कसीस, प्रत्येक एक एक तोला, मडूर भस्म लाल, कुष्ठ, पकायी फिटकीरी, भीमसेनी कपूर, छोटी हरड, बडी हरड बहेडा आवला, माजुफल. अनारको छाल कथ्था, सोहागा-प्रत्येक डेढ डेढ तोला कस्तूरी १ वाल सब साथ कूट कर कपडछान कर रखना-दांतकी खेरी, दांतका पाक, मसूढोंका दर्द, दांतमें खुजली, दातमें जंतु, मुखके दुर्गन्ध आदि मिटते हैं ।

जिह्वा-जीभके दर्द

चिह्न—अजीर्ण, शरदी ऋतुका परिवर्तन, जखम, उपदंश, प्रमेह, पारदका विकार इत्यादि कारणोसे जीभमें सूजन होती है। वायु प्रधान हो तो जीभमे चीरा पडता है, स्वाद मालूम नही पडता। पित्त प्रधान हो तो दाह, जलन और लाल अंकुर जैसा जीभ पर दिखाता है । कफ प्रधान हो तो सेमलके कांटा जैसा जीभ पर दिखाता है ।

जीभके नीचेका शोथः इसमें कफ और खूनका प्रकोप होता है । जीभ जकड जाती है और जीभके मूलमे पाक होता है ।

पडजीभी—इस शोथसे जीभ मोटी स्थूल होती है। इसमें कफ और रक्तका प्रकोप होता है। लाला पडती है। खुजली आती है और दाह भी होता है ।

एलादि घर्षण: इलायची, फिटकरी, चंदनका चूरा, आमकी गुठली, बब्बूलका पान, तमाल पत्र, धायका फूल, शक्कर, हलदी और लोदर (लोध्र) सब समान भाग लेकर कूट कर रखना और जीभ पर चार पांच वख्त घीसना। दशाग लेपका क्वाथ कर दिनमें ५-७ दफे कुगला करना।

निर्गुंडो आदि गडूष—निगुडी कत्था शंचनारकी बब्बूलकी नीम प्रत्येककी छाल समान भाग लेकर कुल्ला करना।

रसांजनादि गंडूष—रसांजन, मुलेठी मूल, आंवला समभाग लेकर कुगला करना।

जिव्हारोग हर मिश्रण—रसेन्द्र गुटिका तो. १, प्रवाल चन्द्रपुटी तो. २, धत्रामृत लोह तो. १, त्रिरोफलादि चूर्ण तो ४ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना। सुबह-शाम पानीके साथ या शहदसे लेना।

तालू के रोग

गलशुंडी—कफ और रक्त के प्रकोपसे होता है। तालुके मूलसे लंबा शोथ होता है। इसमे तृषा लगती है खांसी आती है। श्वास चढता है।

तुंडीकेरी—यह भी कफ और रक्त प्रधान है। इसमें चपके शूल निकलते हैं। वेदना और पाक होता हैं।

अध्रुष—शोथ कठिन रक्त के प्रकोपसे होता है। इसके साथ ज्वर और तीव्र वेदना होती हैं।

कच्छप—यह कछुआको तरह मोटा, कम पीडावाला कफ प्रकोपका शोथ होता है।

तालु अर्बुद—कमल जैसे आकारका शोथ तालुके मध्य भागमें रक्त प्रकोपसे होता है।

तालुशोथ—पित्तप्रकोपसे तालुमें पाक होता है। यह भयंकर रोग है।

तालुरोगहर घर्षण—कुष्ठ, बच, सैंधानोन, कालीपाट, (पाठा), मोथा, कचुरा, अतीस, रास्ना कुटकी, पारद, गंधक, नीमके फलकी, गिरी सब समभाग कूट कर रखना। तालुके शोथ पर अंगुलीसे घीसना और लाला निकलने देना।

कुष्ठादि गडूष—कुष्ठ, काली मरीच, बच सैंधानोन छोटी पीपल पाठा मुस्ता हलदी कचूरा सब समभाग ले कर कूटके क्वाथ बनाना तालुरोगमें कुल्ला-कराना।

दशांग लेप नीमकी छाल कांचनार समभाग कूटकर इसका क्वाथका कुल्ला तुंडीकेरी, अर्बुद और तालुपाकमें करना ।

४ तालुशोषमें महानारायण तेल मुखमे १० मिनट रख कुल्ला (गण्डूष) कराना । शिरोवस्ति देना मस्तक पर गायका घी लगाना । दशांग लेप पानीमे पीस लगाना । नदीका शेवाळ सफेद मिटटी और जलपिप्पली (रतवेलीयो) पीसकर मस्तक-पर लेप करना बांधना ।

मुक्तादि मिश्रण—मुक्ता पिष्टी प्रवाल चन्द्रपुटो रसालादि गुटी अभ्रक-भस्म चन्द्रप्रभा गुटी वसामृत लोह शिलाजीत सुधापर्पटी सब समान भाग लेकर मिश्रण ६ से ८ रती दो वक्त कल्याण घृत १ से २ तोलामे २ मिलाय कर सुबह शाम देना तालुके सबरोगमे गुणकारी है ।

ओष्ठ होठके रोग

चिन्ह-वायु प्रकोपसे ओष्ठ रूक्ष सुक्का होता है काले पड जाते हैं पीडा होती हैं पित्त प्रकोपसे छोटी छोटी फुन्सीयां दाह होता हैं । कफ प्रकोपसे खुजलि आती है, सफेद फुन्सीयां निकलती हैं, रक्त प्रकोप होनेसे लाल फुन्सीयां होती हैं. । पीडा होती हैं रक्तका स्राव होता है ।

ओष्ठ मोटा—कंठमाल के दरद से उपरका ओष्ठ मोटा स्थूल होता है,

ओष्ठ फटना—शीत ऋतुसे खारवीसें खोटी गरमीसे ओष्ठ फटता हैं ॥

ओष्ठ व्याधि हर तेल—गंधीले खेरकी-गंध बावूलकी छाल, तगर, कुष्ठ. अडीके वृक्षका मूल, प्रत्येक ४० तोला लेकर कूटकर दसगुने पानीमे १२ घटा भिगो कर उसमे तिलका तेल रतल, १० तथा एरंडका तेल रतल, ५ मिलाना और गधीला खेर, लौंग गेरु, चंदन लाख, मुलैठीका मूल, कायफल दारुहलदी अमियाहलदी कचुरा, पानडी, हरड, लांगली, जावत्री दुधिया बच, प्रत्येक तोला १० लेकर पानीमें पिस कर लुगदी कर १० शेर गाइके दुधमे मिलाकर तथा उसमे मोम तो. २० डालकर कडाइमें पानीका भाग जब जाय तब तक पकाना । पीछे तेल कपडछान कर लेना । जब यह शीतल हो जाय तब कपूर तो २॥ बारीक घोंट कर बरणी में डालकर भर रखना । यह तेल ओष्ठके कीसी भी रोग पर लगाया जाता है ।

ओष्ठव्याधिहर मलम—राल तो. ४, गेरु तो २, पकाया हुवा टकण तो. ३, हलदी तो. १॥, गायका घी तो, ३०, मोम तो. २॥ सब साथ पकाना ओष्ठके सब दरद पर लगाना।

ओष्ठरोपण मलम—अंडिका तैल, घी राळ, मोम रास्ना गुड. सैंधा-नोन गेरु सब सम भाग लेकर खूब घोटकर पकाकर एकरस करना। मलम यह लगानेसे त्वचा फट जाने पर रक्त निकलता हो, रुझ आती है।

मुखरोग—मुखपाक

मुंह का पाक (मुखपाक) जीभकी आसपास, तालु, ओष्ठकी अंदरका भाग होठोंके वगैरह स्थानो पर चांदे पडते हैं। पेटके बिगाडसे, अजीर्णसे, पान तथा भाग, तमाखु के साथ चूना ज्यादा खानेसे, लाल मिरच जैसी गरम चीज ज्यादा खानेसे, उपदंशका रोग होनेसे इत्यादि अनेक कारणोंसे मुखमे चांदे पडते हैं।

मुखपाक हर क्वाथ—सप्तपर्ण वाळा, पटोल, नागरमोथ, हरड चिरायता कुटकी मुलैठी अमलतास, चंदन, सममाग कूटकर क्वाथ बनाकर पिलाना।

मुखपाक हरमिश्रण—प्रवाल चंद्रपुटी तो १, मुक्ता पिष्टि तो. ०।, महाचंद्रकला तो ०॥ अमृतासत्त्व तो २ सब साथ मिलाकर ४२ पुडियां बनाना। च्यवनप्राश के साथ २ समय खाना।

मुखरोगहर चूर्ण—उदुंबर नीम विजयसार, खैर, वड, बबूल इन वृक्षोंके बड उपरकी अंदरकी छाल बीस बीस तोला, कच्ची सुपारी तोला १०, पकाया हुवा सोहागा (टकण) तो. २॥ सफेद कथा तो २॥ सब मिलाकर कपडछान कर मुखमें घीसनेसे चांदा मुख पाक जीभका पाक गलेका रोग, काकडा टॉन्सीलकी सूजन मिटते हैं।

मुखरोगहर लवण—एक कोरी मिट्टीकी हंडीमें नमक तोला ४० डालकर उसके उपर ताडीका गुरका तोला ८० डालकर पकाना। जब गुरका जल जाय तब दूसरी दफे तोला ८० गुरका डालना। इसी तरह ३ वक्त गुरका डाल, पकाना। पीछे उसमें तो ५ माजूफळ (कांटाळी मायां), तो ५ इमलीके बीज, तो ०॥ रुमी मस्तकी, तो ०॥, अकलकरा, लेकर सब साथ कूटकर कपडछान कर सब घोटकर रखना मुखमें घीसना। मुखकी गरमी चांदी मिटते हैं।

मुखरोगहर घृत—चमेलीके पत्ते, आमके पत्ते गुलतोरेका पान, नीमके पत्ते, बबुलके पत्ते विजयसार (अजन) वृक्षके पत्ते, कमल और केलीका कंद, कुष्ठ, मौआ-मधुक, मुस्ता, लोध्र वाळा, बडकी बडवाइ, आमीयाहलदी, देवदार

अदरख रसौत प्रत्येक तोला २० लेकर सुखी चीजो को कूटना सब पानीमे १५ घंटा भिगोना पीछे उसमें घी शेर १५ डालकर पकाना । पानीका भाग जल जाय तब कपडछान करना। उसमेंकपूर तो. १ पीस कर मिलाना १ से २ तोला चटा कर उपर दूध पिलाना।मुखके प्रत्येक रोग पर लगाना मिलाना ।

मुखरोगध्न घटी—खेरकी छाल तथा मुलेठीके मूल प्रत्येक शेर १, गंधीला खेरकी छाल शेर ४, सुगंधी कुष्ट शेर १ सबको साथ कूटकर पानी शेर ४० डालकर १२ घंटा भिगो रखो। दुसरे दिन पकाकर आधापानी रहेने पर कपडछान कर उसमें नीचे लीखी वस्तुओका कपडछान चूर्ण डालकर धीमी आंचसे पकाना । रबडी जैसा हो जब उतार कर रोंग लपेटे बरतनमे डालकर सुखाना पीछे गोली गुंजा प्रमाण बनाना। डालनेके द्रव्य इलायची कमलपुष्प चंदन, सारिवा, पानडी, तमाल, मुस्ता, कपूरकाचली मुलेठीका मूल मौलसरी गुलाब, आंवला, मोगराके फूल चमेलीके फूल, लौंग, खेरसार प्रियंगु नखला प्रत्येक ६ तोला रबडी जैसा बरतनमे डाला हैं उसमें सब मिलाकर पीसे उसमें जावंत्री तो ६, कुष्ट तोला ६, भीमसेनी कपूर तो ४ मिलाकर गुंजा, चिरोंजी जैसी गोली बनाकर छायामें सुखाना । पीछे गुलाबके अत्तरका हाथ देना और मजबूत ढूचवाली शीशीमें भर रखना । यह गोली शीतऋतु में बनाइ हो तो बहुत गुणकारी रहती है। मात्रा ३ से ८ गोली दूध के साथ देना अथवा मुखमें रख के रस उतारना इससे वायु, पित्त और कफके प्रकोपसे उत्पन्न हुये चाहे जैसे मुखके तालुके गलेके रोग नष्ट होते हैं तथा मुखकी दुर्गंध मिट जाती है और मुख सुगंधी होता है ।

रसालादि गुटी (धारणी गुटिका)—पारद गंधक जामूनके रसमे पकायी लोहभस्म, आमका फूल, नीमके कोमल पत्ते कथ्था, मुलेठी, अंबिया हलदी, कपूर काचली, आंवला, अभ्रक भस्म प्रवाल चन्द्रपुटी सावरसींग भस्म, कपूर, बच इलायची, जायफळ, वंशलोचन, चिनीकबाला कुष्ट, जायफळ जायपत्री मुस्ता, जटामांसी, सब समभाग लेकर कूट के बारीक हवले से छान कर पानीसे चने जैसी गोली, बनाना । मात्रा २ से ६ गोली दूध के साथ देना । मुखके सब रोग मिटे ।

मुखरोग हर गंडूष कुल्ला १—पटोल, नीम, जामून, आम, चमेली इनके पत्तेका क्वाथ बना कर कुल्ला कराना।

मुखरोग हर गंडूष कुल्ला २—चमेली के पत्ते, धमासा, बबुलकी छाल, बेरकी छाल, आंवला ये सब समभाग कूट फांट बनाके उसका कुल्ला दिनभरमें ५ से १० दफे करना । मुखमें चांदे पड गये हो रुज जाते हैं ।

मुखरोगहर गंडूष कुल्ला ३—अंगुरी सुरकेका और गुलाब जल का तिलके तेलका कुल्ला करना। सुइके पते हमेशा चबाना।

प्रवालादि मिश्रण—प्रवाल चन्द्रपुटी तोला २, जहर मोहरा पिष्ठीतोला १॥, मुक्ता शुक्ती पिष्टी तो १, सुवर्ण वसंत मालती तो. ०॥, छोटी पीपल तोला १, इलायची दाना तोला १, सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना दो वखत शहद मक्खनसे देना रसालादि वटीका सेवन कराना।

जातीफलादि गुटी—जायफल, जावंत्री, मरवा, केशर, कुष्ठ, समभाग कूट मधुमें ४ रत्तीकी (प्रायः १ वालकी) गोली बनाना मुखमे रखनेसे पस-पूय या दूसरी दुर्गंध मिटे।

कुष्ठादि चूर्ण—कुष्ठ जायफल, बडीहरड सम भाग कूट हमेशा सुबह शाम ०। तोला चूर्ण पानीके साथ देना मुख दुर्गंध मिटे।

कृष्णादि चूर्ण—छोटी पीपल, जीरा, कुष्ठ, इन्द्रजव हलदी आंवला मेढाशींगी कचुरा समभाग कूट ०। तोला पानीके साथ दो समय देना तथा दोनों वख्त भोजनके बाद १ तोला चूर्ण खूब चाबकर कुल्ला करना॥

खदिरादि तेल—गंधीला, खेरकी छाल, रतल ५ कूटकर क्वाथ बना कर. मजीठ टोघर मद्दुर्वा गंधीला खेर. कथ्था, कायफल, लाख, बडकी छाल, छोटी, ईलायची. कपूर, अगर, पद्मकाष्ट लौंग, चिनीकबाला जायपत्री पतंग गेरु, तज, नागकेशर, धाईकेफुल, तुलसी, नागरमोथ कूष्ठ. मुलेठी रास्ना प्रत्येक ४ तोला लेकर कूटकर इसमे केलीके स्थंभका पानी शेर १० डाल पकाना. पानीका हिस्सा जल जाय तब तेल कपडछान कर लेना इस तेलका कुल्ला (गुडूष) करनेसे मुखके सब रोग मिटे। मुखकी दुर्गंध दूर होती है। दांतोंके पेढे (दंतवेष्ट) और तालु, जीभ, गलोफेके दरद मिटते हैं। मुख रोगमे १ से २ तोला यह तेल पिलाया जाता है।

मुखसौरभ्य वटी—खेरसार तोला ५०, अभ्रक भस्म, पारद, गंधक, लोह भस्म ईलायचि कमलफुल सफेद चंदन, नागरमोथ, वाला, सारिवा, तमालपत्र मजीठ, मुलेठी मूल, रिसामणी (लज्जालु) हरडे बेहडां, रसौत धाईके फुल, नाग केसर, लौंग, गेरु दारुहलदी, कायफळ, कमलबीज लोध्र, बडकी बडवाई समासा, जटामांसी, हळदी, रास्ना, दालचीनी, कपूर मौलसरी पुष्प। तुलसी, शक्कर, लाख प्रत्येक ४ तोला, काली मरिच, सोंठ छोटी पीपल

प्रत्येक २ तोला सब साथ कूट मिलाय गुलाब जल में घोंट गुंजा जैसी गोली बनाना। यह गोली तांबुलके साथ खानेसे मुखकी दुरगंध मिटती है मुख सुगंधियुक्त बनता है। जिह्वा, तालु, कंठके सब रोग मिटते हैं। मुखके सबरोगोंमे मुखमे रख रस दतारना मात्रा ४ से ६ गोली पानीसे दी जाती है।

बीजपूर योग— बीजोरा बीजपूर फलकि छाल छायामें सुखाना उसको कूट कर ०। तोला सुबह शाम पानीसे देनेसे मुखकी दुर्गन्ध मिटती है।

निम्बादि योग— खैर, अशोक बब्बुल बडवाइ इन वृक्षोंका दतौन, करके तिलके तेलमें भिगो। कर दांत और मसूडें (पेढों) पर घीसनेको हमेशा आदत रखनेसे मुखकी दुर्गंध मिटती है।



अम्लपित्त

कारण—चिह्न—खराब, बिगडे हुये, रातवासी खट्टे दाहकारक पित्तकारक अन्न पानके अधिक उपयोगसे, अजीर्ण पर भोजन करनेकी आदतसे, छातीमे, कंठमें दाह होता है। उस समय खट्टा डकार उदगार आता है। छातीमें खुरा चढता है। उबका आता है। भूख मंद हो आती है। इस दर्दमें तृषा दाह, चक्कर, पसीना अधिक होना, शरीर पीला पडना, ऐसे चिन्ह दिखायी देते हैं। वमन होता है। छातीसे कलेजा तक जलन होता है। वमन या डकारके साथ खट्टा पानी या पदार्थ मुखसे पडता है। वमनका रंग लीला, काला, लाल या पीला होता है। मस्तककी पीडा होती है। दस्त कब्ज रहता हैं।

पथ्यापथ्य- जव, गेहू, मुंग, लाल पुराना चावल, शक्कर चीनी, शहद, कंटोला, कारेलाका शाक, वासका अचर परवल जांगल मांस, उबालकर शीत हुआपानी, सक्तू इत्यादि कफ पित्त शामक चीजें हितकारक है। तैल, नये धान्य, उडद, मेंढका दूध दही, छांछ, सुरका, खट्टा तीखा भारी गरिष्ठ पदार्थ बाजार की मीठाइ, आमका अचार दारु इत्यादि हानिकारक हैं।

अम्लपित्तातक मिश्रण—अम्लपित्तांतक लोह तोला ०॥, सुवर्ण वसंत मालती तो. ०॥ प्रवाल चन्द्रपुटी तो १, आरोग्यवर्धनी तो ४ सब साथ घोट ६४ पुडी बनाना। सुबह शाम एकेक पुडी शहदसे या पानीसे लेना ?

आरोग्य वर्धनी मिश्रण—आरोग्य वर्धनी चूर्ण तोला ४ योगराज रसायन तोला २, बडी हरड चूर्ण तोला २ साथ मिलाय ६४ पुडी बनाकर दो समय पानीसे लेना।

सर्वतोभद्र लोह—लोह भस्म, ताम्रभस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक तोला, ८, शुद्ध पारद तो. २, गधक तो, ४ माक्षिक भस्म, शुद्ध मनशील प्रत्येक तो २, शिलाजीत तो. ३, गुगळ तो. ५, वायविडिंग, भिलावा, चित्रा आकका मूल, पलाशके मूल, मुसली पुनर्नवा, भांगरा, शतावरी, चक्रमर्द के बीज, गोरखमुंडी, सुंठी, छोटी पिपली कालीमीरिच प्रत्येक तोला ०॥, सबको विधिवत् साथ मिलाय पानीसे तीन तीन रत्तीकी गोली बनाना। मात्रा २ से ६ गोली दो या तीन समय पानीसे दी जाती हैं। चाहे जैसे उपद्रववाला अम्लपित्त मिटता है।

इसके अलावा अर्श, भगंदर, शूल, कुष्ठ, पांडु, शोथ, संधिवात गुल्म, खांसी श्वास, इन दरदोमे भी गुणकारी है। रातको सोते समय सोनामखी (मीढोआवल) अमलतास सम भाग चूर्ण ०। से ०॥ तोला गरम पानीमें लेना।

लीला विलास—रस—पारद, गंधक, लोह भस्म अभ्रक भस्म, हरड, बहेडा आंवला शतावरी निसोथ छोटी पीपल नवसार, सेंधानोन कुटकी सब समभाग लेकर, भांगरेके रसकी और शतावरीके रसकी या क्वाथकी एक एक भावना देकर घोंट कर रखना, या गोली गुंजा प्रमाण बनाना। मात्रा २ से ४ रती या ३ से ४ गोली पानीसे अम्लपित्तमे देना।

अम्लपित्तान्तक लोह—त्रिफलामें पकायी हुइ लोह भस्म तो २०, पारद, गंधक मंडूर भस्मरस, प्रवाल चंद्रपुटी प्रत्येक १० तोला, साथ मिलाकर निसोथ और कुटकी के क्वाथकी भावना देकर घोंट कर रखना मात्रा २ से ४ रती धनिया हरडे मुलैठीके मूलके क्वाथके साथ देने से अम्लपित्त मिटे।

अविपत्तिकर चूर्ण—सोंठ पीपल कालीमिरच हरड, बेहडा आंवला नागरमोथ बिडलवण इलायची तमालपत्र प्रत्येक एक एक तोला, लौंग तो. ११, निसोथ तो ४४, शक्कर तो. ८८। सब साथ विधिवत मिलाना मात्रा ०। से ०॥ तोला पानीके साथ देना। सब प्रकारके अम्लपित्त मिटे तथा कब्जी मंदाग्नि और बवासीरमे बहुत लाभकारक है।

अम्लपित्त शमनावलेह (कुष्मांडावलेह)

मीठा कद्दु भूराकोला पका हुआ लेकर उपरसे छाल और भीतरसे बीज रेषा इत्यादि निकाल खमण करना। पीछे खमणको निचोड कर रस निकालना। यह खमण शेर १० को घी शेर ५ मे मंदाग्निसे धीमे बादामी रंगका हो तब तक पकाना और एक बाजुरखना। पीछे मीठा कद्दु निचोड कर निकाले रसमें हरे आंवळा बाफना। यदि आवश्यकता हो बाफनेमें जरुरी हो इतना ताजा पानी डालना। जब पक जाय तब आंवळा निकाल बीज निकाल छूटा कर रखना। उस छुदामे जरुरी घी डाल कर धीमी आंचसे भुनना। पीछे आंवळा का मेदा और कद्दुका खमण मिलाना। पीछे २० रतल कूटी हुइ शक्करकी चासनी करना। पताशा जैसी घट्टी चाशनी हो जब पकाया हुआ मीठा कद्दुका खमण और आंवलेका छुंदा डाल फिर पकाना। इस तरह पकाना कि जल न जाय। जब घट्ट हो जाय तब नीचे लिखी औषधियोंका चूर्ण जो तैयार रखा हो डालकर हिलाना। धनिया छोटी पीपल नागरमोथा वंशलोचन, जीरा, शंखजीरा, इसक-

गोल, तुलसीके बीज दालचीनी इलायची, नागकेशर, हरड, कालीमिरच सोंठ, पका हुवा टंकणखार, अपामार्ग क्षार, गिलोय सत्व, भांगरा प्रत्येक दस दस तोला तथा लोह भस्म, अभ्रक भस्म, मंडूर भस्म और शंख भस्म प्रत्येक ६ तोला, कपूर तो. २॥ मिलाना। शीतल हो जाय जब शहद जरुर जितना मिलाना। पीछे कांचकी बरणीमें भर रखना। मात्रा १ से २ तोला उपर बताये किसी औषधके साथ अथवा अकेला खिलाना। अम्लपित्त दाह, छातीकी जलन, अरुचि, उबका वमन, वायु, पित्त, कफके सब रोग, शोष क्षयरोग, प्रमेह, प्रदर, पिशावकी जलन, खोटो गरमी, बवासीर इत्यादिमे उत्तम है।



अरुचि

अरुचि—खुराकका अभाव अथवा रुचि न होना, कारण-संप्राप्ति

शोक, भय, लोभ क्रोध अप्रिय वस्तुका दर्शन चिंतवन, दुर्गंध, ताव इत्यादि कारणोंसे यह दर्द होता है। इससे दांत खट्टा होता है। मुख बेस्वाद नमकीला कडुआ, तीखा, खट्टा, चीकना हो जाता है। वायु प्रधान होतो छातीमें शूल निकले छातीमें दबाव हो, पित्त प्रधान हो तो तृषा जलन शोष लगे। कफप्रधान हो तो मुख चीकना हो लाला (लाळ) गिरे।

पथ्यापथ्य—पुराना चावल मूळो, बेंगन, बहुजनाकी शोगे केले, दाडिम, फणस घी लशुन, जिमीकंद सुरण, द्राक्ष, आम, शीखंड, दही छाछ हितकारी हैं। अनिद्रा, मलमूत्रके वेगका अवरोध अप्रिय वस्तु क्रोध, शोक तथा दुर्गंध इत्यादि हानिकारक हैं।

रामबाण—पारद गंधक वछनाग लौंग प्रत्येक ३ तोला, कालीमरिच तो. ६, जायफळ तो ।।। सब साथ मिलाय इमलीके पकेहुए फलके रसमें गुंजा प्रमाण गोली करना पानीके साथ देना। अरुचि, उबका, मंदाग्नि, दस्त, ज्वर इत्यादिमें दिया जाता है।

अरोचकामृत—पारद, गंधक, अभ्रक भस्म, चिनीकबाला जीरा लौंग शाह जीरा, मुस्ता, कुठ प्रत्येक तोला ४, शक्कर तो १२, केशर तो ०।।, कपूर तो १ सब साथ कूट मिलायकर दाडिमका रस तोला २० डालकर छायामें सुखाना। पीछे इमलीके पके हुये फल तो. २० पानीमें भिगो कर रस निकाल कपडछान कर उसमें मिलाय छायामें सुखाना। पीछे निंबूके रसमे चना जैसी गोली बनाना। मात्रा दिनमें ४ से ८ गोली पानीके साथ देना अरुचि वमन, भोजन पर अभाव पेटमें गडबडाट, वायु पेटमें पवन भरा जाना, आफरा आध्मान इत्यादिमें उत्तम है।



वमन— छर्दि— उलटी—

कारण—अप्रिय अन्न पान, बहुभोजन, आम गिरना अजीर्ण, कृमि, सगर्भा अवस्था दिमागका दर्द, घृणा हो ऐसे पदार्थ देखना, खराब वस्तुका स्मरण, दुर्गन्ध पित्तका प्रकोप इत्यादिसे वमन होता है। तथा ताप कोलेरा, अतिसार, शोथ लिवरका दर्द पथरी वगैरह रोगोंमें भी वमन होता है। वमनके साथीमें खासी श्वास हिक्का ताप तृषा, छातीमे दर्द इत्यादि दिखायी देते हैं। वमनमे कभी अन्न पित्त या पानी निकलती हैं। और कभी वमनमे रक्त गिरता हैं।

पथ्यापथ्य—मटर, जव, गेहू, मुंग चावल शश मृगका जांगल मांस शीतल शरबत द्राक्ष मोसंबी, दाडीम, मीठा निंबू खट्टा निंबू सहतूत, अंजीर इत्यादि हितकारक है, लंघन, कराना दस्तकी दवा देना। दोषका प्राधान्य और अन्य लक्षणोंकी जांच करके, खुराक और औषधकी योजना करना।

छर्दिशामक—रससिंदूर, शुद्धि भस्म लोह भस्म अभ्रक भस्म सुवर्ण माक्षिक भस्म मुलैठीका मूल, शिलाजीत वंशलोचन सोंठ छोटी पीपल, काली मरिच, तिलकी डंडीकी भस्म, हरड, कलौंजी जीरा वायविडंग, इलायची, नागर-मोथ, नागकेशर, द्राक्ष समान भाग लेकर, बीजोरा के रसकी, आंवलेका क्वाथ की दो भावना दे कर सुखा कर घोंट रखना। मात्रा ४ से ८ रत्ती पानीके साथ देना। वमन उत्क्लेद, अरुचि, खुराक पर अभाव सगर्भा स्त्रीकी वमन इत्यादिमें उत्तम हैं।

छर्द्यन्तक—रससिंदूर तो. ४ सुवर्णमाक्षिक भस्म ताम्र भस्म, वंगभस्म मुक्ता पिष्टी प्रत्येक तो १, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, तथा शुद्ध गन्धक प्रत्येक तो. ८, बीजोरा, अदरख खट्टी लूनी आंवला तथा तुलसी प्रत्येकको अकेक भावना दे कर सुखा कर घोटना और उसमें जीरा अजवायन सोंठ, छोटी पीपल काली मरिच हरड बेहडा, आंवला कलौंजी जीरा, वायविडंग दालचीनी प्रत्येक तो. ०। कूटकर मिलाब घोंट कर रखना। मात्रा सुबह शाम दोसे चार रत्ती पानी या शहदमे देना। किसी भी कारणसे होती वमन बंद हो जाती है।

एलादि चूर्ण—इलायची कलौंजीरा, लौंग, चीनीक बाला नागकेशर छोटी पीपल बेरके बीजकी गिरी नागरमोथ हरड आंवला श्वेतचन्दन सब समभाग कूट कर कपडछान करके ०। से ०॥ तोला चूर्ण पानीसे देना।

भ्रमरी गृह योग—भ्रमरीका मोंण-गृह जो मिट्टीका होता है वह ०। तोला पानीसे या शहदसे देना। वमन शमता है।

कमल बीजादि योग—कमल बीजकी गिरी, सुपारी बारीक इलायची इन तीनोंको समान पीस कर मात्रा १० से १२ रत्ती पानीके साथ देना।

खपर्रादि योग—खापरीया शुद्ध या खपर्र भस्म, धाणा, इलायची, अमरी के भोण (गृह) की मिट्टी, मोरके पांखकी भस्म कपडेको जलाकर की हुइ राख सबको समभाग पीस कर १२ से २० रत्ती पानी या शहदसे देना वमन मिटे।

४ विषतिंदुक योग—विषतिंदुक (कुचला बिना शुद्ध किया हुआ) पीस कर प्राय १ रत्ती पानीमे मिलाय देना उछाळा, मोळ, छर्दि मिटे।

आमलक्यादि—आंवळा तोला १, लींडीपीपल तोला १, काली मिरच तोला १, शक्कर तोला ४ साथ कूट १२ से १५ रत्ती पानी या शहदसे देना वमन उबका मिटे।

सैंधवादि योग—सैंधानोन तो १, इलायची तो. २ कूटकर १२ से २४ रत्ती पानी के साथ देना।

एलादियोग—इलायची दाना १० से १२ रत्ती तुलसी के रसके साथ देना उछाळा वांतिका शमन हो।

अतिविषादि योग—अतीस कूटकी हरड प्रत्येक तोला एक अमार बीज तोला ३ साथ पीस ०। तोला पानी से देना।

९ पूगीफलयोग चीकनी सुपारी तोला ०॥, कथ्था तो ०॥ पानी शेर २ में उबाल कर जब पानी शे ०॥, रहे तब उसमें छोटी पीपल चूर्ण १ वाल छिडक कर वह पानी पिलाना। उदावर्त वायु वमन उत्क्लेद डकार मिटे।

१० निंबू रस तो. ११, गायका दूध तो. ५, मिलाकर पिलाना।

११ तेल अथवा घी भरनेका चमडेका कुडलाका टुकडेको जला कर राख करना। यह भस्म वाल १ पानीके साथ देना। बहुत दिनोंकी वमन मिटे।

१२ इलायची, लाल चावल लौंग, गज पिप्पल प्रियंगु आमका फूल (मोर) नागकेशर कमल बीजकी गिरी बेरके बीजकी गिरी नागरमोथ चंदन सब समभाग कूटकर शहद के साथ ०। से ०॥ तोला देना वात पित्त कफकी वमन मिटे।

१३ इलायची तो ०।, सोंठ तो. ०।, तुलसी रस तो ०। देना वमन मिटे.

१४ लोंग, अफीम, केशर समान लेकर पीस कर पानीमें चना जैसी गोली बनाना। मात्रा १ से २ गोली दिनमे दो या तीन दफे देना। वमन मिटे।

१५. केशर वाल १, शक्कर तो. ।।≈, चंदनाके साथ घीस कर २ दिन पिलाना उबका उलटी मिटे ।

१६ अजवायन तो. ०।। कूटकर गौमूत्र तोला ५ से देना । ३ दिवस पीनेसे उबका, उछाला, मोळ मिटे ।

१७ गुगळका धूप कोरे घडेको ७ दफे देना । पीछे पानी भरना । वह पानी पाना । उबका उलटी मिटे ।

१८ निवूरस तो. १ में इलायची दाना दो मासा कूट डालकर पिलाना वमन मिटे ।

१९. मयूरपिच्छ जला कर शहद साथ ३ से ४ रत्ती चटाना । वमन मिटे ।

२० विजोराका रस तो १ शहद तोला २ मे मिलाकर देना ।

२१. अगरका काष्ठ, नालियेरकी कावली, कमळ बीजकी गिरी पानीमें घीस पिलाना । ३ से ४ दिनमें वमन मिटे ।

२२ आकके पान छायामें सुखा कर पीसके उसमें समभाग जवाखार मिलाय तो. ०।≈ भार पानीके साथ पाना । तात्कालिक वमन मिटे ।

२३ तुलसीरससे, लोंग जीरा समभाग चूर्ण ०। तोला देना वमन मिटे ।

२४. मयूर पिच्छकी भस्म, लौंग, समभाग पीस नागर वेलके पानके रसमें मुग जैसी गोली बनाना । २ से ३ गोली चिनीसे देना.

२५. नागकेशर, आमकी गुठली, इलायची समभाग कूट कर ०। तोला देना ।

२६ जामुनके पान उबाल कर पीलानेसे वमन, उबका मिटे ।

२७. सचल, जीरा, शकर, कालीमिरच समभाग कूटना । तो. ०।, शहदमें चटाना ।

२८. सोंठ, पीपर समभाग शहदसे देना ।

२९. वडकी वडवाइके अंकुर जो कोमल हो उनका रस गायके दूधके साथ पिलाना सगर्भा स्त्रीको वमन मिटे ।



शरीरका दाह शोष तृषा

गला सुखना मुखमें अमी न रहना।

पित्तके प्रकोपसे मुखमें जलन शोष आदि होते हैं। इसके चिह्न पित्तज्वरसे मिलते जुलते है। पित्तज्वरमें होजरी पेट बिगडनेसे शरीरका ताप होता है। इस दाहरोगमें पित्तज्वरकी चिकित्सा करना।

सारे बदनमें फिरते रक्तसे जलन होता है। शरीर मानो अग्निसे जलता हो तपता हो ऐसा लगे। शूल दर्द हो। शरीर और आंखे लाल हो जाय। शरीरपर अंगारे रखे हो ऐसी जलन हो। शराब बहुत पीने से दाह होता है वह पित्त और लोहूको बिगाडता है। यह जलन बडी भयंकर होती है। शस्त्र इत्यादिके आघातसे, पेटमें लोहूका अभाव होनेसे जलन होती है वह प्रायः असाध्य है। तृषा रोकनेसे अथवा तृषित मनुष्यको पानी न मिलनेसे रस क्षीण होकर बढा हुवा तेज-अंतर-भीतरका और बाहिरका अग्नि देहको जलाता है। तब मनुष्य चेष्टाहीन हो जाता है। गला, तालू, ओष्ठ सुखते हैं। जिह्वा बाहिर निकल जाती है। धातुके क्षयसे हुवे दाहमें मूर्छा आती है। मनुष्य कामांध होनेसे भी दाह शोष होता है। तृषा लगती है, स्वर बेठ जाता है, हलन चलन हो सकता नहीं। किसी भी प्रकारके जलनमें शरीर उपरसे ठंढा लगे और भीतर असह्य जलन होती हो तो वह प्रायः असाध्य चिन्ह है। इसके अलावा दूसरे रोगके अंतमें तथा विषैली चीज खा जानेसे भी दाह होता है।

यह दर्द अकेला अथवा दूसरे रोगके चिन्ह रूपसे भी होता है तब शरीरमें जलन होती है। वायुका या पित्तका प्रकोप होनेसे, जीर्णज्वरसे, बहूत श्रम करनेसे, धूपमें तपनेसे भय पानेसे, कामांध होनेसे, शस्त्रादिका घाव लगनेसे क्षयसे तथा दूसरे रोगोंके कारण भी यह दर्द होता है तब बारबार पानी पीने पर भी तृषा छीपती नहिं।

उपचार—सो वक्त धोया हुवा घी भुने हुवे जव बेर, आंवळा, सम भाग लेकर सुरकामें या खट्टी छाछमें पीस मर्दन करना। छाछसे भिगोया हुवा कपडेका टुकडा शरीर पर ढकना। वाळा और चंदन साथमें पीसकर लगाना। चंदन और जलपिप्पल पीस पत्ता पर लेपकर उससे पंखा करना। केलीके पत्ते कमळ पत्र बिछाय उस पर दर्दीको सुलाना। ठंढा पानी सिरपर सतत छोडना। प्रियंगु लोध्र, वाला काला वाळा, नागकेशर पीसके लगाना। वाला, पद्माख कालावाला, चंदन, नागरमोथ इन सबको कूटके एक हांडीमें डाल

बल डाल उसमे भिठाना कमळका जल, चीनीका पानी, दूध, गन्नेका रस इत्यादि पिलाना। काला हंसराज, और जलपिपलीको पीस पिलाना और लगाना।

चंदनादि क्वाथ—चंदन, पर्पट सुगंधी वाला, नागरमोथ कमल कंद, कमलफूल बडीसौफ धनिया पद्मकाठ, आंवला, समभाग कूट २ से ४ तोला चूर्णमें ४० तोला पानी डाल पकाना आधा शेष रहेने पर शहद या शक्कर मिलाय सब प्रकारके दाहमे पिलाना। या २ से ४ तोलामे १ लोटा पानी डाल छह घंटा भिगो रखना पीछे मलकर कपड छान कर पिलाना।

रौप्य गुटी—२ या ३ तोला शुद्ध चांदीकी गोली बनाकर उसे अग्निपर रख लाल होनेसे मुलेठी, द्राक्ष, वायविडंग, चिनीकबाला इक्षु रस शक्कर नागरमोथ सब समभाग लेकर कूटना। १० तोलामे २ लोटा पानी डाल १२ घंटा भिगो रखना पीछे इस पानीसें वह चांदीकी गोली २१ दफे बुझाना। यह गोली मुखमे रखनेसे तृषा छीपती है। मुखमे अमी आता है। दाह मिटता है।

कुष्ठादि वटी—कुष्ठ, जलपिपली मुस्ता बडकी एडवाइके कोमल अग्रभाग, मुलेठी समभाग लेकर शहदमें वाल वालकी गोली बनाना। मुखमें रखनेसे तृषा मिटे।

एलादि चूर्ण—इलायची, जलपिप्पली लौंग, गजपिपल, प्रियगु शिवलिंगीबीज, बेरके बीजकी गिरी नागरमोथ सफेद चंदन समभाग कूट के २ से ४ मासा शहद या शक्करमें चटाना।

एलायदि योग—इलायची चावल लौंग, नागकेशर, चंदन समभाग कूट के २ से ४ मासा शहदसे देना।

द्राक्षादि योग—काली द्राक्ष पर्पट (रेणु) शक्कर इसका हिम पिलाना।

बदिरादि योग—बेरके कोमल पत्त, आवळां पकते हुए चावलके पानीमें पीस हाथपग पर लगाना। दाह मिटे।

आमलादि योग—आंवला बडके कोमल पत्ते, रीठेके फेन हाथपग पर लगाना। दाह मिटे।

कर्पूरादि योग—कपूर, वालो, इलायची, आवळां, चंदन, ठंडे पानीसे पीस पिलाना दाह मिटे।

मुशल्यादि योग—सफेद मुशली, काली मरिच, शक्कर समभाग कूट ०।से ०॥ तोला पानी के साथ देनेसे तृषा मुखका शोष मिटे।

वालकादि योग—वाला सफेद चदन लालचंदन काला हंसराज पद्मकाष्ठ सब समान पीस मस्तक पर लेप करना। तृषा, शोष दाह मिटे।

कुष्ठादि योग—कुष्ठ, चावल, बडकी बडवाइ, मुलैठी मूल नागरमोथ प्रत्येक तोला ०॥, कमल बीजकी गिरी तो. १ सब साथ पीस सबके समान शक्कर मिलाय शहदसे वाल वालकी गोली बनाना। गोली मुखमें रखना तृषा, दाह, शोष मिटे। मुखसे अमी आवे।

लोहखण्ड योग—गजवेलके टुकडेको तपाकर उपर पानी छिडकना उस पानीमें शहद शक्कर मिलाकर पाना। तृषा शोष मिटे।

कृष्णादि योग—छोटी पीपल, नागकेशर, दाडिमकी छाल, शक्कर सम भाग लेकर शहदसे गोली बनाकर मुखमे रखना गलाका शोष मिटे।

चंदनादि योग—सफेद चंदन पकतेहुए चावलके पानीसे घीस पिलाना तृषा मिटे।

तृष्णाहर रस-(यो त ल) पारद १, गन्धक २, कपूर ३, शिलाजित ४, वाला ५, काली मिरच ६ और शक्कर ७ भाग लेकर कूट कर ३ रती रातवासी पानीसे देना। तृषा शोष शांत होता है।



मूर्च्छा

कारण—निर्बलता, दोषका प्रकोप, विरुद्ध आहारविहारका सेवन, क्रोध, शोक मनपर आघात, तमोगुण, मलमूत्रादिके वेगका अवरोध, विष आघात इत्यादि कारणोंसे प्रकुपित वात पित्त कफ हृदयमें, ज्ञानेन्द्रियोंके स्थानमें, कर्मेन्द्रियोंके स्थानमें प्रविष्ट होते हैं तब मनुष्य मूर्च्छित होता है।

चिन्ह—प्रारंभमें हृदयकी गति मंद होती है। मोह, वमन होनेसे श्वासकी गति मंद होती है शरीरमें कंपन हो ठंडी लगती है, पसीना बहुत होता है। नाडी मंद अस्थिर गतिवाली होती है, हाथ पावके और शरीरके दूसरे स्नायु खींचाते हैं, मन घबराता है। मूर्च्छा जब पूर्णरूप पर पहुंचे तब रोगी बेशुद्ध हो जाता है, मलमूत्र हो जाता हैं। भ्रम, संन्यास इत्यादि रोग इससे मिलते जुलते हैं।

मूर्च्छा—पित्त और तमोगुण प्रधान हैं। **भ्रम**—पित्त वायु और रजोगुण प्रधान हैं।

तंद्रा—वायु, कफ और तमोगुण प्रधान है। **निद्रा**-कफ और तमोगुण प्रधान है।

संन्यास—कुपित हुए बलवान दोष जीव स्थानमें प्रवेश कर वाणी देह और मनको गतिको रुक देता है और पराधीन हो गये हुए मनुष्यको काष्ठकी तरह पटक देता है। तुर्त सावधानीसे उपाय न किया तो तत्काल मरण भी हो जाता है। इसको सन्यास कहते हैं।

पथ्यापथ्य—दरदीको भूमिपर सुलाना, ठंडी हवावाले कमरेमें ले जाना, वस्त्र शिथिल करना। पिसा हुआ लशुन को या प्याज को रस सुंघाना या नाकमें डालना तुलसीरस नाकमें डालना। छाती, मस्तक पर ठंडा पानी छिडकना। मुख पर ठंडा पानी छिडकना मुख पर पवन पंखा करना। गलेके नीचे उतरे ऐसी तरह ठंडा पानी चम्मचसे थोडा थोडा पिलाते रहना। द्राक्षासव, मृतसंजीवन सुरा, महासरस्वती सुरा इत्यादि पिलाना। मस्तकके नीचे तकीया रखना। मरचा, अदरख, फुदीना प्याज लशुनका रस मिलाकर थोडा थोडा, शहद डाल पिलाना और नाकमें डालना। हाथ पांव पर भृंगराज तेल मालीश करना।

मूर्च्छा नाशक घृत—सोंठ, पिपल, मरिच, हिंग, निर्गुडीके बीज और पत्ते, देवदार, हलदी मजीठ वायविडंग, चंदन, छोटी कटहरीका फल केलीका कंद शतावरी, असगन्ध प्रत्येक तोला ५ पांच ले कर पानीमें कुचदी करके उसमें गायका

दूध रतल ८ डालकर हिलाना उसमे गायका घृत ८ रतल डाल कर पकाना । ¼ नीका अंश जल जाय जब कपडछान कर लेना । यह घृत किसी भी औषधके साथ या अकेला १ से २ तोला खिलाना । इससे भ्रम, तंद्रा मिरगि अपस्मार पागलपन इत्यादि मानसिक दरद मिटते हैं ।

मूर्च्छान्तक रस— पारद तो. ५, गंधक तो. १०, रससिंदूर तो. ५, अभ्रक भस्म, रौप्य भस्म, ताम्र भस्म प्रत्येक तो २, सहजनाके बीज शिरीशकी छाल, कचनार छाल, चोपचीनी संघेस्रडाको, छाल, सौंठ छोटी पिपल काले मरिच, असगंध, शतावरी, बच रास्ना, ब्राह्मी, ब्रह्मदंडी, सेंधानोन प्रत्येक तो. ३ लेकर कूटकर कपडछान कर, मिलाकर उसको असगंध, खदरख, शतावरी प्रत्येकको अवकेक भावना देकर गुंजा जैसी गोली बनाना अथवा भूका रखना । मात्रा २ से ४ रती मधु और मूर्च्छानाशन घृत अथवा कल्याण घृतके साथ अथवा अश्वगंधावलेह के साथ देना ।

मूर्च्छा हर अंजन—सोंठ, पिपल मरिच सहजनाका बीज सिंधानोन, बच हिंग लशुन, करंजके बीज, सफेद सरसो समभाग लेकर बस्त-बोकडाके मूत्रमें पीस कर बाट (वर्ति) बनाना अथवा सुखाकर भूका रखना । इस औषधका अंजन करना और सुंघाना मूर्च्छा अपस्मार भ्रम चक्कर मिटते हैं ।

रास्नादि योग— रास्ना गळो (गिलोय) आंवला, नगुंडी समभाग पीसना । ०॥ से १ तोला भूकाका क्वाथ करके लघुयोगराज गुगळ ४ से ८ गोली अथवा महायोगराज गुगळ ३ से ४ गोली के साथ देना ।

गोक्षुरादि योग—गोखरू मूस्राकानी धमासा, ब्राह्मी, समभाग कूट ०॥ से १ तोलाका क्वाथ पिलाना । साथ सिंहनाद गूगळ ४ गोली देना ।

अष्टामृत पर्पटी आदि मिश्रण—अष्टामृत पर्पटी तो ०॥, महायोगराज तो ०॥, चंद्रप्रभा तो १ साथ मिलाय ४८ पुडी बनाकर शहद और घृतमें अक्केक पुडी सुबह शाम देना ।

मद्य (दारु) से उत्पन्न होनेवाले दर्द

मद्य—आसव सुरापान विधि

मद्य मात्रापीतं दत्तं प्रियया सुसाधितैरन्नैः ।
हृष्टप्रियाय समये भक्ष्यैरमृतोपमं भवेद्विधिना । ॥१॥

नियमपूर्वक, नियमित मात्रामे समयका विचार कर हितकारक अन्न और खाद्य पदार्थोंके साथ प्रियाने और प्रसन्न हुये पुरुषको दिया हुआ मद्य–आसव अमृत समान गुण करता है । बुद्धिमान पुरुषोंने मद्यको अन्न जितना हि उपयोगी माना है, किन्तु जिस ऋतुमें, जिस जातका मद्य पीना हितकारक हो, तथा प्रकृति, स्वभाव, शरीरका बंधारण वगैरका विचार करके उपयोग करे तो मद्य–दारु अमृत रुप होता हैं । और मूर्खतासे हदसे ज्यादा पीते चले तो विविध रोग उत्पन्न होते हैं और अंतमें मरण होता है ।

विधि—मळमूत्रोत्सर्ग और स्नान करनेके बाद, सुगन्धी तैल आदि पदार्थों शरीर पर धारण कर लगाकर, मन सावधान तथा प्रसन्न रखकर सुगंधी पुष्पोंसे खीले हुए, भ्रमर मयूरादिसे गुंजित, सुगंधित शीतल पवनसे भरे हुये वातावरण वाले उद्यानोंमें, चन्द्रकिरणोंसे धवलित और सुगंधी धूपसे सुगंधित हुयी मकानोंकी ऊर्ध्वभूमि अगासीमे मनको प्रसन्नता बढानेवाले शयनासनमें हुए पुरुषोंने, सुवर्ण और चांदीके रत्नजडित पात्रमे भरा हुआ, रुप यौवनसे मदोन्मत्त और वस्त्राभूषणसे भूषित रमणियोंने दिया हुवा मद्य पीना यह शरीरको नवयौवनयुक्त रखता है । और मद्य पीनेके बाद विविध प्रकारके फल मेवा, सुगंध-युक्त घी और दूध वाले पौष्टिक अन्नपानादि पदार्थोंका खाना यह आरोग्य रक्षण के लिये उत्तम हैं ।

वायु प्रकृतिवाले मनुष्यने स्निग्ध और उष्ण वस्तुओंके साथ मद्य पीना, पित्त और उष्ण प्रकृतिवालोंने मधुर और ठंडे फल फूल स्निग्ध पदार्थों और शीतोपचारके साथ मद्य पीना । कफ और शरद प्रकृतिवालोंने जंगली मांस रस और उष्ण गुण वाले फल और अन्नादि खुराक लेने के पीछे मद्य पीना चाहिये ।

गुण—आयुर्वेदमें विविध प्रकारके मद्य याने आसव बनानेकी विधि है । कइ आसव भिन्न भिन्न रोगोके लिये ही उपयोगी है और कइ आरोग्य रक्षणके लिये गुणकारी है । आयुर्वेदकी पद्धतिसे बने हुये आसवोंकी मात्रा २॥ तोलासे लेकर १० तोला (१ औंससे ४ औंस) तककी एक दिनकी है । विशेष रोगके कारण

मात्री न्यूनाधिक की जाती है । युक्ति पूर्वक मात्रासे और विधिपुरस्सर पिया हुआ मद्य मनको प्रसन्नता, ओज, आरोग्य, पुरुषातन और बलको बढाता है । शरीरको पुष्ट करता है । खुराक पर प्रीति बढाना, भूख लगाना, हृदयको बलवान करना, स्वर रूपको विकसित करना, भय और शोकको मिटाना, अच्छी नींदको लाना, मलमूत्रको नियमित करना वस्तकी कब्जीको मिटाना इत्यादि गुण कर्ता है । संसारके विविध दुःख शोकसे विह्वल मनुष्योंको यह कष्ट कम करता है । मद्यपान करनेवाले लोग अमर्याद हो कर अधिक मद्य पीते है उनके हृदय फुफ्फुस आंतें मूत्राशय और दिमाग आदि अवयवों बिगडते हैं और उनकी दशा पराधीन हो जाती है ।

मद्य पीनेका निषेध—मद्य-आसव किसने नहि पीना चाहिये । क्रोधमें आया हुआ, भयभीत, बहुत परिश्रम पथ आदिसे थका हुआ, शोकसे विह्वल, भूखा तृषावाला, कसरत करनेसे और भार उठानेसे थका हुआ, मल मूत्रका वेग लगा हो अैसा, बहुत रूक्ष, बहुत ठंडे सूखे पदार्थ खाये हो, अजीर्ण पर खुराक लिया हो, शरीरमे कमजोर हो, धूप और अग्निसे तपा हुआ हो अैसे मनुष्यने मद्य-आसव नहि पीना चाहिये । पीनेसे अनेक प्रकारके रोग होते है । अधिक मद्य पीनेसे मनुष्यकी जो दशा होती है यह इस प्रकार है ।

प्रथम दशा—नियमित मद्य पीनेसे बुद्धि बढती है, स्मरण शक्ति खीलती है. संसारका सुख मिलता है, पढने, गाने बजाने भाषण करने आदिमें उत्साह अधिक रहता है ।

दूसरी दशा—मात्रा-प्रमाणसे अधिक मद्य पिया हो तो बुद्धि याददास्त और वाणीमें विकार अस्पष्टता होती है, उन्मत्त जैसी क्रिया और आचरण करता है । क्रोध प्रमाद आलस्य निद्रा बढती है । इस अवस्था वाले कोई वाहनका मोटर या बसका रेल्वे ट्रेनका ड्रायवर हो तो अकस्मात कर देता है । आज कल दारूबंधीका कायदाका अमल होनेसे अैसे लोग जहां जीतनी मिले दारु पी लेते है इस कारण बहुत से अकस्मात होते हैं ।

तीसरी दशा—मात्रा प्रमाणसे बहुत प्रमाणमे मद्य पिया हो तो अगम्या-गमनका भान न रहे । बडोंकी गुरु रूप मनुष्योंकी मर्यादा न रखे । अभक्ष्य भक्षण करे । बेशुद्ध हो जाय । अपनी गुप्त बात कह दे और मनुष्य एकदम पराधीन हो जाता है ।

चौथी दशा—बिना मर्यादा दारु पीनेसे मनुष्य काटे हुए वृक्षकी तरह गिर पडता है । चेतना शुद्धिहीन बन जाता है । किसी कार्य अकार्यका भान गमाता है । जीवित रहने पर मृतवत अपना जीवन व्यतीत करता है ।

मद्यजन्य रोग—शरीरमे भिन्न भिन्न अवयवोंमे पीडा होती है। असाध्य मूत्रके रोग होता है। मुखमे शोष रहता है। असाध्य प्रमेह रोग होता है। मुखपर शोथ रहता है। शरीर तपा हुआ रहे। मस्तक–दिमाग हड्डीयां सांधोमे दर्द। शरीरमें कंप हो। कमजोरी बहुत रहे। हृदयमे खोच हो। खांसी हिक्का वमा जभाई दस्त मुख और आंखो के दर्द हो। पृष्ठ भाग झकड जाय भयंकर स्वप्न दीखे आदि होते है।

चिकित्सा—मद्य से उत्पन्न हुये विकारोंमे या दारूके पागलपनमे खट्टा पदार्थ, छांछ, दहिका घोल, रबडी मलाइ मखन केले मुसंबी चीकु द्राक्ष, इमलीके पके फलको पानीमे भिगोकर इसके रसमें गुड शक्कर या शहद डालकर पिलाना। रोगी के शरीरमे वात पित्त कफकी प्रधानता न्यूनाधिकताको देखकर चिकित्सा करना। खजूर अंजीर, पके बेर, बेल–बिल्वके पके फलके रसका शर्बत आदि देना। च्यवन प्राश जीवन, अमृतादि अवलेह द्राक्षासव अर्जुनारिष्ट आदि देना। खुराकमे चावल गेहुं जव ज्वारी मुंग उडद आदि देना।

मुक्तादि मिश्रण—मुक्तापिष्टी सतामृत लोह, यशद भस्म प्रत्येक एक एक तोला, समशर्करचूर्ण ४ तोला मिला कर १० से १२ रती शहद या घृतसे देना।

प्रवालादि मिश्रण—प्रवाल चन्द्रपुटी तोला २, बंग भस्म श्वेत तोला १ महालक्ष्मी विलास तोला ०॥, सतामृत लोह तोला १ सब साथ पीस ६४ पुडी बनाना २ समय शहद से देना।

स्वर्ण वसंत मालती २ से ३ गोली अष्टवर्गचूर्ण २ से ४ मासा और च्यवन प्राश १ से २ तोला के साथ देना।

शरीर पर महालाक्षादि तेल अथवा भृंगराज तेल मालीश करना। छीकनी सुघाना।

मद्य भंजी रस—पारद तोला ८, गंधक तोला १६, मुक्तापिष्टी तोला २, स्वर्ण भस्म तोला १, सिलाजीत तोला ६, बंगभस्म तो ४, रौप्य भस्म तोला ८ सब साथ मिलाय इसमे गायका घी तोला १० मिलाय मासी कालीद्राक्ष खरेंटी प्रत्येक के रस या क्वाथकी अेक अेक भावना देकर सुखा कर घोट रखना। मात्रा २ से ४ रती शहद और अदरख के रससे या तुलसी के रससे देना, मद्य दारू से उत्पन्न हुये दर्द मिटते है।

—[*]—

उन्माद पागलपन

कारण—बहूत अभ्याससे, मन के आघातसे बहूत दारू पीनेसे, जागरण से, दस्तकी कब्जीसे, कुटुंब कलेशसे, मालमिल्कत या प्रियजन के नाशसे, व्यापार आदिमे हानि पहुचनेसे, प्रेमांधतासे विरहसे, अत्युकट विषयेच्छासे, दीर्घ कालके अजीर्ण से इस प्रकार अनेक कारणोसे उन्माद रोग होता हैं। औरतोंको प्रसव के पीछे आहार विहारकी अनियमिततासे या अति हर्षसे या अति शोकसे पागलपन होता है उसे सूतिकोन्माद कहते है।

अपनी प्रकृतिसे विरुद्ध खान पानसे, धतूरे के बीज भांग गांजा आदि खानेसे, देव गुरु ब्राह्मणो के अपमानसे, अति भयभीत होनेसे, मन पर किसी प्रकार का आघात होनेसे यह रोग होता है।

चिन्ह—कुपित वात पित्त कफ गेर मार्ग पर रहनेसे उन्माद होता है यह मनका रोग है। इसमे भ्रम होता है। मन चंचल होता है। असंबद्ध बोलता है। स्मरण शक्ति नष्ट होती है।

वातप्रधान उन्माद—यह रोगी बिना कारण, बिना प्रसंग उच्च स्वरसे हसता है मंद हास्य करता रहता है नाचता है गाता है बोलता रहता है। अपने शरीर के अवयवों को विकृत करता है रोता हैं। इस रोगीका शरीर रुक्ष कृश होता है। खुराक पच जाय भूख लगे जब रोग बढता है।

पित्त प्रधान उन्मादमे रोगी—कोइ बात सहन नहि करता। अपनी महत्ता अडंबर दिखाता है। नम्रता रखता है। तिरस्कार करता है। भागता है। शरीर तपा हुआ रहता है, क्रुद्ध हो जाता है। सूर्य के धुप अग्निसे दूर रहता है। छाया ठंडे अन्नपान पसंद करता हैं। मुख पीलापन लिये होता है।

कफप्रधान उन्माद—मे रोगी का बोलना चलना फिरना कम होता है। खुराक पर अरुचि होती है, स्त्रीके पास बेठना एकांत मे रहना पसंद करता हैं। निद्रा अधिक रहती है। वमन होता है। मुखसे लार पडती है। भोजन के पीछे पागलपन जोर करता है। मुख नख सफेदी लिये होते है।

देवग्रहसे आविष्ट उन्माद— हो तो मनुष्यसे भिन्न एसी वाणी बोलता है। मनुष्य मे नही एसा पराक्रम शौर्य बताता है। ज्ञान विज्ञान आदिसे युक्त होता हैं और आवेशका समय नियमित होता है॥ रोगी संतोषसे रहता है, पवित्र रहता है, अच्छे पुष्पसुगंधी पदार्थ पसंद करता है। तन्द्रा रहित और संस्कृत में बोलता हैं। इसका नेत्र स्थिर रहता है। आशीर्वाद दिया करता है

ब्राह्मण पर प्रीति रखता है। इसका आवेश पूर्णिमा पूनम के दिन ज्यादा रहता है।

दैत्य आविष्ट उन्माद—में पसीना अधिक हुआ करता है। ब्राह्मण गुरु देव आदिको निंदा करता है। निर्भय गेरमार्गमे जानेवाला, अन्नपान बहुत खाने पीने पर भी तृप्ति नहिं रखता। इसका आवेश संध्या समय ज्यादा रहता है।

सामान्य लक्षण—रोगी वहेमी संशयवाला होता है। निर्मूल्य बात पर गहन विचार, गर्मचीजको ठंडो और ठंडोको गर्म मागना है। अपना शरीर काचका बना हुआ हो फूट टूट जायगा ओसा भय रखता हैं। कई लोगोको एक देशी पागलपन होता है। किसी एक-हकीकत बात-वस्तु के बारे मे उसे पागलपन रहता है दूसरी सब तरहमे वह अच्छा होता हैं। किसीको आप घात करने का पागलपन होता है। स्त्रीयां अपने प्रियको खसती पागल होती है। पुरुष किसी स्त्रीके विरहमे पागल बन जाता है। किसी लोगका धार्मिक पागलपन होता है। असंबद्ध बाते करता है। कई लोग जन्मसे हि जड बुद्धिहीन होते है। यह भी एक प्रकार का उन्माद है। ऐसे लोगोंका शरीर बेडोल होता है। मस्तके छोटे होते है। वडे मस्तक वाले भी पागल होते है।

सारस्वती चूर्ण—कुष्ठ असगंध सैंधानोन अजवाइन अजमोद जीरा शाहाजीरा सोंठ छोटीपीपल कालीमिरच पाठा शंखाहुली-शंखपुष्पी प्रत्येक तोला, १० दस बच १२० तोला कूटकर ब्राह्मी के रस को ३ भावना देना सुखने पर छानकर रखना। २ से ४ माशाकी मात्रा शहद घृतसे देना या कल्याणघृत और मधुसे देना। इसका, सतत सेवनसे उन्माद पागलपन मिटता हैं। बुद्धि मेधा स्मरण शक्ति धारणा शक्ति कविता शक्ति वढती है। अपस्मार चक्कर भ्रम मूर्छा मे गुणकारी हैं।

भूत भैरव रस—पारद, शुद्ध हरताल शुद्ध मैनसिल, शुद्ध काला सुरमा लोह भस्म ताम्र भस्म प्रत्येक चार चार तोला, गंधक ४८ तोला लेकर विधि वत मिला कर गौमूत्र की भावना देकर लोहेकी कढाइमे १० तोला गाईका घृत डाल कर पपंटीकी तरह पकाकर केली के पतेके उपर नीचे गोयरसे दबाकर स्वांगसीत होने पर घोट कर रखना। ३से ४ रती गाय के घृतसे या ब्राह्मीघृत या कल्याण घृतसे देना। उपर नेचेका क्वाथ पिलाना।

पलाशादि क्वाथ—ढाककी छाल या मूल, ब्राह्मी शंखाहुली शतावरी उदुंबर छाल सर्पगंधा पुनर्नवामूल समभाग कुट १ से २ तोलाका

क्काथ कर उन्माद मूर्छा अपस्मार भ्रम चक्कर आदि मे शहद डालकर पिलाना या किसी रस भस्मादि के अनुपान रूपसे पिलाना ।

उन्माद हरी वटी—पारद गंधक माक्षिक भस्म शिलाजीत गूगल कुष्ठ इलायची लौंग सोंठ पीपल काली मिरच बच हल्दी अतीस शंखाहूली वायविडंग कताकर जवास आंवला अमियाहलदी नागरमोथ रास्ना प्रत्येक एक एक तोला सर्पगंधा ४ तोला, त्रिफलाकी शंखा हूलीकी और शतावरीकी एक एक भावना देकर दोदो रत्तीकी गोली बनाना । ३ से ६ गोली पानीके साथ दो समय देना सब प्रकारका पागलपन मिटता है ।

उन्मादहर मिश्रण १—उन्माद गजांकुश कुश १ तोला, सर्पगंधा १ तोला, प्रवाल चंद्रपुटी १ तोला, स्मृति सागर १ तोला साथ मिलाय ६४ पुडीया बनाना । २ वखत गाईके घी के साथ अथवा कल्याण घृत के साथ देना अथवा उन्माद शामक चूर्ण ४ मासा के साथ देना ।

उन्मादहर मिश्रण २—महालक्ष्मी विलास १ तोला, मुक्ता पिष्टी तोला ०॥, वात विध्वंस तोला १ सुधा पर्पटी तोला १, अभ्रक कल्पवटी तोला १ साथ पीस ६४ पुडी करे दो वखत कल्याण घृत के साथ अथवा च्यवन प्राश जीवन के साथ देना उपर उन्माद शामक चूर्ण २ से ४ मासा देना ।

उन्माद शामक चूर्ण—ब्राह्मी शंखाहुली सर्पगंधा कुष्ठ बच धमासा अकलकरा हलदी तमालपत्र काली मिरच सब समान भाग लेकर कूटकर रखना । २ से ४ मासा २ वखत पानीमे देना उन्मादमे अच्छा गुण कर्ता है ।

उन्मादहर क्वाथ—लसुन पिपलीमूल सोंठ भारंगी शुद्ध कुचला पुष्कर मूल चिरायता अकलकरा काली मिरच ब्राह्मी शंखाहुली समभाग कूटना २ से ३ मासा किसी रस रसायनके साथ या अकेला पानीसे पिलाना ।

वचादि चूर्ण—बच सर्पगन्धा पुनर्नवा मूल सम भाग कूट १ से २ मासा मात्रा डेढ मासा तक देना । पथ्यमे दूध भात देना दिमागका दर्द शिरोरोगमे उत्तम गुणकारी है ।

कुष्टादि चूर्ण—कुष्ठ तोला १॥ बच तोला ३, अकलकरा तोला ०॥।, सर्पगंधा तोला २ साथ कूट १ से २ मासा किसी औषधके साथ अथवा अकेला पानीसे देना । उन्माद चित्तभ्रम चक्कर मूर्च्छामे गुणकारी है ।

उन्माद गजांकुश—पारद तोला २, गंधक तो २, बच ब्राह्मी आकका फूल, शंखाहुली धतूरबीज शुद्ध कुचला प्रत्येक तोला एक एक, स्वर्णमाक्षिक

भस्म एक तोला ० कूट शंखाहू पाठा महाराष्ट्री गोमूत्र प्रत्येककी एक एक भावना देकर घोट रखना २ से ४ रती पानीसे या कल्याण घृतसे देना। उपर महारास्नादि क्वाथ पिलाना ।

उष्ट्रास्थि प्रयोग—ऊंटकी बायी पासली की हड्डी कूटकर रखना। यह १ रती काली मिरच १ रती साथ मिलाय कागजकी भुगली द्वारा कानमे फूक मार कर डालना तुर्न सचेत होगा मूर्च्छा उन्मादमे उत्तम गुणकारी है ।

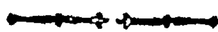
उन्मादहर धूनी—नीमके पत्ते हलदी गूगल लोबान बच हींग सांपकी कांचली बडी कटहरीके फल, कापुसके बीज (कपांशया) मोर के पीछे, सरसों प्रत्येक दश दश तोला लेकर कूट इसमे गाईका घृत १० तोला मिलाय रखना। सब समान भाग कूटना इसका धूम श्वासमे लिया जाय इस प्रकार देना। सब प्रकारकी ग्रहबाधा भूतप्रेत पिशाचका आवेश उन्माद मूर्च्छा भ्रम चक्कर आदिमे बच्चोंके सब दोषोमे यह धूप देना बहूत लाभ होता है ।

ब्राह्मी घृत—ब्राह्मी हरी तोला १६०, भांगराहरा तोला ४०, शंखाहूली शतावरी हलदी, मूलंठीमूल असगंध नागर मोथ, प्रियंगु प्रत्येक औषधी आठ आठ तोला, बच, काली मिरच सोंठ प्रत्येक दो दो तोला, सेंधानोन चार तोला सब साथ कूट रांग लगाये पीतलके बर्तनमे १० रतल पानीमे डालकर रात भर भिगोकर दूसरे दिन प्रातः इसमे वेजोटेबल मिलावट न हो एसा शुद्ध घी रतल ३५ डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय तब कपडछान करके अच्छे वर्तनमे भरना। मात्रा २ से ४ तोला खाने से, बुद्धि मेधा स्मरण शक्ति बढती है। मगज—दिमागके सब रोग मिटते हैं। हृदय आंते फुफ्फुस अच्छे होते है । उन्माद पागलपन मूर्च्छा भ्रम चक्कर अपस्मार—मिरगी आदि रोगमे बहूत गुणकारी है।

कल्याण घृत— इन्द्र वारुणी मूल बडी हरड बहिडा आंवला प्रियंगु देवदार कलौंजी सोंगा तगर हलदी दारुहलदी अनन्त मूल इलायची कमल बीज दारुहलदी चोपचीनी इलायची कमलकेशर दाडिमफूल मजीठ तमाल पत्र ब्राह्मी पते अतीस रुदंती क्षुप वायविडंग पृष्ठिपर्णी कुष्ठ चंदन बडीकटहरीफल पद्म काष्टचमेली फूल प्रत्येक सोलह सोलह तोला लेकर कूट कर उस को रांग लगाये पीतलके टोपमे छोड पानी रतल ५० डालकर रातभर भिगो रखना। दूसरे दिन प्रातः इसमे घी रतल ३५ डालकर धीमे आंचसे पकाना जल पानी का अंश जल जाय तब कपड छान कर अच्छे बरतनमे भर देना। यह २ से ४ तोला खिलानेसे दिमाग हृदय फेफडा आंते मूत्राशय रोगका शमन होता है। यह घृत अकेला या तत्तद रोगकी औषधोंके अनुपान रूपमे

दिया जाता है । ब्रह्मघृत—अपस्मार उन्माद भूतबाधा [illegible] सिरदर्द एक देशी पागलपन मूर्छा चक्कर खांसी सूजन मंदाग्नि वातरक्त प्रति[illegible] [illegible] दमा और विषमज्वर मूत्रकृच्छ त्वचारोग कुष्टमे उत्तम है । वंध्या स्त्री को ३ मास तक खिलानेसे गर्भाशयके सब दोष दूर होकर सन्तान होता है । हाईब्लड प्रेशर हृदयके सब रोग दूर होकर हृदय बंद होजानेका भय नहि रहता ।

सर्पगन्धा कल्प—सर्पगंधा तोला ४०, प्रवालचन्द्रपुटी, सुवर्ण माक्षिक रक्त, अभ्रक भस्म प्रत्येक बीस बीस तोला, मुक्ताशुक्ति [illegible], पारद गंधककी समभाग से की हुयी कज्जली, प्रत्येक सोलह सोलह तोला सब साथ घोट कर मूलैठी तोला १० और ढाकके मूल तोला १० [illegible] का क्वाथ कर उसको भावना देकर सुखाकर घोट रखना अथवा दो दो रत्ती की गोली बनाना ४ गोली प्रात दुधसे देना । १६ दिन सेवन करनेसे रक्त चाप हाईब्लड प्रेशर कम होकर मर्यादित होता है । पागलपन मस्तक की पीडा मूर्छा चक्कर आदि दिमाग के रोग शांत होते है ।



वातरोग, ८४ प्रकारके वातव्याधि

आयुर्वेदमे ८४ प्रकारके वातरोग बताये है। प्राणवायुके कुपित होनेसे-विकृत होनेसे हिक्का श्वास खांसी स्वरभंग पीनस प्रतिश्याय आदि रोग उत्पन्न होते है। उदान वायु कुपित-विकृत होनेसे-नेत्र मुख नाक कान और मस्तकके रोग होते है। समान वायुके कुपित विकृत होनेसे गुल्म मंदाग्नि आदि रोग होते हैं। अपान वायुके प्रकोपसे अतिसार संग्रहणी गुदारोग आदि होते है। व्यान वायुके कोपसे पथरी प्रमेह बवासीर भगंदर आदि होते है।

कारण—ठंड लगनेसे, ठंडे पानीसे स्नान करनेकी आदतसे चीनी शक्करकी चीजे मिष्टान्न अधिक खानेसे भूख न होते भी खुराक लेते रहनेसे, खूनके बिगाडसे पाचन शक्ति बिगडनेसे, अति कमजोर होनेसे, बिना घी दूध छाछ रूखा खुराक लेनेसे, ठंडा रात वासी अन्न खानेसे, अति विषयसे, जागरण करनेसे, लंबी मुसाफरी करनेसे, अति परिश्रमसे अति कसरत करनेसे चोट लगनेसे, अति चिंता शोकसे, मल मूत्रका वेग रुकनेसे, शरीरपर कोई चोट गिरका आघात लगनेसे हाथी घोडा ऊंट पर अधिक सवारी करनेसे, अति उपवाससे शोकका या हर्षका समाचार अकस्मात सुननेसे, ठंडा पवन शरीर पर लगनेसे इत्यादि अनेक कारणोसे वात वायुके रोग उत्पन्न होते है।

वातरोगके चिन्ह—शरीरके अंग उपांग पकड जाते है। प्रारंभमे एक दो दिन बुखार आता है। पीछे बुखारके साथ हरवख्त शरीरमे या शरीरके किसी भागमे पसीना होता है। नाडीकी गति बढती है। जीभपर सफेद छारी जमती है। सिरमे दर्द होता है। तृषा लगती है। दस्त कब्ज रहता है। पिशाब कम और कम प्रमाणसे आता है। शरीरका खून खट्टा हो जाता है। आगे कोनी घूटन कांधा खंभा पीठ कम्मर आदिमे पीडा होकर वह भाग जकड जाता है। निद्रा कम आती है। चलने फिरनेमे तकलीफ होती है। पसीना सदा होता है। वातकी पीडा बढनेसे बुखार १०१ से १०५ तक बढता है। एक सांधामे पीडा कम होते हि दूसरे सांधामे पीडा उत्पन्न हो जाती है। सघवा होनेसे इसके साथ अन्य भी दर्द हो जाता है। दूसरे वात रोगमे नामके अनुसार भिन्न भिन्न चिन्ह होते हुये भी उपर लिखे मेसे कई चिन्ह न्यूनाधिक सब वात रोगमे होते है।

वात रोगमें पथ्यापथ्य

बहुत करके सब वातरोगमें चिकित्सा और पथ्यापथ्य प्रायः समान है। पानी कूआका पीना लाभकारक है। दूधका खुराक ज्यादा लेना। मिष्टान्न कम खाना। जल्दी पाचन हो असा खुराक लेना। खीचडी, बाजरी, जव, चावल, मुग, उडद, तूरीकी दाल, गुड, अदरख, काली मिर्च लशुन, प्याज, सोंठ, छोटी पीपल लौंग, तज, हरा धनिया (कोथमीर), दूधी करेला सुरण, मीठा नीम, नमक, हलदी, पपैया, मीठा आम, मीठा मुसंबी, चीकू द्राक्ष, बादाम, काजू पीस्ता इत्यादि चीजे फायदा कारक हैं।

इमली, खट्टी छाछ, खट्टा दही, खट्टा निंबू, बाजारकी मीठाइ चीनी के अधिक मिष्टान्न इत्यादि हानिकारक हैं। ठंडे पानीसे स्नान नहीं करना शरीर पर खोपरेका या तिलका तैल मालीस करना। बादी न हो इस प्रकार खुराक लेना। दस्त और पिशाबका खुलासा हो यह ध्यान रखना। भूख हो इतना ही खुराक लेना। शरबत आइसक्रीम बरफ वगैरेह नहीं खाना सूखी हवा प्रकाश वाले कमरेमें रहना, मकान कमरेमे इधर उधर गंदकी न होने देना। शरीर पर सीधा ठंडा पवन न लगे इस प्रकार रहना। ठंडी ऋतुमें और वर्षामें अंगीठी रखना। जिस अंग पर वात-वायुसे दर्द हो जकड गया हो उस पर महानारायण, महालाक्षादि, महामरिचादि तैल अथवा तिलका या सरसोंका तैल मालिस कर उपर शेक करना।

संधिवात

इस रोगको उपर लिखे नियमोंके साथ हमेशां दांत साफ हो यह ध्यान रखना। संधिवात के साथ यदि बुखार रहता हो तो बुखारका उपचार करना। वातपित्त कफादि जिस दोषका प्राधान्य हो उसका ख्याल रखकर उसको औषध देना। इस रोगमें खुनमे अम्लता-खट्टापन रहता है। वह कम हो असा उपचार करना। पसीना ज्यादा हो यह लाभकारक है। इस रोगीको-मद्य दारु पीनेकी आदत हो और चा काफी ज्यादा पीता हो तो कम पीना शक्य हो तो बंध करना। खट्टी चीजें ठंडी चीजें, और खुराककी और खाने पीनेकी चीज ठंडी हो गई हो असा नहीं लेना।

महायोगराज गुगळ—एरंडी बीजका गर्भ, चित्रक, पीपरीमूल, अजवायन, पकाइ हुगी हिंग, कलौंजीरा, वायविडंग, अजमोद, जीरा, देवदारु,

बच इलायची, चैपानोन, कुष्ठ, रास्ना, गोखरु धनिया, हरड, मागरगोटा-लताकरंज के मध्यकी गीरी आंवला, नागरमोथ, सोंठ, छोटी पीपल, काली मिरच, वंशलोचन बड़ी कटहरीके फल, लौंग, सज्जीखार, वचुरा गिलोय, शुद्ध भिलावां, असगंध, शतावरी पुनर्नवा प्रत्येक तो ४, लोह भस्म, ताम्र भस्म अभ्रक भस्म, वंग भस्म रौप्य भस्म, नागभस्म, पारद भस्म रस, शुद्ध पारद शुद्ध गंधक, मण्डूर भस्म प्रत्येक तोला ८ सुवर्ण भस्म अथवा सुवर्ण माक्षिक भस्म रसन तो. ४, शुद्ध गुगळ तो १००, शिलाजित तो. १६, गायका घी तो ३२ सब साथ मिलाकर ऐक एक रतीको गोली बनाना । मात्रा ३ से ६ गोली घी के अथवा दूध के साथ देना । इसके उपर महारास्नादि क्वाथ पीना पथ्य तो अधिक लाभ होता है ।

८४ प्रकारके वातरोगमें यह बहुत गुणकारी है, इसके अतिरिक्त, मसा बवासीर, संग्रहणी, भगंदर, प्रमेह, कुष्ठ, उदावर्त-(वायु गोला चढना) गुल्म, अपस्मार हृदयरोग मन्दाग्नि श्वास, खासी, मूत्ररोग इत्यादि में भी अच्छा गुणकारी है रोगानुसार आवश्यकता हो तो अनुपान बदलना ।

यह सुवर्ण युक्त महायोगराज सामान्य स्थितिवाले मनुष्य ले नहीं ले सकता है इस कारण सुवर्ण युक्त और माक्षिक भस्म युक्त इस प्रकार दो प्रकारका बनाया जाता है ।

लघुयोगराज गुगळ (योग तरंगिणी-वाताधिकार) सोंठ पीपलीमूल, छोटी पीपल चव्य, चित्रक भुनीहुई हिंग, अजमोद, सरसो, जीरा शाहजीरा, रेणुका-(निर्गुंडी के बीज) जटामांसी इन्द्रजव पाठा, वायविडंग, गजपीपल, कुटकी अतीस, भारंगी बच, प्रत्येक द्रव्य एक एक तोला और त्रिफला- तीनो मिलकर ४० तोला । सब साथ मिलाकर शुद्ध किया हुआ गुगळ तो ६० मिलाना । इसमें गायका घी तो १० मिलाकर ४-५ रतीकी गोली बनाना । यह औषध सब प्रकारके वातरोगमें उत्तम गुणकारी है । यह गुगळ वातरोग के अतरिक्त कुष्ठ, फेफ नकसीर संग्रहणी, प्रमेह, वातरक्त, नाभिशूल, भगंदर, उदावर्त, हृदय और फेफड़े के रोग गुल्म अपस्मार, उन्माद हृदयका जकड़ना मन्दाग्नि श्वास खांसी, अरुचि औरतोका ऋतु दोष मिटता है और स्त्रीयोंको सतत तीन महिना तक देनेसे गर्भाशय शुद्ध होकर गर्भाशय संतान-गर्भाधानके योग्य होता है ।

वातराक्षस—पारद गंधक, रससिंदूर अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लोह भस्म, नागभस्म, प्रत्येक तोला, दस-दस, आदाके रसमें शुद्ध किया हुआ रसकपूर तो २॥, सोंठ, छोटीपीपल कालीमिरच, लौंग, चंदन, हरड, मुलहठी आंवला

गोंद, गन्धाबिरोजा प्रत्येक तोला ५, शिलाजित तो. १०, चित्रक, अदरख, एरंडका मूल, गुलरकी छाल प्रत्येकका रस या क्वाथकी एक एक भावना देकर घोटकर, रखना। मात्रा २ से ४ रति घी के साथ देना। उपर महारास्नादि कषाय पिलाया जाय तो अच्छा। सब वातरोगमे गुणकारी है।

चिंतामणि चतुर्मुख रस (सुवर्णयुक्त) पारद तो १० मे सोनेका वर्ख तो २॥ डालना। शुध्ध गंधक तो १० लोहभस्म अभ्रकभस्म, नागभस्म, प्रत्येक तो १० सब साथ मिला कर गायके घी तो. १० मिला कर निर्गुंडिके क्वाथ और महारास्नादि क्वाथ की एकेक भावना देकर उसका गोला बनाकर एरंडके पानमें लपेट कर बाजरी या उडदकी कोठीमें तीन दिन तक रख कर पीछे निकाल कर घोट कर रखना। दो से चार रती घी या दूधसे लेनेसे सब प्रकारके वातरोग, अपस्मार, उन्माद, आदिमें फायदा करता है।

वात चिंतामणि वृहत् (सुवर्णयुक्त)

रससिंदूर तो, १२, लोहभस्म, तो, १०, प्रवाल चंद्रपुटी तो, १० मुक्तापिष्टि तो ६, रौप्य भस्म तो ४ अभ्रक भस्म तो ४, सुवर्ण भस्म तो. ६, सब साथ मिलाकर कुमारपाठा के रसकी भावना देकर घोट रखना या रति प्रमाण गोली बनाना। मात्रा २ से ६ रती। यह औषध सब प्रकारके वातरोगमे, पक्षघात, कफ वात, संधिवात, आदि वातरोगमें उत्तम गुणकारी है और वाजीकर तथा रसायन गुण देनेवाला है। वृष्य, बृंहण और पौष्टिक है।

वात विध्वंसन रस—पारद, गंधक रससिंदूर, ताम्रभस्म अभ्रकभस्म, लोहभस्म शंखभस्म, एलायची, वज, हरड बेढा, आंवला, अजवायन, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, सिंधानोन गुगल शुध्धटंकण वच्छनागकाली शुध्ध हिंग लोबान, लौंग आवरि जीरा, सबको समान भाग कूटकर मिलाकर एरंडीका तेलका करसा देकर कुमारपाठा का रसकी, भावना देकर घोट कर रखना। मात्रा २ से ४ रत्ती घी या शहद से देना। सब प्रकारका वातरोग शूल कफ रोग संग्रहणी, सूतिका वात आमवात, पक्षघात, आदिमें गुणकारी है।

महारास्नादि कषाय—रास्ना तो. १०, धमासा, बलामूल, एरंडमूल, देवदार, कचुरा, वच, अडूसी, सोंठ हरड, चवक, नागरमोथा, पुनर्नवा, गिलोय, वृद्धदारु (विधारा) सौंफ, गोक्षुर, असगंध, अतीस अमलतास, शतावरी, छोटी पीपल, [illegible] (हलीम) थी, धनिया, छोटी कटहरी फल, प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर [illegible] छोडना। एक तोला चूर्णमें ४० तोला पानी छोड, २० तोला रहेतब [illegible] दो वक्त पना।

महानारायण तेल—गोखरु अरणी, अतिबला मूल, नीमकी छाल, बहुशो, पुनर्नवा, प्रसारणो, प्रत्येक तो. ४०, शतावरी तो २५, कुष्ठ, इलायची, चंदन, मोरवेल, बच, जटामांसी सेंधानोन, बलामूल, असगंध रास्ना, सोंफ, देवदार, दशमूल, और तगर प्रत्येक अ ठ आठ तोला। सबको अच्छी तरह कूट कर सबसे चौगुना पानीमे चोवीस, घंटा तक भिगो रखना। पीछे उसमे तिलका तेल पानीसे आधा डाल कर पकाना। पानीका अंश जल जाय जब तेल कपड-छान कर लेना। सब प्रकारके वातरोगमें १ से २ तोला खिलाया जाता है और रोग पर मालीस किया जाता है।

रास्नादि घृत—रास्ना, अरणिके फूल अजमोद, अजवायन, जीरा, कालाजीरा, इलायची, तज, लौंग, सोहागा, गुगल, धनिया, सोंठ छोटी पीपल काली मिरच, नागरवेलके पान, और अदरख प्रत्येक तोला १० लेकर सबको कूटकर पानी रतल १५ में २४ घंटा भिगो रखना। पीछे उसमें बकरीका दूध रतल १० और गायका या भैंसका घी रतल २० डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय तब कपडछान कर इसमें कपूर तो ५ मिलना। यह घृत वातरोगमें १ से २ तोला खिलाया जाता है। और दर्द पर मालीस किया जाता है।

संधिवातहर मिश्रण—वातराक्षस तो १, महायोगराज गुगल तो १, सर्वेश्वर पर्पटी तो. १, वात चिंतामणि वृहद् तो. ०॥, योगराज रसायन तो १, सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना। प्रातः और शामको एक एक पुडी घृत या शहदसे देना। और महानारायण तेल मालीस करना। सब प्रकारके वातरोग, चतुर्वा संधिवा, पक्षघात, कपवात, सूतिका वात आदिमें गुणकारी है।

वातहर चुवा—गुगल तो. ५, रुमी मस्तकी तो. ५, हीराबोल तो. २०, बावची तो. २०, मालकांगनी तो २० सब साथ कूट कर पातालयंत्रसे पकानेसे अच्छा तेल निकलेगा। उसको २-४ बुंद नागरवेल के पानमें डालकर दिनमें दो तीन दफे खिलानेसे सब प्रकारके वातरोगमे फायदा होता है।

नजला-अर्दित वात

कारण—ठंडी लगनेसे, ठंडा पवन लगनेसे, कान और नाकके दरदसे, कानकी ग्रंथीसे, वायुकी प्रकृतिसे, इस प्रकार अनेक कारणोंसे, यह रोग होता है।

चिह्न—मुखका एक बाजुका चेहरा (face) बंद होकर फिर जाता है। मुखद्वारका एक ओरका कोना नीचा दिखता है। एक बाजुका गाल ढीला रहता है। होठमेसे थूंक बिना इच्छा गिरता है। फूंक सीधी मार नही सकता। यह रोग भय रुप नहीं है।

पथ्यापथ्य और चिकित्सा—ऊपर वातरोगमें कहा हुआ पथ्यापथ्य इस रोगमें भी समझना और उसमें लिखी हुई औषधे इस रोगमें भी फायदा करती हैं।

अर्दितांकुश रस—पारद गंधक ताम्रभस्म, रस सिंदूर प्रत्येक दश दश तोला, असगंध चोपचीनी शतावरी, छोटी कटहरीके फल, इंद्रायणके फल, सोंठ पीपल, कालीमिर्च कचूरा हलदी, पुनर्नवा मूल प्रत्येक तोला पांच पांच सब साथ मिलाकर रास्ना निर्गुंडी और बला पंचांग प्रत्येकके क्वाथकी एक एक भावना देकर, सूखा कर घोटकर रखना। अथवा रती रतीकी गोली बनाना। अर्दितवात, जिह्वास्तंभ और दूसरे वातरोगमें अच्छा फायदा करता है।

आफरा- पेटका आफरा-पेट फूलना

पेटमें वायु भर जाना, कारण-यह रोग पेटमें, अतीव वायुका प्रकोप होनेसे होता है।

सिद्धयवानी चूर्ण-नमक चढाकर भुना हुवा अजवाइन तो. ८० काली मिरच, पीपलीमूल, हरड, बहेडा आंवला, छोटी हरड, (बिना बीज की), प्रत्येक दश दश तोला, लौंग, ईलायची, वायविडंग, सोंठ, जीरा, शाहजीरा, तज, लशुन, चनेका खार, प्रत्येक तोला चार चार, अकलकरा, नवसादर, गुलाबका फुल, सज्जीखार प्रत्येक तोला दो दो, पकायी हुई हिंग, कचुरा, लोबान प्रत्येक तोला एक एक सोहागा तो, ०॥ केशर तो, ०।, पंचलवण पांचों मिलकर तो. ५, जवाखार, तो १, कवारपाठाका रस, प्याजका रस, अदरखका रस, सहजनेकी जडका रस प्रत्येक एक एक तोला. अजवायन के सिवाय सब साथ कुट कर कपडछान कर उसमें अजवाइन बिना पीसा-खडा मिला देना। पीछे उसको निंबूके रसकी पांच भावना देना। मात्रा दो से तीन माशा पानीके साथ देनेसे पेटके लीवरके आंतोंके रोग, गुल्म, बवासीर. बढी हुई तिल्ली, पेटका वायु, गेस बढना आदि मिटते है, भूख लगती है टट्टी साफ होती है, पेटके सब रोगमें अच्छा गुणकारी है।

उरुस्तंभ :

कारण-बहुत खट्टे, रूक्ष ठंडे, बासी, खानपानसे, सरदी लगनेसे. करोड रज्जु सूजन होनेसे, गिर जानेसे, ऊंचे स्थानसे गिरकर पछाड लगनेसे. बहुत पैदल चलनेसे यह रोग होता है।

चिन्ह--कमरके नीचेका भाग रह जाता है या स्पर्शहीन शून्य हो जाता है। कीसीको कमरसे एक सारा पग और कीसीको दो पगमें होता है। वह पग इधर उधर

फिर नहीं सकता। धीरे धीरे सारा स्पर्शज्ञान चला जाता है। अगर बहुत कम होता है। पिशाब लगनेका भान नहीं रहता इस कारण बिछाने में से ही मलमूत्र करता है। पेट पर और कमर पर खींच कर पाटा बधा हो ऐसा भास रोगीको होता है।

पथ्यापथ्य—गिरनेसे या चोट लगनेसे यह रोग हुवा हो तो जलुका लगाकर जमा हुआ रक्त निकालना। आराम करना। चलना, फिरना बंध करना। उस भाग पर महानारायण तैल मालीस कराना। चंपी कराना शेक करना। खट्टा पदार्थ, अचार, खांड शक्करका मिष्टान्न बंध करना। सादा स्निग्ध लघु खुराक भूख के अनुसार लेना। दस्त पिशाबको खुलासा रखना। उडद बाजरी चना मुंग उडद की खीचडमें मिलाया हुवा दूधका खुराक ज्यादा रखना। मसालेमें हलदी, नमक, अदरख, जीरा, राई, मेथी हिंग, लालमिरच यह देना। शाकमें दूधी सूरण परवल, करेला, बेंगन देना।

उरुस्तंभारि रस—रससिंदूर, पारद-गंधक, अभ्रक भस्म, वंग भस्म, लोह भस्म, प्रत्येक आठ आठ तोला, काली मिरच, पीपलीमूल देवदार रास्ना, असगंध, जीलती फल, बलामूल नीमका गोंद, अजमोद, सैंधानोन, हरड प्रत्येक चार चार तोला, सब साथ मिलाकर कुवारपाठाका रस, निर्गुंडि और महाबला के पंचांगका क्वाथको एक एक भावना देकर गोला बनाकर उस पर अरंडीके-पान लपेट कर धागा बांधकर मेथी दानेकी कोठीमें तीन दिन तक-रखकर, घोंटकर रखना। पीछे २ से ४ रत्ती शहद घृत दूध अथवा पानीसे-देना। उपर महारास्नादि क्वाथ पिलाना। उरुस्तंभ और कमरके नीचेका-किसी भी प्रकारका वातरोग मिटता है।

उरुस्तंभारि लेप—राफडा वल्मीक-(Ant hill) की मिट्टि रतल २ दशांग लेप रतल १, दोषघ्न लेप रतल १, सहजना का मूल-रतल १, सब महीन कर मिलाकर रखना। इसमें से आवश्यकता हो उतना लेप लेकर पानी मिलाकर गरम कर मलहम जितना गाढा रखकर दर्द पर लगाकर उपर रुइ दाब कर पाटा बांधना।

महानारायण तैल अथवा विषगर्भ तैल, मरीचादि तैल, सरसोंका-तैल अलसीका, कोपराका, या तिलका तैल मालीस करना।

कंपवात

कारण और चिह्न—उपर लिखे वातरोगके कारण इस रोगके भी होते हैं। शरीरका कोइ एक अंग हाथ पांव मस्तक आदि कांपता रहता है। रोगीका सब शरीर पराधीन हो जाता है। प्रारंभमें कंप थोडा हो तो

हाथ पांव काम दे सकता है लेकिन रोग बढनेमे हाथसे कोई काम नही हो सकता। किसीको एक या दोनो हाथोंमे कंप होता है। किसीको सारा हाथ कांपता है। बहुत करके कांडाके नीचे अंगुलि तकका भाग ज्यादा कांपता है। इसमे भी खानपान और पथ्य वगैरह वातरोगके अनुसार समझना।

अकंपवातारि रस—पारद तो १०, गंधक तो १०, ताम्रभस्म, रास्ना धमासा, कपूरकाचली, मुद्गपर्णी, पृश्नीपर्णी, बिलीमूल देवदार, एरंडीका मूल, वाराही कंद, कुष्ठ, इलायची, मुलैठी मूल, प्रत्येक तोला ३ दो लेकर सब साथ कूट कर इसके धमासा, असगंध, शतावरी और पाठा-पाढ, प्रत्येक दश दश तोला लेकर कूटकर क्वाथ कर इसकी भावना चार देना पीछे घोटकर रखना अथवा रती प्रमाण गोली बनाना। मात्रा—२ से ४ गोली पानीके साथ अथवा बकरीके दूधके साथ देना। और महानारायण वगैरह तैल मालिस करना।

अमरसुंदरी गुटिका—पारद, गंधक, सावरशिंग भस्म, एळीयो-एलवा, अरणिमूल, पृश्नीपर्णी मूल, शालिपर्णी मूल, एरंडमूल सोंठ, पीपलीमूल, पीपल, चवक, चित्रा, हिंग, वायविडंग, गजपीपल, कुटकी, अतीस, अजमोद अडुसा मूल, सरसो, जीरा, शाहजीरा, निर्गुंडी बीज, इंद्रजौ, पाठा-पाढ गोखरु, भारंगी, बच, जटामांसी, तमालपत्र, देवदार, कुष्ठ, रास्ना, नागरमोथ, सैंधानोन इलायची, बलाबीज हरड, गोखरु, धनिया, बहेडा आंवळा तज, काला जवाखार, महाबलामूल, अतिबला मूल, नागबला मूल, सब द्रव्य सम भागसे लेकर, कूटकर कपडछाण कर, उसमें सब वस्तुओंके बराबर शुद्ध गुगल और गुगलका वजन जितना हो उससे चौथा हिस्सा गायका घी मिलाकर पानीसे तीन तीन रतीकी गोली बनाना। दिनमें दो या तीन दफे २ से ४ गोली पीस कर पानीसे देना। इसके सेवनसे कंपवा, उरुस्तंभ पक्षघात, और दूसरे वातरोग मिटते हैं।

गठिया वा—गठिया वातरोग

कारण— प्राय खुन बिगडनेसे यह रोग होता है। स्त्रीयोंकी अपेक्षा पुरुषोंको ज्यादा होता है। एश आरामसे, शारीरिक और मानसिक परिश्रम नहीं करनेसे, भोजनके पीछे हमेशा दिनमे सोनेकी आदतसे, दारुके व्यसनसे, चीकने, मेंदाके और मांस आदिके पदार्थ ज्यादा खानेसे, पेटमें भूख न होने पर भोजन करते रहेनेसे, उपदंश और गरमीके रोगसे इस प्रकार अनेक कारणोंसे यह रोग होता है।

चिह्न— यह रोग एक प्रकारका वातव्याधि है। हाथमें, पांवमे अंगुलियोमें पहिले पहले जमता है। बहुत दारु पीनेवाले और मांस भक्षण करनेवालोको यह

रोग अधिकतासे होता है। युरोपीयन, पारसी और मुसल्मानोंमें यह दर्द अधिक देखा जाता है। प्रारम्भमें इस रोगमें अजीर्ण होता हैं, खुराक पाचन नहीं होता, भूख एकदम कम हो जाती हैं। पायके अंगूठा अंगुलियाँ, पांवका तलुवा, हाथकी अंगुलियाँ, हाथोंकी हथेली लाल हो कर सूजन आती है। बुखार चढता है। दस्त कब्ज होता है। खट्टे डकार आते है। छातीमें जलन होती है। पीछली रातको पीडा बढती है प्रातःकालमें दर्द कुछ कम मालूम पडता है। जीभ पर सफेद छारी लगती है। पुराने गठिये वातरोगमें बुखार और सूजन नहीं होता। परंच हाथपांव और अंगुलियों पर सुपारी जैसी छोटी बडी ग्रंथियां निकलती है। सांधा और स्नायु जकड आते हैं। कभी ग्रंथिया पक कर पस निकलता है और चांदा पडता है। वह वहुत समयके पीछे अच्छा होता है।

पथ्यापथ्य—हल्का सादा लघु खुराक लेना। स्त्रीसंग कम करना। दारु, और मांस बंध करना। खान पानमें वातव्याधिके अनुसार पथ्यापथ्य समझना। हमेशां दस्त साफ आता रहे एसा करना। कपडा गरम और मोटा पहिनना। शक्कर मिश्री वाली चीजें, बहुत कम खाना। गुडका मिष्टान खाना। दूधका खुराक ज्यादा रखना, ग्रन्थीके उपर लो तेल लगाकर शेक करना। ठंडे पानीसे दूर रहना।

ग्रन्थिवातांतक रस—पारद, गंधक ताम्रभस्म, लोहभस्म प्रत्येक तोला दश दश, आकके दूधमें धोया हुआ रसकपुर तो. २॥, शिलाजीत तो. ८, शिलारस तो ४, शोधगुंदर, (गधा बिरोजा) तो ३, गुगळ तो ६, समुद्रफल, हरडे, कालीमिर्च पिपलीमूल लोंग अजवायन, जीरा, कलोंजीजीरा असगंध, सैंधानोन, देवदार, अतीस, शतावरी, प्रत्येक चार चार तोला कुटकी (तिक्ता) तो. ८ नीमके पत्ते पीस कर दो भावना देना। रत्ती जैसी गोली करना अगर भूका रखना। मात्रा ३ से ६ रत्ती गायके घीसे लेकर उपर गायका या बकरीका दूध पीना। गठिया वा संधिवा पेटके दर्द, उदावर्त, गेस चढना आदि वातव्याधिमें उत्तम गुणकारी है।

जानवो वा—घुंटनका वातरोग

कारण चिह्न—वातप्रकोप से और खूनके बिगडनेसे घुंटनमें पीडाकारी शृगालके मस्तक जैसा शोथ होता है, यह कमी ज्यादा कमी कमी पीडा करता है। शोथ कठीन होता है फिर भी कमी रक्तका अभाव और वात प्रकोप होनेसे

मृदु भी होता है । इसमे महानारायण तेल महालाक्षादि तेल मालीस करना अलीके पत्तोका पीस गर्म कर पोटीस जैसा बना कर लगाना ।

जानुशोथहर लेप—कलौंजी जीरा असगंध सेंधानोन हलदी मयूरशिखा रास्ना समान भाग लेकर गोमूत्रमे अथवा पानीमे पीस गर्म कर लगाकर उपर एरंड का पता लपेट पाटा बांधना उपर सेक करना ।

जानुशोथ हर कवाथ—रास्ना कलौंजी जीरा, अतीस, नागरमोथ, हरड, पाठा (पाढ) जटामांसी समभाग कूटकर २ से ३ तोलाका कवाथ बनाकर पिलाना ।

त्रयोदशांग गुगळ—बब्बुलकी पत्ती, असगंध हाउबेर (हपुषा-गु पळाशबी) गिलोय, गोखरु, रास्ना, सारिवा, कचूरा, अजवायन, सोंठ प्रत्येक एक एक तोला शतावरी दो तोला, और सबके बराबर शुद्ध गुगळ और गायका घी तो १० पानीसे मिलाय सब साथ कूटकर पानी सेदो दो रत्तीकी गोली बनाना । मात्रा ४से६ गोली पानी या दूधके साथ देना । घुटनका वा, हाथ या पांवका वा, मज्जा, स्नायु और अस्थि का वा, गृध्रसी वा, अच्छा होता है । तेल वगेरह मालिस करना ।

जिव्हास्तंभ— जीभ तुतलानी-अटकना

कारण—वाणीको वहन करनेवाली शिराओमें वायुका प्रकोप होनेसे जीभको अटकाकर मनुष्य बोलनेमें तुतलाता है जब बोलनेमें तकलीफ होती है । कई बार यह रोग बढनेसे वाणीको अटकायत के साथ खानापीना भी रुक जाता है । कइ बार मनुष्य बिलकुल बोल नही सकता । रोगी सुन सकता है लेकिन वाणी बंध हो जाती है ।

अर्कपुष्प प्रयोग—आकके फूलका बीचका भाग रविवारके दिन एक खाना दूसरे दिन दो इस प्रकार चढते चढते तीशवे दिन को तीश फूल खाना और पीछे क्रमसे उतरना । जैसे कि ३१ वे दिन ३० फूल इस प्रकार अंतिम दिनमें एक खाकर बंध करना । इस प्रकार दो या तीन मास प्रयोग करनेसे जीभ छूट जाती है । पथ्यमे खट्टा पदार्थ और नमक बंध करना ।

जिव्हास्तम्भहर मिश्रण—वातविध्वंस तो १, सुधापिष्टि तो. ०।, स्वर्ण वसंतमालती तो. ॥, पुनर्नवा गुगल तो २, सर्वेश्वर पर्पटी तो ०॥ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना । प्रात सायं दो वख्त गायके घी के साथ या कल्याण घृत से या दूधके साथ देना ।

कटिग्रह—टचकियुं—कमर झकड जाना

कारण—भार वहन करनेसे हुन्न चलनके समय पग ऊंचा नीचा खड्डामें पड जानेसे हद से ज्यादा काम करनेसे कमर वातका प्रकोप होकर झकड जाती है। महानारायण तेल मालीस करके शेक करना। त्रयोदशांग गुगळ खिलाना प्रसारणी तेल मालिश करना, । पिलाना नाकमे डालना।

छोटे प्रयोग:—

१ बलबीज शे. ३, बावची, छोटी शेर १, गुड शे १ घी शे ? सबको मिलाकर रखना। हमेशां १० तोला, खाना। एक माष खानेसे कमरका दर्द मिटे,

२. चुरवाली सोंठ शे ०॥ एरंड तेल ता, १ दूधमें खीर पकाकर २१ दिन खाना। दुखती कमर मिटे

३ काली तिल, इसपघ, अजमायन, बलबीज, समभाग, कूट हमेशां तो, ४ खिलाना। कमरका दर्द छुटे.

४. खजूर तो ५, सोंठ तो २॥, दोनों पीस कर गोली तो. १ की खिलाना। कमरका दर्द मिटे।

५ खजूर तो. १॥, घी तो १॥, तीन दिवस खिलाना। कमरका दरद मिटे.

मन्यास्तंभ

ग्रीवा—डोक—झकडाना—मन्यास्तंभ कारण—दिनमें निद्रा करनेसे, ऊंचे देखनेकी बहुत आदतसे, ग्रीवा टेढी रखनेसे अथवा ऐसे कई कारणोंसे कुपित वात कफ संयुक्त होकर ग्रीवाके पिछले भागमें होनेवाली १४ शिराओंको झकड देते हैं।

१, दशमूल क्वाथ पाना। महानारायण तेल मालीश करके उपर तेल लगाये आकके या एरंडाके गरम किये हुवे पत्ते बांध कर शेक करना। कुक्कुटके अंडेके रसमें गायका घी और सैंधानोन मिलाय मालीश करना।

मन्यास्तंभादि मिश्रण २, महायोगराज गुगळ तो, ०१, लघुयोगराज गुगळ तो, २, वात राक्षस तो. ०॥, सर्वेश्वर पर्पटी तो ०॥ सब साथ मिलाके समभाग १४ पुडी बनाके गायके घीमें दो दफे चटाना। पथ्यमे खट्टा पदार्थ नहि लेना।

हनुग्रह

ठोठो (डाढी) अकड जाना, नीचे उतरना कारण—जंभमे ओल उतारते समय सूके पदार्थ खावे समय या किसी चीज लगनेसे डाढोंमे रहा हुआ वायु बिगड डाढोको नीचे उतार देता है। तब या तो मुख खुला हुवा रह जाता है। या बंध रह जाता है। उसको हनूमह कहते हैं।

यदि डाढी खुली रह गई हो तो प्रथम घी या तेलसे मालिश करके चाफ दे कर नमाना-ठीक तरहसे चढा देना। पीपल और अदरख चबा कर गरम पानीसे कुगला करना। लशुनको तेलमे पकाकर खिलाना। उड्दकी दालको भिगो कर पीस कर उसमें लशुन हिंग नमक अदरख डालकर अदाजा एक एक तोलाकी वडी बनाकर उसको तिलके तेलमे पकाकर खोराकके साथ चार बखत खाना महा-नारायण तेल मालीस करना।

पक्षाघात

कारण—दिमागमें खून चढनेसे, दिमागके ज्ञानतंतु कमजोर होनेसे, अपस्मार, हिस्टीरिया, आंचको (आक्षेप), मूत्रपिंडके रोग आदि के कारण, वृद्धवस्था से, किसी अकस्मातसे, अत्यंत हर्ष और दुःख होने से, अतिविषय सेवनसे, यह रोग होता है।

चिन्ह—बांइ या दाहिनी बाजुका आधा शरीर मस्तक से लेकर आंख नाक मुख हाथ कमर और पाव तक शरीरके एक भागमें स्पर्शज्ञान कम होते होते बिल्कुल झूठा पड जाता है। यह रोग कभी धीरे धीरे हो कर बढता है और कभी एकदम एक साथ आक्रमण करता है। इस रोगके धीमे आक्रमणमें पहिले थोडा थोडा दर्द होता है और पीछे उस ओर के प्रत्येक अंगमे स्पर्शज्ञान कम होने लगता है। और नीरोगी आधा अंगकी अपेक्षा आधा दर्दवाला अंग स्पर्शमें ठंडा लगता है। और उस अंगकी स्वाभाविक उष्णताकम होने आधा लगती है। रोगवाला अंगका गाल ढोला लगता है। आंख कुछ तिरछी होती है। मुखका कोना नीचा दीखता है। उस भागके मुख के कोनेसे थूक और लार गिरती है। उस ओरका होठ खुला रहता हैं। जीभ कुछ टेढी होती है। उस बाजुकी जीभमें स्वाद कम लगता है। ओखके उपरका ढक्कन-पापचु (Lid) आंखको बराबर ढकता नही। यह रोगका मुख्य चिन्ह हैं। बोलनेमे, हुशियारीमें स्मरण शक्तिमें तफावत हो जाता है,। दिमाग पर रोगका प्रभाव हुवा हो तो बोल सकता नहीं और बोबडा बोलता (Indi, Stinct, Speech.) है या बिल्कुल

सोख नहीं सकता। स्वभाव चीड़िया हो जाता है और अंतमें सारा आधा शरीर जड़ा होकर रोगी हलन चलन कर नहि सकता, बिछानावश हो जाता है।

पथ्या पथ्य—हलका खाना देना। दस्त दो वक्त साफ हो ऐसी दवा देना। पिशाब का खुलासा होना। रोगके मूल कारणकी जांच कर इसके अनुसार उपचार करना। वातरोगमें बताये हुए तेल सारे शरीरमें मर्दन करना सर्दीसे बचना गरिष्ठ पदार्थ, खट्टे पदार्थ और शक्करकी मीठाई, अजीर्ण करनेवाला खुराक, रुक्ष पदार्थ खाना नहि।

पक्षांगवीर रस—पारद, गंधक, रससिंदूर लोह भस्म, ताम्रभस्म अभ्रक भस्म, मागभस्म, प्रत्येक तो. ८, नीमका गोंद, बब्बूलका गोंद अलग धतूरा, सोंठ, पीपल, काली मिरच, अकलकरा, गोखरु, गिलोय, हिंगु, राय रास्ना, देवदार, कौंचा,(किवाच), बोलीगूलकी छाल, अरणीके फूल, प्रत्येक तो ४, गुगल तो, ४०, शिलाजित, तो १०, सब साथ मिलाकर, सहजनाकी सींग ग्वारपाठा निर्गुंडी. चित्रक, अदरख, और भृंगराज, प्रत्येकको एक एक मनना देकर सुखाकर घोंट रखना अथवा रत्ती प्रमाण गोली बनाना। मात्रा २ से ३ गोली पीसकर गायके घी के साथ अथवा उंटनीके घी के साथ देकर उपर दूध अथवा महारास्नादि क्वाथ पिलाना। उपर लिखे चिन्हवाले, पक्षघातमें और न्यग्रशमके रोगमें और दूसरे वातव्याधिमें दिये औषधे सेवन करनेसे आराम होता है। रोगके अनुसार विशेष समय तक औषध सेवन करना चाहिये।

पक्षाघातारि रस—पारद, गंधक, रससिंदूर शुक्तिभस्म प्रत्येक तो ८, सावरशिंग भस्म तो ५ दशमूल, निर्गोथ. किवांच (कौंचा) सोंठ, वायविडंग, कालीमिरच पीपलमूल, नागरमोथ, जटामांसी, देवदार, सर्पगंधा, वरुण रास्ना पुष्करमूल, त्रिफला, (त्रिफकत) की छाल, तज, लौंग, वच, अर्कस, सैंधानोन, कुलिंजन प्रत्येक तोला दो दो लेकर महारास्नादि क्वाथ की और वायवरणकी और भांगरा की एक एक भावना देकर रत्ती प्रमाण, गोली बनाना। दो से चार गोली दूध या घी के साथ देना। उपर महारास्नादि क्वाथ पिलाना।

वाहुशोष — अपवाहुक

कारण—कांध (Shoulders) में कुपित वायु कांधके बंधनरूप स्नायुओंको सूखा देता है यह वाहुशोष है और बाहु (Erm) में रही हुई शिराओंको कुपित वायु संकोच कर देता है जब हाथका चलना हो कर

छोटा-टूंका और पतला हो जाता है उसको अपबाहुक कहते हैं। दोनों के लिये पथ्यापथ्य और चिकित्सा वातरोगमें बताइ हुइ करना।

बाहुशोष हर मिश्रण—सर्वेश्वर पर्पटी तो ०॥, सुवर्ण पर्पटी तो ०॥, वातगजांकुश तो. १, बृहत वात-चिंतामणी तो ०॥, अष्टवर्ग तो ३ सब साथ मिलाकर घोटकर ६४ पुडी बनाना। दिनमे दो वक्त कटकारी अवलेह के साथ देना।

बाहुशोषहर क्वाथ—जटामांसी, रास्ना, शिवलिंगी, बडी कटेरीका फल, छोटी पीपल, मयूरशिखा पपरीमूल असगंध अनीस प्रत्येक तोला दो दो, दंती क्षुप तो. १० अष्टवर्ग आठ द्रव्य मिलाकर तो १६ सब साथ कूट कर मिलाना। इनेसों १ तोलाका क्वाथ बना कर पिलाना।

बाहुशोषहर मिश्र तैल—महानारायण तेल, महालाक्षादि तेल, भृंगराज तैल, महामाषादि तैल समान भाग ले कर मिश्र करना। इस तैलसे दिनमें दो या तीन दफे मालीस करना। और १ से २ छोटो चम्मच पिलाना।

शिरोग्रह—मस्तक झकड जाना

कारण—मस्तकको धारण करनेवाली ग्रीवामें रही हुइ शिराओंके खूनमें घुसा हुआ वायु शिराओंको जड बना देता है। तब वे शिरायें सजड और रूक्ष बनती हैं। पीडा होती हैं और कभी वे शिरायें फूलकर काला रंगकी दिखायी देती है। ओर धीरे धीरे मस्तकको इधर उधर घुमाना बंध हो जाता है।

उपचार—महानाराय तैल, षड्बिंदु तैल, और अणुतैल की शिरोबस्ति देना, नास्य और कानमें डालना और मालीस करना।

शिरोग्रह हर मिश्रण—वातविध्वंस रस तो १, महायोगराज तो. १, लघुयोगराज तो १, ताम्र पर्पटी तो. ०॥, आरोग्यवर्धनी तो १, सब साथ मिलाकर ६४ डो बनाना। एक सुबह एक शामको दूध शहद घृत या पानीके साथ देना। और कल्याण घृत ४ तोला प्रतिदिन खिलाना।

शिरोग्रह [illegible] असगंध [illegible]तारी कंद दशमूल, जटामांसी, मेढाशिंगी, वायविडंग, [illegible] [illegible], नीमकी छाल, देवदार, प्रत्येक दो दो तोला और पुनर्नवा मूल तोला [illegible], सब साथ कूट एक तोलाका क्वाथ पिलाना।

रसाज्ञान—स्वादका अज्ञान

कारण—दीर्घकालकी बीमारीके कारण, मूर्छा अथवा विशेष बीमारीके कारण यक्ष्मा आदि रोगके कारण यह रोग होता है तब मनुष्यको नमकीन और खट्टा, कडुआ, मधुर, आदि स्वाद जिससे नहीं लगता यह भी बात रोगका एक भेद है।

रसाज्ञानहर प्रयोग—ब्राह्मी, ढाकका फल, कलौंजी जीरा कुटकी, चिरायता, इन्द्रजौ पीपल, पीपरी मूल, सोंठ, कालीमिर्च समभाग कूट कर जीभ पर दतौनसे-बबुलके अथवा मौलसीरीके अथवा बडवाइके दतौनका अग्रभाग पीछी जैसा बनाकर उससे यह जीभ पर घीसना। बृहद् वात चिंतामणी १ से २ रती कल्याण घृतके साथ खिलाना। सर्वेश्वर पर्पटी २ से ३ रती च्यवनप्राश अथवा अश्वगंधादि अवलेह के साथ देना। तिलका तैल या सरसोका या महानारायण तेल मुखमें १० से १५ मिनिट तक रख कर कुल्ला करना। पुनर्नवा का पंचांग १ तोलाका क्वाथ कर पिलाना। महारास्नादि क्वाथ पिलाना।

गृध्रसी वात (साइटिका)

कारण—पहिले कुलामें (Buttock) से पीडा होकर पीछे कम्मर साथळ (Thighs) घुटन, पिंडी और पांव तक पीडा होती है जलन होता है। अंग झकड जाते हैं। यह गृध्रसी अकेले वायुके प्रकोपसे हुइ हो तो पीडा और दाह होता है, शरीर वक्र (बांका) हो जाता है। घुटन, कमर और साथलके सांधाओ फरकते हैं और झकड जाते हैं। यदि वातकफके प्रकोपसे गृध्रसी हुइ हो तो शरीर वजनदार भारी लगता है, भूख कम होती है। ग्लानि सुस्ती, मुखसे चीकनी लारका पडना, अन्न पर अरुचि आदि चिह्न मालुम होते हैं। इस रोगमें तैलका मालीस करना। महानारायण तैल पिलाना। महारास्नादि क्वाथ पिलाना।

गृध्रसी वात हर मिश्रण—मुक्ता पिष्टि तो ०॥, सुवर्ण भस्म तो. ०॥, रत्नभागोत्तर रस तो ०।, चिंतामणि चतुर्मुख तो ०॥, सुधा पर्पटी तो १ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना। एक सुबह एक शामको ब्राह्मीघृत अथवा कल्याण घृतके साथ देना।

खग्नि देवता वटी—पारद, गंधक लोह भस्म प्रत्येक तो ८, एरंडमूल, चीलीमूल, छोटी कटहरीका फल. रास्ना, गुगल, शेषगुंदर, राल, अमलतास, गोखरु,

हरड, सोंठ, पीपळ, काली मिर्च, पलाशबीज, गिलोय विधायरा, समुद्र फल, कायफल, प्रत्येक तो. १, अफीमका तेल तो. १० का करना दे कर दवाईका चूर्ण, अरणिका रस और पुनर्नवा के पंचांगका क्वाथ या रसकी एक एक भावना देकर गोळा बनाकर अफीका पत्ता लपेट कर धान्यकी कोठीमे तीन दिन तक दूबा देना। पीछे निकाल कर पुष्कर मूलके क्वाथमे घोट कर गोली चना प्रमाण बनाना। ३ से ४ गोली पानी या दूध के साथ देना। वातरोगमे बताये हुए तेलका मालीस करना। सर्वांग वात, अपबाहुक, शिरोग्रह, कानदोष, कटिग्रह आदि वातरोगमे गुणकारी है।

लकवो सुप्तवात

कारण—मनुष्यको त्वचामे स्पर्शका ज्ञान स्वभाविक है वह ज्ञान शरीरके विशेष अंगमेंसे कम हो या बिलकुल न हो उसको लकवा कहते है अगर वह अंग वातप्रकोपसे रह गया है ऐसा कहते हैं। जिस अंगका स्पर्श ज्ञान नष्ट हुआ हो उसको रोगी अपनी इच्छामे हलन चलन नहीं करसक्ता। इस रोगमें नस खुलाकर रक्त निकलवाना। तेल मालीष कराना। धूप देना। आक अंडो अडुसा, अरणि ईन्के पान पनोमें पीसकर तेल मिला कर लेप कर, उपर सेक करना। त्रयोदशांग गुगळ, महायोगराज गुगळ वात विध्वंस, सर्वेश्वर पर्पटी, सिंहनाद गुगळ पुनर्नवा गुगळ इत्यादि उचित मात्रामे कल्याण घृतके साथ देना।

सुप्तवातादि तैल—सफेद कनेरका मूल, सफेद गुंजा, धतुराका पान, प्रत्येक दश दश तोला लेकर पीस कर टिकीया बनाना। पीछे तिलका तैल रतल २ में वह टकिया पूरीकी तरह तलना। टकिया एकदम लाल कडक हो जाय जब तेलको नीचे उतारकर स्वांग शीत होने देना। दूसरे दीन कपडछान कर मालिस करनेमे उपयोग करना।

लशून योग—एक कलीका लशून लेना जिस लशूनकी गांठमें दूसरी कली न हो। ऐसा लशून तो. ८ लेकर मेंदा जैसा महीन करना। पीछे गेहुंका आटा तो. २० डाल कर उसमें लशूनका मेंदा मिला कर पांच तोला गायका घी मिलाकर उसकी तोला तोलाकी टीकीया करना। पीछे उस टीकियाको पूरीकी नाई घीमें तलना। पक जानेसे वह टीकिया दूधके साथ खाना और तलने के पीछे बचा हुवा घी भी खाना। इसके उपर दूसरा कुछ भी खुराक नही लेना। पानी गरम कर के पीछे ठंडा बना कर पिलाना। रोगीको बंध कोठरीमे रखना। बिछानामें सुलाना। उसके

शरीर पर पवन आने न देना। उस कोठरीमें ही दस्त पिशाबकी व्यवस्था करना। इस प्रकार ७ दिन तक हमेशां पांच पांच तोला लशुनकी डली खिलानेसे लकवा मिटता है। यदि रोगीको गरमी मालूम हो तो लशुनकी डली ४ तोला, ३ तो. या २ तोला हमेशां खिलाना और घीका खुराक रखना। यदि लशुनका प्रमाण कम किया हो तो ७ दिनकी अपेक्षा १४ या २१ दिन तक खिलाना। इस प्रकार एक कलीका लशुन ४० से ५० तोला खिलाने से लकवाका रोग मिटता है।

संधिवात

कारण—मंदाग्निवालोंको, खाखा करनेकी आदत वालोंको, अपनी प्रकृति विरुद्ध अथवा तो विरुद्ध हानिकारक गुणधर्म वाले आहार विहार करनेवालोंको, स्निग्ध पदार्थ खा कर शारीरिक परिश्रम नहीं करनेवालोंको, अधिक खट्टे अधिक रूक्ष, पदार्थो और अधिक मिष्ठान्न पर प्रीति वालोंको अथवा अपक्व कच्चा रस धमनी नसोंके द्वारा संधिवातका दर्द उत्पन्न करता है। इससे सांधोंमें पीडा दर्द, छातीमें भारीपन, मंदाग्नि सारा बदन जकड जाना, आदि चिह्न होते हैं। बुखार आता है, शरीरमें स्पर्शज्ञान दर्दके भागमें अगर कईयोंको शरीरके दूसरे अंगोंमें कम मालूम होता है। उपदंश, चांदी, गरमीके रोगियोंको भी यह दर्द होता है।

पथ्यापथ्य—शुरुमें दो तीन दिन लंघन करना। उस जगह पर नीमके पत्ते निगुंडी एरंडके पत्ते पानीमें पकाकर उसकी भाफ देना। तीखे, कडवे पदार्थ खिलाना। जुलाब देना। बाजरी, चना, जव, पुराना चावल, कुलथी, बटाणा-मटर, उडद मुंग, करेला, कटोला, मेथीदाना, मेथीकी भाजी, बेंगण, परवल आदि फायदाकारक हैं।

सन्धिवातारि रस—पारद तो १०, गंधक तो, २०, शुद्ध वत्सनाभ तो. ४, सोहागा तो ६ गुड तो ५ काली मिरच तो ३ गुगल तो १२, पाढा, जवाखार, विधायरा—वृद्धदारक, सोंठ गोरखमुंडी, रास्ना, कलौंजीजीरा, मरवा-मदनक, निसोथ, तुलसीके बीज, सेंधानोन, हलीम (गु. अशेळियानां बी) भांयवरणा, त्रिफळा, एलिया प्रत्येक तो ३, सब साथ मिलाकर एरंडतेल तो. १० मिला देना और पीछे बडी हरडके क्वाथकी और अजमोदके क्वाथकी एकएक भावना दे कर सुखाकर घोटकर रखना। मात्रा १ से ६ रती गायके घी के साथ अथवा कल्याण घृतके साथ देनेसे उदावर्त वायु (गेस चढना), मंदाग्नि, गुल्म, अम्लपित्त, दस्तकी कब्जी और सब प्रकारके संधिवात रोग मिटते हैं।

रोगका स्वरुप देखकर औषधकी मात्रा न्यून या अधिक करना। शरीर पर महानारायण तैल अथवा खोपराका तेल मालीश करना। बच्चोंके बाल लकवामें भी यह फायदा करता है।

संधिवात हर मिश्रण—सर्वेश्वर पर्पटी तो. १, वातचिंतामणि बृहत् तो ०॥, महायोगराज गुग्गळ तो १, कलौंजी जीरा तो. ३, अतीस तो १, सब साथ पीस घोट कर ६४ पुडी बनाना। एक सुबह एक शामको घीके साथ अथवा कल्याण घृतके साथ देना।

संधिवातहर चूर्ण—पुनर्नवा मूल तो. तो. १०, कलौंजी जीरा तो. ५, हरड, सोंठ, काली मिरच, अतीस लताकरंजके बीज, शिवलिंगी, सेंधानोन, वायविडंग, आकके सूखे फूल, प्रत्येक तीन तीन तोला सब साथ मिलाकर कूट कपडछान कर रखना। २ से ४ माशा पानी या बकरीके दूधसे या ऊटनी के दूधसे देना।

संधिग्रह-सांधोंका झकडजाना

—पकडा जाना।

कारण—अति विषय सेवनसे, पटक जानेसे खटटे पदार्थ बहुत खानेसे, उपदंश के दरदसे यह रोग होता है। सारा शरीर अथवा शरीरका अमुक विशेष अंगके सांधा-संधि झकड जाती है। तब मनुष्य मुश्केलीसे चल सकता है। अथवा बिछानावश हो जाता है।

संधिग्रहारि खीर—असगंध तो. ०॥, सफेद मुशली तो. १, पीपरी मूल तो ०।, सब साथ मिलाकर दूध रतल १॥ में डालकर पकाना। अच्छी तरेह पक जानेसे उसमे घी तो. १।, और शक्कर तो. २॥ डालकर मिलाकर खा जाना। १४ दिन तक खिलानेसे संधिग्रह संधि वात, अन्य कइ प्रकारके वातरोग में लाभ होता है।

संधिग्रहारि तैल—हरी शतावरीका रस तो. ६४ यह न मिले तो शतावरी तो २० को पानीमें पीस कर उसमें गायका अथवा बकरीका दूध तो. ६४ डालकर सौंफ, देवदार, मरवा, हलीम वच चंदन, तगर, कुष्ठ, इलायची, मालकांगनी प्रत्येक तो. ०॥, सबको, कूट डालकर, सब मिलाकर तिलका तेल तो. १२८ डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय तब कपड छान कर रखना। इस तेलका मालीश करनेसे और ४ से ८ माशा दूधके साथ पिलानेसे संधिग्रह, संधिवात,

किसी अंगका बेडौल-विकृत होना, झकडाना, स्पर्शका अज्ञान इत्यादि वातरोगमें अच्छा फायदा करता है। बालकवा (Polio) वाले बच्चोंको मालीसके साथ छोटी एक चम्मच पिलाया जाता है।

उपदंश रोगमें बतायी हुई केशरादि या कस्तूर्यादि गोळी २ से ४ प्रातः काल घी या दूधके साथ निगल जाना। उपर दूध पीना। नमक, लाल मिरच खट्टा पदार्थ २१ दिन तक बन्द करना। सधिमहु वगेरे व्याधि नष्ट होते है।

मालकांगनी का तैल बावचीका तैल नीमके बीजका तैल महामाषादि तैल, महानाराय तैल सब समान ले कर मिलाकर मालीस करना और १ से २ छोटी चम्मच दूधके साथ पिलाना। तो सब प्रकारके वातरोग नष्ट होते हैं।

धनुर्वात—धनुर्वा

इस रोगमें सारा शरीर धनुष्यकी तरह अथवा कमानकी तरह बांका हो जाता है। ठंडी भेजवाली जमीनपर सोनेसे, हाथ या पांव काटनेसे या उसपर घाव लगनेसे, शरीरपर किसी वस्तुका आघात होनेसे, हथेली या पांवकी एडीमें तीक्ष्ण हथियार घुस जानेसे, खट्टी खट्टी चीजें खाने पीनेसे खींच, ताण, कमानकी तरह होती है। ताप-बुखार सखत आनेसे या तापमें सन्निपात हो जानेसे धनुर्वा होता है। कभी हृदयकी ओर अंदरसे कमान जैसी खींच होती है। कभी पीठ-पृष्ठ भागके और कमान जैसी खींच जाती है। इस वख्त निद्राकी दवाइ देना। रोगीको चेनमें रखकर स्नायु शिथिल करनेकी जरूरत रहती है, अन्यथा रोगी मृत्युवश होता है। आक्षेपक-आचकीमें स्नायु बार बार खींचाता है और ढीला पडता है लेकीन धनुर्वामें वह बहुत करके खींचा हुवा कमानकी तरह बहुत समय तक रहता है। अर्थात् इस रोगमें स्नायु संपूर्ण रूपमें ढीले नहीं पडते। और रोगी धनुष-कामठाकी तरह बहार या अंदरके भागमें खींचा जाता है। अब आचकी आक्षेपमें जडबां (Jaws) का स्नायु खींचाकर आरंभ होता है और पीछे गर्दनके स्नायु भी खींचाता हैं अब सारे शरीरमें पसीना लगता है रोगी बोल सकता नहीं। गलेके नीचे पानी भी उतरना कठिन होता है। छाती भींसाती है। पेटका स्नायु लकडी जैसा कठीन हो जाता है। तृषा बहुत लगती है। दांत बंध होता हैं, अंतमें श्वास रुककर रोगी मर जाता है।

पथ्यापथ्य और उपचार—रोगीको स्वच्छ हवावाले स्थानमें रखना। प्रकाश कम हो, ज्यादा आवाज होने न देना। इच्छभेदी या महानाराच या

अश्वचोलीका जुलाब देना। गेहूं या बाजरीके आटाको गुड डाल कर बनयी राब पिलाना। मुंग या ऊडद खडा पकाकर उसके पानीमें अदरखका रस और लशुनका डालकर पिलाना। तीव्र मद्य अथवा मृतसजीवनी सुरा अथवा कस्तूरी अंबर देना। मुखसे दवा वगरेह न जा सके तो गुदामें पिचकारी (एनीमा) के द्वारा दवा और दूध आदि डालना। निद्राकी दवाइ देना। त्वचामें मृतसजीवनी सुराका इन्जेक्शन देना। मस्तकके तालुवेके भागमें बाल निकालकर अस्तासे छेका देकर खून निकले जब हिरण्यगर्भ, संनिपात भैरव, रोमवेध. सूचिकाभरण ८ से १० रत्ती होही निकला हो उस जगह घीसना और उस दवाइमेंसे कोइ दवाई तुलसीके रसके साथ पिलाना। सूचिकाभरण या सन्निपात भैरव आंखोमें आंजना, नाकमें सुंघाना। महा नारायण तैल या तिलका तेल सारे बदन पर अच्छी तरह मर्दन करना और दो चार तोला महानारायण तेल एक एक घटाके पीछे पिलाना या पिचकारी से गुदाके द्वारा चढाना।

धनुर्वात हर मिश्रण—संगधा तो २, अष्टामृत पर्पटी तो १, ताम्र भस्म तो ०१, वातचिंतामणि बृहत् तो. ०॥, चिंतामणि चतुर्मुख तो. ०॥, सब साथ मिलाकर १४ पुडी बनाना। और पाव पाव घंटाके पीछे एक एक पुडी पुनर्नवादि क्वाथके साथ देना।

पुनर्नवादि क्वाथ—पुनर्नवा मूल तो २०. हलदी, अश्वगंध अरणिमूल, गोरखमुंडी घटमासी मयूरशिखा प्रत्येक तोला पांच पांच, लेकर कूटकर रखना और पाच तोला भूक्कामे तीन रतल पानी डाल कर पकाना। आधा रहने पर कपडछान कर पाव पाव घटाके पीछे दश दश तोला प्रवाही किसी औषधके साथ या अकेला पिलाते रहना

धनुर्वातांतक रस—शुद्ध गधक तो. ३, शुद्ध पारद तो ३ दोनोकी कज्जली कर उसमें संचळ लोन तो ३ डालकर घोटना। पीछे उसमें सोहागा तो. ३ मिलाना। पीछे उसमे लोंग तो ४, जायफळ तो. ५, कालीमिरच्च तो ५, अक्कलकरा तो ९ शुद्ध वछनाग तो ९ कनकबीज तो ९ छोटी पीपल, तो १० सब साथ मिलाकर केरडां-करीरके मूलके रस या क्वाथकी तीन भावना, और अदरख की ७ भावना, और निंबूके रसकी ७ भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना या चोट का भूका रखना। रोगीकी स्थिति देखकर २ से १५ रती तक किसी क्वाथ अथवा किसी आसव या मद्यके साथ देना। पाव या आधा घटा पीछे देते रहना। धनुर्वात, आचकी, दांत दोढमे चढ जाना, जडवा बंध जाना इत्यादि में उत्तम गुण करता है।

धनुर्वातादि वज्र रस—पारद गंधक, सामरसिंग भस्म प्रत्येक तो. ८, सौंठ, पीपल, कालीमिर्च, चित्रक हिंग, अजमोद कुटकि, अतीस, भीलावों, सोहागा, शुद्ध बछनाग पुनर्नवा, दन्तीमूल, प्रत्येक तो ३, गुगळ तो. १०, सब साथ कूट कपडछान कर उसमें एरंड तेल तो १० का पट देना। और पीछे असगंधके क्वाथकी दो और भागराके रस की दो भावना देकर घोंट कर रखना। मात्रा २ से ६ रत्ती। धनुर्वा, आंचकी, आक्षेप, संधिवा, सधिग्रह और दूसरे वातरोगमें उत्तम गुणकारी है।

आक्षेप—आंचकी—ताण—खेंच

कारण चिन्ह—अपस्मार, मृगी, हीस्टीरीया, धनुर्वा हडकवा, (हाइड्रोफोबिया), सूतिका रोग इत्यादिमे तथा कोंसी स्थानमें जखम घाव होनेसे, बहुत खून गिरनेसे, मस्तककी खोपरी तूटने से मगजमें रक्तस्त्राव होनेसे, विष खानेसे, आंतों में कृमि विकार होनेसे, बहुत खट्टी चीज खानेसे, बुखारके जोरसे इत्यादि अनेक कारणोंसे यह रोग होता है। जब सारा शरीर अथवा हाथ पांव खींचता है। मुख और चहेरा लाल होजाता है। दांत जकड जाते है। जीभ बहार निकल जाती है। श्वासका रुंधन होता है।

पथ्यापथ्य—रोगीको खुल्ली हवा वाले कमरेमें सुलाना। पंखे से हवा डालना। मुखपर ठंडा पानी छिडकना। जुलाब देना अथवा गुदाके द्वारा पिचकारीसे जुलाब देना। मस्तक पर ठंडे पानीके पोते रखना। द्राक्षासव या अन्य मद्य पिलाना। निद्राकी दवाइ देना। तिलका तेल अथवा खोपराका तेल अथवा अथवा महानाराय तेल अथवा कल्याण घृत सारे बदनमें मालीस करना और पिलाना। प्याजका रस और लशुनका रस दो दो तीन तीन तोला पिलाना।

आक्षेपहर मिश्रण—प्रवाल पिष्टि तो २. मुक्तापिष्टि तो. ०॥, सुवर्ण पर्पटी तो. १, सन्निपात भैरव तो ०॥, अभ्रक भस्म तो १. छोटी पीपल तो. २, सब मिलाकर १४ पुडी बनाना। और प्रत्येक आधा आधा घटाके पीछे एक एक पुडी प्याजके रससे अथवा तुलसीके रससे शहद मिलाकर देना और आक्षेपका समय घटनेसे मात्राका समय भी बढाना। शरीर पर महानारायण तैलमें समान भागमे अलसीका तैल मिलाकर सारे बदनमें मालीस करना।

वातभास्कर रस—अभ्रक भस्म, सुवर्ण भस्म, अथवा सुवर्ण माक्षिक भस्म, पारद, गंधक, ताम्र भस्म, रौप्य भस्म, अफीम, सोहागा, सैंधानोन, पापड

खार, प्रत्येक तोला २ असगंध, लौंग, तज, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल कलौंजी, केसर प्रत्येक तोला तीन तीन, शिलाजित तो ६, गुगल तो ८, सब साथ कूट कपडछान कर, असगंध, निर्गुंडी, बलापंचांग, अरणि पंचांग और कवारपाठा प्रत्येकका रस या क्वाथको एक एक भावना देकर सूखाकर घोटकर रखना या रत्ती प्रमाण गोली बनाना। मात्रा ३ से ६ गोली अदरख के रस और तुलसीके रससे देना। अक्षेप, धनुर्वा, स्नायुवात, और दूसरे वातरोगमें उत्तम गुण करता है। धनुर्वा आक्षेपमें घोटकर आंखमें अंजन करना। पानीमें पीसकर गरमकर ललाटमें लगाना और गोलीको पीसकर नाकमें नस्य देना। अक्षेप-जाण-सूतिकाका आक्षेप, आंचकं, धनुर्वा, पक्षाघात, ऊरुस्तंभ, मूर्च्छा, उदावर्त वायु, सधिवा नअला हिस्टीरिया ओरतोंके स्मरोन्माद इत्यादि वातरोगमें उत्तम गुणकारी है।

आमवात

कारण—खानपान, रहन सहनकी अव्यवस्था, भूख हमेशा मंद रहनेसे, चिकने पदार्थ घीवाले पदार्थ ज्यादा खानेसे, शारीरिक परिश्रमका काम नहीं करनेसे, वायुने खींचा हुआ आम कफस्थानमें जाकर वह विना परिपक्व हुये, अन्नसे उत्पन्न हुये रस कि, जिसका खून बनना है वह वात पित्त कफसे विकृत होकर धमनियों द्वारा स्रोतोंके-प्रवाहों को बिगाड़ता है। और रसको वहन करनेवाली शिराओं को रोक देता है। वह विविध रंगवाला बहुत चिकना होता है। इस कारण अन्नरसका खून बनता नहीं है। इस कारण भूख कम लगती है और हृदय पर बोझ होता है। शरीरके अवयवोंमे पीडा होती है। वायु और कफ एक साथ इस रोगमे कुपित होता है। पीठ और सांधोंमे घुस कर उन्हे जकड़ देता है और दर्द करता है।

चिन्ह—अंगमर्द अरुचि, तृषा, जमाइ, सुस्ती, शरीर कृश होते हुवे भी वजनदार लगे, भिन्न अवयवोंमें सूजन, हाथ, पांव, मस्तक पृष्ठ कम्मर, घुटन, कुला, मायल, सांधा आदिमें पीडाकारी सूजन हो। जिस भागमें ज्यादा विकार हो वहां ज्यादा पीडा होती है। सूइयां भोंकने जैसी या बिछु काटने जैसी पीडा होती है। उत्क्लेद, वमन, लार पडना, किसी काममे उत्साह न रहना उदासीनता दाह आदि होते है। पिशाब ज्यादा होता है। पेट कठिन रहे, पेटमे दर्द हो, निद्रा अनियमित तृषा लगे। वमन चक्कर, ग्लानि, हृदय जकड़ना हृदय पर बोझ, दस्त कब्ज और दस्तके साथ आम और चीकने पदार्थ पडना, आंतोंमे पवन भरना, आध्मान, गेस चढना, आदि उपद्रव होता है। पित्तका प्रकोप ज्यादा हो

तो दाह और शरीरमें लालाश दीखे, वायु अधिक हो तो दर्द और शूल निकले, कफ अधिक हो तो शरीरमें जड़ता खुजली हो और सारे शरीरमे हरवख्त सूजन उत्पन्न होवे और मिटे। यह रोग कष्टसाध्य है।

पथ्यापथ्य—सहन कर सके इतना हर वख्त उपवास कराना। खुराक दिनमें एक दफे लेना। बाजरी, चना, मुग, जव उड़द करेला ककोड़ा, दूधी, तुरीया वालोल, परवळ आदि शाक, हिंग जीरा, धनिया, लशुन अदरख, सोंठ काली मिरच, लाल मिरच आदि हितकारक है।

रसोन वटक—लशुन रतल १० और काला तिल रतल १० दोनोंको गायकी खट्टी छासमे पीसना। पीछे उसमें सोंठ, पीपल, धनिया, चवक, चित्रक गजपीपळ, अजमोद, तज इलायची, पीपलीमूल, प्रत्येक तो ४, शक्कर तो. ३२, कालीमिरच तो ८, कुष्ठ, जीरा और अदरख प्रत्येकतो १६, घी तो ३२, तिलका तेल तो. ३२, सफेद सरसों तो १६, राय तो. १६, शुद्ध हिंग तो. १, पंच लवण तो. ५ सबको मिलाकर उसमें शहद तो. १६ मिलाकर उसमे खट्टी छाछ अथवा सुरका मिलाकर पिंड करके हंडीमें भर हंडीका मुख बंध कर धान्यकी कोठीमें १२ दिन तक रखना। पीछे चार से आठ मासाकी वडी बनाना। दिनमें ४ से ८ वडी खिलाना। भूख लगे तब भोजन करना। इसके सेवनसे ८० प्रकारके वातरोग, बवासीर, गुल्म, आमवात, कुष्ठ, सूजन, योनिशूल मिटता है। हड्डी टूट गई हो वह जुड़ जाती है। शक्ति आती है। आमवातका यह उत्तम औषध है।

आमवातारि—पारद गंधक हरड चित्रक गुगळ प्रत्येक दश दश तोला लेकर कूटकर कपड़छान कर एरंड तेल तोला १० की भावना देना पीछे उसमे लोह अभ्रक शंख कोडी प्रत्येकको भस्म दश दश तोला और शुद्ध किया हुवा अफीम तो. १० साथ मिलाकर भांगके क्वाथकी अथवा पोस्तके डोडा के क्वाथकी भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना। सुबह और शाम दोनों समय ३ से ६ गोली पानीसे लेना आमवात और इसके सब उपद्रव अच्छे होते है।

आमवातेश्वर—पारद तो १, गंधक तो २, ताम्र भस्म तो. २, लोहभस्म तो. १ अभ्रक भस्म तो १, सोहागा तो १०, बाडलवण, कालीमिर्च, इमलीका क्षार प्रत्येक तो ५, सोंठ, पीपल हरड, बहेड़ा, आंवळा, लौंग, तज पीपलीमूल, अजमोद, जीरा, शाहजीरा दशमूल, प्रत्येक तो १ सब साथ घोट कपड़छान कर अमलतासकी छालके क्वाथकी और पंचकोलके क्वाथकी और गिलोयके क्वाथकी एक एक भावना देकर सूखाकर घोटकर रखना। मात्रा ४ से ८ रत्ती पानीके साथ देना। आमवातका रोग मिटता है।

आरोग्य वर्धिनी गुटिका—(रसरत्न समुच्चय) पारद, गंधक, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्रभस्म प्रत्येक तोला १, त्रिफला तीनों मीलाकर तो. १०, शिलाजित तो. १५, शुद्ध गुग्गळ तो २०, अने चित्रकमूल तो २०, और कुटकी (तिक्ता) तो. ७० सब साथ मिलाकर कपडछान कर नीमके पत्तेको महीन पीस कर उसमे पानी मिलाकर कपडछान किया हुवा रस निकाल कर दो दिन तक भावना देना पीछे ६ से ८ रतीकी गोली बनाना। यह गोली आमवाके लिये उत्तम गुणकारी है। इसका घोंट कर चूर्ण भी रखा जाता है। यह आमवात मेदवृद्धि, मंदाग्नि, जीर्णज्वर सन्धिवात, सर्वप्रकारके कुष्ठ रोग जलोदर, तिल्ली लीवर, यकृत रोग, दस्तकी कब्जी, मलावरोध आदिमें उत्तम गुणकारी है। खुराकको दीपन पाचन करती है और तीव्र भूख लगती है। वात पित्त और कफ दोषसे उत्पन्न हुये विविध प्रकारके ज्वरको नष्ट करती है। इसकी पूर्ण मात्रा १ दिनकी १ तोला तककी है।

इस गोलीके बारेमें स्पष्टता

रसरत्नसमुच्चय कुष्ठाधिकार अ. २० का पाठ इस प्रकार है।

रस गंधक लोहाभ्र शुल्ब भस्म समांशकम्।
त्रिफला द्विगुणा योज्या त्रिगुणं तु शिलाजतु ॥१॥
चतुर्गुणं पुरं शुद्धं चित्रमूलं च तत्समं।
तिक्ता सर्वसमा ज्ञेया सर्वं संचूर्ण्य यत्नतः॥
निम्बवृक्ष दलांभोभिर्मर्दयेद् द्विदिनावधि ॥२॥
ततश्च वटिका: कार्याः राजकोल फलोपमाः।
मंडल सेविता सैषा हन्ति कुष्ठान्यशेषतः ॥३॥
वात पित्त कफोद्भूतान्रोगान्नानाप्रकारजान्।
पाचनी दीपनी पथ्या हृद्या मेदोविनाशिनी ॥४॥
मलशुद्धिकरी नित्यं दुर्धर्षक्षुत्प्रवर्तिनी॥
बहुनात्र किमुक्तेन सर्वरोगेषु शस्यते ॥५॥
आरोग्य वर्धनी नाम्नी गुटिकेयं प्रकीर्तिता।
सर्वरोगप्रशमनी सिद्धनागार्जुनोदिता ॥६॥

इस गोलीका सच्चा शास्त्रोक्त और ग्रंथकारके हार्दका पाठ उपर लिखा हुवा ही है।

यह गोली राजकोलफल अर्थात् रत्ता अजमेरी बोर के वजनकी मापकी लिखा है इसका अर्थ १ तोलाका है अर्थात् एक दिनमें १ तोला इसकी मात्रा देने को ग्रंथकार लिखता हैं। तब उपर लिखे पाठके अनुसार बनाइ जाय तब हि एक दिनमें १ तोला मात्रा दी जा सकती हैं। और इस मात्रासे रस गंधक, लोह, अभ्रक, ताम्र प्रत्येक आधी रत्तीसे कम प्रमाणमें पेटमें जाता है। इस औषधमें मुख्य गुण त्रिफला शिलाजित गुगळ चित्रकमूल और कुटकी ईनका योग ही करता है। और ईन औषधोंको रस गंधक लोह अभ्रक और ताम्र योगवाही स्वरूपमें औषधका परिणाम देने वाले है। इन सब कारणोंसे यह सिद्ध होता है कि इस ओषधमे रस गंधक लोह अभ्रक और ताम्र पांच द्रव्योंसे द्विगुण त्रिफला लेना चाहिये। अर्थात् पांच द्रव्य एक एक तोला होनेसे त्रिफला १० तोळा, लेना चाहिये और इस प्रकार रस आदि पांचों द्रव्योंसे त्रिगुण अर्थात् १५ तोला शिलाजीत, और, पांचोद्रव्योंसे चतुर्गुण अर्थात् २० तोला शुद्ध गुगळ और पांचों द्रव्योंसे चतुर्गुण अर्थात् २० तोला चित्रक मूल और सबके समान अर्थात् बारह द्रव्योके समान ७८ तोला तिक्ता लेना चाहिये। इस प्रकार ही यह औषध बनाना उपयोगमें लेना उचित और शास्त्र संमत है।

कई वैद्य महाशय इस औषधके पाठका अर्थ नीचे लिखे अनुसार करते हैं। और फार्मसी वालों के पास इस प्रकारकी आरोग्यवर्धिनीकी मांग रहनेसे इस नीचे लिखे पाठ के अनुसार फार्मसीवाले भी बनाते हैं। इस गोलीको नं १ देकर वे महाशय इस पाठको रसरत्न समुच्चयका बताते है यह उचित नहि हैं। यह नं १ का पाठ रस रत्न समुच्चयका नहो कहना चाहिये क्योंकि ग्रंथकारने यह पाठ स्वीकृत नहि किया हैं। आरोग्यवर्धनीका मूलपाठ रसरत्न समुच्चय के सिवाय अन्य ग्रथमे न होनेसे इस नं. १ को भी रसरत्न समुच्चय का हि पाठ बता कर फार्मसीकार भी इसी ग्रंथका पाठ छापते है।

आरोग्यवर्धनी नं १—पारद गंधक लोह अभ्रक और ताम्र प्रत्येक भस्म एक एक तोला, त्रिफला २ तोला, शिलाजित ३. तोला गुगळ ४ तोला, चित्रक-मूळ ४ तोला, सबके समान अर्थात् १८ तोला तिक्ता सब साथ मिलाकर कपडछान कर दो दिन तक नीमके पत्ते के रसकी भावना देना। इसकी मात्रा ३ से ६ रत्ती अथवा २ से ४ गोली तककी है।

नोंध—ग्रंथकार जब एक दिनकी मात्रा १ तोला बनाता है तब इसकी १ तोला मात्रा दी जाय तो रस गंधक लोह अभ्रक और ताम्र प्रत्येक द्रव्यकी

एक दिनकी मात्रा ५ से ६ रती आ जाती है। ताम्र भस्म जैसी वस्तु १ दिनमें ५ से ६ रत्ती पेटमें डालना और पांचों की मिल २१ रत्ती मात्रा १ दिनमें दे देना यह अत्यंत हानिकारक है। इस प्रकारका विचार करते हुवे हम समझ सकते है ग्रंथकारने इस गोलीकी मात्रा राजकोलफल अर्थात १ तोला बताइ है तब यह पाठ ग्रन्थकारको संमत नहीं हैं यह स्वभाविक बात हो है। फिर भी नं १ को गोली बनाकर कम मात्रामे देनेका प्रचार हुवा है इस लिये फार्मसी वाले भी नं १ गोली बनाते है। लेकिन ग्रन्थकारने जो गुणवर्णन किया है और इस औषधके गुण बताये हुवे विविध रोगका नाश करने वाली इसे सिद्ध औषधी बताइ है ये गुण उपर लिखे ग्रंथकार समत १४० तोला वाले पाठसे हि होते हैं पाठमे लिखे गुण १४० तोला वजन के पाठसे बनाई हुयी में मिलता है और अनुभवमे भी यही गोली गुणकारी प्रतीत हुया हैं।

तिक्तादि क्वाथ—कुटकी, पुनर्नवा इन्द्रजो अतीस, गिलोय चित्रक समभाग कूट कर रखना। हमेशां आधा से एक तोलाका क्वाथ बनाकर पिलाना।

मुस्तादि क्वाथ—नागरमोथ सोंठ अतीस हरड, देवदार, जटामांसी, मजीठ पुनर्नवा गोरखमुंडी सब समभाग लेकर कूट कर रखना। आधासे एक तोलाका क्वाथ कर १ महिना तक पिलाना।

आमवातहर मिश्रण—वात चिंतामणि बृहत् तो. ०॥, लोह पर्पटी तो १, मुक्तापिष्टि तो ०॥, अभ्रक भस्म तो १, अमवातेश्वर तो.१ चन्द्रप्रभा तो. २ शिलाजित तो १, पुनर्नवा मूल तो. २, सब साथ मिलाकर घोटकर ६४ पुडी बनाना। दो समय शहद या घृतके साथ देना।

महारास्नादि क्वाथः—रास्ना तो १०, एरंडमूल, अडूसी धमासा, कचूरा देवदार बलामूल नागरमोथ, सोंठ, अतीस हरड गोखरु अमलतास, सौंफ, धनिया, पुनर्नवा मूल, शतावरी अहालीम, चव्य छोटी कटहरी मूल प्रत्येक पांच पांच तोला सब कूट कर रखना। एक तोलाका क्वाथ कर एक मास तक पिलाना।



अपस्मार–वाई मिरगी

कारण—दारु जैसी केफी चीजोंकी आदतसे, अतिविषयमे, हस्तदोषकी कुटेवसे, दिमागके रोगसे, कृमि रोगसे, गर्भाशयके दर्दसे और वातरोग, आक्षेप, चतुर्था सन्निपात आदि रोगोंमें ताण-खींचका उपद्रव हो जाने से यह रोग होता है।

चिह्न—हृदय कांपता है, हृदय और दिमाग शून्य जैसा लगता है, स्मरणशक्ति कम हो जाती है, रोगी इरते फिरते चिल्ला कर गिर जाता है। आंख खोलनेसे काला डोला ऊपर चढ जाता है और सफेद डोला दीखता है। जीभ दांतोंमें भींस जाती है। मुखमें फेन आता है। गरदन फिर जाती है। खींच जैसे जैसे बढती है त्य शिकल काली पडती है। थोडी मिनटके बाद ताण खींच बंध होता है तब दरदी सो जाता है। इस प्रकार प्रारंभमें ६–८ महिनाके बाद एकदके आती है और पीछे समय गुजरते गुजरते फीट आनेकी मुदत कम होती जाती है। पीछे कम होते होते एक दिनमें दो तीन बार फीट आ जाती है।

वात प्रधान होनेसे शरीर कांपता है, दांत भींसता है, मुखमेंसे फेन निकलता है, श्वास बढता है, लार निकलती है, अंधारा लगता है। पित्तप्रधान होनेसे आंख, मुख और फेन पीले होते हैं तृषा बहुत लगती है। चारों ओर जलता हुवा दीखता है। कफप्रधान होनेसे आंख और फेन सफेद होता है, शरीर ठंडा पडता है और फीटकी खींचतान ज्यादा समय तक रहती है। कई रोगीका विचित्र प्रकारकी चीस चिल्लाना निकलता है। सारे शरीरके स्नायुमें खींच होते हैं। दांतकी बतीसी बंध हो जाती है। श्वासका रुंधन होता है। किसीको पिशाब दस्त और वीर्यस्राव हो जाता है। हृदय फूलता है, पेटमें वायु बोलता है।

पथ्यापथ्य—इस रोगीको कहीं अकेला जाने नहीं देना। फीट आनेका समय हो तब सावधानीसे रखना। फीट आवे तब उसके हाथ पांवको इजा न हो इसकी संभाल रखना, छाती खुली रखना, पखा डालना। जीभकी रक्षाके लिये मुखमें पोची लकडी रखना। द्राक्षासव पिलाना। अंजन-नस्यका उपयोग करना। आहार विहारमें संभाल रखना। सादा लघु पाचन हो जाय ऐसा खुराक देना। अजीर्ण कबजी न हो इस प्रकार खुराक लेना। चीकना और खांड शक्करका मिष्टान्न कम खिलाना। दस्त और पिशाब हमेशां साफ हो ऐसी दवाइ देना। औरतोंको फीट आती हो तो उनके ऋतु-मासिक धर्म नियमित आना,

चाहिये। चिन्ता क्रोध भय, शोक न होने देना। किसीको पानी या अग्निके पास आनेसे या देखनेसे फीट आ जाती है। हरा शाक बकाला कम खिलाना।

अपस्मारनाशन रस—पारद, गंधक, ताम्रभस्म अभ्रकभस्म शुद्ध मनसील, शुद्ध हरताल वच कुष्ट, हिंग, अजमोद, सोंठ, पीपल कालीं मिर्च, रुद्राक्ष, सेधानोन मोरके पिच्छकी राख, लशुन ब्राह्मी, सब समान भाग लेकर इसमें मालकांगनीका तेल सबके वजनसे सोलवांश हिस्साकी भावना देकर, अज (बकरा)का पिशाब और मुण्ड कान्ती और ब्राह्मी प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना, अगर घोटकर रखना। मात्रा ३ से ६ रत्ती गायके घीसे या कल्याणघृत से देना अेक से दो महिनों तक सेवन करनेसे यह रोग मिटता है।

भूत भैरव लघु—पारद, गंधक, ताम्रभस्म, लोहभस्म, शुद्धहरताल शुद्ध मनशीला अभ्रक भस्म, प्रत्येक दश दश तोला लेकर गौमूत्रमें घोटकर सुखाकर तैयार रखना, और ७० तोला शुद्ध गंधकको लोहेकी कढाईमे डाल धीमी आंच से पकाना, पिगल जाने पर उपर लिखे सात द्रव्योंका मिश्रण इसमे डाल देना और हिलाकर पर्पटीकी तरह गोमयके उपर बिछाए हुवे केलीके पत्ते पर डालकर पर्पटीकी तरह तयार करना। बार घंटाके पीछे निकालकर घोटकर रखना। मात्रा ४ से ६ रती कल्याणघृतसे अथवा गायका घी अगर दूधके साथ देना।

भूतभैरव महा—रसबिंदूर, रौप्यभस्म, सुवर्ण माक्षिक, लोहभस्म, अभ्रक भस्म शिला चन्द्रोदय शिलजित प्रत्येक तो १० गंधक तो. २०, सुवर्ण भस्म तो ५, सबको साथ मिलाकर उसमें, असगंध, पुनर्नवामूल, रुद्राक्ष, जटामांसी, कुष्ठ प्रत्येक तो. १० कूट कपडछान कर सब साथ उपरके मिश्रणके साथ मिला देना। बादमे अरणी, शतावरी मयूरशिखा, तुलसी, गोरखमुंडी प्रत्येककी एकेक भावना देकर छायामे सूखाकर घोटकर रखना, ३ से १२ रती रोगका स्वरूप देखकर दूध, गायके घी अथवा कल्याण घृत, ब्राह्मी घृत, या उटनीके घृत के साथ देनेसे अपस्मार, उन्माद, हीस्टरिया आदि रोग मिटते है। रोगका स्वरूप और रोगीका शरीर देखकर उचित समय तक औषध सेवन कराना।

अपस्मारहर मिश्रण—भूतभैरवमहा तो. १, वात चिंतामणि बृहत् तो. ०।, सर्वेश्वर पर्पटी तो ०॥, सुवर्ण वसंत मालती तो ०॥, सुवर्ण भस्म रक्त तो. ०।, रत्न भागोत्तर रस तो. ०॥ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना। दो वख्त च्यवनप्राश, अश्वगंधादि अवलेह आदि के साथ देना। रोगीकी अवस्थाके अनुसार न्यूनाधिक समय तक सेवन कराना।

अपस्मारहर चूर्ण--सोंठ पीपल, कालीमिर्च, चवक, चित्रक, हरड़, सैंधानोन वायविडंग अजवायन अजमोद, धनिया, जीरा, लशुन, तज, सरसों राईनेका बीज, मालकागनी, गोखरु, बलाबीज, असगंध पीपरीमूल, कुटकी, अतीष देवदार, रास्ना, नागरमोथ, जटामांसी, पुनर्नवामूल, लौंग सब समभाग लेकर कूटकर रखना। दो से चार माशा पानीके साथ देना। अपस्मार, फीट, उन्माद, हीस्टिरिया दारूसे उत्पन्न हुवा भ्रम, चक्कर और मानसिक रोगमें मदात्ययमे उत्तम गुणकारी है।

वाई-मिरगो-फीटके सामान्य उपचार

अपस्मारहर अंजन—मैनशील शुद्ध, रसांजन (रसोत), कबूतरकी चरक समभाग लेकर सब साथ घोंटकर रखना और फीट आइ हो तब अंजन करना,

प्रयोग—बलामूल, हलदी, दारुहल्दी, बच, सप्तपर्ण, कुटकी, जटामांसी समभाग कूट कर ४ से ६ माशा पानीके साथ देना।

प्र. २—ब्राह्मी, मुसाकानी, मेंदी पत्र, पुष्कर मूळ, हल्दी कपूर काचली, निसोथ, समभाग कूट २ से ३ माशा पानीके साथ देना।

प्र. ३—सारिवा, रास्ना, शतावरी, असगंध, अजमोद, पुनर्नवा, सर्पगंधा समभाग कूटकर रखना। २ से ३ माशा पानीके साथ देना।

प्र. ४—बच, ब्राह्मी, मुसाकानी, प्रत्येक तो. ५, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड प्रत्येक तोला २॥ ढाइ, लशुन तो. ६, गुगळ तो. १० सब साथ कूटकर रखना। २ से ४ माशा पानीके साथ देना॥

प्र. ५ करंज बीज, आंवळा, मालकांगनी, बच, तुल्सी, अमियाहल्दी, कचूरा शतावरी, सिद्धेश्वर (सघेसडो), शिरीष (सरसडो), हलदी, सरसों, कुष्ठ जटामासी समभाग कूट कर, रखना। दो से पांच तोला चूर्णको पानीमें पीस कर गरम कर सारे बदनमें मालीस करना।

प्र. ६ ब्राह्मीके छायामे सुखाये हुवे पत्ते, बच, शंखाहुली, रुद्रतोक्षुप, शंखकीट, कालीमिर्च रास्ना, सहंजनाका बीज, सरसो सब समान भाग लेकर कूट कपड़छान कर रखना। दो से चार माशा पानीके साथ देना, नाकमें सुंघाना आंखमें अंजन करना। श्वासमे इसका धुंवा देना।

प्र. ७ पुराना कपड़ा एक हाथका लेकर, हाथीके पांव और हृदयके बीच पसीना होता है उससे भिगोना पीछे छायामें सुखाकर रखना। रोगीको फीट आवे

ऊल पांच छ इंचका उस कपडेका टुटकडा काटकर तीन चार तोला पानीमें भिगोकर, मसल कर उस पानीके बुंद फिट आइ हो उसे नाकमें डालना । जब नाकसे यो जतु बहार निकल जायगे । और बाइ अपस्मार सदाके लिये मिट जायगे ।

प्र ८ चमार दूधली के फल तो. १, काली मिर्च तो. ०।, साथ मिलाकर घोंटकर कपडछान कर रखना । नस्य देना ।

प्र ९—हाथीका मद और काली मिर्च साथ घोटकर गोली बनाकर रखना । पानीमे घीसकर नाकमें बुद डालना ।

प्र १०—गध्धेका अगाडीका चार दांत जलाकर उसकी धुंइ श्वासमें लेनेसे मृगी फिट वाय मिटती है ।

प्र ११—अरनीके मूलकी छाल, तो. १ बकरीके दूधमे पीसकर पिलाना । ७ से १४ दिन तक पिलानेसे रोग मिटता है ।

प्र. १२—अरीठेके फलसे बीज निकाल कर रहे हुये छीलके, इंगुदीके (इंगोरिया) के फल, समुद्रफल, जियापता-पुत्र जीवकके फलकी गीरी सब समान भाग ले कर पानीमें घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । फिट आवे जब पानीमें, पीस कर नाकमें डालना ।

प्र. १३—समुद्र फलको गध्धेके पिशाबमें पीसकर प्रात कालमें बुद डालना और इसकी धुंइ नाकके द्वारा श्वासमें लेना । १४ दिन तक यह प्रयोग करनेसे बाइका रोग मिटता है ।

प्र. १४—इन्द्रवारुणी के फलका रस निकालकर पांच दश बुंद नाकमें डालना और इस फलको अग्निमें डाल इसका धुआ नाकके द्वारा श्वासमें लेना ।



वातरक्त-गलत्कुष्ठ-लेप्रसी

इस रोगको लोकभाषामें रगतपीत भी कहते हैं।

कारण—दारूका व्यसन अति खट्टे पदार्थ खानेकी आदत, जलचर प्राणियोंका मांस खानेका अभ्यास, संयोग विरुद्ध आहार करना, जैसे कि दूध के साथ मछली खानेसे, खून बिगाडनेवाले पदार्थोंके भक्षण से, मलशुद्धि नहीं होनेसे, ठंडे रातवासी अन्नपान खानेसे, हाथी घोडे पर अधिक सवारी करनेसे शरीरका लोही हाथ और पांवमें खींचाकर इकठा होता है, खून वायुके प्रकोपसे बिगडकर यह दर्द उत्पन्न होता है। यह दर्द लागू होनेके पीछे सारे बदनमें फैलता है। गरीब और भीखारी लोग जिनको बिगडे हुये, सडे हुये अन्नपान खानेको ज्यादा मिलता है उनको यह रोग ज्यादा होता है। मांसाहारियोंमे यह रोग अधिक देखा जाता है। बिगडा हुवा अथवा वासी अथवा अगले दिनके मांससे मिश्र करके मिलाया हुवा मांस कइ वख्त मिलता है ऐसा मांस खानेसे दर्द होता है। वनस्पति आहार करनेवालोंको यह रोग बहुत कम होता है। यह रोग चेपी अर्थात् संक्रामक है।

चिह्न—पहिले पसीना ज्यादा होता है अगर पसीना बिलकुल नहीं होता। स्पर्शज्ञान कम होने लगता है। सांधा स्नायु शिथिल होता है। शरीर जड जैसा बनता है। सूइ चूभती हो ऐसा दर्द होता है। खुजली आती है। जलन होता है। ग्रन्थि गांठे और व्रण उठ आते हैं। सारे बदन पर अथवा विशेष करके कपाल मुख और अंगुलियो पर सूजन और चमडी पर चमक झगझगाट और कुछ लाली लिये रंग होती है। हाथपांवकी अंगुलियां टेढी होती हैं। नख घट कर कम होता है और चमडीमे चीरा पडता है। चमडी फटती है, पानी निकलता है मांस निकलता है, मांस गिरता है,।

वायुप्रधान हो तो शूल निकले, अंगमें कंप हो, सूई चुभने जैसी पीडा हो, सूजन हो, शरीर रूक्ष और सूखा हो, चमडीका रंग कालासा हो, घोरी नसें और धमनी नसे और अंगुलियोंके सांधामें खींच हो, शरीर झकड जाय। ठंडेपदार्थोंमें अप्रीति, ठंडे पदार्थके सेवन और स्पर्शसे कंपारी छूटे। स्पर्शज्ञान कम होने लगे।

पित्तप्रधान हो तो जलन ज्यादा हो, पसीना छूटे, मूर्छा तृषा लगे, रोगी पागलसा दीखे, किसी वस्तुका स्पर्श सहन न हो, शरीर लालीलिये हो, सूजन और पाक हो।

कफप्रधान हो तो शरीर ठंडा हो और शरीरसे पानी निकले। शरीरके वर्णमें चमक हो। खुजली आवे, पीड़ा कम हो।

गठोया वातरक्त—इसमें हाथ, पांव, घुटन, जांघ, पांवकी अंगुलियां. ढोनि आदि शून्य होते है। मछलीके भींगडेकी तरह चमडी परसे पपडी निकले, नख काला पड जाय, चमडी का दिखाव कुरुप हो चमडी कुछ लाली लिये होकर फटे और उसमेंसे पस और खून रात दिन निकलते रहे। अंगुलियोंकी चमडी, मांस हड्डी आदिमें खड़ा होकर धीरे धीरे क्षीण हो. मुख, गाल, नाक, कान आदि अवयवेंकी चमडी पर चमक-चलकाट दीखे, और पीछे सारे शरीरमें फैले। पहिले चाठां हो उसमेंसे गांठे-ग्रन्थियां निकले। वे ग्रन्थियां बडी होकर पक कर उसमेंसे पस निकले। नाककी हड्डी सडकर नाक चपटा हो बैठ जाय, पगकी अंगुलियां सूज कर उनमेंसे पानी निकले और क्षीण होकर गिर पडे। हाथ पांव स्पर्शमें ठंडे दीखे, भीतरमें असह्य जलन हो। चमडीको स्पर्शका ज्ञान न रहे।

शून्य वातरक्त—उपर लिखे अनुसार ग्रंथियां नहीं होती लेकीन हाथ पांवकी अंगुलियां और अंगुठे एकदम बहिरे-स्पर्श ज्ञान शून्य हो जाते है। और कइ वख्त मछली के भींगडा जैसी पपडी निकलती हैं। हाथपांव और शरीरका कोइ भाग निकम्मा हो जाता है। जूठा पडता जाता है। कइ वख्त शरीर पर फोडा निकल फूट कर रूज आनेके पीछे वहां सफेद डाघ पडता है। इस भागको अग्निसे जलाये और चप्पूसे काटे तो भी मालूम नहीं होता।

पथ्यापथ्य—रोगीका मकान और बिछाना अलग रखना। खाने पीनेका बर्तन कपडा अलग रखना। मांसका खुराक बिलकुल बंध करना। सादा लघु, और वनस्पतिका ताजा गरमागरम खुराक देना। दारू बंध करना। रक्तशुद्धिका उपचार करना। खुल्ली हवा एकांत स्थल, स्वच्छ पानी, नहाने धोनेकी सफाइ रखना। दूधका खोराक ज्यादा देना। मांस, मदिरा, खट्टे पदार्थ गरम मसाला, तेल, लालमिर्च, क्षारवाले पदार्थ अचार, अधिक नमकीन पदार्थ बंध करना। ब्रह्मचर्य से रहना।

वातरक्तांतक रस—पारद, गंधक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, शुद्ध हरताल अथवा हरताल भस्म, शुद्ध मैनशील, शिलाजीत, गुगल वायविडंग, हरड, बहिडा. आवलां, सोंठ, पीपल, कालीमिरच, समुद्रफीण पुनर्नवा, देवदार चित्रक. दारुहल्दी सफेद फूलकी अपराजिता (सफेद फूलनी गरणी) सब समभाग लेकर कूट-

कपड़छान कर त्रिफला और भांगरे के रसकी तीन तीन भावना देकर सुखाकर घोटकर रखना। मात्रा ६ से ८ रत्ती दिनमें दो या तीन दफे नीमके पंचांगके चूर्णके साथ अथवा नीमकी छालके पानीसे देना। दूधका खुराक रखना।

कृष्ण माणिक्य रस— स्वर्णमाक्षिक भस्म तो. १०, गंधक तो १०, पारद, तो १०, लोह भस्म, तो २०, शुद्ध हरताल तो १०, लाली तो २॥ माणिक्य पिष्टि तो. ५ सब साथ मिलाकर लोहेकी कढाईमें डाल चूल्हे पर मंदाग्निसे पकाना और इसमें महामंजिष्ठादि क्वाथ तो. ८० और नीमका पंचांग तो. ८० में पानी रतल १० डालकर २४ घंटातक भिगो रखना पीछे उसे कपड़छान कर थोड़ा थोड़ा पानी कढाईमें डालते रहना और लोहेके तवेथासे हिलाते रहना। सब पानी जल जाय तब अग्नि बंध करके स्वांगशीत होने देना। पीछे कढाईसे निकाल कर घोटकर रखना। मात्रा २ से १० रत्ती तक दिनमें दो या तीन दफे नीमकी छालके पानीके साथ अथवा महामंजिष्ठादि क्वाथके साथ देना। सब प्रकारके वातरक्त पर अच्छा गुण करता है।

रक्तवाताशनि रस—पारद, तो १०, गंधक तो २०, ताम्रभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, हरताल भस्म प्रत्येक तो ८, हरड, बहेडा आंवला सोंठ, पीपल, कालीमिर्च अतीस, गिलोय, नागरमोथ, अडूसी. गुगल, चित्रक, दंतीमूल, वायविडंग, निसोथ चिरायता, निम्बबीजकी गिरी, जटामांसी, मयूरशिखा प्रत्येक तो पांच पांच सबको कूट कपड़छान कर भांगराका रस, गिलोयका रस, नीमके पत्तोंका रस और कोठा (कपित्थ) के पानका रस प्रत्येककी चार चार भावना देकर सुखाकर खरल कर रख छोड़ना। मात्रा ३ से २० रत्ती तक रोगका हाल देखकर न्यूनाधिक मात्रा दिनमें दो या तीन दफे देना। उपर नीमके पत्तेका रस पिलाना। खट्टे पदार्थ तेल लाल मिर्च, खांड शक्करकी चीजें नहीं देना। साधा ताजा खुराक देना। वातरक्त, गलत्कुष्ट, उपदंश, खून के बिगाडके रोग मिटते हैं।

अमृता गुगळ—(भावप्रकाश) गिलोय तो १०२ गुगळ तो ६४, हरडेदल तो. ६४ पुनर्नवा तो. ६४ बहेडादळ तो. ६४, आवला तो. ६४, सबसाथ कूटकर क्वाथ बनाना। चतुर्थांश रहने पर क्वाथको कपड़छान कर फिर चूल्हे पर चढाना। घट्ट होने पर नीचे लिखे घटक द्रव्यो कूटकर कपड़छान कर डालना। दंतीमूल, सोंठ पीपल काली मिर्च, वायविडंग गिलोय हरड बहेडा आंवळा दालचीनी चित्रकमूल प्रत्येक दो दो तोला, निसोथ तो १ इनका चूर्ण डालकर धीमी आंचसे पकाना। एक मात्रा (६ रत्तीकी) की

गोली बनाना । मात्रा ४ से १२ रती तक रोगका स्वरूप और शारीरिक स्थिति देखकर देना । वातरक्त, कुष्ठ, बवासीर, मंदाग्नि, दूषितरक्त, प्रमेह, आमवात, भगंदर, नाडीव्रण, सूजन इतने रोगोंको शांत करता है ।

अश्विभ्यां निर्मितश्चायं अमृताख्यो हि गुग्गुलुः ।

किशोर गुगळ—(यो. त) शुद्ध गुगळ तो ६४, हरड, बहिडा आवळी प्रत्येक तो. ६४, गिलोय तो. १२८ सबका क्वाथ कर आधा रहने पर कपडछान कर फिर पकाना । घट्ट होने पर नीचे लिखे द्रव्योंका कपडछान चूर्ण डालकर पकाना । हरड, बहिडा आवळा प्रत्येक ६–६ तोला, वायविडंग २ तोला, पुनर्नवा ६ तोला, त्रिसोथ, दतीमूल एक एक तोला गिलोय ४ तोला । घट्ट होने पर ६ रत्तीकी गोली बनाना । मात्रा ३ से १२ गोली पानीमे देना तीनों दोषोंके प्रकोपसे हुवा, सारे शरीरमे फैला हुवा, खून मांस गिरता हो ऐसा गीला अथवा सूखा वातरक्त-रंगतपित्त, और कुष्टके सब रोग मिटते हैं । इसके अलावा अल्सर खांसी गुल्म सूजन, उदररोग पांडु प्रमेह, मंदाग्नि आदि मिटते है और सतत सेवन करनेमे रसायन गुण करता है ।

अभिभूय जरादोषं वितश्ति कैशोरकं रूपम् ॥

सिद्ध हरताल भस्म—सोनपत्री हरतालको भैसके मूत्रमें कवारपाठके रसमे, चूनके पानीमे, शरपुंखके क्वाथमे, कुष्मांडके रसमे और निम्बूके रसमें । इस प्रकार प्रत्येकने अठारह अठारह घंटा घोंट कर शुद्ध करना । बादमें कुष्मांड रस, ढाकका रस बेरके मूलका रस, अदरखका रस गोजिहवा (मोपाथरी)का रस, नकछींकनीका रस, सूरजमुखीका रस दुग्धीका (दुधेलीका रस,) भांगराका रस, एरंडमूलका रस ब्रह्मदंडीका रस, लशुनका रस प्याजका रस, पीलुका रस बालका रस, खुरासनी थोरका दूध आकका दूध प्रत्येकको २१–२१ भावना देकर टीकीया बनाकर धूपमे सुखाकर एक कपडमिटी की हुइ मिट्टीकी हंडेमें पीपल (अश्वत्थ) की राख आधी हंडीमें दबाकर भर उपर टिकिया रखकर फिर पीपलकी भस्म-राख हंडी के मुख तक भर दबाकर मुखपर मुद्रा देकर ६४ प्रहर तक अखंड अग्नि देना । मंद मध्य तीव्र अग्नि क्रमशः देना । आगे धीरेसे टीकिया निकाल कर घोंट कर रखना । शंकरकी महापूजा कर देव गाय ब्राह्मण वैद्यका पूजन कर भस्म सुरक्षित रखना । मात्रा ०॥ से १ रत्ती शहद घी से देना ।अनुपान रोगके अनुसार बताना । पथ्यमें लशुध, नमक, खट्टा, तीखा चिरचिरा, क्षारवाला पदार्थ और तैल औषध चलता हो जब तक नही खाना ।उपर जिस जिस द्रव्य के रसको भावना देना लिखा है उनमेसे जिसका रस न निकल सके उसका क्वाथ कर भावना देना ।

२१ दिनमे गलत्कुष्ठ वातरक्त. सफेद कुष्ट खून के बिगाड़के सब रोग, अपस्मारादि पापजन्य रोग, भगंदर, नासुर नाडिव्रण महाव्रण उपदंश फिरंग रोग, श्लीपद, सूजन, सुतिका रोग, श्वास कास पीनस, बवासीर, मंदाग्नि संग्रहणी मधुमेह मेदवृद्धि, अर्बुद (केन्सर) कंठमाल और क्षय रोगमे उत्तम गुणकारी है।

सर्प कंचुकी योग—सर्पकी कांचली पीसकर बारीक करना १ मासा खजुर के बीच मे डालकर खिलाना उपर दशबीस खजुर को पेशीं खिलाना। २१ से २८ दिन तक खिलानेमे गलत्कुष्ट वातरक्त रक्तपीत, आदि मिटते है।

महामंजिष्ठादि क्वाथ—(यो–त पृ- १८६,)

मजठ नागरमोथ कुडेकी छाल, गिलोय, कुष्ठ, सोंठ भारंगी, छोटी कटहरी, मूर्वा, वच नीमकी छाल हल्दी, दारुहल्दी, हरड, बहेडा, आंवला, पटोल कुटकी, मोरवेल, विडंग, असन(अंजनवृक्ष), चित्रक, शतावरी, त्रायमाण, पीपल, इंद्रजौ, अडूसी, भृंगराज, देवदार, पाठा, खदीरछाल, चंदन, निसोथ, वरुण, चिरायता बावची, अमलतास, शाखोट, बकाइन नीम, करंज अतीस, वाला, इन्द्रायण मूल, अनंतमूल सारिवा और पर्पट सब समान भाग लेकर कूटकर रखना। एक से दो तोला. चूर्णका क्वाथ बनाकर दो समय ३ से ८ रत्ती पीपल और ८ से १० रत्ती शुद्ध गुगळ डालकर पिलाना। १८ प्रकारके कुष्ठरोग, वातरक्त, अर्दितवात, उपदंश, श्लीपद, सुतिका रोग, पक्षघात, मेदवृद्धि, और नेत्ररोगमें उत्तम गुणकारी है।

शरीर पर गायका घी अथवा कल्याण घृत मालीस कराना। फस खोलकर अथवा जलुका (litch) अथवा शिंगडेसे खून निकलवाना। इस समय वायु न बढे यह ध्यान रखना। एरंड तैलका अथवा अमचोलीका जूलाब देना। इस रोगीको दिनको सोने न देना। मन पर किसी बातका शोक या दुःख होने न देना। परिश्रम नहीं कराना। ब्रह्मचर्य रखना। बहुत तीखा बहुत गरम, चीकना, नमकीन क्षारवाले पदार्थ नहीं देना। एक सालके पुराने धान्य जौ, गेहू, चना, मुंग, मसुर, कुलथी, मेथीदाणा इत्यादि देना।

गलत्कुष्ट हर मलम—नीमके पत्ते तोला ४॥ सोहागा तो, ०॥, राल तो १, बारीक कर मर्दन कर गायका घी तो. २०, मिलाकर मलम बनाना।

प्रयोग १-नीमके पत्ते महीन पीसकर अंगुलियों पर और चांदों पर पोटीस की तरह बांधना।

प्रयोग २-टीडकी (Loocust) चरक तोला १ सुबह तोला १ शामको पानीके साथ देना। १४ से २१ दिनमें गलत्कुठ वातरक्त मिटता है।

प्रयोग ३-नीमबीजकी गीरी रतल ५ और शक्कर रतल ५ दोनो कूटकर एक कर मिलाकर मिट्टीकी हडीमें भरना, जो हडी दूध घी छाछ आदिसे रीढी (Seasoned) हुइ हो इसमें भरकर इसके उपर थाली (Bowl) रखकर कपडमिट्टी करना। मुख बंध कर देना। पीछे उस मटकीको एक कुंडेमें रखना और दूसरा कुंडा उपर ढकना और दोनों कुंडेकी संधिमें मिट्टी लगा देना। पीछे एक कमर गहरा खड्डा जमीनमें करके उसमें वह कुंडाका संपुट रख उपर मिट्टी भरना। तीन महीनोंके पीछे निकाल छोट कर रखना। हमेशां चार से आठ मासा सुबह शाम सेवन करना यह औषध ८ मासासे प्रारंभ कर प्रत्येक सप्ताह बीत जाने पर बारह बारह रत्तीकी मात्रा बढाना। एक दिन की मात्रा १॥ तोला होनेसे ०॥ तोला सुबह और आधा तोला शामको ४० दीन खिलाना। वातरक्त, रगतपीत, गलत्कुष्ठ, मिटते हैं।

प्रयोग ४ नदीकी छिप (शुक्ति) कूटकर महिनकर आकके दूधमें पांच पांच तोला कि टीकिया बनाकर पकाना। इस प्रकार आकके दूधमे तीन दफे पकाकर घोटकर रखना। १ मासा मात्रा हमेशा घी या दूधसे देना। उपर भिगोइ हुइ चनेकी दाल दससे पंदर तोला तक खिलाना। खुराकमे चनेकी रोटी और दूध देना। छे मास तक देनेसे रगतपित्त वातरक्त, गलत्कुष्ठ खुनका बिगाड आदि मिटता है।

प्रयोग ५-नीमके पत्ते अथवा बकाइन नीम (महानिंब) के पत्ते १० तोला लेकर महीन पीसकर इसमें १ तोला जीराका चूर्ण डालकर पिलाना। दिनमें प्रातः काल एक बार औषध देना। रोगका समय, शरीरमे रोगका फैलाव आदि देखकर १ से २ महिनो तक देनेसे खूनका बिगाड मिटता है। खुराकमें चना और दूध देना।



उपदंश (चांदी, गरमी)

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादत्युपसेवनाद्वा ।
योनिप्रदोषाच्च भवंति शिश्ने पंचोपदंशा विविधोपचाराः ॥१॥

कारण—हस्तदोषको कुटेवसे नख और दांतका क्षत होनेसे, स्त्रीसंगके पीछे प्रक्षालन न करनेसे, वेश्या स्त्रीके संगसे, अतिविषयसे स्त्रीके गुह्यभागके रोगसे, अप्रिय, इच्छारहित गुह्येन्द्रियके रोगवाली और उपदंशके रोगवाली स्त्रीके संगसे, पशु जातिके संगसे, वीर्य और मूत्रके वेगको रोकनेसे इत्यादि कारणोंसे इन्द्रिय पर जखम-व्रण हो कर दूषित हुये वात पित्त और कफ इन्द्रिय पर शोथ सूजन करता है। यह रोग स्त्रीसे पुरुषको और पुरुषसे स्त्रीको लागू होता है।

चिह्न—इस रोगवाली स्त्रीके या पुरुषके संगके पीछे दो चार दिनमे गुह्येन्द्रियमे घर्षण होनेसे अथवा चेप लगनेसे प्रारंभमें फुन्सियां होती है। पीछे वे फूट कर चांदी पडती है। यह चांदी प्राय इन्द्रियके घुमट के उपर अथवा चमडीके उपर होती है। प्रारंभमे चांदी दाल के दाना जैसा गोल होता है। पीछे वह फैलता है।

वातपित्त प्रधान कठिन उपदंश—गरमीवाली स्त्रीके संयोगके पीछे ८ से ४० दिनमे दिखाइ देता है। चमडीके पडमे ही व्रण होता है। प्रारंभमें फुन्सी हो कर क्षत पडता है। यह रोग जिंदगी भरमे एक दफे होता है। प्रारंभमें नीचेके भागमें कठिन होता है और चांदीकी फिरती धार जाडी (मोटी) और कठिन होती है। चमडी फूल जाती है। चांदीकी किनारी लाल होती है। रस्सी पतली और बहुत कम निकलती है चांदीके आसपासका भाग और नीचेका भाग कुछ कठिन होता है। यह चांदीका रोग ज्यादा समय नही रहता और सडा भी नहीं करता।

कफपित्तप्रधान उपदंश—गरमीवाली स्त्रीके संगके पीछे ८ दिनमें फुन्सी होती है और जहां फुन्सी हो वह भाग सडते सडते चांदी गहरी उतरती जाती है। प्रारंभमें चीरा पडकर क्षतका रूप पकडता है। यह रोग जिंदगीमें अनेक समय होता है व मिटता है। तलुभेमें मृदु होता है। आजुबाजु के भागकी किनारी अलग दीखती है। किनारी ऊंची, सपाटी बैठी हुइ और उस सपाटी पर निर्जीव मांसका थर जमता है और उसमेसे गाढा परु (पस) निकलता है। आसपासका भाग और सपाटीका भाग मृदु होता है। इस प्रकारका गरमीका रोग १॥ से २ महिनाके पीछे मिटता है।

पथ्यापथ्य—ब्रह्मचर्य पालन करना, परस्त्री और वेश्या संगसे दूर रहना सदाचारका पालन करना, प्रत्येक अंग स्वच्छ रखना, पवित्रता और शुद्धि रखना। बुरे मित्र या बुरी स्त्रीयोंसे सहवास नहीं रखना। शृंगारिक पुस्तके नहीं पढना। सिनेमा नाटक नही देखना। जागरण नहीं करना। कपडा हमेशां बदलना। चेपवाले कपडे साबूनसे या रीठेसे धो डालना। बाजारकी मीठाइ लाल मिर्च गरम मसाला, दारु (मद्य) इत्यादि छोडना। दस्त पिशाबका खुलासा रखना। चावल, गेहू चना, मूग, जो, दूध शक्कर शाकमे परवल, करेला दुधी, सुरण, हरी हल्दी, मसालेमे नमक जीरा हल्दी, मीठा नीबु आदि खाना, दूध घीका खुराक रखना।

उपदंश हरी वटी—पारद गंधक आकके दूधमें शोधा हुवा रसकपूर अकलकरा केसर वायविडंग महेंदी लोंग सोनामुखी समभाग लेकर बारीक कर पानीमें पीस रत्ती प्रमाण गोली कराना। १ से २ गोली रातवासी पानी या दूध के साथ खडो हो निगल जाना। उपर दूध पीना। प्रारंभमे १ गोली लेना पीछे प्रतिसप्ताह एक एक गोली बढाकर हमेशको ३ गोली होने पर २१ दिन तक लेते रहना। पहरेजमे नमक लाल मिरच तेल, खट्टे पदार्थ खाना नहीं। गेहूकी रोटी गायके दूध के साथ खाना।

कस्तूर्यादि गोली—आकके दूधमें शोधा हुवा रसकपूर लोंग चंदनका चूरा, कस्तूरी और केसर समभाग लेकर, तांबुलके पानके रसमें मुग जैसी गोली बनाना। मात्रा ३ से ४ गोली घी अथवा दूधसे निगल जाना।

केशरादि गोली—केशर, आकके दूधमें शोधा हुवा रसकपूर लौंग और खदिर समभाग लेकर तांबुलके पत्तेके रसमे मुग जैसी गोलि बनाना। २ से ४ गोली घी या दूध के साथ सही ही निगल जाना।

उपदंश हर मिश्रण—सुधा पर्पटी तो० १, मं भस्म तो, १, सुवर्ण वसंत मालती तो ०॥, हरताल, भस्म तो, ०॥ किशोर गुगळ तो २ आरोग्य वर्धनी तो २ सब साथ मिलाकर पीस कर १४ पुडी बनाना। दो वख्त शहद धृत या दूध के साथ लेना।

उपदंश कुठार—आकके दूधमें शोधा हुवा रसकपुर वंगभस्म श्वेत रौप्य भस्म श्वेत, माक्षिक भस्म लाल, पारद और गंधक की समभाग की हुइ कज्जली लोंग सफेद चंदन, केसर जावंत्री ओर प्रवाल चंद्रपुटी सब समभाग लेकर कूटकर तांबुलके पत्ते के रसमें रत्ती प्रमाण गोली बनाना। दिनमे दो से तीन गोली पानी या दूधके साथ सही ही निगल जाना।

विस्फोटकारि प्रयोग—शुद्ध पारद ०)= दो आनीभार, शुद्ध हिंगुल ०)=भार शुद्ध मुर्दारसिंग ०)=, आयपत्री ०)–, रूमी मस्तकी ०)– लेना। प्रारंभमें हिंगुल के साथ पारा को घोटकर मिला जाय तब दूसरी वस्तु मिला कर १४ पुडियाँ बनाना। हमेशा सुबह १ पुडी गुडमें मिलाकर गोली बनाकर खा जाना। उपर नागरवेलका पान खाना। पथ्य मे चावल और गेहूंकी थूली बिना नमक शक्कर डाली खिलाना। चाँदी विस्फोटक आदि मिटते हैं।

हिमचन्द्र रस—शुद्ध पारद तो ५ को लोहेकी खरलमें डालकर उसमें पीसी हुई शक्कर तो. १५ डालकर नीमकी लकडीके दस्तेसे घोटना। पारा बिलकुल शक्कर के साथ मिलजाय तब अच्छा केवडीया कत्था तो २ मिलाकर दो दीन तक घोटकर पानीसे गोली रत्ती प्रमाण बनाना। हमेशा सुबह और शाम दो दो गोली घी के बीचमें रखकर अथवा शिराके बीचमे रखकर अथवा घी और शक्कर के बीचमे रखकर निगल जाना। दूध भात गेहूंकी रोटी शक्कर घी चावलका खुराक रखना। नमक लाल मिरच तेल खट्टे पदार्थ बंध करना। एक मास सेवन करानेसे उपदंशका रोग मिटता है। तृषा लगे जब गर्म पानि पिना। ठंडा पानीका स्पर्श भी नही करना। पीना भी नही, मुखमे शोष या तृषा लगे तो मीठा दाडिमका रस या नमका रस पिलाना। शौच जाती वखत गर्म पानी लेना और तुर्त पोछ डालना। शरीर पर पवन धूप या अग्नि लगने न देना दिनको सोना नही। रातको जागरण करना नहीं। ब्रह्मचर्य पालना। स्नान करना नही एक महीना तक दवाइ लेकर बंध करना और एक महीने के पीछे स्नान करना उपदंश चाँदी गरमी आदि मिटता है।

उपदंशहर मलम—पारद, राल, शेवगुदर, खोपरा, काली मिरच, कुमकुम, मेथीदाणा, प्रत्येक तो २॥ ढाइ लेकर गायका घी शेर १ लेना। पहिले पारा और रालको साथ पीस, मिल जाने पर दूसरी वस्तु अलग अलग पीसी हुयी मिला देना। लोहेकी कडाइमे घीको गरम कर उसमें सब द्रव्य डालकर धीमी आंचसे हिलाकर पकाते रहना। ठंडा होने पर बरतनमें भर देना। चाँदी गरमी के व्रण पर लगाना। और हमेशा रीठे के पानीसे अथवा पकाया सोहागा मिलाये पानीसे धोकर सुबह शाम दो वखत लगाना। यह मल्हम लगाया जाय जब तक चनेकी रोटी भात दूध वगैरह खुराक देना। नमक, लाल मिरच, खट्टा पदार्थ तेल बंध करना।

गुंजा गर्भ तेल—घुंघची(गुंजाचणोठी) घुंघचीके उपरका छिलका निकाल पानीमें पीस कर वडी बनाना। तिलका तेल शे. १ में तोला ५को वडीको तलना।

पकाना। वही लाल हो जाय जब निकलना। वडी फेंक देना और तेलको थोडी उपदंशके घावेमें लगाना या कपडेके टुकडे पर छिलक कर बांधना।

सिंदुरादि मलम—(कपीलो), सिंदुर हीरादखण बोदार सिंग, माजुफल, राल, कपीलो, मनशील रुमीमस्तकी, कायफल प्रत्येक तो १, मोम तो. ३, सबको बारीक घोट कर गायका घी तो ३० को गरम कर मोम डाल मिलजाने पर दूसरी सब महीन पीसी हुयी वस्तुओको धीमे डाल कर घोटकर मल्हम बनाना। उपदंश फोडा विस्फोटक फिरंग रोग इत्यादिमें लगाना।

तुत्थादि वटी—नील थोथा तो ५, छोटी हरड (हिमेज) तो १५ दोनोंको बारीक पीस कर निम्बू रसकी दो भावना देना। पीछे निम्बू रससेउडद जैसी गोली बनाना। एक गोली मुखमे डल उपर आधा निम्बूके रसमें १० तोला पानी पिलाकर निगल जाना। इस प्रकार आठसे सोलह दिन तक देनेसे विस्फोटक उपदंशादि मिटते हैं।

तुत्थहरातकी वटी—नीला थोथा तो १०, कथ्था तो १०, छोटी हरड (हिमजो) तो. १० झल के बीज तो १, झौलके पत्ते तो १। सब साथ महीनकर घोट कर निम्बू रसमें १४ दिन तक घोटते रहना। हमेशा ८ से १० घंटा तक घोटना और निम्बू रस डालते रहना। पीछे उडद जैसी गोली बनाना। एक गोली मख्खनके साथ खडी ही निगल जाना। ५ से २१ दिन तक विस्फोटक उपदंश प्रमेह बवासीर मिटते हैं। पहरेजमें तैल, दूध और गुड वध करना।

विस्फोटक हर प्रयोग—गोरखमुंडी तो. १, पारद तो ५ दोनों तीन घंटातक पीस कर पानी मिलाकर दोनों हाथके कांडा तक एकसे दो घंटा तक मालीश करना, पीछे दोनों हाथ बगलमे रखकर सोना हरना फिरना, दूध भातका खुराक रखना तीन दिनमें असाध्य विस्फोटक मिटता है।

विस्फोटांकुश वटी—शखियो शुद्ध तो ०।।, शुद्ध वछनाग ।।८ तोला, शुद्ध हिंगुल ।।८ तोला, बव्बुलका गोंद तो ०। सबको कंटला चौलाइ (कांटावाळो तांजळियो) के रसमें घोटकर चणेसे जैसी गोली बनाना। हमेशां १ गोली दूधके साथ निगल जाना। उपदंश, वातरोग, कुष्ट व्रण, खूनका बिगाड, इत्यादिमें उत्तम है।

अश्वगंधादि चूर्ण—असगंध, छोटी कटहरीकी जड बव्बुलके बीज, सहजनेके बीज प्रत्येक तोला दश दश और काली मिरच तो २ सब साथ कूटकर रखना। हमेशां १ माशा सुबह गायके घी से खिलाना। विस्फोटक उपदंश मिटता है।

विस्फोटक हर प्रयोग—हिंगुल तो ०॥ रुमी मस्तकी ०॥ अकलकरा तो. ०॥ सब साथ कूटकर २८ पुडी बनाना। हमेशां १ से २ पुडी सुबह और शाम घी या दूध साथ देना। दूध भात गेहूं का खुराक रखना। नमक तैल लाल मिरच खट्टा पदार्थ नहीं खाना

विस्फोटक हर धुणी—हिंगुल, हरताल, इलायची सागरगोटाकी गीरी (कांकचीया) प्रत्येक पाव पाव तोला कूट महीन कर चौद पुडी बनाना। हमेशां १ पुडी निर्धूम अग्नि पर छिडक कर सारे बदनमें धुवा लगे इस प्रकार धुणी देना। १४ दिन तक करनेसे फिरंग वायु विस्फोटक उपदश मिटते है। यदि मुख आ जाय तो जीरा तो ०॥ और शक्कर तो, ०॥ कूटकर पानीसे देना और बब्बुलकी छालके पानीका कुगला करना।

उपदंश हुक्का—जरदा याने पीनेकी तमाकु तो. ३० लेकर उसमें हिंगुल तोला आधा और गुड तो १० मिलाकर १४ गोली बनाना। पहिले सोनामुखी (मीढीआवल) के क्वाथमें गुड मिलाकर जुलाब देना। पीछे उपर लीखी गोली हुक्कामें डालकर उसका धुआं ७ दिन तक पीना। ७ दिनमे उपदंश विस्फोटक मिटे। लाल मिरच खट्टा पदार्थ तेल नमक नही खाना। जरुरत लगे तो दूसरा ७ दिन तक इस गोलीका धुंवां पिलाना। १४ दिन तक चमेली का दटौन (दंतधावन) करना और तांबुल (पानकी पट्टी) मुखमे रखना। इससे मुख नहीं आयेगा। और चांदी गरमी विस्फोटक मिट जायगा। यदि ७ दिनमें आराम न हो तो दूसरे ७ दिनकी गोलीका हुक्का पिलाना।

उपदंश हर हुक्का—हिंगुल, आकके मूलकी छाल, महेंदीकी छाल प्रत्येक आधा आधा तोला तमाकु तो १५ गुड तो ५ सब साथ मिलाकर १४ टिक्की बनाना। हमेशां सुबह और शाम १ हुक्कामे, डाल पीना और धुआंको फूंक चांदी पर लगाते जाना इस प्रकार करनेसे अच्छा होता है। यदि इस प्रयोग से या अन्य प्रयोगसे मुख आवे तो कनेरका पान और गुलाबके फूलको उबाल कर कुगला करना।

आया हुवा मुख अच्छा करनेका प्रयोग—यदि पारद या हिंगुल के योगकी दवाईसे मुख आया हो, मुखसे लार या पानी पडता हो तो आंवलों, बहिडा धमासा प्रत्येक तेला तीन तीन, बब्बुलकी अंतर छाल और चमेलीके पान प्रत्येक डेढ डेढ तोला लेकर कूटकर मलमलकी तीन पोटली सममागसे बनाना। पीछे एक पोटली तीन से चार लोटा पानीमे उबाल कर दिन भर उस पानीसे कुगला करना। इस प्रकार तीन दिन तक पोटलीके पानीका कुगला करनेसे

आया हुआ मुख अच्छा होता है। पीछे १९ दिन तक दूध भात खिलाना और नमक, खट्टा पदार्थ, लाल मिर्च तेल १५ दिन तक नही देना।

प्रयोग—१ मनुष्यकी हड्डीको जलाकर इसको राखको बारीक पोसकर चांदी विस्फोट पर दाबनेसे अच्छा होता है।

प्रयोग—२—हिंगुल रूमी मस्तकी नीलाथोथा प्रत्येक पाव पाव तोला लेकर बारीक कर उसको मख्खन तो. २० में मिलाकर लगानेसे विस्फोटक फोड़ा मिटता है।

प्रयोग ३—हिंगुल तो. १, मोम तो. २॥ हेराकसी (कसीस) तो. ०॥ सब साथ मिलाकर उसमे घी तो. १० डालकर मलम जैसा बनाकर कांसीके बरतनमें डाल पानीमे ७ दफे धो कर रख छोड़ना। पीछे मलमलके कपड़ेके उपर लपेट कर वह टुकड़ा चांदी विस्फोटक आदि पर लगा देना। इस प्रकार ७ या १४ दिन तक लगानेसे आराम होता है।

प्रयोग ४—अमरबेलको गायके गोबरके रसमें पीस कर लगानेसे चांदी, विस्फोटक, खरजवा आदि मिटते हैं।

प्रयोग ५—नदीकी सीप तोला २ और हींगुल तोला ०॥ मिलाकर १४ पुड़िया बनाना प्रात. और शामको शरीर पर धुंवा देना फोडा मिटता है।

प्र. ६—शुद्ध, पारद टांक २॥, चित्रकमूल टांक १। चित्रक पत्ते टांक १।, कत्था टांक ५, तालमखाना टांक २।। लौंग टांक ३॥ ईलाईची छिलकासह टांक १।, इलायची छोटी टांक १। ईसपन टांक १ पुराना गुड टांक ६ पहिले पाराके साथ एक के पीछे एक दवा डाल घोंट मिलाना सब दवा मिश्र जाय जब गुड मिलाय के लोहेकी कढाईमे सब डालकर पानी रतल २ डाल पकाना और निमकी लकड़ी से हीलाना घट्ट हो जाय जब गोली ३ रतीको बनाना। सुबे शाम दो दो गोली दूध से देना २१ से ३० दिनमें उपदंश फोड़ा आदि मिटता है।

प्र.—७ सुपारी माजूफल दाड़मकी छाल पोस्त डोडा सब सम भाग मिलाकर हंडी में डालना कोलसा जैसा हो जाय जब गायका घी मिलाकर लगाना।



श्वेतकुष्ठ (सफेद कोढ)

कारण—यह कुष्ठ पूर्व जन्म के कृत कर्मका फल है और यह पापजन्य रोग कहा जाता है। यह रोग चेपी—संक्रामक नहीं है। क्षय आँखे दुठना उपदंश वातरक्त आदि रोग संसर्गज—संक्रामक चेपी हैं। यह रोग देखनेमे खराब होनेसे और तात्कालिक औषधका परिणाम न होनेसे रोगी बहुत ग्लानिका अनुभव करता है। इस रोगसे शरीरकी बाह्य चमडाके रंगमें परिवर्तन होनेके सिवाय और कुछ हानि नही है। यह रोग शरीरमें बढ जानेसे सारे शरीरमे फैल जाता है। यह रोगी धूप अग्नि सहन नही कर सकता। दीर्घकाल तक खाने और लगानेका औषध दृढतापूर्वक चलाये रखनेसे यह रोग अवश्य मिटता है।

श्वेत कुष्ठहर रस—पारद गंधक हरड बहेडा आवला, भृंगराज, बावची, चित्रक भिलावां हरताल भस्म लोह भस्म कांस्य भस्म, पीपल, नीमो लो कोगीरी, अमलतास चकवड के बीज, पढ पुनर्नवा, कुटकी, गुग्गल शिला जीत, सब समान भाग लेकर नीमके पत्ते के रसको, बावचीके क्वाथको, अंजन-विजयसारके छालको, भांगरेके रसकी एक एक भावना और श्वेत फूल की कोयल गिरिकर्णी के पंचांगको दश भावना देकर घोटकर रखना। मात्रा ६ से ८ रत्ती शहद घृत या पानीसे लेउपर काले तिल दो तीन तोला चाब कर खाना।

श्वित्रारि रस—बावची तो ८०, लेकर उसमे गोमूत्र डालकर भिगोना और गोमूत्र सूख जाने पर और डालना। २१ दीन तक भिगोकर पीछे उस बावची में लोह भस्म तो ८ हरड तो ८ मिलाकर धूपमे सुखाना। पीछे उसमे शुद्ध पारद और गंधककी समभागसे बनाइ हुयी कज्जली तो. ४० डालकर सबको निम्बू रसकी एक, सहजनेके मूलके रसकी एक बबूल पानके रसको एक और श्वेत फूलकी अपराजिता के पंचांगके रसको १० भावना देकर सुखाकर रखना। मात्रा ६ से १० रत्ती सुबह और शामको पानीके साथ देना। उपर अंजन वृक्ष-विजयसारके छालका क्वाथ पिलाना। पथ्यमें खट्टा पदार्थ तेल लाल मिरच आदि नही खाना। इस औषधसे सफेद कुष्ठको जगह फोडा निकले तो श्वेतापराजिता के पंचांगको पानी में पीसकर लगाना।

श्वित्र कालानल तैल—एरंड के बीज तो. ८, तुलसी बीज तो ८, चकवडके बीज तो. १०, बावची तो २०, कडवी नाइ, अंकोलके बीज, कुष्ठ, चित्रक, अमलतास, पुनर्नवा चिरौंजी कसीस, वायविडंग, हरताल अरणीके मूल, प्रत्येक तोला ४ लेकर कूटकर इसमे दो रतल गोमूत्र, २ रतल दूध,

२ रतल दही, १ रतल बकरीका मूत्र और ४ रतल सरसोंका तैल सब डालकर पकाना। पानीका अंश जल जानेसे कपड्छान करना। श्वेतकुष्ठ पर लगाना।

श्वेतकुष्ठ हर लेप—बावची तो. ६, हरताल वेपकी तो. ४, मैनशील तो. ०॥, चित्रकमूल तो. ०॥, सब साथ कूटकर गोमूत्रमें पीस कर रखना और श्वेतकुष्ठ पर लगाना।

श्वेतकुष्ठ हरी सोगठी—दाडिमके फूल तो ३०, बावची तो. १० सोनागेरु, तोला १५ गंधक आमलासार तो. १५, सब साथ मिलाकर कूटकर घोंट सफेद कोयल अपराजिताके रसकी भावना देकर सोगठी बनाना। श्वेतकुष्ठ पर लगाकर उपर केलीका पत्ताका पाटा बांधना।

इस सोगठीका पानीमे पीस कर सफेद डाघ पर लगाकर शक्य हो तो केलीका पत्ता उपर रख कर पाटा बांधना। दिनमें दो दफे लगाना।

गंधक कल्प—शुद्ध गंधक, हरड, बहिडा, आंवळा, भांगरा, भिलावा, कडवी तुंबीके बीज, सब समानभाग ले कर कूट कर भांगराके रसकी और सफेद फूलकी गिरि कर्णीकी एक एक भावना देकर सूखा कर घोंट कर रखना। मात्रा ३ से ६ रती शक्करके साथ देना। रोगीको दिनभर भूखा रखकर रात्रिको भोजन देना। दिनको भूख लगे तो दुध देना। खुराकमे सुरण, दुध बेंगन, उडद मुंग, जव और चना यह देना। खट्टे पदार्थ और हरा शाक बंध करना।

प्रयोग १—छोटा उदुंबर (मों उंबरी)की छाल और बहिडा एक एक शेर लेकर क्वाथ करना। बावचीको इस क्वाथकी भावना देना। धूपमे सुखाना। पीछे पानीमे पीस कर लगाना। इससे यदि फोडा उठे तो वह फूट जाने पर चमरंगा (आवळ) मे पकाया हुआ तेल लगाना।

प्रयोग २—हरताल सोमपत्री तो ५ और बावची तो. २० सब पीसकर भांगरेके रसकी भावना देकर रखना। पानीके साथ लगाना।

प्रयोग ३—काली तुलसीके पत्ते, कलोंजीजीरा समभाग लेकर कूट कर रखना। काले तिलके तेलमें मिलाकर लगाना।

प्रयोग ४—लाल गुंजा तो. ५ कथ्था तो ०॥ पानीमे पीस कर लगाना।

प्रयोग ५— सानामुखी (मींढेआवळ) की जडको निंबुके रसमे पीसकर लगाना।

प्रयोग ६—सोनामुखी और चित्रक मूळ समभाग लेकर घोडेके मूत्रमें पीसकर लगाना।

प्रयोग ७—बावची तो ४, हरताल तो १ दाडिमके फूल तो. ४, कलौंजी जीरा तो. ८ सब साथ मिलाकर गोमूत्रमें टिकिया बनाना। पानीमे पीसकर लगाना।

प्रयोग ८—काले सापकी कांचली और नीमकी लकडी दोनोंको साथ साथ जलाकर रखना। पानीमे पीस लगाना।

निशा रसायन—तो ८० हल्दीकी खडी गांठे, और सोनपत्री हरताल, तो. २॥ महीन पीस कर दोनेको पथ्थरकी खरलमें डालना। वह डूबे इतना मूलीके पचांगका रस डालना सब रस सूख जाय जब दूसरा मूली रस डालना। इस प्रकार ७ भावना देकर छायामे सूखाकर घोंटकर रखना। दिनमें, तीन दफे १० से १२ रती पानी साथ खिलाना।



कुष्ठ—खूनका बिगाड़

कारण—अपनी प्रकृतिके अनुकूल न होनेसे खुराक और ऋतु तथा देशकाल के विरुद्ध खानपान, बहुत चिकने बहुत स्निग्ध, और अजीर्ण करनेवाले अन्नपान खानेसे, वमनको रोकनेसे, भोजन करके सूर्यकी धूप लेनेसे अनियमित भोजनसे धूपसे आकर तुर्त परिश्रम कर ठंढा पानी पीनेसे, अजीर्ण पर भोजन करनेसे नये धान्य, या दही मच्छी, बहुत खारा, बहुत खट्टा, पदार्थ सेवन करनेसे, ब्राह्मण गुरु और देवका अपमान करनेसे इत्यादि अनेक कारणोंसे वातपित्त कफ विकृत होकर रस रक्त मांस, मज्जा आदि सात धातुओं को बिगाड़ कर विविध प्रकारके कुष्ठ के रोग पैदा करते है।

चिन्ह—कपालकुष्ठ औदुंबर, मंडलकुष्ट, ऋष्यजिह्व पुंडरिक, सिध्मकुष्ट, काकण कुष्ठ, कीलासा, श्वेत यह आठ महाकुष्ठ हैं। चर्मकुष्ठ किटिभ वैपादिक, अलसक दद्रु, चर्मदल, पामा, विस्फोटक रक्सा शताह, विचर्चिका यह क्षुद्र कुष्ठ है।

पथ्यापथ्य—दस्त, जुलाब, वमन, रुकना नहि। लंघन, करना नहि। चावल, मुंग, जांगल मांसरस, परवल, सहजनाकी सींग, कड़वे पदार्थ, गेहु, पुराने धान्य, तुवरीकी दाल, शहद, शक्कर, बेंगन, करेला, आदि हितकारक हैं। कसरत, श्रम, दौड़ना, अजीर्ण करने वाला, गरिष्ठ भोजन, बाजारकी मिठाई लाल मिरच, गरम मसाला, बहुत खारा और खट्टा अचार, अति स्त्रीसंग यह हानिकारक हैं।

कपालकुष्ठ—काला, लाल मिश्रित रंगका मिट्टीकी हांडीके टुकडे जैसे लाली लिये रंगका, सूखा, रूक्ष, शूल पीडावाला होता है।

औदुंबर कुष्ठ—गूलरके फल जैसा उठा हुआ पीडा शूल, जलन लाली लिये और खुजली वाला होता है।

मंडल कुष्ठ—सफेद लाल मिश्र रंगका, जमाहुवा, मुलायम मोटा सूजन वाला, चक्राकार और इसके साथ दूसरे भी छोटे छोटे चक्राकार मंडल होता है।

सिध्म कुष्ठ—नखसे खणनेसे सफेद लाल चूर्ण जैसा पदार्थ गिरे। यह बहुत करके छातीमें होता है। तुंबीके फूलके रंगका होता है।

काकण कुष्ठ—चिरौंजी जैसे लाल रंगका, तीव्र पीडावाला और बहुत समयके पीछे पकता है। यह त्रिदोष जन्य है।

पुंडरीक कुष्ठ—सफेद रंगका लाल किनारी वाला, कमलपुष्प जैसा लाली लिये कुछ ऊंचा होता है।

ऋष्यजिव्ह—लाल कीनारीवाला, खरसट बीचमे कालासा पीडावाला, भालूकी जीभ के आकारका होता है।

एक कुष्ठ—पीडा न हो, बहुत जगहमे फैला हुआ मछलीकी चमडी जैसा होता है।

गजचर्म—हाथीकी चमडी जैसा खरसट रुक्ष होता है। खुजली आती है।

चर्मदल—लाली लिये होता है। शूल निकलता है। फोडे होवे है और स्पर्श सहन नहीं होता।

विचर्चिका—खुजलीके साथ काले स्राववाली फुन्सिया होती हैं।

वैपादिक—त्वचा और मांसको बिगाडकर हाथ और पांवमे जमे हुये दोषसे फुन्सियां उत्पन्न होती है। उसमे खुजली, जलन चमडीका फटना इत्यादि होता है। और रुक्ष होता है।

पामा—छोटी बडी स्राव और खुजली वाली फुन्सियां हाथमे होती है।

कच्छु—पामा बढकर असह्य जलनके साथ बडे फोडे होते है।

दद्रु—काले लाल मिश्रित रंगके फोडे होते हैं। और सूखा भी होता है जिसमें पानी नहीं निकलता है।

विस्फोटक—काले लाल मिश्रित रंगके फोडे होते है। और उसकी चमडी पतली होती हैं।

किटिभ—सूखे हुवे व्रण जैसा खरसट काला खुजली वाला होता है।

अलस—खुजली आती है और लाली लिये छोटी छोटी बहुतसी फोन्सियां होती है।

शतारु—पीडाकारी बहुतसा चांदावाला होता है। इसमें से लाल स्राव गिरता है।

इस प्रकार उपर बताये हुये और दूसरे भी त्वचा विकार और मन शरीरमे फैले हुये कुष्टरोग अनेक प्रकारके है। नीचे बताये हुये उपचार और औषध बहुत करके सब प्रकारके कुष्ठ रोगमे गुणकारी होते है।

गन्धक रसायन—भांगरे में शुद्ध किया हुआ गंधक तो० ७ इलायची सोंठ पीपल, काली, मिरच, तज, तमाल नागकेशर, हरड, बहेडा, आंवला

मंडूर भस्म, कुष्ट, चेपचीनी, वावची, पारद गंधककि समभागसे की हुइ कजली असगंध, शककर प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कुट कर भांगरे के रसकि भावना लेहे को धहाईमें रखकर देना। सुख जाने पर घोट कर रखना। मात्रा ३ से १२ रती तक पानी या दुध के साथ देना। सब प्रकार क कुष्टके रोग मे गुणकारी है।

कुष्टकृतान्त रस—पारद तो ८, गंधक तो १६ लोह भस्म ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, हरताल शुद्ध रससिंधूर प्रत्येक तो ४, मिलवां हरड, बहेडां आंवळा वायविडंग, ढाकक बीज नीमोलीकि गोंरी बडीकटहरी के फल मेढसीर्गी, गुग्गळ, शिलाजित, बच, हलदी, अभियाहल्दी, जटामांसी पुनर्नव मूल प्रत्येक तोला दो दो लेकर कुट कपडछान कर उसको खेरकी छाल त्रिफला, गिलोय, पुनर्नवा, भागरा, प्रत्येककी एक एक भावना देकर घोट कर रखना। मात्रा ४ से १२ रती रोगका स्वरूप देखकर एक या दो दफे पानीसे देना। उपर असनादि फांट पिलाना। सफेद कोढ, गलत्कुष्ट रगतपीत आदि खुन के बिगाडके रोग, पांडुरोग भगंदर, कृमि सूजन आदि रोगोमे भी गुणकारी है।

असनादि फांट--असन (बियो अजणियो) कि छाल, दारूकी छाल, रदन्ती क्षुप, मजीठ नीमकि छाल, बब्बुलकि छाल शतावरी सब समान भाग लेकर कुटकर रखना। एक से दो तोला रातको पन्दरहसे वीस तोला पानी में भिगो रखना। प्रातकाल में कपडछान कर शीशीमें भर देना। कूचा फेक देना। आधा सुबे आधा शाम पीनेसे खुन शुद्ध होता है। और कुष्ट के किसीभी रस रसायन औषध के पीछे अनुपान के रूपमे पिलाया जाता हैं।

महामंजिष्टादि कवाथ—मजीठ, कुडेकी छाल, गिलोय, नागरमोथ, बच, सोंठ, हलदी, दारूहलदी, छोटी कटेरीका मूल नीमकीछाल, पटोल कुटकी चिरायता भारंगी, चित्रक, वायविडंग, मोरवेल, देवदार, इन्द्रजव, भागरा, पीपल, त्रायमाण, पाढा, खेरछाल, शतावरी, हरड बहेडां, आंवळा बकाइन नीम, अंजनछाल अमलतास प्रियंगु (बडला) बावची रक्तचंदन वायवरणा दंतीमूल उदुंबर छाल, अडुसो, पर्पट सारिवा, अतिविष, धमासा, इन्द्रायण वाळा, सब समान भाग लेकर कूटकर रखना। एकसे दो तोलाका क्वाथ या फांट बनाकर पिलाना। सब प्रकार के कुष्ठ के रोगमे काम करता है दवा। कुष्ठ के औषधो के पोछे अनुपान के रूपमें भी पिलाया जाता है।

सर्व कुष्ठ हर मिश्रण—आरोग्य वर्धिनी चूर्ण तो २, अष्टामृत पर्पटी, तो. १, गंधक रसायन तो. १, सुवर्ण माक्षिक लाल तो. २ किशोर गुगळ तो. २ सब साथ घोटकर ६४ पुडी बनाना। सुबह और शाम एक एक पुडी पानी, दूध या शहदके साथ देना।

कच्छु राक्षस तैल—मैनशील, हरताळ, कसीस, गंधक, सेंधानोन, सोंठ, पेकमूल (सत्यानाशी मूल), पाषाणभेद, कुष्ठ पीपल, सफेद बछनाग कणेरमूल, चकवड बीज, वायविडंग चित्रक दंतीमूल, चकवडके नीमकी छाल प्रत्येक तो १०, आकका दूध तो २०, थुवरका दूध तो २० गौमूत्र रतल पांच, सरसोंका तैल रतल २०, पहिले सब द्रव्य कूटकर बारह घंटा पानी डालकर भिगो रखना। पीछे दूसरे दिन पकाना। पानीका अंश जल जाय तब कपडछान कर रख लेना। इसका मालीश करनेसेसब प्रकारके त्वचा रोग मिटते है।

कुष्ठहर लेप—बावची तो २०, सोंठ, हरताल, हरड, करंजके बीज, सरसों, हलदी, सेंधानोन, वायविडंग, चकवड बीज, नीमके बीज बच, माल-कांगनी, पारद, गंधक, सहजनेके बीज प्रत्येक तोला पांच पांच सब कूटकर रखना गौमूत्र अथवा पानीके साथ पीसकर सब कुष्ठके रोगपर लगाना।

प्रयोग १—मनुष्यकी हड्डी श्मशानसे लाकर पीसकर तेलमें मिलाकर लगानेसे काला कुष्ठ मिलता है।

प्रयोग २—नीमके बीज, याने नीमोलीकी गीरी एकसे प्रारंभ कर हमेशां एक एक नीमोला बढाते हुये एक दिनको १०० तक खिलाना। पीछे ९९, ९८ इस तरह उतरते उतरते एक गीरी आ जानेसे बंध करना। सब प्रकारके कुष्ठ रोगमें बहुत लाभ होता है।

प्रयोग ३—गद्धेके लीदेको जलाकर गायके मक्खनमें मिलाकर सब कुष्ठमें लगाना। साबर सिंग।

४ सेमरका सिंग पानीमें एक तोला तक घोस कर पिलाना एक मास पिलानेसे वातरक्त रगतपीत मिटती है।

प्रयोग ५—करुखाका रस तो. १, उदुंबरकी छालका रस तो १, ढाकके मूलका रस तो १ साथ मिलाकर देना। एक मास तक पिलानेसे रगतपीत, वातरक्त और कुष्ठ रोग मिटता है।

प्रयोग ६—उंधाफूली के पंचांगको पीसकर मक्खन जैसा घट रखकर कुष्ठपर बांधना। चांदी अगमें रूझ आती है और रगतपीत वातरक्तमे फायदा होता है।

प्रयोग ७ —शेषपुदर, मेनागेरु गोपीचंदन सब समानभाग लेकर पानीमें पीसकर मलम जसा घट्ट बनाकर मालकांगनीके पांच सेर तेलमें पांच सेर गौमूत्र उपर लिखे तीनो द्रव्य डालकर पकाना। पानीका अंश जलजाय तब तेल कपडछान कर रख लेना। यह सब त्वचा रोगमें लगाये जाते हैं।

प्रयोग ८—पारेवा (कबूतर)की विष्टा-चरक पीसकर ४ से ६ रती दिनमें दो वखत पानीसे देना। ४९ दिन तक देनेसे कुष्ठका रोग मिटता है। उपर चना, मुग कुलथीकी रोटी खिलाना।

अमृत भल्लातक (र. मं कुष्ठ) भीलावा तोला ६० टुकडा कर के घी तोला १२० मे पकानेसे भीलावाका सब रस घीमे आ जायगा। पीछे गिलोय हरी रतल ५, मजीठ रतल २ पपंट रत्तल १ का काथ कर कपडछान कर उसमे उपर बनाया हुआ भीलावा का घी, गाय का दूध ६॥ रतल, गुड रतल ३०, शक्कर रतल २॥ मिलाकर पकाना। घट्ट होनेसे नीचे लिखे द्रव्योका चूर्ण डाल ६ घंटा हिला कर २४ घंटे के पीछे चिनाइ भिटीकी बरणी में भर देना। डालने के द्रव्य-क्षीली गर्भ अतिविष गिलोय बांवची चकवड बीज नीमेंाली की गीरी हरड बहेडा आंवळां मजीठ काली मीरच सोंठ पीपल अजवायन सेंधानौन नागर मोथ इलायची वच नागकेसर पाट तमालपत्र वाळा चंदन, गोखरु कचूरा रक्तचंदन प्रत्येक तोला पांच पांच लेकर कूटकर उपर के अवलेह मे मिलाने का है। हमेशा १ से २ तोला खाना। सब प्रकार के कुष्ट खूनका बिगड मसा ववासर आदि मिटते हैं। यह अवलेह चलता हो जबतक पहेरेज रखना। कसरत नहि करना। सूर्यका धूप या अग्निका ताप नहि लेना। खट्टा पदार्थ अचार मास दहि नहि खाना। तेल मालीश नहि करना स्रीसंग नहि करना।

स्वायंभुव गुगळ—(स्वयभु गुगळ) भाव प्र अ.४) बावची तो २०, शिलाजीत तोला २०, गुगल तोला ४०, माक्षिक भस्म तो, १२, लोह भस्म तोला ४, गोरखमुंडी तो ४ हरड बहिडा आंबळा करंज के पत्ते खेरकीछाल गिलोय निसोथ दंतीमूल नागरमोथ वायविडंग हलदी कुडेकी छाल नीमकीछाल चित्रक अमलतास प्रत्येक चार चार तोला कूट मिलाय गोळी ६ रत्तीकी करना सुबे शाम गोळी २ पानी साथे देना उपर बन शके तो गौमूत्र ५ तोला सुबे १ वखत पीना। कुष्ट रगतपित्त वातरक्त के श्वित्र कुष्ट पांडु उदररोग गुल्म आदि मिटते हैं।



दद्रु-दादर

कारण—बहुत खटटे बहुत नमकीन बहुत तीखे पदार्थ खानेकी आदत से खुन बिगाडने वाले आहार विहारसे यह रोग होता है। प्रारंभको दाद लाल होती है उसमेंसे पानी निकलता है वह पुरानो होनेसे कालो और सुखी होतो है।

दद्रुहर मिश्रण—आरोग्य वर्धनी चूर्ण तोला ३, अष्टामृत पपटी तोला १ किशोर गुगल तो. २, गंधक पिष्टी तोला १, लोह रसायन तोला १ सब साथ पीस ६४ पुडियां बनाना। २ वख्त पानी या दूधसे देना। दाद पामा खस त्वचा विकार मे उतम गुणकारी है। अमृता गुगळ २ से ३ गोली पानीसे दो वख्त देना।

दद्रुघ्न रसायन—पारद गंधक मंडूर भस्म सावरसींग भस्म ताम्र भस्म प्रत्येक एक एक तोला, आक के दूध मे शोधा हुआ रसकपूर तोला ०॥ आधा, हरड बहेडा आंवला मंजीठ कचुरा पुनर्नवा अटामासी अजमोद कलोंजीजीरा चोपचीनी अनंतमूल चंदन रसोत सफेद हलदी कुटकी प्रत्येक दो दो तोला सब साथ कूट कपडछान करना।

पहिले गंधक मे रसकपूर घोंट एक कर देना पीछे उसमे पारा डाल कर घोटना १ घटा तक घोटकर पीछे मंडूर सावरसींग ताम्र डालकर घोटना। पीछे १५ द्रव्यका चूर्ण डाल करके नीमकी छालके क्वाथको भावना देकर २ रती की गोली बनाना। मात्रा २ से ४ गोली पानीसे २ वख्त लेना उपर दुध पीना। सादा सम खुराक लेना पहेरजमे जबतक दवा चलती हो लाल मिरच खटा पदार्थ बजार किं मीठाइ स्वाद शवकि चीजे कम खाना।

कुष्ठादि लेप- कुष्ठ, वायविडंग, बावचीं, चकवड हलदी, सेंधानोन सरसो रीठा, पारद, गंधक, सब सम भाग लेना पारा गंधक की कज्जली बनाकर पीछे दूसरी वस्तु महीनकर मिलाकर रखना। पानीसे या गोमूत्र से पीसकर लगाना उपर केली के पत्तेका टुकडा ढक कर पाटा बांधना २ वख्त रीठेके पानीसे या साबुन से साफ करते रहना।

दरदादि लेप—हिंगूल मैनशील गंधक पारद पीपल बछनाग वायवीडंग हलदी कालीमिरच हरड सोंठ नागरमोथ समुद्रफेन बावची अमलतास चकवड बीज सब समान भाग लेना। पहिले पारद गंधक की कज्जली बनाकर पीछे उसमें दूसरी महिन की हुइ वस्तु मिलाकर गोमूत्रसे अथवा समुद्रके पानीसे घीसकर लगाना।

दद्रुघ्न सोगठी—गंधक वरखीहरताल नीलाथोथा छोटी हरड सब समान भाग लेकर पीसकर निंबू रससे सोगठी बनाना। पानी या निंबू रसमें घेंटकर लगाना।

गंधकादि लेप—गंधक शक्कर गोंद सोहागा समान लेकर कपडछान कर निंबूके रसमे मिलाय लगाना।

एलियादि लेप—एलिया चक्वड बीज गंधक लोबान प्रत्येक दश दश तोला माजुफल नग ७५ असेलिया के बीज तोला २॥ सब साथ कूटकर कपड छानकर निंबू रसमे घोंट लगाना।

रालादि लेप—सफेद राल एलियो लाख गंधक प्रत्येक दस दस तोला, चनेकी दाल तोला २० को भिगोकर पीसकर उपरके सब महीन किए हुवे द्रव्य मिलाकर सूख जाने पर कपड छानकर रखना निंबू रससे या पानीसे घोटकर लगाना।

दादके सादे प्रयोग

प्र-१ सोनामुखी (मीढीआवल) के मूलको निंबू रसमें घोंटकर लगाना।

प्र-२ हिंगूलको निंबू रसमें घोंटकर लगाना।

प्र-३ ढाकके बीज निम्बु रसमे घोंट कर लगाना।

प्र-४ वांझ ककोडाके पत्ते पीसकर लगाना।

प्र-५ चक्वड के बीज थूहरके पत्ते के रसमे ३ दिन भिगो रखना पीछे दाद पर गायका गोबर घीसकर महीन पीसा हुवा चक्वड बिज लगाना।

प्र-६ शक्कर और छोटीहरड (हीमजी) समभाग पीसकर निम्बु के रसमे घोंट लगाना।

प्र-७ बडीकटहरी के पके हुवे फल लेकर पातालयंत्रसे अर्क निकालके लगाना।

प्र-८ लोबान ओर नमक निंबू रसमें घोंटकर लगाना।

प्र-९ उंटका ताजा लींडा दाद पर घीसना ७ दिन तक हमेशां ताजा लींडा घीसना दाद मिटे।

प्र-१० गुंजा अफीन ढाकके बीज पर्पट निंबू रससे लगाना।

प्र-११ चमारदूधली का दूध ७ दिन लगाना।

प्र-१२ चकवड बीज तोला १, एलुवा तोला १, लाख तोला १. आंवला तो. २ सब साथ कूट गायकी छांछमे पीस लगाना।

प्र-१३ शेवगुदर कत्था शक्कर गंधक सोहागा नवसार नीलाथोथा अफीम सम भाग लेकर निंबू रसमे घोटकर लगाना।

प्र-१४ एलीया तोला २ चकवड बीज तोला १० महिन पीसकर गलगोटा पीला फुलकाके पानके रसमे घोटकर लगाना।

प्र-१५ दाद हरी हो, खुजलीसे पानी निकले उसपर लोबानका महीन चूर्ण लगाना।

प्र-१६ गंधक सोहागा कत्था गुगल शक्कर समभाग मिलाकर कूटकर निम्बु रससे लगाना।

प्र-१७ अफीम और राइ सम भाग कूटकर गुड के पानीमें मिलाय लगाना।

प्र-१८ जमालगोटा की गिरी एलीया समभाग लेकर निम्बु रसमे घोट लगाना।

किटिभ खर्जु खरजवा

चिन्ह—हाथ पाँव कानकी किनारी मस्तक सिर पावके तलुओ घुटन के नीचे का भाग इत्यादि अंगो मे होता है। जिससे फून्सीयां होकर फूट कर पानी स्राव निकलता है। कोई सूखा होता हैं। प्रारंभमे लाल होकर सूजन होता है। पीछे खुजली आते आते वह चमडी कठिन सूखी काली बेडौल होती है। यह रोग २–५–१० या अधिक साल तक रहता है।

खर्जुनाशन मिश्रण—योगराज रसायन तोला १, अमृता गुग्गल तो २, शंशमनी नं. १ तो. १, आरोग्यवर्धनी चूर्ण तो. २ लोह पर्पटी तो. १ सब साथ पीस घोंट कर ७० पुडियां बनाना। २ वखत पानीसे या महामंजिष्ठादि क्वाथ से देना। अथवा सब पीसकर शीशी में भर देना। पीछे ८ से १० रती सुबे और शाम लेना। १–२–३ ४ मासतक सेवन करना जितना पुराना हो उतना ज्यादा समय तक सेवन करना चाहिये। खरजुआ दाद पामा विस्फोटक खुजली बिगाढ आदि मिटता है।

खर्जुनाशन तल—गौमूत्र, कनेर के पत्तेका रस, गायके गोबर का रस प्रत्येक [illegible] पल अथवा दो दो रतल लेकर लोहेकी कढाइ में डालकर उसमे काली मिरच सफेद बछनाग मनशील नागरमोथ हलदी दारुहलदी निसोथ रक्तचंदन देव-दार सफेद चंदन कचूरा प्रत्येक दो दो तोला लेकर कूटकर उपरके कल्क बनाकर कढाइमे डालकर और सरसोका तेल रतल ४ डाल कर मंद आंचमे पकाना। पानीका अंश जल जाय जब ठंडा होनेपर कपडछान कर रख छोडना। लगानेसे खरजुआ पामा दाद गजचर्म त्वचा विकार आदिमे उत्तम फायदा करता है।

नीचे लीखे हुवे सादे प्रयोग खरजुवा दाद त्वचा विकार आदिमे उत्तम फायदा करते है।

१ राजबाइन जलाकर पानीके साथ पीस लगाना उपर एरंडका पता बांधना।

२ नीलाथोथा, फटकी एक एक तोला लेकर महीन पीस कर २० तोला गाय के घी अथवा मकखन में मिलाय लगाना।

३ शाळा नामक कांटावाला मूसक जैसा जनावर होता है जो सर्पको अपने कांटाओसे मारता है उसे जला कर एरंड तेलखे मिला कर लगाना।

४ उघाफुली अंघेपुष्पी का पचांग पीस लगाना।

५ सूरज काचबो कूर्म जो जमीन पर रहता है उसकी ढालको कूडा मे पेककर जलाकर घी मिलाय मलम बनाकर लगाना चाहे जितना पूराना खरजवा ४ दिनमे मिटता है।

६ खारीक के या खजुर के बीज को कढाई मे जलाकर सरसों के तेल मे मिलाय लगानेसे व्रण फोडा गुमडा मिटते है ।

७ खजूर तो ५, लशून तो. १। हिंग तो १। एकत्र कर पीस कर पोटीस की तरह खरजुआ पर बांधना। ३ दिन बांधने से खरजवा मिटे ।

८ सिंदूर दारुहल्दी गंधक पारा कलौंजी जीरा कालेमिरच जीरा मेनसील सब समान भाग लेना पारा गंधककी कजली बनाकर उसमे दूसरी चीज एकके पीछे एक डाल घोंट कर गाय के घी से मलम बनाना खरजवा पर लगाना।

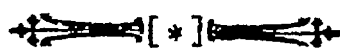
९ मींढा के बीजका अर्क पाताल जंत्रसे निकाल कर लगाना।

१० कली मिरच तोला १०, आमला तो २० दोनो को साथ जलाकर उसमे लोहेके बरतन पर पकाया हूआ नीलाथोथा तोला १० मिलाना इसमे गायका घी मिलाकर मलम बनाना खरजवा पर उतम है।

११ खाड तोला ०॥ नीलाथोथा रत्ती ८ साथ मिलाय तांमे के बिना रांग लपेटे बरतन मे डाल मखन डाल तांमेके लोटेमे मर्दन करना खरजवा में उत्तम हैं।

१२ कडवी तुंबा के बीज जलाकर गायके घीमे मिलाकर मलम बनाकर लगाना खरजवा मिटे ।

१३ आंवला पोस्तका डोडा हलदी चोकनी सुपारी प्रत्येक एक एक टांक लेकर संपुट मे जलाना पीछे उसमे काली मिरच टांक ०॥ नीला थोथा टांक ०॥ फटकी टांक १ महीन पीस गायके घीसे मलम बना कर लगाना खरजवा मिटे ।



पामा विचर्चिका खुजली चित्री आदि त्वचा विकार

कारण चिह्न—खानपानमें असमाल रखनेसे यह रोग होता है। पामा बहुत करके हाथ पांव और अगुलीयोंके बीचके भागमे होती है। यह चेपी रोग है। खुजलने रहेनेसे जांग पांव गुह्य भागमे भी फैलती है।

पामाहर मलम—बावचा असीयाहलदी गंधक प्रत्येक पांच पांच तोला नीलाथोथा तो १।, सब साथ महीन पिस धतूरेके फल मे भर उसे कपड मिटी का उपर मिट्टी लगाकर एक खड्डेमे रेती भर उसमे रख तीन छाणाका अग्नि देना। स्वांगशीत होनेसे महीन कर सरसोंके तेलमे घोटकर लगाना पामा मिटे।

रसादि मलम—पारद गंधक जीरा शाहाजीरा हलदी दारुहलदी मैनसील काली मिरच सिंदूर सम सम भागसे लेकर महीन पीस गायके घीमे मलम बनाकर लगाना पामा मिटे।

अर्कतेल—आकके पके हुए पान कूट कर निकाला हुआ रस शेर १, हलदी शेर ०।, सरसोंका तेल शेर १, सब साथ मिलाय लोहेकी कढाइमे डाल पकाना पानी का अंश जल जाय जब ठंढा होनेसे कपड छान कर पामा खुजली खस पर लगाना।

गंधकादि मलम—गंधक तोला ५, नीलाथोथा पकाया हुआ तोला ५ नहाने का साबून तोला २५, गोपी चंदनकी मिटटी तो २५ सब साथ महीन पीस गायके मक्खनमें मिलाय मलम बनाना पामा-खुजली अच्छी होती है। बच्चोंकी पामा के लिये यह मलम अच्छा है।

१ जीरा तोला १६ को महीन पीस उसमे सिंदूर तोला ८, धतूरेका बीज तो ४, गंधक प्रत्येक तो ४ मिलाकर पानी मिलाकर सरसोंका तेल तोला ८० मे पकाना पामा जाय।

२ सेंधानोन चकवडके बीज सफेद सरसो पीपल समभाग ले कूट कर रखना निंबुके रसमे अथवा सुरतेमे अगर खट्टी छांछमे मिलाय लगाना पामा मिटे।

३ मूलीके बीजको अपामार्ग के रसमे घोटकर अथवा केलेके रसमे हलदी को पीस लगाना विचर्चिका पामा जाय।

४ पारा गंधक हरताल मैनसील चावल बावची होरादखण नीलाथोथा राल सिंगरफ करथा कपीला नौसार सब सम भाग लेकर पहिले पारा गंधकको कज्जली कर पीछे हरताल मिलाना पीछे दूसरी सब वस्तु मिलाना निम्बूरस या पानीमे लगाना पामा जाय।

६ **निशादि चूर्ण** हलदी बावची नीमके पत्ते चावल समभाग कूट रखना ०। से ०॥ तोला चूर्ण गौमूत्र के साथ २ वक्त खानेसे ७ दिनमे पामा मिटे।

७ पमासा का चूर्ण कर उसमें मिश्री समान भाग मिलाय रखना। हमेशां प्रातःकाल ०॥ तोला पानीके साथ लेनेसे शरीरकी खुजली खाजुआ लुखस शीतपित्त-शीलस १४ दिनमे मिटे।

८ आंगरा का रस शरीर पर मर्दन करनेसे लुखस मिटे।

९ खारेकका २ टुकडा कर बीज निकाल उसको निंबूरसमे भिगोकर सुखाना ३ दफे कर पीछे निंबूरसमे सेधानोन और काली मिरच पीस डाल खारेक डुबो रखना। हमेशां ४ टुकडा खा जाना। वायु पित्तकी खुजली मिटे

१० अजवायन (अजमा गु.) कूटकर उसमे गुड घी मिलाय गोली बनाना हमेशा १ तेला खानेसे ८ दिनमे हाथ पांवकी खुजली मिटे।

११ हरड बहेडा आंवला पारा गंधक सिंदूर समभाग लेकर गायके घीमे मलम कर लगाना पामा मिटे।

१२ कच्चा सोहगा पीस तामेकी बडी थालीमे डाल निंबूरस मिलाय तामेके लोटेसे ६ घंटा घोंटना लगानेसे अथवा मूली के पानका रस मर्दन करनेसे विचर्चिका (करोळिया मिटे।

१३ चकवडका बीज, एरंडीके बीजकी गिरी मालकांगनी बावची आंवला प्रत्येक तोला १० एलीया तल सरसों सेधानोन हलदी दारुहलदी नीलाथोथा प्रत्येक तोला ५ सबको कूट मिलाकर दही का पानी रतल १० मे रख चिनाइ मिट्टीकी बरणी मे भर मुख बंधकर ३ दिन तक धुप मे रखना। पीछे शरीर पर मर्दन करनेसे चांदा व्रण विचर्चिका पामा लुखस खुजली मिटे।

१४ केलके पान सुखाकर उसको जलाकर राख करना उसमे सम भाग हलदी मिलाना पानी मे पीस लगानेसे पामा खुजली त्वचा रोग मिटे।



व्रण गुमडा

व्रण गड गुमड चिन्ह—जब किसी भागकी सूजन दाह होकर अन्दर पकता है जब उसे गड कहते है। किसी समय तीक्ष्ण दाह होकर और कभी बिना दर्द गडकी सूजन होती है। पकने पर गाढा हरा पीला सफेद रक्त मिश्रित और कभी पतला पय निकलता है। दाह होकर गड होता है जब बुखार आता है, उस भागमे पीडा होती है। पका नहीं जब तक कठिन लगता है। पकने लगे जब शूल पीडा बढती है। अंतमें पक कर पस निकलता है। यह सारे शरीर में और कभी किसी एक अंगमे होता है।

मूढ व्रण—(मूढ गुमडा) शरीरके किसी एक भागमे सूजन होकर पीडाके साथ व्रण निकलता है। कमजोर अथवा पुष्ट मनुष्यों को होता रहता है। स्वच्छता न रखने वाले बच्चोंको ज्यादा होते हैं। आमके सडे फल खानेसे, खट्टे पदार्थ खानेकी आदत मे खून बिगडनेसे, मधुमेहसे गड गुमड हुआ करते है। पिछे उस स्थानकी चमडी लाल होकर सूजन होता है उसमे पीडा शूल निकलता है ये दो दिनमे पक कर फूटता है अगर बैठ जाता है। पीडा बढती। बुखार आता है। निद्रा नहि आती।

व्रण चांदां घाव चिन्ह—शरीर पर विषधि पांठ पाठा गुमडा पककर फूटने के पीछे बहुत समय तक रुझाता नहि है चांदा पडता है उसे व्रण कहते हैं। इसी तरह शरीरका कोई अंग काटने से मोचनेसे घीसानेसे भी व्रण होता है। जिस जगह व्रण होनेका हो वहा सूजन होकर पीछे वहा फटकर वहां चांदा पडता है। अन्दर पकने के बाद समयसर फोडकर पस निकालनेमे नहि आता तो वह बस-पस नाडीओमे उतर कर नाडी व्रण उत्पन्न करता है।

गंभीर व्रण-भगन्दर—जो व्रण चांदा बहुत गहरा हड्डी तक पहुंचा हो रुझाता नहो हड्डीको सडाता हैं वह गंभीर व्रण कहा जाता हैं।

माठी लंबी बीमारी से रोगीका पीठमे कम्मरमे हड्डीके स्थानमे माठा चांदा पडता है। पहिले लाल चांदा होकर पीछे वह भाग सडकर क्षीण होता है।

पाठां-कारबंकल चिन्ह—मधुमेह वालोंका, मूत्राशयके रोगीको, खून बिगाड वालोंको, वृद्धोंको कमजोर को यह व्रण होता है। यह एक प्रकारका बडा फैला हुआ गहरा व्रण-गुमडा है। इसमे पहिले चमडी लाल होकर जलन होती है। उसके बीचमे कठिन हड्डी जैसी चपटी बडी ग्रन्थीयां गांठे होती है। वह फैलाता हुआ बडा होता है जामुन रंगका दिखता है। कुर्म कांचवा की पीठ

जैसे उपसा हुवा शोथ होता है । वह फूटनेके पीछे छोटे छोटे छिद्र पडते है । उन छिद्रो के चारो ओर कि चमडी सडकर निकल जाती है और वहां खड्डा पडता है । पाठां बहुत करके पीठ कि करोड गरदन कम्मर मे होता है। कभी कुलाके बीचमे हाथ पांव छाती पेट पर भी होता है ।

पथ्यापथ्य—सब प्रकारके व्रणोमे वमन कराना जुलाब देना लंघन कराना । आवश्यकता लगते शस्त्रकर्म-ओपरेशन या दाभ-अग्निकर्म कराना या क्षारका उपयोग कर फोडना । चावल गेहु जव जवारी मुग चना तूरी परवल सहजनाफींग छोटी मूली तिलका या सरसोंका तेल बेंगन करेला सूरण पपडी घी शहद दूध हितकारी है । बहूत तीखा खट्टा अचार आदिका त्याग करना ।

व्रण फोडने के लिये—हाथीदांत को चंदन की तरह घिसकर व्रणके उपर एक इंच घेरेकि टिकिया (चांदलो) करना ७। घंटामे व्रण फुट जाता हैं ।

व्रण फोडने का मलम—दतीमूल चित्रक थूहरका दूध आकका दूध भीलावां की गिरि कासीस सेंधानोन सब समभाग मिलाना । लगानेमे व्रण फुट जाता है ।

व्रणसे बिगाड निकालने की पोटीस, व्रण फुटने के पीछे सब बिगाड निकालने के लिये नीमके पत्तेको और बेर बदरी के पत्ते को पीस गर्म कर पोटीस बांधनेसे सब बिगाडको खींचकर बहार निकालती है । ६ दीन करनेसे व्रणमें का सब बिगाड निकल जाता है ।

बिगाड निकालनेका लेप—तिल नमक हलदी निसोथ नीमके पते सब समभाग कूट कर उसमे घी मध मिलाय गर्म कर मोटा पोटीस जेसा लगानेसे बिगाड निकल जाता है ।

व्रण रोपण के लिये—बड के अंदर की छाल, पीपल (अश्वत्थ) की छाल गूलरकी छाल सब साथ कूट गाढा लेप करनेसे रुझ आती है ।

व्रणरोपण लेप—पीपलकी छाल नीमकी छाल बबूलकी छाल हरड तुलसी के पत्ते मरवा (मरूवक)के पत्ते सब कूट कर लगानेसे व्रणमे रुझ आती है ।

व्रण पकाकर फूटकर रुझ लानेका उपाय—सखिया सोमल नीलाथोथा कली चूना सम भाग ले प्रत्येक अलग अलग पीस पीके मिलाय पानीमे सोगठी बनाकर रखना । उपर एक लेबील लगा रखना । जरुरत हो जब गौमूत्रमें घीस दिनमें २ या ३ दफे व्रण पर लगानेसे पक कर फूट जाता है । फूट जानेके पीछे

चावलको पकाकर दहीमे मिलाकर गरमागरम व्रण पर पोटलीकी तरह बांध पाटा बांधना । एक दिनमे ४ दफे दही चावलका पाटा बांधनेसे तीन चार दिनमे रुझ आ जाती है । गड गुमड बदगांठ बांवलायी रसोली मधा मरनीगर गांठ नहि पकते हुए व्रण पकाफ़ीर इतने दरदोमे कि जिसको पकाकर फोड कर रुझ लाकर मिटानेकी जरुरी है उस पर यह प्रयोग करना ।

व्रण बैठा देनेकी पोटीस अरणी देवदार सोंठ भारंगी रास्ना छोटी कटेरीके फल मूलठी के मूल सब सम भाग कूट कर पानी या दूधमें पीस गर्म कर पोल्टीस (लोपरी) की तरह लगाकर पाटा बांधना । ३ या ४ दिनमे व्रण बैठ जाता है ।

व्रण पकानेकी पोटीस—तिल अलसी कूटका गेहूका आटा तीनो समभाग ले कर उसमे नमक १ तोला डालकर दहीमे मिलाय गर्म का पोटीस (लोपरी) रख पाटा बांधना । ५ से १० दफे बांधनेसे व्रण पक जाता है ।

व्रण फोडनेका लेप—करंज बीज चित्रक दंती मूल भिलावाकी गिरी कनेरका मूल कबूतरकी चरक सब समान भाग लेकर कूट पानीमें मिलाय गर्म कर लेप कर पाटा बांधना व्रण फूट जाता है ।

आगली-पट्टी-मोम राल और घीको साथ मिलाय गर्म कर कपडेपर लगा देना पीछे व्रण पर वह पटी लगानेसे रुझ आती है । यह पट्टी बातकी पीडा शूल को भी शांत करती है ।

रोपण मलम—राल मोम हीरादखण कपीला मोदार कायफल प्रत्येक बारीक कर मिलाना पीछे उसमे नवसार तोला १ मिलाना पीछे गायके घीसे मलम बनाना । लगानेसे व्रण चांदी पाठा रुझाते है ।

रुझ लानेका मलम-सफेद राल शेर १ तिलका तेल शेर ४ को गर्म कर पीसी हुइ राल डालकर पिघल जानेसे टोपमे भरे हुए ठंडे पानीमे डाल देना । मलम जैसा बन जाता है । वह जखम चांदा, अग्नि आदिसे जले हुये पर और पाठा आदि पर लगानेसे रुझ आती है ।

जात्यादि मलम— जुइ नीम, पटोल प्रत्येकके पान, दारु हलदी, मुलेठी, हलदी, कुटकी मजीठ, नीलाथोथा, सारिवा, करंजबीज, प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर महीन करना । गायका घी रतल ५ लेना । घी गरम कर उसमे मोम तो० १० डाल पिघल जाने पर सब चीजें डालकर पकाकर आधा

घंटा तक हिलाते रहना । पीछे चुल्हेसे उतार कर ठंडा हो जब तक हिलाते रहना । सब प्रकारके व्रण, चांदा, इत्यादिमे लगाना ।

जात्यादि तैल—मोमके सिवायके ऊपर लिखे जात्यादि मल्हम के सब द्रव्य ९० रतल पानीमे ५ रतल हरेक तेलमे पकानेसे जात्यादि तैल बनता है । सब प्रकारके व्रणोंपर लगाना कपडेके टुकडे पर छिडक कर व्रण पर रख किसी वृक्षका पत्ता बधकर पाटा बांधना । दिनमें दो दफे रीठे के पानीमे या सोडा के पानीसे धो कर लगाते रहनेसे अच्छा होता है । जात्यादि मल्हमका भी इसी तरह उपयोग करना ।

व्रण रक्ष तैल—कलिहारी (सफेद वछनाग) कुष्ठ गिलोय, शिंगिया, (काला वछनाग) हिंग दुर्वा मजीठ करंजके बीज, ढाकके बीज ढाकके मूल, असगंध नागरमोथ, नीलाथोथा, एलुआ, (एलोये) हल्दी, ककडाशिंगी, मैनशील, हरताल सोंठ, पींपल कालीमिर्च, प्रत्येक द्रव्य चार चार तोला लेकर गौमूत्रमें महीन पीस कर, गौमूत्र रतल चार डाल पकाना । पानीका अंश चल जाय जब ठंढा होने पर कपडछान कर रख लेना । जात्यादि तैलकी तरह इसका उपयोग करना । व्रण चांदा, पाठा आदि मिटते है ।

व्रणमार्तंड रस—पारद तो ४, गंधक तो ८, लोह भस्म तो २॥, ताम्र भस्म, सोंठ. पींपल, कालीमिर्च प्रत्येक दो दो तोला, हरड बहेडा आंवला प्रत्येक चार चार तोला शिलाजित ९ तोला, गुगळ २४ तोला, नागरमोथ, कुटकी, गिलोय, चित्रक वायवडंग इंद्रायण के फल, कुष्ठ, हलदी, देवदार प्रत्येक चार चार तोला सब कूट कपड छान कर नीमके पत्ते के रसकी और अनंतमूलके क्वाथकी एक एक भावना देके छायामें सुखाकर घोटकर रखना । ६ से १० रती पानी या भारंगी के अथवा श्री बाहुशाल गुड अथवा कटकारी अवलेहके साथ देना । व्रण पाठा चांदा । खूनका बिगाड गल्गूमड आदि मिटते है ।

व्रणहर मिश्रण—अष्टामृत पर्पटी तो १, अमृता गुगळ तो २, सिंहनाद गुगळ तो १, पुनर्नवा गुगळ तो १ शिलाजित तो २ सब साथ पीस ६४ पुडी बनाना । सुबह शाम पानी या महामंजिष्ठादि क्वाथके साथ देना ।

व्रणरोपण मल्हम—कापूसके पानका रस तो. २० शंखजीरा तो १, राल तो. ०॥ बंग भस्म तो. २, मोम तो २, गायका घी तो २० में कापूसके पानका रस डालकर पकाना । पानीका अंश जल जाय जब राल और मोम डालकर जल जानेके बाद शंखजीरा और बंग भस्म डालकर हिलाना । ठंडा ... ...नमे रख छोडना । व्रण चांदा वगरह पर लगाना ।

सिंदुरादि रोपण मल्हम—सिंदूर तो २ मोदार तो. २, वंग-भस्म तो. १, हिंगुल तो. ४, मुर्गी के अंडेके छिलके तो ०॥, मोम तो. ४ गायका घी रतल १, घी गरम कर मोम डाल मिल जाने पर दूसरी महीन की हुई वस्तु डालकर हिलाते रहना। चादा पाठा व्रण गूमडा आदिमें रूझ आता है।

रोपण मल्हम—करंजका तेल तो. ४८ गरम कर उसमें गुड तो ४ डालना। मिल जाने पर सिंदूर तो १२ डालकर तैयार करना। इन प्रकारके व्रणको रूझ आता है।

व्रण के सादे उपचार

१ खजूर तो १०, और कपडा धोनेका देशी साबुन तो. ५ महीन पीस मिलाकर पोटीस जैसा बनाकर व्रण पर बांधनेसे फूट जाता है पीछे रोपणका उपचार करना।

२ गुगलको जलाकर घीमें मिलाकर लगानेसे व्रण फूट जाता है और पीछे चौद दिन तक लगाते रहनेसे बिगाड निकल कर रूझ आता है।

३ हीराबोळ को पानीमें पीसकर लुवदी जैसी बनाकर लगानेसे व्रणकी गांठे बैठ जाती है।

४ पारद तो १॥, कथ्था तो १॥, राल तो. १०, मोचरस तो १॥, सब साथ बारह घंटा तक घोट कर एक करना उसमें घी आवश्यकतानुसार मिलाकर फिर बारह घंटा तक घोटना। लगानेसे सब प्रकारके व्रण मिटते हैं।

५ दाडिमकी छाल, करंजके बीज, आंवळा, ढाकके फूल, महेदी सोराखार प्रत्येक तो २॥ कूटकर घोटकर उसको भेडके दूधमें पीसकर लगानेसे सब प्रकारके व्रण मिटते हैं।

६ बब्बुलकी पत्ती पीसकर मल्हम जितना गाढा रखकर व्रण पर बांधना। गांठ गुमड पाठा वगैरेह मिटते हैं।

७ कथ्था और गुगळ दोनों समभाग लेकर पीसकर नीमके पत्तों के पानीमें दो दो रुपियाभरकी गोगठी बनाकर सुखाना। पानीमे घीस कर व्रण वगैरेह उपर लगाना।



नासुर—नाडीव्रण

चिन्ह—व्रणकी जगह शोथ होता हैं। और वह अंदरके भागमें पक जाने पर भी उसे फोडनेमें विलंब करनेसे उसका पस (पूय)-परु-हो जाने पर नीचे उतर कर मांस शिरा स्नायु संधि हड्डी और कोठाके मर्मभागको भेद कर छिद्र कर अंदर पहुंचता है पीछे। वह छिद्र पोली नलिका (नली) जैसा बनकर उसमेसे पस निकलता रहता है।

नाडीव्रण हर मिश्रण १— व्रण मार्तंड तो १, लोह पर्पटी तो ३, किशोर गुगल तो. १, कांचनार गुगल तो. २, हरताल भस्म तो. ०॥, गंधक रसायन तो. १ सब साथ घोंटकर ६४ पुडी बनाना। दिनमे दो दफे पानी या महामंजिष्ठादि क्वाथ के साथ देना। सब प्रकारके व्रण चांदा, पाठा मिटते हैं।

प्र. १—चंद्रप्रभा गोली ३ पीसकर या चाबकर पानीसे उतारना उपर तीन गोली कैशोरादि दूधके साथ खडी ही निगल जाना। पीछे दूध पीना। रातको आरोग्य वर्धिनी गोली ३ से ४ पानीसे लेना। यह प्रयोग १४ से २१ दिन तक करनेसे सब प्रकारके व्रण चांदा वगैरेह मिटते हैं। मल्हम तैल आदि बाह्योपचार साथ करना।

नाडीव्रण शामक मिश्रण २—सुवर्ण पर्पटी तो १ सिद्ध हरताल तो. ०।, चंद्रप्रभा तो २, योगराज रसायन तो २ शिलाजतू प्रयोग तो. १ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना। दिनमे दो दफे पानी दूध या घी के साथ लेना। उपर कटकारी अवलेह अथवा च्यवनप्राश जीवन १ से २ तोला खिलाना। सब प्रकारके नाडी व्रण चांदा अस्थर खुनका बिगाड आदि मिटते है।

नाडी व्रणांतक गुगल—पारद तो. १०, गंधक तो. २०, दोनोंकी कज्जली करना पीछे हरड बहिडा आंवला नागरमोथ वायविडंग गिलोय इलायची देवदार पाषाणभेद सारिवा इन्द्रायण के फल हल्दी दारुहल्दी सोंधानोन शिलाजीत माक्षिक भस्म मंडूर भस्म प्रत्येक तो. ५, गुगल तो. ८०, गायका घी तो. १० सब साथ कूटकर पुनर्नवा क्वाथसे तीन तीन रत्ती की गोली बनाना। मात्रा ३ से ६ गोली दिनमें दो दफे कल्याण घृतसे अथवा दूध के साथ देना। नाडी व्रण और सब प्रकारके अन्य व्रण १ महिना तक सेवन करनेसे मिटते हैं। खट्टे शक्करके पदार्थ बंध करना।

नाडी व्रण हर तैल—निर्गुंडी के पान, काला हंसराज, कोठा(कपित्थके) फलका गर्भ, बीजो फलके गर्भ, खजूर, वायविडंग, नागरमोथ, राल, शहद,

सोनापाठा, धाय के फूल, एरंड बीज, थुवरका दूध, आकका दूध, रक्त रोहिडा (रोहेडा) प्रत्येक दश दश तोला, लेकर कूटकर पानी रतल १० में बारह घंटा भिगो रखना। पीछे इसमें तिलका तेल २० रतल डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय तब उतारना। कपडेकी वर्ति बनाकर इस तेलमें भिगोकर अंदर डालना। और साफ करते रहना। नासूर भगंदर आदि व्रण मिटते हैं। इस तेलमें पारा और सिंदूर दोनों दश दश तोला लेकर घोंटकर तेलके साथ मिलाना।

नाडी व्रण हर मलम—बोदार तो. २, वंग भस्म सफेद तो ५, तिल का तेल तो ४० में मोम तो ५ और कपूर तो २ डालकर तपाना। मिल जाने पर बोदार और वंग भस्म, मिला देना। यह मल्हम नासूरके ऊपर लगाया जाता है।

निर्गुंडी तेल—निर्गुंडीके पंचांग तो दोसो को कूटकर पानीमें चार घंटा भिगोना। पीछे इसमें तिलका तेल रतल १० डालकर पानीका अंश जल जाय तब तक पकाना। इस तेलमें भिगोई हुई वर्ति नाडीव्रण में डालना।

नाडी व्रणको नालीका मार्ग—एषणी नामक शस्त्रसे ढूंढकर बादमें उस मार्गको काटकर व्रणके उपचार की तरह शोधन रोपण करना।



भगंदर

कारण और चिह्न—मळद्वारकी आसपास यह होता है। वह कभी अंदर और कभी बहार मुख करता है। बहुत दिनो तक अंदर के अंदर ही फैलता है। कमजोरीसे, चोट और आघात लगनेसे वहां फोडा पडकर मुख होता है और उसमेंसे रसी निकलती है। मवामीर आदमिमें भी यह रोग होता है। उसमे मल आनेसे घषण होनेसे साफ हो सकता नही और इस कारण रस नहीं आती। कभी एक जगह मुख बंध होकर बाजु बाजुमे दूसरा मुख होता है अथवा वहां ही फूटकर रसी निकलती है और वह अंदर गहरा जा कर कुल्लाको अंदर रास्ता कर फैलाता है। किसीका एक मुख सफरामें और एक बहार इस प्रकार दो मुख होते हैं। किसीको एक मुख सफरामें होता है और किसीको एक बहार होता है। इसमे सली (शलाका) डालनेसे मालूम होता है। पापमक्षी लोगोंको यह रोग ज्यादा होता है। आयुर्वेदमे लिखा है कि प्रत्येक किस्मके भगंदरमे विशेष प्रकारका जंतु होता है। वह अंदर सडा पैदा कर टेढेमेढे मार्गसे गहरा उतरता है। वातप्रधान भगंदरमे लाल फेनवाला स्राव पीडा दर्द होता है और एकसे अधिक छिद्र होता है। पित्त प्रधान भगंदरमे लाल पीला स्राव होनेके साथ वह जलदी पकता है साथ दाह और जलन होती है। कफ प्रधानमें खुजली गाढा सफेदाइ लिये स्राव दर्द कम होता है। जिस भगंदरका मार्ग टेढा मेढा (वक्र) होता है। वायु मूत्र विष्ठा जंतु आदि उसमेसे निकलता हो वह असाध्य है उसपर शस्त्रकर्म करानेसे कभी अच्छा होता है।

पथ्यापथ्य—पक गया न हो जब तक बहु खानेका बेठ जानेका उपाय खानेको लगानेकी दवासे करना चाहिये। लंघन कराना। फस्त खोल कर रक्त निकलवाना वमन विरेचनसे शोधन कराना। लेप लगाना पकजाने पर शस्त्रकर्मसे, अग्निसे-डाम देकर या क्षार कर्मसे अच्छा करना। चावल मुग परवल सहजनेकी फली छोटी मूली तिल सरसोंका तेल कटोली दूधी बाछोळ घी शहद हितकारक है। बाजारकी मीठाइ खट्टे पदार्थ अजीर्ण करनेवाली चीजे मेदाकी मिठाइ परिश्रम कसरत रहना दौडना चिकने पदार्थ हानि कर्ता है। हर वखत दस्तकी दवा लेकर उदर पेट साफ रखना, उपवास हर वखत करना। खानेकी लगानेकी दवाइका उपयोग कर जलदी अच्छा हो वैसे उपाय करना। भगंदरकी फुन्सीयां जब कच्चा हो तब बैठ जाकर मिटानेके लिये उपचार करना। कैशोरादि गोली दो सुबे शाम दुध से कभि निगल जाना। अमृता गूगळ २ से ३ गोली दो वक्त देना दशांग

और पानीमे पिस गर्म कर पोटीसकी तरह लगाना। विरेचन देना और फूटने पर नीचे के उपचार करना।

स्वर्णशलाका प्रयोग— सोनेकी शलाका दस इन्चकी बनाकर उसे अग्निमे तपाकर, भगन्दर के छिद्रमे डालना। पहिले बिना तपायी सलाइ डालकर भगदर कितना गहरा उतरा है जान लेना पीछे तपाया शलाका उतना गहराइ तक घुसाना और तुर्त हि निकाल लेना। पीछे उसजगह रोपण मलम अथवा दशांग लेपको तुरती-बांधना सप्ताहमे रुझ आ जाती है। सलाइ एक हि दिन घुसाना है पीछे अग्नि दग्धका शस्त्रोपचार करना भगदर मिटता है।

इस प्रकार स्वर्णके योग का अग्नि कर्ममे भगदरके अन्तु जल जाते है और रोग अच्छा होता है।

भगन्दरारि मिश्रण—स्कंदेश्वरी पर्पटी तोला १, अमृता गुग्गल तोला २ योगराज रसायन तोला १, अभ्रक भस्म तोला १ प्रवाल चन्द्रपुटी तो ?, कारोग्य वर्धनी चूर्ण तोला २, चन्द्रप्रभा तो १ सब साथ पिसकर ६४ पुडी बनाना दो वक्त पानी या दुधके साथ देना उपर महामंजिष्टादि कषाय पिलाना

भगंदरारि रस—पारद तो १० गंधक तो १०, लोह अभ्रक हरड बहिडा आवला नागरमोथ चोपचीनी वायविडंग चवक कुष्ट गिलोय चित्रक हलदी दारुहलदी मेघानोन पालीसी च सोंठ इलायची नागकेसर प्रत्येक पांच पांच तोला, गूगल ३० तोला और थूहरकी १० तोला सब साथ कूटकर दंती क्षुर के पचांगके रसको एक भावना देकर गुंजा प्रमाण गोली बनाना अथवा चूर्ण रखना। मात्रा ५ से १२ रत्ती दिनमे २ वक्त पानीसे देना उपर नीमकी अंतर छालका पानी पिलाना। निमकी छाल दो तीन तोला कुचल कर २ कप पानीमे रातको भिगो रखना, प्रात कपडछान कर शीशीमे भर लेना, दोनो समय पुडीके उपर पिलाना।

भगंदरादि तैल—कनेरका मूल हलदी दंतीमूल सफेद बछनाग चीजेरा निंबूकी जड आकका दुध छोटा गूगर (गो चंवरी) लज्जालु (रींछामणी) वज हरताल गूगल चित्रक मालकांगनी मूनाग गिलोय पुनर्नवा हरड बहिडा आवला नीलाथोथा, बडकी बडवाइ चंदन मूलैठी मूल प्रत्येक द्रव्य दस दस तोला लेकर कूट कर इसमें पानी रतल १० डाल कर रातभर भिगो रखे। प्रातःकाल इसमे तिलका तेल रतल बीस २० डालकर फिर ५० घटा रख छोडना पीछे पीतल के रांग लपेटे बर्तनमे मंद अग्निमे पकाना। पानीका अंश जल जाय जल कपडछान कर रख छोडना। जिस बर्तन या टोपमे घी या तैल पकता हो उस टोपके उपर छिपा

ढक कर उठाते रहनेसे छीवाके नीचे पानीका बुद न जमे जब पानी जल गया है, तैल मात्र बाकी है समझना, । किसी भी तेल या घृतके पकते समय पानीका अंश सब जल गया है इसकी यह पहिचान है ।

स्वर्णेश्वरी पर्पटी—गंधक तोला २०, पारद तोला १०, ताम्र भस्म तो ८, लोह भस्म तो. ६, कांस्य भस्म तो ४, रौप्य भस्म तो २, स्वर्ण भस्म तो १ सब साथ घोटकर लोहेकी कढाईमे गायका घी तोला १० डालके चुल्हा पर या भगीठी पर चढा कर मंदाग्नि से पकाना सब पिघल जाय जब हरे गोबरे पर बिछाये केलीके पत्ते पर जलदी से डालकर उपर केलीका पत्ता दाब कर उपर गोबर दाब देना। २४ घंटा के पीछे निकाल घोंट रखना । मात्रा २ से ४ रती गायके घीसे या बाह्मी घृत या कल्याण घृतसे या मक्खनसे देना । उपर दूध पिलाना । दूधका खुराक ज्यादा रखना । कुलथी मुंग चावल गेहु शहद घृत चनाका खुराक देना । खट्टा पदार्थ इमली दही खांड शक्कर का मिष्टान्न तेल बंध करना । यह पर्पटी भगंदर नासीसग खूनका बिगाड छाती फेफडोंका दर्द दिमाग आदि के रोग संग्रहणी मंदाग्नि बवासीर श्वास खांसीमे अच्छा काम देती है ।

नवकार्षिक गूगल—हरड बहेडा आंवला छोटी पीपल प्रत्येक पांच पांच तोला गूगळ तोला २५ साथ कूट कर गायका घी तोला ५ मिलाकर गिलोय के स्वरससे गोली ३ रतीकी बनाना । ३ से ६ गोली दिनमे २ समय पानीमे देना भगंदर नाडीव्रण मे गुणकारी है ।

भगंदर शोधन प्रवाही—हरड बहेडा आंवला बब्बूलकी छाल खैरकी छाल अमरंगा (आवल) बलामूल इंगुदी मूल कायफल माजुफल नीमके पत्ते कूटकी मोलश्री (बकुल बोलसरी)के पत्ते ढाकको छाल या मूल सब समभाग लेकर कूटके रखना । ७ से १० तोलाको ३ से ४ लोटा पानीमे रातभर भिगो रखना प्रातःकाल मसल कर कपडछान कर रखना। भगंदरकी जगह इस पानीसे दो समय धोकर पीछे भस्म तैल आदि लगाना (भगंदर) पर इसकी पोटीस भी बांधी जाती है। ५ से १० तोला चूर्ण मे ५ से १० तोला सफेद मिट्टी मिलाकर पानीमें पीसकर गर्म कर पोटीस की तरह भगंदर पर बांधना १५-२० दिनमे अंदरकी रसी-मवादको खींचकर रूझ जाता है ।

१ लेप—बडके पत्ते सफेद मिट्टी सोंठ गिलोय पुनर्नवामूल सब बराबर कूटकर पानीमे पीस लगाना ।

२ लेप—बिल्ली (मार्जार)की हड्डी को त्रिफलाके क्वाथमे पीसकर लगाना

३ लेप—कुत्तेकी हड्डी मूनाग(अणचिरां-पराटीन) गधेका खून सब साथ पीस कर लगाना।

४ लेप—घाका धुआ तिल हरड नीमके पत्ते हलदी वच कुष्ठ प्रत्येक दस दस तोला तोम्र तोला २० सब साथ कूट रखना। ५ से ७ तोला चूर्ण पानीमे पीस लगाना।

५ लेप—पुनर्नवा मूल सोंठ गिलोय बडके पत्ते सम भागको पानीमे पीस गर्म कर पोल्टीस की तरह बांधनेसे १४ दिनोमे भगंदर मिटता है।

६ लेप-कुत्तेकी हड्डी को महीन पीस पानीमे या सुखी हि भगंदर पर दाब कर पाटा बांध देना २४ घंटा बाद धो कर पुनः यह चूर्ण दाबना। इस प्रकार सात दिन करनेसे भगंदर मिटता है।

भगंदर शोधन लेप-बबूल की छाल ... बसौस कुचला (विषतिंदुक) नीलाथोथा सम भाग कूट कर रखना। ६ से १० तोला या आवश्यकता हो उतना लेकर पानीमे पीस मलम जैसा गाढा रखकर लगाना। ३ से ४ वखत लगानेसे अंदरका पस-पद विगार खिंच कर बाहर आ जाता है पीछे रोपण मलम या लेप लगाना।

८ लेप तिल बडके पत्ते सोंठ सफेद चंदन मूलैठीका मूल पद्मकाष्ठ, एरंड बीज समभाग कूटकर पानीसे थेपली कर भगंदर पर लगाकर पाटा बांधना।

९ भगंदर मलम-नीलाथोथा कालीमिरच मैनशील आरने उपलकी राख राल यशदकी भस्म नीमके बीज एरंड के बीज समभाग लेकर कूटकर इसमे तिलका तेल डाल कांसेकी थालीमे या कांसेके बरतनमे घोंटकर रखना दो वखत लगाना।

१० भगंदर मलम पकाया हुआ नीलाथोथा कपीला यशद भस्म घोडा का मस्त सब मिट्टीकी हंडीमे डाल कपड मिट्टी कर अंतर्धूम पकाना पीछे निकालना गायके घीमे मलम बनाना लगाना।

११ भगंदर मलम—सिंदूर माजूफल पकायी फिटकडी सींगरफ यशद भस्म कपीला नाग भस्म पारद क्रमोमर्दकि राल पकाया नीलाथोथा सब समान लेना। पहिले पारदमे सींगरफ घोंटना मिल जाने पर यशद नाग नीलाथोथा फिटकडि एक पीछे एक मिलाना पीछे सब द्रव्य मिलाकर महीन कर गायके घी मे मलम बनाना।



विद्रधि-अंतर्विद्रधि-बहिर्विद्रधि-केन्सर

चिन्ह गला मुख जिभ नाभि पेट पेडु प्लीहा यकृत मम्त्रादिनी शीराओ मूल क्लोम गुदा हृदय आंतो आदि अवयवोमें पुरुषोंको और औरतो को यह रोग होता है। स्त्रीओके स्तनमे भी होता है। पहिले उस स्थान पर ग्रन्थी बाहर बढता है इसे केन्सर कहता है। गलेमे होता है तब अन्न उतारना बंद होता है। गुदामे हो तो पवन छुटे नहि। बस्तीमे हो तो मुश्कीलसे पिसाब आता है। अन्न नलिमें हो तो हिचकी (हिक्का-हेडकी) आती है। पेटमे वायु भर जाय आध्मान हो। पेटमे हो तो वायु प्रकोप अधिक रहे। पेडुमे तो पीठ और कम्मर अकड जाय। प्लींहामे हो तो श्वासका रुन्धन हो। हृदयमे हो तो सारा शरीर अकड जाय, (लीवर) यकृतमे हो तो श्वास दमका प्रकोप हो। क्लोममे हो तो तृषा अधिक लगे। नाभिके उपरके अंगोमे विद्रधिकी ग्रन्थी पक कर फुटे तो स्राव मुख द्वारा बाहर आवे और नाभिके नीचे के अंगोमे फुटे तो गुदाद्वारा स्राव निकले। यदि स्राव गुदा द्वारा निकले तो मनुष्य बचनेकी आशा रहे, पर मुख द्वारा स्राव निकले तो बचने की आशा नहि। किसी भी स्थानकी विद्रधि मे पेट फूले दस्त बंध हो वमन हो हिक्का आवे तृषा लगे पीडा हो शूल निकले श्वासकी गति बढे तो असाध्य लक्षण जानना।

यह रोग विश्वभरमे फैला हुआ है। लाखो मनुष्य प्रतिवर्ष इस रोगसे कराल कालके मुखमे ग्रस्त होते है। अमेरिका ब्रीटन रुशिया आदि देशोमें राजयकी ओरसे सेंकडो वैज्ञानिक लोग इस रोगके उपायकी शोध कर रहे हैं। वैज्ञानिकों की कोन्फरन्से मिलती है। लम्बे निबंध पढे जाते है, उपाय नहि मिलता। इस रोग का औषध हो तो आयुर्वेदसे मिल सकता है लेकिन इस रोगके लिये आयुर्वेदमें संशोधन करनेका विचार हमारी सरकारने अभीतक नहि किया। रेडीयम आदि उपायसे और विशेष प्रकारके शेकसे कभी किसी को अस्थायी थोडा लाभ मालुम होता है फिर जैसो कि तैसो दशा हो जाती है। वैद्यो के पास क्वचित् हि यह रोगी आता है। जब सब जगहसे नराश होता है, डाक्टरोने बचनेकी आशा छोड दी है तब अंतिम उपचारके लिये वैद्य का शरण लेता है, तब तो रोगने घेर लिया होता है। फिर भी आयुर्वेदिक औषध से यह रोग मिट भी जाता है। यदि सरकारकी ओरसे सब आवश्यक साधनोसे सज्ज रुग्णालय (आयुर्वेदिक अस्पताल) बनायी जाय वहां पचीश पचास बिछानाको व्यवस्था हो, भस्म रस रसायनादि सिद्ध औषधे लो इस रोगके

किंतु आयुर्वेद में वर्णित है उस विधिसे [illegible] चिकित्सा की जाय तो समझा है कि आयुर्वेद और उसके रसायन औषधीसे इस रोगपर विजय मिलना शतप्रतिशत संभव है। हम देखते हैं कि एलोपेथी पद्धतिसे इतने धनके अपव्यय खर्च होनेपर भी निराशा मिलनेके पीछे आयुर्वेदकी शरण लेना चाहिये। इसी प्रकार इस डायाबीटीस तथा ब्लड प्रेशर हृदयरोग आदि असाध्य माने जानेवाले रोगोंमें भी आयुर्वेद सफलता प्राप्त कर रहा है और संपूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये विश्वस्त है परंतु सरकार के आश्रय आधारके विना चिकित्सा कर अपना गुजारा—उदर पोषण करनेकी चिंतासे घिरा हुआ वैद्य समाज क्या कर सके?

पथ्यापथ्य—रुधिरकी गांठ कच्ची हो तबतक जुलाब देते रहना। पकीहुई गांठ हो तो खोलकर रुधिर निकलवाना। पुराना चावल, कुलथी, मुंग, जौ, चना, लसून, मद्य, नारंगी, सौंफ, करेला, परवळ, दूधी, सूरण, घी, तिलका तेल, गायका, बकरीका या ऊंटनीका दूध आदि गुणकारी है।

सर्वेश्वर पर्पटी—रससिंदूर, गंधक, माक्षिक भस्म, हिंगुल, अभ्रकभस्म, हरताल शुद्ध, मनःसिल शुद्ध, कलई चुम्बक शुद्ध, रसोत (रसवंत) सफेद सुरमा, सोहागा, राजावर (राजावर्त शुद्ध), कांतलोह भस्म, कस्तूरी भस्म, शुद्ध गेरु, कासीस भस्म, खपर शुद्ध, शंख भस्म, कौडी भस्म, शुक्ति भस्म, स्वर्ण, रौप्य, ताम्र, लोह, नाग, वंग, यशद प्रत्येककी भस्म यह प्रत्येक द्रव्य एक एक तोला लेना। हीराकी भस्म और प्रवाल, मोती, माणेक, पीला रत्न, वैडूर्य, गोमेद, नीलम, पुखराज प्रत्येक की पिष्टि एक एक वाल लेना। शुद्ध पारद तोला ११३ और शुद्ध गंधक तोला ४५२ लेकर पारद गंधककी कज्जली करना। बाद इसमे गायका घी तोला २० डाल उसमे कज्जली डाल मंदाग्निसे पकाना, पिघल जाने पर उसमें ऊपर लिखि भस्म आदि डालकर हिलाना और सफेद बछनाग तोला २१ पीसकर डाल देना। वह डालकर हिलाकर गोमयपर बिछाये केलीके पत्ते पर डालकर ऊपर केलीका पत्ता और गोमय दाबकर २४ घंटा के पीछे निकाल घोटकर रखना। इस पर्पटीका चूर्ण कर बोतलमे भर लेना। मात्रा २ रत्ती प्रात २ रत्ती सायंको काली मिरच रत्ती २, अदरखका रस छोटी चम्मच और शहद छोटी चम्मच सब मिलाकर खिलाना। रोगका स्वरूप देखकर दिनभरमे १२ से २० रत्ती तक मात्रा बढाई जाती है। १ मास सेवन करनेसे बाहरी या अंदरकी विद्रधि केन्सर अंदाजा [illegible] मिटता है। रोगका स्वरूप को देखते हुए ३—४—६ या १२ मास तक सेवन करना है। विद्रधि केन्सरके अलावा क्षय पांडु संग्रहणी गुल्म [illegible]

भीगाद'प्रमेह योमरोग प्रदर मंदाग्नि उदावर्त-गेस चढना कुष्टरोग इन रोगमे भी फायदा होता है और धैर्य रख आवश्यकतानुसार सेवन करते रहेनेसे रोगका शमन होता है ।

विद्रधी हर मिश्रण नं. १—सिद्ध हरताल तो ०।, स्वर्णभस्म तो. ०।, अभ्रक भस्म तो. ०॥, मुक्ता पिष्टि तो. ०॥ अमृता गुगळ तो २, हीरा भस्म रत्ती २, स्वर्ण पर्पटी तो ०॥, सर्वेश्वर पर्पटी तो १ सब साथ घोटकर ८० पुडी बनाना। दिनमें २ समय कल्याण घृतसे देना उपर विद्रधी नाशन क्वाथ पिलाना ।

विद्रधी हर मिश्रण नं २ सर्वेश्वर पर्पटी तो. १, स्वर्ण वसंत मालती तो ०॥ रत्न भागोत्तर रस तो ०॥ ताम्र भस्म तो ०॥ शृंगभस्म तो १, किशोर गुगळ तो २ सब साथ घोट ६४ पुडी बनाना दिनमें २ समय शहद घृत दूध या पानीसे देना। उपर विद्रधी नाशन क्वाथ पिलाना।

विद्रधी हरी वटी (केन्सर मिलस') रौप्य भस्म तो ४, अभ्रक भस्म तो ४, पूर्ण चन्द्रोदय तो. ५, स्वर्णभस्म तो. १, प्रवाल माणिक्य नीलम गोमेद वैडूर्य वैक्रांत प्रत्येककी पिष्टी तीन तीन तोला, गोरखमुंडी चोपचीनी रुद्रती सोंठ पीपळ हलदी कचुरा प्रत्येककी पिष्टी तीन तीन तोला अष्टवर्ग आठो मिलकर १६ तोला सबको मर्दन कूट कर पानीसे या शहदसे मुंग प्रमाण गोली बनाना। प्रारंभमे दिनमे दो या तीन समय दो दो गोली पानीसे देना उपर कल्याण घृत १ से २ तोला गोलीके उपर खिलाना अथवा च्यवनप्राश १ से २ तोला खिलाना रोगका स्वरुप देखकर और कितने समयका पुराना है किस अवयव में फैला है जान कर इस गोली के साथ सर्वेश्वर पर्पटी स्वर्ण पर्पटी रत्न भागोत्तर रस ताम्र भस्म आदि भी १ से २ रत्ती देना ।

विद्रधीनाशन क्वाथ—रूदती क्षुप, अंकोलके बीज अंजन वृक्ष, नीम अर्जुन, वड पीपल वृक्ष शिरीष (सरसढा) मौलसेरी प्रत्येक वृक्षकी छाल रास्ना पुनर्नवा गोरखमुंडी, अष्टवर्ग हरड सब समान भाग लेकर कूटकर रखना। फांट या क्वाथ कर अकेला या किसी औषधके साथ पिलाना ।

वज्र रसायन—हीरा भस्म ३० रत्ती, स्वर्णभस्म तोला १, रौप्यभस्म, तो २ पारद तो. ३, गंधक तो. ४ अभ्रक भस्म तो. ५ माक्षिक भस्म तो ६ वैक्रांत भस्म तो ३, अष्टवर्ग आठो मिलाकर तोला ३२ सब साथ मिलाकर मुंग जैसी गोली पानीसे करना। दिनमें २ या तीन दफे २ से ३ गोली हर समय देना उपर क्वाथ पिलाना ।

प्रकिर्ण उपाय

१ सफेद पुनर्नवा का मूल वायवरण का मूल एक एक तोला पानिमे पीस पीलाना।

२ सहजनाका मूल तोला एक पीस उसमें सेधानोन रत्ती १ और हिंग रत्ती १ डालकर पिलाना।

खदिरादि क्वाथ—खैरकी छाल हरड बहेडा आंवला नीमकी छाल मूली छोंका मूल हलदी छुर, अर्जुन वृक्षकी छाल पटोल निशोथ अंकेल छाल सब मात्रा लेकर कूटकर रखना। २ से ३ तोलाका क्वाथ या फांट कर पिलाना।

विद्रधि हर लेप—एलवा (एलोयो) सरसो सेधानोन तिल सज्जीखार हलदी सोंठ कुष्ठ घुमकरमूल प्रत्येक तोला १॥ डेढ कपडे धोनेका देशी साबून तोला ४, एरंड बीज तोला ४ सब कूटकर रखना अंदर के जिस भागमे केन्सर हो उसके बाह्य भागमे यह लेप गौमूत्रमे या केलाके स्तंभके पानीमे पीस कर करना उपर केलीका पत्ता लगा कर पाटा बांधना।

विद्रधि हर धूम—गुगल तोला १००, गुड तोला २०, अर्जुन पीपल बड शिरीश बकुल प्रत्येक की छाल दश दश तोला, बीडीमें पीनेका देशी जरदा तोला, २० गायका घी तो. १०, सब साथ कूटकर पानीमें पीसकर एक एक तोलाकी टीकया करना। हुक्के मे या चिलममे धुम दिनमे ३–४ दफे पिलाना, या निधूंम अग्नि पर रख नलीके द्वारा श्वास मे धूम पीना केन्सर मे लाभ होता है।



गंडमाला गलगंड कंठमाल

चिन्ह—प्रारभम हडपची और कानके पीछे के भागमे छोटी छोटी ग्रन्थी होकर बढती है, कभी बैठ जाती है। फिर कुछ दिनों या महिनो के बाद फिर उमढ आती है। यह रोग किसीको जिंदगीभर रहता है। रोगी कमजोर निस्तेज हो जाता है। आंखेसे पानी गिरता है, होठने चीरा पडता है। दांतके मसूढे मृदु होते हैं भूख कम नाडीकी गति तेज, शरीर तपा हुआ हडकीरा बुखार इत्यादि चिन्ह रहते हैं। किसीका पक कर फुटती है। वडे पेटमे इसे क्षय के पूर्व चिन्ह कहते हैं लेकिन वस्तुत यह बात ठीक नहि है। उपचार करते रहनेसे मिटता है उमडता है और दीर्घ समय तक औषध सेवन करते रहेनेसे अच्छा हो जाता है। यह रोग कईओको जिन्दगी तर रहता है।

पथ्यापथ्य—चावल जौ मुग चना कुलथी गेहू ज्वारी आदि धान्य कठोल एक वर्ष पुराना खाना। परवल कोबी फुलावर सहंजनेकी फली ककोडा बेंगन करेला वाटोळ दूधी सूरण घी दूध शहद आदि खाना। मांसाहारी लोग मयूर मोरको छोडकर जंगली पक्षीओका मांस या मांसरस ले सकते हैं। कडुआ कसेला रस गायका दूध गुणकारी है। जठराग्नि दीपन करनेवाली चीजे खाना आहार विहार नियमित रखना। दस्त पिशाब साफ रहे यह ध्यान रखना। बाजारकी मिठाई बाजारका खुराक मीठा तेल नहि खाना। एक सप्ताहमे २ दिन ब्रह्मचर्य पालन करना। शरीरपर या ग्रन्थीपर तिलके तेलमे हलदी मिलाय मर्दन करना। परिश्रम कसरत नहि करना, भाषण कम करना। गर्म जलसे स्नान करना।

कांचनार गूगल—कचनारकी छाल तोला ४०, त्रिफला तीनों मिलकर तोला २४ वरनाकी छाल तो. ४०, सोंठ पीपल काली मिरच प्रत्येक चार चार तोला, तज इलायची तमालपत्र प्रत्येक एक एक तोला सब महीन कूटकर शुद्ध गूगळ तो १५० सब साथ मिलाकर गोरखमुंडीके क्वाथमें घोंट उसमे गायका घी तोला २० मिलाकर ३ रत्तीकी गोली बनाना। मात्रा ३ से १२ गोली तक दिनभरमें दी जा सकती है। पानी या दूधसे देना। शक्य होतो गोरखमुंडीका क्वाथ या फांट उपर पीलाना। आधा तोला गोरखमुंडीके कूट कर २ कप पानीमें रातको भिगो रखना प्रात: कुछ गर्मकर कपड छान कर दिनमे २ वखत इस गोली पर या अन्य औषधपर पिलाना। यह कांचनार गूगल कंठमाल रसोली अर्बुद ग्रन्थी गुल्म कुष्ठ भगंदर आदि दर्दोमे उत्तम गुणकर्ता है।

गंडमाला कंडन रस—पारद तोला २, गंधक तो ४, ताम्र भस्म तो १, त्रिकटु तीनो मिलाकर तो १, पुनर्नवा तो २, सर्पगंधा तो. २, गोरखमुंडी तो. ३, कचनारकी छाल तो. १२, गूगल तो १२, हरड तो. ४, हरताल भस्म तो. १, लोह भस्म तो. २, सेंधानोन तो १ सब साथ मिलाकर कंचनारकी छालके कषायसे भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना या घोटकर रखना । ३ से ४ रत्ती सुबे और शामको पानी दुध या शहदमे देना । उपर महामंजिष्ठादि कषाय या गोरख मुंडीका कषाय पिलना । कंठमाल ग्रन्थी आदिमे उत्तम गुणकारी है।

गंडमाला हर मिश्रण—ताम्र पर्पटी तो. १, अमृता गूगल तो १, योगराज रसायन तोला १ सिद्ध रसायन कल्प तो. ०॥, कांचनार गूगल तो २, महालक्ष्मी विलास तो. १ सब साथ पीस ३ से ४ रत्ती दिनमे दो समय शहद मक्खन दूध या पानीमे लेना ।

कंठ लोहेश— पारद, तो. ४, गंधक तो. ८, ताम्रभस्म, लोहभस्म, माक्षिक भस्म, शंख भस्म हरड बहेडा आंवला सोंठ पीपल कालीमिरच अतीस पुनर्नवा सर्पगंधा जटामांसी शिलाजित चित्रकमूल, वरना कुटकी जलपिप्पली (रतवेलीयो) छोटी कटहरी मूल निमकी छाल गिलोय देवदार गोरखमुंडी प्रत्येक दो दो तोला, गुगल १० तोला, सब साथ कूट मिलाय नीमके पत्ते कचनार गोरखमुंडी प्रत्येक के कषायकी एक एक भावना देकर घोटकर रखना या रत्ती प्रमाण गोली बनाना । मात्रा ३ से ६ रत्ती दिनमे दो या तीन दफे पानी या दूध से देना । गलगंड कंठमाल ग्रन्थी अर्बुद विद्रधि अंतर्विद्रधि कुष्ठ आदेमे उत्तम गुणकारी हैं ।

गलगंड हर तेल—गुंजामूल गुंजापन चदन गिलोय नीमके पत्ते हंसराज देवदार पुनर्नवा मूल हरड कुष्ठ भांगरा प्रत्येक दस दस तोला, कचनार की छल ३० तोला, गोरख मुंडी १० तोला सब साथ कूट पानिमे रातभर भिगोरखना। प्रातःकाल इसमे सरसोंका तेल रतल १० डाल कर पकना । पानिका अंश जल जाय जब ठंडा होने पर कपड छान करना । इस तेलका बुंद नाकमे डालना, रोगपर मालिस करना । कपडे के टुकडे को तेलमे भिगोकर ग्रंथी पर रख उपर किसी वृक्ष का पत्ता रख रुइ रख पाटा बंध रखना ।

गलगंड हर लेप—विकंकत (विकळो) छाल महूआकी छाल सफेद बछनाग कांचनार छाल भरंगी मूल गिलोयका कंद अमलतास चिरोंजी (गुंजा) इंगुदी फलका गर्भ सब सम भाग लेकर कूट कर रखना । पानीमे पीस गर्मकर लगाय उपर पान बंध पाटा बांधना ।

गलगण्ड हर क्वाथ—दशमूल अपराजिता (गरणी) कचनार बरना इंद्रायण मूल गिलोय हरड देवदार असगंध सारिवा दर्भमूल पुनर्नवा मूल सोंठ पीपल काली मिर्च वायविडंग रास्ना पुष्करमूल तिलपर्णी (तलवणी) गोरखमुंडी सब समान भाग लेकर कूट कर रखना। १ से २ तोलाका क्वाथ कर या फांट बनाकर पिलाना। किसी औषध के अनुपान रूपसे या अकेला गलगण्ड कंठमाल ग्रन्थी आदिमे पिलना।

दोषघ्न लेप या दशांग लेप पानीमे पीस गर्म कर लगाना। महानारायण तेल मालीश करना।

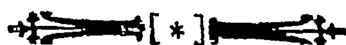
सामान्य उपाय

१ ब्रह्मदंडीका मूल पकते हुए चावल के पानीसे पीस लगानेसे कंठ मालकी गांठे पक गई हो वह फुट कर रूझ आती है।

२ गोरखमुंडी (बोडथेो कलार) का मूल कूट पीसकर लगाना, पिलाना

३ जमालगोटा के पान को पीसकर उसके रससे सोगठो बनाकर छाया मे सुखा कर रखना पानी मे पीस लगाना।

अश्वखुरादि मलम—घोडा का नख हरिणका सींग और चमडा अंतर्धूम जलाकर तोला १६ लेना उसमे मेरलो तो. १॥, राल पशाया नीलाथोथा फिटकरी प्रत्येक एक एक तोला सब साथ घोंट कर पुराने घीमें मिलाय तामे के वर्तन में डाल तामेके लोटेसे ६ घंटा मर्दन कर रख छेडना यह मलम लगानेसे कंठमाल आदिकी ग्रन्थीयां मिटतीं है।



वल्मीक राफो

चिन्ह—यह रोग प्राय पांवके नीचेके भागमे होता है। कभी हाथ कंठ खंभा काख साथा और गलेमे भी होता है। प्रारभमे पांवके तलुओमे, फणामे या हड्डीमे या अन्य स्थानमे ग्रन्थी-गांठ होकर पककर छिद्र पड पसके साथ काला या सफेदी लिये भुखरा या लाल दानेदार राइ जैसा पदार्थ निकलता है। खेतोमें नंगे पांव काम करने वालोंको पावमें क्षत या व्रण जैसा चांदा होतो उसमें इस रोगके जंतु दाखल होनेसे यह रोग होता है। समय बीतने पर उसमे अधिक छिद्र पडते है सूजन बढती है और सब छिद्रोसे पस-पसके साथ मिट्टी जैसा पदार्थ (उबेरा) निकलता है। बहूत छिद्र पडे हो चांदा व्रण पडे हो पांव या हाथ के उपरके भाग मे हुआ हो और उसमे बहूतसे छिद्र पडे हो शोथ हो वह असाध्य है।

उपचार—रोगवाली जगह चीर कर बिगडा हुआ भाग निकाल व्रण शोधन क्वाथ आदिसे याटिठे के पानीसे धोकर व्रण रोगमे बताये हुए तेलसे कपडेका टुकडा भिगोकर उस भागमे दबाकर उपर ढाकधा पत्ता दाब पाटा बांधना। उस भागमे क्षार कर्मसे अथवा अग्निसे वह भाग जलाया भी जाता है। पीछे रोपण रुनका उपचार करना। साथ व्रण रोगमें लिखी रक्त शोधक दवाओंका सेवन कराना। यदि रोग ज्यादा बढ गया होवे पांवको काटना पडता है।

वल्मीकहर मिश्रण—ताम्रपर्पटी तोला १, हरताल भस्म तो. १, कांचनार गूगल तो १ सब साथ घोंट ६४ पुडी बनाना। दिनमे २ समय महा-मजिष्ठादि क्वाथसे देना।

वल्मीकहर तेल— मैनसिल हरताल पारा गंधक भिलावा इलायची अगर सफेद चंदन चमेली के पान सबको गौमूत्रमे पीस उसमे निमोलीका तेल पकाकर रखना उपर लिखे अनुसार उपयोग करना।

वल्मीकहर लेप—राल सिंदूर कत्था हीरादखण मैनसील मोम घीसे मलम बनाना।



छाती हृदय रोग और फुफ्फुस रोग
छाती और फेफडोंके रोग

कारण—बहुत गर्म चीजे बहुत खट्टा बहुत मधुर पदार्थ खाना अधिक चाय काफी पीनेकी आदत, बहुत परिश्रम, अति मदिरा पान, हृदयपर किसी चीजका आघात लगना, अजीर्ण पर भोजन अति जीमण, चित' मल मूत्रादिका वेगको रुकना प्रिय व्यक्तिका निधन प्रिय वस्तुका नाश या गमाना, अतिक्रोध, अतिशोक, अतिभय और आहार विहारकी अनियमितता आदि कारणोंसे हृदयका रोग होता है और हृदय कमजोर होकर बंध पड जाता है।

चिन्ह—वायुप्रधानमे खींच हो चीराता फटता हो ऐसा लगे किसी चीज मोडनी हो ऐसी पीडा शूल हो। पित्त प्रधानमे तृषा लगे दाह हो शोष लगे पसीना अधिक हो बेचैनी हो। कफ प्रधानमे सुस्ती हृदय पर बोझ-भार जैसा लगे सुस्ती किसी काममे निरुत्साह कफ गिरे, भूख मंद, शरीर जकड जाय मुखमे चिकनापन मधुरता आदि लगे। कभी छातीके मर्म स्थानमें ग्रन्थी भी होती है।

रक्ताशय के बाह्य पड़दका शोथ—हो तो बुखार के साथ उस जगह दर्द दाये कन्धेसे दाये हाथ में खीच (आचका) छातीमे धबकारा (धडक) नाडीकी गति तेज घबराहट कमजोरी बेशुद्धि आदि चिन्ह होते हैं।

रक्ताशय बढे या ढीला हो तो—थोडा भी श्रम करने से श्वास चढे निद्रा कम हो नाडी अनियमित दर्द, वह भाग मोटा हो फूल जाय।

रक्ताशय के पडदा के रोगसे—बांयी बाजू नाडी मोटी हो पीली हो, छाती उछले सखणी फेफडो मे सूजन हो, नाक या पेटसे खून गिरे हाथ पांव पर शोथ हो चक्कर मूर्च्छा निद्रा कम थोडासा श्रम करनेसे श्वास चढे अचानक बेशुद्धि हो।

हृदयका धडका—मे छातीमे जलन हो गला मे दबान हो गलेमे गोला चढता हो वैसा दीखे मुख लाल लिये हो सिरमे दर्द हो।

हृदय शूल—छातीके बीचसे दर्दका प्रारंभ होकर पीठ और बांये कन्धे तक दर्द होता है। उस समय नाडीकी गति मंद होती है श्वास लेना कठिन होता है शरीर ठंडा पडता है। पसीना बहुत होता है एक दो मीनट दर्द रहकर कुछ कम होता है फिर दर्द उमडता है और उपचार से शांत होता है। इस प्रकार हर दरदे चालाक उमड आता है।

पथ्यापथ्य—आक के या ऐरंड के पत्तो पर महानारायण तेल या ऐरंड तेल लगा कर तपा कर छाती पर बांध उपर पाटा बांध शेक करना। दस्त पिशाब होने की दवा देना। शारीरिक श्रम न करना। मन शांत रखना। शोक चिंता न करना। सूखी हवा प्रकाश वाले कमरे मे रखना। ठंडी या वर्षा हो तो अंगिठी आगने उपलको रखना। कपडे के गोटेसे शेक करना। शरीर पर ठंडा पवन लगने न देना। अजीर्णकादी पेटमे वायु गेस आध्मान आफरा नहो यह ध्यान रखना। सूखा खुराक ज्यादा रखना। पाचन मे लघु हो अैसा खुराक लेना। सूरण बेगन, दुधी फुलावर कोशी परवल हिंग धनिया जीरा हलदी नमक मेठानीम कालो मिरच अदरख पुराने धान्य जौ चावल गेहु बाजरी चना मुंग उडद तुरी आदि हितकारक है। गर्म जल से स्नान करना। महानारायण तेल पडाशलाक्षादि तेल तिलका तेल शरीरपर मालीष करना। मुंग फलीका तेल वेजीटेबल घी बहुत खट्टा बहुत गर्म जलद पदार्थ खाना नहि। बहुत ठंडा पदार्थ, आइस क्रीम कुल्फी चोकलेट पावडरका दूध खट्टी छांछ, खट्टा दही खाना नहि। चा काफीका व्यसन हो तो निखालस दूधकी एक दो दफे पीना। खांड शक्करका मिठाई कम खाना। फरसान नहि खाना। ठंडे पानीसे नहि नहाना

दुनियाके आगे बढे हुये देश वैदक पद्धतिके वैज्ञानिक लोग, हृदयरोग केन्सर क्षय जैसे रोगके रीसर्चमे अढलख धन खर्च रहे है। इस प्रकार हृदयरोगके पीछे भी जमानासे प्रयत्न और धनका बडा व्यय करते है पर इसका कोई परिणाम नहि हुआ। वर्तमान वैदक वैज्ञानिकोके सामने क्षय केन्सरके रोगकी तरह हृदय रोगका प्रश्न भी खडा है। विज्ञानमे आगे बढे हुए देशोमे क्षय और केन्सर रोगसे मरते है इससे ज्यादा लोग हृदय रोग से मरते हैं। हृदयके स्नायुओंको रक्त देनेवाली रक्त वाहिनीओकी खराबीसे भी हृदयरोग होता है। कफके प्रकोपसे या कफकारक पदार्थो खानेकी आदतसे बढे हुए कफसे रक्त वहन करने वाली शिराओमें कफका या कफ जैसे चिकट पदार्थ जमनेसे वह कमजोर होती है। अंदरका रक्त वहन करनेका रास्ता संकुचित होता है इस कारण हृदयको आवश्यक रक्त नहि मिलता। अचानक दर्द उठनेसे रोगी हाथसे छातीको दाबता है और विलायती दवाका डोझ ले लेता है। रक्त वाहिनी ओंमे घुसा कफ जैसा पदार्थ दूर करनेकी या रक्त वाहिनीओंकी जडता दूर करनेकी दवाई आजतक नहि निकली। विलायती दवासे कभी तत्कालिक आराम मिलता है लेकिन रोग नहि मिटना या रोगका मूल कारण दूर नहि होता। यह कार्य तो आयुर्वेदिक दवाई हि कर सकती है। दुनीया भरके ओलोपेथ डाक्टरो और वैज्ञानिकोको कोन्फरन्से मिलती रहती है। इसरोगकी दवाइका आविष्कार करनेके लिये करोडो

रुपयाका खरचा प्रत्येक देशकर रहा है पर सफलता नहि मिली। जब आयुर्वेद और इसके रसायन शास्त्रमे हृदयके विविध रोगोकी ऋषिमुनीओने सेंकडो वर्षतक अनुभव लेकर सेंकडो दवाइयां अपनी अपनी संहिता या ग्रन्थोमे वर्णित है इसका संशोधन करना अन्य देशोको तो सुझना संभव नहि परन्तु हमारी सरकारके ध्यान पर भी यह बात नहि आति यह खेदका विषय है। हृदय रोगके लिये, हृदय बलवान होकर बदन पड जाय इसके लिये आयुर्वेदिक दवाई हि सफलता प्राप्त कर रही है और इसका हि अंतिम विजय है।

हृदयार्णव—अभ्रक भस्म ताम्र भस्म पारद गंधक पीपल सब सम भाग लेकर हरड पीलु और अर्जुन छालका क्वाथ कर भावना देकर घोंट कर रखना। मात्रा २ से ३ रती दिनमे २ दफे कटकारी अवलेहके साथ देना।

हरिहर रस—पारद तोला ८, गंधक तो. १२, अभ्रक भस्म तो ६, लोह ताम्र शंख कौडी शुक्ति प्रत्येककी भस्म रस, सिंदुर वंशलोचन इलायची पीपल सोंठ कालीमीरच शिलाजीत प्रत्येक चार चार तोला सब साथ विधिवत मिलाय अदरखका रस, केलीके स्थंभका रस अडूसेका रस, अर्जुनकी छालका क्वाथ काशोंटी (कीसोदरा) रस प्रत्येककी एक एक भावना दे कर छायामे सुखाकर घोंट रखना। मात्रा २ से ६ रती शहद कंटकारी अवलेह च्यवनप्राश दुध किसीके साथ दिनमें २ या ३ वख्त देना। हृदयकी कमजोरी, हृदयशूल श्वास की अधिक गति फुपफुसके रोग खांसी क्षय कमजोरी स्वर नली अन्न नलीका रोग गलेसे हृदय तक किसी स्थानमें हुआ विद्रधि केन्सर आदिमे उत्तम गुणकारी है।

प्रभाकर वटी—स्वर्णमाक्षीक भस्म लोह भस्म अभ्रक वंशलोचन शिलाजीत सब समान भाग लेकर अर्जुन वृक्षकी छाल के क्वाथमे दो दो रत्तीकी गोली बनाना। शहदसे अथवा वासावलेहसे २ से ४ गोली दो समय देना छातीके रोगमे उत्तम गुणकारी है।

शंकर वटी—पारद तोला ४, गंधक तो. ८, लोह भस्म स्वर्णमाक्षिक भस्म वंग भस्म शंख भस्म शुक्ति भस्म प्रवाल भस्म अभ्रक भस्म प्रत्येक चार चार तोला मिला कर पीलु चित्रक अदरख अरणी अडूसा पीलीमूल अर्जुन प्रत्येकके क्वाथ या रसको एक एक भावना देकर दो दो रतीकी गोली बनाना। दिनमे दो समय २ से ४ गोली पानीसे देकर उपर कंटकारी अवलेह अथवा श्रीवाहुशाल १ से २ तोला खिलाना। हृदयके छातीके सर्वरोगमे बहुत फायदा करती है।

त्रिनेत्र रस—पारद गंधक अभ्रक भस्म समभाग लेकर अर्जुन छालके क्वाथकी २१ भावना देना। मात्रा ३ से ६ रती शहदसे देना।

हृदय रोग हर मिश्रण—रत्नभागोत्तर रस तोले १, मुक्ता पिष्टि तोला १, स्वर्ण वसंत मालती. ०॥, वसंत कुसुमाकर तो ०॥, छोटी पीपल तोला २ सब साथ पीस घोंट कर शीशीमे भरना। प्रातः शाम ३ से ६ रत्ती शहद मखन या दूधसे देना। हृदयके फेफडोंके सब रोगमे उत्तम है। हृदयको बलवान बनाता है।

हृदय पुष्टि मिश्रण—महालक्ष्मी विलास शिलाजतु प्रयोग योगराज रसायन बंगभस्म श्वेत प्रवाल चन्द्रपुटी स्वर्ण माक्षिक भस्म लाल प्रत्येक एक एक तोला और छोटी पीपलका चूर्ण २ तोला सब साथ मिलाकर मात्रा ३ से ६ रत्ती दिनमे २ वख्त शहद दूध या पानीसे देना। उपर पूर्ण चंद्रोदयको षडगुणकी गोली २ से ३ देना। छती हृदयके सबरोगोमे उत्तम गुणकारी है। इसके सेवनसे हृदयबंध पडनेका भय नहि रहता।

अर्जुनारिष्ट—अर्जुनछाल शेर ५, छोटी कट हरी पंचांग शेर ५ कसौंदी (कासोंदरो) के पानी शेर ५ सबके साथ मिला दसगुने अर्थात १५० रतल पानीमे पकाना आधा पानी रहनेसे कपडछान कर एक चिनाइ मिट्टीकी बरणीमे या लकडोका कोठीमे भर उसमे धाईके फूल शे. २॥, तज तमालपत्र नागकेसर इलायची लोंग कालो मीरच सोंठ पीपलीमूल प्रत्येक आधा आधा सेर और गुड शेर १० डाल कर चिनाइ मिट्टीकी बरणीमे अथवा लकडोकी रांगदीहुइ पितलकी कोठोमे भरकर मुख बंधकर रख छोडना दसदस दिनके पीछे खोलकर हिलाते रहना। डेढ या दो मासके पीछे खोलकर कपड छान कर पवन न जाय एसे वर्तनमे भर रखना। यह आसव २ से ५ तोला तक दिनमे दो दो दफे अकेला या किसी औषधके पीछे पिलाना। छातीके रोग उरःक्षत क्षय खांसी श्वास फेफडोंके रोग आदि मिटते हैं।

हृद्बंध भयहर गुटी—पूर्णचंद्रोदय, स्वर्णभस्म मुक्तापिष्टी माणिक्य पिष्टी पुखराज पिष्टी वैक्रांत पिष्टी नीलम पिष्टी गोमेद पिष्टी वैडूर्य पिष्टी प्रत्येक आधा आधा तोला, महालक्ष्मी विलास तोले १, जय मंगल रस तोला ०॥, हीराभस्म रत्ती ६ लेना। पहिले हीरा भस्मको, पूर्ण चन्द्रोदयमे डाल २ घटा घोटना पीछे स्वर्णभस्म और मुक्ता पिष्टी डाल २ घटा घोटना पीछे दूसरी सब चीजों डालकर ४ घंटा तक घोंट कर इसको अदरखके रसको और तुलसीके पत्तेके रसको एक एक भावना देकर दो दो रत्तिकी गोली बनाकर रखना प्रातः काल ३ से ४ गोली अष्टवर्ग चूर्ण ३ मासके साथ शहद या मलाई या दुधसे देना। पीछे दुध चाय काफी पीनेकी आदत हो पीना। पथ्य खास नहि है, लेकिन हृदय रोग वालोने या कमजोर हृदयवालोने किसी भी औषधका सेवन करते हो या न करते हो चाय काफी कोकोबंद न कर सके तो एकसे अधिक वख्त नहि पीना। आइसक्रीम कुल्फी चोकलेट बाजारकी मिठाई आदि नहि खाना।

मुखके बाहरके भागके रोग

कारण—अजीर्णसे, दारु पीनेसे, खराब हवा पानीसे, दस्त दब्ज रहेनेसे मुखमे खील डाघ या चमडीके रोग आदि होते है। जवानीके प्रारंभमे खील जैसे चमडीके रोग होते है फिर स्वाभाविक हि दो चार साल के पीछे मिट जाते हैं।

पथ्यापथ्य—दस्त पिशाबका खुलासा हो यह ध्यान रखना। यदि दस्तकी कब्जी रहती हो तो मधुविरेचन चूर्ण २ से ६ माशा सप्ताहमे दो तीन दफे लेते रहना। आरोग्यवर्धनी गोली चन्द्रप्रभा कीशोर गुगल पुनर्नवा गुगुल अमृता गुगल में से किसी की २ से ४ गोली लेना। सफेद मिट्टी दुध या पानीमे मिलाय मुखपर मर्दन करना। दशांग लेप दस तोलामे ४० तोला सफेद मिट्टी अथवा शंखजीरा मिलाकर रखना हमेशा स्नान के समय पांच दस तोला गर्मजलमे मिलाय मुख पर मर्दन करना। महालाक्षादि तेल अथवा भृंगराज तेल मर्दन करना।

कुंकुमादि तेल—केसर चंदन लोद्र पतंग रक्त चंदन कृष्णागुरु मजीठ वाला मूलेठीमूल तमाल पत्र पद्मोकाष्ठ कमलकंद कुष्ट गोरोचन हलदी लाख दारुहल्दी सेनागेरु सरसो वच शेषगुंदर प्रत्येक एक एक तोला लेकर महीन कर उसमे पानी तोला २०० और गायका दूध तोला ८० मिलाकर १२ घंटा रहेने देना। पीछे उसमे तिलका तेल तोला ४०० डालकर धीमी आचसे पकाना पानीका अंश जल जाय तब उपरछान कर रख लेना। मुखपर मालीस करनेसे व्यंग छाया झांयी खील डाघ आदि मिट कर मुख सुंदर होता है।

मुखके खील के उपाय

१ इंगोरिया (इंगुदी) के फलका गीरी पानी मे पीस मुख पर मर्दन करना

२ लोध्र धच और धनिया सम भाग ले कूटकर पानी में पीस मुख पर लगाना।

३ जायफल चंदन नागकेसर समभाग लेकर कूट पानी मे पीस लगाना

४ मसूर के आटा १० तोला अंदाज लेकर उसमे घी आधा तोला डाल दूध मे मिलाय मुखपर मर्दन करना।

५ सरसो जौ लोद्र सेंधानोन समभाग ले पानी मे पीस मुख पर लगाना

६ अर्जुन की छल को गाय के दूध मे पीस कर लगाना.

७ मसूरका आटा और बडकी कोमल वडवाई समभाग ले पानी मे मीस मुख पर लगाना.

८ सेमल (शाल्मली) का कांटा दूध में पीस लगाना

इन प्रयोगो से स्त्री या पुरुषो के जवानीसे या अन्य कारणसे उत्पन्न हुए खील (मुखदूषिका) मिटते है।

मुख पर के काले लाली या सफेदी लिये डाघ आदिके उपाय

१ रक्तचंदन मजीठ कुष्ठ लोदर आमका और बडके अंकुर मसूर की दाळ शेषगुंदर समभाग कूट मिलाय रखना हमेशा गाय के दूध मे पीस मुखपर लगाने से मुखकी छाया डाघ मिटता है।

२ हलदी कपूरकचली प्रियंगु (घउंला) मसूर और मुंग सब सम भाग कूट रखना पानी मे पीस मुखपर मालीस करनेसे मुखकी छाया काला लाल डाघ चांठा मिटे।

३ इंगुदी (इगोरिया) के बीजको पकते हुए चावल के पानी मे पीस लगाते रहना काली झांइ छाया डाघ धाग मिटे।

४ करंज बीज ढांकके बीज कुष्ठ हलदी समभाग मिलाय पानी से या चावल के पानी से पीस मुख पर लगाना छाया डाघ आदि मिटे।

५ चनेकी दाल तो १० रात्रीको भिगो रखना प्रात निबुके रसमे पीस उसमे नीलाथोथा कच्चा १ मासा मिलाय पीस मुखपर मर्दन करना।

६ कपूर हीरादखण राल मोदार पारद गंधक कनक बीज नीलाथोथा प्रत्येक पांच पांच तोला लेना पारा गंधक घोंट कज्जली कर पीछे मोदार डाल घोट पीछे दूसरी चीज मिलाना गायका घी तोला २०० लेकर गर्म कर उसमे मोम तोला ५ डाल पीघळ जाने पर दूसरी वस्तु मिलाय मल्म बनाना लगानेसे मूखकी छाया डाघ धावा आदि मिटते है।

७ बोर (बदरी) की लाख बबुलका मूळ या छाल केसर सोहागा सम भाग लेकर कूट कर रखना। निबूके रस मे घोट लगानेसे मुखकी छाया दुर हो।

८ सरसो लोदर हलदी घउंला (प्रियंगु) तिल मसुर सम भाग कूट पानिसे पीस मालीस करना मुखकी छाया मिटे।

९ सरसो और जीरा सम भाग ले पानीसे पीस मुखपर लगाना मुखकी छाया जाय

१० अमलतासके पान पीस मुखपर मर्दन करना मुखकी झांइ छाया डाघ मिटे.

११ तिल जीरा शाहाजीरा सरसो समभाग मिलाय दुध मे पीस मुख पर मर्दन करनेसे सब प्रकार के डाघ खील मिटे।

१२ सोनागेरू मजीठ नागरमोथ, हलदी दारुहलदी समभाग मिलाना। पानीसे या दुधसे पीस लगाना । काले डाघ आदि मिटे ।

१३ छोटी हरड (हीमेज) वोदार गंधक समान भाग मिलाय निंबु रसमे लगावे काले दाघ जाय ।

१४ गंधक गूगल लोबान शक्कर सफेद चंदनका चूरा समान भाग मिलाना। पानीमे पीस लगानेसे कपाल के मुखके काला टाधा मिटे

मुखके मसा के उपाय

१ नवसार सोहागा फिटकोरी संखिया सत्यानासीका मूल समभाग कूट निंबूके रसमें घोट सुपारी जैसी सोगठी बनाना। नीबुरस मे या पानीमे घीस कर मसके मूलमे लगाना । मुखके गलेके मसे गिर जाते है । उस जगह से खून गिरे ता अपामार्गके पत्ते को पीस पोटीस लगा देना रूझ आ जाती है । यह सोगठी विषैल है ऐसा लेबील लगा देना ।

२ लाल संखिया नीलाथोथा सफेद मिट्टी मैनसील जूना पापड़खार सब सम भाग कर घोंटकर निंबुरससे सोगठी सुपारी जैसी बनाना । पानीमें घीस कर मसेके मूलके लगाना । मसेके उपर घीका फाया रखना । मसा निकल जाता है। पीछे उस जगह रोपण मलम लगाना ।

३ सज्जीखार शंखका कच्चा चूर्ण पानमे खानेका चूना सम भाग मिलाकर रखना पानीमे मिलाकर लेप करनेसे मस गिरजाते है ।



दिमाग मगजके रोग

प्राणाः श्रिता हि यत्र प्राणभृतामिन्द्रियाणि सर्वाणि ॥
सर्वांगानामूर्ध्वं शिरः उत्तममंगमुच्यते विद्धि ॥१॥
वाताद् भ्रशार्तिं शूलं स्फुरणं पित्तात्सदाहधूमार्तिः ॥
गुरुता जडता च कफात्पीडा प्रातस्तथा रजन्यां वै ॥२॥
दोषत्रिकचिन्हयुतं त्रिदोषजं क्रिमिभवं पुनश्च शिरः ॥
दौर्गन्ध्यकंडुतोदार्तियुतं वेद्या वदन्ति पूययुतम् ॥३॥
॥ रसोद्धार तंत्र ॥

कारण—मल मूत्रका वेग रोकनेसे, रातको जागरण करनेसे दिनको सोनेकी अधिक आदतसे, सामनेका पवन लेनेसे, बहूत श्रम करनेसे बहूत अग्नि या सूर्यका धूप सेवन करनेसे, मीठाइ बनाने वाले हलवाइ (कंदोय) या धूपमें काम करनेवालोंको अग्नि और धूप सहन करना पडता है । अजीर्णपर भोजनसे विना भूख खाते रहेनेसे, अतिविषय सेवनसे, हस्तदोषकी कुटेवसे, दिमागका काम हदसे ज्यादा करनेसे, क्रोधसे शोकसे मानसिक आघातसे भयसे चिंतासे दाह करनेवाली गरमागरम चीजें खानेसे, चाय काफी जैसी चीजोंका अधिक व्यसनसे, आवेशसे, अति आनंदसे, हदसे ज्यादा हास्य करनेसे हसनेसे अति उपवाससे, अतिभाषण करनेसे, अप्रिय अथवा विपैल वस्तुकी गंधसे धूल धुंआ ठंडी या ताप लगनेसे, अति खट्टा अति तीखा पदार्थ बर्फ आइसक्रीम कुल्फी जैसी चीजे खानेकी आदतसे रंगबेरंगी प्रवाही पीनेसे, दुःखका समाचार सुननेके पीछे अश्रु (आंसु) रुकनेसे-अश्रु न पडनेसे मस्तक पर किसी वस्तुकी चोट लगनेसे, वर्षाकी ऋतुके प्रारंभसे, ऋतुबदलनेसे, मनके आघात संतापसे, अतिरुदनसे देशकाल हवा पानी बिगडनेसे इत्यादि अनेक कारणोंसे मस्तकका खून बिगडकर वात पित्त कफका प्रकोप होकर विविध प्रकार के मस्तकके रोग उत्पन्न होते है ।

वातजन्य मस्तक पीडा—उच्च स्वरसे भाषण करनेसे, दारु अधिक पीनेसे जागरणसे, ठंडा पवन लगनेसे अतिविषयसे मल मूत्रादिका वेग रोकनेसे अधिक उपवास करनेसे अश्रु (आंसु) रोकनेसे शोक भय त्राससे अधिक भार सिर पर उठानेसे पंथ करनेसे इत्यादि कारणोसे बढा हुआ वायु मस्तककी शिराओं मे घुसने से मस्तक पीडा होती है । भ्रकुटी ललाट मे पीडा हो, मस्तक फिरे चक्कर के साथ पीडा हो छोटी नसे फरके। बडी शिरोधरा नसे झकड जय । रातको पीडा बढे कपडा बांधनेसे स्निग्ध गर्म वस्तु लगानेसे शेक करनेसे पीडा कम हो, यह वात जन्य मस्तकरोग है ।

पीछे पकाना घट हो जाय तब अग्नि बंद करना दुसरे दिन प्रातः कालमे फिर आधा घटा हिलाकर नीचे लिखे ११ द्रव्योका चूर्ण तैयार रखा हो डालना और फिर तीन घंटा तक हिलाना शाम तक रख छोडना पीछे रांग लपेटी कोठीमे भर देना ।

डालनेके द्रव्य-सोंठ पीपल कालीमीरच तज इलायची लोंग नागकेशर चोपरचीनी वच शतावरी हरडे बहेडा विदारीकंद प्रत्येक चार चार तोला और अष्टवर्ग आठो मिलाकर ६४ तोला सब साथ कूट कर रखना । यहां ध्यान रखनेका यह है कि यह अवलेह पकानेका बर्तन रांग लपेटा पीतलका लेना और हिलानेका तवेथा पीतलका या लकडीका लेना लोहाका होनेसे अवलेह काला बन जायगा । यह अवलेह २ से ४ तोला तक दिन भर मे खाया जाता है मस्तक-दिमाग के सब दर्दमे उत्तम गुणकारी है ।

षड्बिन्दु तेल—एरंडमूल तगर शतावरी जीवंती रास्ना सेंधानोन भांगरा हलदी वायविडंग चमेलीके फूल या पत्ते मुलैठी सोंठ ब्राह्मी पाषाणभेदनी नीमकी छाल शखाहुली दस्ती क्षुप तुलसीका पत्ता प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर इसमे बकरीका दूध रतल १० और भांगराका रस रतल १० डाल कर भिगो रखना । काले तिलका तेल रतल १० डालकर धीमी आंचसे पकाना पानीका अंश जल जाय तब अग्नि निकालना २४ घंटा ठंडा होने देना दूसरे दिन कपडछान करना । इस तेलका छ बुंद नाकके एक एक छिद्र (फरणा) मे डालकर निद्रा करना या दो घटा सोते रहना । कानमे भी १०-१५ बुंद डालना । मस्तक -दिमागके सब रोगमे उत्तम गुणाकारी है ।

> षड्बिन्दवः प्रदेया प्रतिनासारन्ध्रमस्य तैलस्य
> शिरसः सर्वविकारांश्च्युतकेशान् शिथिलदन्तवेष्टांश्च ॥१॥
> चक्षुः कर्णगदान्वै हन्ति च दृष्टिं गरुडसमां कुर्यात् ॥
> षड्बिन्दुतैलमतुलं बाहुबलं नेत्रकर्णशक्तिं च ॥२॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

पंचामृत लोह गूगळ पारद गंधक रौप्य भस्म अभ्रक भस्म माक्षिक भस्मलाल प्रत्येक चार चार तोला, लोह भस्म आठ तोला, गुगल २८ तोला सबको कूट कर साथ मिलाकर इसमे अरंडीका तेल तोला ८ डालकर कूटना मिल जानेपर भांगरेका रस डालकर घोटना और रत्ती प्रमाण गोली बनाना ३ से

६ गोली पानीसे दिनमे दो दफे देना । उपर गायका दूध पिलाना । सिरमस्तकके सब रोगोंमे उत्तम गुणकारी है ।

लक्ष्मी विलास तेल—धतुरा चंपाका फूल नागरमोथ बलामूल बीली गर्भ असगंध बडी कटहरी के फल अडूसेपते चदन रक्तचंदन मजीठ सारिवा अनतमूल हलदी दारुहलदी मूलेठीमूल महूडेकफूल पद्मकाष्ठ कमल फूल वाला अमवायन गधप्रसारणी रास्ना सुगधी मेहेंदी गुलाबका फूल आंवला पानडी इलायची प्रत्येक पाँच पाँच तोला लेकर कूटकर पीतलके टोपमे डाल उसमे सातावरीका रस बिदारी कदका रस भूराकोला (कुष्मांड) का रस केलेके स्तंभका रस हरे गोखरूके पचांगका रस नालीएरका रस दहींका पानी (मस्तु) बकरीका दूध लाखका क्वाथ हरा आंवलाका रस प्रत्येक साठ साठ तोला लेकर उसमे डालना १२ घटा भिगो रखना। पीछे तिल्का तेल रतल २० डालकर धीमी आंचसे पकाना पानीका अश जल जानेके पीछे २४ घटा स्वांगशीत होने देना कपडछान कर अच्छे बरतनमे भर सुरक्षित रखना । यह तेल कानमे नाकमे मस्तकमे डालनेसे मस्तकके आंखोके कानके रोग मिटते हैं और बुद्धि स्मरण शक्ति बढती हैं । शरीर पर मालीस करनेसे आयुष्य बढता है ।

पाठादि लेप—पाठा पटोल सोंठ पुष्कर मूल सहजनाकी छाल चकवडके बीज कुष्ठ सब समानभाग कूट कर छाछमे पीस मस्तक पर गाढा लेप करनेसे मस्तकके सब रोग मिटते हैं ।

शिरोबस्ती—मस्तकमें फिट हो ऐसी खडे काठेकी चमडेकी टोपी कराना टोपीका बीचका भाग खाली रखना । और उसके नीचेका कांठा ललाट तक चारोंचोर फीट हो और ऊपरका कांठा बालके उपर ३ अंगूल उचा हो इस प्रकारकी टोपी करना । टोपीके नीचेके साधामेसे भरा हुआ प्रवाही आंख गरदन पर न गिरे इसलिये सांधमे चारोंओर उडदके आटासे अंदर भागमे लगा देना ।

पीछे रोगी हिले चले नहि इस प्रकार स्थिर बैठा कर औषधीय तेल टोपीके उपर के कांठा तक भरना और डेडसे तीन घंटातक रहने देना, इतने समयमे पीडा शांत होगी । यह शिरोबस्ती वायुप्रधान मस्तकरोगको और गरदन हांसडी आंख कान बाहु कमर आदिकी पीडाको शांत करती है । शिरोबस्ति ५से७ दिन तक दी जाती है ।

शिरोबस्ति देनेके पहिले रोगीको खाने नहि देना—भूखा पेट रखना । समय पूरा होनेसे रोगीको धीरेसे नीचा नमा कर तेल ले लेना, टोपी निकालना पीछे मस्तक ललाट मुख गरदन कमर आदि अवयवोंको मर्दनकर पीछे गर्म पानीसे

स्नान करना । पीछे दाल भात खीचडी आदि लघु खुराक देना । वात पित कफ जिस दोषकी प्रधानताका सिर दर्द हो उस रोगको शमन करनेवाले तेलकी शिरोवस्ति देना । वायु और कफ प्रधान दर्द हो तो तैलको कुछ तपाकर भरना पित्त गरमी प्रधान होवे ठडा तेल भरना ।

वैसे हि वात प्रधान हो तो महानारायण जैसा तेल, पित्त प्रधान होतो लक्ष्मी विलास तेल भृगराज तेल अथवा महालाक्षादि तेल, कफ प्रधान हो तो महानारायण तेलमे खेपरका तेल मिलाकर उपयोगमे लेना ।

शिरोरोग हर मिश्रण—१ मुक्ता पिष्टी तोला ०॥, सप्तामृत लोह तो २, सुवर्ण पर्पटी तो. [illegible], प्रवाल पञ्चामृत तो २, अमृता सत्व तोला ३ सब साथ घोट शीशी में भरना दिनमे दो दफे ४ से ६ रत्ती शहद दूध घी या पानीसे देना मस्तक के सब रोगमे उत्तम गुणकारी है ।

शिरोरोग हर मिश्रण—२ जवाहर मोहरा पिष्टी स्वर्ण वसंतमालती अभ्रक भस्म शिरो रोग हर वटी चन्द्रप्रभा शिलाजीत प्रत्येक एक एक तोला लेकर घोट रखना । दिनमे दो दफे ४ से५ रत्ती शहद घृत या पानीसे लेकर उपर च्यवनप्राश [illegible] अथवा कल्याण घृत १ से २ तोला खिलाना ।

सर्व शिरोरोग हर नस्य—रसोत (रुप्रवंती) तोलो १, घिस कर सुखा हुआ सफेद चदन तोला २, मूलैठी मूल तोला ३, शतावरी तोला ४, अष्टगंध अठोमिल कर तोला ८ तमाखुकी पत्ती सुखी हुई अथवा छिकनी तोला ४० सब साथ मिलाय मलय के अत्तर कि सुगधी मिलाकर रखना । हमेशा छिकनी कि तरह सुवते रहनेसे मस्तकके सबरोग मिटते है । और मस्तक के कोइ रोग न हो और दिमागका काम करने वाले हमेंशा इसका उपयोग कर सकते है । उन्हे दिमाग का रोग नहि होता । इसे ब्रेनटोनिक नस्यभी कहते हैं ।

अर्ध नारीश्वर नस्य—कौडी भस्म तोला. १, पकाया सोहागा तोला १, काली मिरच तोला १, अतीस तोला ३, मूलैठी मूल तोला ४, तमाखुकीपती तोला १० सब साथ पीस रखना सब प्रकार के मस्तक रोगमे सुंघाना ।

वात शिरोरोग मिश्रण—माणिक्य पिष्टी अभ्रक भस्म सप्तामृत लोह वात विध्वंस बृहत वात चिंतामणि प्रत्येक आधा आधा तोला और मूलैठी चूर्ण ३ तोला मिश्रकर शीशी मे भरना । मात्रा ६ से ८ रत्ती दिनमे दो दफे शहद दुध या कल्याण घृतके साथ देना वायुसे उत्पन्न मस्तक रोग मिटता है ।

कुष्टादि लेप. कुष्ठ पुष्कर मूल सोंठ सममाग लेकर छाछमे पीस ललाट पे लेप करना वात जन्य मस्तक पीडा मिटती है ।

पित्त शिरो रोग प्रयोग—मुक्ता पिष्टी तोला ०।, प्रवाल पिष्टी तो १, चन्द्रप्रभा लोह तो १॥, अमृता छत्र तो. २, जवाहर मोहरा पिष्टी, तोला १, स्वर्ण वसंत मालती तो. ०॥, मूलेठी मूल चूर्ण तोला २ सब साथ घोट रखना ४ से ६ रत्ती शहद घृत च्यवनप्राश जीवन या शिरो रोग हर अवलेह अथवा गुलकंद के साथ देना। पित्त गर्मी से उत्पन्न मस्तक रोग मिटता है।

चन्दनादि लेप—चन्दन वाला मूलेठी मूल कमल पुष्प कमलगट्टेकी गीरी, घीमे तला हुआ आवला सब समान भाग लेकर गुलाब जलमे पीस ललाट मस्तक पर लेप करनेसे पित्त गरमी से उत्पन्न हुआ मस्तक रोग शांत होता है।

कफ शिरो रोग प्रयोग—स्वर्ण वसंत मालती तोला ०॥, साबरसींग भस्म तो. १, वातगजांकुश तो १, पुनर्नवा गूगल तो २, कफ कुंजर तोला १, छोटी पीपल तोला २ सब साथ पीस घोट रखना। ४ से ६ रत्ती शहद घृत दुध या पानीसे दो समय देना। कफ सर्दीसे उत्पन्न हुआ मस्तक रोग मिटता है।

त्रिदोष शिरो रोग प्रयोग—स्वर्ण भस्म तोला ०।, गोदन्ती भस्म स्वर्ण माक्षिक भस्म लाल चन्द्रामृत लोह शिरःशूलादिवज्र प्रत्येक एक एक तोला सब साथ पीस घोट रखना। दिनमे दो या तीन दफे शहद या पानीसे देना। वात पित्त कफ तीनो दोषो से उत्पन्न हुआ मस्तक रोग पीडा शांत होती है।

क्षय शिरो रोग प्रयोग—महालक्ष्मी विलास वसंतकुसुमाकर अभ्रक भस्म स्वर्ण भस्म स्वर्ण वसंत मालती क्षय मंगळ रस पाचन रस सब सम भाग लेकर घोट रखना। दिनमे दो दफे २ से ४ रत्ती शहद घृत मलाई मक्खन अथवा च्यवनप्राश जीवन के साथ देना क्षयसे शरीरकी कमजोरी से उत्पन्न हुआ मस्तक रोग मिटता है।

कृमि जन्य शिरो रोग प्रयोग—पंचामृत लोह गूगल तोला २, जीवितप्रदा तो १, अमृता घन तोला १॥, मुक्तापिष्टी तो ०।, वात गजांकुश रस तो। १, साबरसींग भस्म अतीस हलदी प्रत्येक दो दो तोला सागर गोटा (कांकचिया) की गिरी १ तोला सब साथ घोट रखना ६ से ८ रत्ती दिनमे दो समय पानीसे देना। मस्तक मे कृमि हो या पेटमे कृमि के उपद्रवसे मस्तक पीडा हो मिटती है।

नस्य—सोंठ पीपल काली मिरच करंज बीज सहजनेका बीज सब सम भाग लेकर बकरी के मूत्र से पीस कर नाकमे बुंद डालनेसे कृमि जन्य मस्तक पीडा मिटती है।

नस्य—लसुन को पीसकर रस निकालना नाकमे १० या १५ बुंद डालनेसे नाकद्वारा जंतु निकल जाता है।

कृमि शिरो रोग तैल—वायविडंग, खारा (पापडियो खारो), दंतीमूल हींग समभाग कूट प्रत्येक चार चार तोला, बडी कटहरी के फल तोला १० सबको गौमूत्र मे पीस सरसोका तेल तोला ८० पकाना। नाकमे डालनेसे तीक्ष्ण शिरो विरेचन होकर कृमि जन्य मस्तक पीडा मिटे।

नस्य—उत्तम माने सागपानी (युग्मफला चमार दुद्धली) के पत्ते २ तोला और कपूर १ रत्ती साथ पीस रस निकाल नाकमे और कानमे डालनेसे कृमिजन्य मस्तक पीडा शांत होती है।

नस्य—मायफल कपूर डीकामाली तमाकुकी पत्ती दो दो तोला लेकर एरंड के तेलमे पीस २४ घंटा के पीछे कपड छान करना। यह तेल नाकमे डालनेसे मस्तक के जंतु निकल जाते है। और पीडा शांत होती है।

शिरःशूलाद्रि वज्र रस—पारद गंधक लोहभस्म निसोथ प्रत्येक चार चार चार तोला, शुद्ध गूगल १६ तोला, त्रिफला तीनो मिलकर ८ तोला, कुष्ठ मूलैठीमूल पीपल सोंठ गोखरू वायविडंग दश मूल केदस द्रव्य प्रत्येक एक एक तोला सब कूट कपडछान छन कर दश मूलके क्वाथकी भावना देकर छायामे सुखाकर घोंट कपडछान कर गायका घी तोला १० गर्म कर मिला देना पीछे पानीसे रत्ती प्रमाण गोली बनाना अगर चूर्ण रूपमे रखना। मात्रा ३से६ रती दिनमे दो या तीन दफे पानी या दूधसे देना। वायु पित्त कफ त्रिदोष जन्य मस्तक दर्द आधासीसी सूर्यावर्त आदि मस्तक रोग मिटते हैं।



आर्धावभेदक आधासीसी—सूर्यावर्त

कारण—चिन्ह:—रुक्ष खुराक, अजीर्ण पर भोजन, बरफमें सन्मुख पवन लगना, मलके वेग रुकना, अति उजागरा परिश्रम अधिक व्यायाम, आदि कारणोंसे कुपित वायु अकेला अगर कफके साथ मिल कर यह दर्द करता है तब गरदन भ्रूकुटी, भमर, लपणां (शंख), कान आंख ललाट आदि अवयवोंके साथ संबंध रखनेवाले आधे मस्तकमे पीडा होती है। आहार विहारकी अनियमतासे दिमाग पर चिंता और बोझ पडनेसे शोक चिंता और बुखार आदिकी कमजोरीसे, आंखके दर्दसे ऐसे अनेक कारणोंसे ये दोनों रोग होते हैं।

आधा मस्तक दुखता है तब एक ओर से ललाटका भाग आंखकी भमरके उपरके भागमें दर्द होता है। इसमें दर्द होना कभी असह्य होता है। कभी सारा मस्तक पकडा जाता है।

आधासीसीमें सुबह प्रात काल चढता है और अनियमित समयपर उतरता है। सूर्यावर्तमे सूर्य जैसे चढता है वैसे दर्द बढता है मध्यान्ह के समय भारी असह्य पीडा होती है और सूर्य ढळता है वैसे दर्द उतरता हुआ शामको शांत हो जाता है। आधासीसी और सूर्यावर्त दोनोंके उपाय समान है।

अर्धावभेदहर नस्य—काली मिर्च पारद, मघरु प्रत्येक चार चार तोला, पकाया हुआ सोहागा तो २, मेनफल तो ०॥, इलायची दाना तो १, कपूर तो ०॥, सबसे तीनगुना तमाखुका सूखा पत्ता सब साथ पीस कर उसको छीनाके इत्रकी सुगंध लगा कर रखना। आधासीसी, सूर्यावर्त आदि सिरके दर्दोमें नस्य देना।

प्रयोग १—षड्बिंदु तेल के १० से १२ बुंद नाकमे सूर्योदयके पहिले डालना और पीछे दो दो घंटा रहकर डालते रहना।

प्र २—सूर्योदयके पहिले धतूराका पान पीसकर उसके रसका दो या तीन बुंद दहीमें अथवा दूधमे डाल कर पिलाना।

प्र ३—सूर्योदयके पहिले घीमे बनायी हुयी गरमा गरम जलेबी तृप्ति पर्यंत खिलाना।

प्र ४— सारिवा कुष्ठ मुलेठी मूल वच पीपल कमलपुष्प सबको समान भाग लेकर छाछमें अथवा दहीके पीसकर ललाट और मस्तकमे लेप करना

प्र. ५ मेनफल, और शक्कर दोनो समानभाग लेकर दूधमे पीस कर सूर्योद-के पहिले नाकमें बुद डालना।

प्र. ६—सोंठ अफीम, लाल चावल समभाग पीसकर सोगठी बनाना। जरुरत हो जब पानीमें घस कर ललाट मे लगाना।

प्र ७—आकके पीले पान पर तिलका तैल लगाकर गरम करना और हाथसे मसल कर पानी निकालना, उसके पांच दश बुद सूर्योदयके पहिले नाकमे डालनेसे छींके आ कर दर्द मिटता है।

प्र ८—अपराजिता (गरणी) का पचांग पानीमे पीस कपडछन कर नाकमें १० से १५ बुंद डालना।

प्र. ९—काली मिरचको भांगरेके रसमे पीस कर सिर पर लेप करना

प्र १०—काली मिरच पीपल मैनशल समान भाग लेकर छाछमे पीसकर मस्तक पर लगाना।

प्र ११—पीपलका चूर्ण रती १२, शकर माशा ३ प्रातःकाल सूर्योदयके पहिले पानीसे लेना।

प्र १२—शिरीष (सरसडा) का मूल और फल पानीमें पीस कर कपडछान कर १५ से २० बुद नाकमे डालना।

प्र १३—वच और पीपल समभाग कूट कर कपडछान कर चूर्ण करना। इसमे समभागसे छीकनी या तमाखुकी पत्ती मिलाना और इसका नस्य लेते रहनेसे दो तीन दिनमे दर्द मिटता है।

प्र १४—सूरजमुखीके बीजको सूरजमुखी के पानके रसमे पीस कर ललाट और मस्तकमे लेप करना।

प्र. १५—अपामार्ग (अघाडा), बीजको अमलतासके पानके रसमें पीस कर जरूखनमें पकाना। उसका १५ से २० बुद नाकमें डालनेसे असाध्य सूर्यावर्त मिटता है।

अर्धावभेद हर मिश्रण—शिरःशुलाद्रि वज्र, तो. १, कस्तूरी भैरव बृहद् तो ०॥, शुक्ति भस्म तो १, आवरसिंग भस्म तो. १. सुवर्ण वसंत मालती तो. ०॥, वात विध्वंस तो. १, छोटी पीपल तो. १, काली मिरच तो १; सब साथ पीस कर शीशीमे, भरना। प्रातःकाल और शामको ४से६ रती गायके घीके साथ अथवा अश्वगधावलेह के साथ देना। और एक मात्रा सूर्योदय के पहिले एक घंटा पर देकर, गरम प्रवाही पिलाना।

अनन्त वात

अनन्तवात—दीर्घकालिक [illegible] (Glaucoma) से मिलता झुलता यह मस्तक रोग है। इसमें तीनों दोषोंका प्रभाव होता है। आंख भ्रूकुटी

लमणो (शखक) में तीम पैदा होती है। गालके बाजुमें कंप होता है। और कमी आंखमे अंधापा आता है। यह रोग असाध्य है।

पथ्य खोलाना, वातपित कफ शामक खुराक देना शिरोरोगमें बनाया हुवा नस्य देना।

दारुहल्दी हल्दी, मजीठ नीमकी छाल, पाठा, पद्मकाष्ट सब समभाग लेकर पानीमें पीसकर मस्तक और ललाट में सब जगह गाढा लेप करके उपर केलीके पान लपेट कर पाटी बांधना।

अनन्तवातहर प्रयोग–पंचामृत लोह गुगळ तो. १, लघु वसंत मालती तो १. सर्वेश्वर पर्पटी तो. ०।, वातगजकुश तो १, शिरोरोग हरी वटी तो. १, सब साथ पीसकर रखना दिनमें दो या तीन दफे चारसे छ रत्ती मात्रा दुध या शहद के साथ देना। उपर अश्वगंधादि अवलेह अथवा चित्रकहरीतकी अथवा अमृतमल्लातक १ से दो तोला खिलाना।



शंखक

यह रोग भी तीक्ष्ण झामर (Claucoma)से मिलता जुलता है। पित्त वायु और कफ दूषित होकर यह दर्द लमणाके (Templer)के भागमे जम कर भयंकर पीडा दाह और सूजन होती है। पीछे आंख मस्तक और कंठको रुक कर तीन या चार दिनमें रोगी मर जाता है। मस्तक पर सो दफे पानीसे या ढाकके क्वाथसे धोया हुवा घी लगाना। गुलरकी, वडकी, पीपलवृक्ष. (अश्वत्थ)की छाल, ढाककी छाल सब साथ पीसकर कपाल और सारे मस्तक पर मुंडन कर मस्तक और ललाट पर लेप लगाना।

दशमूल, कमलका फूल, दुर्वा, काले तल, पुनर्नवा मूल, सब साथ पीसकर मस्तक और ललाट पर लगाना। इसका प्रवाही नाकमे नये डालना। शिरो बस्ती देना।

बाष्प—नीम, बकाइन नीम, अडुसी, लताकरंज, सहजना प्रत्येकके पान। असगंध, शतावरी, कीटमारी, (कीडामारी) सब समान भाग लेकर एक बडे बरतनमें भर कर उबालना। उसको बाफ (बाष्प) मस्तक पर नाकमें और श्वासमे देना।

शिरीष (सरसडो) के पानका रस निकालकर नाकमें और कानमें पाव पाव घंटाके पीछे डालते रहना। शिरोरोगमें बताये हुये उपचार करना।



दिमाग-मस्तकमे रक्तस्राव

चिन्ह—दिमाग अग्निसे तपाया हो ऐसा लगे आंख और कानमें जलन हो। रातको और ठंडे उपचारसे कुछ शांति मिले। मस्तकमें भार वजन जैसा लगे, चक्कर आवे, कानमें अवाज हो, आंखमें देखनेकी तकलीफ हो, नाकसे रक्तस्राव हो, स्वभाव क्रोधिष्ट हो, घबराहट हो, निन्द और तंद्रा बढे, बुखार आवे, पेट दढा हो। मूत्रपिंड और रक्ताशयमे दर्द हो। दारू अधिक पीने से धूपसें चलनेसे और दूसरे कई कारणोसे यह रोग होता है। रोगी बेशुद्ध हो और गलेसे औषध और प्रवाही खुराक न उतरता हो तो नाक द्वारा रबरकी नली पेटमें उतार कर औषधको प्रवाही बनवाकर देना और प्रवाही खोराक देना।

आंवला, वाला, कमलपुष्प, दूर्वा, द्राक्ष, पुनर्नवा, जटामांसी, अनंतमूल, सब समान भाग लेकर, गुलाब जलमे पीसकर, मस्तक और ललाटमे गाढा लेपन करना और उपर केलीका पत्ता बांधना।

पुनर्नवा मूल, मूलेठी सर्पगंधा और जटामांसी सबको पानीमें पीसकर कपडेसे निचोड कर उसके बुंद पाव पाव घंटेके पीछे नाकमें और कानमे डालना।

षड्बिंदु तेल, लक्ष्मीविलास तेल, महालाक्षादि तेल, के बुंद कान और नाकमें हर पाव पाव घंटाके पीछे डालना।

शिरोरक्त स्रावहर प्रयोग—मुक्तापिष्टि तो. ०॥, प्रवाल चंद्रपुटि तो. १, जहरमोहरा तो. १, रसामृत लोह, तो. १, सुधापपंटी तो १, अतीस (अतिविषा) तोला, १, हीरा भस्म रत्ती १, लेना। पहिले हीरा भस्ममें मुक्ता पिष्टि डालकर एक घंटा तक घोटना। पीछे दूसरी चीजें मिलाना। पुनर्नवा पंचांगके क्वाथमें शहद मिलाकर। पाव पाव घंटामें दो तीन रत्ती मात्रा मिला कर पिलाते रहना। दूसरे जो जो चिन्ह दिखते हो तदनुसार उपचार करना।



मस्तकमें ग्रन्थी

चिह्न—मस्तकके किसी भागमें विद्रधि जैसी ग्रन्थी होती है वह पककर पस निकलता है। इस ऐकान नाक और ललाटमें दर्द होता है। उपदंश वगैरेह गरमीके कारणसेभी यह दर्द होता है। मस्तकमे पीडा हो, ठंडी लगा कर बुखार आवे, पसीना छूटे। आंचकी (आक्षेप) आवे, शरीर कमजोर हो।

मस्तकग्रन्थीहर प्रयोग—रसपर्पटी तो ॥ शिरोरोग हरीवटी तो. १, पंचानन लोह गुगळ तो. १, कांचनार गुगळ तो. १, रुमी मस्तकी तो. १, मुक्तापिष्टि तो. ०॥ सब साथ मिलाकर पलाशादि क्वाथके साथ प्रत्येक आधा आधा घंटाके पीछे दो से तीन रत्ती देना और उपर केशरादि गोली दिनमें दो दफे २ से ४ खडी दूधसे या क्वाथसे निगल जाना।

पलाशादि क्वाथ—ढाकका मूल, ढाककी छाल, गुलरका मूल दर्भके मूल, दूर्वा, पुनर्नवा पंचांग, सब सम भाग ले कर कूट कर रखना। दो से चार तोलाका क्वाथ करके अकेला अगर किसी औषधके साथ आधा घंटाके पीछे पिलाना। मस्तककी ग्रन्थी पिघलकर मिटती है।

मस्तकका जलोदर

मस्तकका जलोदर—इस रोगमें मस्तकमें पानी भरता है। यह रोग प्रायः बच्चोंको होता है। मस्तककी शिकल छोटी दीखे। चामडीमें खींच हो। मस्तकका वेज बढनेसे बालक और बडे आदमी बिछानेमें पडा रहे। बैठ सके नहीं।

जलशोषण रस—रससिंदूर, जवाखार, रुमी मस्तकी, तज, तमाल पत्र, एलायची भारंगी, जटामांसी पुनर्नवा मूल, इन्द्र इन्द्रायणके फल समुद्रशोषके बीज, समुद्रफल, सब समभाग लेकर कूट कर गुलर (उदुंबर) मूलके क्वाथकी भावना देकर दो रती प्रमाण गोली बनाना। बडे आदमीको २ से ६ गोलीकी मात्रा आराम हो जब तक देते रहना। बच्चोंको अवस्थानुसार उचित मात्रा देना। दस्त कबज रहता हो तो आरोग्यवर्धनीका चूर्ण १ से २ मासा पानीसे एक दो दिनके पीछे आवश्यकतानुसार देते रहना। वह्निभास्कर रस भी इस रोगमे दो से चार रती दिया जाता है।

मस्तकका भ्रम

मस्तकका भ्रम चक्कर अन्धेरा—मस्तकके तंतुओंमें बिगाड हो कर यह रोग होता है। चित्त किसी काममें लगता नहीं। आप किसी सांसारिक या मानसिक बडे दुःखमें डूब गया हो ऐसा मानता है। दृष्टिकी शक्ति कमजोर,

हरते फिरते सब फिरता हुआ दीखे। रोगी गिर जाय, बैठ जाय किसीको सोते हुए और और आंख बंद करे तो भी भूमि पर सब फिरते दीखे, आप आकाशमें उड़ता हो वैसा दीखे। अन्नपर अरुचि दस्तकी कब्जी आदि होते है ।

सुवर्ण वसंत मालती रत्नभागोत्तर रस मुक्तापिष्टी प्रवाल चन्द्रपुटी शिरोरोग रस वटी आदि औषधोमेसे कोइ एक या अधिक मिलाकर उचित मात्रामे च्यवन प्राश या शिरोरोग हर अवलेहके साथ देना । आरोग्य वर्धनी चूर्ण २ से ४ माशा तक गर्मजलसे देना ।

दुरालभादि क्वाथ—धमासा पंचांग पुनर्नवा पंचांग जटामांसी, मोर शिखा द्राक्ष बाला नागरमोथ रुद्रविक्षुप पलाश मूल उदुंबरमूल सब समभाग लेकर कूट कर रखना । २ से ३ तोलाका क्वाथ कर किसी औषधके साथ पिलाना ।

मस्तकके आवरण (पड)का दाह और शोथ

चिन्ह—मस्तकमे दर्द, पीडा अधिक हो, घोंघाटसे आवाजसे प्रकाशसे या मस्तक हिलनेसे दर्द अधिक हो, चक्कर आवे मस्तक गर्म रहे शिकल लाल हो निद्रा कम गर्दनके स्नायू सज्जड हो थोडा बुखार रहे । चमडी रूक्ष और गर्म रहे । नाडी की गति बढे । दस्तकी कब्जी तृषा लगे वमन हो दो तीन सप्ताहके पीछे रोगी कम जोर हो जाता है वैसे चिन्ह भी कम होता है ।

शिरोरोग हरी वटी—पंचानन लोह गूगल स्वर्ण वसंत मालती लघु वसंत मालती रत्न भोगोत्तर रस चिंतामणि चिंतुमुख जयमंगळ रस रत्न पर्पटी सुधा पर्पटी आदि औषधो मेसे एकया अधिक औषधोका योग कर उचित मात्रा रोग कालस्वरूप और चिन्ह देखकर देना। षडबिन्दुतेल भृंगराज तेल या अणुतेल तेल नाक ओर कान मे डालते रहना ।

मस्तक दाह

मस्तकका दाह—मस्तककी खोपरी मे चोट लगनेसे दारू अधिक पीनेसे मानसिक श्रम अधिक करनेसे यह रोग होता है । बुखार रहे, मस्तककी पीडा चक्कर अनिद्रा वमन आंख कानकी शक्ति कम दस्तकी कब्जी आंचकी तंद्रा बेचेनी अर्धांगवात और अन्य चिन्ह दिखते हैं । यह पित्त प्रधान-मध्यम वात-हीन कफरोग है । चिन्ह देखकर उपचार करना। मुक्तापंचामृत, शिरो रोग हरी वटी, अभ्रक कल्पवटी, जीवित प्रदावटी, स्वर्ण वसंत मालती, महाचन्द्रकला पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज वटी माणिक्य पिष्टी च्यवन प्राश जीवन अश्वगंधादि अवलेह शिरो रोग हर अवलेह षडबिन्दु तेल आदि औषधोका प्रयोग उचित मात्रा मे करना।

मस्तक-सिरकी पीडा

शिर. शूल मस्तक पीडा—शरीरकी कमजोरीसे आहार विहार की अनियमिततासे दिमाग का परिश्रम ज्यादा करने क्रोध शोक भय उद्वग आदिसे पाचन शक्ति बीगडनेसे हर वख्त सिर दुखने लगता है, फिर सामान्य दवासे मिट जाता है। कईओको २-४ या न्युनाधिक दिन तक सिर दर्द रहकर फिर उठता है। खान पानमे नियम रखना, भूख नहीं हो तो लंघन करना। खाना लघु खुराक लेना सप्ताह मे एक दिन आरोग्यवर्धनी चूर्ण २ से ४ मासा तक या मधुविरेचन चूर्ण ३ से ६ मासा गर्म जलसे लेकर पेट साफ रखना। बदाम की गिरी हमेशा १५ से २० दाना, पिस्ता २५-३० दाना, चिरोंजी (चारोली) एकाध तोला नित्य चाबकर खाना अच्छी तमखु छीकनी सुंघते रहना। शरदी लगनेसे भी यह रोग होता है।

सिरदर्द के सामान्य उपाय—उपर कहे हुये औषधो मेसे दर्द मे जिस दोषका प्राधान्य हो समझ कर योग्य रस रसायन गूगळ गुटिका भस्म आदिका उपयोग करना।

१ केशर को गायके, बकरी के या उटनी के घीमे पीसकर नाकमे १० २० बुंद डालना।

२ कुष्ट पुष्करमूळ सोंठ सममाग कूट दही में पीसकर ललाट मे लगाना

३ कलौंजी जीरा पानी मे पीस ललाट मे लगाने से शरदी का सिर दर्द मिटे

४ बांये हाथ की कनिष्ठिका सबसे छोटी (टचली आंगळी) का नख बढाना तीन महिनों के पीछे काटना सिर दर्द मिटता है।

कर्पूरादि बाम—अजवायन कुष्ठ अकलकरा कपूर काचली (कपूर काचली) तुलसी पान हलदी सोंठ जायफल मरवाका पान प्रत्येक दस दस तोला लेकर पानी मे पीस घी रतल ८ मे पकाना जलका अंश जल जाने के पीछे कपडछान करना पीछे उस घृतमे कपूर तोला, २० डाल कर पिघल जाय जब हवा न जाय ऐसे शीशेमे भरना। मस्तक की पीडा सिरदर्द मे मस्तक तालु आ कपाल में लगाना मर्दन करना। शरीर के किसी भी भागमे दर्द होता हो उस पर मर्दन करनेसे दर्द मिटता है।



मस्तक पुष्टि

मगज दिमाग कि निर्बलता—कारण ओरतोंको पुरुषोंको विद्याभ्यास करने वालों को अनेक कारणसे मगज क्षीण होता है। चिन्ता भय क्रोध आर्थिक हानि सांसारिक अनेक उपाधि, दिमाग के कामका असह्य बोझ संसार व्यवहार मे आनेवाले अनेक विघ्न आदि अनेक कारणो से मगज क्षीण कमजोर होता है। आज कल कोलेजो मे अभ्यास करने वाले छात्रों में करीबन ५० टका हस्त दोषकी आदत होती है इस कारण दिमाग हृदय आंते आदि कमजोर हो जाते है। ओरतोंको भी संतान न होनेसे, पतिसे संसार सुख नहि मिलनेसे, श्वसुरगृह मे पुत्र वधु के नाते अनेक प्रकार के दुःख पडनेसे और संसार व्यवहारकी अनेक चिन्ताओसे मस्तक कमजोर चिन्ताग्रस्त क्षीण होता है।

चिन्ह—सिरमे दर्द होता है, चक्कर आता है। सिर आंखे ललाट तपता है, निंद कम आती है, बेचेनी रहती है किसी काममे चित्त लगता नहि। दस्तकी कमी रहती है भूख कम लगती है औरतोंको ऋतु मासिक धर्म रक्तस्राव अधिक या अनियमित होता है सफेद पानी पडकर गुह्य भागमे जलन होता है।

मस्तक पुष्टि मिश्रण—मुक्तापिष्टि तोला ०॥, सुवर्ण वसंत मालती तो. ०॥, प्रवाल चंद्रपुटी तो. १, महालक्ष्मी विलास तो. १, पाहर मोहरा तो. १, अमृता सत्व तो २, सप्तामृत लोह तो १, शिलाजीत प्रयोग तो. ०॥ सब साथ मिलाकर शीशीमे भरदे। दिनमे दो समय ४ से ६ रती, च्यवनप्राश–जीवन अथवा शहदके साथ लेकर उपर दुध या जो पीनेकी आदत होपीवे मस्तकके सब प्रकारके रोग मिटकर पुष्ट होता है। हृदय फेफडा छातीके रोगमे उत्तम फायदा करता है।

मुक्ताकल्प—मुक्ता पिष्टि तो. १, प्रवाल चंद्रपुटी तो २, अभ्रक भस्म तो. १, माणिक्य पिष्टि तो १, स्वर्ण माक्षिक भस्म रक्त तो २, रौप्य भस्म तो. १, वंगभस्म श्वेत तो १, पूर्णचंद्रोदय तो. १, सब साथ मिलाकर अष्टवर्ग के जलकी भावना देकर घोटकर रखना। दिनमे एक वख्त प्रातः काल ४ से ५ रती शहद मख्खन या दुधसे देना। उपर बादाम खाना। मगज पुष्ट बलवान होता है। स्वरनली श्वासनली छाती के सब रोगमे उत्तम गुणकर्ता है।

मस्तक पुष्टि वटी—अभ्रक भस्म मुक्ताशुक्ति पिष्टि वंगभस्म श्वेत यशद भस्म लोह भस्म रौप्य भस्म सफेद मुशली इलायचीदाना चीनीकवाला वंशलोचन छोटी पीपल सेमलकी मूल (शाल्मलीमूल) प्रत्येक एक एक तोला, अष्टवर्ग ८ तोल साथ मिलाकर पीस शहदमे २ रतीकी गोली बनाना। २ से ३ गोली दिनमे एक अथवा दो दफे पानीसे या दुधसे लेना।

मस्तकपुष्टि चूर्ण—बादामकी गिरी तोला १०, पिस्ता तोला १५, चिरौंजी तोला २०, रूमी मस्तकी तोला १, अष्टवर्ग आठों मिलाकर तोला १६ सफेद मुशली तोला १० बबुलका गोंद तो. १० शक्कर तो. २०, वंशलोचन तोला ५, शुद्ध केसर तो १ तज तोला २, इलायची दाना तोला ३॥ सब साथ कूट रखना हमेशां प्रातः कालमें १ से २ तोला चूर्ण दूधमे डाल पकाकर पीना। अथवा ०॥ से १ तोला चूर्ण पानीसे लेना पीछे दूध पीना दिमागसे काम करनेवालेोका बहुत लाभ करता है। मगजकी सब प्रकारकी बीमारी तकलीफ मीटती है।

नीचेके प्रयोगोसे मगजके सब रोग मगजकी कम जोरी कम याददास्त आदि मिटते है।

१ अच्छी छीकनी सुघना।

२ षडबिंदु तेल अथवा भृंगराज तेल म तकमे बालमे डालना नाकमे बुंद डालना।

३ महालक्ष्मी विलास ३ रती शहदसे लेकर उपर बदामगीरी १५ से २० दाने चाब कर खाजाना उपर दूध पीना।

५ सुवर्ण वसंत मालती ३ गोलीमे अष्टवर्ग चूर्ण ४ मासा मिलाकर शहदसे लेकर उपर दूध पीना।

सिरके बालकी जुंये लिखे

बालकी जूंये और लिखे—बालमे जुंये और लिखे पडी हो उसका उपाय—

१ धतूरके पान के रसमे अथवा तांबूल-नागरवेलके पान के रसमे १ तोला पारद मिलाकर बालमें घीसनेसे जूये लिखे मर जाती हैं।

२ धतूराका पान तोला १० पीसना पीछे तिलका तेल तोला २० मे डाल और धतुरेके पानका रस तोला १० डाल पकाना पानीका अंश जल जाय जब कपड छान करना यह तेल बालमे डालनेसे जूये लिखें मर जाती है।

३ वायविडंग तोला १०, छिकनी अथवा चीडीका जडदो तोला १० पानीमे पीस उसमें सरसोंका तेल तोला ४० डाल पकाना। पानीका अंश जल जाय जब कपडछान करना यह तेल बालमे डालना जूये लीखें मर जाती है।

मस्तक की टाल इंद्रलुप्त

मस्तककी गरमीसे अथवा दूसरे अनेक कारणोसे मस्तकके बाल गिर जाते है और टाल पडती है। नीचेके प्रयोगोसे टालकी जगह बाल उगते है।

१· हाथीदांत की भस्म और रसोत बकरीके दूधसे अथवा पानीसे पीस कर लेप करना ।

२ थुहरका दूध आकका दूध बडकी बडवाइ भांगरा सफेद बछनाग हरडे बहेडा आंवला लोहेका चूरा घुघची (गुंजा) इंद्रायणाके फल सरसों तिलोय सब समभाग कूट गोमूत्रमे पीस सरसोंका तेल सबसे चार गुना लेकर पकाना पानीका अंश जल जाय जब कपड छानकर रखना । टाल पर लगाना ।

३ हाथीदांत की राख और आंवला सम भाग कूट कर पानीमे पीस कर लगाना ।

४ इंद्रायणका पंचांग को महीन पीस टाल पर गाढा लेप कर पाटा बांधना । २४ घटाके पीछे पानीसे धोकर साफ कर फिर दूसरे दिन लेप करना इस प्रकार ७ दिन तक करनेसे टालकी जगह बाल निकलता है ।

५ चमारदूधलीका पचांग पीस लेप करना ।

६ लोबान ५ तोला एरंड बीजकी गिरी १० तोला पानीमे पीस लेप कर पाटा बांधना ।

७ कलंमी चिमीकमाला सेंघानोन आंवला बडवाइ सब सम भाग लेकर भैंसके दूधसे पीस दो दो तोलाकी सोगठी बनाना । जरूर हो जब आंवलेके पानीसे अथवा दहीसे पीस कर लेप कर पाटा बांधना प्रातःकाल । व आंवलेके पानीसे धो डालना इस प्रकार १० से १२ दिन करना ।

८ पुंठाका नवसार गंधक लकडीकी राख सम भाग लेकर आंवलेके पानीमे दो दो तोलाकी सोगठी बनाना । पानीमे पीस लेप करना ।

९ पकाया नीलाथोथा धमासा कुंकुम ललाटमे चांडला करनेका कंकु मोदारसींग प्रत्येक पाव पाव सेर लेकर महीन पीसकर गायका घी शेर २॥ को १०१ पानीसे धोकर उपरकी चीजे मिला देना मलमकी तरह लगाना ।

सिरका खोडा व्रण गुमडा

१ हरे केर– करीरके फळको अंतधुंमं पका कर करजके या सरसोंके तेल मे पीस कर लगाना ।

२ हिंगूल गंधक मैनसिल हरताल सोनागेरु मोदार राल मावची हीराबखण सिंदूर कंपीलो सब सम भाग लेकर अलग अलग बारीक कर सबसे दूना मोम और तिलका तेल मिलाय पका कर मलम बनाना लगाना ।

उदररोग—पेट के दर्द

कारण—जठराग्नि मंद होनेसे सब रोग होते है । इसमे भी पेटके रोग मंदाग्निसे अधिक होते हैं । अजीर्णसे, अजीर्ण पर भोजन करनेसे ठंडा रातवासी बिगडा हुआ अन्नपान खानेसे आंतोमे मल जम जानेसे, आमाशय बिगडनेसे, स्वेद जलको वहन करनेवाले मार्ग बिगडनेसे, वात पित्त कफ, प्राण वायुको जठराग्निको और अपान वायुको विकृत कर पेटके रोग उत्पन्न करते हैं

चिन्ह—आफरा चढे, हरने फिरने की शक्ति कम हो, कृशता मंदाग्नि शोथ अवयवोंमे दर्द मल का अवरोध दाह ग्लानी आदि चिन्ह सब प्रकारके उदर रोगमे न्युनाधिक होते है ।

वातोदर

चिन्ह—वायु प्रधान उदर रोगमे हाथ पांव नाभि और पेट पर सूजन हो दोनो करवट होनेसे कम्मर और पीठमें पीडा हो, संधिमे दर्द हो । सूखी खांसी आलस्य शरीरके अमुक अवयवोमे शून्यता, मल सूख जाय, चमडी काली सुखी रूक्ष हो ऐसे चिन्ह घटे बढे । पेट पर पतली काली शिरामे दीखे पेट फूला हुआ हो । पखालकी तरह शब्द करे । आमाशयके ऊपरके भागमे वायु फिरता रहे ।

वातोदरारि गुटी—गंधक तोला १६, शुद्ध पारा, अभ्रक ताम्र लोह द्रवित माक्षिक प्रत्येककी भस्म पकाया सोहागा प्रत्येक आठ आठ तोला, सिलाजित पंचलवण प्रत्येक चार चार तोला, हिंग तो ६, हरड तो ६ सब साथ मिलाय निंबु रसको अथवा बीजोरा निम्बूके रसकी दो दो भावना देकर २ रत्तीकी गोली बनाना । २ से ४ गोली पानीसे दिनमे दो दफे देना । इसके सेवनसे वायुसे उत्पन्न हुआ उदर रोग मिटता है । गुल्म उदरशूलमे लाभ करता है ।

रसोनादि तेल—सोंठ पीपल कालीमिरच हरड बहेडा आंवला दंतीमूल हींग सेंधानोनचित्रक देवदार बच कुष्ठ सहजनाकी छाल पुनर्नवा सं चलवण वायविडंग अजमोद गजपीपर प्रत्येक चार चार तोला निसोथ तोला २४ कूटकर २० रतल पानीमे १२ घंटा भिगो रखना । पीछे इसमे लसुन रतल ५ पांच और तिलका अथवा सरसोका तेल रतल १५ पंदह डाल कर पकाना । पानीका अंश जल जाय जब तक धीमी आंचसे पकाना । पानीका अंश जल जानेके पीछे १२ घंटा वैसे हि रहने देना, पीछे कपड छान कर रखना । १ से २ छोटा चमाच दुधसे या पानीसे पिलाना और उदर पर मालीश करना । वायुके उदर रोगमे गुणकारी है । और सब प्रकारका वातरोग सांधोकी पीडा, तिल्ली लीवरका रोग, पेटकी गांठ बवासीर उदरका शूल आदिमे उत्तम गुणकारी है ।

१ दस्तकी कब्जी हो मल सूख गया हो तो अश्वचोली अथवा इच्छा भेदीका जुलाव देना ।

२ पीपल और सेंधानोन समभाग कूट २ से ३ मासा उष्ण जलसे २ दफे देना ।

३ लशून और अदरख एकएक तोला लमे पकाकर भोजनके साथ खाना ।

४ सरसो तोला १० कूट कर बाजरीके आटामे मिलाय अेफशाजु २ गलेकी कर पेटपर बांधना ।

५ तिल्की खली (तलनो खोल) को पीसकर पानीमे पकाकर पेटपर बांधना

पित्तोदर

चिन्ह—बुखार आवे बेचेनी हो शरीरमे पेटमे जलन दाह हो तृषा लगे मुख कडुआ तीखा लगे । चक्कर दस्त चमडी पीली पेट हरे रगका दीखे पसीना छूटे पेट फूले दर्द हो । खट्टे डकार आवे छातीमें जलन हो वमनमे पीला कफ निकले उसमे कभी लोहीका अंश हो मस्तकमें पीडा हो शरीर शिथिल रहे घभराहट बहुत तीक्ष्ण—जलद पदार्थ खानेसे दारु अधिक पीनेसे खाया हुआ खुराक पाचन न हो कर पेटमे रहनेसे सडकर पित्तका उदर रोग होता है ।

पित्तोदरारि बटी—पारद गंधक शंख पिष्टी मुक्ता शुक्ति पिष्टी मंडुर भस्म अभ्रक भस्म प्रवाल चंद्रपुटी प्रत्येक आठ आठ तोला, आंवला बहेडा नागरमोथ पुनर्नवा झटामांसी कुटकी लताकरंज बीज नीसोथ प्रत्येक चार चार तोला अमलतासकी गीरी तोला २० हरडे तोला ८ सब साथ मिलाकर काली द्राक्ष और पर्पट (खडशलीयो पित्तपापडो) के क्वाथकी भावना देकर ३ रतीकी गोली बनाना । ३ से ४ गोली दिनमें दो या तीन दफे पानी शहद या मक्खनसे दे । पित गरमीका उदर रोग मिटे ...काल के या अरणीके पान पीस कर गर्म कर पेट पर लेप करना ।

कफोदर कठोदर

यह कफ—शरदी प्रधान उदर रोग है । चिकने भारी पाचनमे गरिष्ठ शक्कर अन्न पान अजीर्ण पर भोजन बाजारकी मीठाइ ठंडे पदार्थो आदि अधिक खाने पीनेकी आदतसे यह उदर रोग होता है । अंग प्रत्यंगोमे दर्द हो उदरमे दर्द हो शरीर पर और पेट पर सूजन हो ग्लानि बेचेनी मन अरुचि निद्रा खांसी चमडी सफेदी लिये पेट कठिन हो तृषा न लगे पिशाब थोडा, दस्त चिकना थोडा निकले ।

कफोदरारि वटी—पारद तोला ८, गंधक तोला १६, लोह ताम्र शंख प्रत्येक की भस्म, सोंठ पीपल, काली मिरच पीपरीमूल तज लोंग देवदार रास्ना अजमोद अजवाइन कायफल हिंग चित्रक वायविडंग कुटकी, प्रत्येक चार चार तोला निसोथ १२ तोला, हरड तोला ८, सब साथ पीस तुलसी और अदरखकी भावना देकर दो रत्तीकी गोली बनाना। ५ से ६ गोली पानीसे देना। कफ सरदी से हुवा उदर रोग के लिए उत्तम है। कफ सरदी खांसी श्वास पिशाबकी रुकावट पिशाब की जलन आदिमे भी गुणकारी है। कठोदर मिटता है।

कफोदरादि मिश्रण—सर्वेश्वर पर्पटी क्रव्याद बृहत् आरोग्यवर्धनी चूर्ण रसो मस्तकी सब समान भाग लेकर ४ से ६ रत्ती दिनमें दो या तीन दफे गर्म पानीसे देना।

बंधान—गुदी केपान तमाखुके पान पेंलुके पान चौलाइ समभाग देकर पीसकर गर्मकर पेट पर आधा अंगुल का लेप करना।

बंधान-बाजरीका आटा आरने उपलकी या छाणा को रास सम भाग मिलाकर उसमे दो तोला नमक डालकर बडी मोटी रोटी (रोटला) बनाकर एक बाजु तावडी पर शेक कर पेट पर बांधना दस्त पिशाब छूटकर उदर रोग मिटता है। सप्ताह में २ या ३ दफे करना।

दूष्योदर—विषोदर—सन्निपातोदर

अन्नपानसे विष या विषेल चीजे खिला देनेसे, विषवाला पानी दूध दाल भात खानेसे, गरोली पल्ली (ढेढगरोळी) जैसे जंतु या उनकी लार मूत्र अन्नपानमे गिरनेसे संयोग विरुद्ध अन्नपान लेनेसे तीनों दोषोंके कोपसे उदर रोग होता है। तब पेट फूलता है। पटमे दर्द हो, कठिन हो, वमन हो, दोनो पार्श्व करवट होजरी कम्मर पीठमे दर्द हो, मुखमे शोष हो दस्त ज्यादा हो तन्द्रा-घेन बडे बेशुद्ध हो आंखोंमे पिला आदि चिन्ह होवे है।

विषोदरादि मिश्रण—आरोग्यवर्धनी चूर्ण पुनर्नवा मूल हरड उटमांसी सुधा पर्पटी सब समान भाग लेकर ६ से ८ रत्ती दिनमे दो या दिन दफे उपर गूलरके मूल का अथवा ढाकके छालका क्वाथ पिलाना।

रुदन्त्यादि क्वाथ—रुदन्ती क्षुप ढाकका मूल गूलरकामूल बटा मांसी पुनर्नवा पीपल वृक्षकी छाल नीमकी छाल कुटकी सब सम भाग लेकर कूटकर रखना। १ से २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना विष विकारको या वात पित्त कफ प्रकोपसे हुवा उदररोग मिटता हैं।

क्षतोदर परिस्रावी उदररोग

अन्नके साथ कंटक सुइ आदि पेटमें जानेसे छुरी चप्पु आदिका घाव लग जेसे, आंतोको या होजरी को भेदता हैं, तब उसमें पाक होकर पानी जैसा स्राव गुदा द्वारा होता है। तब नाभिके निचका पेट बढता है; फटता हो जैसी पीड़ा होती है। इससे वमन भी होता है गुदा या मुख द्वारा खून भी नीकलता है। होजरीमें किसी एक स्थान पर अधिक दर्द होता हैं। पेटमे वायु भरता है। खट्टे डकार (घचरका) आता हैं।

क्षतोदरारि गुटी—पारद गंधक लोह लौंग कालीमिरच जावन्त्री (जावंत्री) ढूरउ शतावरि चोपचीनी मजीठ शक्कर कायफल दाना प्रत्येक चार चार तोला और आकके दूधमे शोधा हुवा रस कपूर १ तोला, केसर ½ तोला सब विधिवत मिलाकर तुलसीके रससे मुग प्रमाण गोली बनाना। २ से ४ गोली दूध या पानीसे खडी हि निगल जाना। यह गोली उपदंश परमी आदि रोगमें भी गुणकारी है। उपर पुनर्नवा का कवाथ पिलाना।

बद्ध गुदोदर

कारण—चिकना सुखा रुक्ष अन्न पान खानेसे आंतोमें मल जमता है और गुदा द्वारा निकल सकता नहि सुख जाता है गुदाके उपरके भागमे अटक जाता है। बडी मुशकेलीसे सूखा बकरीकी लींडी जेसा थोडा निकलता है। एरंड तेल आदिकी पिचकारी देनेसे भी क्वचित्त थोडा मल निकलता है। इकठ्ठा होता हुआ मल नाभि और उसके उपरके भाग तक जमता है। इसमे इच्छाभेदी २ से ४ गोली गर्म जलसे देना एरंड तेलकी पिचकारी हमेशा देना वात पित्त कफका प्रकोप देखकर वातोदरारि वटी, पित्तोदरारि वटी उचित मात्रामे देना। आरोग्यवर्धनी चूर्ण २ से ३ मात्रा तक गर्म जलसे देना। अश्वचोली ८ से १२ गोली देना। व्यायाम करना और रोगका स्वरूप देख कर उचित उपचार करना।

बद्धगुदोदरारि घृत—हिंग लसून अदरख पीसी हुई सहजनेकी फली पीपरी मूल हरड दतीमूल जवाखार सज्जीखार सेंधानोन लताकरंज वीज शमूल नीसोथ हलदी देवदार प्रत्येक द्रव्य दस दस तोला लेकर कुचल कर द्रव्य डूब जाय उतने पानीमे रातभर भिगो रखना। प्रातःकाल उसमे घी रतल १० डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय तब कपडे छानकर रखना २ से ४ तोला अथवा रोगका स्वरूप देखकर और अवस्था दिखकर न्यूनाधिक मात्रा देना। साथ उदररोगकी दवाइ भी देना।

आनाह—पेट फूलना चढना

पेट सुखी जैसा हो, पीडा बहुत हो, रोगी धमण की तरह श्वास कष्ट से लेता रहे, काम और मल को प्रतिरोध गति होकर बहार न निकल सके, पेटमे वायु भर जाय, तृषा, नाकसे पानी गिरना, होजरी मे शूल डकार, छाती झकड जाना, मलमूत्र रुक जाना मूर्च्छा आदि चिन्ह होते है। रोग उग्र स्वरूप पकडे जब मुखसे मल निकलता है। सब उदर रोगमें दूषित व त पित्त, स्वेदवाही और जलवाही स्त्रोतोंको रूक कर प्राणवायुको, जठराग्निको और अपान वायुको दूषित कर उदर रोग उत्पन्न करते है। सब उदर रोगमें प्राय यह कारण मुख्य है इतर कारण गौण है। इसे आध्मान या आनाह कहते है।

आरोग्यवर्धनी चूर्ण २ से ४ मासा गर्म जलसे दिनमें दो तीन दफे देना। इच्छा भेदी की ३ से ५ गोली देना। आकके पान पर एरंड तेल लपेट गर्म कर बांधना। छाणाकी राख और बाजरी का आटा सम भाग लेकर पानी मिलाय गरम कर पेट पर बंधाण करना।

नारायण चूर्ण—चित्रक हरड बेहडा आंवला सोंठ पीपल कालीमीरच जीरा रुदंतक्षुप बच अजवायन पीपरीमूल सौंफ तुलसी पत्ता अजमोद कचूरा धनिया वायविडंग कलोंजी जीरा चोकमूल पुष्कर मूल जवाखार सज्जीखार पंचलवण कुष्ठ प्रत्येक चार चार तोला, दंतीमूल १२ तोला, चमारदूधली १२ तोला सब साथ कूटना। मात्रा ।। से ।।। तोला गौमूत्र या गर्म जलसे देना। आध्मान आफरा मिटता है। जमा हुवा मल निकल जाता है। गुल्म मलारोध अपान वायुका अवरोध वातरोग बवासीर पेटका शूल परिणाम सूल तिल्ली यकृत रोग आदि सब प्रकार के उदर रोगमे गुणकारी है। कैसी प्रकारके विष विकारमें गर्म घी के साथ दिया जाता है। इसके क्वाथ की पिचकारी भी दि जाती है।

१—छोटी पीपल बीना पीसी हो-खडीहि को स्नुहि दूधमे भिगोकर सुखा कर चूर्ण करना रोगका स्वरूप और रोगीका शरीरका हाल देखकर २ रत्ती से प्रारंभ कर प्रति प्रतिदिन एक एक रत्ती बढाकर प्रतिदित ४ मासा तक दी जाती है। सब उदर रोग मिटते है।

दिग्नहुतुल—निसोथ हरड बहेडा अंबला पाठ दंतीमूल कुटकी अमलतास की गिरि सोंठ पीपल कालीमीरच चित्रक छोटी कटहरी बडीकटहरी गजपीपल प्रत्येक चार चार तोला कूट पानी रतल ८ और स्नुही दूध तोला १६ और घृत तोला २०० डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय तब अपडछान करना।

दूध या पानी के साथ जितना विन्दु बुंद दिया जाता है उतना दस्त होकर उदर रोग समता है ।

उदरादि रस—(यो. त. न्यु) पारद गंधक पीपल हरड ताम्रभस्म अम लताश सब समभाग लेकर घोटकर थूहरका (मुनी) दूधमे घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । ? से ६ गोलि तक रोगका स्वरूप देखकर गरम जलसे देना सब प्रकारके उदर रोगमे खासकर जलोदरमे गुणकारी है । औषध चलता हो तब खुराकमे चावल दहीका घोल देना ।

जलोदर—जलंधर

कारण चिन्ह—जठराग्नि मंद होनेसे बिना भूख लगे गरिष्ट आहार लेते रह नेसे बिगडे हुए अन्नपानसे, वमन विरेचन क्रियाये विपरीत करनेसे, खूनके फोर, नेमे रुकावट होनेसे, दारू अति पीनेसे आदि कारणोसे यह रोग होता है। तृषा लगती है । गुदासे स्त्राव होता है खांसी श्वास अरुच होता है । पेट पर शिरायें दीखती है । नाभिका भाग गोलाकार होता है पानी भरी पखाल जैसा पेट लगता है । दबानेसे पानी भरी पखाल जैसा शब्द करे, मुखका स्वाद बिगडा हो आंखो पर सूजन हो, भूख मंद शरीर कृश शक्तिहीन हो गया हो यह असाध्य चिन्ह है ।

पथ्यापथ्य—पसीना और पिशाव दस्त लानेका उपाय करना । चावल दुध मुसम्बा पानी आदि रूचि अनुसार देना । खट्टे पदार्थ गरिष्ट खुराक खांड शक्कर की चीजे बंद करना । जिस दोष का प्रकोप न्युनाधिक हो जांच कर खुराक और औषध प्रयोग करना । शस्त्रकर्म-नलीसे पानी निकालनेसे आराम मिलता है लेकीन तीसरी या चौथी बार पानी निकालनेसे रोगी मर जाता है । जहां तक हो सके औषध से पानी निकले सुखे ऐसा उपाय करना ।

जलोदरादि रस—पीपल कालीमीरच (...) कटकीको छाल सम भाग लेना । सब के बराबर शुद्ध जमालगोटा लेकर (थुहरके दूध)मे घोटकर रत्ती प्रमाण गोलि बनाना गर्म जलसे १ गोलीसे प्रारंभ कर ६ का परिणाम देखकर अधिक गोली देना । दस्तमे पानी नीकल कर जलोदर का रोग मिटता है । दूसरे उदर रोगमे भी यह दी जाती है ।

इच्छाभेदी गोली सोंठ पीपल कालीमिरच पारद गंधक सोहागा सब समान भाग लेना और सबके बराबर जमालगोटा लेकर निबूके रसमे गोली

रती प्रमाण बनाना। जलोदरमे २ से ८ गोली तक दी जाती है। प्रारंभमे १ या २ गोली गर्म जलसे देना पीछे आवश्यकता अनुसार मात्रा बढाना।

लशुन घटी—लशुन की कली शेर १ मे शहद शेर १ डालकर महीन पीस कर धीमी आचसे पकाना गाढा हो जाय जल रख लेना। हमेशा १ से २ तोला खिलानेसे जलोदरमे फायदा होता है।

आरोग्यवर्धनी चूर्ण—०। तोला से प्रारंभकर प्रतिदिन २ तोला तक दिया जाता है। दूधका खुराक रखना दो महिनोमे जलोदर मिटता है।

जलोदरारि मिश्रण—आरोग्य वर्धनी चूर्ण तोला १५, शिलाजीत तोला ८, शुक्ति भस्म, शंखवटी, वृहत, मंडूर वटक प्रत्येक चारचार तोला सब साथ मिलाकर ४ मासासे प्रारंभकर प्रतिदिन १ तोला मात्रा दी जाती है खुराक रोगानुसार रखना।

१ नारायण चूर्ण ०। से ०॥ तोला प्रतिदिन देना।

२ एरंडीया और पुष्कर मूल सम भाग कूट कर प्रतिदिन ६ मासासे प्रारंभकर ५ मासा तक बढाकर पानीके साथ देनेसे २१ दिनमे जलोदर बहुत लाभ होता है।

३ ऊटका मूत्र (नरका) तोला १० बकरीके दूधसे देनेसे ७ दिनमे जलोदर मे फायदा होता है।



शूल, परिणाम शूल

कारण चिन्ह—वायु करनेवाले कच्चे सतवासी सड़ा हुआ अपनी प्रकृति के प्रतिकूल ऐसा आहार करनेसे, बिना अन्न पाचन हुए भोजन करते रहनेसे, पित्त वात कफ के प्रकोपसे पेटमे शूलका दर्द होता है । रोग विशेषसे अथवा कारण विशेषसे शरीरके अंदरके या बाह्य भिन्न भिन्न अवयवोमे शूलकी तरह पीड़ा होती है, जिसे शूलरोग कहते है । वह प्रायः पेटमे आमाशयमे पक्वाशयमे नाभिमे या नाभिके आजुबाजुमे होता है । खुराक लेनेके पीछे २ से ३ या ४ घण्टापर अर्थात अन्न पाचन होता है उस वक्त शूल निकलता है पेटमे दर्द होता है उसे परिणाम शूल कहते हैं ।

नाभिके स्थानमे अथवा नाभिके इधर उधर शूल निकलता है कभी कलेजे के स्थानमे या तिल्ली की जगहमे बुक्कके स्थानमे पीड़ा होती है । तेल मालीससे और सेक करनेसे शूल शांत होता है दस्त और वमन होनेसे डकार आनेसे अधो वायु छूटनेसे शूल कम होता है या बढ जाता है ।

पथ्यापथ्य—साधारण शूल सेकसे मिटता है । आकके पीले पान पर एरंडतेल लगाकर गरम कर शूलकी जगह दाबकर उपर सेक करना । उस जगह वायु नाशक तेलका मर्दन कराना । दस्त बंध हो तो अश्वचोली, इच्छाभेदी का जुलाब देना । या आरोग्य वर्धनी चूर्ण २ से ४ माशा गर्म जलसे देना । भूख न हो तबतक खानेको नहि देना । एक दो लंघन कराना ।

शूलगजकेशरी (रस प्रकाश सुधाकर ॥ १६६+१६६ ॥)

भागः सूतो गन्धकं भागमेकं मर्द्यं पश्चात्खल्वमध्येथ यामम् ।
शुद्धं ताम्रं चोभयोस्तुल्यभागं कन्यानीरैर्मर्द्य गोलं विधेयम् ॥
तद्गोलं वै धारितं संपुटान्तः सामुद्राख्ये स्थापयित्वापि यन्त्रे ।
दत्वा मुद्रां भाण्डवक्त्रं निरुध्य गर्ते कृत्वा लावणैः पूरितं तत् ॥
पौनःपुन्यं गोमयैश्च पुटं हि दत्वा शीतं चोद्धरेत्तत् प्रयत्नात् ।
निष्कार्य तत्पर्णखण्डे हि गुञ्जं शूलाग्न्यर्णौ नाशयेद्भक्षितं चेत् ।
हिङ्गुं शुण्ठ जीरकं चोषणं वै चूर्णं कृत्वा पाययेदुष्णतोये ।

१ भाग पारद, १ भाग गंधक दोनोकी कज्जली कर १ प्रहर तक घोटना । पीछे उसमे दोनोकी बराबर अर्थात २ भाग शुद्ध ताम्रका चूर्ण डालकर ग्वार पाठाके रसमे घोट गोला बनाना । उस गोलेको शराव सम्पुटो में रख कपड़मिट्टी कर सुखाकर पीछे उस सपुटको लवण यन्त्रमे रख— अर्थात एक हण्डीमे सपुटके उपर

नीचे नमक भर हंडीका मुख चपड मिट्टीसे बंद कर उस हंडीको गजपुटकी अग्नि देना। स्वांगशीत निकाल फिर पारद गंधककी कज्जली ताम्र चूर्णके समान डाल उपर बताये अनुसार लवण यंत्रमे पेककर गजपुटकी अग्नि देना। स्वांगशीत निकाल कर फिर पारद गंधक कज्जली ताम्रचूर्णके समान डाल उपर बताए अनुसार लवण यंत्रमें पेककर गजपुट देना। जब ताम्रभस्म निरुत्थ हो अर्थात निंबूरस मे डालनेसे हरा रंग न हो तब खाने योग्य समझना। इसकी १ रत्ती मात्रा पानकी पट्टीमे खिलाना उपर अनुपान रूपसे हिंग सोंठ काली मिरच और जीरा सम भागसे किया हुआ चूर्ण २ से ३ मासा गर्म जलसे देना। यह सब प्रकारके शूल रोगमे उत्तम गुणकारी है।

नोंध—इस शूल गजकेसरी रसका मूल पाठ शार्ङ्गधरका है उसका उतारा भैषज्य रत्नावली मे इसप्रकार लिखा है पारद एक भाग गंधक दो भाग की कज्जली को १ मास तक घोटते रहना। पीछे दोनोके बराबर शुद्ध ताम्रका संपुट बनाकर उसमे वह कजली डाल उस संपुटको नमक भरी हुइ हंडीमे रख गजपुट देना उस संपुटको पीस २ रत्ती पानके साथ देना यह एक प्रकारकी ताम्रभस्म हि है। इसे शूल गज केसरी नाम दिया गया है। इस प्रकार करनेसे ताम्रभस्म कच्ची रहती है और वान्ति भ्रांति करती है। ताम्रको भयंकर विषकी उपमा शास्त्रकारोंने दी है परंच वह वांति भ्रांति रहित होतो विविध रोगमे उत्तम गुण देती है। शार्ङ्गधर और भैषज्य रत्नावलीके अनुसार एक गजपुटमे ताम्रभस्म वान्ति भ्रांति रहित नहि हो सकती। ताम्र भस्मको निंबुके रसमे डालकर हरा रंग न हो अर्थात् हरा काट न लगे तब वह तैयार होती है। खाने लायक बनती है एक गजपुटमे ताम्र भस्म खाने लायक नहि बनती, वमन आदि उपद्रव करती है। इस लिये पारद गंधकके योगसे लवण यंत्रमे ७ से, ८ या अधिक वार पकानेसे शूल रोगमे देने योग्य बनती है। शार्ङ्गधरमे पारद गंधककी कज्जलीको यामैक मर्दयेत १ प्रहर, ३ घंटा घोटनेका लिखा है। जब भैषज्य रत्नावलीका संग्रहकार शार्ङ्गधरका हि पाठ देता है और मासैक मर्दयेत् एक मास तक कज्जलीको घोटनेका लिखता है यह अशास्त्रीय है। शार्ङ्गधर और उसका उतारा करनेवाली भैषज्य रत्नावली कार दोनोके मतानुसार ताम्र संपुटको १ गजपुट देनेके पीछे २ गुंजा देनेका लिखा है वह योग्य नहि है क्योंकि एक भट्टीमे सिद्ध वाने वांति-भ्रांति रहित नहि हो सकती। अर्थात ताम्रभस्म पारद गंधककी कज्जलीके योगसे लवण-यंत्रमे इतनी दफे पकाना चाहिये- जब तक वांति भ्रांति न हो। इन दोनोकी अपेक्षा रस प्रकाश सुधाकरका पाठ अनुभवसिद्ध

विषतिन्दुकादि वटी—गोमूत्रमें शुद्ध कर घीमें पकाया हुआ शुद्ध कुचला तोला ५०, पारद तोला ८, गंधक तोला ८, सोंठ पीपल काली मिरच अतीस पिपरीमूल अजमोद अजवाइन सेंधा प्रत्येक तोला चार चार, अकरकरा कालाजीरा (काली जीरी) मूलीके बीज इन्द्रजौ किरमाला प्रत्येक तोला दो दो, ताम्र तोला १, सफेद बछनाग तोला ४, सब साथ घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना १ से २ गोली दिनमें दो समय गर्म पानीसे देना। सब प्रकारका शूल पेटके सब दर्द मंदाग्नि परिणाम शूल अफरा डकार पेटकी अग्नि पेटका क्रिमि, गुल्म वायु गोला तिल्ली लीवरकी वृद्धि आदि रोगोंमें उत्तम गुण करती है।

शूलारि क्वाथ—एरंडमूल हरड़ आंवला छोटी बड़ी कटेरीका मूल पुष्कर मूल पुनर्नवा मूल अरणी मूल अमलतास का गूदा सब सम भाग लेकर १ से २ तोलाका क्वाथ बनाकर दिनमें दो या तीन दफे पिलाना। पिलाते वक्त १ से २ माशा हिंगाष्टक चूर्ण अथवा लवण भास्कर चूर्ण डालना। सब प्रकार के शूल पेटके रोगमें गुणकारी है।

शूलहर चूर्ण—शुद्ध कुचला तोला ४, एलीयो तो० ४, हरड़ पाठा निसोथ चित्रक वायविडंग इन्द्रजव मूली अशोर्मोया का बीज इलायची हीराबोल जावित्री (जावत्री) मूलीका बीज सुहागा पापडीया खारा बीड लवण सेंधानोन जवखार संचल नवसार पकायी फटकरी प्रत्येक एक एक तोला लेकर कूट कर रखना। २ से ३ माशा गर्म जलसे या उपर ५ तोला गोमूत्र पिलाना। सब प्रकारका शूल गुल्म पेटोदर प्लीहोदर जलोदर वातरोग क्रिमि विकार के रोगमें गुणकारी है।

हिंगुल भस्म श्वेत—हिंगूल रूमी तोला २ लेकर एक पक्की अच्छी ईंट में गड्ढा कर पीसा हुआ आमल सार गंधक तोला २ नीचे तोला २ उपर बीच में हिंगुल रख उपर दूसरी ईंट ढंक कच्चा ५ सेर छाणाकी अग्नि देना। हिंगुल निकाल कर फिर उपर की तरह उपर नीचे गंधक देकर हिंगुल पकाना ६ दफे पकानेसे सफेद भस्म होती है। मात्रा १ से २ रत्ती शहदसे देनेसे पेटके लीवर के सातों के रोग मिटते हैं। शक्ति ताकात आती है। खून बढ़ता है।

शंखद्राव चूर्ण—५०० निम्बू रसवाले लेकर उनका रस निकाल कर उसमें मालवी गुड तोला १०० डाल पकाना। एक रस हो जाय तब उसमें जवाखार तोला ५५, सोहागा तोला २५, नवसार तो० २०, सेंधानोन तो० ३२ सब कूट कर डाल कर पकाना जब चूर्ण जैसा सूखा हो जाय तब उतार कर

रांग लपेटे बरतन में डाल कर सुख जाने पर पीस कर रख छोड़ना। वह पकता हो जब एक कौडी उसमे डालना यदि कौडी पिघल जाय तब विधिवत तैयार हुआ समझना यदि कौडी न पिघले तो निबूका और रस डाल कर पकाना। इसको मात्रा १ मासा दिनमे दो समय पानीसे देना। शूल प्लीहा यकृत वृद्धि उदावर्त वायु गेस चढना वमन सब प्रकारके सूल पेट दर्द उदर रोग आदि मे उत्तम गुणकारी है।

श्रीफल लवण—पानीवाला नालीएर लेकर छिलका निकाल कर उसमे बीचमे छिद्र कर पानी निकाल देना पीछे पीसा हुआ नमक उसमे दाब कर भरना। पीछे उसके छिद्र से बुच देकर ७ कपड मिट्टी कर सुखाकर गजपुट अग्नि देना। स्वांगशीत होनेपर निकालकर खोपरे के साथे पकाहुआ नमक पीस कर रखना। ६ से २४ रती तककी मात्रा रोगीका शरीर और रोगका स्वरुप देख कर दिनमे दो या तीन दफे दी जाती है। खांसी कफ वायु शूल गुल्म प्लीहा यकृत वृद्धि पेटकी गांठ गेस चढना आदि मे उतम है।

मलशोधनी वटी—एलिया और काली मिरच सम भाग लेकर पानी से पीस गोली चना प्रमाण बनाना। १ से २ गोली गर्म जलसे देनेसे पेटका दर्द शूल मलका अवरोध तिल्ली कीडरका दर्द, मिटता है, टट्टी शाफ आती है। कब्जियत मिटता है।

उदररोगहर चूर्ण—हींग सोंठ पीपल कालिमिरच पाठा कपूरकाचली हरड कुठ असगंध इमलीका पके फलका रस अनार के बीज पुष्कर मूल जीरा चित्रक वच संचल सेंधानोन चवक निसोथ पपडीया खारा सब समान लेकर कूट कर बीजोरे के रसको ३ भावना देकर सुखाकर घोट रखना। मात्रा १ से २ मासा दिनमें दो तीन दफे दिया जाता है। शूल पेट के अन्य दर्द पेटका वायु मंदाग्नि आदि में गुणकारी है।

प्लीहाहर चूर्ण—आंगा (अपामार्ग) के पंचांग की भस्म तोला ९, हलदी तो ५, अजवायन तो २॥, जीरा शाहजीरा नमक प्रत्येक सब नव तोला लेकर कूट कर रखना २ से ४ मासा पानी के साथ देनेसे १४ से २१ दिनमे बढी हुई तिल्ली मिटे पेटका शूल वायु मे उत्तम।

१ सर्जंखार (साजीखार) और राई (काली राइ) समभाग कूटकर इसेर्मा ॥ तोला पानी के साथ देनेसे २१ दिनमे तिल्ली मिटे।

२ हींग पीपलीमूल अकलकरा कालीमिरच पीपल प्रत्येक पांच पांच तोला, हरड २॥ ढाई तोला सब साथ कूट कर रखना। १ से २ माशा पानीसे देना भूख बढे।

३ नमक सचल सेधानोन जवाखार प्रत्येक सवा सवा तोला, अजमोद तोला ५, हरड तो २, पीपल तो २, सोठ तो २, हींग तो १।, वायविडंग तो. २ सब साथ कूट रखना १ से ३ माशा पानीसे देना पेटका वायु गोला मिटे। भूख लगे खुराक पाचन हो पेटके रोग मिटे।

४ वातशूलमे—हिंग अतीस वच सचल हरड सेधानोन पीपल काली मिरच सम भाग कूटकर २ से ३ मासा गर्मजल से देना।

५ कफ शूलमे—आंवला हरड शतावरी कालीदाख मुलैठी मूल वाला अमलास सब सम भाग कूटकर ०॥ तोलाका क्वाथ कर पिलाना।

७ पित्त शूलमे—शतावरि मुलैठी मूल आंवला नागरमोथ चंदनका चूरा रक्तचंदन चिनीकबाला (चणकबाब) सब सम भाग कूट २ से ४ मासका क्वाथ कर शहद डालकर पिलाना।

७ शंख भस्म—६ से ८ रत्ती गर्म जलसे देनेसे परिणाम शुल मिटे

८ तिल सोंठ हरड शंख भस्म प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कूट कपडछान कर गुड तोला २०,मे मिलाय २ से ४ माशा गर्म जलसे देनेसे परिणाम शुल मिटे।

९ एलीयो तो. ५, हिंग तो. २॥, लाल राइ पुष्कर मूल सेंधानोन प्रत्येक तोला १२ सब कूटकर उसमे ग्वार पाठाका रस मिलाकर ६ छह रत्ती की गोली बनाना गर्म जलसे १ से २ गोली देनेसे सब प्रकारका शुल मिटे।



उदावर्त वायु-गेस चढना

मलमूत्राधोवातोद्गारास्रुक्षवथुक्रान्ति वेगानां ॥
जृंभा क्षुधा तृष्णां निद्राया रोधनादुदावर्तः ॥
(रसोधार तन्त्र)

कारण चिन्ह—अधो वायु रूकनेसे हुवा हो तो अधो वायु छूटे नहि । मल मूत्र अटक जाय पेट फूले पवनसे भर जाय । हृदयमे घमराट रहे ।

इस उदावर्तमे । एरंड तेल दूधमे पिलाना अथवा महानारायण तेल अथवा महा मरिचादि तेल १ से २ तोला गर्म पानी या दुधसे पिलाना ।

मलका वेग—रोकनेसे उदावर्त हुआ होतो, पेट फूले, शुल निकल ठचों लगे, मल अटक जाय, और रोग बढे तो मल मुखसे निकले । इसे उदावर्तमे जुलाब देना पतला खुराक देना । पेट और शरीर पर तैल मालीश करना । रोगीको गर्म पानी भरे टोपमे बैठाना । पिचकारी देना ।

मूत्रका वेग रोकनेसे उदावर्त हुआ हो तो मूत्रकृच्छ हो, पिशाब की नलीमे नाभिके नीचेके भागमे मूत्रक्रमे शुल निकले फूले । इस उदावर्तमे दुध पानी सम भाग मिलाकर उसमे वचका चुर्ण १ मासा डाल पिलाना । धमासाका क्वाथ पिलाना । चंद्रप्रभा क्षारवाली ३ से ६ गोली पीसकर पिलाना ।

जुंभा-जंभाई-रोकनेसे उदावर्त होतो गरदन गला आंख नाक मस्तकमे दर्द हो । इस उदावर्तमें निद्रा कराना । गर्दन मस्तक पर कल्याण घृत मालीस करना और १ से ४ तोला खिलाना । आंवला शर्बत पिलाना ।

अश्रु-आंसु—रोकनेसे हुआ होतो पीनस प्रतिश्याय हो आंख और दिमागके रोग हो हिस्टीरीया चक्कर उन्माद जैसी प्रज्ञा हो । इसमें तीव्र अंजन आंजकर आंखोमें पानी लाना शोक दुःख करूणा रसवाली वाते कर रोगी रूदन करे ऐसा करना ।

छिंक रूकनेसे—हुआ होतो गरदन जकड जाय, दिमागमें दर्द हो सिर दर्द हो आधाशीशी चढे । इसमे छिकनी नस्य सुंघाकर या कपडेकी बाट बनाकर नाकमें डालकर छींक लाना । छीकणीका व्यसन करना

हिक्का हिचकीका—वेग रोकनेसे हुआ होतो पेट गला तक पवन भर जाय पवन उपर या नीचे छूटे नहि बडा घभराहट हो । महालाक्षादी तेल अथवा क्षारोतेल मालीस करना । सुवर्ण वसंत मालती ३ गोली चोसठ पोरी पीपल ६ रती, हृदयार्णव २ रती त्रिफला हरीतकी १ से २ तोला में मिलाकर खिलाना ।

वमनका वेग—रोकनेसे हुआ होतो अरुचि सूजन ताप पांडु कुष्ठ गाबटेश (आको) आदि उद्रव हो। इसमे दुधको पिलाना। दिव्य धूपमे गुड मिलाकर चुंगीसे या नलीसे श्वासने लेना।

वीर्यका वेग रोकनेसे—हुआ होतो लिंग और योनिमे सूजन हो पिशाब रुटक जाय, वीर्यस्राव हो वीर्यको पथरीका जमाव हो ओरतोको सफेद स्राव हो। इसमे मीसाग करना शरीरको शृंगराज तेलका या ब्राह्मी तेलका मालीस करना पौष्टिक कार्लेसिअम औषध और खुराक देना।

तृषाका वेग रोकनेसे—हुआ होतो गला मुख सूके, कानमे बधिरता आवे। इसमे काली द्राक्ष मोसंबी मौसंबी जौर द्राक्षासव च्यवनप्राश-औवला गुलकंद आदि देना।

भूखका वेग—रोकनेसे हुआ होतो मूर्छा बेचेनी आलस्य कृशता क्षीणता कमताकात दृष्टी कमजोरी कानमे बधिरता आदि हो। इसमे चीकु केला मोसंबी अंजीर द्राक्ष आदि फल देना स्निग्ध पदार्थ दुधपाक खीर आदि देना।

श्वासका वेग दमके रोकनेसे हुआ हो या अधिक परिश्रमसे दोडनेसे या अन्य कारणोसे चढाहुआ श्वासका वेग रोकनेसे हुआ होतो छातके रोग और छातीका घमराहट छातीका शुल आदि हो इसमे छाती पर भिगो हुआ कपडा रखना पंखा करना। बिछानेमें शयन कराना। हाथ छाती धीरे धीरे दबाना धोया हुआ सफेद चंदन ३ मासा २ कप पानीमे डाल शहद ५ तोला मिलाकर थोडा थोडा पिलाना।

निद्राका वेग—रोकनेसे हुआ होतो मस्तक आंखमे जडता सुस्त हो शरीर शिथिल बेचेनी चक्कर आंखका जलन आदि हो। तोल ०। भांगमे ३ तोला बादाम गीरी, १ तोला बडीसोप (वरीयाली) तोला ०॥ खसखस, १ मासा काली मिरच, २ तोला गुलाब फुल सबको महीन पीस अधो तेला पानी और १० तोला शक्कर डाल रांग लगाये बरतनमे रख छोडना और थोडा थोडा पिलाते रहना रोगी बिछानामे हि सोता रहे ऐसा करना।

आमाशय और पक्वाशयमे वायु का प्रकोप होनेसे जो उदावर्त होता है उसमे पवन छुटता नहि, इसिहो ऐसा डकार आता नहि, पेटमे वायु भरकर हृदयको दबाता हैं। छातीमे मूत्र नलीमे शुल निकलता है। इसके साथ श्वास खांसी प्रतिश्याय दाह तृषा ताप वमन सिर दर्द आदि उपद्रव होते हैं। इस प्रकार वेग रोकनेसे भिन्न भिन्न प्रकारका उदावर्त रोग होता हैं इस को जांचकर उपचार करना।

उदावर्तहानि रस—पारद तोला ५, गंधक तो १०, हरड तो. ५, सोंठ तो. ५, पीपल काली मिरच सोहागा प्रत्येक ढाइ ढाई तोला, और शुद्ध कुचला ३२ तोला सब साथ मिलाकर निंबू रसमे घोंटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना गर्म जल से १ से २ गोली देना। सब प्रकारके उदावर्त। गेस चढनेके रोगोमे यह गोली उत्तम गुण करती है। उदावर्तके साथके दूसरे उपद्रवको भी शांत करता है। भिन्न भिन्न प्रकार के उपद्रवमे अनुपान भेदसे देना।

फलवर्ती—मैनफल पीपल कुष्ट वच सफेद सरसो गुड सब समान भाग लेकर कुटकर कनिष्ठिका (टचली) अंगुली जैसी मोटी और दो इंच लम्बी बती बनाकर छायामे सुखाकर रखना। गुदामे चढानेसे वायुको गतिका अनुलोमन होकर उदावर्त मिटता है।

विषतिंदुकादि वटी—शुद्ध विषतिंदुक तोला ३२, अजवायन तोला ३२, अजमोद ३२, डीकामारी ३२, बछनाग काळो तोला ३२, पींपरीमुळ तोला ३२, तज तोला ३२, काचकीया शेकेल तोला ६४, सोंठ तोला ३२, पींपल तोला ३२, काली मीरीच तोला ३२, अतिस तोला ३२, लोंग तोला ३२, ईन्द्रजौ, ३२, सेंधानोन ३२, सब साथ कुटकर पानीमें गोली रत्ती प्रमाण करना २ से ४ गोली पानीसे देनेसे सब प्रकारका उदावर्त, ऊर्ध्ववायु, गेस चढना आदि वायुका रोग मिटता है।



अष्ठीला प्रत्यष्ठीला (मुबारकी–गांठ)

कारण-चिन्ह—यह पेटमे हेनेवाली एक प्रकारकी गांठ है। यह स्थिर रहती है या कभी फिरती भी है। यह नाभिके नीचे होती है पत्थर जैसी कठीन, नाभिकी ओर लंबी होती है। इससे अधो वायु छूटता नहि है। पेट फूलना है आध्मान होता है। वही ग्रन्थी नाभिके नीचे के भागमे ठडी बढी है, अधोवायु दस्त पिशावको रोके बहुत पीडा करे यह प्रत्यष्ठीला कहलाती हैं। इस ग्रन्थिका प्रभाव हो जब मुख कडुआ हो, जीभ पर छारी जमे, मुखमे. यदबू हो. बुखार चढे शूल निकले, दस्तमे कभी खून गिरे, नाभिमे ठडी पीडा हो, जीभ सूखी चीकनी कफ वाली हो निंद आवे। इस ग्रन्थीमे वातपित्त या कफके न्युनाधिक प्रकोपके अनुसार चिन्ह होते है।

विडंगावलेह—बायविडंग तोला ४०, पिपरीमूल रास्ना कूडेकीछाल इन्द्रजो पाठा जटामांसी आंवला प्रत्येक बीस बीस तोला लेकर कूटकर क्वाथ बनाना। उस क्वाथ को कपडछान कर उसमे गुड तोला ६०० छइसो डालकर पकाना। गाढा होने पर तब तमालपत्र इलायची प्रत्येक आठ आठ तोला, सोंठ पीपल कालीमिरच वायविडंग प्रत्येक दस दस तोला, प्रियगु कचनार छाल लोध्र दंतीक्षुद प्रत्येक छह छह तोला सब कूट कपड छानकर गुडके पाकमे डालकर धीमी अग्नि से पकाकर गाढा होने पर स्वांग शीत होने देना। मात्रा १ से २ तोला। अष्ठीला, प्रत्यष्ठीला गांठ तिल्ली जीगरका बिगाड गुल्म शूल अण्डवृद्धि आदिमे गुणकारी है।

१ आरेग्यवर्धनी चूर्ण १ से २ मासा गुडके साथ देना।

२ शंखवटी बृहत २ से ४ गोली पानीसे देना।

३ शंखद्राव चूर्ण ६ से ८ रत्ती पानीसे देना।

४ नारायण चूर्ण १ से ३ मासा पानीसे देना।

गुल्म रोगमे बताई हुइ दवा इस ग्रन्थी रोगोमे फायदा करती है।
विषतिंदुकादि चूर्ण ६ से ८ रत्ती पानीसे देना।
क्रव्याद रस बृहत २ से ४ गोली पानी से देना।

५ कुमार्यासव २ से ४ तोला २ या ३ दफे देना।

६ मंडूर वटक अथवा सिंहनाद गूगल २ से ३ गोली पानीसे देना।



दस्तकी कब्जी—मलावरोध—आनाह

ग्रथिताभं शुष्कं मुहुरनिलेन पुनश्च दूषितेन क्रमम्।
निःसरति नियमशून्यं यद्आनाहं वदन्ति वैद्यास्तम् (रसम्)॥१॥

कारण चिन्ह—हर वखत जुलाब लेनेकी आदत, बहुत परिश्रम, व्यायाम, मल मूत्र और पवनको रुकनेकी आदत, वृद्धावस्था कमजोरी-निर्बलता ववासीर, वायु प्रधान प्रकृति, बुखार अजीर्ण गरिष्ठ मिष्टान पर अधिक रुचि बेठाकी बिमारी बैठे रहनेकी आदत दिमाग पर कामका अधिक भार, ठंडा बासी अनियमित भोजन, आइसक्रीम सोडा चाह कॉफी दारु अफीम भांग आदिका व्यसन, दस्त जानेकी अनियमितता इत्यादि कारणोंसे दस्त कब्जीका रोग होता है। दस्त निकल सके नहि बहुत जोर करना पडे, पेट और पेडुमें (नाभिके नीचेका भागमें) भार लगे। पवन छूटे नहि, पेट फूले, आलस्य प्रमाद मंदाग्नि शूल मस्तकमें पीडा फेर चक्कर बुखार श्वास लेनेमें तकलीफ, कामकाजमें घृणा, मन चिंतातुर, उदासीनता इत्यादि चिन्ह होते हैं। इसमें दस्त शुष्क गांठे गांठे जैसा होकर गुदाकी कुंडलीमें अटक जाता है। दस्त सुख जाता हैं, बकरीकी लिंडी जैसा मुश्कीलसे निकलता है, और दस्त नियमित समय पर नहि आता।

पथ्यापथ्य—सादा जुलाब १५ से २० दिन पर लेते रहना। खुराक सादा लेना पेटमें बोझ नहो इस प्रकार सादा हल्का मिताहार करना। एक मासमें २ दिन उपवास करना। भोजनके पहेले ४ से ६ मासा अदरख नमक छिडककर खाकर पीछे भोजन करना। अथवा हिंगाष्टक चूर्ण २ से ३ मासा घीमें मिलाय खाकर पीछे भोजन करना। लशुन १ तोला तिलके तेलमें पकाकर दाल शाकमें खाना। भूख हो जैसा आहार करना। दूध छाछ, पानी आदि प्रवाही भोजनके बीच बीचमें लेते रहना। भोजनका समय नियमित रखना। भोजन के पीछे तुर्त काम पर नही बैठना। भोजनके पीछे पाव आधा घंटा वामकुक्षी करके पीछे सब कुछ करना। भोजनके पीछे तुर्त दौडना नहि। एरंड तेल ८ या १० दिनके पीछे एक दो चम्मच पीते रहना। गुदा द्वारा एरंड तेलकी पीचकारी लेना। मल अटक गया होतो अंगुली डालकर निकालना। दूधी सूरण करेला बैंगन परवल भींडा पपडी वालोळ सहजना की सींगे मेथी चौलाइ आदि भाजी मुग उडद तुवर वाल वटाना तिल बाजरी जव गेंहू चावल आदि खाना।

मधुविरेचन चूर्ण—सोनामखी (मींढी आवळ) की पत्ती तोला २०, मूलैठी मूल तोला २०, शुद्ध गंधक तो १०, बडीसोफ (वरीयाली)

तोला १०, शक्कर तोला ४० सब साथ कूट कर रखना । मात्रा २ से ८ माशा तक गर्म जलसे दी जाती है । किसीको कम मात्रासे किसीको अधिक मात्रासे एक दो दस्त खुलासा आ जाता है ।

हरीतकी अवलेह—इन्द्रायणका मूल मैनेठीका मूल महूडाकी छाल अरणीका मूल अडूसाकी छाल अपामार्ग पंचांग प्रत्येक चार चार सेर लेकर कुचल कर सबका क्वाथ बनाना । क्वाथको कपड छान कर उसमें छोटी हरड (हीमेज) सेर ६ को और आंवला सेर २॥ को धीमे तल कर चूर्ण कर क्वाथमें डाल पकाना । गाढा हो जब गुड सेर ५० डालकर पकाना गाढा होनेपर सूखा गुलाब फूल बडीसौंफ (वरीयाळी) धनिया दंज इलायची लौंग सोंठ पीपल काली मीरच दाखाकरो असगंध प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूट बारीक चूर्ण कर तैयार रखा हो यह पकते हुए गुडपाकमें डालकर हिलाना । गाढा होनेपर अग्नि निकाल कर शीतल होने देना । अच्छे बरतनमें भरना । पकानेका बर्तन रांग लगाया पीतलका लेना । और हिलानेका तवेथा लकडीका या पीतलका लेना रांग लगाये बरतनमें अथवा चिनाई मिट्टीकी बरणीमें भर देना । मात्रा १ से ४ तोला तक रोगका बल देखकर देना । पुरानी मदाग्नि बराबर जोर घटे हुई, प्लीहा अष्टीला ग्रन्थी पेटके रोग अंडवृद्धि गुल्म आदि रोगोमें गुणकारी है ।

शुद्धि चूर्ण—एरंड तेलमें तलाहुआ, आंवला, छोटी हरड (हीमजी हरडे) एरंड तेलमें तली हुई, सेंधानोन, सोनामुखीकी पत्ति (मींढी आवल) सब सम भाग लेकर कूट कर रखना । २ से ४ माशा गर्म जलसे लेना । मलावरोध और उदर रोगमें गुणकारी है ।

१ अश्वकंचुकी २ से ६ गोली तक गर्म जलमें देना ।

२ यदि अधिक मल जम गया होतो १ से २ गोली इच्छा भेदीकी भास्करके चूर्णके साथ गर्म जलमें देना ।

३ आरोग्य वर्धनी गोली ३ से ६ अथवा आरोग्य वर्धनी चूर्ण १ से ३ माशा तक गर्म जलसे देना ।

४ शंखवटी २ से ३ गोली गर्म जलसे लेना ।

५ लवण भास्कर चूर्ण २ से ३ माशा गर्म जलमें लेना ।

६ चित्रक हरीतकी अवलेह, अमृतभल्लातक अवलेह, मारगो गुड, अथवा श्री बाहु शाल गुड इनमेंसे कोई भी अवलेह १ से २ तोला तक खाना ।

एलीयादि वटी—गोमूत्रमे पकाया हुआ एलीया तोला १६, कालीमीरच तोला १२, अजमोद तोला २ सब साथ कूट कर कवार पाठा के रसमें रत्ती प्रमाण गोली बनाना २ से ३ गोली पानीसे देना पवन छूटता है। दस्तकी कब्जी मिटती है। भूख लगती है। औरतोंके मासिक धर्म के समय कष्ट होता हो-कष्टार्तव हो सह मिटकर ऋतु साफ आता है।

जुलाब—विरेचन

पूर्वकालये वमन विरेचन आदि पंचकर्मसे शरीरका संशोधन करनेका प्रचलन था, इस कारण लोग बिमार कम होते थे अब वमनतो क्वचित हि लिया जाता है। मात्र जुलाब लेनेका रिवाज है। पेटमे जब बिमारी जमा हुआ मालुम हो भूख न लगे दस्त बन्ध रहे तब जुलाब लेकर पेट साफ किया जाता है। महिनामे एक दो दफे विरेचन औषध लेनेसे शरीर नीरोगी रहता है और शरीरका प्रत्येक अंग प्रत्यंग कार्यक्षम बना रहता है। लंघनसे पाचन औषधसे दबा हुआ दोष रोग क्वचित फिर उत्पन्न होता है पर जुलाबसे निकल गया दोष फिर कुपित नहि होता और मनुष्य बिमार कैसे पडता है।

जुलाब किसे देना नहि ? बालक वृद्ध क्षयसे क्षीण देह हुआ हो, भयभीत हो, थका हुआ तृषावाला चरबीवाला, सगर्भास्त्री दारूसे उन्माद हुआ हो रूक्ष शरीरवाला, घाव लगा हो, ऐसे मनुष्यको जुलाब देना नहि चाहिये।

जुलाब किसे देना ? जीर्ण ज्वरवाला विष पिया हो गलितकुष्ठी भगंदर बवासीर। पांडुरोग पेटके रोग ग्रन्थी छातीके रोग अरुचि योनि रोग प्रमेह गुल्म प्लीहा व्रण गुमड। विद्रधि-केन्सर मुख गुदा मस्तकका रोगी लिंगेन्द्रियका रोगे सूजन शोथ आंखके रोग कृमि रोग वातव्याधि पेटका शूल मूत्राघात-मूत्रकृच्छ्र ऐसे रोगीयोको जुलाब देना चाहिये।

पथ्यापथ्य—जुलाब लेनेके पीछे ठंडा पानी पीना नहि। आंखोमे जलन हो तो ठंडा पानी आंखोंपर छिडकना सुगंधी पुष्प सुंघना। नागर वेल तांबूल पान खाना। तृषा लगेतो थोडा गर्म किया हुआ जल पीना। खुले पवनमे बैठना नहि।

अच्छा जुलाब न लगे तो—कोठा कठिन वालोंको साधा जुलाब काम न करता हो, जुलाब न लगा हो तो नाभि जड जैसी हो पेटमे शूल निकले, आधा वायु और मल अटके शरीरपर खुजली आवे, शरीपर लाल काले चकते हो। आफरा आदि चक्कर वमन इत्यादि चिन्ह मालुम होते है ऐसे जैसे चिन्ह हो तो उपचार करना। और तीन चार दिनके पीछे फिर जुलाब देना।

जुलाब अधिक होतो—मूर्छा बेशुद्धि हो, गुदा बहार निकले कफ बहुत पडे। मासके धोन जैसा (पकाये हुए मांस के पानी जैसा) खून मिश्रित दस्त होता है। इसका तुर्त हि उपाय करना। भिगोया कपडा पेटपर रखना, सेवाल लगाना। आमकी अतर छालको दहीमे या खट्टी छांछमे पीसकर पेटपर लेप करना। नालियर का पानी पिलाना। दहीके घोलमे सक्कर या शहद मिलाकर पिलाना, खीचडी दही खिलाना। द्राक्ष सव या कालीद्राक्ष या हरी द्राक्ष खिलाना।

अच्छा जुलाब लगा होतो—शरीर लघु स्फुर्तिवाला होता है। मन प्रसन्न रहता है। शुद्ध डकार आता है। अपान वायु छूटता है। सब इन्द्रियां बलवान कार्यक्षम होती है। बुद्धि निर्मल और जठराग्नि तेज होती है। भूख लगती है। काम काजमे हरने फिरनेमे उत्साह रहता है। धातु और उम्र स्थिर रहती है।

अश्वघोली—(र. प्र सु') घोड चोली-अश्वक चुकी इच्छेली इत्यादि इस गोलीका नाम है। पारद शुद्ध कज्जली छसमाग गंधक सोनपकी शुद्ध हरताल सोंठ पीपल कालीमिरच हरड बेहडा आंवला पकाया सोहागा और शुद्ध जमालगोटाका गिरी सब समान भाग लेकर भांगरे के रसमे घोंटकर मुग जैसी गोली बनाना। २ से ८ गोलि तक मनुष्यका मद् और शरीर कोठकी जांच कर योग्य मात्रा से देना। उपर गर्म जल पीना। (आजकल गर्म जलके स्थानमे गर्म चाय काफी पीनेका रिवाज हैं वह भी पी सकते हैं) यह मृदु जुलाब है फिर भी अधिक मात्रा से उग्र जुलाब का भी काम करती है। किसीको दो तीन गोलीमे अच्छे जुलाब होते है किसी कठिन कोठेवालोंको छह से आठ दस गोली तक देना पडता है। कम या चार जुलाब होता है। पेटके रोग पेटका शुल शोथ सूजन बुखार आदिमे योग्य मात्रा से दी जाती हैं।

इच्छा भेदी गोली—शुद्ध पारद गंधक सोंठ काली मिरच सोहागा प्रत्येक दस दस तोला शुद्ध जमालगोटाकी गिरी १०० तोला सब साथ घोंट पीस कर निम्बू रसने घोटकर रती प्रमाण गोली बनाना। २ से ५ गोली तक शक्करका चूर्ण चार मासामे गोलीको पीस मिलाय गर्म जलसे देना। रोगीका कठीन कोठाकी जांचकर योग्य मात्रा देना। अच्छा जुलाब लगता है। जुलाब होने के पीछे खीचडी घी खीचडी दही खिलाना। ज्यादा जुलाब हो तो दहीमें शकर या शहद मिलाय पिलाना।

सेव्रनाद रस—(यो. र.) हिंगूल शुद्ध, पकाया सोहागा, नागकेसर पीपल सोंठ कालिमिरच हरड बेहडा आंवला कालीद्राक्ष वायविडंग हिंग भुनाहुवा कपूर

प्रत्येक पांच पाच तोला और शुद्धजमाल गोटाकी गिरी ३५ तोला सबको साथ पीस निंबू रसमे घोटकर रती प्रमाण गोली बनाना। रोगीका कोठा देखकर न्यूनाधिक मात्रासे जुलाबके लिये देना सब उदररोगमे अच्छा है।

विरेचन चूर्ण—हिंगूल सोहागा कालामिरच छोटी पीपल हरड प्रत्येक एक एक तोला, अेलयो इन्द्रायण मूल सचळ प्रत्येक सात सात तोला, निसोथ १२ तोला, शक्कर ४० तोला सब साथ कूटना। गर्म जलसे १ से ३ मासा देना।

नाभि विरेचन—जमालमोटाकी गीरी एरंडोकी गीरी नीलाथोथा सोहागा समभाग लेकर घोंट रखना ८ से १० रत्ती स्नुही दूधमे मिलाय नाभीपर लेप करनेमे अच्छे जुलाब होते है। पीछे उस जगहको साबुसे धो डालना और तैल लगाना। अच्छे जुलाब हो जानेके पीछे खिचडी दही खिलाना।

१ कडवी नाईफा कंद टुकडा कर छायामें सुखाकर भूकाकर रखना। मात्रा ४॥ से ६ रती तक पानीमे देना। दस्त और वमन होकर बिगाड निकल जाता है। यह उम्र जुलाव है। रोगीका शरीर देख विचार कर देना। इससे तिल्ली लीवर बढी हो कमती होती है। पेटकी गांठ-ग्रन्थी, छाती पर लीवर पर आंतोपर या अन्य जगह ग्रन्थियां हुई हो वह पिघल जाती है। सर्पदंशमे वमन विरेचन करानेके लिये ८ से १० रत्ती या अधिक मात्रामें दी जाती है।

सारोग्यवर्धनी चूर्ण—पारद गंधक लोह भस्म अभ्रक भस्म ताम्रभस्म प्रत्येक एक एक तोला, हरड बहेडा आवला, तीनो मिलाकर १० तोला, शिलाजीत १५ तोला, शुद्ध गूगल २० तोला, चित्रक मूल २० तोला, कुटकी ७० तोला सब साथ कूटके नीमके पत्ते तोला २०० लेकर पानीमे पीस और आवश्यकता हो उतना पानी डाल कपड छान कर भावना देकर छायामे सुखाना। इस प्रकार कुल तीन भावना देकर छायामे सुखाना। मात्रा १ से ३ मासा पानीसे देना। एक दो दस्त होकर पेट साफ होता है। प्रतिदिन ६ से ८ रत्ती पानीसे लेते रहेनेमे भूख अच्छी लगती है। प्लीहा लीवरकी वृद्धि मेदवृद्धि पेटकी गांठे शोथ पांडुरोग कामला वमन मूत्रकृच्छ्र मिटते है आंतोमे रुका हुआ मल निकलता है। लंबे समयकी कब्जी मिटती है।

२ बाजरी के आटामे-या चने के आटामे-बेसनमे थूहर (स्नुही) दुध मिलाय मुंग प्रमाण गोली बनाना विचार कर योग्य मात्रा गर्म जलसे देनेसे जुलाब होता है।

३ सोंठ तोला २ चनेका कालिया तोला २, लोंग तोला ०॥ सब साथ महीनकर थूहर के दूधमें रत्ती प्रमाण गोली बनाना। एकसे ४ गोली तक जुलाब के लिये दी जाती हैं। पेटका बिगाड निकल कर रोग मिटता है।

४ सोना मखी (मींढीआवल) की पत्ती, हरड, निशोथ समभाग कूटना २ से ३ मासा गर्म जलसे देनेसे जुलाव लगकर पेटका विकार मिटे। भात दही खीचडी दही खिलाना।

५ मधु विरेचन अथवा शुद्धि चूर्ण २ से ६ मासा तक देनेसे एकसे दो दस्त होकर पेट साफ होता है।



शोथ-शोफ सूजन सोजा

कारण—वमन छर्दि के रोगसे, अतिसारसे तापसे उपवाससे नमकीन खट्टे तीखे पदार्थ ज्यादा खानेसे, खट्टे दहीसे, गोमाससे, बिगडे हुए अन्नपान खाने पीनेसे बवासीरसे गर्भपात हो जानेमे सूतिका रोग (सुवा रोग)से पंचिकासे घाव लगना अग्नि आदिसे जलना औरजंतुका दश पांडुरोग आदि कारणोंसे शरीर पर या शरीर के किसी अंगपर सूजन होती है। बिगडा हुआ खून पित्त कफको शरीरमेकी नसोमे वायु खोच कर लाता है इसका रुधन होता है जब त्वचा—चरबी और मांसके आश्रयसे सूजन होती है।

चिन्ह—हृदयरोग बिगाड होतो छातीके उपरके भागमे शोथ हो। पक्वाशयमे बिगाड होतो छाती और पेटके बीचमे शोथ हो। मल स्थान और आंतोमें रोग होतो पेटपर सूजन आवे और सारे शरीरमे फैलता हैं। सूजनका जितना अधिक प्रकोप हो उसमे बुखार वमन दस्तकी कब्जी जीभपर सफेद पोली छारी नाडीकी गति जलद आदि चिन्ह मालुम होते है। जिस जगह शोथ हुआ हो वहां पीडा गरमी और वह भाग लाली लिये होता है। वायुकी सूजनमे वह भाग लाल काला पीला रंगका, अंदर झनझनाहट शूल पैदा होती है, दबानेसे खड्डा नहि पडता उपड आता है गर्म चीज लगानेसे अच्छा लगता हैं। पित्तकी सूजनका शोथ काला पीला लाल रंगका या मिश्रित रंगका होता है। पसीना आता है तृषा विव्हलता ग्लानि बेचेनी जलन होती है। ठंडी चीज लगानेसे अच्छा लगता है। कफ की सूजन कठोर दाबनेसे खड्डा पडे, मुखसे थूक लार पडे निंद अधिक हो वमन हो, भूख कम पानीकी इच्छा नहो तृषा न लगे पानी पीनेमे ग्लानि हो। मार चोट लगनेसे शस्त्र हथियार लगनेसे, शरीर के किसी भागमे शस्त्रकर्म (ओपरेशन) करनेसे या ऐसे अन्य कारणसे शोथ हुआ हो तो पित्तशोथमे मिलते चिन्ह होते हैं और सारे शरीरमे फैलता है। जमाल गोटा छूनेसे भी सूजन हो जाती है। शोथका कारण चिन्ह देखकर उपचार करना।

पथ्यापथ्य—सूजनका मूल कारण ढुंढना। विरेचन मूत्रल स्वेदल औषध देना। खुराक सादा पाचन जलदी हो ऐसा हलका प्रपहीं देना। चिकना गरिष्ठ पदार्थ मिष्टान्न खांड शक्कर की चीजे बाजारकी मिठाई देना नहि। शेक करना लेप लगाना तेल मालीस करना। खट्टे पदार्थ खटी दही निंबु आदि चीजें देना नहि।

सामान्य उपचार—शोथमे हमेशा आमका प्रकोप अधिक होता हैं इसलिये शक्य हो उतना लंघन उपवास कराना। पाचन दीपन औषध देना

जुलाब देना देषका प्रकोप और रोगीकी शारीरिक स्थिति देखकर वमन विरेचन कराना। रोगीका खुराक अन्न बंद कर दूध पर रखना। आरोग्यवर्धनी चूर्ण २ मांशासे प्रारंभ कर धीरे धीरे चढाकर हमेश की आठ माशा तक दी जाती है। अडुसी अडुसा अरणी पुनर्नवा नीमके पत्तेकी भाफ (बाष्प) देना। और उसका क्वाथ पिलाना।

शोथोदरारि मण्डूर

रसरत्नाकरका पाठ—पाण्डुलिपि

त्रिकटु त्रिफला द्राक्षा पौष्कर सबल शटी ॥
लोह वचा लवंग च शृंगी त्वक् शतपुष्पिका ॥१॥
विडंगं धातकी पुष्पं जटामांसी पुनर्नवा ॥
एतानि समभागानि श्लक्ष्ण चूर्णानि कारयेत् ॥२॥
सर्वद्रव्यसमं चात्र सुपक्वं लोह क्टिटकम् ॥
कुटजस्य रसेनापि मण्डूरं मर्दयेत् भिषक् ॥३॥
वेष्टितं जम्बुपत्रेण मृत्स्नया परिलेपितं ॥
ततो गजपुटे पक्त्वा स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥४॥
तन्मण्डुर समं चूर्णं त्रिकटूवादिविमिश्रयेत ॥
माध्यं पुनर्नवा क्वाथे मात्रा द्वादशरक्तिका ॥५॥
निहन्ति सर्वजं शोथं ग्रहणीं च विशेषतः ॥
उदरेषु च सर्वेषु शोथेषु सानुपानतः ॥
विविधा व्याधयश्चान्ये सेवनाद् याति संक्षयम् ॥

यह पाठ हि शास्त्रीय है। और इस पाठमे भ्रम शंका नहि रहती २० घटक द्रव्योकी गजपुट मे जलादेनेका नहि है।

शोथोदरारि मडूर—मंडुर भस्मको कूडाकी छाल (कुटज त्वक्) के क्वाथ में घोट कर गोला बना कर उपर जामून (जम्बू) के पत्ते लपेट कर गजपुट देना, इस प्रकार ३ मट्ठी देने पर तैयार हुआ मंडुर इस औषधमे डालना। यह मंडूर भस्म तोला १०० सौ लेना और सोंठ पीपल कालीमिरच हरड बहेडा आंवला लाख पुष्करमूल वाला कचूरा लोह भस्म बच लौंग काकडा-सींगी तज वडीशोप (वरीयाळी) पुनर्नवा वायविडंग जटामांसी धाइके फूल प्रत्येक औषध पांच पांच तोला लेकर कूटकर यह चूर्ण मडूरमे मिलाकर घोटकर पुनर्नवाके पचांग के रसकी अथवा क्वाथकी भावना देकर ३ रत्तीकी गोली

बनाना। २ से ३ गोली दो समय पानीसे देना। आवश्यकता होतो प्रतिदिन १२ गोली तक मात्रा क्रमशः बढायी जाती है।

भैषज्य रत्नावलीका पाठ

नोंध—यह औषध भैषज्य रत्नावलीने शोथ भस्म लोह इस नामसे दिया है। इसको रसयोग सागरमें श्री प. हरिप्रपन्नजने शोथारि लोह के नामसे दिया है। पाठ भैषज्य रत्नावली का दिया है। जब रस रत्नाकर मे शोथोदरारि मडूर नाम है यह नाम यथार्थ है। क्योंकि इसमे सब औषध के समान मडूर लेनेका है। भैषज्य र० के पाठ मे द्राक्षा और विभीतक है वह। रसरत्ना. मे लाक्षा और पुनर्नवा है यह ठीक है। क्योंकि शोथ के औषध मे द्राक्षाका स्थान नहि है और बहेडा एक बार त्रिफला मे आगया है। और जटामांसी अधिक हैं इस औषधमे भैषज्य रत्नावली के पाठमे एक विचित्रता यह है कि त्रिकटुसे लेकर धाईके फुल तकके सब औषध के समान मडूर लेकर बोरा औषध के साथ मडूर मिलाकर सबको कुटज रसमे घोटकर जामून के पत्ते लपेट गजपुट देनेको लिखा हो ऐसा भ्रम पाठ पढनेवालोको और संस्कृत अच्छा ज्ञान नही उसको होता है। वस्तुत अकेला मडूर को हि कुटज रस मे घोटकर गजपुट देना है। इसप्रकार सिद्ध हुए मडूर भस्म मे दुसरे २० घटक द्रव्य मिलाने के पीछे हि यह औषध तयार होकर सेवन योग्य बनता है। भैषज्य रत्नावली का संग्रहकार स्थान स्थान पर टिप्पणी मे अपना मत प्रगट करता है इसप्रकार यहां इस बातका स्पष्टीकरण नहि किया कि गजपुट मडूर भस्मको हि देनेका है। और पाठमे यह बात नहि दी गई कि मडूर भस्म तयार होने के पीछे २० द्रव्य मिलाना, ऐसा लिखा होता तो भी समझ मे आसकता कि २० द्रव्य मडूर में मिलाकर गजपुट देनेका नहि है। इस प्रकार भैषज्य रत्नावली मे कई स्थानोमे शास्त्रीय पाठ मे परिवर्तन और भ्रम जनक बाते है। इस लिये भैषज्य रत्नावली के अनुसार कोइ भी औषध बनाने के पहिले दूसरे ग्रन्थ मे वह पाठ होतो देखकर हि बनाना उचित हैं।

भैषज्य र० ने इसका शोथ भस्म लोह—नाम दिया है जब रस योग सागर मे शोथारि-लोह नाम रखा हैं। वस्तुतः यह लोहकी कृति नहि है मंडूर की हैं। परंच दोनो मे पाठ समान है। श्री पं. हरिप्रपन्नजने अनुवाद विकृत किया है। क्योंकि वे १९ घटक द्रव्यका चूर्ण और उसके समान मंडूर सबको मिलाकर कुटज रस मे गोला कर जामुन के पत्ते लपेट मिट्टी लगाकर गजपुट मे पकानेका लिखते है। यह अशास्त्रीय है। भैषज्य रत्नावली और

रसयोग सागरके पाठमे १९ घटक द्रव्य हैं। यह औषध मण्डूरकी कृति होनेपर भी देनोने लोहका नाम रखा हैं। यह सर्व विदित बात है कि लोह अगर मण्डूर की कृतिओ में जीवित घटक द्रव्यो के बलसे हि लोह या मण्डुर गुणकारी होता है। मण्डूर और लोह के नामसे बतायी गई औपधो मे लोह और मण्डुर अधिक प्रमाण में पड़ता हैं यही उसके नामकी सार्थकता है। किसीभी मण्डुर या लोह की कृतिमे पडने वाले वनौषधी के घटक द्रव्यो जला देनेको नहि लिखा। यहा इस औषध मे मण्डुर के समभाग १९ द्रव्यो का चूर्ण मिलानेका लिखा है, जलानेका नहि। मण्डुर कोह कुटज रसमे पकाकर डालने का लिखा है। शुद्ध अथवा तो विशेष विधिसे तैयार मण्डुर भस्मको कुटज रस मे पकाकर पीछे इस औषध मे मिलाने का ग्रन्थकारका कहना हैं और मूल पाठमे भैषज्य रत्नावली मे और उसका अवतरण लेने वाले रसयोग सागर मे स्पष्ट हैं सुशुद्धं या सुपक्व लोहकिट्टक एक वचन हैं और जम्बु पत्तेसे घोषितं यह एक वचन और रसांगशोत यह एक वचन मण्डूर के लिये लिखा है अर्थात शोधारि या शोधोदरारि मण्डूर मे डालनो मण्डूर कुटज रसमे पकाया हुआ हि डालना यह ग्रन्थ कारका वक्तव्य है। जब रसयोग सागर वालोंके अनुवादक में १९ घटक द्रव्यो को भी गजपुट मे जला दिया हैं। भैषज्य रत्नावलीका पाठ संस्कृत पढा हुआ वैद्य सोच विचार कर पढे तो मण्डूरके साथ के १९ घटक द्रव्य मिलाना लिखा है ऐसा ज्ञान हो सकता है।

इसप्रकार रसयोग सागर मे अनेक स्थानो में अनुवादक भ्रमक अशुद्ध और आक्षेप किया गया है। रसयोग सागर के अनुवाद के आधारसे औषध बनानेवालों को और औषधो के उपयोग करनेवाले रोगियो को बडी हानी पहुचने का और वैद्यो को अपयश अपकीर्ति मिलनेका संभव है।

शोथ कालानल रस—लोह भस्म अभ्रकभस्म ताम्र भस्म पारद गंधक चित्रक मूलकी छाल जायफल इन्द्रजौ गजपीपल सेंधानोन छोटी पीपल लौंग सोहागा सब समभाग लेकर पुनर्नवा मूल और नीमके पत्ते के रस को एक एक भावना देकर दो रत्तीकी गोली बनाना। मात्रा ४ से ६ गोली गर्म जलसे अथवा पुनर्नवा के क्वाथसे देना। प्रत्येक सप्ताह के पीछे १ से २ गोली बढाकर प्रति दिन २४ गोली तक दी जाती है। बंद करना हो जब प्रतिदिन एक दो गोली कम करते हुए बंद करना। शोथ मिटता हैं सूजन पेट के रोग अजीर्ण पांडु कामला बवासीर में भी फायदा करता है।

कुबच वटी—शुद्ध वछनाग १२ भाग, अफीम १२ भाग, लोह भस्म ५ भाग, अभ्रक भस्म ६ भाग सब साथ मिलाय बकरी या ऊंटनी के दुधसे गोली गुंजा प्रमाण बनाना। १ से ३ गोली दूधसे देना। खुराक मे बकरीका या गौका दूध हि देना। सब प्रकारका शोथ संग्रहणी विषमज्वर पांडुरोग आदि मिटते है।

शोथशार्दुल तेल—सहंजनेकी छाल शिरीशकी छाल निर्गुंडी मालकंगनी सहंजनेके बीज धतूरेका पान पुनर्नवा अरणी करंज छाल महुवा कटहरी छोटी काकडाशींगी बडीसोंफ अजवायन कुटकी (तिक्ता) मजीठ रास्ना वाला कचूरा कपूरकाचली वच पीपरीमूल कुष्ठ धनिया कायफल कूचला प्रत्येक औषध दस दस तोला लेकर कूटकर पीछे उसमे पक्का १० शेर गोमूत्र और १० शेर पानी डालकर १२ घंटा भिगो रखना पीछे पक्का २० सेर (४१ रतल) सरसोंका अथवा तिलका तेल डालकर धीमी आंचसे पकाना पानीका अंश जल जाय तब स्वांगशीत होने देना। पीछे कपडछान कर रखना। यह तेल १ से २ तोला तक दूधसे पिलाना और मालीस करना। सब प्रकारकी सूजन शोफ शोथ मिटता है। कर्ण रोग पांडुरोग व्रण शुल पेटके दर्द मे भी इसका उपयोग किया जाता है।

शोथका सामान्य उपाय

१ अडूसी गिलोय पुनर्नवा सम भागका क्वाथ मधु मिलाय पिलाना।

२ तिलको पिस उसमे भेसका मक्खन मिलाय मलम जैसे बनाकर लगाना

३ हरड हल्दी भारंगी गिलोय चित्रक दारूहल्दी पुनर्नवा देवदार सोंठ सम भाग कुटना १ से २ तोला का क्वाथ पिलाना।

४ पुनर्नवा देवदार सोंठ सम भाग कूटकर रखना ०। से ०॥ तोला चूर्ण दूधमे डाल पकाकर वह दूध पिलाना।

५ दंतीमूल निसोथ सोंठ पीपल कालीमिरच चित्रक सम भाग कुटना ०॥ तोलाका क्वाथ कर पिलाना।

६ पुनर्नवाका पंचांग देवदार सोंठ सहंजना छाल सरसोंका क्वाथ पिलाना

७ बिल्वके पत्ता तोला २॥ पानीसे महीन पीस पिलाना २१ दिनमे चाहे जिस अंगकी सूजन मिटती हैं।

८ पुनर्नवा नीमकी छाल सोंठ पटोल सममागसे कुटकर पानीमे पीस सूजन पर लेप करना।

९ मोइमकी छाल या लकडी तोला ५ को कुटकर क्वाथ कर पिलानेसे ७ से १६ दिनमे सूजन मिटती है ।

१० सहँदेलका मूल पानीमे पीस लेप करने से सूजन मिटे।

११ पुनर्नवा मूल को कूट समभाग गुड मिलाकर रखना २ से ८ माशा पानीसे देना शोथ मिटे ।

१२ देवदार नागरमोथ कुटकी हरड बहेडा आंवला छोटी कटहरी मूल पटोल हलदी नीमकी छाल गुगल समभाग कूटना १ से २ तोलाका क्वाथ पिलाना ।

१३ अरणी निर्गुंडी पकाइन नीम भांगराका एक घडेमे क्वाथ कर इसकी भाफ(बाष्प) देना ।

१४ जीरा पाठा नागकेशर पीपल पिपरीमूल चवक सोंठ चित्रक कटहरी मूल हलदी अतीस समभाग कूट २से६ माशा पानीसे देना सब दोषका शोथ मिटे ।

१५ आरोग्यवर्धनी चूर्ण २ से ४ माशा तक पानी या दूधमे २१ दिन तक देना ।



प्लीहा तिल्लीकी वृद्धि

कारण—पेटकी बांये और हृदयके नीचे रक्तको बनानेवाली नसोंका मूल है उसे प्लीहा या तिल्ली बरल कहते हैं। भयका दूर चिकने गरिष्ठ पदार्थ खून बिगाडने वाली चिजे, खाना या विषमज्वर शीतज्वर मेलेरियाके ताप आदिसे पांडुरोगसे कामलासे विदेशका पानी पानेसे प्लीहा बढती है। और जैसे जंगल या मेजवाले प्रदेश जहां वृक्षोंके मूलके पानी पीनेमे आता है सूर्यका ताप कम मिलता हैं इत्यादि कारणोसे प्लीहा बढती है।

वायु प्रधान होनेसे—प्लीहाके बढनेके साथ पेट फूलना गेस चढना उदावर्त वायु भारी और दर्द होता है। पित्त प्रधानमे ताप जलन दाह बेचेनी घबराहट शरीरका रंग पीलापन लिये हो। कफ प्रधानमे प्लीहा कठीन हो मंदाग्नि अरुचि उबका आवे। यह रोगी कमजोर हो शरीरके कई भागपर सूजन हो कृश हो। प्लीहाका दाब हृदय पर होतो श्वास लेनेमे तकलिफ हो भूख कम लगे दस्त टट्टी साफ न हो थोडे परिश्रमसे दम चढे।

पथ्यापथ्य—सुपाच्य खाना हलका लेना। बाजरीकी रोटी चावल खीचडी मुंग चना जव बेंगन सूरण दूधी चौलाई मेथीकी भाजी छाछ दही दूध सहजना की फली करेला ककोडा परवल और जो चीज शरीरको अनुकूल हो उपयोगमे लेना।

प्लीहार्णव—पारद तोला १०, गंधक तोला २०, ताम्रभस्म लोह भस्म स्वर्ण मक्षिक भस्म शंख भस्म शुक्तिभस्म प्रत्येक छह छह तोला सोंठ पींपल काली मिरच कुटकी हल्दी निशोथ कूष्ठ पाठा सेंधानोन जवाखार संचल शिलाजीत हरड सोहागा चित्रक शरपुंख प्रत्येक चार चार तोला, सब कूट विधिवत मिलाकर गिलोय और रोहीतक (रगत रोरडा) के रस या क्वाथसे एक एक भावना देकर रत्तीकी गोली बनाना। २ से ४ गोली दिनमे दो दफे पानीसे देना। प्लीहा यकृत वृद्धि गुल्म वायु रक्तकी पेटमे जमी हुई ग्रन्थि मन्दाग्नि अरुचि गेस चढना उदावर्त वायु आदि मिटते है।

प्लीहारि—पारद गंधक, लोह, अभ्रक शंख बारहसींग प्रत्येककी भस्म, हींग अजवायन सोंठ पीपल काली मिरच रोहीतक चित्रक शरपुंख मूल हरड वायविडंग कपुया गिलोय सेंधानोन अजमोद सब समभाग लेकर ढाकका मूल अडुसा नीबू प्रत्येक की एक एक भावना देकर ३ रत्ती की गोली बनाना। २ से ४ गोली पानीसे देना। २१ दिनमे बढी हुई प्लीहा लीवर पेटकी गांठ आदि मिटते हैं इस औषधको प्लीहान्तक रस भी कहते हैं।

प्लीहा हर मिश्रण—प्लीहार्णव रस यकृत प्लीहोदरारि रस शिलाजित लघु वसंत मालती स्वर्ण माक्षिक भस्म रक्त प्रत्येक एक एक तोला टेकर घोटकर रखना। ६ से १२ रत्ती दिनमे दो समय पानीसे देना। प्लीहा यकृतकी वृद्धि पेटकी ग्रन्थी आदि मिटते हैं भूख लगती है शक्ति आती है।

रोहीतकावलेह—रोहीतक (रगत रोहेडो) की छाल तोला ४०० को कूट कर क्वाथ करना। उसे कपडछान कर उसमे गुड तोला ८०० आठसो डालकर पकाना गाढा होनेपर उसमे सोंठ पीपल काली मिरच पिपली मूल तज तमालपत्र इलाईची हरड बहेडा आंवला सरपुखमूल धाईके फूल प्रत्येक आठ आठ तोला लेकर कूटकर गुडपाकमे डाल देना। अवलेह जैसा हो जाय जब स्वांगशीत होनेपर अच्छे बरतन मे भर देना। २ से ३ तोला दिनमे दो दफे खाना। बढी हुई पेटकी तिल्ली यकृत अष्ठेला ग्रन्थी दोषोंके प्रभावसे हुई ग्रन्थी रक्तगुल्म ओरदो का पक्षावर्त शूल आदि पेटके रोग मिटते है।

रोहीतकारिष्ट—रोहीतक की छाल रतल २० को कुचल कर पानी रतल २०० दोसो डाल कर क्वाथ करना आधा रहने पर एक अच्छे लकडी या चिनाइ मिट्टी की बरणी में भर कर उसमे गुड रतल ३० और धाई के फूल तोला ८०, सोंठ पीपल कालीं मिरच पिपरी मूल चवक चित्रक तज तमालपत्र इलायची हरड बहेडा आवला प्रत्येक बारह बारह तोला कूट कर डालना। डेढ मास तक रहने देना बीच बीच मे आठ आठ दिनको हिलाते रहना। ५० से ६० दिन के पीछे कपड छान कर अच्छे बरतन मे भरना। २ से ५ तोला तक दिनमे २ या ३ दफे पिलाना। प्लीहा यकृतकी वृद्धि पेटकी ग्रन्थी गुल्म मसा सूजन मंदाग्नि आदि मिटते है।

अर्क लवण—आकके पीले पके हुए पान लेकर एक हडीमें पान और पीसा हुवा नमक के ३ से ४ थर देकर उपर पान दाब हडीका मुख मिट्टीसे बंद कर गज पुट अग्नि देना स्वांगशीत होनेपर पीस रखना। २ से ३ मासा पानीसे देना तिल्ली लीवर बढी हुइ मिटे कफ शरदी मिटे

महामृत्युंजय लोह—लोह भस्म तोला २०, पारद गंधक अभ्रक भस्म ताम्रभस्म प्रत्येक दस दस तोला, रौप्यभस्म मयुरपीच्छ भस्म शंख भस्म कोडी भस्म जवाखार सज्जीखार बिड लवण सेंधानोन मेनसील शुद्ध हरताल चित्रक हिंग कुटकी रोहीतक छाल निसोथ इमली फल इन्द्रायण फल बाकडा कुठ अपामार्ग मूल एरंड मूल अमलवेत हलदी दारुहलदी प्रियंगु इंद्रजौ हरड

अजमोद अजमायन शरपुंख चक्रमर्द तज लहसुन प्रत्येक ढाई ढाई तोला लेकर सब कूट विधिवत् मिलाय अदरखके रसकी और गिलोयके रसकी एकएक भावना देकर सुखाकर घोट रखना। मात्रा १ से २ मासा पानीसे देनेसे बढी हुई तिल्ली और पेटकी किसी प्रकारकी गांठ मिटती है। खांसी विषम ज्वर आमवात श्वास बवासीर गुल्म शोथ उदररोग आदि रोगोंमे भी उत्तम गुण करता है।

नोंध—इस औषधका पाठ भैषज्य रत्नावलीमे है परंतु उसमे घटक द्रव्योंके वजन नहि लिखा वह अनुभवसे यहां दिया है।



यकृत—लीवर कलेजेके रोग

यकृत्‌का कार्य—यह शरीरका मुख्य अवयव है। यह पेटमे पसलीओके अंदर दांये (दक्षिण) भागमे रहा है। इसकी लंबी प्रायः १२ इंच और वजन प्रायः ४ रतल होता है। इसका मुख्य कार्य रक्त खूनको शुद्ध करनेका है। रूप कांति सौन्दर्य पाचन शक्ति उत्साह यह सब गुण यकृत लीवर-कलेजापर आधार रखता है। बहुत कर के सारे शरीरका आधार यकृत है वह बिगनेसे सारा शरीर बिगडता है।

यकृद्‌वृद्धि—आहार विहारकी अनियमितताासे चोट लगनेसे अधिक दौडनेसे खुन बिगडनेसे लीवर बढता है श्रम श्वास चडता है। भूख मंद होती है। दस्तकी कब्जी रहती है शरीर कृश होता है हृदय कमजोर बनता है।

यकृत्‌का कलोदर कलेजेमे पानी भरनेसे उसका कद बढता है। पानी अधिक भर जायतो पेट तुंबी जैसा मोटा होता है, पेटपर शिराये दीखती है। दम मुश्कीलसे ले सकता है, सोते फिरते कही सुख आराम नहि मिलता। रोगी कमजोर कृश होता है, वमन हिचकी दस्तकी कब्जी कभी अधिक दस्त ये चिन्ह होते हैं।

यकृत्‌में खूनका जमाव—दारु अधिक पीनेसे भारी चिकने पदार्थ बाजारका खुराक ज्लद मसालावाले पदार्थ खानेसे शरदी लगनेसे विषमज्वरसे म्लेरियाके बुखारसे इस तरह अनेक कारणोसे लोवरमे खुनका जमावहोता है। जब कलेजेमे भार-बोझ लगता है, पसलके नीचे और उपर दर्द हो, भोजनके पीछे पेटमें खांच हो, पेटफूले भूख मंद जीभपर छारी जमे, दस्तकी कब्जी पिशाब कम और अटक अटक कर उतरे सिरमे दर्द हो। उत्साह स्फूर्ति आनंद न रहे कभी दस्तमे और उलटीमे खून पडे। हाथ और पांवमे सूजन हो, श्वास चढे मुख पर सूजन हो।

लीवरका तीक्ष्णदाह इसे सुवारकी गांठ, ठंडीगांठ सुआराकी गांठ भी कहते हैं। कलेजा मोटा हो, ताप सख्त चढे मस्तकमे दर्द हो, दाह और पसीना निकले, कलेजे पर दाबनेसे दर्द हो श्वास लेनेसे, खांसी या छींक खानेसे दर्द हो, रोगी बाई ओर (वाम भागमे) सो न सके तृषा लगे, पिशाब थोडा थोडा और उतरे।

आंख कमला जैसी पीली दिखे, श्वासकी गति, बढे सूखी खांसी आवे, हिचकी-हिचकी आवे वमन हो पेट कठिन हो जीभपर सफेद छारी जमे दाये कंधामे दर्द हो कभी बायेमे भी दर्द हो।

यकृतसंकोच—यह कलेजाका संकोच है। पेट और छाती पर खींच कर पट्टा बांधनेसे दारु पीनेसे, विषम ज्वर या अन्य ताप लंबे समयतक आनेसे, पक्काशयके रोगसे उपदंशके रोगसे इत्यादि कारणोसे कलेजा प्रारंभमे बडा होकर पीछे संकोच पाकर छोटा और कठिन होता है। इसकी उपरकी सपाटी मृदु (लीसी) न रहकर सीताफल जैसी ऊंची नीची (खरसट) रहती है। अजीर्ण रहता है। कमी मुखसे उलटीमे और दस्तमे खून गिरता है। इस रोगके साथ किसीको कामला अरुचि वबका वमन कब्जी बवासीर कमजोरी आदि उपद्रव भी होते है।

यकृतका विद्रधि—कलेजेमे शोथसे दाहसे या अन्य कारणोसे व्रण-गुमडा ग्रन्थी होकर परु (पस पूय) होता है। तब ठंडी लगकर बुखार चढता है पसीना हो अजीर्ण हो भूख न लगे, शिथल-मुखमुद्रा निस्तेज हो। बुखार उतरे तो भी हाडमे जीर्ण ताप रहे। नाडीकी गति जलद हो। जीभ पर सफेद छारी लगे। रातको ताप बढे। उलटी दस्त मुरडा हो। कलेजेके भागमे छातीमे पेटमे पीठमे दाये कंधेमे दर्द हो। कलेजा बढे। पाक होताहो उस जगह अधिक दर्द हो। विद्रधी ग्रन्थी पकने पर कभी अंदर फुटती है कभी बहार व्रण होकर फूटती है। तब छातीके दाया पडखा पीठ या पांसलीके बीचमे सुजन होकर बडा खाड ग्रंन्थी व्रण होता है और उसके उपरके भागमे छिद्र पडकर खून और पस निकलता है। यदि अंदरके भागमे फूटे तो उपरके चिन्हो के साथ दम चढे, पस दस्तमे पडे, खांसी आवे पिकदानी भरजाय इतना खून मिश्रित कफ और परु पस पडे। आमाशयसे फूटे तो उलटीमे पस पडे। यदि आमाशयका पस पेटमे फैल जाय तो रोगी एकदम मृत्यु पावे। पेटमे सख्त पीडा होने लगे, सारे पेटमे बोझ भार लगे, रोगी बेहोश होवे, नाडीकी गति क्षीण हो, और मरण होवे। कलेजेकी विद्रधिमे पस पांच छ तोलासे लेकर पाच सात रतल तक-परू निकलता हैं। पस होनेके पीछे रोगी बलवान हो और पूय कम उत्पन हुआ हो तो उसका शोषण होकर आराम होता है। यदि एकाद जगह मुखकर सब पूय निकल जाता है तो आराम होता है, लेकिन कलेजा पकनेके पीछे परिणाम भयंकर आता है। यह रोग दारू अधिक मर्यादा रहित पीने वालोंको अधिक होता है। गरम देशमे दारूका अधिक उपयोग करने वालो मे यह रोग ज्यादा होता है। इसे एलेपेथीमे लीवरका केन्सर भी कहते है।

पथ्यापथ्य—सारा जुलाब देना। दस्त पिशाबका खुलासा होनेसे सुजन कम होती है। सादा हलका खुराक देना आराम लेना। श्रम करना नहि। दर्द पीडा शूल होता हो वहां शेक लेप करना। मुग... ...नी चावल खीचडी कांजी

चनेका जौका बाजरीका आटाकी गुड मिल यो राब देना। दूधी सूरण परवल करेला कंटोला चोलाई मेथीकी भाजी आदि देना। पसीना लाना गढ-व्रण बहार नीकले तो पकाकर फोडकर विगाड निकाल देना। इस रोगके साथ जो जो चिन्ह हो उसके औषधका योग करना।

यकृत्प्लीहोदरारि लोहो नं १—स्वर्ण भस्म तोला १, ताम्रभस्म वंग भस्म अभ्रकभस्म माक्षिकभस्म शंखभस्म प्रत्येक चार चार तोला लोहभस्म १० तोला, सब साथ मिलाकर अदरख अरणीके पान बीलीके पान कुटकी तुलसी पान प्रत्येकके रस या क्वाथको एक एक भावना देकर घोंटकर रखना या एक रत्ती की गोली बनाना। मात्रा २ से ३ गोली दिनमे दो समय पानीसे देना। लीवर के सब रोग मे गुणकारी है। तिल्लीका रोग श्वास खांसी गुल्म सूजन पांडु कामला मे भी अच्छा गुणकारी है।

यकृत्प्लीहोदरारि लोह नं २—इसमे स्वर्ण भस्मकी जगह स्वर्णमाक्षिक डाली जाती हैं। यह भी यकृत प्लीहा गुल्म ग्रन्थी आदिमे अच्छा काम देती है।

नोंध—सामान्य आर्थिक स्थिति वाले लोग स्वर्णभस्म वाला न लेसके उनके लिये स्वर्णभस्मके स्थनमे स्वर्णमाक्षिक डालकर बनाना पडता है। कभी गरीब रोगीको विना मूल्य याने धर्मादा देनेके लिये भी माक्षिकभस्म वाला बनाना पडता है। इस लिये शास्त्रोक्त पाठको एक नंबर और माक्षिकवाले को २ नंबर दिया गया है।

क्षारामृत—सचल जवाखार सुराखार सज्जीखार सेंधानोन मोहागा विड लवण नमक सब समान भाग लेकर आकके दूधकी और थूहरके (स्नुही) दूधकी एक एक भावना देकर एक हंडीमे आकके पानके ४ से ५ थर देकर बीच बीचमे यह बिछाकर उपर आकके पान दाबकर हंडीको कपड मिट्टी कर गजपुट अग्नि देना स्वांगशीत निकाल घोंटकर उसके समान नीचेका रोहितकादि चूर्ण मिलाकर रख छोडना। इसकी मात्रा दो से तीन माशा तक रोगका स्वरूप देखकर दिया जाता है। लीवर तिल्ली गुल्ममे गुणकारी हैं।

रोहितकादि चूर्ण—रोहितक छाल अतीस लताकरंज बीजकी गिरी (कांकचीयानामी ज), सोंठ पीपल कालीमीरच वायविडंग सरसों हरड बहेडा आंवला मेढासींगी पुनर्नवा मूल अटामांसी अजमोद जीरा शाहाजीरा सब सम भाग लेकर कूट कर रखना। यह क्षारामृतमें सम भागसे मिलाया जाता है। और यकृत लीवर के सब रोगमे यह चूर्ण अकेला भी २ से ३ माशा पानीमें दिया जाता है। सब प्रकारके करेजाके रोगमे उत्तम गुणकारी है।

महालोकनाथ रस—पारद गंधक पकाया सोहागा स्वर्ण माक्षिक भस्म अभ्रक भस्म प्रत्येक दस दस तोला, साबर सींग ताम्र शंख लोह और शुक्ति प्रत्येककी भस्म बीस बीस तोला, कौडी भस्म तोला ३०, सब साथ मिलाय घीकुवारपाठा और पंचांगके रसकी एक एक भावना देकर इसका गोला कर उपर केलीका पत्ता लपेट धागा बांध कर उपर कपड मिट्टी कर पांच रतल छाणका अग्निमे पकाना। एक कुंडामें उपर नीचे छाणाका टुकडा रखकर अग्नि देना। स्वांगशीत होनेसे निकाल कर घोटकर रस छोडना २ से ४ रती दिनमे दो समय छाछसे शहदसे या गायके दुधसे देना। लीवर के सब रोगोमे उत्तम गुणकारी है।

मृत्युंजय रस—पारद तोला ४, गंधक तोला ८, अभ्रक लोह रौप्य प्रत्येककी भस्म चार चार तोला, ताम्र बंग माक्षिक प्रत्येककी भस्म चार चार तोला, रससिंदूर चित्रक सूंठ हाककाबीज पीपरीमूल हरड बहेडा आंवला निसोथ अपामार्गमूल अतीस श्वेत चिरायता बछनाग पुनर्नवा मूल जटामासी मयूरशिखा नागरमोथ सोहागा हलदी संचानोन जवाखार प्रत्येक दो दो तोला सब साथ मिलाकर अपामार्ग पंचांग अरणी पान अदरख और बिल्वके पत्ते प्रत्येकके साथ क्वाथकी एक एक भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना। मात्रा २ से ४ गोली पानीसे देना। लीवरकी ग्रन्थी लीवरकी वृद्धि लीवरमे खूनका जमाव लीवरके रोगोमे उत्तम गुणकारी है। पांडुरोग कामला पेटके रोग कृमि गुल्म मंदाग्नि खूनका बिगाड प्लीहाकी वृद्धि शूल इन रोगोंमे भी दी जाती है।

यकृत प्लीहारि योग—सर्वेश्वर पर्पटी यकृत प्लीहोदरारि लोह शंख वटी महालक्ष्मी विलास आरोग्यवर्धनी शिलाजीत स्वर्ण बंग नेपालती प्रत्येक एक एक तोला और महालोकनाथ तोला २ सब साथ घोटकर ६४ पुडी बनाना दिनमे दो समय अमृत भल्लातक कंटकारी अवलेह अथवा चित्रक हरीतकी १ से २ तोला में मिलाय कर देना। सब प्रकारके कलेजेके रोगमें उत्तम फायदा होता है।

रोहीतक घृत-रोहीतक (रगत रोहडा) की छाल तोला ४०० और गुठली निकाला खट्टे बेर (बोर) तोला २४० क्वाथ बनाना उसमे बकरीका अथवा उटनीका दूध २४० डालना और सोंठ पीपल काली मिरच हरडा बहेडा आंवला हिंग अजवायन वायविडंग बिडलवण अजमोद संचल लोंग पुष्करमूल अनारबीज देवदार पुनर्नवा मूल इन्द्रायणका फल जवाखार चित्रक हपुषा चवक बच प्रत्येक एक एक तोला कूटकर क्वाथमे डालना और गायका घी रतल २० डालकर धीमी आंचसे पकाना। जलका अंश जल जाय तब अग्नि निकाल कर वैसे हि १२ घंटा स्वांगशीत होने देना पीछे गर्म कर घी कपड छानकर रख लेना

२ से ४ तोला दिनमे दो वख्त खिलाना और यकृत् प्लीहा के स्थान पर बहार मालीश करना। और उपर बताये किसी औषध के साथ अनुपान रुपमे भी देना। यकृत लीवर प्लीहाके रोग और उसके उपद्रव पीडाकारी चिन्ह मे उत्तम गुणकारी हैं।

सामान्य प्रयोग

१ शिलाजीत स्वर्णमाक्षिक भस्म क्षारामृत समभाग मिलाय २ से ६ रत्ती पानीसे २१ दिन तक देनेसे अच्छा लाभ होता हैं।

२ सहजनेकी छाल पीपल (अश्वथ) छाल पच हिंग सेंधानोन समभाग कुटकर १ से ३ मासा पानीसे देना।

३ सफेद फुलको पुनर्नवा का मूल तोला १ पानीमें पीसकर पिलाना।

४ वरुण (वायवरणो)का मूल तोला १ हमेशा पानीमे पीस पीलावो।

५ खैर(खदिर) की छाल हरड बहेडा आवला नीमकी छाल कुटकी मूलेठी मूल निशोथ पटोल मसुरकी दाल सब सम भाग ले कूट रखना हमेशा १ तोला का क्वाथ कर पिलाना।

६ सहंजनाका मूल तोला १ महीन पीस उसमें १० तोला पानी और १ बडा चम्मच शहद डालकर पिलाना। २१ दिनमें यकृत् प्लीहा के रोग मे लाभ होता है।

७ रक्तचंदन मजीठ हलदी मूलेठी मूल सोनागेरु समभाग कूट पानीसे पिस लेप करना

८ उपरके भागमे दोषघ्न लेप अथवा दशांग लेप लगाना



वायुका गुल्म गोला, रक्तगुल्म खूनका गुल्म ग्रन्थी

वायुका गुल्म—ज्वर अतिसार संग्रहणीका रोगी अगर इस रोगसे मुक्त, वमन विरेचन लिया हुवा मनुष्य वायु करने वाली चीजे खावे, भूखा पेट पानी पीवे भोजनके पिछे तुर्त व्यायाम कसरत करे कूदे दौडे, मल मूत्रका वेग रोके इससे यह रोग होता है। ठंडे रातवासी अन्नपान खाते रहेनेसे, रुक्ष लुखे —(घी दूध छाछ आदि बिना प्रवाही साथ खुराकको) लेते रहनेसे शोकसे चोट लगनेसे मल क्षीण होनेसे अधिक उपवाससे बलवानके साथ लडनेसे वायु प्रकोप होकर पेटमे गुल्म गोलाका रोग होता है।

चिन्ह—प्रारंभमे बहुत डकार आवे दस्त बंद रहे तृषा लगे आंतो मे दाह हो पेट मे वायुका गुडगुड आवाज हो पेट फूले वमन हो भूख न लगे **वायु प्रधान गुल्ममे** बस्ति हृदय नभि और दोनो पार्श्वमे पीडा हो शिर दर्द हो तिल्ली की जगह पीडा हो आंते शब्द करे सूईयां भोंक्ती हो असा दर्द दस्त बन्ध हो शरीर जकड जाय मुखमे शोष लगे अपान वायु छूटे नहि यह गोला कठिन नहि होता उपर नीचे चढता उतरता हैं। **पित्त प्रधान गुल्ममे** जलन दाह खट्टे डकार मूर्च्छा पसीना हो तृषा लगे ज्वर चढे गुल्म उपर नीचे गति मान हो। **कफ प्रधान गुल्ममे** अरुचि पीनस नाकसे पानी गिरे डकार गुल्म कठिन स्थिर एक स्थान में जमा हुआ मालुम होता है।

रक्त गुल्ममे—यह गुल्म प्राय औरतो को होता है। मासिक अनियमित होनेसे, गर्भाधान न होनेकी औषध खानेसे, ऋतु बाहर न गिरनेके लिये कपडा रूई डालनेके कारण ऋतुका प्रवाह अटक जानेसे, प्रथम प्रसवके समय बीगडा हुआ खून न निकलनेसे, प्रतिमास आता हुआ ऋतु अटक नाभिके नीचेके भागमे जमा होकर रक्तका गुल्म गोला होता है।

चिन्ह—डकार आवे, शरीर कृश हो पेडुमे दर्द खटता दाह दस्त तृषा ताप शूल योनिसे दुर्गंधी स्राव आदि होता है। किसीको मासिक बंद होता है, किसीको न्यूनाधिक आता रहता है, इसी दशामे ऋतुका रक्त विशेष स्थानमे जमा होकर औरतको रक्त गुल्म होता है। प्रारंभमे गर्भ रहनेकी शंका होती है लेकिन गर्भ फरकता है जब गुल्म स्थिर होकर शूल निकलता है। गर्भके हाथ पांव अवयव जान सकते हैं जब गुल्म गोलाकार होता हैं।

पथ्यापथ्य—जो चिन्ह मालुम हो उसका औषध देना। शेक करना दस्त हो दो खुलासा होता रहे असी औषध देते रहना अनुलोमन

होकर अधो वायु छुटे ऐसा करना। पेट पेडु वृक्क नाभि के दोनो बाजु मालीश कराना। लंघन करना, भूख न होवे खाना नहि। अल्प मिताहार हलका खुराक मुंग बाजरी जव चना उडद मेथी दुधी कांदा बेगन सुरण कंटोला आदि शाक, लाल मिरच अदरख हलदि नमक हिंग कोकम धनिया जीरा राइ मेथी लोंग तज मीठानीम आदि मसाला खाना। निंबूका छोडा (करीर) फळका अचार निंबुका रस दाल शाक मे डाल खाना मिष्टान्न कम खाना गुडका मिष्टान्न हानि नहि करता। चाहा काफी कम पीना।

गुल्म दावानल—पारद गंधक, अभ्रक सुवर्ण माक्षिक लोह ताम्र प्रत्येकको भस्म शिलाजीत सोहागा नवसार सोराखार सेंधानोन चनेकाखार सोंठ पीपल काली मिरच वच देवदार इलायची तज हलदी चित्रक हरड चोपचीनी निशोथ आकडा दूध थूहरका दूध सब समान भाग लेकर अरणी चित्रक भांगरा तांबूल प्रत्येकको एक एक भावना देकर सुखाकर घोंट रखना अथवा दो रती की गोली बनाना। मात्रा २ से ४ गोलि पानीसे देना। सब प्रकारका गुल्म गोला रक्त गुल्म मिटता हैं। प्लीहा यकृत की वृद्धि अण्डवृद्धि गोल उदावर्त मे भी अच्छा फायदा करता हैं।

मुक्ता पञ्चामृत—मोतीकी पिष्टी १ प्रवाल २, वंग ४, शंख ८, शुक्ति १६, सब साथ मिलाकर ईख-गन्नाका रस गौका दुध विदारीकंद शतावरी हंसराज तुलसी प्रत्येकका रस या क्वाथकी भावना देकर शराव संपुटमे कपड मिट कर कुक्कुट पुटका अग्नि देना पछे निकाल कर घोटका रखना २ रती मात्रामे पीपलका चूर्ण ६ रती मिलाकर शहद या दूधमे देना।

मुक्ता विद्रुम वंगाः शंख, शुक्तिः क्रमाद् द्विगुणितानि।
इक्षोः सुरभीपयसा विदारिका कन्यका शतवर्या॥
हंसपदी श्यामाया. क्वाथेन रसेन भावनैकैका।
कुक्कुट पुटेन पक्वं कणा गुक्ता द्विरक्ति मात्रा स्यात्।
मधुना वा दुग्धेन च दद्याद् हृत्फुफ्फुस क्षयगदेषु॥
...विषमगदेषु गुणदो मुक्ता पञ्चामृत. सदा सिद्धः

सब प्रकारका गुल्मरोग हृदय रोग फुफ्फुसके रोग क्षय रोगमे उत्तम गुणकारी है।

कांकायनी गुटिका—अजवायन जीरा धनियो कालीमीरच, अपराजिता अजमोद कलौंजीजीरा, प्रत्येक तोला १ हिंग तोला ६ निशोथ तोला ८,

पच लवण पांचो मिलाकर तोला ५, दंती मूल वचुरा पुष्कर मूल वायवीडंग अनार बीज हरड चित्रक अमलवेत सोंठ प्रत्येक तोला १६ सब साथ मिलाय बीजोरा निम्बूके रसमे गोली ३ रतीकी बनाना। मात्रा ३ से ६ गोली पानीसे देना। सब प्रकारकी गुल्म वात गुल्ममे मधु छांछ या आसव के साथ, पित्त गुल्ममे दुध के साथ, कफ गुल्ममे चित्रक हरीतकी अवलेहके साथ, त्रिदोष गुल्ममे बकरीके अथवा उटनीके दूधके साथ देना।

गुल्म कालानल रस—पारद गंधक शुद्ध हरताल ताम्रभस्म से हागा जवाखार प्रत्येक दो दो तोला, नागरमोथ पीपल काली मीरच सोंठ गजपीपल हरड वच कुष्ठ प्रत्येक एक एक तोला लेकर पर्पट नागरमोथ अपमार्ग पाटा प्रत्येकके क्वाथकी एकएक भावना देकर ३ रत्तीकी गोली बनाना ३ से ६ गोली पानीसे सब प्रकारके गुल्ममे दि जाती है।

गुल्मनाथ रस—पारद गंधक अभ्रक ताम्र बंग प्रत्येककी भस्म टंकण गंधक बछनाग हरड जवाखार सेंधानोन सोंठ पीपल कालीमिरच सब समान भाग लेकर मिलाय निंबुरस क्वारपाठा अदरख प्रत्येक के रसकी एक एक भावना देकर दो दो रत्तीकी गोली बनाना। ३ से ४ गोली पानीसे देना सब प्रकारका गुल्म स्रोओंका रक्त गुल्म पेटकी ग्रन्थी गांठ लीवर प्लीहाकी वृद्धि इसमे गुणकारी है।

गुल्म कुठार (यो र) नाग बंग अभ्रक कांतलोह ताम्र प्रत्येक की भस्म सब समभाग लेकर निंबू रसमे घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना मात्रा १ से २ गोली अदरखके रसमे शहद मिलाकर इसके साथ देना उपर छांछ पिलाना। सब प्रकारका गुल्मरोग अजीर्ण आम रोग और हृदय एवं उदरमे निकलता हुआ शूल रोगमे उत्तम गुणकारी है।

निम्बूक्षार प्रवाही—निम्बूका रस शेर ५ एक बडे कांचके बाटला आधा खाली रहे ऐसा भरना उसमे नवसार सोरांखार टंकण फिटकीरी सज्जीखार जवाखार प्रत्येक आधा आधा शेर कूटकर डालना पीछे मजबुत बुच देकर रख छोडना। एक महिनाके पीछे कपडछान कर रखना। मात्रा १० से १५ बुंद अथवा छोटी आधी चम्मच अंदाज पानी तीन चार तोलामे डालकर पिलाना। स्वादके लिये आवश्यकता होतो आधा तोला शक्कर डालकर पिलाना। सब प्रकारके गुल्म उदावर्त वायु गेंस चढना पेटकी ग्रन्थी आदिमे उत्तम फायदा करता है।

हरीतकी अवलेह—चित्रक मूल भरणी आंवला छोटी कटहरी अपामार्ग अरंड प्रत्येक चालीस तोला लेकर कूटकर क्वाथ करना कपडछान कर उस

क्वाथमे सोंठ पीपल कालीमीरच अवाखार शतावरी सोरा सोहागा सेंधानोन नमक अजवाइन असगंध पीपरीमूल आंदमाण नागरमोथ धमासा प्रत्येकका चूर्ण चार चार तोला और बहेडाका चूर्ण तोला ८० असी सब चीजें क्वाथमे डालकर पकाना, रबडी जैसा हो जाय तब उसमे गुड तोला ८०० आठसो डालकर अवलेह जैसा घट्ट हो तब स्वांगशीत होनेसे अच्छे बरतनमे भरना। रोगीका शारीरिक हाल और चिन्ह देखकर मात्रा १ से ४ तोला तक दी जाती है। सब प्रकारका गुल्म पेटके रोग उदावर्त गोला चढना मंदाग्नि मलावरोध वमन हिचकी दस्तकी बन्दी पांडु कामला आदिमे उत्तम गुणकारी है।

केरका अार प्रवाही- केर करीर (केरडे) का फल जिसका अचार बनाया जाता है। नमक हलदी आदि डालकर पालको डुबे रखते हैं। वह पानी पक्का सेर ५ मे सोंठ, पीपल, मीरच, सेंधानोन, अमलवेत जवाखार प्रत्येक पांच पांच तोला कूटकर डालना बुच लगा देना जब जरुरत हो २ से ५ तोला तक पिलाना। पेटका शूल पेटका दर्द तत्काल शांत होता हैं। चढा हुआ गुल्म बैठ जाता है। हमेशां १ चम्मच पीलानेसे १४ दिनमें गुल्म ग्रन्थी तिल्ली लीवरका रोग मिटता हैं।

गोधुम प्रयोग—गेहुका आटा आकके दुधमे मर्दन कर बनाना उस पर आकके पत्ते लपेट कर नाला बांधना। पीछे उसपर काली मीटीका सुखाकर जमीन १० इंच खोद कर उसमे वह रख उपर मिट्टी दाब देना उसके उपर प्रातः और शामको २० सेर छाणा जलाना। इसप्रकार सात दिनतक करना। पीछे ८ वे दिन निकाल कर मिट्टी पान अलगकर पक्काकार को पीस रखना। मात्रा ६ से ८ रत्ती पानीसे देना इस मात्रासे प्रारंभ करना रोगका स्वरुप देखकर योग्य मात्रा बढायी जाती है। सब प्रकारका गुल्म रोग मिटता है।



मूढमार

कारण—कुश्तीसे मारामारी मे लडाईसे उचे नीचे स्थानसे गिर पडनेमे चोट लगनेसे शरीरके किसी एक अंगमे या अधिक अवयवो या अंगोमें मार पडनेसे खून नहि निकलता और उस जगह खूनका जमाव होकर शोथ सूजन हो जाती है दर्द होता है। हृदय जैसे अंगो पर सख्त मार पडनेसे कभी मृत्यु हो जाती है। ऐसा मारको मूढमार कहते हैं।

पथ्यापथ्य—खट्टा बर्फ आइसक्रीम शरबते खांडकी चीजें खाना नहि। मधुर पदार्थ के लिये गुडवाली चीजे खाना बाजरी मुंग उडद आदि हितकर हैं।

महालाक्षादि गुगल—लाख तोला ८ आठ पारद गंधक हरड भीलांवा खिराहठा छाल(आसोदरो-अश्मंतक)शिरीष छाल (सरसडो) असगंध वकावीज सता बरी सोठ पीपल कालीमिरच तज लोंग प्रत्येक चार चार तोला लेना, गुगल ३२ तोला और गायका घी १० तोला मिलाकर महीन कूटकर पानीसे गोली रत्ती ६ की बनाना। २ से ६ गोली दिनमें दो समय पानीसे या घीसे देना उपर दुध पिलाना। दुधका खुराक ज्यादा रखना। तेल लेप आदि बाह्योपचार करना।

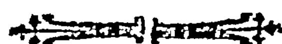
मुमीआई—पीले रंगकी राल तोला ८० और भीलांवाकी उपरकी टोपी डींट निकाल कर तोला २० लेकर दोनोको साथ कूटना अच्छी तरह एकत्र हो जाय पीछे उसमे पीपल तोला १, अकरकरा तोला १, और रुमीखिग रफ तोला २ सबको महीन घोटकर उपरके राल भीलामा के चूर्णमें मिलाकर फिर कूटना, एकत्र होजाय जब उसमे खोपरेका तेल तोला १० डालकर एकत्र करना पीछे मिट्टीके चौडे मुंहके बरतनमे डालना (पाटीयो-ग्राम्य प्रजा जिसमें दाल आदि खाद्य पदार्थ पकाती है) उसे चुल्हो पर चढाकर तीव्र अग्नि देना ढक्कन ढांकना सबका रसहो जब लकडीसे हिलाना उफान (उफाणो) आवे जब नीचे उतार कर १० मिनट हिलाना उफान बैठ जाय जब फिर चुल्ही पर चढाना फिर उफान आवे जब नीचे उतारना इस प्रकार तीन दफे करनेसे पक गया समझना पीछे उसे मिट्टीके ढंकनसे ढंक देना १२ घंटा तक स्वांगशीत होने देना। पीछे मिट्टीका बरतन तोडकर पर्पटो-पपडी जैसे आकारकी दवा निकाल कर घोटकर रख छोडना

यह मुमीआई दवा तैयार। इसकी मात्रा रती ६ में जायपत्री (जावत्री) रती ३ और लोबान रत्ती ३ का चूर्ण मिलाकर सुबे शाम घी से देना। चाहे जैसा मूढमारसे खूनका जमाव हो गया हो खून छूटा पड जाता है और ७ से १४ दिनमे आराम होता है। यह औषध वमन पेटका गेस उदावर्त कमजोरी अशक्ति

से भी दी जाती है। यह औषध बनाते वक्त भीलावाका तेल उछलकर हाथपर लग जाय या दूसरे अंगपर लग जायतो खोपरा (श्री फल टोपरा) खिलाना और खोपरेका तेल सब जगह मालीस करना। दवाई पकाते समय हाथोंमे घी लगाना। इसे ममाइ मुमाइ मुमई मुमीआई इत्यादि नामसे पहिचानते है।

संधाण—एरंडके बीज तोला १८, देशी साबून तोला १८, सैंधानोन तोला १५, हलदी तोला १५, खुरासार तोला २०, घोडेकी लाद (लींडा) तोला ४० इसको साथ कूट पानी मिलाकर मोटी रोटी जैसा बनाकर पकाकर मार चोट लगी हो उस पर बांधना आधा इंच मोटा (जाडा) लेप करना। उपर सेक करना। जमा हुआ खून छूटा पडकर पीडा मिटती है।

महालाक्षादि तेल, महानारायण तेल आदिका मालीस करना।



हड्डी टूटना सांधेका मरड होना

कारण चिन्ह—गिरजानेसे चोट लगनेसे हाथ पांवका मरोड होनेसे किसी वस्तुका आघात लगनेसे हड्डी टूट जाती है हड्डी के सांधेमेंसे नीचे खींच जाती है। हड्डीकी जगह सख्त दर्द होता है। टूटा हुआ या खिस गया सांधि बेडौल होता है। हड्डी बहुत करके बीचके भागसे टूटती है और अंदर कभी कटकट शब्द होता है। हड्डी टूटी है या खिस गयी है इसको जांच कर पीछे उचित उपचार करना, खिस गया होतो उसे योग्य स्थानपर बैठाकर पीछे पाटा लेप आदि करना।

पथ्यापथ्य—प्रारंभमे शीतोपचार करना। लेप ठंडा लगाना। शीत पदार्थसे धोना और शीत ग्राही पदार्थ पिलाना। नमक तीखा क्षार वाले पदार्थ स्त्रीसंग व्यायाम रूक्ष लूखा-घी दूध विरहित अपवित्र चीजे खाना नहि। खांड शक्कर की चीज कमखाना।

सामान्य उपचार—प्रारंभमे उस जगह ठंडे पानीकी धारा करना। काली खेतकी मिटी पानी मिलाय लेप करना उपर दर्भ-(डाभ) बांध कर पाटा बांधना। हड्डी नीचे खिसक गई होतो उंचे चढाना, उंचे चढ गयी होतो नीचे उतार कर दाबकर स्थान पर बैठा देना, नीचे खींचकर अच्छा करना। पाटा बहूत खींच कर बांधना नहि और बहूत ढीला शिथिल भी नहि बांधना। शीत ऋतुमे पाटा सात सात दिनके पीछे खोलना और ग्रीष्म ऋतुमे तीन तीन दिनमे खोलना। १ मास बीतने पर पाटा पांच पांच दिनके पीछे खोलना महुवा (मधूक) गुलर सरल पीपल (अश्वत्थ) वड (वट) ढाक इत्यादि वृक्षोंकी छालको कूटकर गाढा आधासे १ इंच मोटा (जाडा) लेप कर उपर उसी वृक्षकी छाल रख पाटा बांधनेसे टूटी हुई हड्डी और सांधा जलदी मिल जाता है।

आभा गुग्गळ—बब्बुलकी पत्ती छाल मूल फल गोंद, लाख असगंध महाबला (खपाट)के बीज, सोंठ पीपल कालीमिरच हरड बहेडा आंवला हाडसांकळ अगेधु (अगथिया)की छाल, आसोपालवकी छाल गूलरकी छाल प्रत्येक दस दस तोला लेकर कुटकर महीन चूर्ण बनाकर सबके समान अर्थात १० तोला शुद्ध गुगल डालकर उसमे गायका घी तोला २० डालकर कुट मिलाना और बब्बुलकी छालके कषायकी भावना देकर ३ रत्तीकी गोली बनाना। दिनमे दो या तीन समय ४ से ८ गोली पीसकर या चाबकर पानीसे या दूधसे देना। १४ से २१ दिन तक देनेसे टूटी हुई हड्डी जूड जाती हैं। खिसक गया सांधा अपने स्थान पर स्थिर हो जाता है।

भग्नारोग्य तेल—बब्बुलकी छाल मूल फल पत्ती गोंद, पीपल (अश्वत्थ) की छाल ढाककी छाल दर्भ मूल लाख राल असगंध शतावरी बलामूल महाबला

मूल शालिपर्णि पृश्नीवर्णि अरणीपान अगेथूकी छाल गूलरकी छाल वेलकी छाल प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूचलकर उसमे दूध तोला ४०० और पानी तोला ४०० डालकर १२ घंटा रहने देना। पीछे तिलका तेल रतल ४० डालकर धीमी आंचसे पकाना। पानीका अंश जल जाय स्वांगशीत होनेके पीछे कपडछान कर रखना। यह तेल मालीश करना कपडेका टुकडा भिगोकर उस जगह लगाकर उपर केलीका पत्ता दावकर पाटा बांधना। यह तेल १ से २ चम्मच दो वख्त दूधके साथ मिलाया जाता है।

भग्न संधान लेप—हीरावोलको पीसकर उसमे मुरघेंके अडाकी सफेदी मिलाय मलम जैसा बनाकर लगाकर पाटा बांधना।

भग्नशांति लेप-गुगल तोला ४०, हीरावोल तोला ८०, एलीयो, समीमस्तकी शंख भस्म प्रत्येक एक एक तोला सब कूट मिलाय कुंआरपाठाके रसको भावना देकर सुखाकर रख छोडना। आवश्यकता हो जब पानीसे पीसकर लगाना पाटा बांधना।

घा रुझ बूटी—सावंतवाडी कोकणकी ओर मालेवंघ नामक औषधी होती है उसे सधिनी भी कहते हैं। इसकी पहिचान यह है कि उसका पत्ता बीचमेसे या कहींसे तोड कर काटकर जुडनेसे सांधा मिलकर पत्ता आखा हो जाता है, कहांसे तूटा था यह भी मालुम नहि होता। इस के पत्ते पीसकर घावपर लेप करनेसे खून निकलता बंध हो जाता है और घावकों रुझ आ जाती है।

भग्नारोग्य मिश्रण—सुवा पर्पटी, जहर मोहरापिष्टि, प्रवाल चंद्रपुटी, चंद्रप्रभा नं १ शिलाजीत प्रत्येक तोला एक एक अमृतासत्व तोला ३ सब साथ मिलाकर ४ से ६ रती सुबे शाम शहदसे या घृतसे लेकर उपर दूध पीना।

लेप--१ आमका मूल सहजनाके पान पुनर्नवा मूल वडकी छाल सम-भाग भाग कूटकर पानीमे या दूधमे पीस लगाना।

भग्नहर क्वाथ—लाख, वडकी छाल, आसोपराकी छाल, अगेथू (अगस्त्य)की छाल, बबूलका मूल सब समभाग लेकर कूटकर दो तोलाका क्वाथ कर किसी औषधके साथ पिलाना।

लेप—२ मजीठ, महूडेका फूल सरसडा (शिरीष) की छाल चावलका आटा सब समभाग लेकर पानीसे धोया हुआ घृत मिलाय मलम बनाकर लगा-कर पाटा बांधना।

३ दूर्वांगलेप—पानीमे पीस लगाना।

४ महालाक्षादि तेल--अथवा भृंगराज तेल मालीस करना।



पानी लगना दुर्जलजन्य रोग

कारण—देश परदेशमे–अपनी जन्म भूमिसे अन्य प्रदेशमे रहनेसे वहांका पानी लगनेसे, आहार विहारका नियम न रखनेसे, जंगल झाडीमे रहनेके कारण वहांके वृक्षोके मूलसे प्रसार होनेवाले जल पीनेसे, मुंबई जैसे गीच वस्तीके शहरोमे रहेनेसे तालाब आदिका नये ज पानी पीनेसे पानी लगता है।

चिन्ह—शरीर फिक्का निस्तेज होता है। चलते फिरते कामकाज करते दम चढ जाता है। खुराक पाचन नहि होता, दस्तकी कब्जी–मन्दाग्निरोग रहता है। कभी पतला दस्त होता है। दिमाग फिरता है। शक्ति क्षीण होकर कमजोरी आती है। वीर्य पतला होता है। कभी पिशाबमे निंदमे स्वप्नमे वीर्य स्राव होता है। स्वभाव गर्म चीडिया होता है। बेचेनी ग्लानि निरुत्साह रहता है, किसी वस्तुपर प्रीति नहि रहती। पेटमे मल–मिगाढ जमता है। पेट मोटा होता है। नाडीयां स्थूल हो जाती है। पानी लगनेवाले मनुष्यको संग्रहणी क्षय केन्सर ब्लड प्रेशर डायाबीटीस आदि रोग हो जाता है। कभी ऐसे रोगीका हृदय भी बंद हो जाता है।

पथ्यापथ्य—भूख हो इतना अल्पप्रमाणमे खाना–मिताहार करना। चिकना पदार्थ मीलका आटा मैदाकी चीजे बाजारकी मिठाइ बटाटा मांस लाल मिरच भैसका दूध घी आदि नहि खाना। गायका बकरीका दूध बाजरी चना मुंग तुवेर दाल नमक सेंधानोन जीरा धनीया राई मेथीदाना हींग अदरख कालीमीरच दूधी परवल करेला कंटोला आदि शाक खाना।

दुर्जलजेता रस—पारद, गंधक, काला शुद्ध बच्छनाग प्रत्येक तोला दो दो, कौडी भस्म, काली मीरच, सोंठ, पीपल, नागरमोथ चित्रक, गिलोय प्रत्येक चार चार तोला, कुटकी ८ तोला सब साथ कूट विधिवत मिलाय अदरखके रसकी भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बांधना मात्रा २ से ४ गोली पानीसे देना।

अपूर्व मालीनी वसंत–(यो. र.) वैक्रांत, अभ्रक, ताम्र, स्वर्ण माक्षिक रौप्य बंग प्रवाल, रस सिंदूर, टंकण, लोह सब समभाग लेकर विधिवत मिलाय पीछे वाला, शतावरी, हलदी तीनो समभाग लेकर इसके क्वाथकी भावना देना। और रात्रीको चंद्रकी चांदनी के प्रकाशमे खुली रख छोडना। इस प्रकार ७ भावना देना। मात्रा ३ गोली है। शहद और पीपलका चूर्ण मिलाय खिलाना उपर दूध पीना। धातुगत जीर्णज्वरमे देना। गिलोयका सत्व २ मासा और शकर ४ मासामे ३ गोली मिलाय सर्व प्रकारके प्रमेह रोगमे दिया जाता है। बीजोरा

निबुका मूल १ तोला पीस इसके साथ देनेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरीमे फायदा होता है। पानी लगा हो उसको मात्रा ३ से ४ गोली प्रातः शहद या दूधसे देना एक मास तक सेवन करानेसे उत्तम गुण होता है। शरीरका फिकापन मंदाग्नि, दस्तकी कब्जी कमजोरी आदि मिटते है खून बढता हैं।

अपराजिता गुटिका—शुद्ध पारद, गंधक लोह, अभ्रक, मडूर, शुक्ति, शंख, ताम्र प्रत्येककी भस्म चार चार तोला, सोंठ, पीपल, काली मिरच, गूगळ, हरड, बहेडा, आंवला, टंकण, चित्रक, गिलोय, अतीस प्रत्येक आठ आठ तोला, कूटकी ४० तोला साथ मिलाय भागरेकी २ और नीमके पत्तेके रसकी २ दो भावना देकर ३ तीन रत्ती की गोली बनाना। मात्रा ३ से ६ गोली प्रातः पानीसे देनेसे पानी लगा हुआ मनुष्य अच्छा होता हैं और पानी लगे ऐसे स्थानमे रहनेवाला इसका सेवन करता रहे तो पानी नहि लगता।

दुर्जल हर मिश्रण—अपराजिता गुटिका तोला २, वृद्धि वाधिका वटी तोला २, लोह पर्पटी तोला १, अग्नितुंडी तोला २ साथ पीस रखना। ६ से ८ रती प्रातः पानीसे देना।

आरोग्य वर्धनी चूर्ण २ मासा प्रातः पानी या दूधसे लेना। पंद्रह दिन के पीछे एक मासा बढाकर तीन मासा प्रातः एक समय लेना। १ मास लेनेसे शरीर अच्छा होता है। किसीका मृदु कोठा होने से अधिक दस्त होता हो तो मात्रा कम करना।

लता करंजके बीज (कांकचिया) पिंगिरी अतीस जटामांसी हरड प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर साथ कूट २ से ४ मासा पानीसे लेना।



ब्रध्न वदगांठ बावलाई

शरीरके अवयवोंके सांधोंमें होनेवाली ग्रन्थी गांठ

कारण—वदगांठ प्रायः चांदी गरमीके दरदीको अथवा उपदंशका विष शरीरमें रह गया होतो होती है। साथलके मूलमें कम्मरके नीचे साथलका प्रारंभ होता है उस संधिमें प्राय होती है। चांदी गरमी उपदंशके साथ होनेवाली वदगांठ प्रायः पकती है। उसमें पीडा ज्यादा होती है। इसके साथ बुखार भी रहता है। कम्मरके नीचेके किसी भागमें चोट लगनेसे भी यह गांठ होती है। उसमें बुखार भी रहता है। अवयवमें पीडा कम होती है वैसे इसके साथ हुई गांठ भी कम होती हुई मिट जाती है। अति विषयसे जननेंद्रिय पर जखम या सूजन होनेसे लिंगमें तीक्ष्ण पीचकारी मारनेसे औरतोंको गुह्य इन्द्रियमें सूजन होनेसे संधिवातसे इस प्रकार अनेक कारणोंसे वदगांठ याने साथलके मूलमें ग्रन्थी होती है। यह ग्रथी काखमें भी होती हैं। उसे बांवलाइ कहते हैं। उपदंशके कारण भी कई वख्त काखमें ग्रन्थी होती है। इसका और काखकी गांठ-बांवलाइका उपचार समान है।

वदगांठसे या अन्य कारणोंसे छातीकी एक ओर वात पित्त प्रधान ग्रन्थी गांठ होती है उसे हेयाडोढी कहते हैं। इसका उपचार भी वदगांठकी तरह किया जाता है।

जिस जगह वदगांठ या बांवलाइ साथलके मूलमें, काखमें या अन्य स्थानमें गांठ होनेकी हो उस जगह दबानेसे या विना दबाये दर्द होता है धीरे धीरे बडी होकर लालीलिये या चमडीके स्वाभाविक रंगकी होती है और पीडा करती है। रोगी कमजोर हो [illegible] और पीडा बढती है। गांठ पकनेपर आती है जब ठंड लगकर बुखार आता है। दाबनेसे पस-परु हुआ मालूम होता है पकनेके पीछे बीचमेंसे फूटती है। कई वख्त एकसे ज्यादा गांठे निकलती हैं पकती हैं फूटती हैं।

पथ्यापथ्य—गांठ निकल न आयी हो जबतक लेप शेक आदि उपचारसे [illegible]ठा देनेका उपाय करना। बैठे नहि जब औषधसे पकाकर फोडनेका उपाय करना। आवश्यकता होतो शस्त्रसे छेदा देकर फोडना। गर्म जलका या कपडेके गोटाका शेक करना। रोगीने चलना फिरना नहि आराम करना। प्रारंभमें जुलावकी दवा लेकर ५-७ दस्त हो ऐसा करना पीछे हमेशा एकदो दस्त और पिशाब साफ आवे ऐसा करना। जव चना मुंग चावल बाजरी दूध घी करेला ककोडा परवल तुरिया मेथी चौलाइकी भाजी लशुन धनिया जीरा मीठानीम (कडीनीम)

कालीमिरच अदरख सेंधानोन मधुरे-मीठा पदार्थमे सहद गुड इत्यादि पथ्य है।
खट्टा पदार्थ नमक लालमीरच अचार बजारकी मिठाई खांड शक्करकी चीजें
कम खाना ।

ग्रन्थ नाशन रस—पारद तोला १०, गंधक तोला २०, मंडूर भस्म
तोला १०, कचनारकी छाल तो १०, अपराजिताका मूल कायफल गिलोय
नीमोलीकी गिरी हरड पारीसपीपलका फल सोंठ पीपल काली मिरच कुटकी वायबिडंग
चोपचीनी प्रत्येक चार चार तोला गूगल तो २०, शिलाजीत तो १० सब साथ
मिलाय घी तोला २० डाल कूट कर पानीसे तीन रत्तीकी गोली बनाना।
२ से ६ गोली पानीके साथ देना सब प्रकारकी गाठे ग्रन्थियां मिटती है।

ग्रन्थहर मिश्रण—लोह पर्पटी सर्वेश्वर पर्पटी अमृता गूगल कांचनार
गूगल आरोग्य वर्धनी चूर्ण प्रत्येक एक एक तोला साथ मिलाकर दिनमे
दो दफे ४ से ५ रत्ती कल्याण घृतसे, दूधसे या शहदसे लेना ।

ग्रन्थ हर मलम—पारद गंधक सिंदूर रेवदचीनी असगंध सहंजनेका बीज
सफेद सरसो प्रत्येक दस दस तोला राल पांच तोला, मोम १० तोला, नीमोलीका
(निम बीजका तेल) करंजका अथवा तिलका तेल तो. ४० सबको विधिवत
मल्हम करना । चाहे जिस प्रकारकी गांठ पर लगानेसे बैठ जाती है दर्द पीडा
मिटती है । गांठ फूटनेके पीछे भी यह मलम लगानेसे रूझ आती है ।

१ लेप-सफेद सरसों सरसा (शिरीष) की छाल अलसी सांभरसम
समभाग मिलाकर पानीमे मिलाय गर्म कर पोटीस रखना । फूट जाती है ।

२ लेप मुरगीकी चरकको या पारावतकी चरकको शहदमे मिलाय लगाना।

३ केशरादि गोली अथवा कस्तूर्यादि गोली उपदंश रोगमे बतायी हुई
२ से ४ गोली घी या दूधसे खडी ही निगल जाना चाबना नहि या पीस कर लेना
नहि उपर दुध पीना दिनमे १ समय लेना ।

४—आरोग्यवर्धनी चूर्ण १ से २ मासा तक प्रतिदिन पानीसे देना उपर
नीमकी छालका पानी पिलाना ।

५ फूटनेके पीछे हमेशां रीठेके पानीसे अथवा सोहागा मिलाया गर्म जलसे
अथवा नीमके पत्तेको उबालकर उस पानीसे धोते रहना और जात्यादि घृत अथवा
रोपण मल्हम आदि लगाना ।



मेद वृद्धि चरबी वढना मेदो रोग

आस्यासुख दिन निद्रा व्यायामात्यंत कफकर पदार्थैः ॥
अति मधुर स्निग्धाद्याहार विहारैर्विवर्धते मेदः ॥१॥

रस संहिता

कारण—शारीरिक परिश्रम व्यायाम–कसरत नहि करनेवालों को बैठे रहने की आदत या व्यवसाय वालोंको, चरबी बढती ह । दिनमें सोनेसे, स्निग्ध पदार्थ ज्यादा खानेकी आदतसे मेद बढता है । चरबीसे स्रोत रुक जानेसे रक्त मांस आदि धातुओंका पोषण कम होनेसे चरबी बढती है इस मनुष्य शारीरिक काम करनेमें प्रायः अशक्त होता है ।

चिन्ह—चरबी शरीरके कइ अवयवों में जमती हैं खास कर चमडीके नीचे होती है । पेटमे उसका जमाव ज्यादा होता हैं । चरबीवालोंको चलते फिरते शारीरिक काम करते दम चढता है । तृषा लगती है । छातीमे घबराहट होती हैं । निंद अधिक आती है । पसीनेमे वदवू रहती है । वह मनमे क्षीण हिंमत रहित स्त्री संगमे अशक्त होता है । चरबीसे वायुको शरीरमें फिरनेका मार्ग रुक जानेसे वायु प्रायः उदर आमाशय पक्काशयमे ज्यादा रहनेसे जठराग्निको बढाकर खुराकको सुखा देता है, इस कारण रोगीको खुराककी इच्छा होती है । चरबी और मांस बढनेसे पेट कुला स्तन आदि अवयवे मोटा–स्थूल और बेडोल बनता है । चरबी वालोंको कुष्ठ रतवा वीसर्प भगंदर प्रमेह बवासीर हाथीपग आदि रोग होना संभव हैं ।

पथ्यापथ्य—पुराना चावल मुंग कुलथी केदरा कांग हुक्का वा धूम्रपान जव गेहुं चना उपवास कठिन शय्या श्रम चिंता स्त्रीसंग मुसाफरी जागरण वेगन मेथीकी चोलाइकी भाजी सोंठ अदरख कालीमिरच लालमिरच हींग छाछ आदि हितकारक है ।

लोह रसायन—पारद तोला ८, गंधक तोला १६, शुद्ध मैनसिल तोला ४, स्वर्णमाक्षिक भस्म तोला १६, शिलाजीत तोला २४, लोह भस्म तोला ८०, अभ्रक भस्म तोला ८, ताम्र भस्म तोला ४, वायविडंग खोरसार चित्रक मूल भीलावा पलाश मूल सफेद आंकका मूल सफेद फुलकी पुनर्नवा थोवची गोरखमुंडी भांगरा विधायरा बीज गिलोय अग्निमन्था मूल रास्ना सफेद मुसली शतावरी मैनफल जटामांसी मूलोण्ठका मूल हरड बहेडा आंवला सोंठ पीपर कालीमिरच प्रत्येक चार

चार तोला सबको विधिवत मिलाकर त्रिफलाके क्वाथकी भावना देना घोटकर रखना। मात्रा १ से २ मासा शहद घृतसे अथवा दूधसे देना।

लोह रसायनं

जम्बूरसे पक्व लोहं भस्म स्यात् पलविंशतिः।
द्विपलः पारदो गंधश्चतुष्पल प्रमाणतः।

मनःशिला पलैका स्यात् माक्षिकं च चतुष्पलम्।
शिलाजतुः पट्पल स्यात् अभ्रकं च च पलद्वयम्।

ताम्रभस्म पलैकं स्यात् विडंग चोरसारकः।
वन्हिर्भल्लातकं श्वेतसूर्यमूल पलाशकम्।

पुनर्नवा सोमराजी मुंडिका केशराजकः।
कुष्मास्य बीजानि गुडूच्यतिवला तथा।

रास्ना वरी तालमूली मदन च शतावरी।
जटामांसी यष्टिमधु हरीतकी बिभीतकः।

फलमामलको जात शुंठी मरिच पिप्पली।
प्रत्येक पलमात्र स्याद् द्रव्यं सूक्ष्मीकृत शुभं।

समिश्रय विधिवत् सर्वं त्रिफला कषायभावितं।
मेदोरोगहरं वल्यं वृष्य लोहरसायनम।

कामलायां पाण्डु रोगे शोथेर्शसि भगंदरे।
देयं पट्टरक्तिकामात्र प्रातः सायं भिषग्वरैः।

॥रस संहिता॥

मेद: शोषो रस—पारद तोला ८, गंधक तोला ८, लोह अभ्रक ताम्र प्रत्येककी भस्म, रस सिंदूर प्रत्येक तोला ४चार, शिलाजीत तो १२, गुग्गल तो. १६, कुटकी २०, चित्रक गिलोय वायवीडंग नागरमोथ गिर्‌ंटी बीज निसोथ कुष्ठ अमलतास नमक सेंधानोन प्रत्येक तोला चार सब साथ मिलाय नीमके पत्तोंको पीस इसके रससे गोली रती २ की बनाना २ से ४ गोली पानीमे देना। २ से ३ मास सेवन करनेसे चरबी कम होती है। आतो के रोग नोग चढना उदावर्त वायु पेट चढना कब्जी बवासीर पिशाबको रुकावट आदि रोगमें भी लाभ होता है।

स्थौल्यापकर्षण तेल—निसोथ गिलोय सहंजनाकी छाल लोध्र सफेद चंदन अडूसो छाल शिरीष छाल हरड नीमके पान अनारकी छाल कुष्ट बहेडा आंवला अमलतास तुलसी हलदी अमियाहलदी बीली मूल प्रत्येक तोला ८. कूटकर पानीमे भिगे कर उसमे बकरीका दूध तोला २०० डाल १२ घंटा रहने देना। पीछे उसमे ८०० तोला तिलीका अथवा सफेद सरसोका तेल डाल पकाना। पानीका भाग जल जाय बल १२ घंटा स्थागशीत होने देना। पीछे कपडछान कर लेना। यह तेल १ से २ चंमच पिया जाता है और शरीरको मोलीस करना चरबी कम होती है।

१. आरोग्यवर्धनी गोली २ से ४ शहदके पनीसे लेनेसे चरबी कम होती है। दो तीन मास पर्यंत लेना चाहिये। शहद तोला २॥ मे पानी तोला २० डालकर पीना।



शीतपित्त उदर्द कोठ उत्कोठ शोलस

कारण चिन्ह—आहार विहारकी अनियमिततासे उत्पन्न यह रोग होता है। इस रोगमें सारे शरीरमें खुजली आती है साथ हि सारे शरीरमें चांभा उभड़ आता है। खुजलनेके पीछे उस स्थानमें जलन होता है और एक दो दिनमें उपचारसे या वैसे हि बठ जाता है। फिर चार आठ पन्दरा दिनमें उभट आता है इस प्रकार हमेशा क रहता है। उदर्द और कोठमें चांभा ज्यादा उभड़ आता है और उत्कोठमें खुजली के साथ जलन भी होता है।

शीत पित्त शमनी वटी—पारद गंधक शुद्धभस्म ताम्र भस्म इंद्रायनका मूल इंद्रायणका फल काली मीरच पीपल सोंठ गुगल प्रत्येक दस दस तोला सोहागा तोला ८ मूलेठी मूल महूडाका फूल गीलोय हल्दी ममाशा हारपेता सफेद चंदन अजमोद लशन अरणी मूल प्रत्येक तोला पांच सब साथ मिलाकर निगुंडी के पत्ते भांगरा और हल्दीको दो दो भावना देकर २ रत्तीकी गोली बनाना। ३ से ४ गोली पानीमें देना। महानारायण तेल महामरिचादि आदि तेल मालीश करना। एक मास सेवन करनेसे यह रोग मिटता है।

शीतपित्तहर मिश्रण- शीतपित्त शमनी गोली आरोग्य वर्धनी गोली विष तिंदुकादि वटी धवेश्वर पर्पटी अमृता गुगल सब समान भाग लेकर कूटकर रखना ८ से १० रत्ती पानीमें देना। एक मास सेवन करनेसे यह रोग मिटता है।

शीत पित्तहर कषाय—गिलोय, धमासा, इन्द्रायणका फल, अघायन नीमके पत्ते अनीस, अजवायन अजमोद कोकी मिरच पीपल अरणीका मूल लहसन करंज बीजकी गिरी सब समान लेकर कूट कर १ से २ तोलाका कषाय कर अकेला अथवा किसी औषधके उपर पिलाना और शरीर पर मर्दन करना।

१ कायफलके चूर्णको पानीमें पीस गरम जलमें मिलाय शरीर पर मर्दन करना।

२ द्रोणपुष्पी (कुम्भा)के पंचांगको पीस शरीरपर मर्दन करना, और धुंआ देना

३ जीरा हल्दी वच इन्द्रायणफल कालीमिरच सममाग कूटकर २ से ४ माशा पानीमें देना।

४ सफेद सरसों हल्दी चकवडके बीज तिल सममाग कूट सरसोंके तेलमें मिलाय सारे शरीर पर मर्दन करना।

५ छोटी हरड़का चूर्ण १ से २ माशामें एक माशा पुराना गुड मिलाकर खाना।

विसर्प—रतवा

कारण—खट्टे नमकीन अतिउष्ण गुणवाले पदार्थ खानेसे अनियमित आहार विहारसे गंदेमकानमे रहेनेसे पिल जन्तुका दंशवोसर्प वाले रोगीका चेप लगनेसे ऐसे अनेक कारणोसे यह रोग होता है। यह एक प्रकारकी सूजन है। वह एक जगह उत्पन्न होकर जल्दीसे फैलता हैं। और चमडीको लाल करता है। इस लिये इसे लालवात रतवा रक्तवात कहते है।

वात विसर्पमे—वात ज्वरसे मिलते चिन्ह होनेके साथ सूजन मस्तक छाती आदिमें शूल, चमडीके उपर या अंदर अग्निका तणखो गिरता हो चिराता हो, सुइ जैसी चीज धूसता हो ऐसी पीडा होती है।

पित्त विसर्पमे—पित्त ज्वरसे मिलते चिन्हके अलावा शरीरके एक भाग में उत्पन्न होकर दूसरे भागमें फेलता हैं। चमडो अत्यंत लाल होती हैं।

कफ विसर्पमे—कफ ज्वरसे मिलता चिन्हके अलावा एक स्थान पर उत्पन्न होकर खुजली ज्यादा आती है। चमडी लाली लिये होती है।

आग्नेय विसर्पमे—ज्वर वमन मूर्च्छा दस्त तृषा चक्कर मंदाग्नि हड्डीयों में दर्द होता है। सारे शरीरमे अग्निदाह जैसी जलन होती हैं। शरीरके जिस जिस भागमें फैले वह भाग कुछ स्याम आसमानी रंगके साथ एकदम लाल होता है। अग्निसे जले माफीक फुल्ले उभड आता है। इसकी गति ज्यादा होती है। और हृदय तक फैलता है। श्वास बढता है। निंद कम होती है। शरीरका भान कम होता है। रोगी तडफडता है। बेचेन रहता। कहिं सुख नहिं पाता।

ग्रन्थी विसर्पमे—कफसे रुका हुआ वायु बिगडे हुवे खून और कफको चमडी नाडीयां स्नायु मांस तक खींचकर गोळ लवगोळ खडबचडी ग्रन्थीयां उत्पन्न करता है। इसमे सणका शूल सुइ धूसती हो ऐसी पीडा होती है। इसकी पीडा से ताप चढता है। साथ श्वास खांसी हिचकी वमन मूर्च्छा आदि होते है।

आगन्तुक विसर्प—चोट लगनेसे जनावरोके नख दांत लगनेसे विषारि जंतु के दंशसे शस्त्रका घा लगनेसे वंसर्पका ओपरेशन करते वक्त वह शस्त्र अपने शरीर पर लग जानेसे विसर्प उत्पन्न होता है। इसमे प्रारंभमे वायु कुपित होकर खून के साथ पित्तको मध्यको जगह लाकर वीसर्प उत्पन्न करता है। इसमे छोटी छोटी फुन्सीयां होती है। सूजन शूल ताप असह्य वेदना होती है। नाडी क्षीण चलती है। बीच सुखकर काली होती है और अंदरसे सडता है। यह आगन्तुक वीसर्पको तात्कालिक उपचार न होवे तो रोगीका मृत्यु थोडे दिनमे हो जाता है।

पथ्यापथ्य—रोगीको अच्छे स्वच्छ हवावाले कमरेमे रखना । पवन अच्छा लगे तो पखासे पवन डालना । उबाल कर ठंडा किया हुआ पानी पिलाना । कपडा बिछाना हमेंशा गर्म पानीसे धोते रहना । यह आक्रमक चेपी रोग है सो किसी रोगसे पीडित रोगीको इस आदमीसे दूर रखना । कमरेमें दो तीन बार धूप करना सादा हल्का खुराक ज्यादा देना । इसमें फस्त खोलकर खून निकालना और आवश्यकता हो तो शस्त्र कर्म करना ।

कालाग्नि रुद्र रस—पारद तोला ५, गंधक तोला १०, अभ्रक भस्म तो. ६, रौप्य भस्म तो. ४, वशद भस्म तो. ५, बछनाग शुद्ध तो २, मूलैठी मूल तो ५, तज इलायची लोंग हरड बहेडा आंवला हलदी शक्कर वांझकटोलाका कंद, चित्रकछाला वायविडंग चिरायता मजीठ भगलिंगी प्रत्येक तीन तीन तोला, सबकूट मिलाय गिलोय द्राक्ष जलपिपली (रतवेलियो) प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली शहदसे देना । उपर पुनर्वा मूलका क्वाथ पिलाना । सब दोषका वीसर्प मिटता है ।

वीसर्प हर क्वाथ—धमासा गिलोय वाला सफेद चंदन नीमकी छाल मजीठ गुगल कमल फूल हरड जलपीपली (रतवेलीयो) अमलतास सम भाग लेकर कूटना । १ से २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

लेप-१ शीगोडा शेवाल कमल पुष्प देवदार चंदन महूडेका फूल बलामूल जलपीपली समभाग कूटकर दूधमे पीस लेप करना । वातवीसर्पमे लाभ हो ।

लेप—२ रास्ना, चंदन लताकरंज के बीज, हलदी, भांगरा, वाला, जलपीपल समभाग कूट पानीमे पीस लेप करना ।

लेप ३ रास्ना कमल पुष्प देवदार चंदन महूडेका फूल बलामूल जलपीपली समभाग कूट दूधमे पीस लेप करना । वात वीसर्पमे लाभ हो ।

लेप ४ हरड बहेडा आंवला पद्मकोष्ठ वाला रक्तचंदन कनेरकी जड जलपीपली अनंतमूल दर्भमूल समभाग लेकर पानीमे पीस लेप करना ।



नारु-स्नायु वालाका रोग

कारण चिन्ह—यह रोग प्रायः पीनेके पानीमे इस रोगके जंतु होनेसे होता है। कई थियार पानीके कुआमे यह जंतु ज्यादा उत्पन्न होते हैं। शरीरकी वात पित्त कफ प्रकृतिके अनुसार इस रोगमे भी चिन्ह मालुम पडते है। हाथ पांवमे शोथ होकर छिद्र पडता है, उस जगहके स्नायुमेसे व्रण द्वारा धागा जैसा गोल जंतु उत्पन्न होकर धीरे धीरे बहार निकलता है। यदि वह धागा—(डोरा) गलतीसे टूट जाय तो पीडा बढ जाती है। पकनेसे शोथ मिटकर दूसरी जगह निकलता है। बाहूमे या ऊंघामे नारु टूट जाय तो हाथ पांवमे खोट आती है, लंगडापन मालुम होता है। वात प्रधान हो तो काली छायावाला सफेद डोरा होता है। पीडा करता है। पित्त प्रधान होतो पीलापन लिये होता है और दाह जलन होती है। कफ प्रधान होतो सफेद मोटा-स्थूल धागा होता है।

पथ्यापथ्य—जिस गांवमे यह रोग उत्पन्न होता हो वहांके जिस जलाशयसे पानी पिया जाता हो उस कुआसे जल खींच कर निकाल देना और उसका संशोधन करना। उस कुआमे निमकी छाल कुचल कर डालना। पानी उबालकर दो तीन दफे कपडछान कर पीना। आहार विहार तबीयतको अनुकूल हो वैसा रखना। प्रारंभमे जुलाब देना, पीछे हमेशा दो एक दस्त होता रहे वैसा साधा विरेचन लेना।

स्नायु जयंती वटी—पारद गंधक रसिंदूर रौप्यभस्म लोहभस्म अभ्रक भस्म प्रत्येक तोला ८ आठ, वायविडंग गोरखमुंडी चोपचीनी लताकरंजबीज (कांकचिया) इन्द्रजौ हरड इन्द्रायणका फल अथवा मूल कायफल प्रत्येक चार चार तोला सब साथ कूट गोरखमुंडीके क्वाथ मे गोली दो रत्तीकी बनाना। २ से ४ गोली पानीसे देना नारु निकल जाता है। और दूसरा शरीरमे उसका जंतु हो वह भी मर जाता है।

स्नायु शूलारि रस—पारद गंधक रौप्य भस्म साबरशींग भस्म सुवर्ण माक्षिक भस्म अतीस सागरगोटा (कांकचीया) चंदन गोरखमुंडी वाला वायविडंग चोपचीनी हल्दी दारुहल्दी [illegible] सोंठ अजमोद अजवायन हरड शतावरी असगंध सारिवा समभाग लेकर [illegible] कूट गोरखमुंडी के क्वाथ की भावना देकर ३ रत्ती की गोली बनाना [illegible] ६ गोली पानीसे देना।

सामान्य उपचार

१ अफीम नागरमोथ भारंगी सोंठ पीपल बहिडा समभाग कूट कर २ से ४ मासा पानीसें देना।

२ महाबला (खपाट) के पत्तों को पीस पेटीस बांधना।

३ बबुल के बीज को गौमूत्र मे पीस लेप करना।

४ पाताल गारुडी (वेवडी) का मूल २ से ४ मासा पीस कर पिलाना।

५ निर्गुंडी का पान १ तोला पानी मे पीस पिलाना।

६ पारेवा (पारावत) की चरक को पीस ६ से ८ रती गुड के साथ खिलाना।

७ बेंगनको अग्नि पर पकाकर (भडथु करी) उसमे दही मिलाकर पीस कर पोटीस की तरह लेप करना।

८ मिर्चो के बीज और गेहु समभाग पीस उस आटाकी पुडी बनाकर घीमे तल कर गुडके साथ खिलाना दूसरा कुछ खुराक देना नहिं तीन दिन मे नारु निकल जाता है।

९ कुक्कुट की चरक तोला १ गिलोय तोला २ गुड तोला ३ साथ पीस २४ गोली बनाना हमेशां ३ समय एक एक गोली पानीसे देना।

१० अफीम तोला ०॥ हींग शुद्ध तोला ०॥ साथ धतुरेके रसमे पीस बांधना।

११ कायफल तोला पांच को पीस पानी से बडी पोटीस (ठोपरी) कर बांधना डेढ दो घंटा के पीछे पोटीस निकाल कर स्नायु को धीरे धीरे खींचना. टूटे नहि यह समाल रख धीरे धीरे खींचना तो सारा धागा डोरा निकल जायेगा।

१२ एरंड पत्र को पीस उसका रस तोला ५ मे घी तोला २॥ मिलाकर पिलाना बाला निकल जाता है।

१३ नारु का शोथ हुआ हो उसको चारो ओर गेहू के आटाकी पाल कर उसमे तमाखुके हरे पानका रस भरना अथवा वह रस कांचकी नलीसे बुंद बुंद कर नारु के छिद्र मे डालना, दो एक घंटा मे सारा डोरा निकल जायगा और अंदरके जंतु मर जायगा।

१४ आकडा पीलापान १ और नागर वेलका पान १ विना कथा चूना लगाया दोनो चावकर खिलाना तो वाला निकळ जाता है ।

१५ धतुराका पान तोला ५ हिंग तोला ०॥ साथ पीस बाला पर बांधना तीन दिनमे निकल जाता है ।

१६ नदीकी छीपनी (शुक्ति) को जलाकर भस्म करना, अजवायन (अजमा) पठाना और बिम्बी (टींडोरी घोळी) का पान तीनो समभाग पीस लेप लगाना.

१७ करेला का मूळ पता फल पंचांग को पीस पोटीस बांधना ।

१८ नवसार पीस ३ से ४ मासा गुड के साथ मिलाय खिलाना उपर खुराक मे मुंग चावलकी खिचडी घी खिलाना ९ दिनमे वाला निकल जाय,

१९ इगोरिया (हंगुदी) की जडको खट्टी छाछ मे पीस गाढा लेप करना था पोटीस की तरह बांधना ३ दिनमे बाळा निकल जाय ।



हांथापांव—श्लीपद

कारण चिन्ह—जिस प्रदेशमे वर्षा-बारीश बहुत होता हो और ऋतु हमेशा भेजवाली रहती हो औसे प्रदेशमे यह रोग अधिक मालुम होता है। प्रारंभमे बुखार आकर नाभिके नीचेके भागमे या दो वंक्षु शोथ होकर वह पांवमे उतरता है पीछे वह बढता हुआ स्थिर होता है। यह हाथ या दूसरे अंगोमे भी होता है। यह पकता है जब पीड़ा करता है। वल्मीक (राफडा) जैसा हो स्थान स्थान पर ग्रन्थियां हो, कांटा जैसे अंकुर चारों ओर फैलाकर स्राव निकलता हो, खुजली आती हो वह असाध्य है।

पथ्यापथ्य—पुराना चावल कुलथी मुग जव चना लसुन सहंजना वेंगन करेला कडुआ पदार्थ लंघन जुलाब जौका खुराक ज्यादा रखना सरसोंका तेल और कुमंका मांस हितकारक है।

श्लीपद गज केशरी—पारद गंधक रस सिंदूर अभ्रक भस्म ताम्र भस्म टंकण प्रत्येक तोला ६ छह, सोंठ पीपल कालीमीरच बच गोरख मुंडो चोपचीनी लोंग निसोथ कचुरा पाठा (कालीपाठ) वायविडंग प्रत्येक तोला ४ चार, चित्रक भांगरा अदरख गोरखमुंडी प्रत्येककी एक एक भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोली करना। मात्रा २ से ६ गोली पानीसे देना। दो चार मास तक सेवन करनेसे यह रोग मीटता है।

श्लीपदारि लोह—लोह भस्म, तोला ४० चालीस, पारद गंधक अभ्रक ताम्र, भस्म प्रत्येक तोला ६ छह, गुगल तोला २० बीस, निमबौजकी गिरि वकाइन नीम बीजकी गीरी हरड बहेडा आंवला शिलाजीत चित्रक निसोथ अड्साकी जड अरणीमूल बच सोंठ पीपल कालीमिरच गोरखमुंडो जटामांसी प्रत्येक तोला ४ चार कूटकर भांगरा, निगुंडी, कांचनार, गोरखमुंडी, प्रत्येककी एक एक भावना देना। ३ रत्तीकी गोली करना २ से ३ गोली पानीसे देना। ३ से ६ मास तक सेवन करनेसे यह रोग मिटता है।

नित्यानंद रस—पारद गंधक कांस्य भस्म बंगभस्म लोह भस्म ताम्रभस्म तुत्थ भस्म शुद्ध हरताल शंखभस्म कौडी भस्म प्रत्येक चार चार तोला, सोंठ पीपल कालो मिरच हरड बहेडा आंवला वायविडंग, चवक पिपलीमूल हपुषा (पळासकी) बच कचुरा पाठा देवदार इलायची विधायरा (वृद्धदार) प्रत्येक ४ चार तोला पंच लवण पांचो मिलकर बिस तोला साथ मिलाय, निसोथ चित्रक

और दंती मूलके क्वाथसे एक एक भावना देना और पीछे हरडके क्वाथमे गोली ३ रत्ती प्रमाण करना। २ से ३ गोली पानीसे देना। सब दोषका सारे शरीरमे फैला हुआ श्लीपद मिटता है। यह औषध कंठमाल गंडमाला ग्रन्थी अर्बुद अन्त्रवृद्धि गुदाके रोग कृमि बदगांठ कालका बायबाइ आदिमे भी उत्तम गुण करता है। जठराग्नि प्रदीप्त होता है। भूख लगती है बल बढाता है।

सौरेश्वर घृत—तुलसी देवदार सोंठ पीपल कालीमीरच हरड बहेडा आंवला पंच लवण वायविडंग चित्रक चवक पिपलीमूल गूगळ हपुषा बच यवक्षार पाठा कचूरा इलायची धीयावरा प्रत्येक एक एक तोला पीस कल्क बनाकर पहीला पानी तोला ६४ धनियाका क्वाथ तोला ६४ दश मूलका क्वाथ तोला ६४ डालना और उसमे घी तोला ६४ पकाना पानीका अंश जल जाय जब कपडछान कर रखना। हमेशा २ तोला घृत खिलाना सारे शरीर मे फैलाहुआ मांस रक्त मेद मे रहा हुआ श्लीपद मिटता है। रसौली कंठमाल अन्त्रवृद्धि वृषणवृद्धि अर्बुद ग्रन्थी आदिमे उत्तम गुण करता है।

१ लेप—दशांग और दोषघ्नलेप मिलाकर पानी मे पीस लेप करना

२ देवदार और चित्रक समभाग कूट पानीसे लेप करना

३ सफेद सरसो और सहजना छाल गोमूत्र से पीस गर्मकर लेप करना

४ मजीठ मूलेठी मूल रास्ना पुनर्नवा तिलपर्णी (तलपर्णी) चकमर्द बीज समभाग कूट गर्मकर लेप करना

५ कांचनार छाल मजीठ धिधावरा समभाग कूट १ तोला का क्वाथ नित्य पिलाना

६ करंज बोर ढाककी छाल मुलैठीका मूल हलदी गोरखमुंडी काला हंसराज (हंसपदी) कूटकी समभाग कूट १ तोलाका क्वाथ पिलाना।



हडकवा पागल कुत्तेका दंश

कारण—गद्धेका कुत्तेका या घेडाका सडा हुआ मांस खानेसे कुत्तेको सियालोको या शृगाल (शियाळ) को हडकवा चलता है। इसके काटनेसे मनुष्यको गाय भैंस घोडा, वगैरे जनावरों को भी हडकवा चलता है। कुत्ता हडकया न हुआ हो एसे अच्छे कुत्ते के करडसे भी कभी हडकवा चलता है। हडकाया कुत्ता अपना पुच्छ पीछे के दो पांवके बीच रखे इधर उधर दौडता है, भसता रहता है। शहरोंमे अस्पतालोमे इसका रसी (इन्जेक्शन) देते है यह तात्कालिक उपाय है परंतु छोटे गामोंमें जहां यह सुलभ नहि है वहां तात्कालिक उपाय करना। कुत्ता काटने के पीछे पंधरा बीस दिनमे या कभी दो चार मास के पीछे भी हडकवा होता है। गाय भैंसको कुत्ता काटा हो और उसका दुध पीनेसे भी हडकवा चलता है।

चिन्ह—प्रारंभमे बेचेनी अनिद्रा मस्तक फिरना चक्कर आना सांधेमे दर्द इत्यादि होते हैं। दिन बीतने पर मुख मुद्रा भयभीत होती है, गरदनमे दर्द होता है, मुखमे लाग पडती है। खुराक और पानी गलेसे मुश्कीलसे उतरता है। दूसरे तीसरे दिन तृषा बहुत लगती है फिर दरदी पानी नहि पी सकता। पानी पीनेसे पानीके स्पर्शसे पानीमे या दर्पणमे मुख देखनेसे दूरसे पानीका आवाज सुननेसे आंचकी की माफक रोगी कंप जाता हैं इससे इसरोगका नाम जलत्रास कहा जाता है। पीछे तुफान करता है औरको दांतसे काटनेकी चेष्टा करता है पीछे बेशुद्ध होकर मरण पाता है।

जिस जगह दंश हुआ हो उस जगह के आसपास की चमडी काटकर उसमे लाल मिरच का चूर्ण दाग दाग कर लगाना अथवा अग्नि दाह करना। रोगी खुराक न ले सके तो गुदासे पिचकारीसे प्रवाही खुराक शिरीषासव या औषधको प्रवाही बनाकर गुदासे पीचकारी से चढाना।

प्राचेतस चूर्ण—सप्तपर्ण (सातिण) कुडेकी छाल नीमकी छाल नागरमोथ कुष्ठ मजल मूल लोध्र रौप्य माक्षिक समसम भाग लेकर कूटना ०॥ से १ तोला तक गर्मपानीसे देना १ मास तक देते रहना।

श्वान विषहर चूर्ण—नागर मोथा (कांकचयानां मींज) सप्तपर्ण बकम छाल या मूल (वायवरणो) इन्द्रणी निम्बबीजकी गिरी कुटकी चिरायता नागरमोथ गिलोय अमलतास बाला कचूरा छोटी कटहरी मूल अपामार्ग पचांग सेंधानोन

कालीमिरच पीपल सोंठ पीपरीमूल सब समभाग कूट ०। से ०॥ तोला पकाके चावलके पानीसे देना ।

श्वान विषहर क्वाथ—छोटी कटहरी मूल नारीसपीपलका फल पाताल गरुडोका पंचांग (वेनडो) अपामार्ग मूल सतावरी कुटकी ढाकका मूल गुलरकामूल आकका मूल सब समभागसे कूट पांच तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

विष प्रकरणमे कहे हुए अजितागद भीमरुद्र रस मृत्युपाश छेदी घृत आदि औषध उचित मात्रामे देना ।

१ ढाकका मूल तोला १० का क्वाथ पिलाना ।

२ महा सुदर्शन चूर्ण तोला ३ का क्वाथ कर भीमरुद्र रस ४ से ६ रती देना । १ मास तक पिलानेसे श्वान विष नष्ट होता है ।

३ बैठा छोटा गुलर काकोदुंबरीका (वैठी उंबरी) का मूल तोला पांचमे धतूरेका बीज एक आनी भर दोनोको पकते हुए चावलके पानीमे पीस पिलाना २१ दिन देनेसे श्वानविष नष्ट होता है ।

४ **इन्द्रायण**—पंचांग तोला ४, कर्कोटकी मूल (कंकोडो मूल) तोला ४ दोनो पीस पिलाना । ७ से १४ दिन तक पिलाना ।

५ शुद्ध कुचलाका चूर्ण ६ रती पुरुषमूत्र तोला १० के साथ १४ दिन तक पिलाना ।

६ इच्छाभेदी गोली ३ से ५ गर्म जलसे देना । दस्त होकर जंतु निकल आयेगे । पीछे दूसरा औषध देते रहना और ३ से ४ दिनके पीछे इच्छा भेदीका जुलाब देते रहना ।

७ ओंगा (अपामार्ग) मूल ३ तोला पानी मे या चावल के पानीमे पीस पिलाना ।

८ सच्ची कस्तूरी रती ८, बबूलकी पति तोला ४ को पीस प्रवाही कर उसमे कस्तूरी मिलाय पिलाना ।

९ कुकडाकी चरक, आकका दुध गुड तेल सब साथ पीस लेप करना ।

१० क्वारपाठाके पानको चीर कर उसमे पीसा सेधानोन छिडक कर दंश पर बांधना ।

११ अपामार्ग मूल तोला ५ को क्वार पाठा के रसमें पीस उसमे एक दो मासा सेधानोन डाल पीस दंश पर बांधना ।

१२ कुकडाकी चरक तोला २ मे गाडजबन (मोंपावरी) तोला १० पीस कर दंश पर बांधना ।

१३ आकके दुधमे बाजरीका आटा को पीस मुंग प्रमाण गोली बनाना हडक्वा चरता हो उस मनुष्यको २ से १० गोली और पशुओको १५ से २० गोली देना ।

१४ काले तिल को पीस आकके दूधमे घोट मुंग प्रमाण गोली करना ३ से ४ गोली पानीसे देना जुलाब लगकर सेंडडो बाजरीके दाना जैसी इंडार अंडे निकलती है । ३ दिन तक देना । छोटे बच्चेको २ गोली देना । मुंग चावल की खीचडी घी डाल कर खिलाना । खट्टा नमकीन खाना नहि । दंश होनेके पीछे इसका ७ जुलाब देना हडकवा चढे नहि ।

१५ देवदाली (कुकडवेल) का बीज पहिलेदिन १, दूसरे दिन २, तीसरे दिन ३ इस प्रकार ७ दिनतक चढकर ७ वे दिन सात बीज पानीमे पीस कर पिलाना । १३ दिन खिलाना होतो तेरहवे दिन १३ बीज देना इस प्रकार प्रतिदिन चढना । २१ या ३० दिन तक भी खिलाया जाता हैं ।

१६ बेठी या खांडी कटहरी के फल शेर १ मे गुड शेर ०। मिलाय महीन पीस २ मांसाकी गोली बनाना । ३ से ४ गोली पानीसे देना ।

१७ शरपंखाका पंचांग तोला ५ पीस कर ७ से १४ दिनतक पिलाना ।

१८ समुद्रफल सचल इंद्रायण मूल हरड अपराजिता का बीज सब साथ पीस तीन रतीकी गोली बनाना ३ से ४ गोली पानीसे देना ७ से २१ दिन तक ।

१९ धतूराका बीज तोला ४ चूना तोला ४ पानीमे पीस कर दंशपर बांधना ।

२० काली मिरच मासा ३, कुकडाकी चरक मासा ३ साथ मिलाय ७ से १४ दिन तक देना ।

२१ ककोडी कर्कोटकी तोला २॥ पानी मे पीस पिलाना ।

२२ थूहर का दूध दंशपर लगाना नीमके पत्ते तोला १५ और सच्ची हींग तोला १ पीसकर दंशपर लगाना ।

२३ हडकवा चलता हो तब धतुराका पंचांग तोला २॥ को चावलके पानीमे पीस पिलाना विष्ठामे जंतु जैसे कृमि पडे ।

वृद्धि अंडवृद्धि अंत्रवृद्धि

वृषणवृद्धि सारण गांठ आंत नीचे उतरना

वृषण वृद्धि कारण चिन्ह—मूत्रनसे पानी भरानेसे चोट लगनेसे वायु करने वाली चीजे खानेसे नस फुलनेसे अति दारु पीनेसे यह रोग होता है। सुजनसे हुई हो तो गोली मे और उसके मूलमे जो डोरा जैसी नाडीओमे गोली लटक रहा है उसने दर्द होता है, वजन लगता है। गोली परका चमडीका आवरण सुजकर मोटा स्थूल होता है। अंडकोष को उठाने वाली नाडीयां देशा जैसी स्थूल मोटी होती है। इसके साथ कभी ताप वमन मलावरोध भी होता है। वृषण मे पानी भराता है तब खींच होती है, बाह्य भागकी चमडी चमकती है। अंडकोश नालीएर और श्रीफल जैसा या उसमे भी बडा होता है। अंडकोषमे खूनका जमाव होनेसे भी अंडकोश दबता है तब दावनेसे कठिन लगता है। अंदर दर्द होता है।

अन्त्र वृद्धि सारण गांठ आंत उतरना—बहुत दौडनेसे पांवमे कुस्ती करनेसे कूदनेसे वजनदार वस्तु उठाने अत्यंत जोर करनेसे भारी चीज खींचनेसे साईकलकी सफर ज्यादा करते रहनेसे आहार विहारकी अनियमिततासे यह दर्द होता हैं जब आंत अंडकोशकी कोथली मे उतरता हैं पडता उतरता है। पट्टा लगानेसे अथवा धोतीसे कम्मर बांध रखनेसे आंते उतरता नहि। उतरता हैं तब दर्द होता हैं। बच्चोको नाभि के नीचे यह दर्द होता है।

पथ्यापथ्य—अंडवृद्धि और अन्त्रवृद्धिकी चिकित्सा प्रायः समान है। वमन विरेचनादिसे पेट साफ करना। हमेशा दस्त साफ लानेको हरड ऐरंड तेल शुद्धिचूर्ण मधुविरेचन चूर्ण अश्वगोली आदि लेते रहना। नीमके पत्तेकी भाफ देना, दिव्य धुप से धुप देना। जौ पुराना चावल कुलथी बाजरी मुंग मठ उडद मेथी दाना आदि धान्य. वेंगन परवल सहजना की सींगे चौलाई मेथी की भाजी सूरण आदि शाक, लसून प्याज हिंग जीरा काली मीरच लाल मिरच नमक हलदी अदरख सोंठ आदि मसाला हितकर है। उपवास या एकाशन शक्य हो उतना करना। खांड शक्कर की मिठाई अजीर्ण करने वाली चीजे पावके मुसाफरी हानि करता है।

वृद्धिवाधिका वटी—(भै. र.) पारद गंधक लोह वंग ताम्र कास्य शंख कोडी अभ्रककी भस्म, शुद्ध हरताल तुथ भस्म सोंठ पीपल काली मिरच हरड बहेडा

आंवला वायविडंग विधारा कचूरा पिपलीमूल पाठा हवुषा (पटाशवी) वच इलायची देवदार पंच लवण सब समान भाग देना, पंच लवणका पाच भाग देना सब साथ विधिवत मिलाय पश्ची हरड के क्वाथ से गोली ७ रत्ती की बनाना, । ३ से ६ गोली पानीसे देना । अंत्रवृद्धि अंडवृद्धि मिटती हैं ।

अंडवृद्धि हर रस—पारद तोला ५ गंधक तो. १०, ताम्र कांस्य शुक्ति शंख कौडी प्रत्येक की भस्म, आंवला सोंठ पीपल कालीमिरच पिपरीमूळ बारपुंआ सागरगोटा गिरी (कांकचिया) अतीस सेंधानोन संचल इलायची देवदार प्रत्येक चार चार तोला, हरड ८ टोला सब साथ विधिवत मिलाय निर्गुंडीके पत्ते नीमके पत्ते और हरड प्रत्येककी एक एक भावना देकर दो दो रत्ती की गोलि बनाना । ३ से ६ गोली तक पानीसे देना । अंडवृद्धि अंत्रवृद्धि मिटती हैं ।

अंत्रवृद्धि नाशन रस—पारद, गंधक शिलाजित प्रत्येक दश दश तोला, गूगल १५ तोला, कुटकी २० तोला, सोंठ, पीपल, काली मिरच, चित्रक चवक कुष्ठ हरड, देवदार मंडार्गी वायविडंग, गोरखमुंडी, सेंधानोन संचल निसोथ क्वाखार प्रत्येक छह छह तोला देकर साथ मिलाय कटहरी के फलको और हरडकी एक एक भावना देना । मात्रा ४ से ८ रत्ती पानीसे देना । अंडवृद्धि, अंत्रवृद्धि एपेंडीसाइटीस और बच्चोंको वधगावल मिटती है ।

भल्लोतरीय रस पारद गंधक अभ्रक भस्म लोह शिलाजित् काला सुरमाकी भस्म शुद्ध हरताल शुद्ध मैनशील पीपल पंचलवण सज्जीखार यवक्षार टंकण हरड बहेडा आंवला अजमोद अजवाइन वच दंतीमूल निसोथ नागर मोथ नीमके बीज पटोल विधायरा प्रत्येक एक एक तोला और धतूराका बीज दो तोला देकर सब साथ मिलाकर हरडके क्वाथकी भावना देकर रखना । मात्रा ६ से ८ रत्ती पानीसे देना । अंडवृद्धि मिटती है । इसे भल्लोतरीय चूर्ण भी कहते है वस्तुतः यह रस है ।

नोंध—इस औषधका नाम भैषज्य रत्नावलीमे भल्लोतरीय चूर्ण दिया है, वस्तुतः जिसमे पारद गंधक और भस्म आदि नहि पडते और केवल वनौषधि द्रव्य पडते हैं उसे हि चूर्णका नाम देनेकी शास्त्रीय प्रणाली है । इस औषधमें धात कनक बीजानि लिखा है इसका अर्थ शास्त्रीय प्रक्रिया प्रणालीके अनुसार सौ तोला अथवा बीजकी गिनती अर्थात १०८ [illegible] गिनकर कोई समझे ? यदि सौ तोला बीज लिया [illegible] रत्नावलीमे लिये हुए घटक द्रव्य ३५ तोला होता है [illegible] कनक बीज [illegible] लानेसे

१३५ तोलाका घण हुआ। भैषज्य रत्नावलीके संग्रहकारने इसकी मात्रा १ माशा बतायी है। उसकी मान परिभाषाके अनुसार २ माशाकी २४ रत्ती होती है। अर्थात १ दिनकी मात्रामे १६ रती कनकबीज हुआ यह बडा हानि कर्ता है। अर्थात् १०० तोला नहि लिया जासकता।

रस योग सागरमे यह पाठ देकर उनके अनुवादमे कनकबीज १०० सौ भाग बताया है यह भी योग्य नहि है शास्त्रीय पाठसे जहा भाग या संख्या बतायी हो वहां वह लेना योग्य है परन्तु अन्यत्र तौल हि लिया जाता है। अन्य ग्रन्थमे शतं कनक बीजानि के स्थानमे द्विकं कनक बीजानि लिखा है वही ठीक है। हमने यह पाठ स्वीकार कर अन्य घटक द्रव्य एकएक तोला और कनक बीज २ दो तोला लिया है। और अनुभवसे भी यह औषध उत्तम गुणकारी मालुम हुआ है। और इसमे पारद गंधक अभ्रक लोह शिलाजीत आदि पडनेसे रस अभिधान उचित है।

महालैंघवादि तेल—(भै र.) सेधानोन सनफल (मीढोल) कुष्ठ सौफ मूलामूल वच वाळा महुडा का फुल भारंगी देवदार सोंठ कायफल पुष्करमूल मेदा चव्यक चित्रक कचुरो वायविडंग अतीस निसोथ निर्गुंडी बीज मर्ली–नीली शालपर्णी बिल्वमूल अजमोद पीपल दंतीमूल रास्ना अजवाइन प्रत्येक चार चार तोला कूट कर सब व्य डूब जाय इतना पानी डलकर १२ घंटा भिगो रखना। पीछे तेल तोला १२०० बारासौ डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय पीछे १२ घंटा स्वांगशीत होने देना पीछे कपडछान कर रखना। १ से २ तोला पिलाना और मालीस करना अन्त्रवृद्धि व्रध्न अण्डवृद्धि बदगांठ उदावर्त गुल्म बवासीर प्लीहा आनाह मूत्ररोग आदि मे भी दिया जाता है।

वृद्धिहरी वटी—लोंग सोंठ चिरायता मालकांगनीबीज पीपरीमूल नागकेसर निर्गुंडी बीज प्रत्येक तोला एक एक, पारावतकी चरक तोला ५ गुड तोला ५ सब साथ कुटकर ३ रती की गोली बनाना। २ से ४ गोली पानीसे देना। अन्त्रवृद्धि अंडवृद्ध मिटे।

वृद्धिनाशन मलम—शेपगुटर तोला २० गूगळ तो २०, शिलारस इन्द्रायण के मूल एरंड बीज सोठ कोरा पारावत की चरक लाकका मूळ प्रत्येक दस दस तोला मोम तोला २० ऐरंड तेल मे पका कर मलम करना

१ लेप गोरखमुंडी एरंडी के बीज वच सफेद सरसो सहंजना की छाल सिंदूर जीरा समभाग पानी मे पीस लेप करना।

२ हरड़ रास्ना भारंगी मेंढाशींगी कचूरा शतावरी इंद्रायणमूल असगंध समभाग कूट २ से ४ माशा पानीसे देना।

३ रास्ना मुलैठी मूल गिलोय चटामूल अमलतास गोखरु मगलिंगी फल (आँखफूटामणी) समभाग कूट २ से ४ माशा पानीसे देना।

४ काली मुसली का चूर्ण २से४ माशा बैलके मूत्र से देना। ३ दिनमे आराम होता है। बैल खसी न किया हो उसका मूत्र लेना।



पथरी—अश्मरी मूत्रग्रन्थी

कारण—मूत्रका वेग रोकनेसे आहार विहारके कुपथ्यसे शराबके व्यसनसे यकृतके बिगाडसे मूत्र पिंडमे क्षार युक्त पदार्थोंके जमावसे वीर्यका आया हुआ वेग रोकनेसे कंकर या रेती वाला पदार्थ आटा विगेरे खानेसे इस प्रकार अनेक कारणोसे यह रोग होता है। कइ वर्षोंमे हाथकी चक्की प्रायः निकल गइ और मशीनकी चक्कीका आटा खानेका नसीब चल रहा है इसमे पत्थरकी चक्कीके घर्षणसे आटामे मिलती हुइ बारीक पत्थरकी रजसे भी इस रोगकी वृद्धि हो रही है।

चिन्ह—नाभि सीवन, मूत्रनलीमे दर्द हो, २ या ३ धारवाला पिशाब हो, पथरीको घीसकर निकलनेका मार्ग हो, जब चामनी जैसा गाढा अथवा बारीक कंकर युक्त पिशाब हो। पथरीके क्षोभसे क्षत-व्रण पडे तो पीडाके साथ रक्त मिश्रित पिशाब हो। **वाताश्मरी** हो तो पीडा अधिक हो। दांत कचडे, धूजे, लिंगको मर्दन करे नाभिको दबावे पिशाब बुद बुदसे निकले। इस पथरीकी सपटी काला भूरा रंगकी खरसट कांटा जैसी हो, दारू अधिक पीनेसे शरीरकी कमजोरीसे यह पथरी होती है। **पित्ताश्मरी**-ग्रन्थि वात अजीर्ण ताप अति मांसाहार आदि कारणोसे पित्त प्रकोप होकर एक प्रकारकी खटाईमे यह पथरी जमती है। यह लालीलिये पीले बदामी रंगकी होती है। **कफाश्मरी** और **शुक्राश्मरी** सफेद मोटी पोची होती है। यह सरलतासे मिटती है। मूत्राशयमे पिशाब बढता है दुर्गन्धयुक्त होता है और पस-पस पैदा होता है वह वायुसे सूक कर पथरीका रूप लेता है। वैसे हि वीर्यका वेग रोकनेमे आता हुआ वीर्यको अटकानेसे पथरी जमती है। **शर्कराश्मरी** पथरी जाती हो उस समय या श्रम आनेके पीछे उसपर दाब होनेसे या अन्य कारणोसे होती है, वायुके दाबसे-अनुलोम वायु हो जब रेती जैसी शंकरी पिशाबके साथ निकलती है। यह **मूत्राशयकी पथरी** कही जाती है। वात प्रकोप बढता है वैसे मूत्राशयमें पीडाके साथ पथरी जमा होती है। **मूत्र-पिंडाश्मरी** पिशाबमे विशेष प्रकारके क्षार तत्वोकी वृद्धि होनेसे मूत्राशयमें अथवा मूत्रपिंड-गुर्दामे अथवा मूत्रपिंडकी जमीनमे यह पथरी जमती है। पथरी बडी होने लगे वैसे गुरदाका नाश होता चलता है, जब मूत्र पिंडमे असह्य दर्द होता है। पक पस उत्पन्न होकर पिशाबके साथ निकलता है। कई वक्त उसकी आसपास गट ग्रन्थी होकर कम्मरकी पीठमे या पार्श्वके भागमे या नाभिकी आसपास फूटकर वहांसे पकके साथ पिशाब निकलता है। पथरी चनासे लेकर आमके फल-बेरी जितनी बडी होती है। सौराष्ट्रके हालार भाग झालावाड मच्छ और मारवाड विभमे यह रोग अधिक प्रमाणमें होता है

पथरीका उपद्रव—पथरी बडी हो और मूत्रपिंड मेसे मूत्रनली द्वारा मूत्राशयमे उतरे तो अति पीडा होती है, जब पेटमे दर्द अधिक हो, वमन हो, मूत्र पिंडमे दर्द हो, रोगी को बेचेनी घबराहट हो पसीना अधीक हो, वृषणमे असह्य पीडा हो, पिशाव लाल खून पड मिश्रित आवे, ताप थोडा रहे। यह पीडा कई घंटोतक या दिनोतक रहती है और पथरी मूत्राशयमे पहूचे जब पीडा बंध होती है।

पथ्यापथ्य—जुलाब देना। आवश्यकता होतो पिचकारी-एनीमा देकर दस्त लाना। पीडा ज्यादा होती हो तो अफिमवाली दवा या आसव या भाग पिलाना। पेटपर या कम्मर पर शेक करना। रुईको लेप करना। रोगीको कम्मर तक गर्म जलमे बैठाना। खांड शक्करकी चीजे लाल मिरच तेल खट्टी चीजे मसाला दारु अजीर्ण करनेवाला खुराक बंद करना। भूख हो जब भोजन कराना। हल्का प्रवाही खुराक देना। हमेशा २ वख्त टट्टी लाना। कमल पुष्पको पानीकी मटकीमे डालकर वह पानी पीना मूत्रल दवा देना। पथरी बढ गई हो औषधसे न मिटे तो शस्त्र कर्म कराना।

त्रिविक्रम रस—वांतिभ्रांति रहित ताम्र भस्म मे २० गुना बकरी का दुध डालकर पकाना। सब जल जाय जब ताम्रभस्मसे ८ गुना गायका घी डालकर पकाना घी जल जाय जब यह ताम्र भस्म इस औषधमे डालना। ताम्र भस्म-तोला १०, गधक तो. १० पारद तो १० साथ मिलाय घोट निर्गुंडी के रस या क्वाथ मे गोलाकर कपड मिट्टीकर वालुकायंत्रमे ३ घटा तक पकाना पीछे निकाल कर पीस कर उपयोगमे लेना। मात्रा १ से २ रत्ती गायके घीसे लेकर उपर ०॥ से १ तोला बीजोराका मूल अथवा खाट खटुवाके पान ५ पीसकर पिलाना। १ मासमे पथरी पिघल कर धीरे धीरे निकल जाती है।

अश्मरी भेदी रस-(यो २) पारद तोला ४ गधक तोला ८, शिलाजीत तोला ४, तीनो साथ मिलाकर श्वेत पुनर्नवा कडुवी श्वेत अपराजिता (गरणी) प्रत्येकके रसमे एकएक दिन घोटना पीछे गोला बनाकर सुखानेपर श्वेत पुनर्नवा, वासा श्वेता अपराजिताके क्वाथसे दोलिका यत्रमे २ प्रहर आग देना। पीछे निकाल, घोटकर रखना। मात्रा २ रत्ती भुइ आंवली और इक्षुवालो के क्वाथसे देकर दुध पिलाया जाता है। इस औषधको पाषाणभेदी रस भी कहते हैं।

पाषाणवज्र रस—पारद तो. १०, गधक तोला २० कज्जली कर श्वेत पुनर्नवाके पचांगके रसकी तीन भावना देना। पीछे मूत्र पुष्प, गंदा अग्नि

देना। पीछे पाषाण भेदका चूर्ण तोला २० मिलाकर १ से ८ रत्ती २ तोला खाट खट्टवाके पानको पीसकर अनुपान रसमें पिलाना।

अश्मरी भेदी क्वाथ—मुंई आंवला भूहलीपान पुनर्नवा मूल पाषाण भेद सब सम भाग कूट २ से ३ तोलाका क्वाथ कर पिलाना।

१ गोखरु इलायची वरुण (ना'वरणो) पीपल पाषाण भेद मूलैठी मूल धनिया पुष्कर मूल सब साथ कूट २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना।

२ नीमकी नीबोलीकी गिरी तोला ०॥ शक्कर तोला १ साथ मिलाय बासी पानीके साथ ७ दिन देना पथरी पिघलती है।

३ सोहागा पकाया हुआ और शक्कर सम भाग मिलाकर ०। से ०॥ तोला दिनमे दो दफे पानीसे देना, २१ दिनमे पथरी पिघलती है।

४ चन्द्रप्रभा शिलाजीत पकाया सोहागा शक्कर सब समभाग मिलाना, २ से ४ मासा दिनमे १ या २ दफे देनेसे २१ दिनमे पथरी पिघल निकल जाती है।

५ नालेएरका फूल, मासा ३ और सोरा खार मासा १ साथ पीस पानीसे देना।

६ जुई या चमेलीका फूल तोला ०॥ शक्कर डाल बकरी के दुध के साथ देना।

७ हरड अमलतास गोखरु पाषाणभेद पुष्करमूल खाट खट्वा पान समभाग कूटकर २ मासा पानीसे या शहदसे देना

८ सोराखार तोला ६, सोनारकी कुल्हडीमे पिघालकर इसमें शुद्ध गंधक तोला ३ डालना पिघल जानेपर थालिमे डालना पपडी हो जायगी उसे पीस तोला ०। छाछ के साथ देना। ३ या ७ दिनमें पथरी पिघल जाती है।

९ तिलकी डंडी (तलखरी) अपामार्ग पंचांग केलीका स्तंभ ढाकको लकडी आंवलाकी लकडी सबको सुखाकर अलग अलग जलाना, सबकी भस्म समभाग मिलाय पानी डाल प्रवाही बनाकर कपडछान कर लोहेके वर्तनमे पकाना पानी जल जाय क्षार चूर्ण रूप क्षार शेष रहेगा। २ से ३ रत्ती बकरीके मूत्रसे या बकरीके दुधसे देना पथरी पिघलती है।



उष्णवात पिशाब जलना उनवा

कारण-चिन्ह—धूपमे सफर करनेसे, नंगे पांव धूपमे चलनेसे, धूपसे तपी हुई रेती या जमीन पर पिशाब करनेसे, गर्म चीजे खाने पीनेसे यह दर्द होता है जब जलनके साथ पिशाब पीला या लाल उतरता है। तब शरीर दिमाग तपता है। तृषा लगती है। हाथ पांवका तलिया जलता है।

उष्णवात हर मिश्रण—प्रवाल चन्द्रपुटी तोला १, जवाहर मोहरा तोला १, मुक्तापिष्टी तोला ०॥ अमृतासत्व तोला ४, इब साथ पीस ५ से १० रत्ती गुलकदसे या च्यवनप्राश जीवनसे देना।

उष्णवात हर चूर्ण—समुद्रफळ तोला १, नागकेसर, हरड, शक्कर, पुनर्नवा मूल प्रत्येक दो दो तोला कोठा र्पिपलका फलका गर्भ बडी शौफ (वरियाळी) आंबळा, ढाकका फूल, कमलफूल, इलायची, मजीठ, जीरा शिलाजीत, मीठोगावल गिलोय, कपासका फूल प्रत्येक पांच पांच तोला साथ कूट ०॥ से १ तोला पानीसे देना उपर गुडका पानी अथवा खजूरका पानी पिलाना।

१–गोखरु पंचांगका क्वाथ, गायका दूध डालकर पिलाना।

२–मधु विरेचन चूर्ण ०। से ०॥ तोला गुडके पानीसे देना।

३-रसायन चूर्ण २ से ३ मासा पानीसे देना।

४–चौलाइ मूल तोला १, चावल के ओसामण मे पिस पिलाना।

५ ढाकका फूल, पाषाणभेद पुष्करमूल बब्बूलका फल, शक्कर समभाग कर ३ से ४ मासा पानीसे देना।

६–हरड, चना, धमासा, पाषाणभेद, गोखरु समभाग कूट २ से ३ मासा पानीसे देना।

७–एक साल के पुराने गुडका पानी १० दफे स्वपदछाव पर पिलाना।



मूत्रकृच्छ्र—कष्टसे पिशाव होना

कष्टसे जलनके साथ थोड़ा थोड़ा पिशाव निकलना

कारण—[illegible] अधिक पीना व्यायाम ज्यादा करनेसे तीक्ष्ण गरम रूक्ष पदार्थ खानेकी आदतसे, दौड़नेसे, [illegible] खानेसे, अजीर्ण पर भोजन करनेसे, अधिक गरमी या अधिक सरदी मे ज्यादा फिरनेसे ऐसे अनेक कारणोंसे यह रोग होता है। मूत्राशयमे शिश्नके अग्रभाग तक मूत्र [illegible]—बाहर निकलनेका मार्ग वह मूत्र मार्ग कहा जाता है। वह प्रायः ८ इंच लंबा है और छिद्रको चौडाइ पेनसील जा सके इतनी है। यह मूत्रमार्ग [illegible] नहीं ग्रन्थीसे या अन्य कारणोंसे सकुचित होकर पिशाब रुक जाय, मूत्र मार्गके [illegible] संकोच हो उसे मूत्रकृच्छ्र या मूत्रग्रन्थी कहते है। अधिक दारु पीनेसे, घूम खानेसे, हिस्टीरिया चक्करी आनेसे और प्रमेह के कारण मूत्रमार्गको त्वचा सूज जानेसे अथवा मूत्रमार्गके आसपास गड ग्रन्थी होनेसे मूत्र मार्ग सकुचित होता है। इससे पिशावकी धार बहूत पतली होती है। अथवा बहुत जोर करनेसे बुद बुद पिशाव उतरता है अगर मूत्रमार्ग बिलकुल बंद हो जाता है तब चाहे जितना जोर करनेपर भी पिशाव निकलता नहि है। प्रमेहके कारण मूत्रमार्गमे बहूत समय तक दाह रहनेसे उसकी आसपास रक्तस्राव होकर भी संकुचित होता है।

चिन्ह—यह रोग होनेसे [illegible] वीर्य पतला पड़ता है, पिशाबकी इच्छा (खणस) रहा करती है इस कारण [illegible] पिशाब करने जाना पड़ता है। मूत्र जैसे जैसे अटकता है वैसे मूत्र मार्ग [illegible] (पहोला) होकर मूत्र मार्गमे सूजन होकर पिशावमे कष्ट उत्पन्न होता है। वात प्रधान मूत्रकृच्छ्र मे साथलके मूलमे मूत्राशयमे और शिश्नमे तीव्र पीडा होती है। पित्त प्रधान मूत्रकृच्छ्रमे पीला खून मिश्रित पीडा दाहके साथ [illegible] मूत्र निकलता है। कफ प्रधान मूत्र कृच्छ्रमे शिश्न और बस्ती [illegible] होकर उस पर सूजन होती है। मूत्र का रंगका तेल जैसा और चिकना [illegible] होता है।

पथ्यापथ्य—खान पानमे समाल [illegible] स्वाही खुराक लेना मुगका ओसा मण छांछ भात खीचड़ी दुध [illegible] कुलथी शाकमे दुधी चोलाइकी भाजी सूरन रक्तालु (रताळु) परवल करेला [illegible] मे धानोन हल्दी जीरा धनिया हरा धनिया (कासमीर) कहीनीम, [illegible] केळां मोसम्बी संतरा द्राक्ष आदि देना। रोगोको [illegible] तक [illegible] हुवे पानीमे पाव आधा घटा

बैठाना। सलाइ (शलाका) डालना होतो उस दिन रोगीको उपवास कराना नाभि के नीचेके भागमे और अंडु सानुमे शेक करना। ढाकके फुलको क्वाथकर उसे पेट पर बांधना। मधुविरेचन तोला २ से ४ मासा देना। शलाई डालनेसे गांठ है या नहि अगर कहां है इसका पता लगता है और पिशाब शलाइ द्वारा निकलता है। औषधोसे पिशाब न छूटे तभी शलाइ डलना। तेल लाल मिरच खट्टे पदार्थ दारु मांस वगेरे बंद करना।

मूत्र शलाका—यह सली चांदीकी ठोस रुकी रब्बरको या अन्य पदार्थ की बनती है। चांदीको और रब्बरकी नली पोली होती है। उसमे चांदीका एक चाला रहता है। वह पिशाब निकालनेमे सहायक होता है। मूत्र मार्ग चे डा करनेके लिये भी सलीका उपयोग होता है। सली १ से १२ नंबरकी होती है। सली डालनेके पहिले उसे दोनो हाथके बीच घीसकर शहद लगाकर डालना। डाकटर लोग ग्लीसरीन लगाते है रोगीको सुलाकर घूटन नमाकर खडा रखना। पेट ढीला रखनेको कहना। रोगीकी बांये ओर खडा रहकर सलीको तेल लगाकर बाये (वाम) हाथमे शिश्न पकडकर दांवे (दक्षिण) हाथसे मूत्रमार्ग के छिद्र मे सली दाखल करना। जैसे जैसे सली अंदर घुसती जाय मूत्रमार्ग खुला होगा जब-तक सलाइ अडचण विना अंदर घुसेगी। सलाइ डालते बल करना नहि, आस्ते आस्ते डालना, जोर करनेसे मूत्रमार्ग फट जानेका भय है। शलाका डालते समय रोगीको थोडा दर्द होगा जलन भी हो। कभी खून भी निकलता है। परंतु वह ठंडा पानी का पोता रखनेसे बंध हो जाता है। सलाइ डालनेसे रोगीको कभी ठंड या बुखार जैसा कंप होता है, बुखार भी चढ जाता है तो सलाइ निकाल देना। सलाइ डालनेसे कभी रोगी बेशुद्ध भी हो जाता है, कभी वृषण सूज जाता है। कभी अधिक संकोच के कारण सलाइ घूस नहि सकती अटक जाती है तब शस्त्र कर्म करना पडता है।

मूत्रकृच्छ्रांतक रस बृहत्—शुद्ध पारद गंधक और अभ्रक वैक्रांत स्वर्ण कांतलोह प्रत्येककी भस्म, मुक्तापिष्टी प्रवाल पिष्टी सम सम भाग लेकर निंबू रसमे घोंटकर मूसमे बंध रख औषध डूबे इतना निंबूरस डाल सगडीपर मूस धरना निंबुरस जल जाय जब फीर निंबू रसमे घोंट उपर के माफीक पकाना २५ बार पकानेसे औषध तैयार होता है। हरवखत औषध मूसमे डालने के पीछे औषध डूबे इतना निंबूरस डालते रहना।

मूत्रकृच्छ्रान्तक रस लघु—सामान्यलोग के लिये स्वर्ण भस्म और

मुक्ता पिष्टिके स्थानमें रक्ण माक्षिक और मुक्ताशुक्तिका तैयार किया जाता है। इस लिये बृहत और लघु रखा है इसमे भी क्रिया उपर लिखी गई है।

मूत्रकृच्छ्रांरि रस—पारद गंधक शख सिप्पि शुक्ति पिष्टी बंग भस्म यशद भस्म, गोखरु हरड आंवला नागरमोथ शतावरी कुटकी शिलाजीत कान्तिभस्म पर्पट (खडसलोंया) जवाखार लोह भस्म सब समभाग लेकर बहुफली गोक्षुर पचांग सहदेवी कालीद्राक्ष प्रत्येकके क्वाथकी एक एक भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोली बनाना। ४ से ८ गोली पानीसे देना। मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रपिंडका रोग मूत्रनलीकी सूजन आदि मिटते हैं।

वीर्यवेधी गुटिका—पारद गंधक बंग भस्म, मारित अभ्रक भस्म सूर्यक्षार जवाखार गोखरु हरड शिलाजीत शतावरी शक्कर तिलपर्णी (तलवणी) अमलतास पाषाणभेद तालमखाना आंवला मूलैठीमूल सोनामखीकी पत्ती बीजोरा निंबूका मूल सब सम भाग लेकर ईखका रस और धमासाका क्वाथकी एक एक भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोली बनाना। २ से ६ गोली पानीसे देना मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रपिंडका रोग मूत्रनलीकी सूजन आदि मिटते हैं।

सामान्य उपचार

१- कुष्मांड (भुराकोला) का रस तोला १० मे २॥ तोला शक्कर और १०-से १२ रत्ती जवाखार डालकर पिलाना।

२ दर्भमूल कास (कासडो) मूल इखमूल गोक्षुर मूल धमासा बहुफली समभाग कूटना। २ से ४ तोलाका क्वाथ कर शक्कर डाल पिलाना।

३ अमलतास गिरी दर्भ मूल धमासा गोखरु पर्पट (खडसलोंयो) समभाग। २ से ४ तोलाका क्वाथ पिलाना।

४ आंवला कालीद्राक्ष विदारीकंद शतावरी मूलैठी मूल दर्भमूल बहुफली समभाग। १ से २ तोलाका क्वाथ पिलाना।

५ हरड गोखरु अमलतास पाषाणभेद धमासा बहुफली समभाग। १से २ तोलाका क्वाथ शक्कर डाल पिलाना.

६ गूगलकी गोंदजैसी कणिका चुनकर मासा २ से ४ दहीके पानीमे पीस प्रवाही बनाकर पिलाना।

७ जवाखार २ मासा शक्कर ८ मासा पानीमे पीस पिलाना।

८ अमलतासकी गिरी गोखरु धमासा सोंठ अडूसाकी छाल पाषाणभेद समभाग कूटना। तोला ०॥ मे पानी रतल २ डाल उबालना आधा बाकी रहे तब पिला देना पिसाब छूटे।

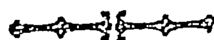
९ चिमंठ-(चौसठा) का गर्म-गिरी निकाल करनाभिपर बांधना ।

१० इलायची शिलाजीत पाषाणभेद पीपल समभाग । २ से ३ माशा पकते हुए चावल के पानीसे देना ।

११ छोटी कटहरीका पंचांग कूटकर उसका स्वरस तोला १ मे शहद तोला चार मिलाकर पिलाना ।

१२ मृदुग्धिका (मोदुधेलो) जो भूमिपर फैलती है बब्बूल जैसे छोटे पत्ते होते है, पत्ता तोडनेमें दूध निकलता है इसका पंचांग तोला २ को गायके दूधमें घोंस पिलानेसे पिशाब छूटे ।

१३ पाषाणभेद १२ रत्ती, शिलाजीत १२ रत्ती, इलायची ०॥ तोला, शक्कर ०॥ तोला साथ मिलाय ३ पुडी बनाना प्रातःकाल दुपहर शामको गर्मजलसे देनेसे पिशाब छूटे ।



मूत्राघात मूत्रावरोध

कारण—मलमूत्रादिका वेग रोकनेसे, रूक्ष पदार्थ खानेकी आदतसे, पथरी जमकर मूत्र मार्ग रुक जानेसे गर्भाशयका अथवा मन्थीका दाह होनेसे चोट लगनेसे अफीम गांजा भांग अति पीनेसे, शस्त्र प्रयोग करनेसे आदि कारणोसे वात पित्त कफ दूषित होकर पिशाब रुक जाता है।

चिन्ह—मूत्रकृच्छ्रमें मूत्रमार्ग संकुचित होता है और मूत्राघात में मूत्राशय बंधा होता है अगर पिशाबकी उत्पत्ति हि बंद हो जाती है। बस्तिका मुख नीचा है इसको चारो ओर मूत्र वहन करने वाळी शिराओ के सूक्ष्म मुख है उनमेसे मूत्र गिरता है। वातादि दोष के प्रकोप से मूत्रवाहि शिराओके मुख संकुचित या बंद होकर यह रोग होता है। **वातकुंडलिका** मे चक्करकी तरह वायु नाभिके नीचे और दोनो ओर फिरता है इस कारण मूत्रछिद्र रुक जानेसे पीडा के साथ थोडा थोडा पिशाब उतरता है। **मूत्राष्ठीला** मे वायु मलमुत्रका रोक मूत्राशय और गुदाको फुलाकर अधोवायु बंद कर कठिन फिरती मन्थी होती है। **वातबस्ति** में मूत्र वेगरोकनेसे पेडुमे का पेटसे दबा हुआ वायु मूत्रवाही शिराओको दबा देता है। **मूत्रातीत** मे पिशाब करने की इच्छा (हाजत खास) रहा करे लेकिन पिशाब उतरने मे बहुत देरी हो और थोडा थोडा उतरे। **मूत्रजठर** मे मूत्रका वेग रुकनेसे कुपित अपान वायु पेटमे जम कर नाभिके नीचे पीडा कर और मूत्रवाहि शिराओको रोक दे। **मूत्रोत्सग** मे पेडु मे या इन्द्रिय की नसोमे आया हुआ मूत्र रुक जानेसे और पिशाब करने के लिये जोर करनेसे लिंगका छिद्र फट कर पिशाब खून जलन के साथ थोडा थोडा उतरे, शरीर के रस रक्त आदि धातु सुख जानेसे शरीर रुक्ष कृश सुखा हुआ होता हैं। जब पित्त और मूत्राशयमे रहा वायु मुत्रका नाश करता है जब शूल के साथ जलन होकर थोडा पिशाब निकलता हैं। **मूत्रग्रन्थी** मे गोळ कठिन आंवला जैसी गांठ होती है उसमें पथरी जैसी पीडा होती है तब पिशाब बहुत कष्टसे उतरता है। **मूत्रशुक्र** मे पिशाब की हाजत होने पर भी पिशाब न कर संसग करता हैं तब स्थान भ्रष्ट हुआ वायु वीर्यको दूसरे मार्ग मे चडाकर पिशाबको रुकता हैं जब राख जैसे रंगका पिशाब कष्टसे छूटता है। **विड्विघात** मे दूर्बल कृश मनुष्यों को मलका वेग रोकनेसे मल और अपान वायु दूसरे मार्ग मे खींचा कर मल मुत्रा मार्गमे आ जाता हैं जब पिशाब बहुत कष्टसे उतरता हैं और पिशाब के

मल मिश्रित हुआ होता हैं और पिशाबकी गंध मिष्ठा जैसी आती हैं । वस्ति कुंडल मे वस्ती मे पडु मे गोल कठिन गांठ होती है इसमे शुळ निकलत हैं मूत्र बुद बुद से आता हैं लिंग मे सूजन होता हैं। बहुत पैदल चलने दौडनेसे कुधमसे चोट लगनेसे भी यह भ्रन्था होती हैं ।

पथ्यापथ्य—अनुकुळता होवे क्रियाकुशळ वैद्यमे नळीसे पिशाब निकलवाना । जो दोष प्रधान हो जो चिन्ह देखनेमे आवे उसके अनुसार उपाय करना । गर्म जलकी कुंडी मे रोगीको बैठाना । शेक करना । मूत्रशलाका डालना । यदि मूत्र शलाका दाखल न हो मूत्राघात ज्यादा समय रहे तो मूत्र मार्ग फटनेका भय रहता हैं । तब मुत्र दूसरी जगहसे निकालने की जरुरत रहती हैं । दिनमे एकदो दफे सलो डालना और उसके द्वारा गर्म पानीकी पिचकारी डालकर मुत्राशय धोना । पुराना चावल जब मुग आदि हलका खुराक देना । रोगीका शरीर और रोगका चिन्ह देखकर आहार विहार रखना ।

मूत्राघातारि रस—पारद गंधक अभ्रक भस्म घनमस्म प्रत्येक पांच तोला पाषाण भेद शिलाजीत जवाखार सोराखार सेंधानोन ककडीके बीज खीमडाका बीज हरड गखरू आंवला प्रत्येक चार चार तोला कुट विधिवत मिलाय धमासा अडूसो अम्ल पर्णी के पत्ते इखका रस प्रत्येककी एक एक भावना देकर २ रत्तीकी गोली बनाना या घोंट कर रखना। मात्रा २ से ४ गोली दिनमे दो या तीन दफे दर्भ के मुल को क्वाथ से अथवा नीचे लीये किसी क्वाथसे देना ।

सामान्य उपाय

१ पाषाण भेद हरड धमासा अमलतासकी गिरि गोखरु बहुफली समभाग कुट १ से २ तोलाका क्वाथ पिलाना ।

२ चिर्भी (टींडोरी) की गाठ के खट्टी छाछमे पीसकर नाभिपर लेप करना

३ कुष्मांड (भुरकोळू) का रस तोला २० गुडका पानी तोला १० जवाखार १२ से २० रत्ती दूध तोला २० साथ मिळाय पिलाना ।

४ अम्लपर्णी (खाटखट्टवो) के पान ६ पीसकर दिनमें दो या तीन वक्त पिलाना मूत्रकी रुकावट मिटती हैं और पथरी भी पिघलती हैं ।



मूत्राशय के रोग

कारण—नल्लीके आगेके भागमे मूत्राशय है और मूत्राशयके पीछे के भागमे मलाशय है। मूत्राशयके ऊपर आंते हैं। मूत्राशयमे सोथ करके दाह सूजन या जखम-व्रण होता है। सूजन के प्रारंभमे पिशाब बहुत दफे थोडा थोडा उतरता है। पिशाब होजानेके पीछे दर्द होकर पूय खून या सफेद चिकना पदार्थ पडे, कमरमे दर्द होता है। प्रमेह रोग होनेसे, सलाई या अन्य शस्त्र डालनेसे, पथरीसे या शर्करा के कारण यह त्वरित शोथ होता है। पथरीसे मूत्रकृच्छ्रमे हथीयार डालनेसे करोड रज्जूमे चोट लगनेसे कंठमालसे या प्रमेहकी वातसे जीर्णशोथ होता है। इसमे पिशाब हर वक्त हो, पिशाबमे सफेद चिकना पदार्थ ज्यादा पडे, उसमे सख्त दुर्गन्ध आवे, पिशाब करते वख्त बहुत पीडा हो, पिशाबकि हाजत अटकाना अशक्य हो तब पिशाब साफ आवे या खुल जाय ऐसा उपाय करना। पकाया हुआ टंकण १० रत्तीमे २॥ तोला पानी मिलाय पिघल जानेपर कपडछान कर शिश्नमे पिचकारी देना। दूधमे १० रत्ती टंकण मिलाय पिलाना।

मूत्राशय रोगान्तक रस—शिलाजीत तोला १०, पारद तोला ५, गंधक तो. १०, पाषाणभेद पुनर्नवा मूल विदारीकंद दर्भमुल काश मुल रोम्र काला हंसराज शतावरी प्रियंगु (घउंला) तालमखाना गोखरू छोटी कटहरी मुल बीजोरा निंबूका मुल मुलैठी मुल शोराखार टंकण जवाखार सेंधानोन प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूट विचित्र मिलाय इसमे १० तोला एरंड तेल की भावना देकर गोजिव्हा (भोपाथरी) के रसकी १ भावना देकर सुखाकर घोंट कर रखना अथवा ३ रत्तीकी गोली बनाना। मात्रा ६ से ८ रत्ती अथवा २ से ३ गोली पानीसे देना। मुत्रकी अटकायत मुत्राशयकी जलन दाह सूजन आदि मिटते हैं।

सामान्य उपचार

१—बडी कटहरी, धाइफुल, पाठमुल, मुलैठी मुल महूडेका फुल इंद्रजौ अश्मपर्णी समभाग कूट २ से ४ तोलाका क्वाथ कर पिलाना।

२ बैठी कटहरी के पंचांग कूटकर ४ तोला रसमे शहद डालकर दिनमे दो या तीन दफे पिलाना।

३ बालाके मुलका क्वाथ पिलाना।

४ रोगीके सारे शरीरमे तिलका तेल अथवा महालाक्षादि तेल मालीश कर वरुण (वायरणो) की छाल या पंचांगकी भाफ (बाष्प) देना।

५ बीजोरा निम्बूका मूल तोला १ मे हलदी तो. ०। पीस पिलाना।

मूत्रका वेग रुकनेकी अशक्ति

निदमे या जागृत दशामे पिशाव हो जाना

कारण—मुत्राशयके मुखका स्नायु शिथिल होनेसे विना इच्छा और निदमें पिशाव हो जाता है। यह रोग बच्चोको ज्यादा होता हैं। और आयु बढती है जब बंध हो जाता है। किसीको पिशाव बुंद बुंदसे गिरा करता है और रुकनेका प्रयत्न करने पर भी अटकता नहि। अन्यो कृमि, करोड रज्जूके रोग और ऐसे अन्य रोगके कारण भी पिशाव गिरा करता है।

मूत्रातिसार हरी वटी—पारद तो २॥, गंधक तो. २॥, रससिंदूर तो. २॥, कपूर तो. ३, अफीम लताकरंजके बीजका मगं (कांचचीया), इन्द्रजव प्रत्येक तोला दो दो सब कूट कपडछान कर तुलसीके रसकी भावना दे कर रती प्रमाण गोली बनाना। हमेशां १ से ३ गोली दूधसे देना। उपर पानकी पर्ती खिलाना। इस गोलीसे प्यास लगे तो दहीका घोल कर उसमें शक्कर और घी मिलाकर पिलाना।

२—माजुफल तो. १०, पकाइ हुइ फिटकरी तो ५ साथ कूट १२ से १५ रती पानीसे देना।

३ खेरसार, इद्रजव, हरड, बहिडां, आंवळा, सोंठ, पीपल, काली मिरच निसोत सब समभाग लेकर कूटकर १२ से १६ रती शहदके साथ देना।

४–सौफ तो. १, भांगके बीज काले तिल खसखस, अजवाइन प्रत्येक तो ४॥ सबकूट कर कपडछान कर गुडमें गोली ६ रत्तीकी बनाना। २ से ४ गोली पानीके साथ देना।

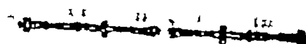
५—सफेद चंदन, धनिया, वायविडंग, नीमकी छाल, इलायची, नागकेशर, नागरमोथ सब समभाग कूटकर एक तोलाका क्वाथ बनाकर शहद या सक्कर डालकर पिलाना।

६—हरड, आंवळा, नागरमोथ, धनिया, धाइके फल, बादामकि गींरी, तालमखाना, कमलकंद अमलतास, कालीमिरच प्रत्येक पांच पांच तोला शतावरी तोला. १०, गोखरु पंचांग तो. १५, सब साथ कूटकर एकसे दो तोल,का क्वाथ कर सहद मिलाकर पिलाना।

७ सहंजनेका मूल तो. २ से ४ कूटकर उसका क्वाथ कर सक्कर मिलाकर पिलाना।

८—आकके फूलको छायामें सूखाकर तो. १० और काले तिल तो. १० महीन कूट कर गुडमें ६ रतीकी गोली बनाना। २ से ४ गोली रातवासी पानीके साथ देना।

९—दूधीके पान (मीठी दूधेली के पान जो चार चौद इंचका क्षुप होता है और पान तोडनेसे दूध निकलता है) वह ४ तोला पानीमे पीस कर उसमें १० से १९ तोला बकरीका दूध डालकर पिलाना।



मूत्रपिंडके रोग

मुत्रपिंड गुर्दा किडनी यह दो हैं। प्रत्येक मुत्रपिंड करोडकी बाजुमें कम्मर के भागमें पेटके पीछेकी दीवार उपर रहता हैं। वह ऊंचा ४ से ५ इन्च और चौडा २ से ३ इंच हैं। ११ वी पसलीसे वह शुरु होता है। दाहिने मुत्रपिंडके उपर तिल्ली है और ऊर्ध्व मुत्रपिंड सूक्ष्म मुत्र नलियोंसे बना हुआ है।

कारण चिन्ह—बहूत दारु पीनेसे, मुत्रपिंड पर चोट लगनेसे, ताप, कोलेरा, गंठिया वा, पथरी जैसे दर्दोसे, जलद दवाओंसे, जलद पदार्थ खानेपीनेसे, अधिक ठंडी लगनेसे, उग्र तापसे, मुत्रपिंडका दर्द होता है और उसमें सूजन होती है। प्रारंभमें ठंडी लगकर ताप आता है। कम्मरमे दर्द होता है। मुत्रपिंडके आगे वजन जैसा लगता है। कभी वमन होता है, शरीर पर और मुख पर सूजन होती है, पेटमे पानी भरता है। हाथपांव और मुखमुद्रा पर सूजन होती है। आंख और उसके पोपचे (Lids) में भी सूजन होती है। पग और पांव की चमडी फट कर पानी निकलता है। खुराक पर रुचि नहीं होती है। सिरमें दर्द होता है। वमन और उबका आता है। मुत्रपिंडकी आजुबाजुकी जगहमें दर्द होता है। मुत्रपिंडकी जिस बाजुमें सूजन हुआ हो वहां भार जैसा लगता है। वृषणकी गोली उंची चढती है। तृषा लगती हैं। दस्त कब्ज रहता है। पिशाब लाल थोडा-सा उतरता है। दर्द कम होता हैं जब पिशाब साफ उतरने लगता है। मुत्रपिंडके आजुबाजुमें शोथसे घिरा हुआ हो तो आंखका तेज कमी होता है। निद्रासे चक्कर, याद दास्त कमी, विचार शक्ति नष्ट होना, बेशुद्धि आदि चिन्ह मालुम होते हैं। दर्द बढ जानेसे रोगीका मृत्यु होता है।

पथ्यापथ्य—मुत्रपिंडकी सूजन होवे तो रोगीको स्वेदन और विरेचन दवा देना। उस जगह लेप कर शेक करना। जवका पर्णटका नागरमोथका या धमासा का औटाया हुवा पानी ठंडा करके पिलाना। उस जगह शरदी या ठंडी लगने न देना। सूखी जगहमें रोगीको रखना। तेल लाल मिरच, खट्टे पदार्थ अजीर्ण करनेवाली चीजे, बाजारकी मीठाइ वगैरह बंद करना।

मूत्रपिंड रोग हर रस—पारद, गंधक, रससिंदूर अभ्रक भस्म, लोह भस्म, प्रत्येक पाच पाच तोला शिलाजीत १० तोला, कुटकी २० तोला, हरड १० तोला, गोखरूमुल, रसौत, सोचरनोन दारुहल्दी अमियाहल्दी धमासा घनिया वंशलोचन, इलायची, जीरा, भूयआंवली, हल्दी प्रत्येक पांच पाच तोला, सब साथ मिलाकर गोमके पत्रका रस, तलवानी का रस शोण-पुष्पी (कूचे) का रस प्रत्येकको एक

एक भावना देकर तीन रत्तीकी गोली बनाना । मात्रा १ से २ गोली पकके सूखे आंवलेके पानीसे अथवा ईखके रससे देना । मूत्रपिण्डका दाह सूजन और मूत्राघातके रोग मिटता है ।

सामान्य उपाय

१ नागरमोथ, हरड, आंवला, मुलेठीमुल, गुडूची, हिंगुपत्री (बहुफली) सम भाग कुटकर २ तोला क्वाथ कर शहद डालकर पिलाना ।

२– शतावरी, दारुका फूल, कूठ, देवदारु, बहुफली, समभाग कूट १ से २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

३–लाल उत्पलकेमुल, धनिया, जीरा गिलोयका पान अडूसेका पान बहुफली समभाग कूट क्वाथ कर पिलाना ।

४–अमिया हलदि (आंबा हलदर) पिपरता काशीसाठ एरंडके मूल मूंग आंवली बहुफली समभाग कूट क्वाथ कर शहद मिलाकर पिलाना ।

५ गोखरु शतावरी एरंड मुल समभाग कूट १ से २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

६–अडूसीके पान तोला ४ पीसकर पानी मिलाकर रस निकालना । उसमें शक्कर डालकर पिलाना ।

७–कपित्थ (कोठा)के पान, धमासा मजीठ समभाग कूट क्वाथ कर पिलानेसे मूत्रपिण्डमें जमा हुवा पस पिशाब द्वारा निकल जाता है ।



प्रमेह

अतिविषयाद् दुष्टस्त्री रजस्वला संगमादधिकमद्यात् ॥
हस्तक्रियया दूषितरक्तादत्यन्तचाम्लपानेन ॥१॥
कामोत्तेजक नाटक सीनेमादर्शनाद् दिवास्वापात् ॥
नानामेहा पुंसामास्यात्तोस्मि त्रिदोषकोपात्स्यु ॥२॥
रसोद्धारतन्त्र ॥

कारण—प्रमेह अनेक प्रकारका होता है। लालामेह सान्द्रमेह पिष्टमेह शुक्रमेह उदकमेह रक्तमेह मंजिष्ठामेह वसामेह मधुमेह इत्यादि। सब प्रकारके प्रमेहके सामान्य कारण चांदी गरमीवाली और ऋतुमती स्त्रीका संग, अति गरम खुराक, खूनका बिगाड़, अधिक दारु पिनेकी आदत, शिश्नमें हर वख्त सलाई डालनेसे मार्गका संकोच, हस्तदोषकी कुटेव, विषय वासना बढानेवाला शृंगारिक वांचन, विकार उत्पन्न करानेवाला नाटक सिनेमा आदि दृश्य, अति विषयवासना, जागरण इत्यादि कारणोंसे यह रोग पैदा होता है।

चिन्ह—सब प्रमेहमें प्रायः नीचे लिखे चिन्ह होते है। प्रारंभमें शिश्नके फूलके अग्रभागमें खुजली आती है। पीछे चीकनी रसी निकलती है। प्रतिदिन यह रसी अधिक निकलने लगती है। प्रारंभमें रसी पानी जैसी निकलती है। थोडे दिनके पीछे वह दूध या पस जैसी सफेद और पीले रंगकी निकलती है। पीछे पिशाब करते वख्त जलन होता है। प्रमेह शुरु होनेके पीछे पांच दश दिनमें इन्द्रियके फूलके उपरकी पतली चमडी लाल हो जाती है। और कभी वहां सूजन होती है। मुत्रमार्गका संकोच होता है। रसी ज्यादा निकलती है। कई लोगोंको तो रात दिन रसी के बुंद टपकते रहते है। वह पस जैसी पीली होती है। इन्द्रियमें जलन और दर्द ज्यादा होता है। पिशाब करते वख्त भारी मुत्रनलीमें पीडा होती है, कारण कि मूत्रनलीका अंदरका भाग सूजनवाला होनेसे मूत्र के क्षारका स्पर्श और घर्षण होता है। मूत्र आनेसे मूत्रनलीको तथा शिश्नको फूलना पडता है इस कारण दरदी जरा दम खेंचकर धीरे धीरे पिशाब करनेका प्रयत्न करता है। कई वख्त पिशाबकी नली पूय पस (पठ) से भर जानेसे पिशाबकी धाराये दो तीन होती है। निद्रामें दर्द हो जानेसे अकस्मात जाग्रत होता है। इसमें स्त्रीसंगकी इच्छा होनेसे उसके बाद होता है तब पीडा ज्यादा बढती है। और दरदी बडा हेरान होता है। शिश्न टेढा हो जाता है। कभी पिशाबके साथ खून भी गिरता है। अंदर छोटी छोटी फुन्सियां चांदा जैसा भी होते है। इस रोगके

सांगलके मूलमें ग्रंथि या सुजन होती है। औषधोपचार करनेसे उपर कहे हुवे चिन्ह कम और पिडा कम होती हैं, रसी बहुत घट हुई हो वह पतली होने लगती है, और एक के पीछे एक चिन्ह कम होनेमें रोग मिटता है। प्रमेहवाले पुरुषके मगसे स्त्रीको गर्भ नहीं रहता है। और उपदंश-गरमी के रोगी पुरुषसे रहा हुवा गर्भ गिर जाता है। प्रमेहवाले स्त्री पुरुषोंके गुप्त व्यभिचारसे यह रोग प्रजामे खुब फैला हुवा है।

पथ्यापथ्य—सब प्रमेहने सामान्य रीतिसे रोगीको शारीरिक परिश्रम कम करना ज्यादा फिरना नही, चलना नहीं सफर करना नहीं। इससे अवयवोंका संकोच विकास होनेसे रोग बढता है। कई लोगोंको चलते फिरते कामकाज करते औषध सेवनसे प्रमेह मिट जाता है। रोग मिटे जब तक ब्रह्मचर्यका पालन करना। विषय वासना बढने वाला साहित्य पढना नहीं। नाटक सिनेमा देखना नही। धार्मिक पुस्तकें पढना। खुराक सादा हलका लेना। दाल भात खीचडी बिना मसालाकी शाकभाजी घी दूध मुंग चावल गेहू जवारी मकाइ कुलथी टमाटा दूधी सुरण रताळु परवल करेला चौलाइ मेथीकी भाजी मोसंबी केला सकरजन दाडीम द्राक्ष बादाम पिस्ता चारोली आदि खाना। लाल मिरच तीखा क्षार वाला पदार्थ गरमागरम चीज अफीम दारु चा आदि छोडना। इन्द्रीयका जुलाब (मुत्र विरेचन) लेना। डोकटर लोग कइ वखत इस रोगीको शिश्नमें पिचकारी से साफ करते है इससे कभी हानि पहूचती है। निकलतिहि हुइ रसीको कपडा या रुइसे रुकना नहि। रसी टपकती होतो कपडेकी छोटी थेली (कोथळी) में कपडा या रुइ डालकर इसमें शिश्न अधर लटकता रहे इस प्रकार करना ताकि रसीके बुंद उस थेलीमे गिरे। यदि अंदरके भागमे जलन होता हो तो इन्द्रिय उपर और पेडु उपर पानीका ठंडा पोता रखना दस्त हमेशां दो दफे साफ आवे एसी औषध लेते रहना और वात पित्त कफमेसे जिस दोषका अधिक प्रकोप हो उसको ध्यानमे रखके औषधोपचार करना।

१ लालामेह—इसमें अतिलाला रेषावाला चीकना पदार्थ शिश्नसे निकलता है। इसमे कफदोष प्रधान रहता है।

> अतिपिच्छिलमतिलालं दोषमिव तंतुवद्न मेहति यः॥
> नियतं लालामेहं श्लेष्माधिक्याद् भवत्यय रोगः॥१॥
>
> ॥रसोद्धारतंत्र॥

२ सान्द्रमेह—पिशाब ग्लासमें रखनेसे नीचे गाढा भाग जमता है और पिशाब उतरते वखत भी कृच्छ नही होता। यह कफप्रधान प्रमेह है।

घट्टपदार्थसमं वा घटटपदार्थेन मिश्रितं मूत्रं ॥
सबतेच्छमुपरि किंचित् कफातिरेकेण सांद्रमेहोऽसौ ॥२॥
॥रसोद्धार तंत्र॥

३ पिष्टमेह—पिशाब करते समय रोगीको रोमांच हो जाता है कांप उठता है। पिशाबके साथ आटा जैसी बारीक कणिकायें गिरती है। पिशाब सफेद रंगका और हर वक्त होता है।

श्वेतं पिष्टसमं वा मुहुर्मुहुर्मूत्रमुत्सृजेत्पुरुषः ॥
शुष्कं मिष्टवदधःस्थं क्षीणं विद्याच्च पिष्टमेहार्तं ॥३॥
॥रसोद्धारतंत्र॥

४ शुक्रमेह—इसमें पिशाब अधिक हरवक्त आता है। रोगी बेचेन निस्तेज और क्षीण बनता है। पिशाब गाढा सफेद और वीर्यमिश्रित आता है।

वीर्ययुतं वीर्यापं मेहति मूत्रेण वलवदुत्सृष्टम् ॥
चिकटकाचसमं वा क्षीणनरं शुक्रमेहिनं विद्यात् ॥४॥
॥रसोद्धार तंत्र॥

५ वालुका मेह—पिशाबमें बारीक रेती जैसी कणिकायें आती है और ग्लासमें पिशाब भरनेसे नीचे रेती जैसी कणिकायें जमती है। यह रोगी दिनोंदिन क्षीण होता है, जठराग्नि मंद पडता है। दस्त अनियमित होता है। पिशाबकी हाजत हरवक्त रहती है। शिश्नको मसलता है। इससे शिश्नपर सुजन होती है।

कंकरिकाभा कणिका मूत्रेणाऽऽयांति सुस्थिरे मूत्रे ॥
क्षीणबलाग्नेः पुंसोऽधस्ताद्रेतीनिभा विलोक्यंते ॥५॥
॥रसोद्धार तंत्र॥

६ उदक मेह—(बहुमुत्र)-पिशाबमें गंध नहीं होती, पिशाब सफेद और ठंडा आता है। पानी जैसा स्वच्छ होता है। रोगीको पिशाबकी हाजत हरवख्त होती है। रोगीका शरीर निर्बल कृश और निस्तेज बनता है। पाचन शक्ति मंद होती है, खुराक पर या किसी कामकाजमें रोगीको प्रीति नहीं रहती।

मुहुरच्छं शीतं सितमुदकोपममूत्रमुत्सृजेत्पुरुषः ॥
निर्गंधं कृशदेहो मंदाग्निर्निर्बलो ह्युदकमेही ॥६॥
॥रसोद्धार तंत्र॥

७ रक्तमेह—पिशाबके साथ उष्ण खुन गिरती है अगर खुनमिश्रित पिशाब उतरता है। शिश्नके अंदरके भागमें दाह जलन होती है, रोगीको मुखमें शोष तृषा आवे और हृदयमें जलन, दस्त पतला और कभी कब्ज होता है। यह पित्त प्रधान प्रमेह है।

सक्षारमुष्णमस्र विस्नं मेहेन्नरः सदाहं वा ॥
पित्तात्सदाहहृद्गलनेत्रोऽसौ रक्तमेहवान्मनुजः ॥७॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

८ मांजिष्ठ मेह—(व्रणमेह–जलती प्रमेह)—खुन जैसे रंगका या केसरी रंगका या मजीठ जैसे रंगका लाल गर्म जलनके साथ पिशाब उतरता है। पिशाब नही करनेके समयमें भी अंदरके भागमें जलन रहा करती है। पिशाव करते वक्त असह्य जलन होती हैं। इसके साथ कभी खुन भी गिरता हैं। रोगी विव्हल, दीन बेचेन होता जाता हैं। यह पित्त गरमीजन्य प्रमेह है। यह प्रमेह बहुत करके खराब स्त्रीके संगसे होता हैं।

मंजिष्ठारस सदृशं चोष्णं दाहेन संयुतं मेहेत् ॥
तत्तच्छरीरः पित्तप्रमेहो मांजिष्ठसंज्ञकः प्रोक्तः ॥८॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

९ वसामेह—इस प्रमेहमें ज्यादा वातप्रकोप रहता हैं पिशाबके साथ चरबी जैसा गाढा चीकना पदार्थ गिरता हैं अथवा चरबी मिश्रित पिशाब निकलता हैं। यह रोगी क्षीण अशक्त कृश अगर कमजोर हो जाता हैं। चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रहती। खुराकका पाचन नही होता। दस्त अनियमित होता हैं।

मेहति नरो वसाभं मुहुर्वसाभिश्च संयुतं मूत्रम् ॥
तमसाध्यमाहुरार्या वसाप्रमेहं हि वातकोपेन ॥९॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

१० ओजोमेह—यह रोगी बकरीके दुध जैसा पतला पिशाब करता है। पिशाब करनेके पीछे शक्ति बल और उत्साह क्षीण होता हुवा रोगीको मालुम होता है। इस रोगीके प्रत्येक अवयव क्षीण होनेसे अपने अपने काम करनेमें कमजोर होते है। प्रारंभमें रोगी चलता फिरता है, लेकिन थोडे दिनके पीछे वह बिछाना वश हो जाता हैं। पिशाब दुर वक्त होता हैं।

मेहति मुहुर्मनुष्यश्चोजो मेहत्यजापयःप्रतिमम् ॥
वातकमसाध्यमाहुश्चोजोमेहं पुरातनैः पापैः ॥१०॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

मधुमेह

मेहाः सर्वे कालादुचितप्रतिकारहीनमनुजस्य ॥
मधुमेहत्वं प्राप्ताः प्रायः कष्टेन साध्यतां यांति ॥११॥
॥ रसोद्धारतंत्र ॥

११ मधुमेह—कारण—दीर्घ कालके अजीर्णसे, चा, काफी देकी अधिक पीनेकी आदतसे चिंता शोकसे, चरबी बढनेसे, घी शक्करके मिष्टान्न ज्यादा खानेकी आदतसे, शरबत कुल्फी आइसक्रीम आदि ज्यादा खाने पीनेसे दिमागके अधिक कामसे, मिजाद कम होनेसे, कलेजेके रोगसे, दारु अधिक पीनेसे, प्रमेहका रोग बहुत समयसे रहनेसे यह रोग होता है। यज्ञयागादिकमें ऋत्विजका काम करनेवाले ब्राह्मण वर्ग बहुत दिनोंतक खांड शक्करवाली चीजें खाते रहते हैं उनको भी यह रोग हो जाता है। बैठे रहकर कामकाज करने वाले व्यापारी या ओफिसमे काम करनेवाले लोगमें यह रोग ज्यादा होताहै। स्त्रीयोंकी अपेक्षा पुरुषोमें यह रोग अधिक देखा जाता है।

चिह्न—यह रोग कभी भयंकर रूप पकडकर थोडे वर्षोमें रोगीको मृत्युवश पहुंचाता है। अब बहुतसे रोगियोको यह रोग बहुत वर्षोतक चलता है। पिशावका वजन २४ घंटामें १० से ३० रतल तक बढता है। इसमें शक्कर सैकडा १०० तोले पिशावमें आधा टकासे १० टका तक जाती है प्यास ज्यादा लगती है। पिशावका रंग फिका, पानी जैसा और स्वादमें मधुर रहता है। ग्लासमे थोडी देर रखनेसे फेन (फीण) निकलने लगते हैं। पिशाब जमीन पर पडता है तब वहां चींटीयां और कीडो मकोडो लगते हैं। मुख जीभ गला तालु सुखा रहता हैं, मुखमे अमी नही रहती, जीभ लाल होती है। दांतके मसूढेसे कभी खून या पस निकलता है। दन्त कमजोर रहता है। थूकमे और मुखमे मधुरता, अजीर्ण और वायु, चमडी सूखी रुक्ष और मुखमुद्रा चिंतातुर दीखती हैं। कमजोरी बढती है। विषय शक्ति कमी होती है। नींद कम होती है। हाडमे जीर्णज्वर कभी रहता है। शरीर कमजोर होता है। पांच तोला पिशावमें १० से २० रती शक्कर मालूम हो तो वह असाध्य मधुमेह समजना। रोगीकी साध्यता असाध्यता और रोगके चिह्न शारीरिक स्थिति आदि ध्यानमे रखकर उपचार करना।

पथ्यापथ्य—खुराकसे रोगीने संभाल रखना चाहिये। शक्कर गुडवाले, आटाके मीठाले चरबी वाले पदार्थ मांस चीकने पदार्थ गेहूं चावल बटाटा रताळु

बाजारकी मीठाइ आदि नहीं खाना चाहिये । चा काफी आइसक्रीम शरबत गुल्फी वगैरह बंध करना । दूध मख्खन, गव बाजरी कुल्थी मुंग मठ मेथीदाना चौलाइकी भाजी मेथीकी भाजी वेंगन करेला तुरिया दूधी आदि खाना । जहां तक बन सके बिना शक्कर डाला अगर घारोष्ण दूध ज्यादा पिना चाहिये शेकेरीनका उपयोग करना । नहि यह चीज एक प्रकारका विष है । सेकेरीन हृदय दिमाग आतें फुफ्फुस मूत्राशय आदि अवयवोंको बडा नुकसान पहुंचाता है । और बहुत वर्षोंतक इसका उपयोग करनेवालोंको हृदय बंद हो जानेका किस्सा बनता हैं । तृषा लगे जब बरफका पानी नहीं पीना लेकिन एक मिट्टीकी कोरी हंडीमें पानी डालकर उसमें नीमकी छाल या वाला आदि डालकर वह पानी पीते रहना ।

भिन्न भिन्न प्रकारके प्रमेह रोग पर गुणकारी औषधें

चंद्रप्रभा—वावची बच मोथ चिरायता गिलोय देवदार हलदी दारुहलदी पीपलीमूल चित्रक धनीया हरड बहेडा आंवला चवक वायविडंग गजपीपल सोंठ पीपल काली मिरच सुवर्ण माक्षिक जवाखार सज्जीखार सेंधानोन संचळ पानको प्रत्येक चार तोला । निसोथ दंतीमूल तमालपत्र तज एलायची वंशलोचन प्रत्येक सोळ सोळ तोला । लोह भस्म १२ तोला । शक्कर ६४ तोला शीलाजित १२८ तोला शुद्ध गुग्गळ १२८ तोला सब विधिवत् मिलाकर तीन तीन रत्तीकी गोली बनाना । मात्रा २ से ६ गोली पानीके साथ देना । सब प्रकारके प्रमेहमें गुणकारी है । विशेषमें लाला मेहमें अधिक फायदा करती है । इसके अलावा मूत्राघात पथरी वृषणवृद्धि, अंडवृद्धि, अंत्रवृद्धि पांडु कामला मलावरोध बवासीर तिल्ली भगंदर औरतोंके ऋतुदोष पुरुषोंके वीर्यदोषमें उत्तम गुण करती है और सामान्य पौष्टिक है ।

प्रमेहारि वटी—शतावरी कमलबीजकी गोरी इलायची कालो मुसली कपित्थ (कोठ) के फलका गर्भ सफेद मुसली पुनर्नवा मूल रोहिष तृण के मूल अजमोद जीरा हलदी प्रत्येक पांच पांच तोला, काली मरच चीनी कबाला नागकेसर प्रत्येक एक एक तोला असगंध ४ तो लोहभस्म ५ तो, गिलोय ५ तो. शक्कर गुग्गळ शिलाजित इंगुदी (इंगोरिया के फलका गर्भ) प्रत्येक दश दश तोला सब साथ मिलाकर कपित्थ के पानके रसमें ३ रत्तीकी गोली बनाना । ३ से ६ गोली पानीके साथ देनेसे लाला मेह और अन्य कफ प्रधान प्रमेह मिटता है ।

भीम पराक्रम रस—पारद तो. ८, गंधक तोला ८ नागभस्म तो. २. मिलाकर पर्पटी तरह पकाना । पीछे पीस कर उसमें अभ्रक भस्म लोह भस्म

नागावर्त भस्म शीलाजीत निमफलीके गर्भ प्रत्येक दो दो तोला मिलाकर गुंजामूल कपित्थके पान नीमके पान प्रत्येकका रसकी एक एक भावना देकर पीछे त्रिफलाके क्वाथकी सात भावना देना। पीछे लज्जालुका पंचांग और बब्बुलके गुंद दोनों समभाग कूटकर ५० तोला उपरके औषधमें मिला देना। मात्रा ६ से १२ रत्ती रातवासी पानीके साथ देना। सान्द्र मेह पर उत्तम गुण करता है और दूसरे प्रमेह रोगमें धातुस्रावमें औरतोंके सोमरोग रक्त प्रदर और सफेद स्रावमें उत्तम गुणकारी है।

हरिशंकर रस—रससिंदुर और अभ्रक भस्म समभाग लेकर और पके हुये हरे आंवलेकी सात भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना। १ से २ गोली च्यवनप्राश अवलेहके साथ देना। यह पिष्ठ मेहमें अधीक गुणकारी है और दूसरे प्रमेहोमें दिया जाता है।

बंगेश्वर लघु—बंगभस्म श्वेत रससिंदूर शुद्ध गंधक प्रत्येक १०–१० तोला। शेमलका गोंद बब्बुलका गोंद शेमलके मूळ सलावीज चीकनी सुपारी अभ्रक भस्म प्रत्येक ५ तोला लेकर कूट कर विधिवत् मीलाकर घोक्वारके रसकी और गिलोयके रसकी एक एक भावना देना। मात्रा ३ से ६ रत्ती पानीके साथ देना। पिष्ठमेहमे उत्तम गुणकारी है। इसके अलावा बहुमूत्र मधुमेह धातुस्राव प्रदरमे गुणकारी है और शक्ती प्रद है।

बंगेश्वर बृहद् (महा बंगेश्वर)—(स्वर्णयुक्त) शुद्ध पारद तो १० में सोनाका वर्क तो. १ मिलाना। पीछे उसमें गंधक तो. १० डालकर कज्जली कर पपंटीकी तरह पकाकर घोंटना। पीछे उसमें बंग भस्म तो. ५ और लोह भस्म अभ्रक भस्म मुक्ता पिष्टि प्रवाल पिष्टि बब्बुलका गोंद शेमलका गोंद चीनीकबाला एलायची शेमलके मूल प्रत्येक ढाइ ढाइ तोला मिलाकर केलोके कंदके रसकी एक भावना दे कर सूखजाने पर उसमें भीमसेनी कपूर तोला ढाइ और जायपत्री (जावंत्री) तोला ढाइ मिलाकर घोंटकर रखना मात्रा ३ से ६ रत्ती पानीसे देना। यह शुक्रमेह में उत्तम गुणकारी हैं। इसके अलावा सब प्रकारका प्रमेह मधुमेह बहुमूत्र औरतोंके श्वेत रक्त प्रदर आदि में गुणकर्ता है और पौष्टिक है।

गुगळ वटी—गुगलमें गोंद जैसी पीली चमकती कणिकाओ चुनकर शेर १ लेना। पीछे उसमें सइंजनेका पान सहतुर (शेतूर) के पान चमेलीके पान मोगरा के पान विषखापराका पान देशी धायका पान और गुलर (उदुंबर-उमरो) केपान

प्रत्येक एक एक शेर लेकर सब पानेकी साथ मिलाकर अधकचरे कूटकर पानीका चूर्ण आधा नीचे डालकर उपर गुगल रखना और गुगल के उपर बचा हुआ आधा पान दाब देना। पीछे हंडीका मुख मिट्टीसे बंध करके हंडीको चुल्ली पर चढाकर तिलका तेलका दीया हंडीके नीचे देना। एक शेर तेल जल जाय जब हंडीको बारह घंटा स्वांगशीत होने देना। पीछे खोलकर हंडीसे सब चीज निकाल कर पीसकर चार से पांच रत्तीकी गोली पानीसे बनाना। चार से छ गोली गायके घी के साथ देनेसे शुक्रमेह धातुस्राव और अन्य प्रमेह मिटता है और ताकत आती है।

वसंत तिलक रस—लोह भस्म, बंगभस्म सुवर्णभस्म, अभ्रक भस्म, रौप्य भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, प्रवालपिष्टि, मुक्तापिष्टि प्रत्येक चार चार तोला तज तमालपत्र इलायची नागकेशर प्रत्येक १०-१० तोला सब साथ मिला कर त्रिफलाके क्वाथकी भावना देकर सूख जाने पर उसमें जायफल चार तोला और जावत्री चार तोला डालकर कूटकर घोटकर रखना। मात्रा २ से ६ रत्ती शहद या दूध के साथ देना। यह वालुका मेह—सिकता मेहमे उत्तम है। इसके अलावा दूसरे सब प्रकारके प्रमेहमें मधुमेहमें बहुमूत्रमें श्वेत रक्त प्रदरमें दिया जाता है और पौष्टिक है।

प्रमेहांतक वटी—शुद्ध हिंगुल केशर लोंग जायफल चीनीकाबाला काली मिरच इलायची अफीम अकलकरा सब समभाग लेकर नागरवेल के पान के रसमें रत्ती प्रमाण गोली बनाना। एक से तीन गोली पानी या शहदसे देना। यह सिकता मेह वालुका मेहमे अधिक गुणकारी है और दूसरे प्रमेहोंमें भी दी जाती है।

मस्तक्यादी—रूमी मस्तकी तज जावत्री सफेद मुसली काली मुसली और पीपली मूल प्रत्येक दो दो तोला और अश्वगंधा आठा मिलाकर १६ तोला केशर १ तोला पंजाबी सालम अथवा सफाकुल मिश्री ४ तोला सब साथ विधिवत् मिलाकर कपडछान कर रखना। मात्रा २ से ४ मासा पानी या शहदसे १४ दिन तक देने से सिकतामेह और अन्य प्रमेह रोग मिटते हैं। खट्टा खारा तीखा पदार्थ औषध चालु हो जब तक नहीं खाना स्वप्नमे या अन्य रीते से शुक्रपात होता हो उसमे भी यही दवा फायदा करती है।

इन्द्र वटी—रससिंदुर बंग भस्म अश्मंतककी छाल शक्कर सब समान भाग मिलाकर सेमल के मूल के रसमें घोंट कर रत्ती प्रमाण गोली बनाना।

२ से ४ गोली पानी के साथ देनेसे उदक मेह बहु मूत्र और अन्य प्रमेह मे गुणकारी है।

शुक्रमातृका वटी—पारद गंधक अभ्रक भस्म लोह भस्म प्रत्येक चार चार तोला, गोखरु हरड बहेडा आमळा तमाल पत्र इलायची रसौत धनिया चव्वक जीरा तालीस पत्र टंकण अनारकी छाल प्रत्येक दो दो तोला, गायका घी ५ तोला सब साथ विधिवत मिलाकर बकरी के दूध में २ रत्ती प्रमाण गोली बनाना। २ से ४ गोली पानी या अनार के रस के साथ अथवा बकरी के दुध के साथ देना। बहुमूत्र आदी प्रमेह रोगमे उत्तम गुणकारी है।

रक्तमेहांतक रस—शुद्ध पारद गंधक वंगभस्म यशद भस्म रौप्य भस्म मुक्ता पिष्टि वंशलोचन प्रत्येक दो दो तोला, प्रवाल पिष्टि ८ तोला, सब साथ मिलाकर केलीका कंद शतावरी लज्जालु रसौत चिरोंजी (गुंजा) की पत्ती प्रत्येककी एक एक भावना देकर तीन रत्तीकी गोली बनाना। २ से ३ गोली पानीसे देकर उपर पके हुये हरे अंजीर पांच दश खिलाना वह न मिले तो सूखे अंजीरको बारह घंटा पानीमें भिगो कर मर्दन कर उसका रस पिलाना अथवा गुलर के पके हुए फल पांच दश खिलाना इस फलमें जन्तु न हो यह देख लेना।

महा वसन्त कुसुमाकर—

द्वौ भागौ हेमभूतेश्च गगनं चापि तत्समम् ॥
लोहभस्म त्रयो भागाश्चत्वारो रसभस्मनः ॥१॥
वङ्गभस्म त्रिभागं स्यात्सर्वमेकत्र मर्दयेत् ॥
प्रवाल मौक्तिक चैव रसतुल्येन दापयेत् ॥२॥
भावनां गव्यदुग्धेन रसैघृष्ट्वाटरुषकैः ॥
हारिद्रावारिणा चैव मोचकन्दरसेन च ॥३॥
शतपत्ररसेनापि मालत्याः स्वरसेन च ॥
छायया शोषयेत्पश्चात्तुलस्या रसभावितः ॥४॥
कर्पूरस्य स कस्तूर्या भागैकैकं विनिक्षिपेत् ॥
संमिश्र्य मर्दयेत्खल्वे दिनैकं दृढमुष्टिना ॥५॥
सिद्धः सर्वगुणोपूर्णो वसंत कुसुमाकरः ॥
गुंजाद्वयं ददीतास्य मधुना सर्वमेहनुत् ॥६॥
वृष्यो बल्यो बृंहणश्च कामसंजीवनं परः ॥
नानानुपानभेदेन सर्व रोगापहस्स्मृतः ॥७॥

महा वसंतकुसुमाकर—सुवर्ण भस्म २ तो. अभ्रक भस्म २ तोला लोहभस्म ३ तो, रससिंदूर ४ तो, बंग भस्म तो, ३ प्रवालपिष्टि तो ४ मुक्ता पिष्टि तो, ४ सर्व विधिवत मिलाकर गायके दूधकी अडूसीके रसकी हल्दीके क्वाथकी अथवा हरी हलदीके रसकी केलीके कंदके रसकी गुलाबके फुलके रसकी चमेलीके और तुलसीके रसकी एक एक भावना देकर सूख जानेपर भीमसेनी कपूर १ तो, और कस्तुरी १. तोला डालकर घोटकर रखना यह सब रोगो में उत्तम गुणकारी हैं। मात्रा २ रती शहदसे देनेसे माञ्जिष्ठ मेह अर्थात् जलनवाला प्रमेह व्रण प्रमेह मिटता है और सब प्रकारके प्रमेहमें उत्तम गुणकारी है। भिन्न भिन्न अनुपानसे सब रोगोमे भी दिया जाता है वृष्य बल्य बृंहण और कामोत्तेजक है।

वसंत कुसुमाकर—सुवर्ण भस्म तो. १, रौप्य भस्म तो, ४ बंग भस्म तो ६, नाग भस्म तो. ३ लोह भस्म तो, ३ रससिंदूर तो, ६ प्रवालपिष्टि तो ६ मुक्तापिष्टि तो, ६ लौकान्त पिष्टि तो, ४ सुवर्णमाक्षिक भस्म लाल तो, ६ विदारी कंद ४ तो, शेमलका गोंद ४ तो, केळकंद ४ तो, अडुसी कंद तो, ४ हलदी ४ तो कमळ कंद ४ तो सफेद मुसली ४ तो, गुलाबके फुल तो, ४ चमेलीके फूल ४ तो, तुलसीके बीज तो, ४ सब साथ कूटकर गायके दूधकी भावना देकर सुखाकर उसमें सुख आने पर जायफल तो ४ भीमसेनी कपूर तो. ८ जावत्री तो ४ लौंग तो, ४ कस्तुरी तो. १ मिलकर घोटकर कपडछान कर रख छोडना। मात्रा ३ से ६ रती शहद घृत या मख्खनसे देना सब प्रकारके प्रमेह श्वेत रक्त प्रदर सोमरोग धातुक्षीणता हृदयरोग कमजोरीमें उत्तम गुणकारी है। क्षयरोग फुफ्फुसके रोगमें गुणकारी हैं। वृष्य पौष्टिक और शक्तिप्रद है।

सारिवादि अवलेह—सारिवा नागरमोथ लोध्र वडकी अंतरछाल पीपल (अश्वत्थ)की अंतरछाल नीमकी अंतरछाल कचूरा अनंत मूल पद्मकाष्ठ वाला पाठा आंवला गिलोय चंदन रसोत अजमोद कूटकी तमालपत्र मजीठ ढाकके फुल मींढी-आवल हरड प्रत्येक १६-१६ तो, द्राक्ष १२० तो पानी दो मन डालकर पकाना आधा रहेने पर कपडछान कर गुड मण एक डालकर फिर पकाना घट्ट होने पर इलायची कुष्ट हलदी सोंठ पीपल कालीमिरच तमालपत्र लौंग नागकेशर वायविडंग लताकरंज बीज प्रत्येक ८-८ तोला डालकर अवलेह जैसा होने पर स्वांगशीत होने देना। सब प्रकारके प्रमेहमें २ से ४ तोला दिया जाता है। खूनके बिगाडमे चांदी उपदंश भगंदर प्रमेह पीडिका मे उत्तम गुणकारी है।

धातुपौष्टिक अवलेह—मखाना तो. २ पीपल तो. ५, जायफल जावत्री अकलकरा टंकण सिंगरफ काली तुलसीके बिज कसुंबाका बीज बलाका बीज इसपन

कनकबीज कमल बीजकी गोरी लोंग इलायची असगंध नागरमोथ समुद्रशोष के बीज अजमोद भारंगी कंकोल तज प्रियंगु चोनीकबाला प्रत्येक तोला पांच पांच, काली मिरच तोला ०॥, केसर तो १।, सोनेका वर्ख तो ॥', अफीम तो १, मालकांगनी तो ०॥, शणके बीज तो १, लोवानके फुल तो ०॥ कस्तुरी रती ९, चांदीना वर्ख तो ०॥', गोखरु तो १०, कौंच तो १०, सफेद मुसल तो १०, सोंठ तो. ५ बब्बुलका गोंद तो. १ , पूर्णचन्द्रोदय तो. २, सर्व औषधोंको कूटकर कपडछान कर दूध पक्का शेर १० में डालकर पकाना। घट्ट हो जाय अब खांड पक्का शेर १० का चासणी कर उसमें डाल देना और फिर धीमी आंचसे पकाना। चाटन जैसा हो जाय जब उतारकर ठंडा होने देना। इसमें कस्तुरी केशर लोबानके फूल और जायफल जायत्री तज सोनारुपाका वर्क इतनी चीजे अवलेह ठंडा होनेके पीछे डालकर हिलाना। मात्रा १ से २ तोला, खट्टा पदार्थ और अचार लाल मिरच बंध करना। १८ प्रकारका प्रमेह, ११ प्रकार के धातुविकार गर्भाशयके रोग प्रदर आदि मिटे। बल पराक्रम बढे शक्ति आवें, भूख लगे अन्न पाचन हो। यह कामोत्तेजक और पौष्टिक अवलेह है। यह खानेके पीछे पानको पट्टी एक दो खिलाना खुराकमे दूधी और मिष्टान्न पदार्थ खिलाना नहि।

बहु मूत्रांतक रस—रससिंदूर लोहभस्म बंगभस्म प्रवालपिष्टि मुक्तापिष्टि अफीम शेमलके मूल बेलका कंद सोंठ गुलर (औठा उंबरी) का मूल सब समभाग मिलाय, चमेलीके पंचांग के रसकी भावना देकर घोट रखना मात्रा २ से ४ रत्ती पानीसे देना। बहुत दफे पिशाब होना मधुमेह अन्य प्रमेह प्रदर ऋतुदोष मिटता है शक्तिप्रद है। निद्रामें पिशाब होता हो मिटता है।

प्रमेह कुलांतका वटी—ताम्रभस्म अभ्रक भस्म पारद गंधक प्रत्येक पांच पांच तोला कदली कंद नागकेशर कवारपाठा का मूल श्वेत कनेरका मूल प्रत्येक छह छह तोला. आंकके फल दुधिया हिमकंद अकलकरा उत्कंटक मूल सफेद बछनाग जायफल जावंत्री बहुफली, सफेद और काली, मुसली गोखरु बलबीज लोंग इलायची अजमोद प्रत्येक सात सात तोला अफीम चार तो और भीमसेनी कपूर तोला ५ सब साथ मिलाय पानीमे रती प्रमाण गोली बनाना। ३ से ४ गोली दिनमें दो दफे पानीसे देना। सब प्रकारका प्रमेह मूत्र रोग स्त्रीयोंका ऋतु दोष मिटता है।

कामधेनु रस—रससिंदूर अभ्रक नाग माक्षिक यशद रौप्य प्रत्येकको भस्म दश दश तोला लेकर कदली कंदके रसकी भावना देकर सूखजाने पर भीमसेनी कपूर तोला ५ मिला देना मात्रा ३ से ४ रती पानीके साथ देनेसे शुक्रमेह वसामेह प्रदर जीर्ण ज्वर और हृदय रोगमे गुणकारी है और शक्तिप्रद पौष्टिक है।

मालती कुसुमाकर—सुवर्ण भस्म १ तो० रससिंदूर तो. २, बंग भस्म नाग भस्म और लोह भस्म, प्रत्येक तीन तीन तोला, अभ्रक भस्म प्रवाल पिष्टि मुक्तापिष्टि प्रत्येक चार चार तोला सब विधिवत् साथ मिलाकर गायका दूध कदली कंदका रस इखका रस कमल फूलका रस और पके हुवे अजीरका रस प्रत्येककी एक एक भावना देकर सुखाकर घोटकर रखना। मात्रा २ से ४ रत्ती शहद मख्खन या पानीसे देना। सब प्रकारके वातप्रमेह वसामेह शुक्रमेह मधुमेह श्वेतमेह प्रदर गर्भाशयके विकार मिटता है और गर्भाशय गर्भधानके योग्य बनता है। इसके सेवनसे हृदय बलवान होता है। क्षय, फुफ्फुसके रोग, खांसी, दमा इनमें भी गुणकारी है।

महाभ्रवटी वृहत्—अभ्रकभस्म, तोला १०, पारद गंधक लोहभस्म सुवर्ण भस्म, प्रत्येक तोला पांच सबको भांगरा के रसकी २१ भावना देना और त्रिफलाके क्वाथकी एक भावना देकर रती प्रमाण गोली बनाना। २ से ३ गोली पानी मधु या मक्खन के साथ देना। सुवर्ण भस्मके स्थानमें स्वर्ण माक्षिक भस्म डालनेसे महाभ्रवटी लघु बनती हैं / गुण लिखे हुए है। सब प्रकारके प्रमेहमे माञ्जिष्ठ मेह चलनवाला प्रमेह मूत्र नलामे व्रण दाह में गुणकारी हैं। सुवर्ण भस्मके स्थानमे सुवर्ण माक्षिक भस्म डालनेसे महाभ्रवटी लघु बनती है। गुण मात्रा लिखे हुए है।

मधुमेहारि चूर्ण—जामुनके बीज तो. ११, कलोंजी जीरा ७ तो. आमळा तो. ५, हरडे तो. ५, मजीठ तो. ५, गोखरु तो. २० लोंडी पीपर तो. २०, साथ कूटकर चूर्ण बनाना। २ से ४ माशा भोजनतर पानीसे देना। २१ दिनतक देनेसे मधुप्रमेहमे बहुत फायदा होता है। दर्द पुराना होता तो एक दो महिनों तक सेवन करना।

चन्द्र कान्ति गुटी—इलायची भीमसेनी कपूर शक्कर जायफल गोखरु सेमलके मूलके रसको एक एक भावना देकर २ रत्तीकी गोली बनाना। २ से ३ गोली प्रमेहमे देना।

शतावर्यादि चूर्ण—शतावरी सफेद मुशली कोठा (कपित्थके फल)का गर्भ पुनर्नवा नागरमोथा अजमोद हीराबोल पाषाण भेद इलायची नागकेशर असगंध प्रियंगु (घउंला) लोहभस्म अभ्रकभस्म गिलोयका सत्व और शक्कर सब समभाग लेकर कपडछान कर रखना। माशा ०॥ से ०॥ तोला पानीके साथ देनेसे प्रमेहके रोगमें उत्तम गुणकारी है और पौष्टिक है।

धातु पौष्टिक गुटिका—अजमोद काली मुशली सफेद मुशली गोखरु असगंध सोंठ पीपल काली मीरच तज शिलारस रुमी मस्तकी जावत्री जायफल लोंग बलबीज तालमखाना केशर कौंचके बीजकी गीरी इलायची बदामकी

मीरी प्रत्येक तोला पांच पांच, कस्तूरी रती १५, चांदीका वर्क तो. १।, शीलाजीत तो ५ लोबानका फूल तो. १।, गिलोयका सत्त्व तो २॥ सब साथ मिलाकर तांबूलके रसमें दो रत्तीकी गोली बनाना। मात्रा २ से ३ गोली सुबह और शाम दूधसे देना। और उपर दूध पिलाना। खुराकमें दूधकी चीजें मिष्टान्न पदार्थ खिलाना और पानबीडा खाना। सब प्रकारके प्रमेह वायु खोटी गरमी मीटे। शरीर पुष्ट हो भूख लगे कांति बल बढे।

गोक्षुरादि अवलेह—हरे गोखरूका पंचांग तोला ४०० को कुचल कर उसमें डुबजाय उतना पानी डालकर १२ घंटा भिगो रखना। पीछे खुब मसल कर कपडछान कर उसमें असन (आजनीयो बीयो विजयसार) की छाल चारोली खेरसार सोंठ पीपल कालीमीरच हरड धाइके फुल मूलैठीका भूल गिलोय इलायची नागकेशर तज आवंत्री वंशलोचन आंबोधरो सेमलका मूल गिलोय मजीठ आगेथू (अगस्त्य–अगथीयो)का फूल बब्बूलका गोंद बला बीज तुलसीबीज हल्दी आवला अतीष नागरमोथ पीपलामूल कचूरा कपूरकचरी कचोदी प्रत्येक दस दस तोला शतावरी तोला २० असगंध तोला १५ गोखरू चूर्ण तोला ३० सबको कपडछान कर मवाहीमें मिलाकर पकाना घट्टहोनेपर शक्कर रतल ८० असी की चासणी कर उसमें उपरका मिश्रण डालकर पकाना घटने जसा हो जानेसे स्वांगशीत होने देना। पीछे रांगलगाये बरतनमें भरना। मात्रा २ से ४ तोला खिलानेसे सब प्रमेह श्वेत रक्त प्रदर गर्भाशयके रोग आदि मीटता है शक्तिप्रद पौष्टिक है।

मस्तक्यादि चूर्ण—रूमीमस्तकी बहुफली गिलोयसत्त्व गोखरू उटीजण इंद्रजौ चीनीकवाला सफेद मुसली काली मुसली कौंचा तालमखाना सब समान लेकर कूटकर मात्रा ३ से ६ मासा पानीसें देनेसे वीर्यस्राव व तुलाव शुक्रमेह मिटे।

चंदनासव—चंदनका चूरा तो. ४०, वाला, नागरमोथ, महाबला मूल कमल कंद प्रियंगु लोध्र पद्मकाष्ठ मजीठ रक्तचंदन पाठा चिरायता बडकी छाल पीपलकी छाल कचूरा पाट मुलैठी रास्ना परवल कांचनार आमकी छाल मोचरस प्रत्येक चार चार तोला सब कूटकर एक चिनाइ मिट्टिके बरतनमें भर डाल उसमें पानी रतल २०० दोसो और शक्कर रतल २५ पचीस ढाकके फूल तो, ६० कालीद्राक्ष तो २००, कूटकर डालना। आठ आठ दिनके पीछे हिलाते रहना। २ महिनेके बाद कपडछान कर रखना। सब प्रकारके प्रमेह श्वेत रक्त प्रदर और खूनी बवासीर किसी भी स्थानसे मुखसे या दस्तमें गिरता हुआ रक्त और पित्तप्रधान रोगोमें फायदा करता है।

देवकुसुमादि पाक—गायका दूध पक्का शे १६ सें मलमलके कपडेको ढोली पोटली (थेली) में लोंग तो. २० डालकर थेलीका मुख धागेसे बंध कर दे और दूधमे डालकर दूधको पकाना। अच्छा तरह गाढा हो जाय तब थेली नीकाल लेना। पीछे दूधका मावा बनाकर घीमें पकाना। पीछे बादामकी गीरी तो. ८० कूटकर मेला देना और कमल बीजकी गीरी तो ५, सफेद चदन चूरा तो. १॥ केशर तो १, कपूर तो ०॥, अगर तो. १॥, चन्दन तो. १।, लोह भस्म तो. ५ बंग भस्म तो ५ डालकर शक्कर पक्का शे. ४ चासणी करके उपरकी वस्तु डाले उसमें मिलाकर दो तीन तोलेका लड्डु बनाना अथवा बरतनमें जमाकर चक्ते बनाना हमेशां २ से ४ तो. यह पाक खाकर उपर दूध पीना। सब प्रकारके प्रमेह वातरोग मिटते हैं। बल कान्ति शक्ती बढती है पौष्टिक है।

पौष्टिक आथो—जायफल जावत्री लोंग इलायची इन्द्रजव दूधीया बच लोहभस्म तगर अगर सफेद चंदन वंशलोचन तवखीर रक्त चन्दन प्रत्येक तो. ढाइ ढाइ। कस्तूरी रती २१ भीमसेनी कपूर तो १। बादामकी गीरी तो ५ कीसमीस शे २।, सब कूटकर मीलाकर पीछे उसमे पीसी हुइ खांड शेर २॥ घी शेर ५ मेलाकर चीनाइ मीट्टीके बरतनमें रख मुख बंध कर ७ दिन तक गेहूकी कोठीमें रखना। पीछे निकाल कर २ से ४ तोला खिलाना। उपर दूध पीना। प्रमेह धातु स्राव मिटे स्तभन हो। बळ शक्ति बढे। सब प्रकारके प्रमेह गुणकारी है।

सामान्य उपाय

१ बबूलकी पत्ती दुधीक्षुरके पचांग गोनागेरु खुराखार समभाग कूट २ के ३ मासा पानीसे सब प्रमेहसे देना।

२ हीरवणी कपास के पान का रस तो. ५ मे शक्कर डाल पिलाना प्रमेह वीर्य दोषमे लाभ हो।

३ काले तिल तो. ४ कूटकर गुडके साथ खिलना १४। दिन खिलानेसे निंदमें होता हुआ पिशाव बंद हो।

४ तालमखाना तो १, कटींगण तो. १।, कालीमुसली तो २॥ सफेद मुसली तो २॥ शक्कर तो ५ सब साथ कूट ४ से ८ माशा पानीसे देना बहुमूत्र रोग मिटे।

५ नदीका सेवाल लाकर सुखाकर कूट कर चुर्ण करना २ से ४ मासामे शक्कर तो १ मिलाय पानीके साथ देनेसे ३ दिनमें बहुत वक्त होता हुआ पिशाव मिटे।

६ हलदी दारुहलदी हरड बहेडा आंवला समभाग कूटना आधा तो, चूर्णमें

१० तो, पानी २ तो, शहद डाल रातको भिगो रखना प्रातःकाल कपडछान कर पिलाना । ७ दिनमें चांद्र मेह मिटे ।

७ मैंदा लकडीको कूट कपडछान कर २ से ४ मासा दुधके साथ देनेसे पिशाबमें निद्रामें स्वप्नामें होता हुआ वीर्यस्राव बंद होता है ।

८ सफेदमुसली और ओटींगण समभाग कुट कर दोनो के समान डालकर मिलाकर ४ से ८ मासा पानीसे देनेसे रक्त प्रमेह मिटे ।

९ लज्जालुके पान तो ०॥ नागकेशरका चूर्ण तो, ०। और शक्कर तो, १ मिलाकर पानीसे देना ७ से १४ दिनमें पिशाबके साथ गिरता रक्त अटके गरमीका प्रमेह मिटे ।

१० गुलखैरान अनारकेपान मेंदीके पान प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूटकर मिट्टिके लोटामें रखना उसमें पानी तो. ४० डाल लोटका पर कोडिया ढककर अगासीमें रातभर रखना प्रातःकलमें पानी कपडछान कर उसमें शक्कर तो. २ डालकर पिलाना गरमीका प्रमेह मिटे ।

११ गोखरु तो. २ कूटकर मिट्टिके वर्तनमें डाल उसमें पानी तो. २० डाल अगासीमें रखना प्रातःकालको कपडछान कर शक्कर मिलाकर पिला देना । ७ दिनमें रक्तमेह गरमीका प्रमेह मिटे ।

१२ सोराखार कलमी तो २ रेवंचीनीशीरा तो. ०॥ चीनीकबाला इलायची जीरा खांड प्रत्येक एक एक तो कुट कर १४ पुडि बनाना हमेशां १ पुडी पानीसे देना पिशाबकी जलन मिटे, पिशाब साफ आवे ।

१३ वंग भस्म ६ रत्ती त्रिफला ०। तो मिलाय पानीसे देना ।

१४ बब्बूलके पके फळ (बावलका पडीया) तो ४ पीस शक्कर तो. ४ मिलाय पिलाना १४ दिनमें प्रमेह मिटे ।

१५ रसोत तोला २ गुलाब जल तो. ४० साथ मिलाया कपडछान कर शिश्नमें पिचकारी देनेसे दाह जलन मिटे अंदर की चांदी मीटे ।

१६ शेप सुंदर वंग भस्म सोनेगेरु प्रत्येक तोला १।, शीलाजित तो ०॥ साथ मिलाय ६ से ८ रत्ती पानीसे देना सब प्रमेह मिटे ।

१७ हीरबोल हालदी खारेक्षार कुटकी अरणी पंचांगका भस्म समभाग कूटकर ३ से ६ मासा गायके बछडेके मूत्रसे पिलानेसे १८ प्रकारके प्रमेह मीटे ।

१८ चमेलीका पंचांग और त्रिफला समभाग कूटकर १५ से २० तोला को २से ३ लोटा पानी डाल रातको भीगो रखना प्रातःकाल एक बरतनमें वह प्रवाही भर उसमें शिश्न और वृषणको डूबो देना । अंदरका जलन दाह मिटता है और अंदर के व्रण चांदा रुझ जाता है ।

१९ बब्बूलका गोंद तोला १ का पानी कर उसमें १ से २ माशा जवाखार डालकर पिलाना। पिशाबकी जलन पित्त प्रमेह मे लाभ होता है ७ दिन तक पिलाना।

२० भांगाके पान छायामें सुखाकर घोटकर रखना। मात्रा ३ से ६ माशा गायके घीके साथ देनेसे पित्त गर्मीका प्रमेह मिटता है।

२१ तालमखाना कूटकर तो ०॥का पानी १० तोलामें डालकर उसमें शक्कर तो १॥ और अगरू की लकडी चंदन की तरह प्रायः ६ से ८ रती घीसकर उसमें मिला पिला देना। इस प्रकार ७ से १४ दिन तक देनेसे सब प्रकारका प्रमेह मिटता है।

२२—पाषाणभेद जवाखार इलायची सोंठ हरड बहेडा आमळा और पुराना गुड सब समान भाग लेकर ८ रत्तीकी गोली बनाना। २ से ४ गोली दिनमें दो वार देने से सब प्रकारके प्रमेहमे फायदा होता है।

२३ उत्कटकका पचांग सुखाकर महीन पीसना। इस चूर्ण तीनसे चार माशामें आधा तोला शक्कर मिलाकर दूधके साथ देना। बहुत दफे होता हुवा पिशाब मिटे।

२४ शेमलका गोंद तो. १९ जायफल तो १२ पानीमें पीस कर ६ रतीकी गोली बनाना। ३ से ६ गोली पानीके साथ देनेसे २१ दिनमें प्रमेह मीटे। यह गोली कामोद्दीपक और पौष्टिक है।

२५ मनशीलमे बनायी हुयी नाग भस्म, सोंठ पिपल कायफल और जावत्री सब सम भागमे मिलाकर शहदमे गोली २ रतीकी बनाना। दिनमें दो फे दो दो गोली पानीके साथ देनेसे प्रमेह रोगमे उत्तम फायदा होता है।

२६ शतावरीका चूर्ण और चनेका आटा समभाग मिलाकर उसका भजीयां तीलके तेलमें बनाकर तृप्ति पर्यंत खाना। दूसरा कोई खुराक नहि लेना। ३ से ७ दिन तक खिलानेसे प्रमेह मिटता है।

२७ वडका टेटा (वडका पका हुवा फल) सुखाकर चूर्ण करना। १ से २ तोला चूर्णमें शक्कर मिलाकर पानीमे लेना। ७ से १४ दिनमें प्रमेह मिटता हैं।

२८ बब्बुलका फूल छायामें सूखाकर चूर्ण करना। उसमें समभाग शक्कर मिलाकर रखना। मात्रा ०॥ तोला पानीके साथ देना सब प्रमेहमें उत्तम हैं।

२९ भुइ दूधी (भूमिदुग्धका) जिसके छोटे पत्ते होते है और छाता जमीन पर फैलता हैं तोडने से दूध निकलता है उसको छायामें सुखाकर ५ तोला चूर्ण लेना. उसमें ५ तोला लाल चावल और ५ तोला शक्कर मिलाकर रखना मात्रा ०॥ से १ तोला पानीके साथ देने से ७ दिनमें प्रमेह मिटता हैं।

३० जायफल तोला १ लोंग तोला १ तज तो ५ नागकेशर पीला तो. ५ बादामकी गीरी तो. ५ राल तोला ५ नीमकी नीमोलीकी गीरी तो, १ शक्कर तो, १० सब साथ कुट कर पानीमें ६ रत्तीकी गोली बनाना १ से २ गोली पानीके साथ देना प्रमेह मिटे ।

३१ गुलाबी रंगका खजूर १५ से १६ तोला हमेशां खिलाना । १४ दिन तक खिलानेसे प्रमेह मिटता है ।

३२ कालीमिरच तज चीनीकबाला खसखस प्रत्येक पांच पांच तोला भांगका बीज ४० तो नाग भस्म ०।तो. सब साथ कुटकर ६ रतीकी गोली पानीसे बनाना २ से ४ गोली देना ७ दिनमें प्रमेह मिटता है ताकात आती है ।

३३ तालमखाना तो. २० कौंवचकी गीरी तो ५ ऊटींगण तो ०॥ काली मुसली तो. ५ खैरका गोंद तो १ सब साथ कुटकर खांड शे ॥ और घी शेर २॥ सब साथ मिलाकर चीनाई माटीके बरतनमें रख छोडना । २ से ४ तोला खाना उपर दूध पीना । प्रमेह नपुंसकता मिटता है ताकात आती है ।

३४ रायगुंदा (पका हुवा बडा गुंदा) के बीजकी गीरी निकालकर शे, १ बाइका गोंद शे, ०। (बाबडीके गोंद) भुंइ दूधी शे. ०।, तिलके पत्तोका चूर्ण शे. ०॥, शक्कर शे. १ सब साथ कुटकर उसमे गायका घी शे. ०॥ मिलाकर शहदसे गोली रत्ती ६ की नाना ४ से ८ गोली हमेशां खिलाना । खट्टा नमकीन पदार्थ बंध करना ।१४ दिनमें प्रमेह मिटता है ।

३५ भोंगरा बहुफली बोढियो कलार (गोरखमुंडी) प्रत्येक दश दश तोला, गोखरु तो २ मुलैठी मूल तो २, वायबिडंग तो ११, इलायची तो. ११, खैरका गोंद तो ५, पाषाणभेद तो २॥ शकर तो २०, सब साथ कुटकर रखना । ३ से १२ मासा पानीके साथ देना । उपर पोस्त के डोडाका पानी पिलाना । आधा तोला पोस्त का डोडा कूटकर उसमें एक से दो कप पानी डालकर रातको भिगो रखना और सुबह कपडछान कर इस चूर्णके उपर पिलाना ।

३६ सफेद मुशली पकाया हुवा टकण जावत्री लवंग कालीमिरच अक्कल करा सोंठ अफीम समिमस्तकी ऊंटकटा लोवान सब समभाग लेकर कुटकर तांबुल पत्र के रसमें ३ रत्तीकी गोली बनाना । २ से ४ गोली पानीके साथ देना । सब प्रमेहमें उत्तम फायदा होता है ।

३७ रगतरोहीडाकी छाल तो ०।। से १ को पीस कर उसमें शक्कर तो. २, डालकर १ से २ कप पानी मिलाकर पिलाना । उपर एक से दो लोटा रुचि हो इतनी छाछ पिलाना । दोसे तीन घंटा पीछे एक दो जुलाब लगेगा । खुराक खट्टा नमकीन तीखा न हो ऐसा खाना । ७ से २१ दिन तक देनेसे सब प्रमेह मिटता है ।

३८ कुष्ठ सफेद मुशली कौंवच बीजकी गीरी आंवला शतावरी तालमखाना प्रत्येक दश दश तोला, शक्कर १२० टोला सब साथ कूटकर मिलाकर रखना। १ से २ तोला पानीके साथ देनेसे लाला मेह मिटता है।

३९-जामुनको गुठली गुडमारकी पत्ती और सोंठ तीनों समभाग लेकर कपड़छान कर घी क्वारपाठाके रसमे मटर समान गोली बनाना। दो से तीन गोली भोजनके पीछे पानीसे देना। मधुमेह डायाबीटीसमें बहुत फायदा होता है।

४० बिल्व पत्र १ से १॥ शेर तक पानीमें महीन पीस कर रस निकालना। यह रस गाढा चीकना निकलेगा। ५ से ८ तोला यह रस शहद ३ से ५ तोलामें मिलाकर पिला देना। ४० दिन तक पिलानेसे मधुमेह मिट जाता है। यही प्रयोग गलित-कुष्ट वातरक्तमें भी बहुत फायदा करता है।



नेत्र रोग—आंखोके रोग

मनुजश्चक्षुरक्षां कुर्याद्यावच्च जीविताकांक्षा ॥
रात्रि दिन तुल्यानामन्धानां निश्यतुल्यमिह विश्वम् ॥(र ७)

जीनेकी आशा हो वहांतक मनुष्यको नेत्रकी रक्षाके लिये प्रयत्न करना रात और दिन समान हैं ऐसे अन्ध मनुष्यों चाहे दूसरी बातसे सुखी होवे लेकिन आंख बिना जगत उन मनुष्योंको नर्क समान है।

नेत्र रोगोंके सामान्य कारण

धूपमें फिरनेका अभ्यास, शीत जलसे अधिक स्नान करना पदार्थोंको स्थिर दृष्टिसे देखते रहना अतिशय मदिरापान, मलमूत्र और अधोवायुका वेग रोकना, बहुत खट्टा बहुत तीखा, बहुत गर्म खुराक लेना दौरामे सामनेका पवन लगना, अतिविषय, अतिक्रोध और अतिश्रम करना बारीक सूक्ष्म पदार्थ देखते रहनेकी आदत ऐसे अनेक कारणोंसे नेत्रके रोग होते है।

१ आंख उठना

कारण चिन्ह—मिट्टीका तेल (केरोसीन) से पढना, आंखोमे धुआ लगना, धूपमें फिरना, आंखमें कुछ पदार्थकी चोट लगना, सूक्ष्म पदार्थ आंख मे गिरना, गर्म चीज खाना, दूसरेकी उठी हुई आंखका चेप लगना, इत्यादि कारणोंसे और शीतला मसुरिका ताप आदि रोगोंके साथ यह दर्द होता है। जब आंखका सफेद भाग लाल हो जाता है और आंखमें सफेद कफ रुक्ष हो कर कंकर और रजकी तरह खटकता है, प्रकाश सहन नहि होता, आंखके पोपचां (आवरण) सूज जाते हैं।

मुक्तादि अंजन—(मोतीका सुरमा) मुक्ता पिष्टि तो० १। हलदी, पकाई फिटकरी लोध्र काला सुरमा इलायची दाना यशद भस्म, एरंडतेलमें पकाई हुई छोटी हरड बडी हरड, प्रवाल पिष्टि प्रत्येक द्रव्य एक एक तोला, शुद्धखपर तोला २ छोटी पीपल ०।, लोंग तो. ०। सोंठ रती १२, शक्कर तो २।, सब साथ महीन पीस, कपडछान कर अंजन करना। आंखके बहुतसे रोगोमे फायदा होता है।

विमलांजन—शक्कर तो ४, छोटी हरड (हिमेज) कच्चा नग ४, चीनीकबाला के दाना १०, सेंधानोन रती १२ सब साथ घोटकर अंजन करना। आंख पर जमा हुआ खून, छारी फुला आदि मिटता है।

चंद्रोदया वर्ति—बडी हरड, बच छोटी पीपल, काली मिर्च, बहेडेके बीजकी गोरी, शंखनाभि, मैनशील, समभाग घोटकर गायके दूधमें सोगठी बनाना। घीस कर अंजन करनेसे झांख खुजली पडल अर्बुद फूला, रुढा हुआ मांसुरनोंध और उठी हुई आंखमें अच्छा गुण करता है।

प्रकीर्ण प्रयोग

१. हलदीको निंबूके रसमें ४९ दिन तक रखना पीछे सूखा कर रख छोडना। आंख आई हो जब पानीमें घीस कर अंजन करना।

२. शक्कर और लोध्र दोनोंको महीन पीस कर रखना। सुरमाकी तरह अंजन करना।

३ देवदारकी लकडीको बकरेके पिशाबमें घीस कर अंजन करना।

४ नींमके पत्ते तोला १० और सोंठ रती १२ साथ पीसकर आंख आई हो उस पर पोटीस की तरह बांधना। आंखके सब रोगमें लाभ होता है।

५ ऊटकी डाढको गायके दूधसे पथ्थर पर घीस कर अंजन करनेसे आंखके बहुतसे रोग मिटते हैं।

६ समुद्र फळको अडीके तेलमे घीस कर अंजन करनेसे आंख आई हो, खुजली आती हो उसमें फायदा होता है।

७ हल्दी बडी सौंफ (वरियाळी), सौंफ (सुवादाणा), शक्कर, लोध्र, रसौत, अफीम छोटी हरड (हिमेज), प्रत्येक एक एक तोला कूटकर रखना। इसमेंसे १ तोला चूर्णमें २० तोला पानी डालकर गरम करना। पीछे कपडेकी पोटली उस पानीमे डूबा डूबा कर आंख पर छ पाकरना।

८ कृष्णादि सोगठी नागरमोथ छोटी पीपल, शंखकी नाभि, नील थोथा, हीराबोळ, खापरिया सब समभाग लेकर बारीक पीसना और निंबूके रसकी भावना देकर सोगठी बनाना। शहदमे घीस कर अथवा औरतके दूधमें तांबेके पात्रमें घीस कर अंजन करनेसे आंखकी पीडा खटका जलन आदि मिटते है।

९ रसोत लोध्र. बडी हरड, सोनागेरु, हलदी समभाग लेकर निंबूके रसमें महीन पीस कर सोगठी बनाना, पानीमें घीस कर आंखके रोगोमे अंजन किया जाता है।

१० निर्मलीके बीजको महेंदीके रसमें घीस कर अंजन करनेसे आंखको बहुतसे रोगोमें फायदा होता है।

११ नेत्रशलाका—त्रिफला, भांगरा, अदरखका रस, घी, गोमूत्र शहद और बकरीके दूध प्रत्येकके रसमे पिघाला हुआ सीसाको एक एक दफे बुझाना पीछे उसकी सलाइ बनाना यह सलाइ हमेशां सोती वखत आंखमें फिरानेसे आंखका तेज बढता है और कोइ रोग नही होता।

१२ मूलीका पान तो १० मे ३ रती नमक मिला पीस पोटीस जेसा बनाकर कपडेमें रख आंख पर पाटा बांधना। आंख आइ हो तो दो दिनमें मिटती है।

१३ बावोलु (Pustular Ophthalmia) आंख भाइ हो इस प्रकार लाल होती है । पानी गिरता है, प्रकाश सहन नही होता । कृष्णमंडलकी किनारी पर छोटी, राय जैसी फुन्सीयां होती हैं । बहुत करके यह दोनों आंखोमें होती है । कभी कृष्णमंडलके उपर भी फुन्सीयां हो जाती है । कंठमालके रोगीको भी यह रोग हर वख्त होता है । बच्चोमें ज्यादा होता है । बच्चे आंख पर हाथ रखता रहता है । खटका होता है । थोडे दिनके पीछे यह फुन्सियां फूट कर अच्छा हो जाता है ।

१४. वेळ (Pterygium) यह रोग ३० सालकी उमरके पीछे के मनुष्योंको ज्यादा होता है । आंखका रसपटल एक के नेसे मोटा (कुछ स्थूल) हो कर स्नायुकी माइ बढता है और कृष्णमंडलके उपर चढता है इसे वेळ कहता है । यदि यह कीकीके उपर आ जाय तो देख नही सकता ।

१५ तपोडियां—खील (grannlations) आंखकी पांपणके अंदर (Lids) पोपचामें होता है । उपरका पोपचा उलटानेमें बारीक लाल दाना दिखाइ देता है, वह खोटे खील कहा जाता है । अब उसका रंग सफेद होता है । उसे सच्चे खील कहते हैं जब आंख सख्त उठी हो ऐसी लाल हो जाती है । सूजन आता है । प्रकाश सहन नही होता । खटका आता है । कृष्णमंडलके उपर बारीक भूरे रंगका तपोडियां भी होता है । कभी लाल बारीक रेखाएं फैली हुइ दीखाइ देती है । पांपण (Eye-Lash) के खीलका डोलाके साथ घर्षण होनेसे डोला मलिन दीखता है । दृष्टि टूंका होती है । पांपणके भाग पर सूजन होनेसे और बाल गिर जानेसे श्वेतमंडळ और कृष्णमंडळके साथ उसकी किनारी मीलती है और आंख छोटी और चूंची होती है ।

१६ आंख का चांदो कृष्णमंडलका सूजन होकर सफेद या पीला डाघ पडता है और उसमे अल्सर जैसा होता है ।

१७ कृष्णमंडलका गड (Keratitis) बहारको कुछ छोटी बडी चीज आंखमें गिरनेसे आंख किसी भी कारणसे बिगडनेसे या अन्य कारणसे कृष्णमंडल लाल हो जाता है । उस पर लाल रेखाऐं देखनेमे आती है । प्रकाश सहन नहि होता । आंसु कहते है । पोपचामे सूजन पीडा खटका होता है । कृष्णमंडल निस्तेज रेखा वाला होता है । कभी उस पर गड छोटी-ग्रन्थी जैसा होता है । आराम होनेके पीछे उस जगह फूला पडता है । कृष्णमंडलके अल्प रसमें पूय होकर फूटता हैं और पूय उसमें जम जाय तो आंख बेठ जाती है अथवा गड-ग्रन्थी जैसा भाग बहार निकलता है ।

१८ फूला—अगर शुक्र कारण मंडलके ऊपर चांदा पड़नेके पीछे अगर सूजन होनेके पीछे उस पर सफेद दाग रह जाता है। वह रायके दानेसे लेकर कभी कृष्णमंडल जितना भी बड़ा होता है। बीचमें कीकी ऊपर आनेसे देखनेमें तकलीफ होती है।

१९ आंखका डेया-कारणचिह्न चांदा अथवा सूजनसे कृष्ण मंडल फूट जाता है अगर वह रुझ जानेके पीछे अर्थात् रोपण होनेके पीछे बढने लगता है। वह बोरकी गुठलीकी तरह बाहर निकलता है और कठिन होकर बढता है। उससे पीड़ा नहीं होती। लेकिन वह जब बढता जाता है। तब पीड़ा होती है। मस्तक दुखता है। आसु बहते है। पांपणे बंध नहि होती।

मोतीया चिन्ह पटल तिमिर Cataract

कारण चिन्ह—आंखका जल रूप रस पारदर्शक होता है वह जब अपारदर्शक होता है उसे मोतीया कहते है। बहुत करके ४० या ५० वर्षकी आयुके पीछे यह दर्द होता है। प्रमेह के रोगसे अथवा लकडी कांटा सुइ आदि लगनेसे या कमजोरीसे भी यह रोग होता है। बच्चोंको भी कभी यह रोग होता है। अंगुलिया न गिन सके वह मोतीया पड़नेका चिन्ह है।

२ झामर वा (Glaucoma)—कारण चिन्ह-इस दर्द में मस्तक पीड़ा होती होती है। पढा नहीं जाता। आंखमे झांख बढती जाती है। आंखका डोला कठिन और भारी होता है। आंखकी शिराऐ खूनसे भरी हुई और फूली हुई दीखता है। कीकी मंद और विस्तृत होती है। दियाके सामने देखनेसे आसपास इन्द्र धनुष जैसा मंडल दीखता है। आंखको समर नेन कपाल लमणामे दर्द शूल होता है। ये चिन्ह कभी दब जाता है और कभी ऐक वा महिनोंके पीछे उभडता है। और यह समय धीरे धीरे कम होकर एक दिन असह्य पीड़ा उत्पन्न हो कर आंख चली जाती है। किसीको यह झामरवा जिंदगी भर रहता है, मिट जाता है, फिर उभडता है। इस प्रकार चलते हुये और आंखका तेज कमी होता है। आंख बेडोल और कुरुप हो जाती है। पांपणे कृष्ण मंडल पर घसती रहनेसे उस पर सफेद फूला जैसी झारी जमती है। दिनोदिन नजर टुको हो कर दृष्टि कम होती है। प्रत्येक वस्तु स्पष्ट नहीं देखी जा सकती। यह रोग औरतेमे अधिक देखा जाता है।

३ नाकसुर-नासूर) (Lachryma abscess and Fistula) कारण चिन्ह: आंखके दोनों पोपचेके नाककि ओरके कोनेमें छिद्र होता है। उस छिद्रसे नाककी ओर सूक्ष्म रास्ता है उस रास्तेके द्वारा आंखका स्वाभाविक पानी

नाकमें आकर बाष्प हो कर श्वासोच्छवास के साथ उड जाता है। इस रास्ते में प्रतिबंध होनेसे आंखके कोनेसे पानी गाल पर बहते है। कभी वह नली पकनेसे पस निकलता है। इससे कानोमें छोटी फुन्सी होकर बरबार फुटती है और पस निकलता है।

४ आंजणी—(Sty) कारण चिन्ह आंखकी पांपणोंपर छोटी फुन्सी होकर पकती है इस कारण उस जगह थोडा दर्द होता है। यह कभी एक पांपण पर कभी दोनों पांपण पर होती है। इसे आंजणी अथवा अंजनन मिका कहते हैं।

५ आंखका कणा—(Foreign body ni the eye) (आंखमे बहारकी कोइ वस्तु गिरना।

कारण चिन्ह आंखमें धूल रेतीके कण या लोहा या किसी धातुकी कण आंखमे गिरता है तब आंखसे पानी बहता है। पांपणे पटपटाने अथवा पानी छांटकनेसे कणिकाये अथवा वह वस्तु निकल जाती हैं लेकिन वह वस्तु कणम डलमें अथवा सफेद डोलामें घुस गइ हो तो नही निकलती पांपणमें घुस गई। हो तो पांपण को उलट कर निकाल देना। परंच डोलामें घुस गया हो तो निकालनेमें सावधानी रखना।

६ लम्बी नजर-दीर्घ दृष्टी (Long Sight) कारण चिन्ह इससे आंखको दूरकी वस्तु स्पष्ट दीखती है लेकिन नजीककी वस्तु नहीं दीखती। इसे दीर्घ दृष्टि कहते है।

७ टूंकी नजर ह्रस्व दृष्टी (Short Sight) इस दृष्टिवाली आंखसे नजीककी चीज स्पष्ट दीखती है। लिखने पढनेमें तकलीफ नही होती। लेकिन दूरकी वस्तु या मनुष्य स्पष्ट नही दीखता।

छोटी उमरमें विद्यार्थी दशामें लिखने पढनेका बोझ ज्यादा रहनेसे औरशुद्ध घी दूधका खुराक नही मिलनेसे टूंकी दृष्टि होती है। वर्तमान शिक्षणमे विद्यार्थी और विद्यार्थीनीयोंकी टुंकी दृष्टि बहुत प्रमाणमें देखी जाती है। इसका कारण सच्चे घी दूधके खुराकका अभाव और लिखने पढनेकी हदसे ज्यादा तकलीफ यह है। देहात गामोंमें, कि जहां सच्चा घी दूध मिलता है, और आंखोको परिश्रम कम पडता है वहांके छोटे और बडे लोगोंका दृष्टि टुंकी नही होती। जब नगरोमे उपर लिखे कारणोंके साथ चश्मा-ऐनक पहिननेकी फेशन सीनेमा देखनेकी आदत इलेक्ट्रीक लाइट आदिसे भी आंख टूंकी दृष्टिवाली बनती है।

८ निर्बळ कमजोर दृष्टि—निरोगी आंख नजीककी चीजसे आकाश तक देख सकती हैं लेकिन बहुत लिखने पढनेकी आदतसे सच्चा घी दूधऔर नही

मिलनेसे आंखे कमजोर होती है। तब लिखने पढनेसे सिरमे दर्द होता है चक्कर आता है और हृदय मे भी कमजोरी मालुम होती है। कई कारणोंमे आंखके भीतरके तंतुओं कमजोर होनेसे भी आंख निबळ होती है और पढने देखनेमें आंख लगती है।

९ आंखकी सूजन—दोनो पोपचा सूज जाते है और दोनो लालघुम हो जाते है। शरीर और मगजकी गरमीसे जमाल गोटा जैसी चीजके स्पर्शमे जहरीली दवाइ के भापसे चोट लगनेसे आंखो पर सूजन होती है।

१० रतौन्धापन नक्तांध्य— इस रोगको दिनमे अच्छा तरह दीखता है लेकिन रातको बिलकुल नहा दिखता। रातको प्रकाश या अंधेरा आदि मालुम होता है।

सुखावती वर्ति—निर्मली के बीज, शखकी नाभि सोंठ, पीपल काली मिरच, सैंधानोन, शककर, समुद्रफेन रसौत वायविडंग, मनशील कुक्कुटांडका कवच सब समभाग लेकर कूट कर महीन कर कपडछान करना। पीछे तांबे अथवा कांसीके बरतनमे डालकर पानीसे महीन घोट कर वर्ति करना और छाया मे सुखना। पानीसे घीस कर सोते वख्त अंजन करना। इसके उपयोगसे वेल (Pterygium) घीसा कर आंख साफ होती है।

नागार्जुनी वर्ति— बडी हरड छाल बहिडाकी छल आंवला सोंठ पीपल कली मिरच सेंधानोन मुलैठी मूल पकाया हुवा नीला थोथा रसौत प्रपौंडरीक वायविडंग लोध्र तांबेका काट सब समभाग लेकर घोट कपडछान कर पानीसे वर्ति बनाना। तपोडियां, खील पटल, आयी हुयी आंख इत्यादि में पानीसे या गोमूत्रसे या ढाकके फुलके पानीसे घीस कर अंजन करना।

नयनामृतांजन—सीसा (Lead) तो १० को पिघालकर उसमें पारा तोला १० डालकर ठंडा करना पीछे उसे घोट कर उसमें शुद्ध किया हुवाकाला सुरमा मिलाकर महीन अंजन जैसा होनेके पीछे उसमें ढाई तोला भीमसेनी कपूर मिलाकर शीशीमे भरना। तिमिर पटल काच अर्म शुक्र अंर्जुन आदि आंखके रोगों मे बडा गुणकारी है।

पुष्पांजन—भीमसेनी कपूर तो १, इलायचीदाना रती २४, लौंग रती २४, नवसार रती ८, काली मिरच रती ८ सबको गुलाब जलमे घोटकर लोबान के फुलकी तरह फुल पाडना। पीछे उस फुलको घोट कर अंजन करना कृष्ण मंडलका दाह, गड, सूजन मिटता है।

गुटिकांजन—छोटी पीपल हरड, बहिहेडा मिळी, लाख, लोहेका काट सेंधानोन समभाग बारीक कर भांगराके रसमे दो दिन तक घोट कर वर्ति बनाना। हमेशां पानीमे घीस कर अंजन करनेसे मोती बिंदमे फायदा होता हैं। आंख फूला खुजली वेल मावला मे लाभ होता है।

लोध्र पटली—लोध्र अनारकी छाल डेढ डेढ तोला लेकर दहीके पानीमें पीस कर लुगदी बनाना, कपडेमे पोटली बांधकर आंखपर वह पोटली बांधना रातभर रखना इस प्रकार पंद्रह दिन करनेसे फूला कटता है।

फूलाका सामान्य उपचार—

१ खारेकके गुठली पानीमे घीस कर आंजना।

२ सगेमरमर पानीमें घीस कर अंजन करना।

३ कपूर और शक्कर समभाग कांसीके बरतनमें घोटकर रखना। अंजन करना।

४ समुद्रफेनादि वर्ति भीमसेनी कपूर माशा ४ कनक बीज, सोंठ, काली मिरच, पीपलीमूल समुद्रफीण प्रत्येक एक एक तोला सबको महीन कर उसमें चमेलीके फूल डालो पीस कर महीन कर वर्ति बनाना। घीस कर अंजन करते रहेनेसे फूला कटता है।

५ पकड़ हुइ फिटकरी तो. १ और घीके दियेसे बनाइ हुई मशी तो. २। दोनोंको गायका घी तो १० मे मिलाकर तांबेके बरतनमे डालकर कांसीके कटोरेसे तीन दिन तक घोटते रहना हमेशा ८ से १० घंटा तक घोटना। पीछे चसतकी डिब्बीमे भरना। अंगुलिसे अंजन करना। आंखोकी खुजली आयी हुई आंख, छाया, फूलो इत्यादिमें फायदा होता है।

६ इंगुदीका (इंगोरिया) का गर्भ अंगुलिसे आंजते रहनेसे फूला कटता है।

७ इंगोरियाके बीजको गीरि शंखका लीरा पारीश पीपल के बीजको गिरी सब समान भाग लेकर महीन कर बकरीके दूधमे चार प्रहर तक घोट कर पीछे बर्ती या गोली बनाना। पानीमें घीस कर अंजन करनेसे फूला कटता हैं।

८ गधेकी दाढ महीन पीसकर स्त्रीके दूधमे मिलाकर अंजन करना अथवा स्त्रीके दूधसे पथ्थर पर घीसकर अंजन करना फूला कटता है।

९ इमली (चिंचा) के बीज, कापूसको मूल और गधेका दांत प्रत्येक अलग अलग महीन कर समभाग मिलाकर पानीमे वर्ती बनाना। पीछे पानीमें घीस कर अंजन करना। फूला कटे।

१०-नीला थोथा और साठो चावल समभाग पीसकर स्त्री के दूध से तीन घंटा घोट कर वर्ती बनाना। पीछे पानीमें घीस कर अंजन करना। फूला मिटे।

११ कालो मिरच अफीम और कपूर समभाग घोटकर महीन करना पीछे इमली (चिंचा) के पानके रसमें घोट कर वर्ती बनाना। पानीमें घस कर अंजन करना फूला मिटे

१२ गदहेका नख जलाकर महीन कर दहीमें मलम जैसा बनाना। फूलाने अंजन करना।

१३ कांगको जलाकर महीन करना पीछे तीन चार रती आंखमें डल कर सो जाना। इससे मनुष्यके और पशुके भी फूला मिटता है।

१४ तिमिर हरी वती तिलके तेलमे पकाया हुआ घोडेका बाल तो २, तिलके तेलमे पकाया खजूरके बीज तो. २, काला खापरिया सफेद सुरमा, अफीम, हरडकी छाल, छोटी हरड, (हिमेज) अेलची दाना, लवंग चीनीकबाला, रसौत पकायी हुयी फिटकरी और शक्कर प्रत्येक दो दो तोला सब महीन पीसकर नीबूके रसमे कांसीके बरतनमे कांसीके कटोरेसे दो दिन तक घोंटते रहना। सुख जाने पर तुलसीके पत्तेके रससे वर्ति बनाना। छायामे सुखाना। पानीमें घसकर अंजन करनेसे छाला फूला तिमिर मिटे।

१५ अरणीके पत्तेका रस अंजन करनेसे शीतलाका फुला मिटे।

१६ उटकी दाढ पानीमे घीस कर अंजन करनेसे छाया फूला तिमिर मिटे।

१७ गदहेका दांत और शेमाका शिंग-साबरशिंग दोनो बारिक महीन पीस करके दूधसे वर्ति बनाना स्त्री के दूधमे घीस कर अंजन करनेसे फुला कटे।

१८ युनानी कवाथ-- उशने खुदुश, गुले बनफशाह, हरडका दल छोटी हरड (हिमेज) गुले खेद, काशनी प्रत्येक साढे सात साढे सात तोला, उनाब दाना १०५, काली द्राक्ष साफ की हुइ तो ११ शकर तो, ३० सब साथ कूटकर समभागसे १५ पुडिया बनाना। हमेशां १ पुडिका कवाथ पिलाना और उपर बडी हरडका मुरब्बा हरड नं १ खिलाना, नजला मोतिया मिटे।

१९ चिरौंजी गुंजाका मूल बकरीके दूधसे घीस कर अंजन करनेसे मोतीया मिटे।

२० शंखनाभि पानीमे घीस कर अंजन करनेसे तिमिर पडल मोतिया मिटे।

२१ मोमके मूलकी छाल छाया मे सुखाकर महीन कूट कर घोडे के पिशाब में वर्ति बनाना। हमेशां घोडे के पिशाब मे घीस कर अंजन करनेसे पटल मिटे।

२२ कृष्ण-द्रोणपुष्पी के पानको साठी चावलके ओसामण में पीस कर रस निकालना और हमेशां नाकमे १५-२० बुंद धीरे धीरे डालना । २१ दिन तक डालनेसे पटल मिटे ।

२३ सप्तामृत लोह--लोह भस्म जामूनके रसमें पकायी हुइ, हरडे बहेडा आंवळा मूलेठी मूल, प्रवाल पिष्टि, यशद भस्म सब सम भाग लेकर मिश्र करना। तीनसे छ रती दो समय शहद और घीके साथ लेकर उपर दूध पिलाना। इससे झामरवा (Glaucoma) और आंखके दूसरे बहुत रोग मिटते है।

२४ लेप--अमियाहलदी (आम्रहरिद्रा) मेढाशिंगी, काकडा शिंगी, रसौत समभाग लेकर कूट कर रखना। बकरी के दुध में घीस कर थोडा गर्म करके आंखके बाहरके मार्ग मे और ललाट मे लेप करना। इससे झामरवा मे फायदा होता हैं।

२५ देवदारकी लकडीको बकरीके मूत्र में चन्दनकी तरह घीस कर अंजन करनेसे परवाळा खील मिटे।

२६ देशी कालो शाही अथवा कपुर काचली अथवा अमिया हल्दी अथवा केसरसिंग घीस कर आंजणी के उपर लगानेसे दो दिनमे मिट जाती है।

ं२७ नयनचन्द्र लोह—लोह भस्म तो ८, अभ्रक भस्म तो ८, छोटी पीपल, काली मिरच, हरड, बहेडा, आंवळा काकडाशिंगी (कर्कटशृंगी) कचूरा, रास्ना, द्राक्ष कमलकंद, शतावरी, विदारीकंद, मूलेठीमूल, केशर, छोटी कटहरी मूल, सोंठ प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूट कर महीन कर दोनो भस्मों में मिलाकर त्रिफलाके क्वाथकी और भांगराके रसकी एक एक भावना देना। छायामें सूखाना। घोट कर रखना। मात्रा ३ से ६ रती शहद और घीसे लेकर उपर दूध पीवे। आंखका तेज बढे और धुंधी दृष्टि मिटे।

२८ अरिठेके (रीठा-अरिष्टक)के फलकी छालको महीन कर स्त्री के दूधमें मिलाकर अंजन करनेसे रतौंधापन मिटे।

२९ आंवले के बीजकी गीरी और बहेडे के बीजकी गीरी समभाग लेकर महीन कर सोते वख्त एक दो रती भरण की तरह आंखमे डालना। रतौंधा में फायदा होता है।

३० गायका खीरा (व्याइ हुइ गायका प्रसवके समयका दूध दोया जाता है वह) रतल १ में शक्कर तो ५ डालकर पिलाना। हमेशां सुबह और रात दो दफे पिलाना। रतौंधा मिटे।

३१ शक्कर और समुद्रफीण समभाग लेकर महीन कर मरणकी तरह तीन चार रत्ती आखमें डालना सात दिन में रतौंधा मिटे।

३२ जीयापोता—पुत्रजीवक कायफळ, ढाककी जड, वीलत्र फलका गर्भ, समुद्र फेनका गर्भ सब समभाग लेकर महीन कूट कर कपडछान कर रखना। रातको सोते वख्त अंजन करनेसे रतौंधा मिटे, फूला और परवाळा कटे।

३३ गावजबान (मोंपाथरी) का मूळ, पीस कर आखके कोनेमें नासुर पर लगाना अथवा सांपकी कांचली (सर्प कंचुकी) को जलाकर उसकी राख नासुर पर दबाना। ८–१० दिन करनेसे नासुर मिटता है।

३४ नासुरहर लेप—रूमी मस्तकी तो। ०॥, राल तोला १॥, कथ्था, हिंगुल, बोदार, सिन्दूर, कच्ची सुवर्ण माक्षिक, खपरिया और बेरजा प्रत्येक दो दो तोला लेना। पहिले प्रत्येक द्रव्य अलग अलग घोट कर महीन कर पीछे सब साथ मिलाना कवार पाठा के रसमें मिलाकर नासुर पर लगानेसे नासुर मिटता है।

३५ चक्षुरक्षांजन—शोधा हुवा शीशा (LEAD) तो ८ को पिघालकर उसमें पारा तोला ८ को डालकर ठंडाकर पीछे महीन पीस कर उसमें काला सुरमा तो ८ मिलाकर दो दिन तक घोटना। पीछे उसमे जसतका फुले अथवा भस्म छोटी पींपल, मोगराका रान, शंखकी नाभि हलदी निर्मली बीज घीसी हुवा चन्दन, लाख, शक्कर, मैंनशील समुद्रफेन चोनीकबाला, इलायची दाना, रसौत, बहेडे के बीजकी गीरी, नमक, प्रत्येक आधा आधा तोला और भीमसेनी कपुर एक तोला लेकर सब साथ महीन कर घोटकर शीशीमें भरना। आंख आगी हो, आंखसे पानी गिरना, आखका सफेद डोला लाल होना, बादला वेल तपोडिया खील, चांदा, कृष्ण मंडलकी सूजन, फुला परवाला, झांख पडल और दूसरे आंखके रोग अंजन करनेसे अच्छे होते है।

महामुक्तांजन चूर्ण—मोती चूरा, काला सुरमा पारद, कपूर, अगर, कालीमिर्च छोटी पीपल, सोठ, सैंघानोन. चोनीकबाला, हलदी, मैनशील, शंखनाभी, नीलाथोथा, कुकडेके इंडाकी फोतरी, बहेडे के बीजकी गीरी, कांस्य भस्म, वंग भस्म, अभ्रक भस्म, केसर, बडी हरडकी छाल, मूलेठीमूल, रोसाभर जुइका फूल तुलसी के बीज, अंजन वृक्षकी छाल करंज के बीज, नींमके पत्ते सिरहारा (असमतक,कासान, नागरमोथ, नांबेका काट, लेहेका काट, कपूर सब साथ मिलाकर महीन कर तीन दिन तक घोटते रहना। शहद के साथ अथवा आकेला अंजन करना। आंखके सब रोगमें अंजन किया जाता है। हमेशां अंजन करनेसे आंख नीरोगी रहती है।

अमृत काजळ—तिल के तेलका दिया कर तावडी मे मस पाडना वह मस तोळो १ फिटकिरी पकाइ हुई रती ६ भीमसेनी कपुर तोला ०।, काला सुरमा बारीक घोंटा तोला ३ सबसाथ एक कर उसमे गायका घी कदर जितना मिलाय कांसाकी थाली में डाल तांबेके लोटासे तीन दिन तक घोंट पीछे शीशी मे भर लेना। इसका अंजन अंगुलीसे किया जाता है। आंखके सब रोगोमें लाभकारी हैं। बच्चे को हमेशां आंजनेसे आंखे तेजस्वी रहती है।

ममीरा मुक्तांजन—सीसा (नाग) तोला ५ को पिघाल कर उसमे पारा तोला ५ डाल कर एकांगशात कर पीसना महीन होजने के पीछे उसमे शुद्ध काला सुरमा तोला १० ममीरा तोला ५, मुक्ता पिष्टी तो २॥ प्रवाल पिष्टी तो ५, कच्चो सुवर्ण माक्षिक, महिन पीसी हुइ तो ५, शुद्ध, समुद्रफेन गर्भ तो. ५, यशद भस्म तो. ५, शखनाभी तो. २।, ईलयचीदाना तो १, चीनीकवाला तो. १, सेंधानोन तोला ०॥ सब साथ कूट महीन पीसकर केली के स्थम्भका रस, गुलाबजळ, नीमके, परवेका रस निवूका रस इमली के पान कारण प्रत्येककी एक एक भावना देना सुख जाने पर भीमसेनी कपूर तोला १॥ मिलाकर घोटकर रखना आंखके सबरोग मे अंजन किया जाता है हमेशा अंजन करनेसे आंखकी रोशनी बढती है चशमा अनेकका नंबर कम होता जाता है।

षडबिंदु तैल—एरंडका मूल भगर शतावरी जीवंती (खरखोडी) कल रास्ना सेंधानोन भांगर। वायविडंग मूलैठी सोंठ प्रत्येक चार चार तोला कूट कर उसमे काले तिलका तैल बकरीका दुध भांगराका रस प्रत्येक चार चार कच्चाशेर तल डाल कर पकाना पानीका अंश जल जाय जब कपडछान कर रख छोडना सोती वक्त नाकमे छे छे बुंद, डालनेसे आंखका तेज बढें, चशमा का नंबर कम हो, दांत के रोग मिटे एक साल तक डालनेसे बाल काला हो, बालके मूल दृढ हो।

नयनामृत लोह—जामूनमें पकायी हुयी लोहभस्म तोला ३२, मूलैठी मूल छोटी पीपल वंशलोचन प्रत्येक तोला चार, चार आंवला तो. ३२ शक्कर तोला ३२, बडीहरड तोला ८, बहेडा तोला १६ सब साथ घोटना। मात्रा ६से१२ रत्ती तक शहद घृतसे देनेसे दिमाग आंखके रोगमे बडा लाभ होता है।

नागार्जुनी शलाका सीसा (नाग) को पीघालकर त्रिफलाके क्वाथमें १०० दफे डुबाना पीछे उसकी सलाइ बनाना यहआंखमे फिरानेसे तेज बढता है आंखकें बहुतसे रोग मिटते हैं।

मालती वर्ती–वत्सनाभ तोला १६ को बकरी के दूधमें घोंट सुखाना। मैंनशील तोला ८, को गायके दूधमें घोंट सुखाना। कालो मिरच तोला ४को औरतके दूधसे घोंट सुखाना। सेंधानोन तोला २ सहजना के पानके रसमें घोंट सुखाना। पीछे सब चीजे साथ मिलाकर बकरीके दूधमें घोंट वर्ती करना पानीमें घीस अंजन करना। सुरमा जैसे पावडर रखा होतो सलाइसे अंजन करना। आंखके बहुतसे रोगोमे लाभ होता।

नेत्ररोग हर मिश्रण १–सप्तामृत लोह तो १, अमृतासत्व तोला ३, मुक्तापिष्टि, तो ०।, शिलाजित तोला १, सुवर्णवसंत मालती तो ०॥ सब साथ मिलाय शीशीमे भरना। प्रातःकाल ३ से ६ रती शहद घृतसे देनेसे नेत्ररोग मस्तक रोग हृदय रोगमें लाभ होता हैं।

नेत्र रोगहर मिश्रण— २ प्रवाल पिष्टी तोला २, स्वर्ण माक्षिक भस्म तोला १, वैडूर्य पिष्टी तोलो ०। मूलैंठी मूल तोला २ सब साथ मिलाय ३ से ४ रती च्यवनप्राश जीवन के साथ देनेसे नेत्रके मगजके हृदयके रोग उष्णता दाह अम्लपित्त रोगमे लाभ होता है।

नेत्र रोग हर मिश्रण ३, मुक्ता पिष्टी तोला १, निलम पिष्टी तो ०॥, पुखराज पिष्टी तो ०॥, सप्तामृत तो २ जहरमोहरा पिष्टी तो. १ सुवर्ण भस्म तो. ०॥ सब साथ मिलाकर घोंटकर रखना प्रात काल ३ रत्ती मात्रामे ब्राह्मी अवलेह १ से २ तोलाके साथ लेना।

उपर लिखे मिश्रण चलता हो तब महा मुक्तांजन कृष्ण अथवा ममीरा मुक्तांजन अथवा नयनसुधा आंखमें आंजते रहना।

पलाशमूलार्क पलास (ढाक-खाखरा) के मूलसे निकाला हुआ यह अर्क जल है इसमे आल्कोहोल बीलकुल नहि है। नलिका यंत्रसे खींचा हुआ जल रुप यह है सह प्रातःकालमे १ चम्मच दुध के साथ लिजाती हैं और सोती वखत एक दो बुंद आंखमे डाले जाते हैं या सलाइ डुबोकर आंखमे फिराइ जाती है।

अहिफेनादि लेप अफीम तोला २॥, बोदार चींग तो. २॥, केसर तो. १।, पत्रायी फिटकीरी तो ०।, सब साथ पीस सोगठी बनाना पानीमेंया निंबुरसमे घीसकर आंखके रोगमे बहार के भागमे लेप किया जाता है।

वासादि फांट, अडूसो सोंठ गिलोय दारुहलदी रसोत चित्रक अतिविषा नीमकी छाल कुटकी हरड बहेडा आंवला नागरमोथ हलदी इन्द्रजौ कुडेकी छाल कदतीक्ष्ण विजयसार (अंजनसार) की छाल सब सम भाग लेकर कुटकर रखना।

१ से २ तो चूर्ण मे १ से ३ कप (प्रायः ३० तोला) पानीमे भिगो रखना प्रातःकाल कपडछान कर उसमे २ से ४ तो. शहद मिलाकर दिनमें दो दफे पिलाना । अकेला अथवा नेत्ररोग पर दी जानेवाली किसी औषधके उपर भी पिलाया जाता है ।

हरिद्रा—योग-हलदीको खडी गांठ निंबूमे डालनी निंबूसुख जाय तब निकालकर दूसरे निंबूमें डालना इस प्रकार तीन निंबूमे डालनेके पीछे निंबुसुख जानेपर हलदीकी गांठ रखछोडना । आंख लाल हो—आयी होतो पानीसे या शहद म घीसकर अंजन करना । आंखमे खुजली आती हो आंखकी किनारी लाल हो तो मांगरा के रसमें घिसकर आंजना । आंखमे झांक हो कम दिखाता हो तो स्त्रीके दूध (घ त्रण) मे घींस आंजना । पटलमे ढाकके मूलके अर्कमे घिस आंजना रतौंधा (नक्तान्ध्य) मे गर्म जलसे घिसकर आंजना । आखमे परवाला खील तपो डिया—पुष्प फुन्सीयामे पुननवा मूलके रससे घिसकर आंजना ।

कपूर—पुष्पांजन कपूर तो १ और छोटी पीपल पीपरीमूल इलायचीदाना चीनीकशाला मूलेठी मूल प्रत्येक आधा आधा तोला लेकर सबको महीन पीस पीतलकी थाली मे बीचमें रखकर उपर कांसीका बडा कटोरा ढक कर गेहुं के आटे से संधि बंध करना । पहिले पीतलकी थाली मे कांसीकी कटोराको पेक किया हैं ढक जाय । इतनी रेती डालना पीछे दीया जलाना पीछे ईटका चुला बनाकर उसपर पीतलकी थाली रखकर नीचे तिलके तेलका दीवा जलाना दीवाकी शिखा थाली के तलुए परलगे इस प्रकार दीवा जलाना । २० तो तेल जल जाय जब स्वांग शीत होनेपर सभाल कर रेती निकाल देना और कांसीके कटोराको गेहुका आटा लगाया है वह सभाल कर निकाल देना पीछे कटोरा पर लगा हुआ फूल ले लेना यह अंजन करने से वात पित्त कफ जन्य नेत्र रोग फूला परवाला खील फुन्सीयां आदि मिटते हैं ।

सिद्धांजन—शमनामी मैनसील सुरती खापरिया (सुरती खपर) सैंधानोन नमकका शंत इलायचीदाना सूराखार कपूर भीमसेनी कपूर चिनीकशाला लवंग छोटी पीपल पिपरीमूल पकायी फिटकीरी पकाया नीलाथोथा लेंड्र कालीमीरच अमेलीयाका बीज जीरा चोमेंड हलदी छोटी हरड बडीहरड निर्मलीका बीज प्रत्येक एक एक तोला सुर्मा २ तोला और सरसो के तेलकी मषी काजल १ तोला सबसाथ घोट कर तामे-ताम्र के बडे थालमे डाल उसमे भरणीका रस डाल कर तामे के डोइसे घोटना महीन हो जाय जब वतीयां लोगठी करना पानीसे घीस अंजन करना आंखके सब रोगमे उत्तम लाभ होता है । आंख उठना आंख लाल होनी

चीपडा जमना खुजली परवाळा नेत्र फूली फूला पटल गेल आदि मिटते है और हमेशा अंजन करनेसे आंखे तेजस्वी रहती है। सरसो के तेल की काजल इस प्रकार पाडना रुइकी बत्तीका बाट कर आक के दूध मे भिगो कर सुखा ना पीछे उस बत्ती से सरसों के तेलका दिया जलाय काजल पाडना वह काजल इस अंजन मे डालना।

कृष्णसर्पं वसाशंख कतकात्फल मंजनं ॥
रसक्रियेयमचिरादंधानां दर्शनप्रदा॥ वाग्भट॥

भुजगवसांजन—सपनागी और निर्मली के बीज बीस बीस तोला लेकर बहुत महीन पीस मिलाना। सांपके मुखमे १० इंच काटकर पीछे के भागके अंगकी चरबी लेना। गोला बनाना ओरंडेके पत्ते लपेट कर सूतसे बांध कर पीछे उसपर सफेद मिट्टी एक इंच मोटी लपेट कर सुखाना पीछे उसे एक बडे कुंडेमे रख उपर नीचे रेती डाल ढंक देना। पीछे चुल्हेपर चढाय अग्नि जलाना नव घंटा अग्नि देकर स्वांगशीत होने देना। पीछे मिट्टी पत्ते निकाल कर अंदरका गोला संभालकर पीस कर काजल घोट कर रखना। जरूरत लगे तो कृष्ण घांसी नरसी और मिलाकर आंजन जैसा बनालेना। यह अगुलीसे अंजन करनेसे आंखके सबरोग मिटते है। और वागभट के अनुसार अंधोंको दृष्टि मिलती है। निर्धूम अग्निपर दो चार रती काजल डालकर उसका धुवा देनेसे भी लाभ होता है।

सर्पांजन—काला सांप तुर्त मरा हुआ लेकर उसको मुखसे १० से ११ इंच काटकर फेंक देना। बाकी के शरीरका टुकडाकर एक मिट्टीके मटकी मे डालना और उसमे गायका घी शे. १ डालकर मटकी का मुख कपड मिटीकर बंद कर गज पुटकी अग्नि देना। पीछे निकाल मटकीमें भस्म बनी हो वह १ तोला लेना। उसमे नीलाथोथा १ तोला कच्ची सुवर्ण माक्षिक १ तोला और खापरीआ १ तोला महीन पीसकर मिलाना और दिनभर घोटकर अधिक महिन करना इसमें से १ एक तिल जीतना आंखमे आजना। आंखके अंधापन मिटता है (पुरानी बहीमेसे)

माक्षिकांजन वर्ती—कच्ची सुवर्ण माक्षिक काली मिरच पीपल सोंठ निर्मलीबीज खापर कुष्ट समुद्र फेन काला सुरमा वायविडंग हाफकर प्रत्येक एक एक तोला लेकर महीन कर बकरीका दुध तोला ४० मे घोटना दूध सुखजाय जब वर्ती या गोळी बनाना। पानी मे घीस अंजन करनेसे तिमिर पटल खुजली खील परवाळा मिटे।

कज्जलांजन—एक तामेका बडा लोटा लेकर उसमे पानी शेर १॥ और गायका घी शेर १॥ डाल कर मुख मे पक्का कपड मिट्टी कर जमीन में एक खड्डा खोद कर उसमे रख उपर मिट्टी दाबना जमीन मे उसे गाडना। मार्गशीर्ष शुक्ल १५ पूर्णिमा से लेकर ज्येष्ठ शुक्ल १५ पूर्णिमा तक जमीन में रखना पीछे उसमे से घी निकाल कर शीशामे भर रखना सलाइ से अंजन करने से छाया पटल तिमिर और आंखो के अन्य रोगो मे लाभ होता है।

अर्कदुग्ध प्रयोग--आक का दुध पांवके १० नखो पर और हाथ के के १० नखोपर लगाना। नख के मूल से जहां चमडी के पाससे नख शुरु होता वहासे सारे नख पर लगाना ३ दिन करनेसे आयी हुइ आंख मिटती हैं।

प्रकीर्ण प्रयोग

१ बडी हरडकी गुठली निकाल कर १० तोला शक्कर ५० तोला दोनो को पीस बकरीके दुधमे घोंट कर एक एक तोलाकी गोगठी बनाना पानीमें घीस कर अंजन करनेसे मोती बिंदु मोतीया आता हो तो अटक जाता है आया हो वह पिघल जाता है।

२ खपरिया तो १, सोराखार तो १ साथ तीन दिन तक घोंटना पीछे उसमें कपूर तो. ०। तथा कस्तूरी रती १२ मिलाकर घोंटकर रखे। अंजन करनेसे छाया पटल तिमिर खुजली मिटे।

३ मिलोय पुराना शहद सेंधालोन प्रत्येक तो १ मिलाकर महीन कर शीशीमे भर रखना। अंजन करनेसे छाया छारी मिटे,

४ आकके दुधमे रुइकी बत्ती भिगो कर सूखाना। पीछे उस बत्तीको सरसोंके तेलमे डालकर काजल पाडना। उस काजलको गायके घीसें मिलाकर अंजन करनेसे आंखके बहुतसे रोग मिटते हैं।

५. बच कुष्ठ शखनाभि बेहडेके बीजकी गीरी छोटी पीपल प्रत्येक आधा आधा तोला, कालीमिरच तो. ०। दो दिन तक बकरीके दूधमे घोंट कर गोगठी बनाना। पानीमे घीस कर अंजन करनेसे पडल, स्त्रीके दूधमें घीसकर अंजन करनेसे खुजली, गायके दूधमें घीस कर अंजन करनेसे आंखके बहुतसे रोग मिटते हैं।

६ पारेवां (पारावत) की चरक और सोंठ समभागमें पीस कर अंजन करनेसे छाया और पडल मिटे।

७ धनीया सोंठ प्रत्येक चार चार तोला। गेहू का सत्व ४० तोला। शक्कर ८० तोला, सब घीमें मिलाकर दो तीन तोला खिलानेसे आंखका तिमिर रोग मिटे और तेज बढे।

नासा रोग—नाकके रोग

कारण—बहुत पानी पीनेसे, धूल श्वासमें जानेसे बहुत भाषण बहुत निद्रा बहुत जागरण करनेसे बहुत पानीमे न्हाना इत्यादि कारणोसे, वमन तथा अश्रुका वेग रोकनेसे, दूसरे कइ कारणोसे नाकके रोग होते है ।

चिन्ह—शरीरमे जीर्ण ज्वर रहता हो ऐसा लगता है । मस्तक भारी हो जता है । मस्तकमे, लमणामे, गालमे बारीक दर्द होता है । उसके उपर कपडा रखनेसे या दबानेसे अच्छा लगता है । नाकसे या मल पानी गिरता है । नाकसे श्वासोच्छ्वास लेना कठिन होता है । दस्त कब्ज रहता है । भूख कम लगती है ।

पथ्यापथ्य—एक सप्ताहमे एक दो दफे जुलाब लेना । भूख अच्छी लगे जब भोजन करना । कपडा पहिन रखना । ठंडे पानीमे न्हाना नही । प्रवाही पदार्थ कम खाना । दालभात खीचडी दूध ऐसा लघु खुराक लेना । लोंग पीस कर गरम कर ललाट पर लगाना । कान पर कपडा बांध रखना । शरीर पर पवन न लगे यह ध्यान रखना । चना और कुलथीका ओसामण लेना । अदरख लशुन प्याज सोंठ काली मिरच आदि मसाला खुराकमे लेना । इस रोगीको पवन न आवे ऐसे स्थानमें रखना और मस्तकपर गर्म और वजनदार कपडा बांधना शरीर पर खोपरा (टोपरा) अथवा सरसोंका तेल दिनमे दो दफे मालीश करना ।

पीनस—प्रतिश्याय

कारण—ऋतुके फेरफारसे, वर्षाका ताजा पानीमे, अधिक न्हानेसे, वर्षाऋतुमें खुल्ली हवा लेनेसे, भेजवाली और सीमेन्ट बिछाइ जमीनमे सोनेसे, मलमूत्रका वेग रोकनेसे, अजीर्ण, बहुत बोलना, क्रोध जागरण, अतिनिद्रा आदि कारणोसे यह दर्द होता है ।

चिन्ह—वात प्रधान पीनसमें सिर भारी रहता है, जकड जाता है, आलस्य आती है, रोमांच होता है, श्वासोच्छ्वास बन्ध हो जाता है गला और ओष्ठ सूखता है मस्तकमे लमणोमें पीड होती है, स्वर बैठ जाता हैं । पित्तप्रधानमें पीला स्राव होता है, । मनुष्य दुर्बल और पांडुवर्णा होता है । शरीर और मस्तक गर्म रहता है नाकसे जलन और धुआ निकलता है । ऐसा भास होता है । कफ-शरदी प्रधान दर्दमे ठंडा सफेद चीकना स्राव होता है, आंखे सूज जाती है, गला तालु और मस्तकमें खुजली आती है । त्रिदोष जन्य दर्दमें तीनों दोषोका न्यूनाधिक चिह्न मालूम होते है ।

पीनस-पुराना सळखममें श्वास कष्टसे लिया जाता है। नाक सूखना है। धुवा जैसा निकलता है। अच्छी बुरी गंध नहीं जान सकता और प्रतिश्याय जैसे चिह्न मालूम पड़ते है।

विडंगादि नस्य—वायविडंग सेधानोन, हिंग, गुगल, मनशील और वच (वचां) सममाग कुटकर कपडछान कर रखना। पीनस और प्रतिश्याय वालोंको सुंघाना। तीन चार दिन सुंघनेसे आराम होता है।

पीनस हर नस्य-छींकनी (सुंघमेकीतमाकु) तो २०, छोटी पीपल, सहजानाकेबीज वायविडंग प्रत्येक तो। १०, कालीमिरच तो २॥ सबसाथ कुटकर कपडछान कर रखना और पुराना और नया पीनस प्रतिश्यायमें सुंघाना।

चिन्नघंटावटी-पारद तो १०, गंधक तो १०, ताम्रमस्म, लोहमस्म, शंखमस्म अभ्रकमस्म, पकाया हुवा टंकण, कालीमिरच, सोंठ पीपल, लवंग, दालचिनी, प्रत्येक पांच पांच तोला, अजवाइन अजमोद, हल्दी, सेंधानोन, प्रत्येक तो. ४, सब साथ मिलाकर फोदीनाके रसकी और अदरखके रसकी एक एक भावना देकर गुंजा जेसी गोली बनाना। मात्रा ३ से ६ गोली गर्म पानीके साथ अथवा तुलसीके पानके साथ देना।

चित्रकहरितकी—चित्रक रतल २०, छोटीकटहरी पचांग, अरणी पचांग, अडूसे पचांग, और कटहरीके फूल प्रत्येक दस दस रतल, बडी हरड रतल १०, सत्यानाशो (स्वर्णक्षीरी) का पंचांग रतल २॥, नागरवेलका पान रतल २, सब साथ कूटकर सबसे १६ गुना पानी डाल पकाना. चतुर्थांश रहने पर उतार कर कपडछान कर रखना और हरडको अलग कर सुखाकर बीज निकालकर उसका चूर्ण बनाना। और क्वाथमें हरडका चूर्ण डालना। और सोंठ पीपल काली मिरच. दालचीनी, लवंग, वंशलोचन, वायविडंग, बहिडाछाल जवाखार अजमोद अजवाइन हल्दी आम्रहरिद्रा पाठा सेंधानोन गजपीपल अडूसेके पान प्रत्येक तो ४०, लेकर कूटकर रुमालासे छानकर क्वाथमें डालना। और अभ्रक भस्म रससिंदूर, साबरसिंग भस्म प्रत्येक तोला ८ डालकर पकाना। थोडा घट्ट हो जब उसमें गुड रतल २०० डालकर पकाना। मात्रा दोसे चार तोला दी जाती है। उपर गरम दूध पीना। प्रतिश्याय पीनस नाकके अन्य रोग, क्षय कफ श्वास खांसी हृदय रोग, पेटके जन्तु आदिमें गुणकारी है।

कलिंगादि नस्य—इन्द्रजव, हिंग, काली मिरच, बेरकी लाख, कायफल, कुठ, बच, सहजनेके बीज, वायविडंग सब सममाग लेकर महीन कूट कपडछान कर तमाखुकी तरह सुंघवा।

पीनहर मिश्रण—१ रक्तपर्पटी तोला. ०।, ताम्रभस्म तो. ०॥, अष्टापद पर्पटी तो. १, चोसठपोरी पीपर तो. २, बाबरशिंग भस्म तो. १ सब साथ पीस चार से छ रती सुबह और शामको चित्रक हरीतकी के साथ लेना।

पीनसहर मिश्रण—२ सुवर्ण वसंत मालती तोला. ०।, मुक्ता पिष्टि तो. ०।, अग्नि रस तो. १, शुक्ति भस्म तो. १, सोंठ तो. १, सब साथ घोटकर रखना। ४ से ५ रती सुबह और शामको अमृत भल्लातक अवलेह के साथ दो महत देना।

प्रयोग—१ खसखस तो १० अग्निपर धीमी आंचसे कच्चेपनके पकाना। हमेशा आधासे एक तोला तक खिलानेसे प्रतिश्याय मिटता है।

२. केसर छोटी पीपल सोंठ सममाग कूट कर रखना। उसमें से ३–४ रती लेकर गुडका पानी मिलाकार नाकमें पांच दश बुंद डालनेसे नाकके बहुतसे रोग मिटते हैं।

३ नवसार और कलिचुना सममाग लेकर एक शीशोमें डालकर उसमें पानी डालना और मजबूत धून दे रखना। आवश्यकता हो जब सुंघना।

४ कुष्ठ तोला ५, कूट कर उसमें १५ तोला बीडीका अरदा मिलाकर बीडी बनाना। पीछे वह बीडी पिलाना।

५ वरुण-वायवरणाकी छालका क्वाथ पिलाना।

६ कायफल काकडाशिंगी पुष्करमूल सोंठ पीपर कालीमिरच धमासा कालोजीरी सबको कूट कर १ तोलाका क्वाथ पिलाना।

पीनस हर धूम—शुद्ध हिंगूल तो ११, काली मिरच तो. ११, बारीक कर महीन पीस आकके दूधमें घोट कर महीन पीस दस दस इंचके कपडेके टूकडे पर लपेट कर सूखाना। पीछे उसकी बत्तीको आगमें जलाकर नाकमें उसका धुवा लेना इस प्रकार एक दिनमे चार पांच दफे लेना। एक बत्ती ४ दिन तक पहुंचाना।

मरिचादि वटी—काली मिर्च, चित्रक, हरड, जीरा चीनकबाबा, पीपली मूल कनकबीज, तबखीर, कत्था, अनारको छाल सोंठ सब सममागसे लेकर कूट कर कपडछान कर गुडमे एक माशाकी गोली बनाना। दिनमें दोसे चार गोली गरम पानीसे लेनेसे पीनस मिटे। नाकसे गिरता हुआ पानी मीटे।

रत्नपर्पटी—पारद तो. १०, गंधक तो. २०, प्रवाल पिष्टी, मुक्तापिष्टि, स्फटिक पिष्टी, गोमेद, वैक्रान्त, अभ्रक भस्म प्रत्येक तोला पांच लेकर पर्पटोकी तरह पकाकर ढालना, पीछे उसे घोंटकर धतूरेके पानका रस, सहजनेका रस, चित्रकमूलका क्वाथ और अदरखका रस प्रत्येकको एक एक भावना देकर सूखा कर रखना। मात्रा २ से ४ रती शहदसे नाकके सब रोगमें, छातीके रोगमें खांसी श्वास संग्रहणी प्रदर प्रमेह आदि रोगोंमें गुणकारी है।

नासारोग हरी वटी—पारद गंधक अभ्रक भस्म, विभायरा अकलकरा चोपचीनी कूथिया वच, चित्रकमूलकी छाल, इलायची तज लवंग, सोंठ पीपर मरी कायफळ पुष्करमूल, जवासा, सब समभाग लेकर कूट कर तुलसी रस और अदरख रसकी दो दो भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना। दो से चार गोली पानीसे अथवा चित्रक हरीतकी अथवा कंटकारी अवलेहसे देना। नाकके सब रोग, खांसी, श्वास, स्वरभंग, हृदयरोग, दमा आदिमें बहुत फायदा होता है। पूतिनस्य, नाकमें पूय-पस, नाकका पाक, छींकका दर्द, सुगंधको नहीं पहिचानना नाकका, दाह, श्वासका दमन, नाकका स्राव, नाकका मसा मांसार्बुद, नासुर, नाकसे रक्तस्राव आदि नाकके रोगोंमें, गुणकारी है।

कर्णरोग कानके दर्द

कारण—कानके बाहरका भाग, अंदरका भाग पड़दा आदिमें सूजन होकर पैदा होती है। पस बहता है, शूल निकलता है। और ऐसे दूसरे भी दर्द होते है। कानमें बीज कंकर आदि घुस जानेसे कान पकता है। वायु का प्रकोप होता है। पीछे उसमें पित्त कफका संबंध होनेसे अनेक प्रकारके उपद्रव होते है। मस्तक पर चोट लगनेसे, कानपर हाथकी थपाट (चोट) लगनेसे, जलमे डुबकी मारनेसे, कानमें व्रण होकर पकनेसे पूय पस और पानीका स्राव होता है और अन्य भी रोग होता हैं। –

कानका शूल—(चसका)-सरदीसे बारिश-वर्षाऋतुकी हवासे, ठंडा पवन लगनेसे, ठंडा पानी कानमे जानेसे, कानमें मसा होनेसे, कानमें बहारकी कोइ चीज जानेसे कानमें पीडा होती है।

कल्याण तेल—लशुन, इन्द्रायणके फल, मूली(मूळा), को सुखाकर की हुई राख, सौंफ सुवादाना, अदरख, हिंग, सोंठ, वच कुष्ठ देवदार, सहजनेकी छाल, रसोंत, संचलक्षार, जवाक्षार, सज्जीक्षार, सोंचलवण, सेंधानोन, मोचपत्र, नमक, नागरमोथ प्रत्येक, चार चार तोला लेकर कूटकर उसमें डूबे इतना कलीके स्थंभका रस और उतना ही गौमूत्र, डालकर और दशसे बारह रतल पानी और दश रतल सरसोंका तेल और एक रतल निंबूका रस डालकर सबके साथ पकाना। पानीका भाग जल जाय तब कपड छानकर रख छोडना। कानमें डालनेसे कानका शूल, स्राव और अन्य दर्द मिटता है।

प्रयोग १ घोडेका घास लींडाका रस तोला २० में सरसोंका तेल तो. २० डाल पानीका अंश जल जाय तब कपडछान करना। कानके शूल दर्दमें कानमें डालना।

प्रयोग २ आंकके पीलेपान पर एरंड तेल लगाकर अग्निपर गर्म कर हाथसे मसल कर रस निकालना जरा गर्म कर कानमें डालनेसे कानका शूल मिटता है।

प्रयोग ३ वच और चिरायता (करीयातु) दो दो तोला लेकर पानीमें पीसकर १० तोला सरसोंका तेलमें पकाकर वह तेल कानमे डालना शूल मिटे।

प्र ४ बेल(वृषभ)कामूत्र गर्म कर कानमे डालनेसे कानका शूलपीडा मिटता है।

कान पकना कानसे पूय- पस निकलना

कारण—कोइ वस्तु कानपर लगनेसे, शीतळा आदिकी कमजोरीसे बच्चोंको बहुतकर यह दर्द होता है, बडोंके क्वचित हि होता हैं।

प्र १—कल्याण तेळ अथवा कर्णामृत तेल कानमें डालना और कान हमेशा साफ करना।

प्र २ संखकीट तोला १ को गोमूत्रमें पीसकर २० तोला सरसोंके तेलमें पकाना । यह तेल कानमें डालनेसे स्राव बंध होता है ।

प्र ३ ऊंटकी पसलीको हड्डी जलाकर भस्म करना । पीछे कागजकी नलीसे वह भस्म ४ से ५ रत्ती फूंकमार कानमें डालना ।

प्र ४ मजीठ देवदार सेंधानोन हींग कुष्ठ प्रत्येक चार चार तोला लेकर बकरीके मूत्रमें पीस रबड़ी जैसा कर उसमें सरसोंका तेल तोला ४० पकाना पानीका अंश जल जाय तब रख छोडना । कानमें डालनेसे कानका पाक पस अच्छा होता है ।

कानका मसा—यह कभी आंखसे देखा जाता हो इतना नजीक होता है और कभी अंदरके भागमें होनेसे दीखता नहिं । इसका मूल पतला अथवा मोटा होता है । प्रश्न थोडा थूल आवाज पड़ बहना आदि चिन्ह होते हैं । इससे बहिरापन (बाधिर्य)भी होता है । कल्याण तेल अथवा कर्णामृत तेल अथवा महानारायण तेल कानमें डालना और रत्न पर्पटी २ रत्ती कर्णरोग हरीवटी २ गोली साथ मिलाकर त्रिफलहरीतकी १ से २ छोटी चम्मच के साथ देना ।

कानमें बहारकी चीज घुस जाना—कानमें कोइ बीज आदि चीज घुस जानेसे पीडा होती है पीचकारीसे या अन्य साधन से निकालनेकी कोशीश करना कर्णामृत तेल महानारायण तेल आदि डालना ।

कानमें नाद—आवाज (भणकारा) कानमें मोरली (बांसुरी) बजती हो ऐसा और दूसरे प्रकारका आवाज हुआ करता है । यह वात प्रकोपसे होता है । महानारायण तेल, कर्णामृत तेल कल्याण तेल आदि डालना और सारिवादि गोली और कर्णरोग हरीवटी शिरोरोगहर अवलेह के साथ देना ।

बाधिर्य-बहिरापन—कानमें मेल भर जानेसे पडदा टूटनेसे, कोइ चीज घुस जानेसे, पडदा मोटा होनेसे, पवनसे, मस्तिष्कके रोगसे शरदी वृद्धावस्था ओरतोंकी प्रसव कष्ट सूतिका रोग, बुखार ताप रोकने लिये क्विनाइन अगर क्विनाइन मिश्र दवाका अधिक उपयोगसे अथवा हाथका तमांचा लगनेसे, भयंकर बडा अवाज सुननेसे कमजोरीसे यह दर्द होता है ।

बिल्व तेल—बीली(बिल्वके पत्ते) रतल १, अपामार्ग क्षार तोला ५ गोमूत्र तोला ५० बकरीका दूध तोला ५०, चित्र मूल अरणी मूल बडी कटहरी मूल गोखरू मूल अडूसाके पान प्रत्येक आठ आठ तोला । सब कूट कर सब डूब जाय इतना पानी डालना और सरसोंका अथवा तिलका तेल रतल ५ डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय । बाद कपडछान कर रखना । कानमें हमेशां डालनेसे बहिरापन मिटता है ।

बाधिर्यहर मिश्रण—सुवर्ण वसंत मालती तोला ०।, रत्नपर्पटी तोला ०।, अमृतामृत पर्पटी तोला ०॥ अभ्रक भस्म तो. १, साबर सींग भस्म तो. १ छोटी पीपल तोला २ सब साथ घोटकर रखना। प्रातःकाल ३ से ४ रती सौभाग्य शुंठी के साथ अथवा अमृत भल्लातकके साथ देना। अथवा ३ से ४ रती शहदसे अथवा मृगु हरीतकी १ से २ छोटी चम्मचसे सेवन कराना।

प्र १ एरंड पत्र बिल्वके पान मूलीके पान, सहंजनेके पान ढाकके फूल प्रत्येक बीस बीस तोला लेकर उसमे सरसोंका अथवा तिलका तेल तो. १२० डालकर पकाना। सबपान कडक हो जाय जल स्वांगशीत होने देना कपडछान कर रखना कानमें हमेशां सोती वक्त थोडा गरम करके डालना। बहिरापनमे लाभ होता है।

प्र २ निर्गुंडीके पानका रस निकाल कर ५ से १० बुंद कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता है।

प्र ३ प्याजका रस तो. १०, पुदीना (फोदीना) का रस तो. १०, तिलका या सरसोंका तेल तोला २० डालकर पानीका अंश जल जाय तब कपडछान कर रखना। कानमें डालना। बहिरापन मिटे।

प्र ४ उट (नर) के पिशाबका बुद कानमें डालनेसे एक महिनामें बहिरापन मिटे।

कृमिकर्ण—कानमें पस होनेसे और सडा होनेसे जंतु पडता है। अगर मख्खी (मक्षिका) कानमें बैठनेसे जंतु होता है जब मगजमें दर्द होता है। कानमें खुजली आती है और कानमें भार जैसा लगता है।

कृमिकर्णारि तेल—कलिहारी (सफेद बछनाग), सोंठ पीपर मरी, वायविडंग, वच, तिलपर्णी प्रत्येक पांच पांच तोला, निर्गुंडीका मूल अथवा बीज १० तोला, धमार बुधलीका पान १० तोला सबको पानीमें पीस रबडी जैसा बनाकर सरसोंका तेल तोला ४० डाल कर पकाना। पानीका अंश जल जाय जब कानमें डालते रहेनेसे जंतु निकल जाता है।

प्र. १ नीमके पत्तेका रस तोला २०, बडीकटहरीके फल तोला २ कोप पीस कर उसमें तिलका तेल तोला १० डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय जब कपूर तोला ०।, डालना। यह तेल कानमे डालनेसे कानमें जंतु घुस गया हो वह निकल जाता है।

प्र. २ फिटकरी एलिया (जो कुवारपाठासे बनता है) तोला ५ को धमार बुधलीके पानके रसमें घोटकर उसमें सरसोंका तेल तोला २० डालकर पकाना। पीछे यह तेल कानमें डालनेसे जंतु निकलता है।

प्र. ३ प्याजका रस निकालकर कानमें डालनेसे कानमें घुसा हुवा जंतु निकलता है।

प्र. ४. करेला (जो शाकके रुपमें खाया जाता है) उसके पानका रस कानमें डालनेसे बगां खजूरा आदि जंतु निकल जाता है।

कानमे ग्रन्थी

चिह्न—कानमें किसी वस्तुका घाव लगनेसे ग्रन्थी या गड होकर पकता है और लाल पीला खुन युक्त स्राव निकलता है और शूल जैसी पीडा होती है। पित्त प्रकोप हो तो जलन और दाह होता है।

कर्णामृत तेल—केलो के स्तंभका रस तो. ४०, नींबुका रस तो. ४०, गोमूत्र तो ४०, मुलैठी मूल तों. ८, दारुहल्दी तो. ६ अंमिया हलदी तों ४, अरणीमूल अडूसावृक्षकी छाल, छोटी कटहरीका मूल और फल, सत्यानाशी (दारुडी) का मूल और फल, देवदार जवाखार, सज्जीखार बीडलवण, कलिहारी, वायविडंग, सेंधानोन, नमक, सौफ (सुवादाना) सहजनेकी छाल वच, सारीवा, कुष्ठ, पारद, गंधक प्रत्येक दो दो तोला। आकके पानका रस तो. २०। सब साथ मिलाकर उसमे तीलका तेल अथवा सरसौंका तेल रतल पांच डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय कपडछान कर रखना। कानका शूल, आवाज छर्णनाद, कानपकना, कानमें जीवजंतु या बीज घुसजाना, बहिरापन, कानकी सूजन कानका मसा आदिमें उत्तम गुणकारी है।

कर्णरोगहरी वटी— (स्वर्ण युक्त) रससिंदुर तो. ४, पारद तो. २ गंधक तो ४, अभ्रक भस्म तो. ३. लोह भस्म तो. ३, शिलाजित तो. ५ गुगल तो. ६, स्वर्ण भस्म तो ०॥, ताम्र भस्म तो १, सारिवा, रास्ना, गुंजामूल तज, तमालपत्र, इलायची सोंठ पीपल, मरी टंकण सेंधानोन संचल प्रत्येक दो दो तोला, सब साथ कुटकर भांगरा शिरीष और अगस्य (अगथिया) के रसकी एक एक भावना देकर चणाेंके जैसी गोली बांधना। मात्रा ३से ४ गोली पानी के साथ देनेसे कानके सब दर्द मिटते है।

पथ्यापथ्य—कानके सब दरदो मे सादा खुराक लेना। कान पर कपडे के गोटेसे शेक करना। दस्त कब्ज रहता हो तो सादा जुलाब लेना। कानपर कपडा लपेट रखना। ठंडा पानीके स्नान नही करना। पस आता हो तो हर वखत कान साफ करना और रुइका फोआ कानके आगे रखना। कानमें उपर लिखे हुए कोइ भी तेल डालते रहना।

स्त्रीयोंके रोग

स्त्री जब १३ से १५ वर्षकी तरुणावस्थाकी ओर आती है तब प्रतिमास ऋतु आता है। वह ३० साल तक अर्थात् ५० वर्षकी आयु तक चालू रहता है। प्रसवके पीछे दो छ या बार महिनो के पीछे ऋतु आता है। स्तानपान करनेवाला बच्चा गुजर जानेसे ऋतु जल्दी आता है। शोक उद्वेग चिंता दस्तकी कब्जी अजीर्ण पेटके जतु इत्यादि कारणोंसे ऋतु अनियमित या कम आता है। हवापानी स्वभाव संसारसुख, संसारकी सुखदुःखमय घटना, रोग, मानसिक आनंद या शोक आदि कारणोंसे भी ऋतु अनियमित होता है। ऋतु के दिनोमे नीरोगी स्त्रीमें ८ से १० तोला तक और ज्यादासे ज्यादा २० तोला तक खून गिरता है। परिश्रम करनेवाली प्राय स्त्रीयोंका खून कम पडता है शारीरिक श्रम नहि करनेवाली कमजोर शरीर वाली हरनाफिरना नही करनेवाली और आराम कुरसी या गदी तकिया पर बैठे रहने की आदतवाली शहरोंकी स्त्रीयोंको खून ज्यादा पडता है। ऋतु तीनसे सात दिन तक आता है। प्रथम ऋतुके समय स्त्रीको थोडा ताप पेट कम्मरमे दर्द, जननेन्द्रियमे सूजन, भार स्तनमें दर्द आदि चिन्ह देखते हैं और ऋतु आनेके पीछे सब चिन्ह स्वयंही बंद हो जाते हैं।

१ नष्टार्तव अल्पार्तव अनार्तव—ऋतु न आना, ऋतु कम आना, ऋतु बंध हो जाना.

कारण—पांडुरोग, मनमें चिंता शोक उद्वेग, दस्तकी कब्जी अजीर्ण मंदाग्नि वायुका प्रकोप शरीरकी कमजोरी किसी भी रोगसे हुई अशक्ति कृमि विकार अतिविषय ऋतुके समय खून अधिक गिरना, शरदी, खुनका बिगाड, कण्ठरोग, अण्डाशय न होना या अंडाशयमें गर्भाशयमें उदरभागमें किसी रोगका होना आदि कारणोंसे यह दर्द होता है।

चिन्ह—ऋतु के समय प्रतिमास पेडु में (नाभिके नीचे) मीठा दर्द होता है। और पेटके साथ ऋतु आता है। वैसे ही दुसरे महिने भी होते है। कई मास के पीछे खुनका अभाव होनेसे गर्भाधान हुआ हो ऐसा दिखता है। दस्त पिशावका खुलासा नहीं होता गर्भस्थान की बाजु में ग्रन्थि जैसा दिखता है। बुखार आता हैं। वमन होता है। गर्भाशयमें ऋतुका अभाव होनेसे गर्भाशय मोटा दीखता है। इस दर्द से ऋतुका पांडु होता है। आंख होठ मुख फीका पडता है। मुख पर थोडी सूजन मालुम होती है। सिरमे दर्द भूख मंद निद्रा कमी, छातीमे थोडा दर्द. कम्मर और सांधोमें थोडा दुःख होता है।

पथ्यापथ्य—स्त्रीको सारे शरीरमें खोपरेका अगर सरसोंका तेल मर्दन करना और नाभिके नीचेके भागमे सारे पेटने ज्यादा मर्दन करना। ऋतु के समय ठंडा पवन हो लेना। ठंडे पानीसे स्नान नहीं करना। वर्षा और ठंडी शरीर पर लगने नही देना। मन आनंदमे रखना शरीरको आराम देना। परिश्रम नही करना। दस्त पिशाब साफ आवे ऐसा आहार विहार रखना। ठंडा रातवासी खुराक नही खाना। मांस बंध करना घी कम खाना।

२ कष्टार्तव-पीडितार्तव

कारण.—गर्भस्थानकी वक्र स्थिति, अतिविषय, दस्तकी कब्जी, वायुका प्रकोप गेस, अजीर्ण वसुशाव्ड (कम महिनों में गर्भका गिरजाना) शरदी लगना, प्रसव के पीछे किसी रोगका होना, इस प्रकार ऋतु (आर्तव) को विकृत करनेवाले अनेक कारणोंसे यह दर्द होता है।

चिन्ह—ऋतु के समय कमरमें दर्द शूल, मस्तक पीडा, बेचेनी होते है। यह दर्द कम्मरसे लेकर पेटमे होकर जांघ (Thigh) तक फलता है। यह दर्द होनेके पीछे अेक दो दिनमें ऋतु आता हैं। ऋतु स्रावके समय कमल सूजन-वाला और मृदु दीखता है। वातकोपके पीडितार्तवमे ऋतु आनेके पहिले एक दो दिन तक बारबार पीडा होती है। और प्रसवकी वेण (labor pains) तरह दर्द होता है। कई वक्त यह पीडा असह्य होती है। साथ मस्तक दर्द हिचकी चक्कर आंचकी जैसे चिन्ह भी मालूम होता हैं। ऋतु आने लगता है जब ये उपद्रव कम होने लगता हैं। गर्भ रहने के पीछे ये सब उपद्रव बंध होते है। बहु स्त्रीयोंको इन उपद्रवों के कारण गर्भ नही रहता प्रत्येक मास मे ये उपद्रव थोडा बहुत प्रमाणमें होता रहता हैं। उष्ण उपचारसे शेकसे तेल के मर्दनसे वेदना कम होती है और ठंडे उपचारसे बढती है।

३ शोथजन्य पीडितार्तव—खून जमनेसे अथवा गर्भाशय पर शोथ होनेसे ऋतुके समय पीडा होती हैं। सूजन से गर्भाशय के मूत्रका रास्ता संकुचित होकर ऋतु स्राव होनेमें बाधा होती है और पीडा होती है। कष्ट के साथ बाहार निकलता हुआ खुन गांठा गांठो वाला और चाशनी जैसा घट होता है। गर्भाशय पीछेकी ओर या आगेकी ओर झूकनेसे और बाहरकी सूजनसे गर्भाशय बंद हो जानेसे अथवा अग्रमुखका संकोच होनेसे संयोग के समय पीडा होती हैं। ऋतु के समय नाभि के नीचे के भागमें दर्द होता है। कमर और

जांघ मे दर्द होता है और ऋतु अच्छी तरह आ जाने के पीछे यह पीडा कम होती है। फलवाहिनी के मार्ग में अवरोध होनेसे और अंडाशय के विकारसे भी पीडितार्तव होता है।

पथ्यापथ्य—गर्म पानीसे पवन न लगे ऐसे स्थानमें स्नान करना। गर्म पानीसे भरे हुये टबमें गले तक गरम पानी भरके बाफ देना। पीसना पानी भरना, रसोइ बनाना चक्की पीसना, कूटना इत्यादि घरकामकी कसरत करना। नाभि के नीचे के भागमें कपडे के गोटेसे अथवा रबरकी बेगसे शेक करना। ब्रह्मचर्यका पालन करना। दस्त पिसाब साफ हो ऐसा औषध लेना। रातवासी सूखे वायु करनेवाले अन्नपान खाना नहि। मधुर पदार्थ कम खाना जागरण करना नही। आहार विहार निद्रा और भोजन मे नियम रखना। एक सप्ताहमे या ८ से १५ दिनमे १ उपवास करना। अजीर्ण नहो इस प्रकार भूख के प्रमाण में खुराक लेना।

एलीयादि गोली—एलवा (शिकोतरो एळियो) जवाखार, कवारपाठामें पकाइ हुइ लोह भस्म, सेंधानोन, वायविडंग, इन्द्रायणका मूल प्रत्येक दस दस तोला, सब कूटकर कवारपाठाके रसमें घोंट कर तीन रतीकी गोली बनाना। दिनमें ३ से ६ गोली पानीके साथ देना। दो तीन गोली जननेन्द्रियमें रखना। कष्टार्तव, नष्टार्तव, पीडितार्तव मिटता है और ऋतुका खुलासा होता है।

ऋतुकरी वटी—सोठ, निशोथ, हीराबोल, हिंग, सेंधानोन, चित्रकमूल, इन्द्रायणका मूल, इन्द्रायणका फल, जवाखार, सज्जीखार, टंकण, हलदी समुद्रफेन प्रत्येक एक एक तोला और शिकोतरा एलिया तो. १॥ सब कूट कर पानीमे चना जैसी गोली बनाना। दो से चार गोली देनेसे चढा हुवा ऋतु आता है।

प्रयोग १—इन्द्रायणका मूल ६ से ८ इंच जननेन्द्रियमें रखनेसे ऋतु आता है।

प्र २—सोठ पीपल कालीमिरच भारंगी समभाग कूटकर ०। से ०॥ तोला काल तिल तोला ५ को कूट कर उसके क्वाथके साथ देना।

प्र ३—इन्द्रायणका मूल तो. २ पानी रतल १ में पकाना। पाव सेर रहनेसे कपडछान कर उसमें तिलका तेल २ से ४ तोला मिलाकर पाना।

प्र ४—तुखमे करफ तो ०।, बडी सौंफ (वरियाळी) और मजीठ, एक एक तोला कूट कर सब साथ मिलाकर उसका क्वाथ करें उसमें १ से २ तोला खांड मिलाकर पिलाना।

३ रक्तप्रदर–अत्यार्तव (लोहिका)

कारण—गर्भाशयमें अर्बुद या मसा होनेसे, स्त्रीके अंडकोशमें सूजन होनेसे, शरीरमें खून ज्यादा बढनेसे, प्रसवके पीछे गर्भाशयका संकोच अच्छी तरह न होनेसे, गर्भाशयमें जखम होनेसे प्रसवके पीछे गर्भाशयमें बिगाड रह जानेसे या दाहसे खून गिरता है ।

चिन्ह—स्वाभाविक रीतिसे ऋतुसमयमें जितना रक्तस्राव होना चाहिये उससे ज्यादा समय तक और अधिक प्रमाणमें होता है । कुछ कुछ दिनके पीछे ऋतुस्राव हुआ करता है । शरीरकी स्थूलता या कृशताके कारण भी अधिक रक्तस्राव होता है । प्रसवके पहिले या पीछे जो रक्तस्राव होता है उसे अत्यार्तव कहते हैं । खून ज्यादा गिरनेसे शरीर कृश फिक्का पीला सफेद होता है । मस्तकमें दाह होता है, तृषा लगती है, चक्कर आता है, दम चढता है, मुख पर सूजन होती है, भूख कम लगती है, दस्त कब्ज रहता है । अति रक्तस्रावसे मृत्यु भी हो जाता है ।

पथ्यापथ्य—तबीयतको माफक हो ऐसा सादा खुराक लेना । गर्मीसे दाह करनेवाले, दस्त कब्ज करनेवाले पदार्थ या औषध नहीं लेना ।

रक्तस्राव हरी वटी—पारद तो. १, गंधक तो. १, जामुनमें पकाई हुई लोहभस्म तो. ५, अभ्रक भस्म तो. ५, रौप्य भस्म श्वेत तो ४, रसोत, चौलाइका मूल, कूडाकी छाल, केलीका कंद, कमलका कंद, कमल बीजकी गोरी, इन्द्रजव सतावरी, सूबिया हेमकंद अथवा वाराही कंद प्रत्येक चार चार तोला लेकर विधिवत् मिलाकर कूडेकी छालका और अंजन वृक्ष (बियो) की छालके क्वाथकी एक एक भावना देकर दो गुंजा प्रमाण गोली बनाना । १ से ६ गोली तक पकता हुआ चावलके पानीके साथ एक दो चम्मच शहद डालकर देना । रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर आदि मिटते हैं ।

बोल पर्पटी—पारद तो. ४ गंधक तो ४ की पर्पटी बनाना पीछे घोंटकर उसमें हींगबोल तो २, खेरसार कत्था शिलाजीत, यशद भस्म प्रत्येक एक एक तोला साथ मिलाकर अंजन वृक्ष (बिजय सार–बियो) के छालको क्वाथकी भावना दे कर रख छोडना । मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद और मक्खनसे अथवा च्यवनप्राश जीवनसे अथवा कूटजावलेहसे देना । छातीसे, दस्तसे गिरता हुआ रक्त और रक्त प्रदर श्वेत प्रदर आदिमें गुणकारी होता है ।

प्र. १—केरडा (करीर) की लकड़ को जलाकर वह भस्म और सोनागेरु समभाग मिलाकर ८ से १० रती शहदके साथ या पानीसे देनेसे रक्तस्रावमें लाभ होता है।

प्र २—कथ्था, माजुफल (कांटाळी मायां) अमृता सत्व श्वेत लोध्र, सेमलका गोंद, रुदन्ती क्षुप, दूधेली (दूधी) क्षुप, खैरका गोंद, सफेद मुशली, तालमखाना, ढाकका गोंद या कुछ सब साथ कूटकर सबसे दूनी (द्विगुणीत) शक्कर डाल कर रखना। आधासे १ तोला मात्रा पानीसे ७ दिन तक देना। सब प्रकारके रक्तस्रावमें फायदा होता है।

एलादि गुटीका—इलायची तो ५, नागकेशर तो २॥, इमली (चिचा आमली) के फलका गर्भ तो १०, सोनागेरु तो. ५, गोखरु तो. १५, पाषणभेद तो १५, सब साथ कूट कर भांगरेके रसमे ३ से ४ रतीकी गोली बनाना। १ से २ गोली देनेसे सब प्रकारके रक्तस्राव मिटता है।

प्र ३ रक्तस्राव हर मिश्रण- मुक्ता पिष्टी तो. १, महाचन्द्रकला तो १, जवाहर मोहरा तो १, सप्तामृत लोह तो १, अमृता सत्व श्वेत तो ३, प्रवाल चन्द्रपुटी तो. १, सबसाथ मिलाकर शीशीमें भरना। ६ से १० रती तक दिनमें दो दफे च्यवनप्राश अथवा कुटजावलेह अथवा गुलकंद अथवा शहदके साथ देना। किसीभी जगहसे गिरता हुआ खून अटकता है।

प्र १—नीली (गली)का मूल ०। से ०॥ तोला पकते हुए चावलके पानीके साथ देना।

प्र. ३—चौलाइका मूल, रसोत, समभागमें कूट कर रखना, ०। से ०॥ तोला, चावलके पानीसे दश दिन तक देना।

प्र. ४ मुलेठीका मूल, सफेद चन्दनका चूरा, बेरकी लाख, कमलका फूल, रसोत (रसांजन) सब समभाग कूट कर रखना। ०। से ०॥ तोला तक शहदसे देना।

प्र ५. सहतूत (शेतूर) के पके हुये फल हमेशां पाच से छ तोला खाना। अथवा पके हुये अंजीर ८ से १० नंग खाना। १५ दिनमें रक्तस्राव बंध होता है।

श्वेत प्रदर सोमरोग

कारण—किसी भी रोगको कमजोरीसे, गुह्यभागको स्वच्छ नहि रखनेसे, गुह्यभागमें दाह होनेसे अतिविषयसे, उपदंशसे, प्रमेह और उपदंशवाले पुरुषके संगसे, अति मदिरापानसे, बहुत तीखे, बहुत खट्टे पदार्थ बहुत जलद खानेसे अजीर्ण पर भोजन करनेसे, गर्भपातकी दवा लेनेसे, बहुत शोकसे, बहुत उपवाससे, मन पर आघात लगनेसे आदि कारणोंसे श्वेतप्रदर सोमरोग और रक्तप्रदर होता है। यह बढता है जब प्रवाहकी तरह बहार निकल कर कपडा बिगडता है। इस स्रावका रंग भिन्न भिन्न कारणोंसे काला, पीला सफेद मिश्रित रंगका घट्ट और चिकना भी होता है।

चिन्ह—कमलके भागमें सूजन होती है। सूजन ज्यादा हो तब प्रवाह चीकना और घट्ट पडता है। कपडे पर पीला और लाल डाघ पडता है। शरीरमें थोडा बहुत बुखार रहता है। कमर और जांघमें दर्द रहता है। नाभी और नीचेके भागमें भार रहता है। पिशाब हरवक्त होता है। गर्भस्थानमें थोडा बहुत दर्द होता है। भूख कम लगती है। अन्नका पाचन कम होता है। दस्त अनियमित रहता है। कम्मर और शिरमें दर्द, अशक्ति चेहरामें फीकापन मनमें उदासीनता, कामकाज करनेमें हरने फिरनेमें अनिच्छा, पेट वायुसे फूलना इत्यादि चिन्ह मालूम होते है।

पथ्यापथ्य—जहांतक हो सके ब्रह्मचर्य रखना। मद्य मदिरा, मांसगरिष्ठ पदार्थ, ठंडे पदार्थ वासी पदार्थ नहीं खाना। सादा लघु खुराक लेना गरम पानीसे नहाना। दूधका खुराक रखना। गुह्यभाग दो दफे गरम पानीसे धोना, ठंडा पानी अच्छा लगे तो उससे धोना। आहार विहार नियमित रखना।

प्रदरांतक लोह—लोह भस्म आमून में पकाई हुइ तो २०, पारद, गंधक रससिंदूर बंगभस्म, रौप्य भस्म, यशद भस्म शंख भस्म, अफीम, इन्द्रजौ, वायविडंग, सेमलका गोंद, बब्बुलका गोंद, नीमका गोंद प्रत्येक दोढ दोढ तोला और बब्बूल के पके हुये फलका रस तो १० एक साथ मिलाकर कूडेकी (कुटज त्वक) के क्वाथ में घोट कर दो गुंज प्रमाण गोली बनाना। ४ से ६ गोली शहद के साथ देना। सफेद लाल पीला प्रदर मे किसी स्थानसे हृदय गुदा या इन्द्रीसे होता हुआ रक्तस्राव बंध होता है।

प्रदरारि लोह— लोह भस्म तो १६, पारद तो. ८, गंधक तो ८. स्वर्ण माक्षिक भस्म तो १ बंग भस्म, यशद भस्म, रौप्य भस्म, प्रत्येक दो दो तोला लज्जालु (रीसामणि) का पंचांग तो, १२, सेमलका मूल, पाठा, बीलीफल

(बिल्व) का गर्भ आमकी गुठली इन्द्रजौ, पाषाणभेद रसौत, कमलकंद, अतीस, शतावरी, दूधिया हेमकंद, सोंठ काली द्राक्ष, मुलैठीका मूल, महाबलाका मूल शक्कर, महुफली, नागरमोथ, धाईके फूल प्रत्येक आठ आठ तोला, सबको घोट कर कुडेकी छाल अशोककी छाल बड (वट) की छाल उदुम्बर (गुलर) की छाल प्रत्येक के क्वाथकी भावना देकर ३ रतीकी गोली बनाना। मात्रा १से ६ गोली चावलके ओसामण के साथ अथवा शहदसे देना। सब प्रकारके प्रदर, सोमरोग, पानी गिरना गुह्य भागकी सूजन खुजली पुरुषका वीर्यस्राव आदिमें उत्तम गुणकारी है।

अशोकारिष्ट—अशोककी छाल पक्का सेर ३० को कुचल कर उसमें पक्का ६ मण पानी डाल कर पकाना। आधा पानी रहनेसे एक लकडीकी पीपमें भर उसमें शक्कर या गुड मण २ और धाइ के फूल शेर ढाई, द्राक्ष शेर १० और कमलफूल चमेली के गुलाबका फुल, शतावरी, असगंध, बलामूल आमुनकी गुठली अढवी जीरा, कलौंजी जीरा सफेद चंदन, नागरमोथ, सोंठ दारु हल्दी, कपूरकाचली, गुलरके मूल सेमरके मूल, कथ्था प्रत्येक शेर आधा आधा डालना और कोठीका मुंह बंध करना। दर सप्ताहके पीछे हिलाना और मुख बंध कर देना डेढ महिने के पीछे सबको कपछान कर अच्छे बर्तनमें भर देना। मात्रा ४ से ८ तोला दिन भरमें पिलाना। सब प्रकारके प्रदर रक्तस्राव, अतीसार, मुरडा संग्रणी खुन बवासिर पित्तके दर्द, पुरुषों के सब प्रकार के प्रमेह आदि मिटते है।

सोमजीवन रस—पारद तो ५ में सोनाका वर्क तो. १ मिलाकर पीछे उसमें गंधक तो. १० डालकर कजली करना पीछे उसकी पर्पटी बनाना। उसको घोट कर उसमें पूर्ण चंद्रोदय लोह भस्म अभ्रक भस्म, समुद्र शोषके बीज प्रवाल पिष्टि, माणिक्य पिष्टि स्वर्ण माक्षिक भस्म बंग भस्म, यशद भस्म बब्बूलका गोंद खैरका गोंद सेमलका गोंद प्रत्येक एक एक तोला मोती पिष्टि छोटी इला. शक्कर, बब्बूलके पके हुये फलका रस, लवंग इलायची कालिमिरच सफेद चंदन रसौत मुलैठी मूल बिल्वफलका गर्भ प्रत्येक दो दो तोला सब साथ मिलाकर सेमलके मूलका और नीमकी अंदरछाल के क्वाथकी एक एक भावना देकर उसमें कस्तुरी तो १ मिलाकर दो रत्ती गोली बनाना॥ मात्रा १से ६ गोली पानीके साथ देना। सब प्रकारे के प्रदर सब प्रकारके प्रमेह शरीरकी क्षीणता, कृशता कमजोरी स्त्रीका ऋतुदोष, गर्भाशयका विकार हिस्टीरिया दिमागकी कमजोरी पुरुषके वीर्यदोष आदि मिटते है।

यूनानी जुलाब— गुठे बनफशा तोला ०॥, गुलाबका फूल तो. ०॥, तुखमे खतमी तो. ०। खबाजी तो. ०।, ककडीके बीज तो. ०।।, मोढीआवळा (सोनामुखीके) पत्ते-सेना) तो. ०॥ सब साथ कूटकर ८० तोला पानीमें क्वाथ करना। ३० तो. पानी रहे जब उसमें अमलतासकी गीरी तो. ५ और सुरखेश तो. ३ रातभर भिगो रखना पीछे प्रातःकालको कपडछान कर उसमें बदामका तेल तो ०॥ डालकर पिलाना। औरतोंके फुलके उपर सूजन होकर दाह जलन होता हो उसमें तथा पुरुषोंके इन्द्रियमें दाह जलन होता हो उसमे पिलानेसे जुलाब लगकर पीडा शांत होती है।

प्रदरके और प्रमेहके सामान्य उपचार

प्र. १ मूलीके पानका रस तो. ५ में एक खट्टा निंबू निचेड कर पिलाना। इस प्रकार तीन दिन पिलानेके पीछे खेरका गोंद, ढाकका गोंद, मोचरस, समुद्र सोषके बीज और शक्कर सब समभाग मोट. पावसे आधा तोला पानीके साथ देना। ७ से १४ दिन देनेसे औरतोका सफेद स्राव और पुरुषोके धातुस्राव मिटता है।

प्र २ बब्बूलकी पत्ती, बब्बूलके पके हुये फल, छोटीहरड और शक्कर समभाग कूटना। पावसे आधा तोला प्रातःकाल रातबासी पानीके साथदेना।

प्र. ३. रातरानीके पानको पीसकर सुपारी जैसी गोली बनाना। मलमलके कपडेमें रखकर गुह्यभागमें रखना। यह रातरानी ४ से ५ फूट तक लंबी होती है, फूल सफेद होता है, उसकी सुगंध रातको फैलाती है, उसको हरणी भी कहेते हैं।

प्र. ४ बेरकी लकडी (बदरीकी) राख ०। तोला, अशोककी छाल तो. १, धाइका फूल तो ०। सबको साथ कूट कर क्वाथ कर शहद डाल कर पिलाना।

प्र ५ मूलैठीका मूल कमल फूल प्रत्येक आधा आधा तोला पानीमें पीस शहद डालकर पिलाना।

प्र. ६ चौलाइका मूल तो ०॥, रसोंत तो. ०॥, चावलके ओसामणमें पीस कर पिलाना।

प्र. ७. पके हुये गुलरके फल अथवा पके हुये अंजीर हमेशां १० से १५ खाना।

प्र ८ भूइ इमली (भूम्यामलकी) तो ०॥ पानीमें पीस शहद डालके पिलाना।

सगर्भा स्त्रीका रोग

१२ वर्षकी उम्रके पीछे और ५५ वर्षकी उम्रतक स्त्रियोंको प्रतिमास ऋतु आता है रजःस्वला होनेके पीछे १६ दिनके बीचमे याने ४ थे दिन स्नान करनेके पीछे १२ दिनके बीचमे गर्भाधान होता है।

रजस्वला नियम—ऋतु दर्शन होनेके पीछे तीन दिन तक अविधा ब्रह्मचर्य पालन करना। जमीनपर सोना। एकांत स्थानमे रहना। गर्म मसाला वाला तीखा बहुत खट्टा जलद खुराक नहि लेना। सादा लघु भोजन करना। गाना नहि। रुदन करना नहि। शरीर पर तेल मालीश करना नहि, बालमे तेल डालना नहि। स्नान करना नहि। आंखोमे अंजन करना नहि। दिनको सोना नहि। रातको जागरण करना नहि। उच्च स्वरसे बोलना नहि। हास्य करना नहि। बहुत बोलना नहि। बहुत परिश्रम करना नहि। शरीरपर वजन लेना नहि। जो निषेध किया है, करनेसे गर्भको हानि पहूंचती है। रजःस्वला स्त्री रुदन करे तो बच्चाकी आंखे खराब होती है। तेल मालीससे कुष्ठ रोगी होता है। दिनको सोनेसे रुपण, कठोर उग्र शब्द सुननेसे बधिर, हास्य करनेसे दांत तालु और जीभके रोगवाला, बहुत बोलनेसे प्रलापी, परिश्रम करनेसे पागल बच्चा होता है। पुरुष रजस्वला स्त्रीका संग पहिले दिन करे तो आयुष्यका क्षय होता है। दूसरे दिन करे तो बुद्धि मंद होती है, तीसरे दिन करे तो शक्तिका नाश होता है, इस लिये ४ थे दिन स्त्री ऋतु स्नान करे पीछे हि स्त्री संग शास्त्रो संमत है।

कैसी स्त्रीका संग नहि करना? ऋतु आता हो किसी रोगसे पीडित हो, काम वासना न हो, मलीन हो, सगर्भा हो, कुरूपा हो, ऐसी स्त्रीसे संग नहि करना। पुरुष भी जिसने बहुत भोजन किया हो, धैर्य रहित हो, क्षुधातुर हो किसी रोगसे पीडित हो, पानीकी प्यास लगी हो, मलमूत्रादिका वेग आया हो ऐसे पुरुषने स्त्री संग नहि करना चाहिये।

गर्भाधानके नियम—औरतने ४ थे दिन स्नान करके पहिले पतिका मुख देखना। शास्त्रमे लिखा है कि स्त्री ऋतुस्नानके पीछे पहिले जिसका मुख देखती है उसके आकारका गर्भ रहता है। पति गेर हाजर हो तो पुत्रका या पवित्र पुरुषोकी छबीका दर्शन करना। ४ थे दिन ऋतुस्राव बंद हो गया हो तब स्त्रीने उत्तम वस्त्र अलंकार पहिनकर सुगंधी पदार्थ शरीरको लगाकर पौष्टिक खुराक लेकर पुत्रकी इच्छावाली स्त्रीने पतिके पास जाना। पुरुषने भी स्त्री की पर प्रेम स्नेह रख कर पौष्टिक पदार्थ खाकर सुगंधी पदार्थ शरीर पर लगाकर अच्छे कपडे पहिन कर स्त्रीके पास जाना।

गर्भाधान—शुक्र और ऋतुका संयोग होनेसे उसमे जीव प्रविष्ट होकर गर्भाधान होता है। अंतर्वायुसे स्त्री पुरुष के बीजका दो या तीन विभाग हो जानेसे दो या तीन बच्चा बेलडा त्रेलडा होता है। वीर्य अधिक होनेसे पुत्र, ऋतु अधिक होनेसे पुत्री और दोनो समान होनेसे नपुंसक होता है।

गर्भ रहनेके तात्कालीक लक्षण-यह है कि स्त्रीको शुक्र शोणितका स्राव नहि होना श्रम लगता है साथळ फटता है प्यास लगे बेचेनी हो गुह्य भागमे स्फुरण हो पछे दिनोदिन स्तनोंका अग्र भाग सूखता है, रोमांच होता है, आंखोंके पापणे मीचाया करे अच्छा खुराक लेनेपर भी वमन होता रहे, अच्छी चीजकी सुगंध भी पसंद न हो, दूसरे या तीसरे मासमां लड्डुके आकारका गोलाकार गर्भ होतो पुत्र समझना और लंब गोळ आकार होतो गर्भमे पुत्री समझना।

गर्भिणीकी स्थिति—गर्भाधान के पीछे मुखाकृति फिर जाती है। ऋतु बंद होता है। गर्भाधान के पीछे कई स्त्रीयोंको अंक डेढ मासमे वमन होने लगता है वह ४ से ५ मास तक रहता है, किसीको गर्भ-पीडा- मंद जलन के साथ पिशाब हर वख्त होता है, दस्त बहुत करके बंध रहता है, गर्भ रहनेके पीछे कमलका मुख बंद हो जाता है।

आहार विहार—खाधा जलदी पाचन हो अेसा लघु तबीयतको माफिक हो वैसा लेना। ठंडा रातवासी खाना नहि। खांड शक्करका मिष्टान्न कम खाना। दारु पीना नहि। सीनेमा नाटक कम देखना। जागरण नहि करना। दो समय भुख हो इतना प्रमाणसर खाना कोइ भी चीज गरमा गरम खाना पीना नहि। पान सुपारीको आदत होतो भोजन के पीछे और चा दुध पीनेके पीछे खाना। शक्य होतो चा काफी कोको बंद करना यदि बंद न कर सके तो एक या दो वख्त हि पीना। शरीरको बहुत परिश्रम न पडे अैसा घरका कामकाज करना। पांवसे ज्यादा चलना नहि, दौडना नहि, कुदका मारना नहि, वृक्षपर या बहुत उंची जगह पर चढना नहि। मलमूत्रका वेग रोकना नहि। बैल गाडीमे या घोडागाडीमे मुसाफरी करना नहि। स्मशानमे उजड घर शून्य देवालय मे जाना नहि। ब्रह्मचर्य रखना सब प्रकारकी रहन सहनमे नियम रखना। सगर्भा स्त्रीको दस्तकी कब्जी हमेशा रहती है सो दस्त पिशाव साफ हो यह ध्यान रखना। दुधका खुराक ज्यादा रखना। शामको हमेशां मुंग चावलकी खीचडी दुधके साथ खाना। मरकी कोलेरा जैसा संक्रामक रोग चलता हो। वहांसे दूसरे स्थानमे चले जाना। दूसरी स्त्रीका प्रसव देखने नहि देना।

गर्भस्राव-गर्भपात (कसुवावड) तीन या चार मासका गर्भ गिरे वह गर्भस्राव कहा जाता है। चौथे माससे गर्भके शरीरका बंधारण हो जाता है सो चार से नव मासके बीचमे पडे वह गर्भपात याने कसुवावड कहा जाता है। स्त्री आहार विहारकी समाल न रखे तो तीन मासमे गर्भस्राव हो जाता है गर्भस्राव अथवा गर्भपात के पीछे खून अधिक गिरनेसे और वह बंद न होनेसे मरण भी हो जाता है। मल मूत्रका वेग रोकनेसे, भयजनक वस्तु देखनेसे कसरतसे चोट लगनेसे गिरजानेसे भयजनक या आघात जनक समाचार अकस्मात सुननेसे कूवेमे गिरजानेसे, अप्रिय वस्तु देखते रहेनेसे बहूत भार उठानेसे भयंकर खांसी आनेसे शोक क्रोध भय उद्वेग बहुत हस्य मदन ताप उपवास विपैल वस्तु खा जाना अजीर्ण जुलाब भयंकर अवाज बिजलीका कडाका आदि कारणोसे गर्भस्राव या गर्भपात हो जाता है।

चिन्ह—गर्भस्राव या गर्भपात होने वाला हो जब प्रारंभमे गर्भाशय में दर्द पीडा होती है। पीछे रक्तस्राव होता है। पीडा शनैः शनैः बढती है नाभी के नीचे के दोनो बाजू मे पीठ में पीडा होती है। साथल फटता है। यह दर्द वह गर्भको बहार निकालने वाली वेण है। बहूत रक्त के साथ गर्भका पिंड निकल जाता है। गर्भ तीन मासका या ज्यादा मासका होतो पीडा ज्यादा होती है। साथ छर्दि होती है मुखमे अपी नहि रहता मुख सूखता है, पानी बहुत हरवखत पीना पडता है। ताप चढता है पसीना बहुत छुटता है। इस समय कमलका मुख खुल जाता है वेण्य वढती है और गर्भ गिरजाता है। गर्भ मरा हुआ आता है अगर बाहर आकर मर जाता है। गर्भ पेटमें मर जाय तो स्त्रीको अंदर भार बोझ जैसा लगता है जीवित गर्भ भार रुप लगता नहि गर्भ मर जाय तो नाभिके नीचेका भाग ठंडा होजाता है, शरीर कांपता है, बच्चा फरकता नहि है, पेटकी उंचाइ कम होती है। ऐसे चिन्ह होतो गर्भको तुर्त बाहर निकालनेका प्रयत्न करना इसमें प्रमाद करने से मृत गर्भ के विषसे स्त्री मर जाती है। गर्भ निकल जाने के पीछे कई स्त्रीओको ओरका कुछ भाग अंदर रह जाता है किसीको गर्भका आवरण रह जाता है किसीको दुर्गंधयुक्त स्राव, गर्भाशयमे सूजन, अत्यार्तव, मस्तकमे चक्कर भूख मंद आदि चिन्ह दिखते है।

पथ्यापथ्य—स्वच्छ कमरेमें स्त्रीको रखना कसुवावडसे अमुक स्त्रीको ऐसा हुवा अमुक स्त्रीको ऐसा कष्ट हुवा इत्यादि बात नहीं करना। घबराहट हो असी बाते नहीं करना। हिंमत देना, खुराक सादा जलदी पाचन हो ऐसा

लघु देना। बाजारकी मीठाइ चीकना पदार्थ नहीं देना। कसुवावडके चिन्ह बहुत जोर में न हो तो गर्भको स्थिर करने के उपचार करना। यदि वेग सख्तहो और गर्भ नही टिकेगा ऐसा मालुम होतो स्त्री उस पीडासे जल्दी मुक्त हो तो ऐसा उपचार करना। किसी स्त्री को ३-४ महिना ऋतु बंद आनेसे गर्भ रहनेका भ्रम होता है यदि ऐसा हो तो गर्भपात के समय वमन बुखार आदि चिन्ह नही होते यदि मासिक बंद गया होगा तो रक्तस्त्राव होनेसे दर्द कम होता जायगा और कसुवावड (गर्भपात) होनेका होगा तो रक्तस्त्राव के साथ दर्द बढता जायगा।

गर्भपाल रस—पारद गंधक मंडूर सुवर्ण माक्षिक रौप्य प्रवाल और शुक्ति प्रत्येककी भस्म चार चार तोला सोंठ पीपल काली मिरच जीरा शाहजीरा धनिया तज इलायची नागकेसर शुद्ध कुचला रससिंदूर, लोह भस्म बलाबीज हरड, आंवला, शतावरी असगंध देवदार, अमोया हलदी कुटकी प्रत्येक दो दो तोला लेकर कूटकर नीमके पत्तेके रसमें गुंजा प्रमाण गोली बनाना। मात्रा १ से ४ गोली। सगर्भा स्त्रीका अतिसार मरोड दस्तकी कब्जी सूजन पेटका दर्द वमन ताप खांसी आदि दर्द मिटते है और हमेशा एक दो गोली लेनेसे गर्भका रक्षण होकर नव महिनेके पीछे सुखपूर्वक प्रसव होता है।

गर्भेन्दु शेखर—प्रवाल चंद्रपुटी तो. १० शिलाजीत, अभ्रक भस्म, पारद गंधक रससिंदूर लोह, यशद वंग, माक्षिक और रौप्य प्रत्येककी भस्म, जायफल, जावित्री, शतावरी बलामूल असगंध कूटकी सोंठ, काली मिरच, हलदी कपूर काचली, मुलैठी मूल प्रत्येक तीन तीन तोला। सब साथ मिलाकर भागरा, अरडूसी, ब्राह्मी प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देकर गुंजा प्रमाण गोली बनाना। मात्रा-१ से ४ गोली शहद दूध या पानीमें देना। सगर्भा स्त्रीके सब रोग मिटते हैं और सुखपूर्वक प्रसव होता है।

गर्भचिन्तामणि बृहत् (स्वर्ण युक्त)—पारद, गंधक सुवर्ण भस्म, लोह भस्म, रौप्यमाक्षिक भस्म, वंग भस्म, अभ्रक भस्म, मुक्तापिष्टी प्रत्येक चार चार तोला और प्रवाल चन्द्रपुटी आठ तोला सब साथ मिलाकर ब्राह्मी, अडूसी भागरा और वटपिपली (रतवेलिया) काला हंसराज (हंसपदी) प्रत्येककी तीन तीन भावना देकर एक गुंजा प्रमाण गोली बनाना। शहद मक्खन दूध अथवा च्यवनप्राशके साथ देना। सगर्भा स्त्रीके सब रोग मिटते हैं और बच्चा नीरोगी जन्मता है। जिसको गर्भाशयमें विष (रतवा) या गरमीके कारणसे गर्भका स्त्राव अथवा पात

हो जाता हो अथवा प्रसवके पीछे तुर्त बच्चा मर जाता हो ऐसी स्त्रीने शायद हो तो गर्भ रहनेके एक दो महिने पहिलेसे यह औषध चालू करना और बच्चाका जन्म हो जब तक चालू रखना। अनुपानके लिये अष्टांग चूर्ण एक से दो माशा इस औषधके साथ लिया जाता है।

सगर्भा स्त्रीके भिन्न भिन्न रोगके घरेलू उपचार

१ ताव—हरडगूड, गिलोय मजीठ रक्तचन्दन, देवदार समभाग कूट कर ०॥ से १ तोलाका क्वाथ कर शहद मिला कर पिलाना।

२ अतिसार और संग्रणी आमकी अंतरछाल जामूनकी अंतरछाल दोनो कूटकर १ तोलाका क्वाथ कर शहद मिलाकर पिलाना। अथवा सुवर्ण पर्पटी १ से २ रती शहदमें देना अथवा वाला मझुकी, रक्तचन्दन मूलेठी मूल, धनिया गिलोय, नागरमोथ धमासा, पर्पट (खरबलियो पीतपापडा) अतीस सब समभाग कूट १ से २ माशा शहदसे देना।

३ पेटका शूल—हिंग्वाष्टक अथवा लवण भास्कर १से२ माशा देना। अथवा शंखवटी १से२ गोली अथवा वृहत् कर्पूरादि १ से २ गोली पानीसे देना।

४ खासी—पिप्पल्यादि चूर्ण १से २ माशा अथवा कंटकारी अवलेह १ से२ छोटी चम्मच खिलाना और खैरसारादि गोली मुखमे रखना।

५ रक्तस्राव—महाचन्द्रकला २ से ४ गोली शहदमें देना। अथवा प्रवाल चंद्रपुटी १से२ रती च्यवनप्राश के साथ देना। अथवा गर्भपाल १ से २ गोली गुलकन्द साथ देना।

छातीका दाह—अम्लपित्तांतक १ से २ रती च्यवनप्राशके साथ देना। अथवा आंवलाका मुरब्बा खिलाना। अथवा सप्तामृत लोह २ रती और मुक्ता पिष्टि १ रती च्यवनप्राश अथवा शहद के साथ देना।

७ दस्तकी कब्जी—आरोग्यवर्धनी १ से २ गोली पानीसे देना। अथवा मधुविरेचन चूर्ण १ से २ माशा पानीसे देना। अथवा पाचनवटी नं २ २ से ४ गोली पानीसे देना।

गर्भस्राव तथा गर्भपात रोकनेका उपाय

१ कमलका कंद कालातिल, कमल बीजकी गंरी शकर सब समभाग कूट कर २ से ३ माशा शहदके साथ देना।

२—शिंगोडा कमल फूल काली द्राक्ष, मूलेठी मूल रसोत, समभाग कूटकर २ से ३ माशा शहदसे देना गर्भका पोषण हो।

शुष्कगर्भ—नागोदर

कारण—शोक, उपवास, रूक्ष पदार्थोका सेवन, गुह्यमार्गसे अतिस्राव, वायुका प्रकोप गर्भ रहनेसे विरुद्ध आहार विहार इत्यादि कारणोंसे गर्भकी वृद्धि न होकर कुछ महिनोतक गर्भाधानके चिह्न दीखाइ देते हैं और पीछे गर्भ सूखने लगता है और गर्भका हलन चलन बंध होता है। गर्भके आच्छादन (पड) के बीचमें रक्तस्राव होकर गर्भ पिंड जैसा बन जाता है। लेकिन उसमें जीव रहता है। उसे नागोदर अथवा गर्भका छोड हो गया ऐसा कहते है।

चिन्ह—प्रारंभमें तीन चार महिनोतक गर्भाधान जेसे चिन्ह दीखते है। पीछे अपनेआप ही वह सूखता जाता है। अगर स्राव होकर सूखने लगता है। वमन स्तनमें दूध इत्यादि गर्भाधानके चिन्ह भी पड पडते है। यदि नागोदर (छोड) गिरनेका होता है तब गर्भपात जैसे चिन्ह दीखते है। यदि वह छोड गिर जाता है तो स्त्रीको आराम होता है। किसी स्त्रीको पांच दश या पन्द्रह महिनेके पीछे छोड गिर जाता है और किसी किसीको दश पन्द्रह या वीस महिनेके पीछे यह छोड पल्लवित पुष्ट होता है। पीछे बच्चाका जन्म होता है। कई स्त्रीयोंको छोड पेटमें होने पर भी प्रत्येक महिने या न्यूनाधिक समय पर ऋतु दीखता है और किसीको ऋतु बंध होता है। यदि छोड पेटमें हमेशाके लिये रह जाता है तो फिर उस स्त्रीको संतान नहीं होता।

पथ्यापथ्य—छोडवाले गर्भका पतन होनेका उपचार करना। कमलका मुख चौडा हो ऐसा उपाय लेना। इसके पहिले गर्भ पहिलेकी नांइ बढने लगे ऐसे गर्भपोषक उपाय करना।

शुष्क गर्भको पल्लवित करनेका (पालववाना) उपाय

१ शतावरी असगंध केलीका कंद बलाका मूल माषपर्णी मुद्गपर्णी गोक्षुर रास्ना सारिवा प्रत्येक पांच पांच तोला और गुगळ तो. २०, कालीद्राक्ष तो. २० सब साथ कूटकर एक एक मासाकी गोली बनाना दोसे चार गोली दूध या पानीके साथ देना।

२ रास्ना और गुगळ समभाग लेकर दोनोंके समान शतावरी मिलाकर दो से तीन मासा दूध या पानीसे देना।

३ चंद्रप्रभा २ गोळीमें दो मासा शतावरीका चूर्ण मिलाकर शहदके साथ देना और दूधका खुराक रखना।

४ गर्भेन्दुशेखर तो ०॥, गर्भ चिंतामणि वृहद् तो ०॥, अशगंध तो ४, सब साथ मिलाकर १ से २ माशा शहदसे देना । दूधका खुराक रखना ।

५. महालक्ष्मी विलास २ रती, लक्ष्मणा लोह २ रती, चन्द्रप्रभा १ गोली और अश्वगंधा २ माशा सब साथ मिलाकर दूध या शहदसे देना ।

६. रत्नभागोत्तर रस १ रती, वसंत कुसुमाकर २ रती, शतावरी २ माशा मिलाकर च्यवनप्राश अथवा दूधमें देना ।

७ कलौंजी जीरा, नागकेशर, शतावरी, सममाग कूटकर १ से २ माशा दूधसे देना ।

८ कायफल ६ से ८ रती दूधके साथ देना ।

९. उटकटक (ऊटकंटा)की जड और मुलैठीकी जड सममाग कूटकर २ माशा पकाये हुये चावलके पानी (ओसामण) के साथ देना ।

१० मयूरशिखा, गुदेका फल और विधयरा (वृद्धदारक) सममाग कूटना । १ से २ माशा गायके दूधके साथ देना ।

छोड निकालनेका उपाय

छोड याने पेटमें सूखा हुआ गर्भ या पेटमें मरा हुआ गर्भ या गर्भके मरनेकी तैयारी हो उस समय स्त्रीको बचानेके लिये गर्भको बाहर निकालनेकी आवश्यकता रहती है । छोड पेटमें सूखकर अनेक उपाय करनेके पीछे पल्लवित नहीं होता और निर्जीव शय्यकी तरफ स्त्रीको कष्ट देता हो और छोड सूख कर अंदर मर गया है ऐसा चिह्न मालूम पडता हो तो स्त्रीको बचानेके लिये जीवित या मृत छोडको निकालनेका उपाय करना ।

प्रयोग—१ विषखापरा (जिसको गुजरातीमें साटोडो भी कहते हैं) उसकी लंबी जड लेकर उसको साफ सीधी करके उपर शिकोतरो एलीयो और खीरणी (रायण) के बीज दोनोंको सममाग लेकर कूटकर कपडछान कर पानीमें मेंदा जैसा बनाकर उस जड पर लेप करना और सुखाना । ऐसे पंद्रह लेप करना और प्रत्येक वख्त सुखाते जाना । पीछे उस जडके अंतमें दोरा बांध कर वह जड स्त्रीके गुह्य भागमें रखना । सात दिन तक करनेसे सूखा या मृत छोड निकल जाता है । हमेशां नयी नयी जड रखना ।

२ नीमकी अंतर छाल, सहंजनेकी अंतर छाल और गुगल प्रत्येक एक एक तोला और चांदकी चांचली ०॥ तोला । सबको बारीक कर पानीमें गोली बनाना । उस गोलीको शुद्ध गुह्यभागमें देना । उसी गोलीको उबालकर क्वाथ कर पिलाना ।

३ मासेके हरा पान तो २ और मेंघाने न तो. ०। दोनोंको वारीक पीस कर पिलाना।

४ इन्द्रायणका मूल, सौंफ (सुवादाना), मेथीदाना गाजरका बी, हरे वांसकी जड़, सज्जीखार कुलींजन, हरड, प्रत्येक ढाइ ढाइ तोला लेकर उसको सात पुडी बनाना। हमेशां १ पुडीका क्वाथ कर पिलाना। इस प्रकार ७ दिन तक पिलाना।

५ इन्द्रायण मूल लंबा लेना उसके उपर एलियाका लेप करना। पीछे उसके अंतमें डोरा बांध कर वह गुह्य भागमें रखना।

६ गाजरका बी तो ०॥, गुड तो ०॥ दोनोंको कुट कर तिलका तेल तो ५ में डाल पकाना। उसमें गुड तो. ५ मिला कर खिलाना।

सूतिका (प्रसूता–सुवावडीकी मावजत–प्रसूतिशास्त्र)

बच्चाका किसीभी प्रकारकी विना तकलीफ प्रसव हो वह सुखप्रसव कहा जाता है। किसी प्रकारकी तकलीफसे और परेशानीके साथ प्रसव हो वह कष्टप्रसव कहा जाता है। गर्भ टेढा हो अगर यथा योग्य स्थान पर न हो और गर्भाशयकी दूसरी किसी विक्रिया के कारण कापकुप करना पडे या दूसरी तरह गर्भका बाहार निकालना पडे उसे विषम प्रसव कहा जाता है। कइ वख्त ओर (मेली–अपरा) अंदर रह जाती है। खून बहुत पडता है और बडे कष्टसे या शस्त्रक्रियासे या अंदर हाथ डालकर गर्भको बाहर निकालना पडता है।

प्रसव–प्रसूति सुवाडके लिये प्रारंभिक व्यवस्था

सुवावड (प्रसव) करनेका कमरा स्वच्छ हवा प्रकाश आवश्यकता अनुसार आ जाया करे ऐसा होना चाहिये। शीतकाल हो तो कमरे में गरम गालीचा या सेत्रंजी बिछाना सूतिकाको मलमूत्रोत्सर्गके लिये कमरेमें ही व्यवस्था करना और तुर्त साफ कर धूप करना।

नववा मास बैठे तब सुयाणी (दायण) के साथ परिचय कराना और हर वख्त आती जाती रहे अनजान अपरिचित सुयाणी दायण अकस्मात आजाने से औरत को संकोच शरम आती है इसकारण वेणका वेग कम होना संभव है।

तैयार रखनेकी वस्तुएं–बिछाना चटाइ ओछाड गर्म और ठंडा नाल बांधने के लिये दो तीन सुतर या रेशमका डोरा, नाल काटने के कातर छुरी या अस्त्रा, नालको बांधने का कपडाका पाटा, पेटपर बांधनेका पाटा, बच्चा के लिये छोटी गोदडीयां कपडाका टुकडा (बाळोतीयां) बच्चाको स्नान कराने के लिये बडा

बरतन, तिलका तेल बच्चाको मिटो बनेके लिये कपडा, मारने उपलको (छागानी) सगडी और आवश्यक दवाइयां इत्यादि वस्तु तैयार रखना चाहिये ।

प्रसव होनेका मुख्य आधार गर्भाशयका संकोच है। और पेटके स्नायुओं के दाबका है। वेण आना यह गर्भाशयका संकोच है। और वह कमलको ओर दबाण करता है। गर्भाशय उपरके भागसे संकुचित होता हुआ नीचे उतरता है। वेण आती हैं जब कम्मर और पृष्ठभाग पीठ में दर्द होता हैं। गर्भस्थान में पतले पडकी थेली मे पानी भरा रहता है वह गर्भाम्बुत कहा जाता है। इस कारण गर्भको धक्का नहि लगता। वैसे हि प्रसव के समय गर्भाशय के मुखको चौडा-विस्तृत करनेमे वह सहायक होता है। गर्भके शरीर का मुख्य अंग मस्तक है वह बडा हो या रोगसे बडा हुआ हो तो प्रसवको कष्ट होता हैं। गर्भाशय मे मूत्राशय गुदा और वस्ति है। वह अनेक छोटे बडे अवयव और दूसरे स्नायु बंधनोसे भरा हुआ है। उसके उपर के भाग के आगमन द्वार और निर्गमनद्वार कहते हैं। आगमन और निर्गमन के बीचके मार्ग को वस्ति प्रदेश अथवा वस्ति कक्षा कहते हैं। प्रसव के समय कमल का मुख ६ से १२ घंटा मे पूर्णविस्तृत होता है।

वेण्य आने लगती है जब प्रवाहजु के दबाव गर्भाम्बुत कमलको ओर करने लगता है और जैसे जैसे वेण्य बढती जाती है वैसे कमल विस्तृत होता है। इस प्रवाही पदार्थ के कारण कमल के सर्व व्यास पर समान दाब होकर बिना तकलीफ खुलता जाता हैं। कमल संपूर्ण खुल जानेसे गर्भाम्बुत की थेली टूटती है। कई वखत कमल पूर्ण विस्तृत होनेके पहले हि थेली टुट जाती है जब गर्भके मस्तकका दाब कमल पर होता है इससे कमल पर शोथ होता है। पहिले प्रसवमे कमलका भाग बहुत कठिन होता है इस कारण पहिले प्रसव में(पहिलो सुवावडमें) स्त्रीको ज्यादा कष्ट होता है। कमल स्वाभाविक कठिन होता है। यदि उसपर शोथ सूजन हुइ होतो विस्तृत होने मे बहुत समय लगता है। कमल विस्तृत होने के पीछे गर्भको वस्ति पिंजरसे बाहर निकलने का है। गर्भाशय जोरसे संकोच पाने लगता है प्रारंभकी वेणसे काटता हो असी पीडा होती थी अब स्त्रीका कांजना पडता हैं। अर्थात अपनेसे बल करना पडता है। पहिले मस्तक निकलने के पीछे दूसरे भागको निकलने मे ज्यादा समय नहि लगता । कभी गुह्यभाग फटता भी है परन्तु पीछे थोडे दिनमे रुझ आ जाती हैं। बच्चा बाहर आ जाने के पीछे १० या १५ मिनट के पीछे वेण बंद पडती है बचमे थोडा बहुत खून गिरता है। स्त्री शिथिल हो जाती है। पीछे फिर मंद वेण आने लगती हैं जिससे रक्त प्रवाह के साथ ओर (ओरा) बाहर पडती है। इस प्रकार गर्भका पूरा प्रसव १२ से २४ घंटा मे होता है.

प्रसव करनेवाली स्त्री की रक्षा करनेके लिये प्रार्थना करना कि " हे बुद्धिमती बाई पृथ्वी पानी अग्नि वायु और आकाश ब्रह्मा विष्णु शंकर और धन्वंतरि तेरी रक्षा करे। तुझे जल्दी गर्भसे मुक्त करे हे सुंदर मुखवाली बाई कार्तिक स्वामीसे रक्षा किये हुए पुत्रको तू प्रसव कर। हे स्त्री अमृत चित्रभानु चन्द्र और उच्चैश्रवा अग्नि वायु सूर्य वरुण देव यहां आकर तेरी रक्षा करो समुद्रमे निकाला हुआ अमृत तेरे गर्भको जल्दी बहार निकाले "। पीछे स्त्री के हाथ में रक्षाके लिये श्री भुवनेश्वरीमाका मंगलसूत्र (नाडाछडी) बांधना। स्त्रीको कहना तू धीरे धीरे बच्चेको नीचे आनेकी कोशीश कर। बिना वेण आये जोर करनेसे बच्चा विकृत अंगवाला होगा। तेरे मुखपर सुंदर कांति दिखती है सो तू जरूर पुत्रको ही प्रसव करेगी। इस प्रकार आनंद उत्पन्न करनेसे स्त्रीको अधिक उत्साह और बल आता है। प्रसव होनेमे कष्ट होता हो तो काले सांपकी कांचलीका अथवा मैनफलका धुवा योनीको देना।

प्रसव हो जानेके पीछे मेली—ओर न पडे तो भोजपत्र कलीहारी कडवी तुंबी के बीज सर्पकी कांचली कुष्ठ सरसों इनमेसे जो चीज मिले उसका धुंवा गुह्य भागको देना और पानीमे पीसकर गुह्य भागमे लेप करना। कलीहारीके मूलको डोरा बांधकर गुह्यभागमे रखना प्रसव जलदी होता है। डोरा मजबुत बांधना और वह डोरा बहार पांवके साथ बांध देना ताकी वह मूल अंदर न घुस जाय। जलदी निकाल सके। मूलको अथवा छोटी पीपल और बच पानीमे पीस उसमे एरंड तेल मिलाय नाभी पर गाढा लेप करनेसे जलदी प्रसव होता है।

सुख प्रसव—नीचे के मंत्र पढकर ७ दफे पानी मंत्र कर पलानेसे सुखसे प्रसव होता है।

इहामृतं च सोमश्च चित्रभानुश्च भामिनि।
उच्चैश्रवाश्च तुरगो मन्दिरे निवसन्तु ते॥
इदममृतमपां समुद्धृतं वै लघुतर गर्भमिमं विमुंचतु स्त्रि।
तदनलपवनार्कवासवास्ते सह लयवर्णाबुधरैर्दिशन्तु शांतिम्॥
मुक्ता पाशा विपाशश्च: मुक्ताः सूर्येन्दुरश्मय।
मुक्तः सर्वभयाद् गर्भ एहि मा चिर मा चिर॥

नीचे बनाया हुआ पदरिया अथवा चौंतीसा यन्त्र अष्टगंधसे अथवा केसरसे कांसीको थाली मे लिखकर स्त्री को बताना और उसमें थोडा पानी डाल वह पिलाना ताकि जल्दी प्रसव होता है।

पन्द्रिया यंत्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

तीशा यंत्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

सुखप्रसव चूर्ण—सोंठ पीपल काली मिरच अजमोद रास्ना कुटकी सेंधानोन जीरा शाहाजीरा हींग अजवायन प्रत्येक पांच पांच तोला और असगन्ध तोला २८ सब साथ कूट २ से ३ तोला चूर्णका क्वाथ कर पिलाना।

सुख प्रसव लेप—पाठा कलोंहारी अडूसो मूल अपामार्ग मूल सब भाग पानी मे पीस गर्म कर नाभि जननेन्द्रिय और नाभि के नीचे के पेटके आजुबाजु लेप करना और १ मासा को क्वाथ कर पिलाना।

सुख प्रसव अंजन—सांपकी कांचलीको गाय के दूधमे ३ घंटा भिगो रख सुखाना, पीछे उसको जलाकर राख कर उसको आंजनेसे अथवा घोडे के नखका धुंवा गुह्यभागमे देनेसे जल्दी प्रसव होता है।

प्रसवके पहिले सच्चीं वेण्य उपडे जब सुयाणी (दायण)ने स्त्री के पास रहना। स्त्रीको बाये पार्श्व (पडखे) सुलाना। स्त्रीका घूटन पेटकी ओर करना (टूटियु वळाववी) पीछे सुयाणीने अपनी स्वच्छ की हुई २ अंगुली योनिमे डाल कर कमल तक ले जाकर अंदर गरमी कितनी है, और पानीवाला पदार्थ कितना है और कमलका मुख कितना खुला है यह जानना। स्त्री म्रोती हि रहे गर्भस्रुतका स्राव होनेके पीछे प्रसवका समय हो तब पुत्र वाचक फल स्त्रीके हाथमे देना। स्त्रीके शरीर पर तिलका तेल मर्दन करना। गेहु बाजरीकी गुडवाली राब गरम गरम पिलाना। स्त्रीको चीतो सुलाना। पावकी पेनी कुलाको लगे ईसप्रकार पांव रखना। नाभिके नीचे तेल मर्दन करना। भोजपत्र और राळका धुंवा देना। पसली (पार्श्व) पीठ कमर सायळमे गर्म किया हुआ तेल मर्दन करना। बच्चा पार्श्वमे (पडखामेंघुस) गया हो तो धीरेसे हथेलीसे मर्दन कर नीचे उतारना। वेण्य उपरा उपरि आने लगे तब योनिद्वारको तेल लगाकर उसका मुह विस्तृत करना। पीछे स्त्रीको धीरेधीरे बल करनेको कहना इस प्रकार प्रसव हो जायगा।

प्रसव होनेके पीछे गर्भस्थानको दबाकर मसलना जिससे वह संकोच पाकर पेडुमे एक पिंडकी तरह जम जायगा और मेली–अपरा अलग होकर गुह्यद्वारमे आ जायगी। जरूरत लगे तो अंगुलीसे स्पर्श कर खात्री कर मेलीको अंगुलीसे स्पर्श कर ओरको और पड (आवरण) को बाहर निकालना। बच्चा बाहर आजाने के पीछे दस मिनीट के पीछे एक दो वेण आकर ओरको अलग निकाल देता है। यदि ओर न गिरे तो आधे घटे की राह देखकर अंगुलीया हाथ गर्भस्थान मे डालकर ओरको बाहर निकालना। ओर न निकले जबतक स्रीके लिये भय समझना। बच्चाका श्वासोच्छास चालु हो जाय और मेली निकल जाय पीछे नाल काटना। अपरा–मेली बहार निकली न हो और नाल काटा जाय तो मेली कलेजेमे चढ कर स्रीका मृत्यु होता है। इसलिये यह ध्यानमे रखना कि मेलो (अपरा) निकल पड जानेके पीछे हि बच्चाका नाल काटना। नाभिसे ६ से १० इच दूर पर नालको दोरा बांधना और उस बांधे हुये दोरासे दूसरा दोरा दो इंचके दूरीपर बांधना और उस दो दोराके बीचमे कातरमे या अस्रासे काटना। नाल काटकर बच्चाको एक बाजु रखना गर्भाशयमे पूर्ण संकोच पाकर कठिन हो जब उस जगह अच्छो रुइ डालकर उपर पाटा बांधना। पाटा बहूत ढोला नहि और बहूत कठीन भी नहि, प्रसुता स्रीको अच्छा लगे इतना तग बांधना। पाटा बांधकर प्रसुताको अच्छी चार पाइ पर सुलाना और गुह्यद्वारपर अच्छा कपडा रखना। वह थकी हुइ होनेसे उसे निंद करने देना।

ओर–अपरा को जमीनमे गाडने के लिये १ हाथ गहरा खड्डा करना उसमे ५ सेर नमक डाल उपर ओर डाल ओर मेलो के उपर ५ सेर नमक डाल उपर मिट्टी दालकर उपर मजबुत पत्थर दाबना ताकि जनावर मेली निकाल न सके। ओरको नमकके साथ गहरे खड्डेमे गाडनेसे वह बच्चा भाग्यशाली बुद्धिशालो विद्वान चतुर होता है। यदि मेलीको जानवर निकाल खाजाय तो बच्चा कमनसीब मूर्ख निर्माल्य बुद्धिहीन होता है।

बच्चाको स्नान कराकर कपडा पहिनाना नालको कपडेमे बिटालकर उपर रुइ दाबकर उपर पाटा बांधना। प्रसुताके कमरेमे आजूबाजू भोंघाट नहि करने देना। उसके कमरेमे अंधेरा रखना रात्रीको कम प्रकाश वाला दिया रखना। उसकी पास सुयाणीके सिवा किसीकी आने नहि देना। निंद करनेके पीछे वह हुशीयारीमे आती है। सूतिकाको ४ चार दिन तक बिछानेमे सोती हि रखना, इससे गर्भाशय अपने ठिकाने आता है। बैठने देना नहि या खडी होने नहि देना। इससे

खून गिरनेका भय है। प्रसवके पीछे ६ से ९ घंटाके पीछे पिशाब करनेको याद दिलाना। प्रसवके पीछे २४ घंटातक पिशाब बिछानेमे हि हो तो अच्छा। पिशाब करनेकी याद दिलानेका कारण यह है कि गुह्य भाग जलनेके भयसे पिशाबको दबाये रखती है, इससे बुरा परिणाम होता है। प्रसवके पीछे उसे ४ घंटातक दस्त न हो तो एरंड तेल ३ से ४ तोला देकर दस्त लाना। उसके कमरे मे ठंडा पवन आने न देना और उसकी चारपाइ के नीचे छाणाका धिघु'म अग्नि थोडा डाल कर शेक चालु करना। शीतकाल और वर्षा ऋतु हो तो कमरे में सघडी रखना।

प्रसुता को खान पान मे समाल रखना। प्रारंभ मे भारी गरिष्ट पदार्थ खाने नहि देना। बाजरी या गेहु के आटा को घी मे भुनकर गुडका पानी डाल बनायी हुइ राब देना। भुख बढे जब गेहु के आटा का घी गुड से बनाया शिरा खिलाना। बाजरी के आटमे घणा मोन देकर नमक वाले पनी मे रोटका बनाकर बेगन मेथीकी भाजी के साग खिलाना। केर (करीर) अदरख हरी हलदी हिंग धनीया जीरा काली मिरच वगेरे मसाला दाळ शाकमे खिलाना। मुगकी दाल चावलकी खीचडी बनाकर काली मीरच घीसे वघार कर देना। १० दिन के पीछे काटलाका पाक खिलाना। मांस खाने वालोने प्रसुताको १ मास तक मांस खाने को नहि देना। शरदी वायु प्रकृति हो, ठंडी ऋतु हो तो पुराना आसव अथवा मद्य थोडा देना। हमेशा महानारायण तेल अथवा तिलके तेलमें वायविडंग और मालकांगनी बीजको पकाकर वह तेल हमेशा सारे शरीरमे मालीश कराना। प्रसुताको ९ या १० वे दिन पहिला स्नान कराना। खट्टा पदार्थ तेल इमली दही केले ककडी सीताफळ अमरुख फनस नीबू केरी वगेरे खानेको नहि देना।

प्रसुताका कपडा हमेशा बदलना, धोकर साफ रखना। आठ आठ दिनके पीछे शरीरपर हलदी मिलाया तेल मालीश कर गर्म जलसे स्नान कराना। स्नान कराकर तुर्त हि शरीर कोरा कर डालना। सगडी तैयार रखना शेक देना। २० दिनके पीछे हमेशा यां एकांतरा नहाना। दो महिना बीतने पर चाहे जैसा वर्तन करना। ३ महिना पूरा हो जबतक ब्रह्मचर्य पालना। १ महिना तक दुध देना नहि। चायका व्यसन हो तो गर्म मशालावाला पानीका चाय थोडा दुध डाला हुआ देना। बच्चाको छोटो चार पाइमें अलग सुलाना। उसकी गोदडी या बाळोतिया (बिछाने ढकने के कपडाका टुकडा) एक एक घंटाके पीछे बदलते रहना।

प्रसवके पीछे औषधीमे नीचे लिखी चीजोमेंसे जिसको जो अनुकूल लगे आवश्यकता हो वह देना। पहिले दिनमे दशमूलादि क्वाथ पिलाना प्रारंभ करना। ०॥ तोला क्वाथ के चूर्णमे २० तोला पानी डाल १० तोला रहनेसे कपड छान कर पिलाना। हमेशा प्रातः कालको १५ से २० दिन तक यह क्वाथ पिलाना। हमेशां खान पानके पीछे नमक चढाकर पकाया सोफ (सुवादाणा) मुखवासके लिये खिलाना। शक्तिके लिये सुवर्ण वसंत मालती, महालक्ष्मी विलास, वसंत कुसुमाकर, अभ्रक भस्म, पूर्ण चंद्रोदयकी गोली आदिमेसे योग्य लगे वह शहदसे अथवा सोमरस सुंठो अवलेहके साथ देना।

बच्चेकी समाल–नाल-नारडा जो छ से दस इंच दुंटी (नाभि)को लगा हुआ है उसपर रुई दावकर पाटा बांधना। पाटासे पेटपर दाब न हो यह ध्यान रखना। नाभिके उपर नालके मूलमे तिलका तेल हमेशा डालना। वह नाल ५ या ६ दिनके पीछे सुख कर गिर जाता है। बिचमे वह नाल खोंचा जाय तो बच्चा रोता है। और नाभी भी उभर आती है। पीछे बच्चेके शरीरमे खून भर जानेसे आप हि बैठ जाती है। यदि नाल ज्यादा खोचा जाय तो नाभी (डुंडो) पकती है। यदि नालको नाभीके नजीकसे काटे या धागा बिना बांधे काटे तो खून बहुत गिरकर बच्चा मर जाता है। नाल लंबा रखकर काटा जाय तो वह बच्चा दीर्घायुष बुद्धिमान नीरोगी रहता है। नाल गिर जाय जब शीशीमे रख शोशो पर बच्चेकी जन्मतिथि लिखना। बच्चा १० सालका हो जब तक बीमार पडे तब यह नाल घीस कर पिलानेसे आराम होता है।

बच्चाका जन्म हो उस समय थाली बजाना तांबे पीतलको थाली पर कीसी वस्तुको ठोककर अवाज करना। इससे वह मनुष्य कभी कीसी प्रकारके आवाज आदिसे डरता नहि है। जन्मके समय उसका शरीर चरबीसे भराहुआ चीकनाइ वाला होता है सो साबुनसे या रीठे के पानीसे गरम पानीसे स्नान कराना, पीछे दो दो दिनको स्नान कराना। बच्चाको एकदम प्रकाशमे नहि लाना। धीरे धीरे प्रकाशमे लाना। जन्मके पीछे ५–से–६ दिनतक गलसुदी पिलाना। गुड एक दो तोलामे ५ से ८ तोला पानी डाल पीघल जानेके पीछे कपडछान कर उस पानीमें गर्म किया हुआ गायका घी छोटी आधा से १ चंमच डाल पानीको थोडा गर्म कर रुइके फोयासे धीरे धीरे पिलाना। इससे ९ मास तक पेटमे जमा हुआ काला मल निकलता है। यदि मल नहि निकलता तो वह सारी जींदगी बिमार रहता है। कहावत है कि बच्चा पहिले दिन जिसके हाथसे गलसुदी पीता है उसके स्वभाव जैसा बच्चा होता है। बच्चा नवमासका हो जबतक बकरावना

स्तनपान कराना। पीछे धीरे धीरे खुराकपर चढाकर धावण बंद करना। यदि स्रोको बीचमे गर्भाधान होतो बच्चे को धावण छुडा देना। क्योंकि गर्भाधानके पीछे बच्चा स्तनपान करता है तो कमजोर बनता है। धावन छुडानेके पहिले गायको दूध थोडा थोडा पिला कर बढाना और खुराक भी देना।

प्रसूता—सूतिका सुवावडोके रोग

क्लेशाद्विषमाजीर्णाद्विषमात्स्वाद्यादयोग्यचर्यातः ॥
अहितोपचारदोषात् कुपितैर्दोषैर्भवंति विविधरुजः ॥
बलहीनतांगमर्दं कासो गुरुगात्रताथ मुखशोष ॥
रोगाश्च सूतिकाया विषमा बहुकालकष्टशनारः ॥
क्षयसंग्रहणीश्वासा यश्यो रोगेभ्य एव जायंते ॥र त॥

किसी प्रकारके दाहसे सूजनसे या अन्य कारणे से प्रसूताको ज्वर आता है, वह ४ से ८ दिनमे उतर जाता है। कभी लंबे दिन भी चलता है। प्रसवके पीछे २४से ४८ घंटाके पीछे ज्वर आता है। प्रसवके पीछे प्रसूता स्री कच्चे दिनमे भारी गरिष्ठ खुराक खाने लगती हैतो वह पाचन न होकर अजीर्ण होता है तब ताप लागु हो जाता है। प्रथम ठंड लगकर ताप चढता है पसीना आता है। सिरमें दर्द होता है छाती मे गभराहट ग्लानि मन उदासी वमन शरीर मे रुक्षता दस्त कब्ज आदि चिन्ह मालुम होवे है। पेटमे गर्भाशय मे या आजु बाजु मे दर्द होता है। पेट फुलता है जीभ सूखती है। जीभपर छारी लगती है। प्यास लगती है वमन होता है। खांसी कफ दम दस्त ज्यादा होना अतिसार संग्रहणी शुल सांधाकी पीडा मस्तक मे चक्कर रक्तस्राव गुह्य भाग मे या शरीरमे खुजली सूजन कामला पांडु दाह आदि रोग प्रसूताको अनेक कारणोसे होते है। जिसरोग के साथ दूसरे जो जो आनुषंगिक चिन्ह दिखते हो उसपर बिचार कर एक या दो चार औषधका योग कर देना। आगे लिखी दवायां प्रसूता के सब रोगो में गुण करती हैं।

देवदार्वादि क्वाथ—देवदार बच कुष्ट छोटीपीपल सोंठ कालफल नागरमोथ चिरायता धनिया बडीहरड गजपीपर धमासा गोखरु अतीस गिलोय कटहासंगी, शाहाजीरा कौचबीज छोटी कटहरी मूल सब सम भाग लेकर कुटकर रखना ०॥ से १ तोलाका क्वाथ कर पिलाना। प्रसव के पीछे दुसरे दिनसे २० दिन तक पिलाना। यदि प्रसुताको कुछ दर्द हुआ तो इस क्वाथके साथ रोगके अनुसार औषधी देना।

सुतिका मिश्रण १—अभ्रक भस्म, महालक्ष्मी नारायण, सुवर्ण वसंत मालती, मुक्तापिष्टी, प्रताप लंकेश्वर, कस्तुरी सब सम भाग लेकर घोंटकर शीशी मे भरना पीछे हमेशां ३ से ४ रत्ती सौभाग्य शुंठी अवलेह के साथ एक या दो समय देना खांसी सधिका दर्द चक्कर भ्रम छाती में घमराट आदिमे देना।

सुतिका मिश्रण २—वसंतकुसुमाकर सुवर्ण भस्म सुवर्ण पर्पटी सुतशेखर सब सम भाग लेकर घोंट रखना। हमेशां २ से ३ रती २ समय कंटकारी अवलेह से या वासावलेह से देना सुतिकाका दस्त अम्लपित्त कमजोरी छातीका दर्द आदिमे देना।

सुतिका मिश्रण ३—रत्नभागोतर रस तो ०।, जय मंगल रस तो ०॥, योगराज रसायन तो १, सतामृत लोह तोला ०॥, लोह पर्पटी तो १ शीलाजीत तो १ सब साथ मिलाकर ३ से ४ रती शहदसे अथवा च्यवनप्राश जीवन के साथ देना प्रसुताके सब रोगमे दिया जाता है

सुतिका रोगातक—पारद गंधक अभ्रक भस्म मुक्तापिष्टी सावरसींग भस्म सोंठ पीपल कालीमरीच लोह भस्म स्वर्ण माक्षीक भस्म प्रत्येक एक एक तोला और स्वर्ण भस्म ०। पाव तोला सब साथ मिलाकर घोंटकर रखना मात्रा २ से ३ रती सौभाग्य शुंठी से देना। प्रसुता स्त्रीका पेटका शुल छातीका दर्द चक्कर वायु पित्त प्रकोप आदि मे उत्तम है।

श्रीफलादि चतुर्थ काटलु पाक—बबुलका गोंद तोला १०. खोपरा (टोपरा) तोला २०, बादाम गोरी पिस्ता सोंठ प्रत्येक पांच पांच तोला कमल बीज तो २, मेथी दाना चीमेद खसखस बडीशोफ (वरीयाळी) सौफ (सुवादाना) गोखरु काली मुसली वाकुमा धनिया तालमखाना अशेलीया बीज छोटी पीपल सफेद मुसली कौंचबीजकी गिरि काली मिरच प्रत्येक एक एक तोला जायपत्री पीपरीमूल तज जायफल शतावरी नागकेशर तमालपत्र वायविडंग कुलींजन जीरा हलदी प्रत्येक आधा तोला गेहूंका आटा ८० तोला घी १०० तोला गुड १०० तोला सबका त्रिवित पाक बनाना। सुगंध द्रव्य अलग कूट रखना वह उपर छिडकना। गुड घीका पाक कर सब डालकर थाळी मे दाब देना या लड्डू बनाना। ४ से ६ तोला प्रसुताको हमेशा खिलाना। शक्ति आती है भुख लगती है कोइ दर्द नहि होता।

शुठ्यादि वत्रोसु काटलु पाक—सोठ तोला ४० खोप चीनी स्मुद्र शोष बीज घमासा लोह भस्म चौनी के बाला खेरसार मुसळी तगर समीमस्तको अगर गजपीपल बायविडंग विधायरा आयपणो अकरकरा केसर अजवायन कलोजीजीरा पाषणभेद तपखीर चंदनसफेद कालीमीरच जीरा भांग प्रत्येक एक एक तोला चवक चित्रा असगन्ध दारुहलदी लवींग जायफल घनेना प्याज मे पकाया हिंगुल मीठीआवळ (सोनामुखी की पती) प्रत्येक दो दो तोला, नागकेसर इलायची सोठ पीपल काली मिरच हरड प्रत्येक ढाई ढाई तोला, तज तमाल प्रत्येक पांच पांच तोला, बंगद भस्म तोला ०॥, शक्कर और घी १०० से १५० तोला सबका पाक बनाना अथवा अवलेह जेसा करना। हमेशा २ से ४ तोला तक प्रसूताको खिलाना। शक्ति आती है सब प्रकार के दर्द में यह अच्छा खुराक का काम करता है।

सौभाग्य शुंठी अवलेह—कच्चा मण ४ गुडकी चासणी रांग लगाये बरतनमे करना चासणी घट्ट होनेसे नीचे लिखे द्रव्यका चूर्ण तैयार रखाहो डाल कर लकडीके तवेथासे हिलाना।

डालनेके द्रव्य—सोठ तोला १६०, खोपरा-श्रीफळ सुखा तेल १६० सोफ (सुवावाणा) तोला ६४, चारोली तो ४०, कचूरा नागरमोथ छोटीपीपल पीपरी मूल बडीसोफ (वरीयाळी), तज जायफल जावत्र शाहाजीरा अजवायन (अजमा) सींगोडा हरड धनीया असगंध सफेदमुसली नागकेशर आवला इलायची लवंग सफेदचंदन शतावरी अजमोद प्रत्येक बारह बारह तोला लेकर सब कूटकर इत्रालासे छानकर रखना और गुडकी चासनी हो जानेसे सब डालकर हिलाना। घी तो. ३२० लेकर दबुलका गोंद तोला १६० को घीमें पकाकर कूटकर गुडपाकमे डालना और बचाहुवा घी भी अवलेहमें डाल देना। पीछे २ घंटा तक हिलाना पीछे चुलेसे उतारकर १२ घंटा के पीछे इसमे तो १२ रससिंदुर अभ्रक भस्म तो १२ भीमसेनी कपूर चार तोला डालकर २ घंटा हिलाना। २४ घंटा के पीछे अच्छे बरतनमें भरादेना। मात्रा ३ से ४ तोला खाना प्रसूत के सब रोग मिटते है सुखपूर्वक सुवावड होती है और बच्चा भी निरोगी रहता है। प्रसूता स्त्री एक महिनाके पीछे बाहर आती है जब हृष्ट पुष्ट तेजस्वी और स्वरूपवती बनती है

सूतिका विनोद रस—पारद गंधक रससिंदुर अभ्रक भस्म प्रत्येक दस दस तोला, ताम्रभस्म २॥ तोला सोठ पीपल मरीच पीपरीमूळ सेंधानोन जायफळ जावत्री तज लोंग हलदी बच अतीस सौंफ अशोकीयाका बीज प्रत्येक चार चार तोला साथ मिलाकर देवदार्वादि कषायकी ३ भावना और निर्गुंडी-

के रस या कषायकी १ भावना देकर सुखाकर घोट रखना। मात्र ३ से ४ रती शहदसे देना। प्रसूताका ताप अतिसार संग्रहणी वमन शूल उदावर्तवायु हृदय रोगमे गुणकारी है भुख लगती है खुराक पाचन होता है शक्ति आती हैं।

प्रताप लंकेश्वर—रस सिंदूर तोला १०, ताम्र भस्म माक्षिक भस्म सिंगरफोत पारद गंधक प्रत्येक पांच पांच तोला, शंख भस्म शुक्ति भस्म अभ्रक भस्म लोह भस्म सोठ पीपल मरीच पीपलीमूल प्रत्येक आठ आठ तोला, आरने उपलको भस्म कपड छन की हुई २० तोला सब साथ मिलाय देवदार्वादि कषाय की भावना देकर सुखाकर घोट कर रखना। ३ से ४ रती शहदसे देना। प्रसूता के बहूतसे रोगमें लाभ होता हैं।

सूतिका वल्लभ रस—पारद गंधक अभ्रक भस्म माक्षिक भस्म रौप्य भस्म स्वर्ण भस्म हरताल भस्म अफीम जायफल जोवत्री प्रत्येक चार चार तोला लेकर नागरमोथ बलापंचांग सेमलका मूल प्रत्येक के कषायकी एक एक भावना देकर छाया में सुखाकर पीछे भीमसेनी कपूर तोला ४ मिलाकर घोट कर रखना। मात्रा २ से ३ रती शहदसे देना। प्रसूताके अतिसार संग्रहणी योनीशूल ताप खांसी पेटका दर्द छती के रोग गर्भाशयका दाह गुह्यभागसे रक्तस्राव या सफेद स्राव मिटते है।

सूतिका भूषण रस—पारद गंधक स्वर्णभस्म रौप्यभस्म प्रवाल पिष्टी अभ्रकभस्म हरताल भस्म शुद्ध मेनसील सोठ पीपल मरीच निगुंडी बीज सब सम भाग लेकर अर्क दूधकी चित्रकके कषायकी और अडूसो के रसकी एक एक भावना देकर शराव संपुटमे कपडमिट्टी कर वालुका यंत्रका ४ प्रहर (१२ घंटा) अग्नि देना स्वांगशीत होनेपर निकाल घोटकर रखना। मात्रा १ से २ रती शहदसे देनेसे प्रसूताके बहूतसे रोगमे गुणकारी होता है।

अपरा पातन धूप—यदी ओर(आवल)न पडी होतो कडवी तुबंके बीज सांपकी कांचली अमलतास सरसोंका तेल समभाग मिलाकर गुह्य भागमे धुंआ देना।

अपरा पातन लेप—कलीहारी (सफेद बछनाग) को पीस हाथ पांवमे लेप करनेसे ओर (आवल) पडती है।

मूढगर्भ

टेडा-वक्र—बच्चा टेढा, वक्र मस्तक शिवायका शरीरका भाग पहिले आवे तो उसे मूढगर्भ कहते हैं। इसमे मस्तक न आकर पग गुदा घुटन पावळ खभा या हाथ दिखता है, जब बच्चा टेढा आया (आडुआवु) कहा जाता है ऐसा हो तो हुशीयार सुयाणीने अंदर हाथ डाल कर बच्चाको सीधा कर बहार निकालना पडता है। इस कामके लिये वृद्ध अनुभवी और बहुत स्त्रीओंकी सुवावड की हो ऐसी सुयाणी होनी चाहिये। ग्राम प्रदेशमे ऐसी कुशल सुयाणी होती है। जो बच्चाका योग्य स्थितिमें लाकर प्रसव करा सकती है। अब अस्तालमे रहने वाली नर्सें या लेडी डाक्टर लोग बच्चाको यथास्थित करनेकी कोशीश न कर कापकूट करनेकी तैयारीमे पडते हैं। उचित यह है कि पहिले हाथसे बुद्धिपूर्वक बच्चाको सहीसा कर प्रसव करानेको कोशीश करना चाहिये। सुयाणी जब निरुपाय हो तब शस्त्र कर्मसे निकाल करनेको डाक्टरके तावेमे स्त्रीको देना।

कृच्छ्र प्रसव—इसमेसे वेण्य आकर बीचमे ४ से ८ घटा बंद पड जाती है, फिर वेण्य आकर उठती है। इस प्रकार एकसे अधिक दिन निकल जाता है। जब सुयाणी वैद्य या डाक्टरने जल्दी प्रसव करानेकी कोशीश नहि करना। कुदरती रीतिसे प्रसव होनेके लिये धैर्य रखना। पहिला प्रसव हो तो गर्भमार्गका भाग सख्त होनेसे, गर्भका मस्तक और प्रसव भाग छोटा बडा होनेसे, गर्भाशय वक्र होनेसे, स्त्रीका मन उदास रहनेसे, हिस्टोरीया ताप खांसी दस्तकी कब्जी आदि दर्दसे, रूक्ष अस्निग्ध पदार्थ खानेकी आदतसे, दूध घीका खुराक न मिलनेसे-न लेनेसे, कष्टाती स्त्रीको सुयाणी दायण कभी अपशब्दो बोल कर स्त्रीके मनको आघात पहूचानेसे इत्यादि कारणोसे गर्भाशयका मुख ग्रीवा या योनि संकुचित होकर प्रसवके समय स्त्रीको अधिक कष्ट होता है।

इस प्रकार हो तो बुद्धिपूर्वक समझकर गर्भके पडमे छिद्रकर गर्भामृत धीरे धीरे बहने देनेसे गर्भाशय विस्तृत होकर वेणका जोर बढकर प्रसव होता है। धैर्य देना, स्त्रीके मनके समाधान करनेका उपाय करना। प्रसवके पहिले जुलाब देकर पेट साफ कराना. पीडा शामक औषध देना। कई डाक्टर लोग प्रसवके कष्टके समय एक्स्टेक्ट अरगट देते हैं यह बडी भारी भूल है। प्रसवहो जानेके पीछे और अपरा-मली पड जानेके पीछे वह दिया जाना चाहिये, ताकि गर्भाशय संकुचित हो असली स्थिति मे आवे बिगाड निकल जाय और खून ज्यादा बह न जाय। स्त्री कष्टाती हो उस समय अरगट देनेसे विपरीत क्रिया

होकर प्रसव अटक जाता है और स्त्री मृत्युके भयमें आ जाती है। बच्चा मर गया है ऐसा मालुम हो तो उसे जल्दी नीकालनेका प्रयत्न करना। माझो के पत्ते तोला १० सेंधानोन तोला १ पीस पिलाना तो मृत बच्चा गिर जाता है।

कई डाक्टर लोग दूसरेके शरीर पर चीरफाडकर अखतरा (एक्सपेरीमेन्ट) कर अनुभव लेने की इच्छासे अथवा कष्टानी स्त्रीका दुख न देख सकनेसे,, घरके मनुष्यो के मनकी विह्वलताका लाभ लेने के लिये बिना समय बिना प्रसवके बच्चाको बहार निकालने की कोशीश करते है और स्त्री मर जाती और। असे मौके पर समझदार सुयाणी डाक्टरको रुकती है लेकिन उसे जंगली कहकर डाक्टर अपना काम करता है, असे अप्रंकृत क्रिल्से बन गये है बन रहे है।

इस लिये घरके मनुष्योने भी कष्टाती स्त्रीको देख कर डाक्टरको बुलानेकी उतावल नहि करना। शांति धैर्य रख कुदरती रीतीसे प्रसव होने देना। इससे थोडे समयके लिये विलंबसे प्रसव हो लेकिन इससे स्त्रीका मृत्युका भय नहि रहता है। कइ सुयाणी और नरसे भी अपने चाहे हुये डाक्टरको बुलानेके लीये प्रसव सावा सरल हो तो भी घरके मनुष्योंको घभराट कर डाक्टरको बुलाती है और अपने लाभके लिये स्त्रीको मृत्युके मुखमे धकेलती है।

बच्चा सीधे मार्गपर (नालमे) है कि नहीं यह देखना, पीछे तेल मालीस कर नीचे उतारना, वेण्य ठंडी हो तो दो तीन रती कस्तुरी गर्म दुध के साथ पीस कर पिलाना, आवश्यकता हो तो थोडी ब्रांडी भी पिलाना।



योनि रोग जननेन्द्रियरोग

कारण—गर्भावस्थामे आहार विहारको अनीयमिततासे प्रसव पीछे दो महीना के पहिले पुरुष संगसे बहुती गर्म पदार्थ बहुत चाय पीनेकी आदत उपदंश प्रमेहवाले पुरुषके संगसे गर्भपात करनेवाले पदार्थके उपयोग करनेसे भिन्न भिन्न योनीरोग उत्पन्न होता हैं।

योनिरोगका भेद—उदावर्ता वंध्या विप्लुता परिप्लुता वातला लोहितक्षरा प्रस्रंसिनी वापनी पुत्रघ्नी पित्तला अत्यानदा कर्णिनी नीि चरणा अतीचरणा-पंढी अंडिनी महती सूचीवक्त्रा आदि योनी रोग है।

वातप्रधान योनि रोग—उस जगह पीडा दर्द हो ऋतु फेन वाली आवे ऋतु बहुतही कम आवे उस भागमे पीडा शूल सवाका योडा बहूत आता रहे स्पर्श रूक्ष हो पुरुष संगसे दर्द हो।

प्र १ गुह्यरोगेश्वरी २ से ४ गोली पानीसे देना।

प्र २ सर्व स्त्रीगदां तका वटी २ से ४ पानीसे देना।

प्र. ३ चंद्रप्रभा २ से ३ गोलीको पीस उसमे ६ से आठ रतो शिलाजीत मिलाकर सौभाग्य शुंठो अवलेहके साथ देना। महानारायण तेलमें कपडेको बत्ती भिगोकर गुह्यभाग के अंदर रखना।

पित्तज योनि रोग—जलन हो रक्तस्राव हो प्रसवमे कष्ट हो गर्भाधान बहुधा न हो अगर गर्भाधान हो तो कम मास मे गर्भस्राव या गर्भपात हो। जाय उस जगह चांदा पडे।

प्र. १ प्रवाल चंद्रपुटी तोला १, मुक्ता पिटी तो. ०॥ अमृता सत्वम्वेत तो ३, वसतामृत लोह तो-१ साथ मिलाय पीस ६ से ८ रत्ती च्यवनप्राश के साथ अथवा गुलकंदके साथ देना रोपण मलम अथवा शामक मलम लगाना अथवा महालाक्षादि तेलमे कपडेकी बत्ती भीगोकर रखना।

कफज योनि रोग—पुरुष संगसे तृप्ति न हो खुजली आवे, संगसे सूजन हो। चिकना पानी गिरे। शिथिलता हो।

प्र १ सुवर्ण वसंत मालती तोला ०॥, छोटो पीपल तो. १, सावरशींग अभ्रक भस्म योगराज रसायन प्रत्येक एक एक तोला सब साथ घोटकर ६ से ७ रती मृगुहरीतकी अवलेह के साथ देना।

योनिकण्डु-खुजली—उस भागमे बहुत खुजली आवे, खुजलनेके पीछे जलन हो। उस भागपर शेक करनेसे गर्म वस्तु रखनेसे अच्छा लगे।

प्र. १. किशोर गुगल, अग्नि तुंडी, विषतिंदुकादि वटी आरोग्यवर्धनी चंद्रप्रभा इनमेसे एक यादो प्रकारकी गोली योग्य मात्रामे प्रात और शामको देना।

हयमारादि तेल—कनेरका मूल गिलोय सोंठ पीपल कालीमिरच सेंधानोन करंड रसोत निसोथ दंतीमूल हल्दी कायफल नागरमोथ इन्द्रायणका फल पाठा नागकेसर चित्रक प्रत्येक पांच पाच तोला लेकर कूटकर उसमें पानी डाल १२ घंटा भिगो रखना पीछे दूसरे दिन उसमे ४०० तोला सरसोंका तेल डालकर पानीका अंश जल जाय जब तक पकाना कपडछान कर रखना। इस तेलमें रुइका फोया अथवा कपडा भिगोकर गुह्य भागमे रखना रात्रीको रखनेसे रातभर रहनेसे लाभ होता हैं।

योनिदाह जलन—महालाक्षादि तेल अथवा भृंगराज तेलका फोया भिगोकर गुह्य भागमे रखना। गुह्य रोगेश्वरी गोली ३ से ४ पानीसे देना। सुवर्ण बसंत मालती ३ से ४ गोली च्यवनप्राशके साथ देना।

योनिशुल—महा विषगर्भ तेल अथवा महामरिचादि तेलमे कपडाका टुकडा भिगोकर अंदर रखना और महारास्नादि क्वाथ पिलाना और उसका धुवा देना। वातविध्वंश रस वातचिंतामणी वृहत शूल गजकेशरी समभाग मिश्र कर ३ से ४ रती घीसे देना। निमकी नीमेली और एरंडी बीज समभाग कूट कर धुआ देना।

योनिमे अर्श मसा—अर्शकुठार शंकर लोहभस्म सांभरसींग भस्म अभ्रक कल्पवटी समभाग पीस ३ से ४ रती बाहुसाल गुडके साथ देना। महा-कासीसादि तेलमे अथवा महालाक्षादि तेलमें कपडा भिगोकर अन्दर रखना। आरोग्य वर्धनी अथवा संशमनी नं. १ की गोली ३ से ४ पानीसे देना।

योनिभ्रंश-बहार आना—वडकी छाल मुइ- आंवली नीमकी छाल मजीठ दारु हलदी नागरमोथ सब समभाग कूटकर १० तोलामे २ लोटा पानी डाल उबालना पीछे कपडछान कर इससे वह भाग धोना। काचनार गुगळ लक्ष्मणा लोह प्रवाल पिष्टी चंद्रप्रभा समभाग मिश्रकर ६ से ८ रती कुटजावलेहके साथ अथवा चांगेरी घृत अथवा ब्राह्मी घृतके साथ देना।

योनिशोथ—गुह्य रोगेश्वरी आरोग्य वर्धनी वृद्धिबाधिका वटी सम भाग पीस ६ से ८ रती कटकारी अवलेह अथवा मृगुहरीतकी अवलेहके साथ देना।

हयमारादि तेल महानारायण तेल मह लाक्षादि तेल मेसे कोइ लगाना कपडा भिगो कर अंदर रखना ।

योनि स्राव—पीपल-अश्वत्थके पान नीमके पान अशोक छाल बबुलकी छाल बेरकी छाल अंजन वृक्षकी छाल समभाग कुट १० तोलाको पानीमे उबाल विशाव करके वस्त्र उस पानीसे और दिनमेसे ४-५ दफे धोना । महालक्ष्मी विलास तोला ०॥, सुधा पर्पटी तोला १, प्रदर रिपु लोह तो १ वसंत तिलक तोला ०॥, मिश्र कर ३ से ४ रत्ती च्यवनप्राशसे लेना ।

योनिशैथिल्य—प्रसवमे ज्यादा कष्ट होनेसे प्रसवके समय वह भाग फटनेसे गर्भ विकृत रूपसे बहार आनेसे अथवा वात पित्त कफके प्रकोपसे यह दर्द होता है । इस कारण गर्भ रहता नहि । उसमे दोनोका कम आनंद आता है ।

प्र १ अनारके फूल और सरसो समभाग लेकर पानीमे पीसकर अंदर लेप करना अथवा कपडेमे पोटली कर वह अंदर रखना ।

प्र. २ हलदी दारुहलदी कमल पुष्प देवदार समभाग पीस लेप करना ।

प्र. ३ धाइके फूल हरड बहेडा आंवला जामुनकी गुठली नीली (गळी) के पान सब समभाग लेकर पानीमे पीस लेप करना ।

प्र. ४ आंवला और केलेका मूल सम भाग पानीमे पीस लेप करना ।

प्र ५ माजुफल और शिलारसकी समभाग पीस मासा प्रमाण सोगठी बनाना गुह्य भागमे रखना ।

संकोचनी सोगठी—भांग तोला १।, माजूफल तोला ५, कचूरो १, महेदी तो १॥, असगंध तो २।, सेमलका गोंद तो. १॥, जायफल तो. २ दारुहलदी तो २ सब साथ पीस १ मासाकी सोगठी बनाना । मलमलके कपडेमे रख गुह्य भागमे रखना ।

गुह्यरोगेश्वरी वटी—पारद गंधक रससिंदूर प्रत्येक पांच पांच तोला, टंकण दारुहलदी शक्कर हलदी बावची हरड वंशलोचन आंवला लवंग बहुफली कभंका मूल गोखरु गिलोय मजीठ लोध्र सोंठ पीपल कालीमरीच स्वर्णमाक्षिक पीपरीमूल वरुण छाल कांचनार । अतीस वायविडंग सेंधानोन शिलारस प्रत्येक ढाई ढाई तोला लेना । सबको विधिवत मिलाय देवदार्वादि क्वाथकी भावना देकर ३ रतीकी गोली बनाना २ से ४ गोली पानीसे देना । योनीके सब रोगमे लाभ कारक है ।

फल घृत—मजीठ मुलेठी मूल कुष्ठ हरड बहेडा आंवला बलामूल गंगेटी मूल द्राक्ष अजमोद हलदी दारुहलदी प्रियंगु (घउंलो) कुटकी कमल फूल कमलकंद

विदारी कंद प्रत्येक पांच पांच तोला, शतावरी तो ४०, अष्टवर्ग तो ४० सबको कूटकर सब द्रव्य डुब जाय इतना पानी डालकर १२ घंटा भिगो रखना। पीछे उसमे गायका दूध पक्का १० सेर डालना और गायका घी कच्चा मण १ (रतल ४१) डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय तब कपडछान कर लेना। घृतका खर पाक नहि जाय और पाक कच्चा भी न यह ध्यानमे रखना। प्रत्येक घृत और तेलका पाक खरपाक होनेमे द्रव्योका गुण क्षीण होता है और पाक कच्चा रहेनेसे द्रव्योंका गुण नहि आसकता इसलिये प्रत्येक तैल घृतका पाक मध्यम रखना।

मात्रा १ से ४ तोला। गर्भाशयका वीसर्प (रतवा)से गर्भस्राव या गर्भपात हो जाता हो, गर्भाशयकी सूजन, कमल अधोमुख हो गया हो, रक्तस्राव, स्त्रीके ऋतुके रोग प्रदर श्वेत रक्तस्राव योनीके सब रोग मिटते है। इसका सेवन करनेसे पुरुषोके वीर्य दोष मधुमेह प्रमेह स्वप्नावस्था आदिमे लाभ होता है। यह घृत स्त्रीयोके भिन्नभिन्न रोगोमें अन्य औषधीके साथ अनुपान रूपमे भी दिया जाता है

वंध्यात्व—वांझपन

स्त्रीको संतान नहि होनेका कारण और उपाय

जंतुसे वंध्यात्व—स्त्रीको गुह्य भागमे विशेष प्रकारके जंतु उत्पन्न होनेमे वंध्यात्व इसमे संगके समय और पीछे मस्तक पीडा हो।

ऋतुकालके पहिले दिनसे तीन दिन तक रुई (कपास)के फूल तो ०॥ को मुरगीके पित्तमे पिस कर मलमलकी पोटलीमे बांध गुह्य भागमे रखना।

(२) वीसर्प (रतवा)से वंध्यात्व—गुह्यभागसे गर्भाशयमे रतवा हो तो संगके समय या संगके पीछे गला-कंठ और मुखमे दर्द हो।

मजीठ और मूलैठी मूल सम भागसे कूटकर तिलका तेल मिलाय मलहम जैसा बनाकर मंदाग्नीसे पकाकर मलमलकी पोटलीमे रख गुह्य भागमे ऋतुके समय पहिले दिनसे तीन दिन तक रखना।

लक्ष्मणा लोह ३ रती, रत्न भागोत्तर १ रती, शतावरी चूर्ण २ मासा साथ मिलाय शहदसे या गायके घीसे ऋतु स्नानके पीछे सेवन करना।

३-चरबी चढजानेसे वंध्यात्व-गुह्य भागमे और गर्भाशयमे चरबी चढ गई हो तो संगके समय स्त्रीका हृदयमें दर्द हो।

शाहजीरा शिवलिंगी शतावरी विदारी कंद सम भाग कूट ४ से ८ मासाकी पोटली कर ऋतुके समय तीन दिन गुह्य भागमे रखना।

प्रमदानंद रस २ रती चंद्रप्रभा स्वर्ण वसंतमालती ३ गोली शतावरी चूर्ण ? मासा साथ पीस शहदसे ऋतु स्नानके पीछे लेना।

४-सूजनसे वंध्यत्व-गुह्यभागमे और गर्भाशयमें सूजन हो तो संगके समय या पीछे मस्तक कोणी हाथका कांडामे दर्द हो।

सज्जीखार हल्दी बहेडा कनेरकेबीज समभाग लेकर पीसकर उसमे महानारायण तेल डाल कर गुह्यभागमें पोटलीकर ऋतुकालमे ३ दिन रखना।

शिलाजीत ६ रती प्रशमनी गोली २ गुह्यरोगेश्वरी गोली २ साथ मिलाय ऋतु स्नान के पीछे प्रारंभ करना।

५ शरदीसे वंध्यत्व-गुह्यभागमे शरदी हो गई होतो संगके पीछे पांवको आंघोमे खुजली आती है।

मोगरीके बीज, आसोंदराके बीज छोटीपीपल सम सम भाग कूटकर आधा तोला चूर्णको कपडेमें पोटलीकर गुह्यभागमे ऋतुकालके तीन दिन रखना।

सुवर्ण वसंतमालती तोला ०॥, अभ्रक भस्म साबरसींग भस्म चोंसठ प्रहरी पीपल प्रत्येक एक एक तोला लेकर पीसकर शीशीमे भरना प्रातकाल ३ से ४ रती सौभाग्य शुंठी अवलेह १ से २ तोला के साथ दिनमे १ समय लेना।

६ गुह्यभागमे गरमीसे वंध्यत्व-गुह्यभागमे गरमी अधिक होतो संगके समय अंदरके भागमे दर्द पीडा होती है।

मूलेठी मूल बहेडा मजीठ सम भागसे कूटकर क्वाथ कर उसमे रूईका फोया भिगोकर गुह्यभागमे रखना।

मुक्तापिष्टि तोला ०॥, गुह्यरोगेश्वरी तोला १, चंद्रप्रभा लोह शिलाजीत युक्त १॥ तोला, शिलाजीत १ तोला साथ पीसकर ५ से ६ रती शहदसे अथवा च्यवनप्राश जीवन से देना।

७ भूतप्रेतके उपद्रवसे या किसीके अभिचारसे वंध्यात्व-होनेसे मन उदासीन हो किसीसे बातचीत अच्छी न करे पुरुष संगमे इच्छा न हो

दिव्य धूप का धुंवा श्वासमे और गुह्यभागमे देना। नीमके पत्तेको उबाल कर उसमे हल्दी डालकर गुह्यभागको धोते रहना। श्री भुवनेश्वरी गायत्रीको माला कर उसका पानी पिलाना रुद्राक्षकी माला सोनासे मढाकर गलेमे पहिनाना।

माणिक्य पिष्टि वसंततिलक मुक्तापिष्टी रत्नभागोतर रस सम भाग लेकर घोंटकर ? से ३ रती गायके घी से देना।

संतान नहि होनेके ७ अन्य कारण

१ संगके पीछे योनिमे कंप होता होतो कमल फिर गया जानना। इसमे कसाबोया एक भाग, मोर पीछ २ भाग, कूटकर कवाथ कर गुह्यभाग तीन दिन धोना।

२ संगके पीछे कम्मर मे दर्द हो तो गुह्यभागमे गर्भाशयमें वायुका प्रकोप अधिक समझना। ऋतु स्नान पीछे ४ दिन तिलके तेलमे हिंगको पकाकर उसमें कपडा भिगोकर गुह्यभागमे रखना।

३ संगके पीछे पांवकी पिंडो (घुटणके नीचेके भाग) मे दर्द-पीडा होतो कमल पर मांस बढता है समझना। शाहजीरा और हाथीका नख समभाग पस सरसोंके तेलमे पकाकर उस तेलसे गुह्यभाग ३ दिन धोना।

४ संगके पीछे हृदयमे दर्द हो तो कमलमे जंतु जानना। शक्कर हरड बहेडा कुट भिगोकर उस पानीसे ३ दिन गुह्यभाग धोना।

५-संगके पीछे दाह जलन हो तो कमलमें गरमी और तपा हुआ रहता है समझो। उसमे ऋतुस्रावमे खून काले रंगका गिरता हैं। हरडे बहेडा आंवला चना बडीशोप (वरीयाली)का कवाथ कर ३ दिन गु भाग धोना।

६ संगके पीछे पसीना आवे शरीर ठंडा पडे तो कमलमे कफ पित्त समझना। तिल तोला १० में काली मिरच तोला ०। कवाथ कर उससे जनेनद्रिय धोना।

७ संगके पीछे बोल सके नहि घबराहट हो हिस्टीरिया जैसा चिह्न होतो भूत प्रेत बाधा जानना। इसमे कपूर केशर चदन गोरोचनसे भोजपत्रापर भूव नेश्वरी गायत्रीका मन्त्र लिख गुगलका धूप देकर तावीजमे डाल गले या बाहुमे बांधना और हमेशां गुगलका धूप देना। अथवा सफेद कटहरीका मूल ०। तो, चावल के पानीमे पीस पिलाना। गुह्यभागमे दिव्यधूपका धुवा देना। पुत्रप्रद रस २ रती और स्वर्ण पर्पटी २ रती गायके घीमे देना।

पुत्रप्रद रस—अभ्रक भस्म तो ५, पूर्णचंद्रोदय तो. १, लोहभस्म तो. ५, स्वर्णभस्म मुक्ता पिष्टी रौप्य भस्म त्रिवंग भस्म स्फटिक पिष्टी इलायची चिनीकबाला लवंग तज केशर कस्तूरी प्रत्येक एक एक तोला, शिलाजीत १॥ तोला, सबको विधिवत मिलाय शतावरी रस शिवलिंगी पंचांग विदारी कंद प्रत्येक के रसकी एक एक भावना देकर छायामें सुखाकर घोंटकर रखना अथवा २ रतीकी गोली बनाना ३ से ६ रती मे अष्टवर्ग चूर्ण ? मास मिलाय शहदसे अथवा दूधसे अथवा च्यवनप्राश-जीवनसे देना।

गर्भधारण चूर्ण—असगंध शतावरी विदारीकंद सेमलका मूल सफेद मुसली सफेद कटहरीका मूल शिवलिंगी बिजया बीज नागकेसर पलाशबीज मैनफल सब समभाग कूट कर प्रातः २ मासा गायके दुधसे ऋतु स्नान के पीछे देना।

गर्भधारिणी वटी—शिवलिंगी बीज तोला १०, बिजया बीज तो० १५, पूर्ण चन्द्रोदय स्वर्ण रौप्य लोह बंग त्रिबंग प्रत्येक की भस्म, प्रवाल पिष्टी मुक्ता पिष्टी स्फाटिक पिष्टी मैनफल शरपुख मूल मुलेठी मूल सफेद चंदन प्रत्येक एक एक तोला, असगंध शतावरी वाराहीकंद येलाकंद मधुफली नागकेशर कुष्ठ ब्राह्मी तलवणी (सुवर्चला) अडूसा फूल सफेद प्रत्येक डेढ डेढ तोला, अष्टवर्ग १२ तोला विधिवत मिलाय शतावरी रसकी और विदारी कंद रस प्रत्येक की एक एक भावना देकर पीछे कस्तुरी और केशर आधा आधा तोला मिलाकर दो रतीकी गोली बनाना। गर्भाशय के सबरोग सबदोष मिट कर संतान होता है। हमेशा प्रातःकाल स्नान कर सूर्य के सामने खडी हो प्रणाम कर ३ गोली चावकर दुधसे लेना। ऋतुकाल के ३ दिन गोली बंद करना। गर्भाधान होने पर भी गोली चालु रखना। गर्भाशय के गुह्य भाग के सब दोष-विकार मिटकर गर्भाधान होता है।

गर्भप्रदा वटी—अभ्रक भस्म तो० ५, मैनफल तो० ४, नागकेसर शतावरी असगंध मयूर शिखा लक्ष्मण अथवा सफेद कटहरी मूल मूलेठी मूल बल मूल शिवलिंगी बीज प्रत्येक तीन तीन तोला अष्टवर्ग १६ तोला शिवलिंगी पंचांग के रस मे ३ रती की गोली बनाना प्रातःकाल १ गोली दूधसे लेना गर्भाशय के सब रोग दूर होकर गर्भाधान होता है।

लक्ष्मणा लोह—आमुनमें पकायी लोह भस्म तोला २०, रससिन्दुर तो० ७॥ अशोक छाल दभ मूल महुडा (मधुक) पुष्प मूलेठीमूल बला बीज पाठा बिल्वगर्भ शतावरी असगंध मैनफल प्रत्येक चार चार तोला, साथ मिलाय शिवलिंगी के पंचांग के क्वाथकी भावना देकर छायामे सुखाकर घोंट रखना। ४ से ६ रती शहदसे अथवा। ऋतु काल के ३ दिन बंद रखना दूधसे देना। गर्भाशय के विकार मिटकर कमल यथायोग्य स्थिति में आकार गर्भाधान होता है।

सोमघृत—शरपुख मूल सरसो ब्राह्मी शखावली पुनर्नवा मूल शतावरी कुष्ठ मूलेठी मूल कुटकी हलदी मजीठ पाठा भांगरा देवदार तलवणी अडूसा प्रत्येक एक एक सेर, हरड बेडा आंवला प्रत्येक दोदो सेर, सारिवा ३ सेर सबको कूट पानीमे १२ घंटा भिगो रखना पीछे उसमे गायका दूध सेर २० और घी सेर ८० डाल कर पकाना पानी का अंश जल जाय जब कपडछान कर

रखना। मात्रा ? से ४ तोला। इस के सेवनसे स्त्री के ऋतु के रक्तदोष गर्भाशयका विकार गुह्यभाग के रोग प्रदर सोम रोग सफेद स्राव आदि और पुरुषो के मूत्रदोष वीर्यदोष मिटते है।

स्त्री और पुरुष के ऋतुमे अथवा वीर्य मे संतान होने नहि होनेकी पहिचान

कुंडाले अथवा जमीन मे दो खाडा कर मिट्टी डाल दोनो मे राइ बोना पीछे एकमे स्त्री और एकमे पुरुष हमेशा पिशाब करे। तीन दीन करना स्त्री और पुरुषका खड्डा पर निशान रखना। पीछे जिसके कुंडमे या खड्डे में राइ उगे उसके ऋतु और वीर्य मे संतान होनेका जीवाणु हैं। ऐसा समझना और न उगे उसके ऋतुवीर्य मे नहि है। यह जानकर औषध सेवन कराना और एक दो महिने पर उपर लिखी पहिचान करा ते रहना। ऐसा समझ कर जिसके पिशाबसे राइ न उगी हो उसको मन्त्र पाठ पूजा आदि संतान देनेवाले प्रयोग कराना और औषध सेवन कराना पुरुषकी कम ताकत होती वशीकरण पौष्टीक शक्ति पर औषध शेवन करना।

गर्भपरिवर्तन **पुत्रीका पुत्र हो** गर्भाधान के पीछे दो मास के पीछे ६१ ६२ ६३ तीन दिन और ८१ ८२ ८३ तीन दिन भाग के बीज २४ रती गायके दुध के साथ खिलाना। और २४ रती पानी में पीस गुह्य भागमें लेप करे तो पुत्री होती हो उसको पुत्र हो एसा शास्त्रमे लिखा है।

काकवंध्या **प्रयोग**—काकवंधा यह है कि एकबार संतान होकर पीछे नहि होता काकवंधा जहां किस स्थान में है यह जान लेना पीछे स्त्री ने रविवार के दिन शामको संध्या समये काकजंघा क्षुपको पास जाकर क्षुप के नीचे चावल पैसा सुपारी धर कर कहना कि हे काकजंघा देवी संतान के लिये मैं आगामी रविवार को तुझे लेजाउंगी मेरी मनकामना पुरी करना, कह कर नमस्कार करना। और प्रतिदिन उसके मूलमे ७ दिन तक दुध डालना। पीछे रविवार के दिन काकजंघा का क्षुप मूल सह उखाड ले आना और छाया मे सुखाना पीस कूट कपडछान कर चूर्ण कर रखना शनिवार के दिन धमासा को आमन्त्रण दे आना और मूल मे दुध डालना सुपारी पैसा चावल धरना। दूसरे दिन रविवारके प्रातःकालमे धमासा को ले आना कुट कर कपडछान चूर्ण करना। पीछे काकजंघा चूर्ण और धमासा चूर्ण साथ मिलाय मद्दसे २ मासा की गोली बनाना। हमेशां २ गोली दूधसे लेना ७ दिन तक नमक नहि खाना। दुध चावल गेहुकी रोटी खीरका भोजन कर ऋतु स्नान के पीछे ४ थे दिन आरंभ कर १४ दिन तक सेवन करना काकवंध्या को संतान होता है।

गर्भ प्रतिबंधक

कारण—कई स्त्रीयो को बहुत संतान होनेसे शरीर शिथिल कृश कमजोर होता है इस लिये संतान बंद करने का उपाय करना।

गर्भनिग्रह चूर्ण—छोटी पीपल सोहागा वायविडंग समभाग पीस कर रखना। ऋतु आवे जब पहिले दिनसे ४ दिन तक प्रातःकाल मे २ मासा चूर्ण पानीसे लेना।

गर्भनिग्रह मलम—ढाक के बीज तोला २०, सोहागा तो ४, वाय-विडंग तो ४, फिटकीरी तो १ अनार के फूल तो २ सब पीस घोंट महीन कर घी शहद मे मलम करना। ऋतु स्नाता होने के पीछे गुह्य भाग मे लगाना।

१ जासुद के फुल ३ सुरकामे पीस ऋतु आवे जब १ ले दिनसे ४ दिन तक खाना उपर ३ से ४ तोला गुड खाना।

२ ढाक के बीज कोजला कर वह भस्म २ से ३ मासा पानीसे देना।

३ सोनागेरु इलायची हलदी कचुरा तज सम भाग कुट कर ऋतु स्नान के पीछे ४ थे दिनसे ४ से ८ मासा रातवासी पानी के साथ ७ दिन तक देना

४ सेंधानोन का टुकडा को तिलका तेल लगा कर गुह्य भाग मे २ घंटा रख कर पीछे पुरुष संग करने से गर्भ नहि रहता।

५ ऋतु स्नान के पीछे ४थे दिनपे निमकी छालका धुवा गुह्य भागको देना धुवा अंदर जाय इस प्रकार नलि द्वारा देना। तीन दिन तक देनेसे संतान नहि होता।

६ मासा ४ फिटकोरीको १० तोला पानीमे पीघालकर संग के पीछे इसकी पिचकारी देनेसे गर्भ नहि रहता।

स्तन पाक

१ कांटा अशेळीया के पानको पानीमें पीस घीमे जरा पका कर चांदा पाक पर पोटीसकी तरह लगाना ४ दिनमें रुझ आती है।

२ नीम के पान वडकी छाल हलदी बकाइन नीम के पान कीडामारी सम भाग कुट कर उबाल कर उस पानसे धोना।

३ जात्यादि मलम या जात्यादि तेल अथवा महालाक्षादि तेलमे कपडा भिगोकर स्तन पर रख उपर पीपलका पता दाबाकर पाटा बांधना।

४ लोह पर्पटी कीशोर गुगळ आरोग्यवर्धनी केशरादि गोली मे से किसीका सेवन कराना।

स्तन शोथ सूजन

१ दशांग लेप पानीमें पीस गरम कर लगाना।

२ सोनागेरुमे मध मिलाय गर्मकर लगाकर पाटा बांधना।

३ इंद्रायण मूल और फल और मैनफलको पीस गर्म कर लगाना।

४ तुलसी और धतुराका पान या मूल पीस गर्मकर लगाना।

स्तनकी शिथिलता

कारण—गर्भपात गर्भस्राव होनेसे, कृशतासे अधिक संतान होनेसे सतत चिंताग्रस्त मन रहेनेसे पोषण स्निग्ध खुराक न मिलनेसे, श्वेत रक्त प्रदर सतत रहनेसे स्वाभाविक शरीरका बांधा निर्बल होनेसे पट्टा या कपडा स्तनपर दाब कर बांधमे रहेनेसे अतिविषयसे स्तनका विकास होना रुक जाता है इत्यादि कारणोसे कई स्त्रीओके स्तन शुष्क कम विकसित और शिथिल होते है।

कंटकारी मलम—छोटी कटहरीके बीज पद्माभीज सरसों कुष्ठ असगंध वच गज पीपल समभाग कूट महीन कर घीमे मिलाना हमेशा मालीश करना स्तन और शिश्न पुष्ट मोटा होते है।

कुष्ठादि मलम—कुष्ठ असगंध वच गजपीपल सम भाग कूट महीन कर घीमे मिलाना। हमेशां मालीस करना। स्तन और शिश्न पुष्ट मोटा होता है।

श्रीपर्णी तेल—श्रीपर्णी (शीणवी) के फल और छालको दुधमे पीस तिलका तेल पकाकर मालीश करना।

लोध्रादि तेल—लोध्र सफेद कणीस असगंध गजपीपल सम भाग लेकर तिलके तेलमे पकाना।

वचादि तेल—वच अमार छाल गोरखमुंडी सम भाग कूट कर १२ घंटा पानीमे भिगो रख सरसोंका तेल पकाना।

स्त्रीके दुध (धावण)का विकार

कारण—उपदंश आदि रोगसे, प्रमेह उपदंशवाले पुरुषके संगसे प्रसुता अवस्थामे योग्य खारखार नहि मिल्नेसे, आहार विहारकी अनियमिततासे स्त्रीका धावण बिगडता है अल्प हो जाता है ताकी बच्चाका पोषण नहि होता।

दुग्ध वर्धन चूर्ण—अतीस तोला २॥ शतावरी तो १०, विदारी कंद तो. १० असगंध तो ५, शक्कर तो. २५, ईखका मूल तो. ५ आंमला तो ५, बलाबीज तो १०, तालमखाना तो ५ सब कूट कर मात्रा ०। से ०॥ तोला घी शहद या दूधसे देना।

स्तन्य सुधा रस—पारद गंधक रौप्य भस्म प्रवाल पिष्टी अभ्रक भस्म माक्षीक भस्म कुटकी आंवला विदारीकंद अतीस नीमके बीजकी गीरी अमीया हल्दी कुष्ठ शतावरी असगंध सब सम भाग विधिवत मिलाय सारिवा और ब्राह्मी और शतावरी के रसकी भावना देना। स्त्रीका धावन शुद्ध होकर बढता है।

सौन्दर्य वर्धन

कांतिप्रद—रक्त चंदन ढाकका फूल मूलैठी मूल बीजोरा निंबुका केसरा कुसुंभ (कसुंबो) प्रियंगु (घउलो) मेंदी हल्दी दारुहलदी गोरोचन मैनसील शतावरी विदारीकंद पद्मकाष्ठ कमल फूल वडकी बडवाइ चंदन लोंग सरसों कृष्णागरु केसर प्रत्येक द्रव्य आठ आठ तोला बैर बदरीकी लाख तो. २० सबको कुटका बकरीके दूधमे भिगोना पीछे आवश्यकता हो उतना पानी और तिलका तेल पक्कासेर २० डाल कर पकाना। पानीका अंश जल जानेसे कपडछान कर रखना शरीरका वर्ण (वान) अच्छा होता है। मुख सुंदर होता है। खील मसा काला दाग मुखकी झाई आदि मिटते है।

सौंदर्य वर्धन लेप—लोध्र मूलेष्ठिका मूल सरसो काले तिल शाहजीरा जीरा समभाग कुटकर रखना बकरीके दुधसे अथवा पानीमे पीस मुखपर मालीस करनेसे मुखका काला दाघ व्यंग झाई खील आदि मिटाकर मुख सुंदर होता है।

शरीरको सुगंधी करने

नर मोहन लेप—इलायची कचूरा तमालपत्र सफेदचंदन वाला हरड सहजानाकी छाल नागरमोथ कुष्ठ सम भाग कुटकर रखना स्नान करनेके पहिले पानीमे मिलाय मुख और शरीर पर मर्दन कर स्नान करनेसे शरीर अच्छा सुगंध युक्त रहता है।

मुख सुगंधकर चूर्ण-केसर कुष्ट जटामासी इलायची सम भाग लेकर रखना १ मासा पानी से लेनेसे मुखकी दुर्गंध मिटती है।

शरीर सुगंध लेप-हरड लोध्र नागकेशर हलदी सफेदचंदन नागरमोथ नींबके पत्ते सातिवण अनारकीछाल कचूरा सम भाग कुटकर स्नान करनेके पहिले पानीमे मिलाय सारे शरीर पर मर्दन करना। शरीरमे आती हुई दुर्गंध

पसीना की दुर्गंध मिटती हैं। कांखमे मर्दन करनेसे कांखकी दुर्गंध मिटति है। स्त्रीओंके गुह्यभागमे आति हुइ दुर्गंध ईस चुर्णका क्वाथ कर प्रक्षालन करनो।

सर्व स्त्रीगर्दातको वटी—पारद गंधक लोह स्वर्ण माक्षिक वग अभ्रक प्रत्येकरी भस्म प्रवाल पिष्टि वंशलोचन प्रत्येक सोलह सोलह तोला, शिलाजित ३२ तोला गुगल तो. ३२ सौंठ पीपल मिरच हरड बहेडा आंवला वायविडंग नागकेशर शिवलिंगीबीज तज तमालपत्र इलायची नागरमोथ जटामासी पीपरीमूल सेंधानोन चित्रक सारिवा कचूरा अतीस कपूरकाचलि बच देवदार वायवरणा (वरणछाल) मजीठ शक्कर हलदी निमदीरुकी गिरी प्रत्येक चार चार तोला सब साथ विधिवत मिलाय मात्रा के रस में घोट १ रतीकी गोली बनाना २ से ४ गोली पानीसे देना। औरतोके ऋतुदोष गर्भाशय विकार गर्भाशयका (रतवा) हीस्टीरीया कमजोरी चक्कर भ्रम मंदाग्नि पेटका वायु प्रसूता सुतिकाके रोग सगर्भाके रोग दिमाग ह्रदयका रोग आंतोका रोग स्तनथ स्तनका रोग मासिक धर्मकी अनियमितता रक्त प्रदर सफेद चिकना पानी पडना आदि रोगोको मिटाता है।

प्रदरारि रस—(स्वर्णयुक्त) पारद गंधक लोह भस्म अभ्रक खापरसींग माक्षिक लोह रौप्य प्रत्येककी भस्म प्रवालपिष्ठी मुक्तापिष्ठी प्रत्येक चार चार तोला स्वर्ण भस्म १ तोला, वंशलोचन सौंठ पीपल कालीमिरच तज लवंग इलायची चीनीकबाला नागकेशर तुलसीबीज अगर सफेद चंदन रक्तचंदन अतीस कपूर काचली काला हंसराज हरड बहेडा आंवला सारिवा मजीठ प्रत्येक एक एक तो. विधिवत मिलाय केवडा के जलकी भावना देकर सुखाकर रखना। मात्रा ३ से ६ रती पानीसे स्त्रीओंके ऋतुके गर्भाशयके रोग श्वेत रक्त प्रदर और इसके कारण होते हुवे उपद्रव शांत होते है।

प्रमदानंद रस (स्वर्ण युक्त) पारद गंधक स्वर्ण भस्म शिलाजीत रौप्य भस्म बंग भस्म प्रवाल पिष्टी सब सम भाग लेना, चित्रकका क्वाथ त्रिफलाका क्वाथ की भावना देकर रती प्रमाण गोली बनाना। २ से ३ गोली पानीसे देना। स्त्रीओ के ऋतुके गर्भाशयके रोग श्वेत रक्त प्रदर हिस्टीरिया दिमाग ह्रदयके रोग मिटता है।

स्त्री नपुंसक–कामनाश

कारण चिन्ह—जैसे पुरुष नपुंसक होता है इस प्रकार स्त्रीको भी गुह्यभाग के लिंग अवयवके विकारसे कामवासना नष्ट होती है। पुरुष जिस प्रकार हस्तदोष से विषय वासना तृप्त करता है उसी प्रकार स्त्री लिंगाकृति वस्तुसे काम वासना

चूस करती है इस कारणसे और किसीको जन्मसेहि कामवास नहि है तो और पुरुष संगके प्रति अनादर अनिच्छा होती है। संगसे जो आनंद उत्पन्न होना चाहिये वह नहि होता।

पुरुष नपुंसक के लिये जो औषध दिया जाता हैं सब औषध स्त्रीको भी गुणकारी होता है। पूर्णचंद्रोदय की गोलीया वसंतकुसुमाकर महालक्ष्मी विलास वंग भस्म लोह भस्म स्वर्ण भस्म आदि उचित मात्रा मे विशेष समय तक देनेसे लाभ होता हैं।

हिस्टीरिया (योषापस्मार) हिस्टीरिया

कारण—गर्भाशय के रोग दिमागकी कमजोरी भय शोक कामविकार लिंगाकृति वस्तुसे हस्तदोष, विषय वासनाकी तृप्ति न होना इष्ट पुरुषसे संगकी तीव्र इच्छा पूर्ण न होना मरवी बढना आंतो मे पेटमे वायु प्रकोप इत्यादि कारणोसे दिमाग मस्तिक पर धुआं धक्का पहुंचकर और दिमागमे खूनका धक्का लगनेसे यह वा दर्द होता है।

मुक्तेश्वरी वटी—पारद गंधक रसविंदूर लोह भस्म अभ्रक भस्म शिलाजीत कचनार। वायविडंग भीलावा का मगज (गिरी) काले तिल पुष्कर मूल सोंठ पीपल काली मिरच नागरमोथ इलायची गोखरु गिलोय हरड निसोथ अजमोद वच प्रत्येक पांच पांच तोला गुगळ ८० तोला मिलाय शतावली के रस या कषाय की भावना देकर २ रती को गोली बनाना। स्त्रीओका हिस्टीरिया दिमागकी कमजोरी आदि मिट ते है।

शिलाजीत गुगळ—पारद गंधक रसविंदूर प्रत्येक पांच पांच तोला, माक्षिक भस्म शिलाजीत सोंठ पीपल काली मिरच वरुणकी छाल कचनार हरड कनक बीज गिलोय चित्रक निसोत दशमूल नागरमोथ वायविडंग बलामूल शतावरी विधारा गुंजाका मूल हल्दी धनीया रास्ना प्रत्येक चार चार तोला गुगळ १०० तोला दशमूल के कवाथकी भावना देकर ३ रती की गोली बनाना २ से ३ गोली पानीसे देना। सब प्रकार के वातरोग संधिवा हिस्टीरिया आंतो के रोग पक्षवात इत्यादि मे गुणकारी है।

अश्वगंधारिष्ट—असगंध तोला, १००, सफेद मुशली तो ८०, मजीठ हरड हल्दी महुडा का फूल रास्ना विदारी कंद अर्जुन छाल नागरमोथ मयूर शिखा प्रत्येक चालीस चालीस तोला, अनंत मूल सारिवा सफेद चंदन रक्तचंदन वच चित्रक प्रत्येक बत्तीस बत्तीस तोला कूट ५ मण पानी में उबाल कर पीछे अच्छा

कोठी में सब द्रव्यो के साथ डल कर उसमे धाई के फुल तोला १२८, सहद सेर १०. नागकेसर तज तमाल प्रियंगु सोंठ पीपल प्रत्येक सोलह सोलह तोला और गुड सेर ४० डाल कर कोठीका मुह बंद कर आसवकी रीतिसे तैयार करना २ से ४ तोला मात्रा। हिस्टोरिया मूर्च्छा भ्रम चक्कर अपस्मार मृगी उन्माद ब्लड प्रेशर आदिमे गुणकारी है।

सूतशेखर (स्वर्णयुक्त) पारद गंधक स्वर्ण भस्म टंकण शुद्ध वछनाग सोंठ पीपल कालीमिरच कनक बीज ताम्र भस्म तमाल नागकेसर एलची शंखभस्म बिल्वमज्जा कचुरा सब सममाग लेकर विधिवत मिलाय भांगरा के रसकी भावना देना गोली १ रत्ती प्रमाण करना वात पित्त कफजन्य रोग अम्लपित्त हिस्टीरिया स्मरोन्माद ब्लडपेशर गेस चडना हृदय दाह आंतोका रोग इनमे गुणकारी है।



बाल रोग बच्चों के रोग

जन्म कृत्य—बच्चोंकी जन्म समयकी सारवार—

बच्चा जन्मते हि पहिले श्वासमे रोने लगे वह बहुत अच्छा है। रोनेसे शरीर पर अच्छी असर होती हैं। उसके फेफडे फूलते है और श्वासोच्छ्वासको मदद मिलती हैं। स्त्रीको मेली—अपरा सब निकल जानेके पीछे हि बच्चाकी नाल काटना, यदि मेली बिना गिरे नाल काटा जाय तो मेली कलेजेमे चढकर श्वासका रुंधन होनेसे स्त्री मर जाती है। इस लिये बच्चाका जन्म होनेके पीछे मेली न गिरे वहां तक बच्चाको जमीन पर बिछाये कपडेपर सुलाये रखना। मेली गिर जानेपर बच्चाकी नाभीसे ६ या ७ अंगुल दूर सुतरका धागा बांध कर मेलीकी ओरके भागमे दो आंगल दूर अस्त्रासे वा कातरसे काटना। नाल नाभिसे जितना दूरसे काटा जाय बच्चा भाग्यशाली होता है। पहिलेके समयमे ८ से १० इंच दूरीसे काटते थे परन्तु इतने लंबे नालकी रक्षा करना कठिन होता है इस लिये चार पांच इंचके दूरीसे काटा जाता है। काटते वखत नाभीसे लगा नाल खींचा न जाय यह सम्भाल रखना। खींचानेसे कभी नाल टूट जानेसे रक्तस्राव होकर बच्चा मर जाता है।

बच्चेको मुलायम चमडी पर एक प्रकारका चिकना तेल जैसा पदार्थ चुपडा हुआ होता है यह निकालते बहुत समाल रखना। पहिले खोपरेका या तिलका तेल धीरेसे लगाकर कपडेसे सारा शरीर पोंछ डालना ताकि चिकना पदार्थ निकल जाता है। पीछे थोडा गर्म जलसे अच्छे साबुनसे अथवा रीठे के पानीसे स्नान कराना पीछे शरीर पोंछकर कपडामे बिटाल कर दो तीन छोटी चम्मच पानी पिलाकर छोटी चारपाइ (खाटली) मे सुलाना और उसे शांतिसे सोने देना।

नाल काटनेके पीछे मेलीको एक हाथ गहरा खड्डा कर रखा हो उसमे चार पाच शेर नमक डाल उपर मेली डाल फिर उपर नमक चार पांच सेर डाल मिट्टी दाबकर उपर पत्थर रखना। गहरे खड्डे मे मेली डाल उपर अच्छे प्रमाणमे नमक डालनेसे वह सुरक्षित रहेनेसे बच्चा भाग्यशाली होता है। खड्डा कम गहरा हो और मेलीको जनावर निकाल कर खा जाता है तो वह बच्चा कमनसीब बुद्धिहीन होता हैं। आदमीको 'बिना नमकका' ईस प्रकारकी गाली देनेमे आती है इसका रहस्य यह है। बच्चाको स्नान कराकर नाल पर रुइ दाबकर पाटो बांधना वह तग नहो। नाभी पर नाल लगा हो उस पर हमेशां तिलका तेल अथवा बालमे डालनेका घूपेल तेल डालते रहना और रुइ भी हमेशां बदलता रहना। १०से१२ दिन पीछे नाल आप हि गिर जाता है। वह सुखा हुआ नाल एक शीशीमे भर बच्चेका जन्म समय लिखना। बच्चा बिमार हो जाय तब उसका नाल घीसकर पिलाया जाता है।

प्रसवके पीछे स्त्रीको स्तनमे ३ या ४ दिनमे दुध-धावण आता है इस लिये वहां तक गलसुथी पिलानेका रवाज हैं। एक साल पुराना गुड १ तोला को पांच सात तोला पानीमे डाल मिलाल कर उसमे गायका घी •। तोला डालकर कुछ ताता कर (थोडा गर्म कर) रुइको फोयासे पिलाना, दिन मे ३ या ४ दफे पिलाना। हर समय थोडा गर्म कर लेना इससे बच्चाको पोषण मिलता हैं और पेटमे जमा मल निकलता हैं। किसी बच्चाको मल कम निकले या निकलता हुआ अटके तो बच्चा रोता हैं तब गलसुथी मे दो चार बुंद एरंड तेल डालकर पिलानेसे मल निकल जाता हैं। जो मनुष्य बच्चाको प्रथम गलसुथी पाता है उसके स्वभावका बच्चा रोता हैं। गलसुथी पिलानेके पीछे मुख गरम पानी भीगोये कपडेके टुकडे से पोछ डालना। यदि पिलानेके समय गलेपर गुडका पानी उतरा हो गिरा हो तो वहां कीडी (पिपीलिका) लग जाती हैं और बच्चा रोता हैं वह न निकाली जाय तो गहरी उतर गलेमे छेद पाडती हैं और बच्चा मर जाता है। इस कीडीको गुजरातीमे घामोल अथवा घामेलियुं कहा जाता है।

बच्चाको तीसरे दिन धवरावना (स्तन पान कराना) पहिले हाथसे स्तनसे थोडा दूध निकाल कर पीछे स्तनकी डीटडी बच्चाके मुखमें देना जब आप ही धावने लगेगा और स्त्रीको पाना छुटेगा अर्थात् दूधसे स्तनमें दूधका वेग आयेगा। कभी बच्चा धावता नहि है जब हरड घीसकर उसमें सेंधानीन रतीभर डालकर अंगुलीसे बच्चाकी जीभपर घिसना तब तुर्त धावने लगता है। किसी स्त्रीका स्तन मोटा और लबा होतो धावते वख्त बच्चाका नाक दबा न जाय और श्वास रुक न जाय यह ध्यान रखे। धावण स्तनमें दुद्द्ध भर आनेसे और उस समय स्त्री दूसरेसें बातचीत करनेसे बच्चा धावते वख्त अहोतराय जाता है अर्थात् दूध श्वास नली में चढ जाता है। और पीछे बच्चा को शरदी खांसी जैसी तकलीफ होती है, इस लिये स्तन पान शांतिसे कराना। धावण कम आवेतो दुग्ध वर्धक औषध स्त्रीको देना और बच्चाको गायका या बकरीका दूध पिलाना। सातवा आठवा मासमे साधा खुराक देना प्रारंभ करना।

२ ग्रहबाधा

कारण चिन्ह—जिस कुटुंब मे देवता पितृओ ब्राह्मणो साधु संत गुरु अतिथि का सत्कार नहि होता, होम हवन होता नहि, शौच आचार पवित्रता रक्खी नहि जाती, दान नहि दिया जाता, उनके बच्चोंके रक्षार्थ ग्रहोको पीडा होती है। ग्रहबाधावाला बच्चा मुंझाता है रोता है चमक जाता हैं। नख और दांतसे मांको और अपने शरीरको काटता है। उंचे देखा कर चीस पाडे बगासा (जृंभा) खाया करे, भृकुटीको उंची नीची करे, मुखमे फेन आवे, शरीर कृश बनता जाय, रातको जागे, शरीर पर सूजन हो, दस्त ज्यादा हो ज्वर बैठ जाय खाता पीता नहि शुद्धि कम रहे।

सब ग्रह बाधामे उपचार

स्कंद, स्कंदापस्मार शकुनी पूतना गंधपूतना शीत पूतना मुखमंडिका नैगमेय आदि ग्रहोकी बाधासे बच्चाको भिन्न भिन्न चिन्ह होते है।

सब ग्रहबाधामे तुलसी हलदी गोरखमुंडी और वाला को समभाग कूट कर रखना थोडा चूर्णको उबाल कर नवसेका पानीसे बच्चाको स्नान कराना।

सामान्य रीतिसे चंडीपाठका पाठ कराना। गुगल शेशगुंदर नीमके पत्ते लोबान हलदी चदन समभागे कूट घी मिलाय ३ समय बच्चाको धुप देना और बच्चा वाले कमरे मे धूप करते रहना।

सर्वग्रह हर धूप—सर्पकी कांचली लशुन मोरवेल नीमके पान मैंढा सींगी वच हलदी सरसों लोबान चावल पामडी चंदन देवदार रींछके बाल सब सम भाग और सबसे दुगा गुगल लेकर कूटकर धोका करमा देकर रखना। यह धूप दिनमें २-३ दफे बच्चाके शरीर को देना और कमरे में करना।

सप्तच्छादादि लेप—सातवीण कुष्ठ हलदी चंदन सम भाग कूटकर पानी में मीलाय शरीर पर लेप करना।

अष्टमंगल घृत—वच ब्राह्मी कुष्ठ सरसों काली तुलसीके पान सारिवा सेंधानोन पीपल प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर १२ घंटा पानी मे भिगोकर पीछे उसमे गाय का घी शेर पांच पकाना। यह घी बच्चाको १से२ छोटी चम्मच गर्मकर पिलाने से सब बाल ग्रहो की पीडा नष्ट होती है और बच्चा बुद्धिमान नीरोगी स्मरण शक्तिवाला होता हैं।

बालरोग का कारण—बच्चोको स्तनपान कराने वाली माता खान पान मे नियम नही रखती आहार विहार में अनियमित रहती है नहाने धोने की स्वच्छता नहि रखती, कपडा बिछाना मलिन होते है जब उस के शरीर में कुपित वात पित्त कफ से धावण बिगडनेसे बच्चाको विविध रोग होते है।

१ तृषा प्यास—बच्चाको शोष पडता होतो अष्टमंगल घृत अथवा ब्राह्मी घृत थोडा थोडा देना, माताको खिलाना सतिभूत लोह तोला १, अमृता सत्व तो ३, प्रवाल चंद्रपुटी तोला १ मिलाकर ६ से ८ रतीमे च्यवनप्राश जीवन २ तोला मिलाय माताको देना।

२ गल्ला पडना तालुकंटक—बच्चा गिर जानेसे बहुत रोनेसे तलु के मांस मे कफ दोष प्रकुपित होकर यह रोग होता है। जब मस्तक के उपर के तालु में खड्डा पडता है। स्तन पान नहि करता पतला दस्त होता है, तृषा लगती है। गरदन पतली हो, शरीर कृश होने लगे।

बालारोग्य घटी—२ गोली पानी मे पीस देना अष्ट मंगलघृत अथवा कल्याण घृत एक दो छोटी चमच पिलाना। शंशमनी गोली पानी मे पीस देना कुमार कल्याण रस ०। से १ रती घृत या शहद मे मिलाकर देना। इन्द्रजौ इलायची अजमोद कोठा-कपित्थ का गर्भ वायविडंग सम भाग कूट कर इसका क्वाथ कर शहद डाल थोडा थोडा पिलाना।

बाल शोष हरी वटी—इलाइची, जायफळ, जावत्री, लवींग, हरड, राळ, धाईका फुल, मोचरस, बीलीगर्भ, अजमोद, अजवायन पीपल, अतीस, अफीम, शक्कर हलदी कृष्णागरु रक्तखपर, समीमस्तकी शुद्ध हिंगुल, सोंठ, केशर,

किरमाणी अजमो, वायविडंग, ईन्द्रजव, वाकुभा, अर्जुन छाल, सब सममाग कूट कर दाडिम के रसमे एक रतीकी गोली बनाना। पानी में पीस सुब्ह और शाम उम्रके अनुसार गोलीको मात्रा देना। इस गोलीसे बच्चाको गला पका हो और इस कारण जो कुछ चिन्ह होता हो सब शांत होता है। और बच्चा नीरोगी और पुष्ट होता है।

३ बाळ विसर्प बाल रतवा-पदमक—बच्चेको मस्तक मूत्राशय अमनेन्द्रिक के भागमे विसर्प रतवा हुवा हो तो बच्चाका मृत्यु होता है। विसर्प मस्तक के रमण मे हृदय मे और वहांसे गुदामे ऊतरता है। वैसे ही मूत्राशय में विसर्प हुवा हो तो गुदा में आकर वहांसे हृदय मे होकर मस्तक में आता है।

रास्नादि लेप—रास्ना, कमल पुष्प चंदन, मुलैठी मूल, देवदार सममाग कुट कर, गाय के दूध में पीसकर उस में थोडा घी मीला कर लगाना।

बालविसर्पहर कषाय—गिलोय छोटी अडुसी, पटोल, नीमके पान, हरड, बहेडा, आंवळा, खेरसार अमलतासका गुद सममाग लेकर कषाय कर पिलाना।

४ नाभिका शोथ—नाभिका नाल खोंचानेसे अथवा नाभिके उपर कुछ चोट लगनेसे सूजन होता है।

निशादि तेल—हलदी लोध प्रियंगु, मुलैठी मूल सममाग कूट कषाय कर उसमे तिलका तेल पकाना और लगाना और उन्ही द्रव्योको कुट कर पानीमें पीस कर गर्म कर नाभि के उपर लेप करना।

५ गुदाका पाक—पित्त प्रकोपसे यह दर्द होता है। जात्यादि मलम, शामक मलम, रोपण मलम लगाना। पीपलकी छाल और बडकी छालका कषाय कर वह भाग धोना। रसांजन लगाना।

६ गुदाका व्रण—बच्चों के मलमूत्रकी जगहमें धोकर साफ न रखने से उस जगह पर खुजली आकर गुदाकी आसपास फुंसियां और व्रण होता है। उस में से स्राव निकलता है और योग्य उपचार न करने से वह व्रण भयंकर हो जाता है। कच्चे शंखका पीसा हुआ चूर्ण, काला सुरमा मुलैठी मूल सम भाग कूट कपड छाण कर पानी में पीस लेप करना बालारोग्य वटी अथवा वंशमनी वटी देना।

७ दांत आते समयके रोग—दांत आते समय बच्चोंको ताप अतिसार खांसी सिरदर्द विसर्प आंख ऊठना कृशता आदि दर्द होता है। यह हानि कर्ता नही हैं। दांत आजाने के पीछे आप ही आ। सब उपद्रव मिट जाता है।

दन्तोद्भेदक गदांतक वटी—अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लोहभस्म, माक्षिक भस्म, पीपल, पीपरीमूल, चवक, चित्रक, सोंठ अजमोद, अजवाइन हलदी, दारुहलदी, मुलेठी मूल, देवदार, रसांजन, वायविडंग, इलायची नागकेशर, वाला, कचूरा, ककडासिंगी, सेंधानोन समभाग लेकर गाय के दूध मे मुंग जैसी गोली बनाना। दांत आनेका प्रारंभ हो उससे सब दांत आ जाय जब तक एक से दो गोली पानी में पीस कर देना।

मसूरिका ओरी अछवडा Measeles Chickenpox

कारण—तीखा, खट्टा नमकीन क्षारवाला अजीर्ण करनेवाला सडा हुआ राताबासी खुराक लेनेसे बालग्रहकी पीडासे समग्र देशका वातावरण बिगडनेसे पवन और जल विकृत होनेसे खूनमें मिलकर यह दर्द होता है।

चिन्ह—ताप आवे खुजली हो, शरीरमें बेचेनी, फेर चक्कर, चमडीमें अन्य रंगका शोथ, आंखे लाल होती है। वायुप्रधान होतो काला लाल रूक्ष पीडाकारी कठिन और देरसे पकनेवाला मसूरकी दाल जैसा दाना होता है। पित्तप्रधान होतो सोधा और हड्डीमें दर्द हो, खांसी आवे, शरीर कंपे बेचेनी हो, तालु, ओष्ठ, जीभ सूखे, प्यास लगे, दाना लाल पीला हो और जलदी पके। कफ प्रधान होतो दाना सफेद मुलायम खुजली वाला कम पीडावाला होता है। इसका स्थान चमडीमे ही होतो पानीके परपोटा जेसा दाना होकर फूटकर पानी निकले। खूनमें उतरा होतो लाली लिये फुन्सियां हो। इस प्रकार मांस चरबी अस्थि मज्जा और वीर्य तक उतरता है। यह ओरी प्रायः ऋतुमे छोटे बच्चोंको होती है। यह दर्द संक्रामक–चेपी होनेसे गांवमें एक दो बच्चोंको निकलनेके पीछे गांवके सारे बच्चोंमें फैलता है। इससे बच्चोंके आंख और नाकसे पानी गिरता है, कफ होता है छींक आती है बेचेनी होती है, श्वासका वेग बढता है मस्तक दुःखता है दूसरे तिसरे दिन गला छाती और मुख पर लाली लिये दिखायी देता है और पीछे सारे शरीरमें फैलकर जामुन के रंग जेसा होता है। दाना निकलनेके पीछे ताप का वेग कम होता है, जब खांसी और अतीसार होने लगता है।

ताप जबर हो जब तक पतला खुराक देना। प्रारंभमे तीन दिन तक खुब काजी नहीं देना। पतली बाजरीकी गुडवाली राब या मुंगका पानी देना। दाह हो तो द्राक्ष मुखमें रखना और शहदका पानी पिलाना। दस्त कब्ज होतो हरडका क्वाथ पिलाना। चावल मसुरकी दाल, मुंगकी दाल, बाजरीकी रोटी इसका खुराक देना।

मसुरी शीतला रक्षक बटी—पारद गंधक अभ्रक भस्म प्रवाल पिष्टी लोह भस्म रससिंदूर टंकण हरड बहेडा आंवला हलदी चंदन मूलेठी सोंठ पिपर काली मिरच निगुंडी सोम प्रियंगु मामेजवो लोबान प्रत्येक पांच पांच तोला शिलाजीत गूगल गोरखमुंडी निमगीज गोरी शतावरी असगंध कुटकी चिरायता प्रत्येक दस दस तोला सब विधिवत मिलाकर गायका घी तोला ४० मिलाकर अडुसी चमेली पपंट (खडसलीयो पितपापडो) केशकारी नीमके पान प्रत्येककी एक एक भावना देकर तीन रतीकी गोली बनाना २ से ३ गोली पानीमे घीसकर मसुरिका शीतला आदिमे देना। इस रोगका वातावरण फैला हो तब अच्छे बच्चोंको देनेसे इस रोगका आक्रमण नहि होता।

शीतला शोळी माता निकलना

कारण चिन्ह—शीतला शोळी सात प्रकारकी है उनमे महती नामक शोळी हि प्रचलित है। प्रारंभमे ताप आता है। दाना सात दिनमे निकल आता है दूसरे सात दिन पूरा भर जाता है और तीसरे सात दिनमे सुखाकर पपडी (सीगली) उखड जाता हैं। इस प्रकार २१ दिनकी मर्यादा है। जो फोल्ले फूटे उसपर आरने उपल (अडायीछाणा) की राख कपड छानकी हुई दाबते रहना और नीमके पत्तेसे मक्खीयां उडाते रहना। तापसे प्यास लगे तो ठंडा पानी देना। रोगीको स्वच्छ एकान्त जगहमे सुलाना। रजस्वला स्त्रीने और अपवित्र मनुष्यने रोगीका स्पर्श करना नहि इसको बहुधा औषध नहि दिया जाता फिरभी मसुरिका शीतला रक्षक गोली आयु के अनुसार १ से ३ तक दीजाय तो लाभ होता है। यह रोग आक्रमक है इसके चेपसे बडे मनुष्यो कोभी होता है। यह बहुत करके वसंत ऋतु में होता है। कभी चाहे जिस ऋतु मे फैल जाता है।

शीतला शीलीका विष शरीर मे प्रविष्ट होने के पीछे १२से १४ दिनमे ठंड गरमी शिरदर्द पीठ में पीडा उलटी आदि चिन्ह दीखते है। पीछे गले मे शोथ थूंक की वृद्धि आंख के पेपचा लाल हो श्वास में दुर्गंध आती है। बडे बच्चोंको घेम और छोटेको आंचकी-आक्षेप आता है। तापके पीछे शीतलाका दाना पहिले मुख और गरदन पर दिखाइ देते है पीछे मस्तक ललाट छाती और पांवमे मालुम पडता है। दाना दिखनेके पहिले ताप शीतलाका है या सादा यह नहि जान सकतें। कम्मर और पीठमें बहुत दर्द हृदयकी गतिका अधिक वेग अधिक वमन ये चिंह ज्यादा होतो शीतला भयकर रीतीसे निकलनेका संभव हैं। सगर्भाओको शितला निकले तो गर्भपात है।

दाना बाहर निकलजाने के पीछे ताप कम होता हैं। दाना पक कर भराता है तब फिर ताप आता हैं। ताप आनेके पीछे तीसरे दिन शीतलाका दाना दिखता हैं वह कठिन छोटा होता हे। उस दाना पर मोती जमता है उसमे पानी भराता है और दानाके उपरके भागमे छोटा खड्डा पडता हैं और इसके आसपास की चमडी लाल होती है। दो दिनके पीछे उसमे पस होनेसे वह पानी घट और सफेद होता है और वह मोती फुनसीका रूप लेता हैं। दो दिन पीछे उस फुनसीका उपरका भाग काला पड सुखने लगता हैं और ४ से ५ दिन पीछे पपडी बनकर गिर जाती है। आंखमे शीली निकलनेसे सेकडा ७१ टका रोगिओको आंखमे फूला पडता है अथवा अन्धा होता है।

बिछानेमे कमरेमें चारोओर नीमके पते बांधना उच्छिष्ट मुखवालेको और अशुद्ध मनुष्यको रोगीके पास नहि आने देना फून्सीमे दाह जलन होतो आरने उपलकी राख छिडकना डालना।

तापमे चंदन छोटी अडूसी पान नागरमोथ गिलोय और द्राक्षका क्वाथ पिलाना।

रोगी सुन शके इस प्रकार ब्राह्मणसे अष्टाध्यायी रुद्रीका पाठ चण्डीपाठका पाठ कराना। स्वस्तिवाचन शंकर पार्वतीका पूजन शीतलास्तोत्रका पाठ कराना। शीतलाका उपद्रव गांवमे चलता हो तब उस रोगसे बचनेके लिये प्रातः सायं धूप करना। और श्री भुवनेश्वरीमांकी छबी और चिंतामणी यत्रकी छबीको धूप दीप कर स्तुतिपढाना और शीतला स्तोत्रका हमेशां ९ पाठ करना। भुवनेश्वरी स्तोत्रका और लघुस्तवका पाठ कराना। इसमे शीतलाका दरदी रोग मुक्त होता है और अपने घरमें यह रोग आता नहि है।

शीतला स्तोत्र

अस्य श्री शीतला स्तोत्रस्य महादेव ऋषिः।
शीतला देवता। अनुष्टुप छंदः। शीतलोपद्रवशान्त्यर्थं जपे विनियोगः।

स्कंद उवाच।

भगवन्देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् ॥ १ ॥

ईश्वर उवाच।

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगंबराम् ॥
यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ २ ॥

शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः ॥
विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥३॥
यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा संपूजयेन्नरः ॥
विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ४ ॥

शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगंध गतस्य च ॥
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवितप्रदां ॥ ५ ॥
नमामि शीतलां देवीं रासभस्थां दिगंबराम् ॥
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ ६ ॥

शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान् ॥
विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेवामृतवर्षिणी ॥ ७ ॥
गलगंडग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ॥
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यांति ते क्षयं ॥ ८ ॥

न मंत्रो नौषधं किंचित् पापरोगस्य विद्यते ॥
त्वमेका शीतले धात्री नान्यत्पश्यामि देवतम् ॥ ९ ॥
मृणालतंतुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ॥
यस्त्वां संचिन्तयेद्देवीं तस्य मृत्युर्न जायते ॥ १० ॥

अष्टकं शीतलादेव्या यः पठेन्मानवः सदा ॥
विस्फोटभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ११ ॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च जनैर्भक्तिसमन्वितैः ॥
उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ १२ ॥

बच्चोंको खांसी-ससणी श्वास भराणो

कारण चिन्ह—शरदी लगनेसे, श्वास नलीमे धूल बाह्य रजकणें आनेसे, धुंवासे गदी हवासे तापसे रक्ताशय के रोगसे और खांसीवाले बच्चोके स्पर्शसे यह दर्द होता है। जब श्वास लेनेसे श्वासनली सूजकर लाल होती है। पहिले फेनवाला पीछे पकनेसे पीला या सफेद कफ गिरता है। इस सूजनसे खांसी आती है। श्वास चढता है। इससे ताप आवे, दस्त कब्ज हो जीभ पर छारी छाती हृदयका संकोच हो छती उची होती है। पांसला और पेट उछलता है। ८ से २४ दीनमे आराम होता है। यदि यह उग्र रूप पकडे तो ८ से १० दिनमे बच्चा मरजाता हैं। यह रोग ६ माससे २ वर्ष आयुके बच्चेको होता है।

बालकफादी वटी—पारद गंधक कक्डाशींगी कपूर काचली सागर गोटाकी गीरी लवंग प्रत्येक दस दस तोल १० काली मिरच सोंठ वायविडंग अजाखार पकाया टंकण पीपल प्रत्येक आठ आठ तोला, छोटी हरड २४ तोला, कत्था ५६ तोला, जमालगोटा तो २० भांगराके रसमें जमाल गोटाको घोंट कर पीछे सब साथ मीलाय भांगराके रसकी भावना देकर मुंग प्रमाण गोली बनाना।

बालकफादिवटी—पारद गंधक कक्डाशींगी कपूर काचली सागरगोटाकी गिरी लवंग प्रत्येक दस दस तोला काली मिरच सोंठ वायविडंग अजाखार पकाया टंकण पीपल प्रत्येक आठ आठ तोला, छोटी हरड २४ तोला, कत्था ५६, जमाल गोटा तोला २०, भांगराके रसमे जमालगोटाको घोटकर पीछे सब वस्तु साथ मिलाय भांगराके रसकी भावना देकर मुग प्रमाण गोली बनाना।

आयुके अनुसार १ से २ गोली पानी मे पीस देना। गले मे कफ जम गया हो निकल नहि सकता तब यह गोली देनेसे दस्त और वमन होकर कफ निकल जाता हैं। और बच्चा अच्छा होता है यह गोली ४ से ८ दिन दी जाती है।

लवंगाष्टक—लवंग लशुन अपामार्गबीज आराबिता (गरणी) बीज बच तज अजवायन वायविडग हरड समभाग पीस रखना २ से ४ रती पानीको देना।

तांबुल के, पानको पीस बिना पानी डाले निचोड कर रस निकालना उसमे अदरख का रस २ मासा डाल इसमे दो लवंग पीसकर यह रस थोडा पिलानेसे यहरोग मिटता है।

बडी खांसी कुकडिया खांसी उटाटियु

कारन चिन्ह—यह रोग आक्रमक चेपी होनेसे एक बच्चाको होनेसे उसके सहवास में आनेवाले या स्पर्श करने वाले दूसरे बच्चोको होता है। बहुत कर के प्रत्येक बच्चाको एक बखत यह रोग होता हैं पीछे कभी नहि होता। २ से १० वर्षकी उम्र के बच्चो को होता हैं।

इस रोगमे खांसी आवे जब सिसोटी पाया जैसा आवाज होता है। पहिले आठ दिन तक थोडा थोडा ताप आता है पीछे प्रतिश्याम (सबसम) होकर खांसी आती है। खांसी आते वक्त मुख लाल हो जाता है। खांसी बंद होती है जब बच्चा रडने लगता है। फिर १५-२० मिनीट के पीछे या एक दो घंटा के पीछे खांसी आती है। दिवस की अपेक्षा रात मे खांसी इतने जोरसे आती है कि बच्चाको दस्त पिशाब हो जाता हैं। यह रोग १५ से ३० दिनमें मिटता है।

बालकास हरी वटी—एकीया लहुन हिंग इन्द्रायणमूल सेंधानोन समभाग लेकर अदरख के रसमे मुग प्रमाण गोली बनाना २ से ३ गोली पानीसे देना।

बालकास भद्र चूर्ण—अतिविष धाइ के फूल बिल्व फलका गर्भ, वाला मोथ हरड काकडासींग समभाग कूट ३ से ८ रती शहद से अथवा पानीसे देनेसे इस रोग में लाभ होता है।

बच्चोको आरोग्य रखने वाली औषधें

बालारोग्य वटी—वायविडंग हरड मंडुर भस्म प्रत्येक पांच पांच तोला, अतिविष १० तोला, लता करंज बीज गिरी १० तोला, गिलोयका घन ५ तोला, कुडकी छाल ५ तोला, लवग जायफल वायविडंग अजवाइयन अजमोद प्रत्येक तीन तीन तोला पोस्त के डोडाके क्वाथ मे गोली मुग प्रमाण बनाना २ से ३ गोली पानीसे देना सब रोग मे गुणकारी है बच्चा निरोगी पुष्ट होता है।

बालागोली—जायफल बच वायविडंग हरड टोकान प्रत्येक पांच पांच तोला, कमल बीज गिरी लता करज बीज गिरी भुंइ आंवली प्रत्येक ढाई तोला, खापरसींग भस्म वंशलोचन चंदन गिलोय घन इलायची मंडुर भस्म अतिविष इलायची प्रत्येक दो दो तोला, तुलसी रस तथा फुदीना के रस की एक एक भावना देकर मुंग प्रमाण गोली बनाना। २ से ३ गोली पानीसे देना बालक निरोगी रहता है। बच्चोके सब रोगों मे गुणकारी है।

बालार्क—यशद भस्म तोला २०, खापरीया भस्म तो २० गोराचन तो, ५, अतीविष कळी तो २०, प्रवाल चंद्रपुटी तो. २०, शुद्ध हिंगळो तो, २०, कचुरा तो, २०, केशर तो ३ सब साथ मीलाय तुलसी के रसमे चोंट मुंग प्रमाण गोली बनाना । बच्चोंको खांसी यदी खांसी शरदी ताप दस्त आदि मिटे। पुष्ट होवे ।

बाल पौष्टिक सोगठी—बाला गोली के द्रव्यो को सोगठी के रूप मे बनाना १ से २ रत्ती पानीमे घिसकर देना, बच्चा पुष्ठ होता है ।

बाल पौष्टिक अवलेह—दशमूल ८ सेर लेकर क्वाथ कर कपड छान कर उसमे गुड शेर २० डाल पकाना । चासणी जैसा बने तब हरड बहेडा आंवला मुसली असगन्ध शतावरी वरीयाल तुलसीबीज हलदी काकडासींगी कौवच बीज वला बीज बिल्व फल गर्भ लवंग सोंठ पीपल प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कुट कर कपडसे छान कर रखा हो वह गुड को चासणी मे डालकर पकाना । घट्ट होने पर उतार कर स्वांगशीत होने देना । १ से २ छोटी चम्मच बच्चोकी उम्र के अनुसार खिलाना बच्चा पुष्ट नीरोगी होता हैं ।

सर्वौषधी स्नान—नीम के पत्ते मेढाशींगी बच कुष्ट बिल्वपत्र हलदी दारुहलदी कचुरा चंपाका फुल मोथ समभाग कुट कर रखना यह चूर्ण चार पांच तोला कपडेकी शिथिल थैली मे डाल कर वह पानी मे डाल गर्म कर उस पानीसे बच्चोको स्नान कराने से बच्चे के बहुत से रोग मिटते है। १ मास में एक दो दफे स्नान करानेसे बच्चा नीरोगी रहता है।

[o]

क्षुद्ररोग—छोटे प्रकीर्ण रोग

१ अग्निदग्ध

कारण—प्राइमससे तेजाबसे गर्म तेल और पानीसे ग्यासलेट तेल या पेटरोल से अनेक कारणोसे मनुष्य जल जाता है। हमारी सरकारने हिंदुओंके लिये एक स्त्री पर दुसरी नहि करनेका कानून बनानेसे दूसरी स्त्री करनेके लिये पहिली स्त्रीको जला देनेकी घटना संख्यातीत बन रही है । सौराष्ट्र में कानून के पीछे २५ गुना स्त्रीओंको जला देना या अन्य प्रकारसे मार डालनेका किस्सा बन रहा है । यह कानून स्त्री के कल्याण और हिन्दुओकी संख्या न बढने के को

दृष्टिसे किया हो पर स्त्रीओका विनाशक बन रहा है और यह पाप सरकार पर चढ रहा है। वर्तमान जमानामे विलास के साधन बढ रहे हैं वैसे उनसे मृत्यु भी बढ रहे हैं। प्राइमससे जलना तो प्रति दिनकी बात हो रही है। बिजली से जलना तो उसी क्षण मृत्यु को भेटना है। कानुन और विलास से स्त्रीओ का अधिक नाश हो रहा है।

चिन्ह—जलनेसे सारे शरीर मे पीडा होती है। बडे मनुष्यो की अपेक्षा छोटी उम्रवालोको ज्यादा पीडा होती है। शरीरका अधिक भाग मस्तक छाती गुप्तभाग जलनेसे मृत्यु होता है। साधारण जलनेसे चमडी के उपर का भाग लाल होता है। इससे ज्यादा जलनेसे स्फोट (फोडला) उठता है, इससे ज्यादा जलेतो उपर की और नीचेकी चमडी जलती है। इससे ज्यादा जलनेसे स्नायु धमनी रक्त वाहिनी शिरा जलकर वह भाग काला पडता है, इस के पछे अस्थि तक पहुंचता है।

पहिली अवस्थामे—ग्लानी दाह अदर के अवयवो मे खुनका जमाव हो यह स्थिति अधिक समय रहेतो शरीर ठडा पडने लगे, नाडी क्षीण चले, वेदना हो इस दशा मे दिमागमे खून चढ कर मृत्यु होता है।

दूसरी अवस्था मे—ग्लानी कम हो कर कुछ हुशीयारी आवे दाह उत्पन्न हो, यह स्थिति आठेक दिन रहे, अंग गर्म रहे कभी ताप चढे, पेट और छाती मे दाह हो, आंत्र आंतो मे व्रण पडे खुन मिश्रित दस्त व वमन हो, कभी वह दाह पेट मे रक्त वाहिनी शिरा में उत्पन्न होनेसे रक्तस्राव होकर रोगीका मरण होता है। बहुत दफे इसमे धनुवा या धोसर्प रतवा का विकार उत्पन्न होता हैं। स्त्रीओकी छाती स्तन और गुह्य भाग जलने से ३ से ६ घंटामे मरण होता है।

उपचार—शरीर पर या जले भाग पर पवन आने देना नहि शरीरपरका कपडाजले तो एक दम दोडना नहि वैसे हि खडा रहना नहि एकदम आलोटने लगना(आलोटवा मांडवु) ओर जो कोइ मोटा (जाडा) कपडा रजाइ या जोहाथ लगे इससे जलते कपडेको शरीरपर बिटाल देना इससे पवन रुक कर अधिक जलता रुके

अग्निदग्ध शामक मलम—एकरांग लगाये बडे बरतनमे एरंड तेल अथवा तिलका तेल शेर ५ मे पीसी हुइ राल शेर २ डाल कर मद अग्निसे पकाना राल पिघल जाय जब उसमे मोम आधा शेर डालना वह पिघल जाय जब चुलासे नीचे उतार कर उसमे पानी थोडा थोडा डालते रहना और लकडीके

डंडासे जोरसे हिलाते रहना मक्खन जैसा सफेद मल्म होगा वह जले हुए पर लगाना और कपडे पर लगाकर वह कपडा जले भाग पर लगा देना।

महाचन्द्रकला गोली प्रवाल चन्द्रपुटी जवाहर मोहरा पिष्टी मुक्ता पिष्टी सप्तामृत लोह आदि योग्य मात्रा मे देना।

थोडा जला होतो उस भागको पानीमे डुबा रखना। भृंगराज तेल खोपराका तेल तिलका तेल अथवा महालाक्षादि तेल में कपडा भिगोकर जले भाग पर लगा देना और पवन न लगे इस लिये रुइ दाब कर कपडा बिटोलना। और उपर थोडा थोडा तेल छिडकते जाना।

कली चुना १ तोला एक बोटल मे डाल उसमें पानी पौने दो रतल (७० तोला) डालकर मजबुत बुच देकर १-४ मिनीट हिलोना पीछे बुच देकर ३ घंटा रख छोडना पीछे उपरसे स्वच्छ पानी दुसरी बोतलमे डालकर रख छोडना जले भाग पर लगाना हो तब चुनाका जल और तेल मिश्र कर कपडा भिगोकर जले भाग पर लगाना। जलाकर उसकी राख तिलके तेलमें मिलाकर अथवा रेशमके कपडेको जलाकर उसकी राख तिलके तेलमे मिलाकर अथवा त्रिफलाको एक भटठीमे भर जलाकर उसकी राख तिलके तेलमे मिलाकर जले भाग पर लगाना।

८ शस्त्राघात

चप्पु छुरा तलवार या अन्य वस्तुसे कटनेसे घीसानेसे खोचानेसे पत्थर आदिसे छुदानेसे खंजर लोह आदि घुंपनेसे अथवा पशु आदिके नख दांतसे काटनेसे घाव पडता है खून गिरता है। अधिक खून गिरनेसे मृत्यु होता है।

शस्त्राघात रोपण तेल—बबुलकी छाल गोंद राजन असंध संदारी (दावसाबळ) शिरीसकी छाल अंजन वृक्षकी छाल ढाककी छाल प्रत्येक आधा आधा शेर, लाख १ सेर अपामार्गका पंचांग दो शेर पींपलके कोमलपान नीमके पत्ते सीदूर ढाश्काचबाकी छाल मजीठ बकराकी सींग प्रत्येक एक एक सेर सबको कूट कर पानी डालकर १२ घंटा भिगो रखना पीछे उसमे तिलका तेल सेर ६० डालकर पकाना। इस तेलमे कपडा भिगोकर घाव पर लगा देना।

९ निंद्रामें पिशाब हो जाना

यह रोग बहुत करके बच्चोको होता है। कभी छसे पन्द्रह सालके बच्चोको होता है। ज्यादा होता है। मधुर पदार्थ, दूध, चहा पीनेकी ज्यादा आदत इत्यादि कारणोसे वह रोग होता हैं।

मूत्रांकुश रस—लोह भस्म, वंगभस्म, अफीम बिल्व फलका गर्भ, चीनीकबाला नागकेशर, आमकी गुठली की गीरी, जमुन की गुठली, अंजीर, द्राक्ष, रस सिंदूर सब समभाग लेकर जामुन के पके हुये फल के रस में घोटकर दो रती की गोली बनाना। १ से २ गोली पानी या दूधके साथ देना। बिना इच्छा होता हुआ या निद्रमे होता हुआ पिशाब अटकता है। मधुमेह, बहुमूत्र, सोमरोग, हृदय और प्रमेहमें भी यह अच्छा गुण कर्ता हैं।

४ अनिद्रा निद्रा कम आना या नही आना

कारण चिन्ह—ताप से तापकी गरमी, वायु प्रकृति खांसी, श्वास चढना पेट के जंतु, पेट फुलना अम्लपित्त, दीमागकी कमजोरी, उन्माद, पागलपन, विचार वायु क्रोध शोक भय, आघात इत्यादि कारणो से यह दर्द होता है।

निद्रावर्धन रस—पारद गंधक, मुक्ता शुक्ति पिष्टि, वंग भस्म, प्रवाल पिष्टि प्रत्येक पांच पांच तोला। शिलाजित त्रिफला गुगळ, कुटकी प्रत्येक दस तोला गजपीपल, सोंठ, चीनीकबाला, इलायची, लोंग, जायफल, तज, रास्ना, कताकरंज बीजकी गीरी (काकचिंयानां मींज), कुष्ट वायविडंग, सेंधानोन, प्रत्येक पांच पांच तोला, सब साथ मिलाकर मेथी के रस में दो रतीकि गोली बनाना) मात्रा २ से ६ गोली पानीसे अथवा च्यवनप्राश जीवन से, शहदसे, मख्खनसे अथवा गुलकंदसे देना। एक महिना तक सेवन करनेसे लाभ होता है। यह औषध अम्लपित्त, पिशाबका जलन में लाभ करता है।

१ रसांजन १ रती गुडके पानी मे घीस कर आंख में अंजन करना।

२ महामुक्तांजन सोती वखत अंजन करना।

३. काकजंघा (वैठो अघेडी) का मूल मुख में रखनेसे निद्रा आती है।

४ खसखस दोसे तीन माशा शक्कर के साथ खिलाना।

५. सापकी कांचलीको रूइ में बिटाल कर तिलके तेलसे दीप जलाकर काजल (मशो) पाडना। वह गायके घी में मिलाकर अंजन करना।

निद्राप्रद हिम—नागरमोथ, वायविडंग, नागकेशर, चीनीकबाला, इलायची, तज तमाल पत्र, अतीस लवंग, गिलोय बरकी बकवाई, द्राक्ष खजूर, पर्पट पके अंजीर, जरदालु, सब समभाग कूट कर दो तोला मे २ या ३ कप पानी डाल रातको रख छोडना प्रात कालको मसल कर लपडछान कर उसमे शक्कर या शहद डालकर दिनमे दो दफे पिलाना।

५ अतिनिद्रा निंद बहुत आना घेन

कारण—कफ प्रकृति से शरदी लगनेसे, कफ प्रधान तापसे सन्निपात ज्वर से और जन्मसे ही निद्रालु स्वभाव होनेसे निंद बहुत आती है।

निद्रानाशन रस—पारद, गंधक, सोंठ, पीपल, काली मिरच, अभ्रक भस्म, लोह भस्म सफेद बछनाग, टंकण, सेंधानोन बीड लवण, तज, लविंग प्रत्येक पांच पांच तोला और भुना हुवा कुंद १० तोला साथ मिलाकर निगुंडी भांगरा छोटी अडुसी अपामार्ग, आदु, पवार कुवाडिया के भी भुना हुवा कुंद प्रत्येकका क्वाथ अगर रसकी ऐसे एक भावना देकर २ रतीकी गोली बनाना। २ से ३ गोली पानी के साथ देना।

निद्रारि क्वाथ—सोंठ पीपल, मरी, तज, लविंग, रास्ना, असगंध, गुमा तुलसीके पान पीपरीमूल भलामूल, वायविडंग प्रत्येक दश दश तोला और भुने कुद १०० तोला सब साथ कुट कर रखना। एक तोलाका क्वाथ कर उसमे गुड डाल पिलाना।

६ अफीमका व्यसन छुडाना

अफीण व्यसनहरी बटी—जायफल जावंत्री अभ्रक भस्म, लाल कनेरकी छाल सफेद करेनकी छाल दाडिमके मूलकी छाल धतुराका बीज धतुराका मूल प्रत्येक पांच पांच तोला, शुद्ध कुचला १० तोला सब साथ पोस पोस्तके डोडेके क्वाथमें घोटकर रती प्रमाण गोली बनाना। जितना अफीम हमेशा लिया जाता हो उससे दुने वजनसे गोली देना। और हंमेशा थोडा थोडा अफीम कम करते हुये बंध करना। इस गोलीसे मुखमें शोष पडे तो शहदका पानी अथवा च्यवनप्राश जीवन अथवा गुलकंद अथवा अंगोर द्राक्ष अथवा दूधका मावा(खोवा) खिलाना।

७ खीलीं—हाथ और पांवमे खीलीं निकलना

हाथ पांव अंगुलीओमें पोचामे पांवके तालुओमे हाथ पांवके किसीभी स्थानमे खीली निकलती है, उस खीली की जगहमे थोडा बहुत दर्द रहा करता है, चप्पु आदिसे उखेडकर निकाल देते है तो फिर वहा जमती है।

१—तिलकी दंडीयां (तलसरां) की राख और कलिचुना समभाग मिलाय खीलीपर बांधना पोल्टीसकी तरह बांधना। ३ या ४ वख्त लगानेसे मिट जाती हैं।

२—मुरगीकी चरक हुक्काका गुड कलीचुना समभाग मिलाय गौमूत्रमे पीस कोटी पोल्टीसकी तरह बांधना।

३—थाइके फूल सोनागेरू धतुराकापान पानीमे पीस लगाना ।

४—आकका दूध तोला १ एरंडी बीजको गिरी तो ०।, देशी साबून तो, ०), साथ पीस पोटीस कर बांधना ।

५—आंवलाको रातको भिगो रखना, सुबे महीन पीस पोटीस बांध पाटा बांधना ७ दिन करनेसे शत पडवाली खोली अंदर दबकर निकल जाती है ।

८ हाथ पांवकी ठ्या फटना—पाददारी

कारण—किसीको शीतऋतुमे और किसीको बारो माथ हाथ पांवके तालुओ में पैरोकी कंमरी पर चमडी फटती है वहां थोडा दर्द होता हैं पांव फटनेसे चलने फिरनेमे कष्ट होता है ।

रोपण मलम—एरंड तेल शेर १५, राल शेर १॥, मोम शेर, २॥, तेल गर्म होनेसे राल डालना वह पिघल जाय जब मोम डालना पिघल जानेपर नीचे उतार कर खुब हिलाना यह लगानेसे तुर्त आराम होता है । किशोर गुगल, आरोग्यवर्धनी गोली, चन्द्रप्रभा योग्य मात्रा से देना ।

हिंगूलादि मलम—सींगरफ राल गंधक टंकण सिंदूर नीलाथोथा हीरादखन कंपीला कुंकुम (ललाटमे टीका करनेका) प्रत्येक ढाई ढाई तोला, मोम १० तोला, घी शेर ३ साथ विधि वत मिलाय मलम करना । हाथ पांव पर लगानेसे फटा हुआ भाग रुझ जाता हे और पीडा मिटती है ।

९ मसा—मस

यह मांस गला दाढी मुख गरदनपर ज्यादा होता है शरीरके अन्य भागमे भी होता है । मस सजीव और निर्जीव होता है । निर्जीव मस तंतुओंसे या सूत मांस कणिका ओसे बना हुआ होता है । सजींव मसको शस्त्रसे काट कर उस भागमे डाम देना-अग्निसे जलाना ।

सैंधवादि घर्षण—सेंधानोन संचल सोठ पीपल काली मिरच मिनवील चित्रकमूल नीलाथोथा लाल होमल सब साथ घोट रखना मसा पर घी लगाकर यह चूर्ण लगाना । मूलसे मस सूख जाता है ।

टंकणादि घर्षण—टंकण वर्ष चुना नमक समभाग पीस रखना । चुटकी भर उसपर घसना घसलना तीन दिन करनेसे मस मूलसे निकलजाता है ।

१० कारवकी लावलाइ

दशांग लेप अथवा दोषघ्न लेप अथवा महाराष्ता दि क्वाथ अथवा मंजिष्ठादि क्वाथ पानी मे पीस गर्म कर पोटीस माफीक लगाकर दशाव कर पका घोवना। औरोषध धं नी किशोर गुगळ केशरादि गोली कस्तूर्यादि गोली आदि औषध सेवन कराना।

११ अंशुघात-लू लगना

सूर्य के तापसे चलनेसे, धूपमे गर्म हवा लगनेसे धूपमे नंगे पाँव फिरनेसे लूलगती है। सब कपडा निकाल ठंडा पवन पंखा करना। केलीके पान बिछाकर सुलाना, ठंडे पानीसे भिगोयां कपडा शरीर पर लगाना गुडका पानी कर कपड छान कर थोडा थोडा पिलाना। सफेद चंदनका चूरा पानीमे पीसकर शरीर पर मर्दन करना। मस्तकपर पानी छींडकना।

हिमाद्रि रस—(स्वर्ण युक्त) मुक्ता प्रवाल वैक्रांत माणिक प्रत्येककी पीष्टी पारद गंधक प्रत्येक एकएक तोला, सोनेका वर्क ०॥ तोला, चांदीका वर्क २ तोला चीनीकबाला इलायची हरड बहेडा आवला भीमसेनी कपूर प्रत्येक आधा तोला; मूलेठी मूल २ तोला जलपीपली नागकेसर (सोंपाथरी) भांगरा शतावरी विदारी कंद प्रत्येक चार चार तोला, लेकर कूष्मांड रस आंवलाका रस हरी द्राक्षका रस प्रत्येककी एक एक भावना देकर २ रतीकी गोली बनाना। २ से ४ गोली पानीसे अथवा गुडके पानीसे दो दो घंटाके पीछे देना, २ दिनमें लु लगी हो वह आराम होता है। पित्तप्रकोप किसी भी जगहका शरीरका दाह आंखोकी जलन छातीका दाह अम्लपित्त किसी भी स्थानका रक्तस्राव खुनी मसा प्रदर प्रमेह पिशावकी जलन इत्यादि पित गरमी प्रधान रोगोमे यह उत्तम फायदा करता है।

१२ गुदभ्रंश—आमण निकलना गुदा बहार निकलना

कारण—यह रोग बहुत करके बच्चोमे होता है। बडी उम्रवालोंको भी कभी होता है अति दारु पीनेसे उंचेसे कुदनेसे गरमी से यह रोग होता है। दस्त आते वक्त गुदाका भाग बहार निकलनेके पीछे दस्त आता है। दस्त आजानेके बाद धीरे धीरे अंदर बैठता है। किसीको बहुत दबानेपर बैठती है।

चांगेरी घृत—बैठो गुलरका मूल जलपिप्पली छोटी पीपल चित्रक शतावरी बिल्वकी गीरी हंसराज हराधनीया अदरख अजमोद इन्द्रजौ गोखरू पाठ केलकंद प्रत्येक दस दस तोला कूटकर इसमे दही शेर ४०, खट्टी लूणी (चांगेरी) शेर १० और घी शेर २० डालकर पकाना। पानीका अंश जब जाय जब घृत

कपडछान कर लेना । मात्रा १ से ४ तोला गुदभ्रंशमे उत्तम गुणकारी है । यह घृत खुनी मसा संग्रहणी पेट फूलना पित्ताशयकी जलन इनमे भी गुणकारी है ।

गुदभ्रंश शामक मलम—पाठा बेल फलकी गिरी इलायची चीनीकबाला प्रत्येक चार चार तोला, खट्टी लुणी—चांगेरी तोला, ८० सबको कूट इसमे घी २ सेर पकाना पीछे उस घीमें शाहजीरा तोला २ कपूर तोला ०॥, शक्कर तो १॥ को महीन पीस मिलना । यह मलम लगाना ।

१ खेरका गोंद तोला ०॥ मुंगका आटा तोला १ घीमे मिलाय ७ दिन खानेसे आमण निकले नहि ।

२ कमलके कोमल पत्तेको पीस शक्कर मिलाकर पिलाना ७ दिनमे यह दर्द मिटे ।

१३ पानी लगना—दुर्जल जन्य रोग

दुर्जल जन्य रोगी मुम्बई जैसे बडे शहरोमे रहनेसे अथवा देश परदेश जानेसे पानी लगता है, तब दस्त कब्ज रहता है, भुख कम होती है, खून फिक्का पडता है शरीर कमजोर क्षीण होता है ।

आरोग्य वर्धनी गोली, दुर्जल जेता, सुवर्ण वसंत मालती, पूर्णचंद्रोदयकी गोली, योगराज रसायन, नवायस लोह, लोह रसायन, सप्तामृत लोह सौभाग्यशुंठी अमृत भल्लातक आदि औषध दिया जाता है ।

१४ अकाल मरण

जलमग्नो वृक्षादेः पतितो वज्राग्निना हतो मनुज. ॥
आयुष्ये सत्यपि वा मृत्युवश याति मानवो नूनः ॥१॥
श्वासोन्नयनक्रिययाऽऽनीते श्वासे प्रयत्नतो जीवेत् ॥
यावच्छिथिलावयवश्चोष्णशरीरश्चिकित्सितु योग्य ॥२॥
जलमग्नमधः शिरसं कृत्वा निःसारयेज्जलं सद्य. ॥
पार्श्वे शायितमास्ये स्वमुखेन धमेन्नलीयन्त्रेण ॥३॥
तीव्रांजनस्यौषधयोगा योज्याश्च सन्निपातोक्ताः ॥
वालुनि हिरण्यगर्भं धर्षेद्यावच्च रक्तसंयोग. ॥४॥ (रसोद्धार तंत्र)

आयुष्य रहते हुए भी मनुष्यका मरण होता है यह अकाल मरण है । पानीमे डूबनेसे गला पाश खानेसे बिजली पडनेसे भयंकर भय लगनेसे भयंकर अप्रिय दुःख कारक बनाव सुननेसे किल्ला—वृक्ष मकान आदिसे गिरनेसे छाती दबनेसे श्वास नलीमे बाह्य पदार्थ घुस जानेसे श्वासकी गति रुक जानेसे हृदय बंद

पडनेसे अग्नि आदिसे जलनेसे जलादेनेसे प्राश्रम आदिके अकस्मातसे इस प्रकार अनेक कारणोसे आयुष्य होते हुए भी मनुष्य मर जाता है।

इनमेसे जीसके शरीरके अंगोको अवयवोको हानी न पहूंची हो उसेका उपचार करनेसे पुनः जीवित होनेका संभव है।

पानीमे डुबकर मरण पाये हुयेको बहार निकालनेके पीछे उसको उंचे मस्तक टांगकर पानी बहार निकालना अथवा मस्तकका भाग नीचा रखकर मुख खुल्ला कर जीभ चीपीयासे पकड खेच रखना ताकी पानी निकल जायगा श्वास बंध होतो कृत्रिम श्वास चालु करना। रोगीका कपडा निकाल डालना पीछे सन्निपातमे और सर्पदंशमे बताये तीव्र अंजन नस्यका उपयोग करना। नलीद्वारा फूंक मार कर नस्य चढाना। तालुमे अस्त्रासे छेद देकर खुन निकले उस जगह हिरण्य गर्भ सन्निपात भैरव कैलास चितामणी अघोर नृसिंह आदि औषध घिसना। चिपीयासे जीभ पकड कर नाक बंध कर गलेमे नलीद्वारा फूंक मार मार कर या अन्य रीतीसे श्वास चालु करनेकी युक्ति करना। जीभको दूर तक खेचना ढीली करना इससे छींक आवे वमन होतो जीभको खेच रखना इससे श्वास चालु होगा। इस प्रकार जीभको खींचना ढीली करना यह क्रिया अेक मीनीटमे ८-१० दफे करना। छाती पीठ पसलीमे महानारायण तेल अथवा तिल तेल या सरसोका तेल जोरसे मर्दन करना। पेटके नीचे ओसीका रख उंधा सुलाकर पीठ-पृष्ठके भागमे दाबना। तेल मर्दन करना इससे छाती दबेगी फिर पार्श्वभागका (पडखाको) पर फिर उंधा सुलाना इस प्रकार १ मीनीटमे १०-१२ दफे करना फिर मनुष्यको चीता सुलाकर पीठमे अेक दो उसीका रख चीता सुलाना और पेट दाबना तैलसे मर्दन करना जीभ चिपीयासे पकड रख मुख खुला रखना इस प्रकार १ मीनीटमे १०-१२ दफे करना। मस्तक पर पानी छंटकना पीछे वैद्यने मस्तककी ओर खडा होकर दोनो हाथ कोणीसे पकडकर लंबाकर माथाकी ओर खीचना और छाती उपर रखना इस प्रकार एक मीनीटमे १०-१२ दफे करना।

भुंगली अथवा नली गलेमे उतार मुखसे सख्त फूंक मारना और नलीद्वारा मृत संजीवनी सुरा अथवा उंची कीसमकी ब्रांडी अंदर दाखल करना इस वखत जीभको चिपियासे पकड रखना। सारे शरीरमे सोंठका चूर्ण मर्दन करना ब्रांडीका मालीस करना। इस प्रकार दो तीन घंटा पर्यंत उपचार करनेसे मनुष्यमे श्वासकी गति होकर बच जाता है। इस प्रकार उपचार करनेपरभी श्वासकी गती चालु न होतो जीवित होनेकी आशा छोडना।

भय शोक आघात आदिसे अथवा अकस्मात हृदय बंद पड जाता है तब उपर लिखा उपचार बारवार करना।

विष प्रकरण

प्राणिज विष वनस्पतिज विष खनिज विष

१ सर्पदंश—सांप काटना

चिन्ह—झहरीला सर्प काटा होतो करडकी जगह दो छिद्र होवे है, यदि तीन तीनकी दो लाइनमे छ छिद्र होवें वह सांप झहरीला नहि है ऐसा समझना। सांप काटते ही झनझनाहट होती है, चक्कर आता हैं, वमन उसका करनेका मन होता है, पांवमे जोर नहि रहता श्वासका रुंधन होता है, कष्टसे श्वास ले सकता है, नाडीकी गति वेगवाळी और आंचका खाती हुई चलती हैं। बोल सकता नहि जीभ छोटी पडने लगती है। थुक गिलनेकी शक्ति नहि रहती, जीभ बहार निकलती है किसीको मुखमें फेन आता है। ठंडा पसीना होता हैं। बेहुश होकर धीरे धीरे कमजोर होकर मरण पाता है। झहरी सर्प हो तो २ से ४ घंटामे मृत्यु होता है

तुर्त की जानेवाली सारवार

सांप काटते हि जखमसे २-४ इंच उपर के भागमे मजबुत पाटा बांधना जिससे खूनकी गति रुक जाय। पीछे किसी मजबुत आदमीसे विष चूसाना। चूसने वालेके मुहमे चांदा नहो और दांतके मसूढोंसे खुन निकलता नहो चूस चूस कर थुक डालना और सर्प विषहर क्वाथका कुल्ला करते रहना। चूसनेका न होतो वहां छेका देकर खून बहाना। बेरी नस न कटे यह ध्यान रखना। पीछे दंशवाला भाग ग्यासरेट तेलसे भरे हुओ बरतनमे अथवा केलीके स्थामके रससे भरे हुओ बरतन मे डुबाना। विष वज्रपात रस अथवा त्रैलोक्य चिंतामणि अथवा रोमवेध रस अथवा हिरणगर्भ रस मेसे किसीको पीसकर दंशपर बांधना और योग्य मात्रा पानीसे अथवा आकके मूलके क्वाथसे देना।

पीपल(अश्वत्थ) पत्र प्रयोग—पीपल वृक्षकी छोटी शाखा तोड लाना जिसमे २०-२५ बडे पान हो। सर्पदंश वाले रोगीको बैठाना इसके पीछे दो आदमी उसके दो हाथ पकडे एक आदमी मस्तक पकडे, दो आदमी दो पांव पकडे और एक आदमी सामने बैठकर पीपळ के दो पत्तेकी लंबी डंडी हो वह दोनो कानमें घुसा दे धीरे धीरे कानमें जाकर अटक जाय जब डंडीयो दो कानके साथ दाबकर रखना। थोडी देरमे रोगी चिल्लाने लगेगा तो भी उसे छोडना नहि डंडी नीकालना नही। पांच दस मीनीटके पीछे वह पत्ते एक बाजु रख दूसरे लंबी डंडीके पत्ते लेकर डंडी कानमे घुसाडना और कानके साथ मजबुत पकड

रखना। इस प्रकार ७-७ दफी बदलनेसे सब झहर खेंची चूस लेती है और रोगी बच जाता हैं। विषैल दफी वाले पत्ते फेंक जला देना वह पत्ता पशु खा जाय तो मर जाता है। रोगी बेशुद्ध हो गया हो वह भी बच जाता है। वैद्य डाक्टरने मरा हुआ बता दिया हो उस पर भी यह प्रयोग करना बच जाता हैं। यह अद्‌भूत प्रयोग है।

गरुड वृक्ष अथवा गरुड गच्छ वृक्षका प्रयोग

इस वृक्षके बारेमे हमारे मित्र श्री टोकरशी कालीदास C/o प्रभुदास वाघजीभाइ एन्ड कंपनी बीडी पत्तोके व्यपारी राजनांदगांव मध्य प्रदेश। इनका गुजराती पत्रका अनुवाद देते हैं। वे लिखते है कि मैं आपको सर्प विष निवारक अद्‌भूत औषधी भेजता हू इसका नाम गरुड अथवा गरुड गच्छ, गरुडका वृक्ष जंगली लोग कहते है। यह जंगलका पहाडी वृक्ष हैं। ओरीसा और मध्यप्रांतके जंगलो मे पहाडो पर कहीं कहीं देखनेमें आता है। यह वृक्ष बहूत उंचा और सीधा होता है, पत्ते बिल्व पत्रकी तरह एक डंडीमे पांच सात लगे रहेते है। पत्ते लंब गोळ होते हैं। इसकी एक दो हाथ लंबी फली होती है। फली जब वृक्ष पर लटकती है तब मानो सर्प लटकते हैं ऐसा भास होता है। फलीकत नीचेका भाग कुछ वक्र (नमाहुआ) होता है। सुखने पीछे वह फटती हैं। तब उसमेंसे सर्पाकृति फली जितनी लंबी लकडी जैसा निकलता है। उसके अग्रभाग सर्पका मुखको बिलकुल मिलता जुलता है। इसकी आजुबाजु कागज जैसे पतले सेकडो बीज निकलते है। इस फलीका सर्पकी हड्डी जैसा गर्भ और छाल सर्प विषका औषध है। जहां सर्प कांटा हो वहां फलीके गर्भका टुकडा पीसकर लगा देना और पानीमे पीस कर पिलाना। इस वृक्षकी फलि जंगली लोग लाकर बाजारमें बिकते है। और सर्प विषकी अमोघ औषधी के नाते लोग ले जाते है। मैं पहाड पर खुद जाकर थी गे लाया हूं जो आपकी पास भेजता हू। जंगली लोक सर्प विषमें इसका उपयोग करते है और शत प्रतिशत रोगी अच्छे हो जाते है"

यह वृक्ष भयंकर सर्पविषका औषध होने पर स्वय विषैल-झहरिला नहि है, नीरोगी मनुष्य भी खा सकता है। इसके गुरेकी मात्रा १ से २ मासा और छालकी ३ से ४ मासा पानीमे पीस कर दी जाती है। पत्ता भी ४ से ६ मासा पीस कर दिया जाता है। रोगी शुद्धिमे होतो फलीके कवचका टुकडा कूटकर अथवा गुदाको कूटकर पानीसे पीलादे रोगी बेशुद्ध हो तो तालुमे छेद कर खून के साथ घीसे और फलीको वृक्षकी। छालको या गुदाको पानीमे पीसकर सारे बदनमे मर्दन-

करे। उसके बुंद नाकमे आंखमे डाले और रोगी अपनेसे पी नहि सके तो नलीके द्वारा मुखसे और पीचकारी—वस्ति द्वारा गुदासे प्रवाही कर डाले रोगी बच जाता है। यह अद्भूत वृक्ष है। यह वृक्ष अन्य किसी स्थानमे होवे जंगलके अधिकारीओने ढुंढकर प्रकाशमे लाना कि लोग सरलतासे लाभ ले सके।

विषवज्रपात रस—सोमल बछनाग टंकण एकाया नीलाथोथा काली मरिच मेनसील हरड अभ्रकका भस्म कलिहारी (लांगली) सब सम भाग लेकर केलेका रस देवदाली-कुरुदबेल रस अपामार्ग रस शिरीश रस प्रत्येककी एक एक भावना देना। सर्पदश वालेको दशपर घाव जरा चौडा कर लगाना। २ से ४ रती पांच पांच घंटाके पीछे ढाकके मूलके रसमे अथवा अपामार्गकेरससे अथवा केलेके रससे देना। आंखमे अंजन करना। नाकमे सुंघाना। बीछुके दशमे तथा दूसरे स्थावर जंगम विषमे गुणकारी है। इसकी मात्रा देनेके पीछे गर्म किया हुआ गायका घी ५-१० तोला पिलाना।

मृत्यु-पाशच्छेदी घृत—आकके मूल देवदाली अपामार्ग पंचांग ढाकका मूल बिल्व पत्ता शिरीश मूल केलेका कंद प्रत्येक चालीस तोला, मुषाकानी घमासा लज्जालु पाताल गारुडी शतावरी लांगली मजीठ रास्ना तुलसी मरवा प्रत्येक बीस तोला, कुष्ठ गोरोचन ब्राह्मी हल्दी प्रत्येक पांच तोला सबको कूट कर केलेके थंभके पानीमे १२ घंटा भिगो रखना। कच्चा एक मन घी डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय तब कपडछान कर लेना। पांच पांच घंटाके पीछे ५ से १० तोला घृत गर्म कर सर्पदशवालेको और बिछुदशवालेको पिलाना। प्राणिज वनस्पतिज खनिज सब विषमे यह गुणकारी है।

सर्पविषहर क्वाथ—आकका मूल देवदाली धमासा निगुंडी चिरायता बच अरणीपत्र शिरीष पत्ते अतीस नागरमोथ हरड ढाक मूल केलेका कंद सेंधानोन समभाग कूट रखना ७ से १० तोलाका क्वाथ कर रोगीको पिलाना।

अरिष्ठ योग—रीठेका फल १५ लेकर उसमे पानी १० तोला डालकर उबालना पीछे नीचे उतारकर हाथसे मसल कर छान कर चमची चमची करके ४-५ तोला पानी पिला देना। पांच घंटामे उलटी—वमन होगा। यदि वमन न हो तो दूसरा ४-५ तोला पानी पिलाना, वमन होगा। यदि सांप जहरी होगा तो वमनमे हरे रंगकी झाग होगी वह सर्प विष है। इस प्रकार निकल जायगा। यदि हरी झाग-न दिखे तो सर्प विषैल नहि है। वमन हो जाने के पीछे गर्म गहा कोको दूध पिलाकर रोगीको सुलाना।

सर्प विषके सादे प्रयोग

१ कुकडवेल देवडालीके पन पानीमे पीस कर पिलाना.

२ इंगुदी फलका गिरी खिलाना

३ कच्ची हिंग ४ से ५ रत्ती हर पाव पाव घंटा में पानी मे पीस पिलाना ऊपर गर्म घी पिलाना.

४ समुद्र फल घिस कर नाक मे बुंद डालना.

५ शिरीषका मूळ २ से ३ तोला पानी मे पिस पिलाना।

६ पीला फूलकी अथवा लाल फुलकी कलिहारी (लांगली)की जड को दंश पर दाब कर रखना विषको खीचकर गांठ फट जायगी और रोगी बच जायगा।

७ सफेद फुल के स्याकका मुल १ तोला पानी में पीस कर पिला देना उलटी दस्त हो कर विष निकल जायगा।

८ कुबो (द्रोणपुष्पी) का पचांग तो. २० को २ सेर पानीमे उबालकर दर ०। से ०॥ घंटा पीछे दस दस तोला पानी पाये रखना।

९ लशुन कली तोला ४, सांपकी काचली तोला ४ थूहरका दूध तो १ नमक तो १ छोटी पीपल तो १ सब साथ कुट बिना रांग लगाये तांबे के कटोरेमें डालकर निंबू रस मे घोंट कर गोली बनाना। पानी मे घीस कर अंजन करना-

१० दिव्यधूप हमेशा करने से घर मे सर्प आता नहि.

सिद्धधूप-कपिकच्छुफलं मुस्ताऽर्कफलं सिद्धार्थकश्च संजरसः॥
भल्लातं धूपोऽयं समभागकृतश्च सिद्धाख्यः ॥१॥
मूषकमत्कुणसर्पा नश्यंति विषैश्च कीटकाः सर्वे ॥
चांचड मच्छर डांसा विषेर्णनाभाश्च जंतवोदश्याः ॥२॥

कवच फली (कपि कच्छु फली) जिसको भेरव सींग भी कहेते है नागरमोथ आकका फल सरसों राल भिलावा सम भाग कुट कर रखना धुप करनेसे सांप बीछु मच्छर आदि भाग जाते है।

बिछूका दंश वृश्चिक दंस

चिन्ह—बीछु काटता है जब सुई चुभी हो ऐसा लगता हैं। थोडी देर में दर्द बढता है जलन होती है ५-१० मिनट मे सारे शरीर मे फैलता है। झहरीला बीछु होतो पीडा के साथ पसीना छूटता है और रोगी का शरीर ठंडा पड जाता है। काले पहाडी बीछुमे या बीछुसे कई दफे मृत्यु होता हैं।

१ विषदत्रपात २ से ३ रती अपमार्ग के पान के रस के साथ पिलाना

२ अपामार्ग का मूल लाकर ॐ ह्रीं भुवनेश्वरी वद वद वृश्चिक विषं नाशय नाशय ह्रीं फट् स्वाहा। यह मंत्र पढ़ते जाय और दंश के आगको मूलका स्पर्श कर नीचे उतार जमीन पर छिड़कते जाय इस प्रकार ७ दफे करनेसे वृश्चिक विष उतरता है।

३ यदि छोटे बच्चे को क्या काटा यह मालुम न हो तो ढाकके मूलको अथवा शिरीष के फूल पते के अथवा कुमा (द्रोणपुष्पी) के पंचांगको पीस कर सारे बदन पर मर्दन करना।

४ रीठे के फलसे बीज निकाल कर छिलकेको उबाल कर वह पानी पिलाना और छीलके को पीस कर दंश पर लगाना।

५ लाइके पान को मसल कर पानी निकाल कर नाक मे बुंद डालना छोके आकर झहर निकल जायगा।

६ गरुड वृक्षकी फली के गोरी को पीस कर पिलाना लगाना।

७ कलीहारी की गांठ पीस कर दंश पर लगाना।

८ पल्ली गोली (ढेढगरोली) को तेल मे पका लेना पीछे उस तेल का बुंद दंशपर लगानेसे झेर निकल जाता है।

९ इन्द्रायण का मूळ पीस कर दंश पर लगाना,

१० विष वज्रपात ०। तोला पानी मे पीस दंशपर लगाना।

बिल्लीका काटना-कल्प

बिल्ली—मार्जारी बहुधा काटती नहि लेकिन इसको कुछ करनेसे, वह मर जाय ईस तरह सतानेसे कभी काटती हैं, उससे आदमी मर जाता हैं। इसका असर भयंकर होता हैं। कुदरतने उसमे भय-विषनपना हैं, इस कारण उसका काटना क्वचित हि बनता है। यह दुष्ट हो जानवर लगाती हैं, इसमे विष नहि हैं, दांतमे विष है। कई साल पहिले अकलकोटके पेढीमे चोकीदार को बिल्ली काटी थी वह म्यांऊं म्यांऊं करने लगा था, आखे पीली पड गई थी इधर उधर मरसे छुपने लगता था बिल्ली जैसा भयभीत (भीषण) स्वभाव हुन हो गया था चिन्ह-मुख कृति विचित्र विकृत हो गयी थी और थोडे घंटेमे मर गया

उपचार—इसका कोई उपचार शास्त्रमे लिखा नहि हैं पर च सांपके दंशका उपचार इसको भी करना। विष वज्रपात ०। से ०॥ तोला घी के साथ देना। गरुडवृक्षके ४ तोला गुदाको पीस १ से २ रतल पानीमें पीस प्रत्येक पाव घटाके पीछे देना। मृत्यु पाशच्छेदी घृत। कल्याण घृत गरम कर पिलाना। उसके पश्चात् उसके कानमें अश्वत्थ पीपल वृक्षके पातेको रखी मुखावना जिसकी विधि सर्पदंशमें दि है।

गरनाशन—पारद दस तोला, गंधक २० तोला लेना। इसमेंका वर्ग तो, ५, पारदमे मिलाकर पीछे गंधक डाल कज्जली कर पीछे स्वर्ण माक्षिक कचीको पिष्टी तोला १० मिलाना। इसमे सफेद फूलके अंकका मूल शिरीष मूल मयूरके पांवकी हड्डी निमबीज गिरी ढाकके मूलकी छाल हलदी मजीठ प्रत्येक पांच पांच तोला मिलाय क्वारपाठाका रस और पीपलके पत्ते डंडी के साथके कूटकर उसका रस और पुनर्नवा मूलका क्वाथ प्रत्येक की एक एक भावना देना। साप बिछु और अन्य स्थावर जंगम विषमें ६ से १० रती प्रत्येक पांच पांच घटामें देना।

पल्ली-गरोली (ढेढ गरोली) यह खान पानमे पड जानेसे मृत्यु होता है। कैठा (कपित्थ) फलका वनकुलथी गर्भ चोमेड आकके बीज सोंठ पीपल कालीमीरच करंजबीज लताकरंजबीज हल्दी दारुहल्दी ढाकका मूल समभाग कूट कर ३-४ तोलाका क्वाथ कर पिलाना शिरीष वृक्षके पंचांगका क्वाथ पिलाना।

अफीम विष

अफीम यह पीडा शामक औषध है, ज्यादा लेनेसे मरण होता है। इसके विषैल चिन्हमे चक्कर आता है बेचेनी मुखशोष शरीर ठंडा पडे नींद गहरा उतरे बेशुद्ध श्वास गति क्षीण हो स्नायू खींचे। १ से २४ घटामे मृत्यु होता है।

उपचार—तुर्त दस्त पिशाब कराना, इच्छाभेदी ६ से १० गोली गर्म जलसे देना और गुदा द्वारा चढाना। मैन फलका क्वाथ पिलाना। विषाजगात ८ से १० रती प्रती आधा घंटाके पीछे गर्म घीसे या ढाकके मूलके क्वाथसे देना। चोलाइ शरपुंख नीदके पत्तेका क्वाथ देना। गरनाशन ६ से ८ रती प्रत्येक पांच घंटामे पिलाना। भांगराका रस तोला १० तुलसी रस तोला ५ मिलाकर पिलाना।

धतूराका विष—धतूरेका बीज झेरी है खानेसे आधा घंटामे चिन्ह दिखते है। चक्कर मुखमे गलेमे शोष प्यास आंखोकी कीकी चौडी हो आंखे मुख लाल हो बेशुद्ध पागल पन हो श्वासकी गती मंद हो। बहुतोको मृत्यु नहोतो हमेशके लीये पागल बन जाता है।

उपचार—इच्छा भेदी ४ से ६ गोली गर्म जलमे देना। वमन वीरेचन होकर निकल जाता है। समुद्रफल तोला १ गोमूत्रके साथ पिलाना। घी गर्म कर पिलाना। ढाकके मूलका क्वाथ पिलाना शिरीश मूलका क्वाथ पिलाना। गायकी छाछ पिलाना। कापूस (वण)के मूलका क्वाथ पिलाना।

वछनाग—विषसे मुख जीभ होठमे झनझनाहट होता है पेटमे जलन गला जल गया हो ऐसा लगता है आंख कानकी शक्ति कम होती है शरीरके स्नायु शथील होते है, कभी आक्षेप-ताण आता है इसका उपचार भी अफीम धतूरेके विषके समान करना और वमन विरेचन कराना।

सोमल

यह भयकर विष है। इसमे स्वाद नहि है इस लिये दगासे दिया जा सकता है। पेटमे जानेके पीछे एकाध घटामे विषैल असर होती है। पहिले पेटमे दाह और शूल होता है उबका आता है, वमन हो दस्त हो दस्तमे खुन पडे, पिशाबमे जलन हो प्यास लगे, आंख लाल हो, नाडी और श्वासकी गति बढे, मुत्र लाल हो।

उपचार—इच्छाभेदी गोली ५–७ या ज्यादा देकर वमन विरेचन कराना। चौलाइ के रसमे दही और शक्कर मिलाकर पिलाना। शरपुंखके पचांगके क्वाथमे शक्कर और दही डाल पिलाना। नीमके पत्ते के रसमे शहद डालकर पिलाना। ढाकके मूलका क्वाथ पिलाना। सोहागा कच्चा आधा तोला नींबूका रस ४ तोला मिलाकर पिलाना। अपामार्ग मूल १॥ तोला, इन्द्रायण मूल तोला १॥ पीसकर पिलाना।

मूषक चुअेको मारनेकी दवा रेट (रट)

सरकार आयुर्वेदिक निर्दोष दवा पर प्रतिबध लगाती है। और रेटरट मूषक मारनेका भयंकर झहर छूटसे बजारमे रखती है जिसे सबकोइ चाहे तब लेसते है और अपनेको और दूसरेको हत्या आसानीसे कर सकते है। बेकारी भुख मरो अथ तोप क्लेश या अन्य कारणसे आत्मघात करना चाहे तब लेकर उपयोग कर लेते है। इस प्रकार मूषक कितने मरे यह तो कोइ जान नहि सकते लेकिन देश भरमे सेकडो स्त्री पुरुषोंकी हत्या हो हो रही है। दूसरी बात यह ध्यान खींचती है कि इस दवासे मूषक मरते होंगे लेकिन उन मूषको को खानेवाली हजारो बिल्लीयां मर रही है क्योंकि झहर खाये हुये मूषकको खानेवाली बिल्लीयां भी झहर से मर जाती है।

चुहाकी उत्पत्ति वृद्धि नाश अनादि कालसे चलता है। अधर्म वृद्धिसे विकृत वातावरण से जनपदोध्वंस होता है और उसके चिन्हो मे मूषक वृद्धि भी एक है। और कुदरत से हि उनका नाश भी हो जाता है। बिल्लीयो के नाश से मूषकोकी वृद्धि हो रही है। रेट रटसे जितना मूषक नही मरते बिल्ली ओंके मरनेसे वृद्धि हो जाती है। आयुर्वेदमे कई अैसे धूप है। जिससे चुहा टीड आदि जतु मर जाते है। परंच इस बारेमे संशोधन करनेका उत्तेजन आयुर्वेदज्ञोंको नहि दिया जाता।

उपचार—शेमल विष के लिये जो उपयोगी है वह इस रेट सट के जहर मे भी लाभकारी होना संभव है। यह दवा खाली हो तो तुर्त वमन विरेचन कराना। इच्छा भेदी ५–७ गोली या अश्वचोली १०से १२ गोली गर्म जलसे देना। एक घंटा राह देखकर दस्त न हो तो फिर देना। विषज्वरान्तक ४ से ८ रतो गर्म घ के साथ देना शिरीश वृक्षकी छालका अथवा ढाक मूलका क्वाथ पिलाना। चौलाइका रस अथवा केलीका रस पिलाना। एलीया तोला ०।, बच तोला ०॥, गुगल तोला ०॥ नमक तो १, सब साथ छाछमे पीस छाछ के साथ पीलाना। जासन पुष्प-। पिशाब ३० से ४० तेला पिलाना।

हृदय बंध रोग–हार्ट फेल्योर

अपने को सुधारावादी कहने मनाने वाले, सुखी जीवन बिताने वाले, मोटर विमान मे फिरने वाले बंगला मे रहने वाले बडे बडे अधिकार भोगने वाले प्रायः शहेर मे रहने वाले, फेमीली डाक्टरो की रक्षा पानेवाले गृहस्थ श्रीमंत लोग और खुद डाक्टर लोग भी मृत्यु के आधीन हो जाते हैं। मानो हृदय बंध रोगका जमाना चल रहा है। ऐसे किस्से सुखी मनुष्यो में और शहेरों में हि अधिक बनते है। हिंदुस्थान और विश्व के सभी देशो में यह दशा है। जमाना आगे बढ रहा है, नयी शोध खोज वैज्ञानिक लोग कर रहे हैं, जीवन धोरण उंचे लाने की मगरुरी सत्ताधारी कर रहे है वैसे हि क्षय केन्सर रक्तपित–कुष्ठ श्वेत कुष्ठ डायाबेटीस हृदय बंध संग्रहणी आंत्रक्षय और अन्यान्य नये नये रोग फल रहे है और दिनोदिन ऐसे रोगीयोकी संख्या बढ रही है। प्रत्येक रोगके लिये विश्वके वैज्ञानिकोकी कोन्फरन्से मिलती है। रोग बढते रहे है और लखो मनुष्य इन रोगोके बलि पड रहे है। यह कमनसीब दशा शहरोमे ज्यादा है। पार्लामेन्टके मेम्बर पुकार करते है कि सरकार ग्रामोमे डाक्टरोको और विलायती दवाकी व्यवस्था सरकार नहि करती इत्यादि कहकर ग्रामोको डाक्टरोका लाभ दिलवानेके लिये प्रयत्न करते है, परतु उन्हे यह सोचना चाहिये कि ग्राम प्रजामे विलायती दवा और डाक्टर नहि पहूंचे और सरकार नहि पहूंचा सकी यह ग्राम प्रजाके लिये सद्भाग्यका चिन्ह है। सरकारी अधिकारी वर्ग के स्वीकृत किये अनुसार हिंदुस्तानकी प्रजामे से सैकडा १५ से २० टका प्रजा एलोपेथी–विलायती दवाका लाभ ले सकती है इसका अर्थ यह है कि सैकडा ८० टका प्रजा आयुर्वेदके आधारसे रोग मुक्त हो रही है और अना आरोग्य बचा रही है। उपर लिखे रोग और हृदय बंध शहरोमे सैकडा

८० टका और ग्राम प्रजाने सेकड़ा २० टका होता है। इस प्रकार विचार करनेसे मालुम होता है कि शहेरोंकी अपेक्षा ग्राम प्रजाका आरोग्य अच्छा होनेका यश और रोगमुक्तिके साधनका यश हि इसके ज्यादे मेंयोंको मिलता है। ग्राम प्रजाका आहार विहार वंश परंपरासे चले आते प्राचीन पद्धतिका हि है। जो कि जमानांके अनुसार खानपानमे और सीनेमा जैसे मानसिक अधोगति करनेके तत्त्व ग्राम प्रजामे प्रविष्ट हो रहे हैं। डेरी जैसे कारखाने स्थान स्थानपर निकलनेसे ग्रामोंसे दूध खींचा जा रहा है इस कारण ग्राम प्रजाका आरोग्य बिगडने लगा है फिरभी शहरोंके अपेक्षा ग्राम प्रजा आरोग्य दृष्टिसे अच्छा है। देशकालके वातावरणसे, दुष्काळ आदिसे पशुओंका नाश बढ रहा है गौओ मेंसोंका कतलखानामे असंख्य वध हो रहा है, वह गो अशुध्य पड रही हैं और डेरी जितेने ग्रामग्रदेशके दूध खींचाता रहा है इत्यादि कारणोंसे ग्राम प्रजाका आरोग्य गिर रहा है वह आगे किस दशाको पहुंचेगा भावीके गर्भमे है। आजतकका अनुभव कहता है कि हृदय यक्ष रोग ग्रामोंकी अपेक्षा शहरोंमे ज्यादा है।

हृदयामृत योग—१ अभ्रक भस्म तो १, सुवर्ण वसंत मालती तो ०॥ चोंसठपोरी पीपर तो १, वंग भस्म तो १ मिश्र कर घोटकर ५ से ६ रती मधुसे अथवा च्यवनप्राशसे ले।

हृदयामृत योग—२ महालक्ष्मी विलास तो १, अभ्रक भस्म तो १, लोह भस्म तो १, सिद्ध तो २ मिश्र कर ५ थी ६ रती च्यवनप्राश अथवा आगस्त्य हरीतकीसे।

हृदयामृत योग—३ रत्नगर्भपोत्तर रस तोला ०।, वसंतकुसुमाकर तो १, मुक्ता पिष्टी तो १ रसामृत लोह तो १ मिश्र कर ६ थी ७ रती मधु अथवा सोमाय सुंठी अवलेहसे

हृदयामृत योग—४ हीरा भस्म १ रती, रत्नगर्भपोतर ०। तोला सुवर्ण वसंत मालती ॥ तोला, स्वर्ण भस्म रस ०॥ तोला, पूर्णचन्द्रोदय ०। तोला, मिश्र कर ४ से ५ रती च्यवनप्राशसे।

हृदयामृत योग—५ सिद्धरसायन कल्प २ से ३ गोली अष्टवर्ग चूर्ण २ से ३ मासा म मिलाय शहदसे अथवा दुधसे।

हृदयामृत योग—६ मुक्ता पिष्टी तो १, पूर्णचन्द्रोदय तो ०।, वैक्रांत भस्म तो १, सुवर्ण पर्पटी तो ०॥ मिश्र कर ३ से ४ रती मधु या राजवशी आवनसे।

———[*]———

रसोद्धार तंत्रे

॥ भस्म पिष्टि प्रकरणम् ॥

अकीक भस्म पिष्टिश्च (रसोद्धार तंत्र)

न शोधनमकीकस्य शुद्धमेतत्स्वभावतः ।
चूर्णीकृतमकीकं च कुमारी केतकी रसैः ॥१॥
जलपिप्पलिका रंभा रसैर्मर्द्यं पुनः पुनः ।
कुक्कुटारण्य पुटैः पक्वमुत्तमं भस्म जायते ।२।
उपर्युक्तरसैर्घृष्टं शुष्कं सूर्यांशुभिर्मुहुः ।
भवेत् पिष्टिरकीकस्य सौम्या हृद्दाहनाशिनी ॥३॥
मधुना पित्तरोगेषु वातरोगेश्वगन्धया ।
शृंगवेररसे कासहृद्याक्षिशिरोगदे ॥४॥

अभ्रक भस्म निश्चन्द्रं (आयुर्वेद प्रकाश अध्याय २)

शोधनम्

अथवा बदरीक्वाथे ध्मातमभ्रं विनिक्षिपेत् ।
मर्दितं पाणिना शुष्कं धान्याभ्राद्धतिरिच्यते ॥५॥
धान्याभ्रकं समादाय शोषयित्वा तु मर्दयेत् ।
अर्कक्षीरैर्दिनं मर्द्यमर्कपत्रद्रवेण वा ॥६॥
चक्राकारं ततः कृत्वा शोषयेदातपे खरे ।
वेष्टयेदर्कपत्रैश्च सम्यग्गजपुटे पचेत् ॥७॥
पुनर्मर्द्यं पुनः पाच्यं सप्तवारं प्रयत्नतः ॥
ततो वटजटाक्वाथैस्तद्वद् देयं पुटत्रयम् ॥
म्रियते नात्र संदेहः सर्वरोगेषु योजयेत् ॥८॥

अभ्रक भस्म १०० पुटितं (रसोद्धारतंत्र)

पत्राभ्रकं च नो ग्राह्यं चिकित्सायां रसायने ।
वज्राभ्रकस्य पाषाणाः कृष्णास्तेजस्विनो वराः ॥९॥

गुरवश्चाश्मगर्भाश्च तच्च वज्राभ्रकं विदुः ।
वज्राभ्रं वह्निना तप्तं न किंचिद् विकृतिं व्रजेत् ॥१०॥

शोधनं धान्याभ्रकं-

वज्राभ्रं बदरीक्वाथे वन्हितप्तं विनिक्षिपेत् ।
मर्दितं पाणिना शुष्कं ग्राह्यं शूर्पेण सर्वशः ॥११॥
सहस्रशो बहिः कुर्यात् कर्णिकाश्चाश्मसंभवाः ।

अन्यत्, शोधन :-

अग्नितप्ता वज्रखंडा निषिंचेद् बदरीजले ॥१२॥
पश्चात् शणपटे बध्वा मर्दयेत् पाणिना बहु ।
अभ्रं जले स्रवेद्रम्यवालुकाः पटमध्यगाः ॥१३॥
जलादभ्रं च निष्कास्य शोषयेदातपे खरे ।
ततोऽप्यश्मकणाः सूक्ष्मा युक्त्या निष्कासयेद् भिषक् ॥१४॥

मारणं

धान्याभ्रमिदमर्कस्य दुग्धैर्वा पत्रजैः रसैः ।
संमर्द्य चक्रिकाः कृत्वा भानुपत्रैश्च वेष्टयेत् ॥१५॥
पचेद् गजपुटे पश्चात् क्वाथैर्वटजटाभवैः ।
रुदंती वानरी मुस्ता मंजिष्ठा च कुमारिका ॥१६॥
मूर्वा शिखिशिखा भूम्यामलकी दुग्धिका वरी ।
तगरामलकी चैवापामार्गो गोजलामृता ॥१७॥
जटामांस्यर्कपत्राणि रसैः क्वाथैर्मुहुर्मुहुः ।
देयाः शतपुटाः सम्यक् वैद्यैर्गजपुटाह्वयाः ॥१८॥

अभ्रक भस्म सहस्र पुटितं (आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः २)

श्री गोविन्दपादास्तु अन्यान्येव गगनमारकाणि भेषजानि लिखन्ति यथा.- अर्कदुग्धं १, वटदुग्धं २, शेहुण्डदुग्धं ३, घृतकुमारी ४, पंचांगुलमूल पत्राणि ५, काकमाची ६, मुस्ता ७, वटप्ररोहः ८, वस्तशोणितं ९ बिल्वमूलपत्राणि १०, अग्निमंथ ११, श्रीपर्णी १२, टिण्टुकः १३, पाटली १४, शालिपर्णी १५, पृश्निपर्णी १६, कण्टकारी

१७, रुद्रवन्ती १८, बृहती १९, गोक्षुर २०, तिलपर्णा २१, खर-मंजरी, २२, गुड २३, सिद्धार्थके धवलः २४, पाठकूया २५, मालती २६, गोमूत्र २७ हरीतकी २८, भार्गी २९, विभीतकः ३०, तालीसपत्र ३१ चित्रक मूलपत्रं ३२, जलकुम्भी ३३, ताम्रमूली ३४, मूषा ३५, वाजिगन्धा ३६, अगस्त्यपत्रं ३७, भृंगराज. ३८, कदली-कन्दरस ३९, सुवर्ण. ४०, देवदारु ४१, गुडूची ४२, धत्तूरः ४३, कासमर्द ४४, मातुलानी ४५, लोध्र ४६ तुलसी ४७, दूर्वा ४८, मारीषः ४९ मूषकपर्णी ५०, दाडिम वल्कल ५१, घोण्टा ५२, शंखपुष्पी ५३, नागवल्ली ५४, पिण्डीतगरं ५५, श्वेतपुनर्नवा ५६, हिलमोचिका ५७ मण्डूकपर्णी ५८ तिक्तिका ५९, मदनः ६०,

इत्यादिभिर्मर्दनपुटनैरेककेनाप्यभ्रको मारणीय. इति अभ्रक मारणीयगणः। आभिर्यथालाभ सहस्रपुटा देया। यथासंख्यं च प्रत्येकस्य सप्तदशपुटाः प्रायशो भवन्ति । एवं सहस्रसंख्या पूर्यते ।

इति अभ्रक सहस्रपुटित ॥१९॥

अभ्रक सत्व भस्म— (आयुर्वेद प्रकाश अध्याय २)

अथाभ्रकसत्वनिष्कासनविधिः कथ्यते ।

चूर्णीकृतं गगनपत्रमथारनाले
धृत्वा दिनैक्यमथशोष्य च शूरणस्य ॥१९॥
भाव्यं रसैस्तदनु मूलरसैः कदल्याः
पादांशटंकणयुतं शफरैः समेतम् ॥२०॥
पिण्डीकृतं तु बहुधा महिषीमलेन
संशोष्य कोष्ठगतमाशु धमेद्दृढाग्नौ ।
सत्वं पतत्यतिरसायनजारणार्थं
योग्यं भवेत्सकललोहगुणाधिकं च ॥२१॥

एवं पतिते सत्वे ततः किं कार्यं तदाह—

कणशो यद्भवेत्सत्वं मूषायां प्रणिधाय तत् ।
मित्रपंचकयुग्ध्मातमेकीभवति घोषवत् ॥२२॥

घृतमधुगुग्गुलुगुंजाटंकणमेतत्स्यात् मित्रपंचकं नाम ॥
मेलयति सप्तधातुनंगाराग्नौ तु ध्मानेन ॥२३॥

अथास्य सत्वस्य शोधनमारणमाह—

अयोवत्शोधनं तस्य मारणं तद्वदेव तु ।
मारितं ताम्रवद् गन्धपारदाभ्यां नियोजयेत् ॥२४॥

पिण्डीकृतं तु बहुधेत्यस्य व्याख्या-तिन्दुकप्रमाणान् बहुपिण्डान् गोलकान् कृत्वेत्यर्थः । कोष्ठगतमिति व्याख्याः-अधःपातकोष्ठ्यां स्थापितम् । मारणं तद्वदेव तु व्याख्या-त्रिफलादिभिर्लोहवद्भावयित्वा विंशतिवारं षष्टिवारं शतवारं वा पुटयित्वा सत्वभस्म संपाद्यं भक्षणार्थं, रसे जारणार्थं तु शोधयित्वा कार्यम् ॥

अथास्यगुणाः— शिशिरं सत्वमभ्रस्य त्रिदोषघ्नं रसायनम् ।
विशेषात्पुंस्त्वकारि स्याद्वयसः स्तम्भनं परम् ॥२५॥
नानेन सदृशं किंचिद्भैषज्यं पुंस्त्वकृत्परम् ।
सत्त्वसेवी वयःस्तम्भं लभते नात्र संशयः ॥२६॥
आयुर्वर्धनमभ्र दृढयति देहं च शुक्र शुद्धिकरं ।
मृत्योर्भीतिं दूरीकुर्यात् सततं हि सेवनेनेदं ॥२७॥
हृद्दौर्बल्यक्षयक्रमिमेहयकृत्प्लीहकुष्ठहृद् वल्यं ।
दोषत्रिकसाम्यकरं रसायनं बृंहणं परं वृष्य ॥२८॥

कान्त पाषाण भस्म—(रसोद्धार—तन्त्र) (र. तं)

कान्त पाषाण खण्डाश्च कान्तगर्भाश्च चुम्बकाः ॥
आरक्ता मृत्तिकागर्भा तप्ता रंभारसप्लुताः ॥२९॥
शुद्धाः कुमारिका द्रावैर्घृष्टा गजपुटैः पचेत् ॥
सप्तवारं वरं भस्म रक्तं स्याद् गुणवर्धनं ॥३०॥

टिप्पणी— नृमूत्रस्थाने वृषभमूत्र । गंगापुत्र भद्रमुस्ता ।
अजारक्तस्थाने अजामूत्र ।

देयं दूषितरक्ताय मेदोपाण्डूदरादिषु ॥
बल्यं हृद्य क्षत क्षीणे वृष्यं पुष्टिप्रदं भवेत् ॥३१॥
दुग्धेन मधुना मात्रा चतुर्गुंजा मिता भवेत् ।
अनुभूय रसोद्धारतंत्रे योगः प्रकाशितः ॥३२॥

कान्तलोह भस्म १०० पुटितं (रसोद्धार तंत्रं)

शोधनं—कान्त चूर्णमग्नितप्तं निषिंचेत् त्रैफले जले ॥
भृंगराजरसे पश्चात्कंटकारीरसे ततः
तैले तक्रे कुलत्थोत्थक्वाथे शोध्यं भिषग्वरैः ॥३३॥

मारणं—पलद्वादशकं कांत पलं हिंगूलमेव च ॥
दिनं समर्द्य कन्यादूभिस्ततो गजपुटे पचेत् ॥३४॥
एवं सप्तपुटा देया हिंगुलांतर्गता बुधैः ॥
पुनर्नवाद्रिकर्णी च भृंगराजोम्लपर्णिका ॥
मपुन्नाडो निशा दार्वी मूर्वा पाठा च पर्पटः ॥३५॥
देवदाली हंसपादी वंध्याकर्कोटकी तथा ॥
दुग्धिका द्रोणपुष्पी च गोजिव्हा जलपिप्पली ॥
प्रत्येकस्य पुटाःषट्स्युः कांतभस्म प्रजायते ॥३६॥

गुणाः—ग्रहणीमतिसारं च यकृत् पांडु च कामलां ॥
वातरोगास्तथा शूलं परिणामभवं जयेत् ॥३७॥
कासं श्वासं वमिं पित्तं प्रतिश्यायं भगंदरं ॥
अर्शःकुष्ठशिरोरोगान् प्लीहमेदोहरं परं ॥३८॥

टिप्पणी—अद्रिकर्णी श्वेतापराजिता गरणोलि ॥ अम्लपर्णी आंबेटी खाटी लुणी ॥ प्रपुन्नाड कुवाडीयो । हंसपादी हंसराजः । द्रोणपुष्पी कुबो । जलपिप्पली रतवेलियो ॥

कान्तलोह भस्म (आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः ३)

लक्षणम्—यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलबिन्दुः प्रतप्ते ।
हिंगुर्गन्धं त्यजति च निजं तिक्ततां निम्बकल्कः ॥३९॥
तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमौ ।
कृष्णांगः स्यात् सजलचणकः कांतलोहं तदुक्तं ॥४०॥
जीर्णशस्त्रादि खंडा वा पुराणयंत्रखंडकाः ।
तीक्ष्णजास्ते हि गृह्णन्ति मारणार्थं भिषग्वराः ॥४१॥
शाणोद्भ्रान्त लोहचूर्णं गृहीतं चुम्बकाश्मना ।
शस्त्रकृत्लोहकाराणां गृहे तद् बहुलं भवेत् ॥४२॥
तच्चूर्णं तु समानीय सुधौतं निर्मलं शुचि ।
युक्त्या संशोध्य शास्त्रोक्तविधिना तत्तु मारयेत् ॥४३॥

शोधनम्—अग्निरक्तेन संक्षिप्तं किंवार्कपयसायसं ॥
दलं हुताशने ध्मातं सिक्तं त्रैफलवारिणि ॥४४॥
त्रिशः कान्तस्य संशुद्धिरित्येवं परमा भवेत् ।
सर्वाभावे निषेक्तव्यं क्षीरतैलाज्यगोजले ।
शुद्धस्य शोधनं ह्येतद् गुणाधिक्याय संमतं ॥४५॥

मारणम्—संशुद्धं लोहचूर्णं तु समानीय भिषग्वरः ।
संमर्दयेद् दिनं चैकमामतिन्दुकजै रसैः ॥४६॥
त्रिफला भृंगराजस्य कण्टकारीरसस्य च ॥
पुटानि त्रीणि दत्तानि सत्यं वारितरं भवेत् ॥४७॥

कासीसं भस्म (रसोद्धार तन्त्र)

कासीसं पुष्पसंज्ञं च नेत्रास्यगदनाशनं ॥
व्रणश्लेष्मविषघ्नं च केशरंजनकारकं ॥४८॥

भावितं भृंगराजेन कासीसं शुद्धिमाप्नुयात ॥
पलषोडशमानं तत त्रिफलातोयमर्दितं ॥४९॥
पक्वं गजपुटे पश्चाद् भृंगराजरसैस्त्रिधा ॥
कुमारिका रसैर्घृष्ट्वा वाराहपुटपाचितं ॥५०॥
सिद्धं गुंजात्रयं प्लीहगुदामयहरं परम् ॥
पांडौ गुल्मे मूत्रकृच्छ्रे देयं च मधुसर्पिषा ॥५१॥

कासीस गोदंती भस्म– (रसोद्धार तंत्र)

कासीसं षोडश पलं भृंगराज रसप्लुतं ।
गोदंती हरितालं च तावद् ग्राह्यं सुपाचितं ॥५२॥
द्वौ संमिश्र्य हरीतक्याः क्वाथैः संमर्दयेद् दिनं ।
वाराहपुटपक्वं तत् कन्याद्रावैः पुटत्रयं ॥५३॥
पुटैकमश्वगंधाया: सिद्धं क्षौद्राद्रंसंयुतं ।
चतुर्गुंजामितं दद्यात् श्वासे कासे हृदामये ।
पांडौ शूलेतिसारे च दद्यात् छर्दिगदेनिले ॥५४॥

कुक्कुटांडत्वक् भस्म (रसोद्धार तंत्र)

कुक्कुटांडत्वचश्चूर्णं मर्द्य निम्बूकवारिणा ।
वाराहपुटपक्व तत् पुनः कंन्याद्रवैः पुटेत् ॥५५॥
ततः शतावरीक्वाथे मर्द्य पाच्यं पुनः पुन ।
देय त्रिरक्तिकामात्रं मधुनार्द्ररसेन च ॥
कासश्वासकफाध्मानछर्दिहिक्कामदोषहृत् ॥५६॥

कांस्य भस्म (रसरत्न समुच्चयः अध्यायः ५)

निर्माण विधिः–अष्टभागेन ताम्रेण द्विभागखुरेकणं च ॥
विद्रुतेन भवेत्कांस्यं तत्सौराष्ट्रभव शुभ ॥५७॥

तीक्ष्णशब्दं मृदु स्निग्धमच्छं श्यामलं शुभ्रकं ॥
निर्मलं दाहरक्तं च पेढा कांस्यं प्रशस्यते ॥५८॥
घृतमेकं विना चान्यत् सर्वं कांस्य गतं नृणां
शुक्रमारोग्य सुखदं हितं साम्यकरं तथा ॥५९॥

गुणः—कांस्यं लघु च तिक्तोष्णं लेखनं दृक्प्रसादनं ॥
कृमिकुष्ठहरं वातपित्तघ्नं दीपनं हितं ॥६०॥

शोधन मारण—तप्तं कांस्यं गवां मूत्रे वापितं परिशुद्धयति ॥
म्रियते गंधतालाभ्यां निरुत्थं पंचभिः पुटैः ॥६१॥
त्रिक्षारं पंचलवण सप्तधाम्लेन भावयेत् ॥
रुध्वा गजपुटे पक्वं शुद्धभस्मत्वमाप्नुयात् ॥६२॥

खर्पर भस्म (रसोद्धार तन्त्र)

खर्परो वीजपूरस्य रसे अंभस्य प्रज्जितः
अम्लतक्रेथ संतप्तत्रिवेलं परिशुध्यति ॥६३॥
रसको नरमूत्रेषु स्थितो मासं च रंजयेत्
ताम्रं च पारदं तारं स्वर्णवर्णं ध्रुवं भवेत् ॥६४॥
रसकं कदलीकन्द कुमार्यर्जुनवारिणा ॥
पक्वं भस्म भवेत् शुद्धं दद्याद् गुंजाचतुष्टयम् ॥६५॥
चक्षुष्यं कफपित्तघ्नं शिरोनेत्रगदापहं ॥
शिवाचूर्णेन मधुना दद्याद् वा नवनीततः ॥६६॥

गोदंती भस्म (रसोद्धार तन्त्र)

गोदंती द्विविधा प्रोक्ता मृद्वी च कठोनापरा ।
लध्वग्निसहना मृद्वी तीव्राग्निसहनापरा ॥६७॥
चूर्णीकृतारनालेन जम्भांभसा पचेद् दिनम् ।
पश्चाद्वटजटामुस्ताक्वाथैर्गजपुटे पचेत् ॥६८॥

चतुर्गुंजामितं दद्यात् वातपित्तकफामये ।
प्रमेहे मदरे कासे श्वासे गुल्मे गुणप्रदम् ॥६९॥

गोमेद भस्म (रसोद्धार तंत्र)

गौमूत्रसमवर्णं स्यात् स्वच्छं स्निग्धं च निर्दलं ॥
निंबूरसे दिनं पिष्टं निशाक्वाथे कटाहके ॥७०॥
पक्वं पश्चाद् दिन घृष्ट मुस्तया भस्म जायते ॥
वज्रं विहाय रत्नानि पिष्टिरूपाणि सर्वशः ॥७१॥
रोगे रसायने युंजूयात् न पुटे पाचयेत् क्वचित् ॥
गुणहीनानि पक्वानि स्युर्वै गजपुटादिषु ॥७२॥
हृद्रोगश्वासकासघ्नं स्मृति मेधामतिप्रदं
वातपित्तकफोद्रेकान् रोगान्प्रशमयेदिदं ॥७३॥

चतुर्वंग भस्म (रसोद्धार तंत्र)

यशद पारदं नागं वंगं सर्वं समं भवेत् ।
वह्निना गालयेन्नागं तत्र वंगं विनिक्षिपेत् ॥७४॥
रसरूपं यदा जातं यशद तत्र दापयेत् ।
पारदं प्रक्षिपेत्पश्चात् निंबदंडेन चालयेत् ॥७५॥
मधूकस्याथ चिंचायाः त्वचाचूर्णं मुहुः क्षिपेत् ।
यावत्सर्वं भवेद् भस्म कृष्णाभमवतारयेत् ॥७६॥
पिष्टं कन्यारसैः कुर्यात् चक्रिकाः शोषयेत् ततः ।
पक्वं गजपुटे पश्चात् क्वाथे वटजटोद्भवे ॥७७॥
चतुर्वंगं भवेत्सिद्धं गजाख्यदशभिः पुटैः ॥
गुंजाद्वयं समधुना सर्पिषा पयसाथवा ॥७८॥
प्रमेहं प्रदरं वातं मधुमेहं प्रणाशयेत् ॥
कुष्ठकृमिहरं शक्तिप्रदं संधिरुजापहम् ॥७९॥

जहरमोहरा पिष्टिः (रसोद्धार तंत्र)

युनानी वैद्यके मोक्तं द्रव्यं जहरमोहरा ॥
रक्तपित्ततृषादाह दुर्नाम शमनी मता ॥८०॥
वर्गे चोपरसे मोक्ता चूर्णीकृत्यार्जुनत्वचः ।
क्वाथे वटजटायाश्च केतकीपुष्पवारिणा ॥८१॥
भावयित्वा भृशं घृष्टा मतिद्रव्य दिन दिनं ;
त्रिगुंजामात्रया क्षौद्रैः दत्ता पिष्टिर्गुणप्रदा ॥८२॥

जहरमोहरा भस्म (रसोद्धार तत्रं)

पिष्टिरूपेण वहुधा देया जहरमोहरा ॥
भस्मनास्या गुणाः प्रायो हीनाः स्युः परिवर्तिताः ॥८३॥
अर्जुनस्य त्वचाक्वाथैस्तथा वटजटांकुरैः ॥
वाराहपुटपक्वेयं मंजिष्ठायाश्च वारिणि ॥८४॥
सिद्धं भस्म भवेन्मात्रा द्विरक्तिपरिमाणतः ॥
श्वासहृद्रोगकासघ्नी रक्तपित्तार्शसां हिता ॥८५॥

ताम्र भस्म (रस रत्नाकरः पार्वतीपुत्र नित्यनाथसिद्ध उपदेशः ८)

नागेन स्वर्णं रजतं च ताप्ये
गंधेन ताम्रं शिलया च नागं ।
तालेन वंगं त्रिविधे तु लोहे
नारीपयो हंति च हिंगुलेन ॥८६॥

शोधनं— अशुद्धं ताम्रमायुघ्नं कांतिघ्नं सप्तधातुहा ।
वांति मूर्च्छाभ्रमोद्वेगकृदपक्वं च शूलकृत् ॥८७॥
स्नुह्यर्कक्षीरलवणकांजिकैस्ताम्रपत्रकं ।
क्षिप्त्वा प्रताप्य निर्गुंडी रसैः सिंचयात् पुनः पुनः ॥८८॥

जपाकुसुमसंकाशं स्निग्धं मृदुघनक्षमं ।
लोहनागोद्गितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥८९॥
वारान् द्वादश तं शुद्धं लेपात्तापाच्च सिंचनात ।
खटिकालवणैस्तक्रैरारनालैश्च पेषयेत् ॥९०॥
षड्वारमम्लतक्रांतर्निर्गुन्डयाश्च विशुद्धये ॥
शुध्यंति नात्र संदेहो मारणं च अथोच्यते ॥९१॥
मारणं– गंधेन ताम्रतुल्येन ह्यम्लपिष्टेन लेपयेत् ॥
कंटवेधीकृतं पत्र धमयित्वा पुटे पचेत् ॥९२॥
उद्धृत्य चूर्णयेत्तस्मिन् पादांशं गन्धकं क्षिपेत् ॥
जंबीरैरारनालैर्वा मृगदूर्वोत्थितैर्द्रवैः ॥९३॥
पिष्ट्वा पिष्ट्वा पचेद् रुद्धं सगंधं च चतुःपुटैः।
मातुलिंगरसैः पिष्ट्वा पुटमेकं प्रदापयेत् ॥
समशर्करया चैकपुटो देयो मृतं भवेत् ॥९४॥
अनुभवः–पाषाणभिच्याम्लपर्णी कुष्ठं शिखिशिखा शिवा ॥
प्रत्येकेन पुटो देयो प्रतैकं वा यथारुचि ॥९५॥
पश्चात् सूरणकन्देन गोलकं प्रणिधाय च ॥
पाच्यं गजपुटे गोलं मृत्तिका वस्त्रवेष्टितं ॥९६॥
गुणः–ताम्रं तिक्ताम्लमधुरं कषायं शीतलं सरं ।
कफं पित्तं क्षयं पांडुं शमयेच्च रसायन ॥
परिणाम शूलमर्शांसि मंदाग्निं च विनाशयेत् ॥९७॥(र. तं.)

तुत्थ भस्म (रसोद्धार तंत्र)

कापोता विट् दशांशा स्यात् टंकणं च दशांशकं ॥
मर्द्यं निम्बूकजद्रावे वाराहे च पुटे पचेत् ॥९८॥

घृतैः शर्करया दध्ना दद्यात् च मधुना पुटं ॥
प्रतिवेकं चतुर्थांशं टंकणं मक्षिपेद् भिषक् ॥९९॥
कांतिभ्रान्तिहरं श्रेष्ठं निरुत्थं भस्म जायते ॥
तुल्यं लघुकषायं च चक्षुष्यं भेदि छेखनं ॥
कुष्ठकं हृक्रृपिघ्नं च पित्तमेदोविनाशनम् ॥१००॥

त्रिवंग भस्म (रसोद्धार तंत्र)

नागं वंगं च यशदं समभागेन कल्पयेत् ॥
कटाहे द्रावयित्वाथ आढरुषस्य दंडतः ॥१०१॥
अश्वत्थस्य त्वचाचूर्णं मक्षिपेच्च मुहुर्मुहुः ।
चालयेत् सततं क्षेपः कृष्णं चूर्णं भवेच्छुभम् ॥१०२॥
कुमार्याश्च रुदन्त्याश्च रसेन चक्रिकाः कृताः ।
शुष्का गजपुटे पक्त्वा पीताभं भस्म जायते ॥१०३॥
प्रमेहं प्रदरं सोमरोगं पित्तं कफं कृमीन् ।
शमयेन्मधुमेहं च हृद्यं बल्यं रसायनम् ॥१०४॥
रक्तित्रयं समधुना नवनीतेन दापयेत् ॥ ।
नानानुपानयोगेन योगवाहि गुणावहम् ॥१०५॥

तृणकांतमणि पिष्टिः—भस्म रसोद्धार तंत्र

पिष्टिः तृणकांतमणिः शुद्धः स्वभावेनैव विद्यते ॥
श्वेतापराजितामूलक्वाथैश्चूर्णीकृतश्च सः ॥१०६॥
घृष्टो दिनं च जंबीररसेनाश्वत्थजत्वचा ॥
शतावरीरसैर्मर्द्यं पिष्टिः स्याद् रोगनाशनी ॥१०७॥
भस्म पुनर्नवायाः पंचांगरसात्पिष्टिं च मर्दयेत् ॥
अधोपुष्पीरसैः पश्चाद् जनस्य त्वचारसैः ॥१०८॥

कुक्कुटाख्यपुटो देयो घृष्ट्वा रोगेषु दापयेत् ।
गलग्रह गलग्रन्थि वातपित्तकफोद्भवा ॥
द्विगुणममृतासत्वैः षड्गुणमधुसर्पिषा ॥१०९॥

नाग भस्म (रसरत्नाकर नित्यनाथ सिद्ध उपदेश ८)

पाकहीनौ नागवंगौ कुष्ठ गुल्म रुजाकरौ ।
पांडुमेह शूल वातकफशोफोदरादिकृत् ॥११०॥

शोधन निर्गुंडी मूलचूर्णेन अर्कदुग्धेन लेपयेत्
नागपत्रं तु तत् शुष्कं तापयित्वा निषेचयेत ॥१११॥
निर्गुंडीद्रवमध्ये तु ततः पत्रं च कारयेत् ।
लिप्त्वा द्रव्य पुनः सेच्य सप्तवारं विशुद्धये ॥११२॥

मारण चिंचाश्वत्थत्वचो भस्म नागस्य चतुरंशतः ।
क्षिप्त्वा चुल्यां पचेत्पात्रे चालयेल्लोहदंडकात् ॥११३॥
यावद् भस्म तदुद्धृत्य भस्मतुल्या मनःशिला ।
जम्बीरैर्वारिनालैश्च पिष्ट्वा रुध्वा पुटे पचेत् ॥११४॥
स्वांगशीतं पुनः पिष्ट्वा विंशत्यंशं शिलाम्लिके ।
एवं विंशपुटैः पक्वं नागं स्यात्तु निरुत्थकं ॥११५॥

नीलम पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तन्त्र)

गुणाः इन्द्रनील वारिनील श्वेतगर्भमपि क्वचित् ।
वारिनील हीनगुणमोषधेषूपयुज्यते ॥११६॥
तेजोमयं कृष्णगर्भं स्निग्धं स्वच्छं च मध्यतः ।
उत्तमं नीलमेतत्स्याल्लघुभारं च चिप्पटम् ॥११७॥
सूक्ष्माभिः कणिकाभिश्च स्मृतं हीनगुणं बुधैः ।
व्यवहार्यं भवेत्सर्वं रोगवारणकर्मणि ॥११८॥

वाते पित्ते कफे श्वासे दौर्बल्ये हृदयस्य च ॥
हृच्छूले रक्तपित्ते च दाहे शोषे गुणावहम् ॥११९॥
व्यवहार्या पिष्टिरेव हीनं स्याद् वह्निपाचितम् ।
वज्रं विहाय सर्वेषु रत्नेषु निश्चयस्त्वयम् ॥१२०॥

पिष्टिः सर्वेषु रसशास्त्रेषु गुणाः शनैः प्रकाशिता ॥
भस्म पिष्टिर्न कुत्रापि रसशास्त्रेस्य दृश्यते ॥१२१॥
अस्माभिरनुभूत्यात्र भिषक् हिताय दीयते ॥
व्यवहार्या पिष्टिरेव कार्यं भस्म न रत्नजम् ॥१२२॥
गुणाधिका भस्मतश्च पिष्टिः सर्वत्र युज्यते ॥
पिष्ट्वा सम्यक् चेन्द्रनीलं द्रोणपुष्पीरसैर्दिनम् ॥१२३॥
दिनं कुमारिकाद्रावैः केतकीकुसुमैर्दिनम् ॥
शतपत्रीभवैः पुष्पैः शतावर्या रसैर्दिनम् ॥१२४॥
संमर्द्य विधिवत् सिद्धा पिष्टिर्नीलमरत्नजा ॥
रक्तपित्तं कफं कासं श्वासं हृच्छूलमुत्कटम् ॥१२५॥
वातपित्तकफोद्भूतान् शमयेद् बहुलान् गदान् ।
यस्या रसायनी वृष्या मेधास्मृतिमतिप्रदा ॥१२६॥

भस्म-मर्दितं चक्रिकां कृत्वा रंभापत्रैश्च वेष्टयेत् ।
वस्त्रमृत्तिकयावेष्ट्य शुष्कं गोधूमकोष्ठके ॥१२७॥
धार्यं दशदिनं यावत् ततो निष्कास्य पाचयेत् ॥
कटाहे वालुकापूर्णे गोलं तत्र निवेशयेत् ॥१२८॥
दद्याद् यामाष्टकं वह्निं स्वांगशीतं च मर्दयेत् ।
इन्द्रनीलभवं भस्म द्विगुंजं मधुसर्पिषा ॥
विषघ्नं वृष्यमायुष्यं दोषत्रिकनिवारणम् ॥१२९॥

पन्ना पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तंत्र)

गारुत्मतं हरिद्वर्णं तार्क्ष्यं मरकतं गुरु ।
पन्नाख्यं मसृणं स्निग्धं रश्मिवद्भासुरं शुभं ॥१३०॥
चिपिटं कर्कशं नीलं कपिलं पांडु लाघवम् ।
कृष्णाभं सेवनानर्हं गुणहीनं तदुच्यते ॥१३१॥
तार्क्ष्यं च मधुरं शीतमम्लपित्तहरं गुरु ।
जीर्णज्वराग्निमांद्यामवात श्वास विषापहम् ॥
पांडुदुर्नामशोफघ्नमायुष्यं बृंहणं स्मृतं ॥१३२॥
रसग्रन्थेषु पन्नाया भस्म पिष्टिश्च नोदिता ॥
परं प्रयुज्यते वैद्यैः क्वचिद्गुणेष्वतो मया ॥
उच्यतेऽनुभवेनैव रसोद्धाराख्यतंत्रके ॥१३३॥

पिष्टिः तार्क्ष्यं सुश्लक्ष्णं ग्राह्यं सूक्ष्मचूर्णीकृतं पुनः ।
सारिवा काकजंघाथ तिलपर्ण्यादिरूपकः ॥१३४॥
तत्तत्क्वाथे रसैर्मर्द्यं प्रत्यहं च पृथक् पृथक् ।
मर्द्यं च दिवसे रात्रौ खल्वे चन्द्रांशुसेवितं ॥१३५॥
पिष्टिर्मरकतस्येयं वृष्या बल्या रसायनी ॥
मधुना रक्तिका मात्रा दुग्धेन सर्पिषाथवा ॥
हृत्फुफ्फुस शिरोरोगे दद्यादायुष्यवर्धिनी ॥१३६॥

भस्म—कर्षाष्टकमिता पिष्टिर्गन्धकं तालकं तथा ।
चतुःकर्षमितं ग्राह्यं मर्दितं कन्यकारसैः ॥१३७॥
गोलकं कृत्वाश्वत्थपत्रैरावेष्ट्यातपशोषितं ।
कृत्वा मृत्कर्पटं सम्यक्पुनश्चातपशोषितं ॥१३८॥
पचेत्तद्वालुकायन्त्रे सततं प्रहराष्टकं ।
स्वांगशीतं समादाय खल्वे सूक्ष्मं विमर्दयेत् ॥१३९॥

श्वेतापराजिता मांसी रुदन्ती सारिवाजलैः ।
एकैका भावना देया सर्वरोगेषु दापयेत् ॥१४०॥
गुंजैकं चाष्टवर्गस्य चूर्णं द्वादशरक्तिकं ।
मधुहैयंगवीनाभ्यां दद्यान्नानानुपानतः ॥१४१॥
कृच्छ्रे विद्रधौ मेहे क्षयरोगे प्रयुज्यते ॥
जरामृत्युहरं वृष्यं वयःस्थैर्यकरं परम् ॥१४२॥

पित्तल भस्म (रस रत्न समुच्चय अध्यायः ५)

द्वयाख्या रीतिका काकतुंडी च द्विविधं पित्तकं भवेत् ।
गुणः संतप्ताकांजिके क्षिप्त्वा ताम्राभा रीतिका मता ॥१४३॥
एवं या जायते कृष्णा कांकतुडीति सा मता ॥
रीतिस्तिक्तरसा साक्षाज्जंतुघ्नी सास्रपित्तनुत् ॥१४४॥
कृमिकुष्ठहरा योगात् सोष्णवीर्या च शीतला ॥
काकतुंडी गतस्नेहा तिक्तोष्णा कफपित्तनुत् ॥१४५॥
यकृत्प्लीहहरा शीतवीर्या च परिकीर्तिता
शोधनं तप्त्वा क्षिप्त्वा च निर्गुंडी रसे श्यामारजोन्विते ॥१४६॥
पंचवारेण संशुद्धिं रीतिरायाति निश्चितं ॥
मारणं निम्बूरसशिलागंधवेष्टिता पुटिताष्टधा ॥१४७॥
रीतिरायाति भस्मत्वं ततो योज्या यथासुखं ॥
ताम्रवन्मारणं तस्याः कृत्वा सर्वत्र योजयेत् ॥१४८॥

पोखराज पिष्टिः (रसोद्धार तंत्र)

शास्त्रकारैर्गुणाः प्रोक्ता उत्तमाधमभेदतः ।
पुष्परागस्य भस्मार्थं पिष्टिरुक्ता न कुत्रचित् ॥
भिषक् हिताय चास्माभिः प्रोक्ता रोगानुवृत्तये ॥१४९॥
स्थूलं स्वच्छं गुरु स्निग्धं मसृणं कोमलं तथा ॥
उत्तमं पुष्परागं तत् निष्प्रभं श्यामकं तथा ॥१५०॥

तोयहीनं दोषयुक्तमं तत्प्रकीर्तितम् ॥
वातपित्तकफान्हन्ति कुष्ठोदरवमिं तथा ॥१५१॥
रक्तपित्ते तु मन्दाग्नौ मूत्रकृच्छ्रे गुणावहम् ॥
शोधनं नोपयुक्तं स्यात्पिष्टिर्नीलभवद् भवेत् ॥१५२॥
पाच्यते वालुकायंत्रे भस्माशा विद्यते यदि ॥
वाराहादिपुटैः पक्वं रत्नं हीनगुणं भवेत् ॥१५३॥

पोखराज भस्म (रसोद्धार तंत्र)

चूर्णीकृत पुष्परागं हरिद्रा त्रिफला रसैः ।
घृष्टं दिनत्रय यावद्गोलं रम्भादलैस्ततः ॥१५४॥
वेष्टयित्वा सूत्रबद्धं वस्त्रमृत्तिकया ततः ।
तप्तं सूर्यांशुभिः शुष्कं वालुकायंत्रग पचेत् ॥१५५॥
यामद्वादशपर्यन्तं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।
मर्दयेद्दिनमेकं च छिरक्तिमात्रया ततः ॥१५६॥
मधुना नवनीतेन घृतेन पयसाथवा ।
उक्तरोगेषु सर्वेषु सम्यगस्ति गुणावहम् ॥१५७॥

पंचलोह भस्म (रसोद्धार तंत्र)

व्याख्या-नागो वंगस्तथा लोहं कास्यं रीतिः समं समं ॥
स्यादुत्तमं पंचलोहं द्रावितं सर्वमेकतः ॥१५८॥
वर्तुलं वर्तलोहं च भर्तं पंचरसं तथा ।
पंचलोहस्य नामानि पात्राण्यारोग्यदानि वै ॥१५९॥
सर्वमेव पचेद् भांडे चाम्लद्रव्यविवर्जितम् ।
तत्पात्रे पाचितं भुक्तं शुभं तैलघृतादिकं ॥१६०॥
शोधनं-पत्तलीकृतपत्राणि तैले तक्रे च कांजिके ।
गोमूत्रे च कुलत्थानां कषाये च त्रिधा त्रिधा ॥१६१॥

प्रतप्तानि निषिंचेत यावच्चूर्णीभवन्त्यलं ।
शुद्धं भवेत् पंचलोहं पश्चात् भस्म समाचरेत् ॥१६२॥
संतप्तं चाश्वमूत्रेषु सप्तवारं निषेचयेत् ।
वर्तुलं शुद्धिमायाति भस्म योग्यं भवेद् ध्रुवम् ॥१६३॥
मारणं—भर्तचूर्णं वलान्यष्टौ पले गन्धकतालके ॥
अर्कक्षीरेण संपिष्ट पचेद् गजपुटाह्वये ॥१६४॥
अर्कक्षीरार्कपत्राणां रसेन निंबुकस्य च ।
कुमार्या वटशुंगानां मर्द्य गजपुटे पचेत् ।
भवेद् रोगहरं भस्म प्रत्येकस्य त्रिभिः पुटैः ॥१६५॥
गुणाः—वातपित्तकफोद्भूतान् दोषान्हृत्फुफ्फुसांत्रजान् ।
हन्त्युदावर्तमुत्क्लेशं छर्दिं क्रुमिरुजं तथा ॥१६६॥
मलशुद्धिकरं नेत्र्यं श्वासं कासं प्रमेहजित् ।
कुष्ठत्वचाविकारघ्नं कण्डूघ्नं रुचिवर्धनम् ॥१६७॥

प्रवाल पिष्टिः चन्द्रपुटो च (रसोद्धार तंत्रं)

विद्रुमस्य गुणाः प्रोक्ताः शास्त्रकारैर्भिषग्वरैः ।
न तद्भस्माथ पिष्टिश्च निर्दिष्टा कुत्रचित्क्वचित् ॥१६८॥
अस्माभिरनुभूत्यात्र दीयते वैद्यहेतवे ।
प्रवालं चूर्णयित्वाथ द्रोणपुष्पीरसान्वितं ॥१६९॥
शतावरी च मंजिष्ठा शतपत्रीप्रसूनकं ॥
प्रत्येकस्य रसैर्मर्द्य देयं दिनं यथाविधि ॥१७०॥
जलेन शतपत्र्याश्च पुष्पाणां मर्दयेद् दिनम्
प्रवालपिष्टिका सिद्धा शीतवीर्या गुणावहा ॥१७१॥
चतुर्गुंजा मिता मात्रा दद्याच्च मधुसर्पिषा
उरःक्षतं रक्तपित्तमर्शांस्युन्मादजान्गदान् ॥१७२॥
इमां चन्द्रपुटिं प्राहू रात्रौ चन्द्रांशुसेविताम् ॥
तथा सूर्यांशुभिः पिष्टिस्तां च सूर्यपुटिं विदुः ॥१७३॥

प्रवाल भस्म [रसोद्धार तंत्र]

उक्तपिष्टिं प्रवालस्य कन्यागर्भैश्च मर्दयेत् ॥
वटांकुररसैः पश्चात्पुटेद्वाराहजे पुटे ॥१७४
त्रिगुञ्ज मधुना दद्यात्कासश्वासकफामये ॥
उष्णवीर्यमिदं भस्म दद्यादुदरजे गदे ॥१७५

वंग भस्म (योग रत्नाकरे)

व्याख्या–खुरकं मिश्रकं चेति द्विविधं वंगमुच्यते ।
शोधनं खुरं तत्र गुणैः श्रेष्ठं मिश्रक न हितं मत ॥१७६॥
धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवं ॥
निःशब्दं खुरवंग स्यात् मिश्रकं श्यामशुभ्रकं ॥१७७॥
द्रावयित्वा निशायुक्ते क्षिप्तं निर्गुंडिकारसे ॥
विशुद्धयति त्रिवारेण खुरवंगं न संशयः ॥१७८॥
मारणं मृत्पात्रे द्राविते वंगे चिचाश्वत्थत्वचो रजः ।
क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा चतुर्थांशं लोहदर्व्या विचालयेत् ॥१७९॥
ततो द्वियाममात्रेण वंगभस्म प्रजायते ।
अथ भस्मसमं तालं क्षिप्त्वाम्लेन मर्दयेत् ॥१८०॥
ततो गजपुटे पक्त्वा पुनरम्लेन मर्दयेत् ॥
तालेन दशमांशेन याममेकं ततः पुटेत् ॥
एवं दशपुटैः पक्वं वंगं तु म्रियते ध्रुवं ॥ ८१॥

मयूर पिच्छा भस्म [रसोद्धार तंत्र]

शिखिपिच्छभवं भस्म कुत्रचिन्न च दृश्यते ।
भिषग्भिर्युज्यते यस्मादस्माभिस्तद्विधीयते ॥१८२॥
संग्राह्य शिखिपिच्छानि हण्डिकायां निवेशयेत् ।
पचेद्गजपुटे पश्चात्मस्य मात्रा च भस्मनः ॥१८३॥

पञ्चाङ्गमूलजैः क्वाथैः द्रोणपुष्पीरसैस्तथा ।
चक्रमर्द रसेनाथ घृष्ट्वा गजपुटे पचेत् ॥१८४॥
ताम्रगर्भं भस्म चैतद् विषं वातं क्षयं कफं ।
हृद्रोगं गुल्ममर्शांसि गलत्कुष्ठं च नाशयेत् ॥१८५॥

मल्ल भस्म [रसोद्धार तंत्र]

गौरीपाषाणजं भस्म विधिवन्नैव दृश्यन्ते ।
रसशास्त्रेषु कुत्रापि ततोऽत्रास्माभिरुच्यते ॥१८६॥
रोगप्रशमनार्थाय श्वेतः प्रोक्तो गुणावहः ।
चतुर्भागाथ गोदन्ती मल्लो भागैक एव च ॥१८७॥
मर्दयेद् दिनमेकं तत् पश्चाद्भस्म विधीयते ।
मेघनादरसैर्घृष्टः तण्डुलीयरसैस्तथा ॥१८८॥
अर्कदुग्धैः गवां मूत्रे ततो गोलं विधीयते ।
पत्रैरेरण्डजैर्वेष्ट्य सूत्रबंधं च कारयेत् ॥१८९॥
एकांगुलप्रमाणेन मृत्कर्पटं विधीयते ।
प्रवेश्य वालुकायंत्रे अग्निं दद्यात्क्रमेण च ।
यामषोडशकं यावत्स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥१९०॥
भस्मगोलं पृथक्कृत्वा दुग्धिका रसमर्दितं ।
पश्चात्सूर्यांशुना शुष्कं रक्तिकैका प्रदीयते ॥१९१॥
मधुना शृंगवेरेण दद्याच्च श्वासकासयोः ।
कफरोगेषु सर्वेषु ज्वरेषु विविधेषु च ॥१९२॥

माणिक्य पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तंत्र)

पिष्टिः रसशास्त्रेषु कुत्रापि पिष्टिर्माणिक्यभस्मच ।
दृश्यते न तथाप्यत्र व्यवहाराय दीयते ॥१९३॥

माणिक्यं पद्मरागाख्यं स्निग्धं स्वच्छं गुरु स्फुटं ॥
पद्मपुष्पप्रभं श्रेष्ठं रोगप्रशमनं परं ॥१९४॥
पिष्टीकृतं च माणिक्यं मेषशृंगीरसाप्लुतं ।
भृंगराजरसैर्घृष्टं रसैः शिखिशिखाभवैः ॥१९५॥
जलपिप्पलिकाद्रावैः प्रत्येकस्मिन्दिनं दिनं ।
पिष्टिरेषा भवेत्सिद्धा माणिक्यस्य गुणप्रदा ।
आयुष्या बृंहणी वृष्या कफवातहृदार्तिनुत् ॥१९६॥
पापरोगग्रहार्तिं च नाशयेद्योग्यमात्रया ॥

भस्म — द्रोणपुष्पी रसैः पिष्ट्वा सम्यग्गोलं विधाय च ॥१९७॥
वेष्टितं कदलीपत्रैर्मृत्कर्पटं विधाय च ॥
वालुकायंत्रमध्ये तत्पाच्यं द्वादशयामकं ॥१९८॥
स्वांगशीतं च निष्कास्य भस्म व्यवहरेद्भिषक् ॥
इदं किंचिदुष्णवीर्यं विशेषात्पिष्टिवद्गुणाः ॥१९९॥

माक्षिक सत्व भस्म [रसोद्धार तंत्र]

स्वर्णाख्यं माक्षिकं पिष्ट्वा समभागेन दापयेत् ।
गुंजा क्षौद्रं टंकणं च तैलमेरण्डजं तथा ॥२००॥
मर्दितं तस्य धापेन सत्वं माक्षिकजं भवेत् ।
तच्च चूर्णीकृतं तत्र समभागेन गन्धकं ॥२०१॥
मेषशृंगीद्रवैर्जम्बूरसेन परिमर्दयेत् ।
वन्ध्याकर्कोटकी मूलैर्हनि दद्याद्वराहजं ॥२०२॥
चतुःपंचपुटैर्भस्म भवेन्माक्षिकसत्वजं ॥
वृष्यं रसायनं बल्यं चक्षुष्यं पांडुमेहनुत् ॥२०३॥
कुष्ठं शोफं च दुर्नामरोगं सद्यो विनाशयेत् ॥
रक्तिकैकामितं दद्यात् सव्योषं मधुसर्पिषा ॥२०४॥

मुक्ता पिष्टिः (रसोद्धार तंत्र)

रसशास्त्रेषु सर्वेषु मुक्ता पिष्ट्याश्च भस्मनः ॥
विधिः कुत्रापि नैवोक्तःरस चास्माभिरिहोच्यते ॥२०५॥
मुक्ताचूर्णं विधायाथ रसैर्गांगेरुकोभवैः ॥
शतावरीरसैश्चाथ शतपत्रीप्रसूनजैः ॥२०६॥
प्रत्येकेन दिनं मर्द्य रात्रौ चन्द्रांशुधारितं ॥
मुक्तापिष्टिर्भवेत्सद्धा . द्वित्रिरक्तिकमात्रया ॥२०७॥
मधुना नवनीतेन सर्पिषा पयसाथवा ॥
दद्यान्मस्तिष्करोगेषु रक्तपित्तेश्च सा गदे ॥
शीतवीर्य गुणैर्युक्ता ग्रहदोषनिवारिणी ॥२०८॥

मुक्ता भस्म (रसोद्धातंत्र)

विल्वपत्ररसैर्मुक्तापिष्ट्या गोलं विधाय च ॥
विल्वपत्रैश्च संवेष्ट्य कुर्यान्मृत्कर्पटं ततः ॥२०९॥
शुष्कं तद्वालुकायंत्रे दशयामावधिः पचेत् ॥
स्वागशीतं च निष्कास्य घृष्ट्वा सम्यग्दिनावधि ॥२१०॥
द्विगुंजामितं दद्याद्वातपित्तकफामये ॥
भस्म किञ्चिचोष्णवीर्य हृद्रोगक्षयकासनुत् ॥२११॥

मुक्ताशुक्ति पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तंत्र)

व्याख्या—संक्षेपाद् रसशास्त्राणि मुक्ताशुक्तेर्गुणान् जगु ।

न तद्भस्मकृतिः कैश्चित् स्वस्वग्रन्थेषु वर्णिता ॥२१२॥
मुक्तावदेव तत्शुक्तिः प्रायः स्वल्पगुणा मता ।
न शुक्त भस्म मुक्तायास्तथा शुक्तेर्निबोधत ॥२१३॥
अस्मन्मते शुक्तिपिष्टिर्व्यवहार्या भिषग्वरैः ।
अथापि तत्कृतिं वच्मि शुक्तिभस्म प्रचारतः ॥२१४॥

शोधन–शुक्तयः खंडशः कृत्वा प्रक्षाल्य वारिणा ततः ॥
धूलिकंकरजान्तत्वान् निष्कास्य शुद्धिमाहरेत् ॥२१५॥
पिष्टि–पश्चात्सकुट्य संमर्द्य वस्त्रगालं च कारयेत् ।
अश्वत्थोदुंबरप्लक्षपलाशनिम्बुभावितम् ॥२१६॥
एकैक दिन पर्यन्तं शुष्कं सूर्यांशुना शुभं ॥
शुष्कं शुष्कं पुनर्मर्द्य वस्त्रपूतं ततः कुरु ॥२१७॥
चतुर्गुंजा मिता मात्रा तक्रेण मधुनाथवा ।
नवनीतमितायुक्ता वातंपित्तंकफं जयेत् ॥
रक्तपित्तं वमिं मेहं प्रदरं पित्तजान्गदान् ॥२१८॥
भस्म– शुक्ति पिष्टश्वार्जुनत्वक्शाल्मलिक्वाथमर्दिता ।
चक्रिकाः सूर्यतापेन शुष्का गजपुटे पचेत् ॥२१९॥
तथा पंचपुटाः देया खल्वे सम्यग् विमर्दयेत् ।
भावनात्रितयं पश्चात् जंबीरस्य रसेन वै ॥२२०॥
मात्राद्वित्रिचतुर्गुंजा तक्रेण मधुनाथवा ।
कासहृद्रोग शूलघ्नी गुल्मोदरकृमीन् जयेत् ॥
रुचिकृत्कफवातघ्नी किंचिदुष्णगुणा स्मृता ॥२२१॥

मंण्डूर भस्म (रसोद्धार तंत्र)

व्याख्या–पुराणं खनिजं किट्टं मंडूरं यंत्रकारजं ॥
शोधन–श्रोटिते रजतच्छायं रक्ताभं गुरु चोत्तमं ।
विधिवल्लोह किट्टस्य क्वापि भस्मकृतिर्नहि ॥२२२॥
चूर्णीकृत्य खरांगारैस्तप्तं क्षिपेच्च गोजले ॥
तक्राम्ले त्रिफला क्वाथे निम्बुनीरे क्षिपेद् बुधः ॥२२३॥
तेन किट्टेऽश्मसंयोगो नश्येत् शुद्धं भवत्यलं ॥
मारण–काकमाची शंखपुष्पी कुमारी त्रिफलानिशाः ॥२२४॥
प्रत्येकस्य रसैः क्वाथैर्घृष्ट्वा गजपुटे पचेत् ॥

पंचामृतैस्ततः पक्वं मण्डूरमुत्तमं भवेत् ॥२२५॥
बालपुष्टिकरं पांडु कामलां श्वयथुं जयेत् ॥
शीतवीर्यं रुचिकरं यकृत्प्लीहोदरापहं ॥२२६॥

मृगशृंग भस्म (रसोद्धार तंत्र) सावरसिंग भस्म

अटन्त्यरण्यमध्ये ये हरिणीभिर्युता मृगाः ।
तत् शृंगाणि न योग्यानि चिकित्साभस्मकर्मणि ॥२२७॥
महान्तश्च बृहत्काया मृगा ये वनचारिणः ।
वृषभाभा महत्शृंगास्तेषां शृंगाणि गृह्यतां ॥२२८॥
हस्तिदंतसमानि स्युः श्वेतगर्भाणि चूडिकाः ।
क्रियन्ते शुभकार्येषु बालिका धारयन्ति च ॥२२९॥
लोके सेमर सिंगं च कथ्यते तद् गुणप्रदम् ।
बहुशाखायुतं शृंगमग्नौ क्षिप्तं दहत्यलम् ॥२३०॥
त्रिनाश्रमं भवेच्चूर्णं कृष्णाभं श्वेतमिश्रितं ।
संकुट्य निम्बुकद्रावैश्चक्रिका धर्मशोषिताः ॥२३१॥
पश्चाद् गजपुटे पक्त्वा श्वेतं भस्म भवेद् ध्रुवं ।
वरुणस्याथ चेंगुर्या अगस्त्यस्य रसप्लुतं ॥२३२॥
पुनर्गजपुटे पक्वं श्वेतं भस्म प्रजायते ॥
श्वासे कासे क्षये शूले हृद्रोगे कफजे गदे ॥२३३॥
आमवाते उरुस्तम्भे दीयते चोदरे गदे ॥

यशद भस्म (रसोद्धार तंत्र)

रसशास्त्रेषु मुख्यं हि गणना सप्तधातुषु ।
नभस्मादिकृतिः क्वापि यशदस्यहि विद्यते ॥२३४॥
चित्रमेतद् भिषक् चित्तमस्माभिः कृतिरुच्यते ।

यम्रदं शुद्धमायाति विदेशात् पट्टटिकाप्रभं ॥२३५॥
कटाहे लोहजे क्षिप्य चुल्यामग्नौ प्रतापयेत् ॥
गलितं निम्बकाष्ठेन चालयेत् तत्र च क्षिपेत् ॥२३६॥
अपामार्गस्य पंचांगं चिंचायाश्च त्वचारजः ॥
यावद्वाभ्यां भवेद् भस्म प्रक्षेपेण मुहुर्मुहुः ॥२३७॥
कृष्णाभ्रं निम्बुकद्रावैश्चक्रिकाः सूर्यतापिताः ॥
वाराहार्धपुटे पक्वाः पुनर्वटजटांकुरैः ॥२३८॥
अर्जुनस्य त्वचाक्वाथैः स्याद् भस्म-चोत्तमं गुणैः
त्रिगुंजामात्रया दत्तं मधुना पयसाथवा ॥२३९॥
शीतलं कफपित्तघ्नं मूत्रदोषहरं परं ।
शिरोरोगं तथोन्मादं मुखनेत्रगदापहं ।
तृषादाहादिकाः पित्तभवा रोगाः शमं ययुः ॥२४०॥

रजत भस्म (रौप्य भस्म) आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः ३)

व्याख्या—रूप्यं शीतं कषायाम्लं स्वादुपाकरसं सरं ॥२४१॥
गुणाः—वयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वातपित्तजित् ॥२४२॥
प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद् ध्रुवं ॥
गुटिकास्य धृता वक्त्रे तृष्णा शोष विनाशिनी ॥२४३॥
शोधनं तैलतक्रादिशुद्धस्य रजतस्य विशेषतः ॥
शोधनं मुनिभिः प्रोक्तं तद् यथावन्निगद्यते ॥२४४॥
सूक्ष्मपत्रीकृतं रूप्यं प्रतप्तं जातवेदसि ॥
निर्वापितमगस्त्यस्य रसे वारत्रयं शुचि ॥२४५॥
विधाय पिष्टिं सूतेन रजतस्याथ मेलयेत ॥
मारणं—तालं गन्धं समं शुद्धं तन्मर्द्यं निम्बुकद्रवैः ॥२४६॥
गोलकीकृत्य संशुद्धं मूषायां स्वर्णवद् दृढं ॥
त्रिभिः पुटैर्भवेद् भस्म योज्यमेतद् रसादिषु ॥२४७॥

मारणं–तारपत्रं तुर्यभागं भागैकं शुद्धतालकं ॥
एतज्जंबीरजद्रावैः कल्कीकृत्याखिलं भिषक् ॥२४८॥
तेन तारस्य पत्राणि लेपयेत् शोषयेत्ततः ॥
शरावसंपुटे तेषामूर्ध्वाधो गन्धकं क्षिपेत् ॥२४९॥
तारतुल्यं ततस्तानि रुद्ध्वा गजपुटेपचेत् ॥
त्रिंशदुत्पलकैर्वापि विंशद्भिस्तारपंचता ॥२५०॥

लोह भस्म (रसोद्धार तंत्र)

शोधनं–शशरक्तेन लिप्तं हि सप्तवारेण तापितं ।
कान्तादिसर्वलोहं हि शुद्ध्यत्येव न संशयः ॥२५१॥
सामुद्रलवणैस्तद्वत् लेपितं त्रिफलाजले ।
निर्वापितं भवेत् शुद्धं सत्यं गुरुवचो यथा ॥२५२॥
मारण–लोहचूर्णं पलद्वन्द्वं शुद्धगंधो समांशकौ ।
खल्वे विमर्द्य नितरां पुटेद् विंशतिवारकं ॥२५३॥
पेषणं तु प्रकर्तव्यं पुटात् पश्चात् प्रदीयते ।
अनेन विधिना सम्यक् भस्मीभवति निश्चितं ॥२४५॥
सर्वरोगान्निहन्त्येव नात्र कार्या विचारणा ॥
श्वेता पुनर्नवापत्रतोयेन दशसंख्यकाः ॥
पुटास्तत्र प्रदेयाश्च सिन्दूराभं प्रजायते ॥२५५॥

लोहाभ्र भस्म (रसोद्धार तंत्र)

समभागं भिषक् कुर्यात् लोहं निश्चन्द्रमभ्रकं ।
द्रवैः कुमारिकायाश्च घृष्टमर्जुनपिप्पलैः ॥२५६॥
प्रत्येकस्य रसैः क्वाथैर्घृष्ट्वा गजपुटे पचेत् ॥
एकविंशपुटैः पक्वं भस्म जंबूफलद्रवैः ॥२५७॥
वल्यमायुष्यमारोग्यप्रदं मेध्यं रसायनं ।

वलीपलितहृद् हृद्यं हृत्फुफ्फुस बलावहं ॥२५८॥
चतुर्गुंजमितं खादेत् नित्यं च मधुसर्पिषा ।

वराटिका भस्म [रसोद्धार तंत्रं]

वराटिकागुणाः प्रोक्ता रसशास्त्रे न शोधनं ।
मारणस्य कृतिर्नोक्ता तदस्माभिर्निरूप्यते ॥२५९॥
श्वेता पीता द्विभेदेयं पीताधिकगुणप्रदा ।
वराटाः खण्डशः कृत्वा निष्कास्या धूलिकंकराः ॥२६०॥
प्रक्षाल्य वारिणा पश्चात्सूक्ष्मचूर्णीकृतास्ततः ।
निंबूकवारिणा पिष्ट्वा दिनैकं दृढदंडतः ॥२६१॥
चक्रिका द्विपलोन्माना शुष्काः सूर्यांशुना च ताः ।
पश्चाद् गजपुटे पक्त्वा स्वांगशीताः समाहरेत् ॥२६२॥
ततश्चिंचात्वचा क्वाथैरुदुंबरत्वचाभवैः ।
हरिद्रावारिणा पश्चात् पुटेद् गजपुटे पृथक् ॥२६३॥
भावना निंबूकद्रावैः त्रिवेलं दापयेद् भिषक् ।
चतुर्गुंजामिता मात्रा दद्यात् च मधुसर्पिषा ॥२६४॥
उष्णवीर्या वराटीयं ग्रहणीकफवातहृत् ।
दीपनी पाचनी तक्रैः दद्यात् तुलसीजैः रसैः ॥२६५॥

वज्र भस्म (आयुर्वेद प्रकाशेऽध्याय ५)

शोधनं—गृहीत्वा हि शुभं वज्रं व्याघ्रीकन्दे विनिक्षिपेत् ॥
माहिषीविष्ठया लिप्त्वा करीषाग्नौ विपाचयेत् ॥२६६॥
त्रियामं वा चतुर्यामं यामिन्यन्तेऽश्वमूत्रके ॥
सेचयेत् पाचयेदेवं सप्तरात्रेण शुद्धयति ॥२६७॥
भस्म—त्रिसप्तवारं संतप्तं खरमूत्रेण सेचितं ॥
मत्कुणैस्तालकं पिष्ट्वा तद्गोले कुलिशं क्षिपेत् ॥२६८॥

मध्यमावं वाजिमूत्रेण सिक्तं पूर्वक्रमेण च ॥
भस्मीभवति तद् वज्रं शंखशीतांशु सुन्दरम् ॥२६९॥
वज्रं च षड्रसोपेतं सर्वरोगापहारकम् ।
सर्वाघशमनं सौख्यदाढ्यकारि रसायनम् ॥२७०॥
वज्रं समीरकफपित्तगदान्निहन्यात् ।
वज्रोपमं च कुरुते वपुरुत्तमश्रि ॥२७१॥
शोपक्षयभ्रम भगन्दरमेहमेदो ।
पाण्डूदरश्वयथुहारि रसायनं च ॥२७२॥

वैक्रान्त भस्म (रसोद्धार तंत्र)

श्वेतः कृष्णस्तथा रक्तःपीतोथ मिश्ररंगकः ।
षट्कोणो वाष्टकोणः स्यात् मसृणो गुरुतायुतः ॥२७३॥
निर्मलः सिद्धिदः स्वर्ण रौप्यादिकरणे शुभः ।
तप्तस्तप्तो हि वैक्रान्तो ध्मातः सिक्तोश्वमूत्रके ।२७४॥
शुध्यति म्रियते गंधनिबुकद्रवमर्दितः ।
सम्यगष्टपुटैः सिद्धो वज्रस्थाने नियोजयेत् ॥२७५॥
वज्रवद् गुणदश्चायं देहसिद्धिकरः परः ।
मेहकुष्ठक्षयश्वासकास जीर्णज्वरापहः ॥२७६॥

वैडूर्य पिष्टिः भस्म [रसोद्धार तंत्र]

पिष्टिः वैडूर्यस्य गुणाः शास्त्रे प्रोक्ता शोभन मारणे ।
नोक्ते क्वापि ततोस्माभिः कथ्यतेनुभवेन च ॥२७७॥
शुभ्रं गुरु समं स्वच्छं श्यामाभं शस्यते बुधैः ।
यज्ञोपवीतवद्रेखास्तिस्रस्तत् शोभनं विदुः ॥२७८॥
मार्जाराक्षिसमापि गच्छवि वै वर्जितं ।
चिप्पटं कर्कशं श्यामतोयच्छवि च दृश्यते ॥२७९॥

रक्तरेखागर्भमेतद् गुणैर्हीनं प्रकीर्तितं ।
तप्तमग्नौ धिल्वतोये सेचितं सप्तवारकं ॥२८०॥
शुद्धं चूर्णीकृतं पश्चात तोये शिखिशिखाभवे ।
जटामांसी कषायेथ पद्मकंदरसे ततः ॥२८१॥
कदलीकंदतोयेथ रुदन्तीक्षुपजे रसे ।
प्रत्येकस्मिन् दिनं मर्द्यं वैडूर्यं पिष्टिका भवेत् ॥२८२॥
देया द्विगुंजिका मात्रा नवनीतसितायुता ।
रक्तपित्ततृषा दाहे सर्वपित्तगदेषु च ।
वृष्यं रसायनं बल्यमायुष्यवर्धनं परं ॥२८३॥
भस्म द्रोणपुष्पी रसैर्घृष्टा प्रोक्ता वैडुर्यपिष्टिका ।
गोलं रंभादलैर्वेष्ट्य कृत्वा मृत्कर्पटं शुभं ॥२८४॥
शुष्कं तद् वालुकायंत्रे सततं प्रहराष्टकं ।
स्वांगशीतं समुद्धृत्य मर्दयेदंजनोपमम् ॥२८५॥
किंचिदुष्णगुणं चैतत्कासश्वासकफापहं ।
वातं पित्तं हरेन्नानानुपानात् सर्वरोगहृत् ॥२८६॥

शुक्ति भस्म (रसोद्धार तंत्र)

प्रोक्ता मुक्ता शुक्तिकाथ तत्रोक्ता भस्मनः कृतिः ।
सा एवेयं शुक्तिपिष्टिः शुक्तिभस्म तदेव हि ॥२८७॥
क्रियया च गुणैरेतद् भिद्यते नेति निश्चितं ॥
भिन्नभस्मकृतिश्चास्या नोक्ता चेति विदांकुरु ॥२८८॥

शंखभस्म (रसोद्धार तंत्र)

प्राचिन कविभिः क्वापि शंखभूतिश्च नोदिता ।
सांप्रतं व्यवहारोस्ति ततो वक्ष्ये यथातथं ॥२८९॥
शंखांश्च शकलीकृत्य दूरीकुर्याद्रजःकणान् ।
धौतांस्तान्वारिणा सम्यक् पश्चाच्चूर्णीकुरुष्वपि ॥२९०॥

दूर्वारणी पिप्पलाक्ष क्वाथैर्गजपुटाः पृथक् ।
त्रिर्भावना निम्बुकस्य रसैः सम्यक् च मर्दयेत् ॥२९१॥
त्रिरक्तिका च तक्रेण भावः सघृत सैन्धवैः ।
अन्येन वानुपानेन यथादोषं प्रयोजयेत् ॥२९२॥
आर्द्री देयो ग्रहण्यर्शोग्निमांद्यारुचिवायुषु ।
गुल्मोदरामदोषघ्नः कम्बुः कंठ्यः शुभः स्मृतः ॥२९३॥
अपक्वो नेत्ररोगाणामंजने मुखलेपने ।
तारुण्यपिटिकाः सर्वा दूरीकुर्याच्च वर्णदः ॥२९४॥

शृंग भस्म (रसोद्धार तंत्र)

बृहत्स्थावरशृंगस्य व्यवहारोस्ति भस्मनि ।
पूर्वोक्ता तत्कृतिर्ज्ञेया नो भिन्ना कृतिरस्य वै ॥२९५॥

सप्तरत्न भस्म [नवरत्न भस्म] (रसोद्धार तंत्र)

[नवरत्नभस्मन एव व्यवहारः न सप्तरत्नस्य]
वज्रभस्माथेतरेषां रत्नानां पिष्टयः स्मृताः ।
माणिक्य मौक्तिकं चैव विद्रुमं तार्क्ष्यमेव च ॥२९६॥
पुष्परागं च वज्रं च गोमेदं च विदूरकं ।
इमानि नवरत्नानि नवनिष्कमितानि च ॥२९७॥
वज्रं निष्कमितं ग्राह्यं सर्वाण्येकत्र कारयेत् ।
निम्बूकस्य जयंत्याश्च तंडुलीयस्य वारिणा ॥२९८॥
नीलयाश्च त्रिफलायाश्च भावनैका पृथक् पृथक् ।
समभागकृतं ताल शिला गंधकज रजः ॥२९९॥
पंचषष्टिकनिष्कं च सर्वरत्नेषु मेळयेत् ।
संपेष्य लकुचद्रावैः कपोतपुटपाचितं ॥३००॥
अेवमष्टपुटा देयाः कपोताख्या भिषग्वरैः ।
तालादिमिश्रणं चैकवेळमेव प्रदीयते ॥३०१॥

रत्नान्येवात्रशिष्यन्ते नश्येत्तालादिमिश्रणं ।
नवरत्नाभिधं भस्म जायते सुरसायनं ॥३०२॥
वृष्यं बृंहणमारोग्यप्रदमायुर्विवर्धनं ।
वातपित्तकफोद्भूतान्नाना रोगान् विनाशयेत् ॥३०३॥
कासं श्वासं च हृच्छूलं क्षयोरःक्षतमंजसा ।
ग्रहणीशूलगुल्मादीनुदावर्तोदरान् जयेत् ॥३०४॥

नवरत्न पिष्टिः (रसोद्धार तंत्र)

रवेर्माणिक्यमिन्दोश्च मुक्ता भौमस्य विद्रुमं ।
बुधे तार्क्ष्यं पुष्पराग गुरोः शुक्रस्य वज्रकं ॥३०५॥
शनेर्नीलं च गोमेदं राहोः केतोर्विदूरकं ।
वज्रस्य भस्म चान्येषां रत्नानां पिष्टयः स्मृताः ।
समभागानि गृह्णीयात् केतकी पुष्पवारिणा ॥३०६॥
शतपत्री प्रसूनानां जलैर्घृष्ट्वा दिनत्रयं ।
स्थितं चन्द्रांशुभी रात्रौ दिनमेकं च पेषयेत् ॥३०७॥
मधुना सर्पिषा मात्रां दद्याच्चैवार्धरक्तिकां ।
वातपित्तकफोद्रेकाः प्रशमं यान्ति सत्वरं ॥३०८॥
आयुष्या बृंहणी वृष्या पिष्टिरेषा रसायनी ।
कायाकल्पकरी चैव स्मृतिमेधामतिप्रदा ॥३०९॥
उरःक्षत क्षयं जीर्णज्वरहृद्रोगनाशिनी ।
नवग्रहाणां पीडां च शमयेत् तुष्टिपुष्टिदा ॥३१०॥

सुवर्ण भस्म १ (आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः ३)

सुवर्णेऽग्नौ द्रुते सूतं दद्यात् सीसं कलांशकं ।
अम्लेन मर्दयेत् तत्तु चूर्णयित्वा शनैः शनैः ॥३११॥
पश्चात् तद् गोलकं कृत्वा तुल्यगंधरजोगतं ।
शरावसंपुटे स्थाप्यं संधिं रुद्ध्वा पचेत् ततः ॥३१२॥

विशद वनोपलैः सम्यक् समधेव पुनः पुनः ।
अम्लेन गोलकं कृत्वा पचेत्स्वर्णमृतिर्भवेत् ॥२१३॥

सुवर्ण भस्म २ (रसप्रकास-सुधाकरः अध्यायः ४)

हेम्नः सूक्ष्मदलानि भूर्जसदृशान्यादाय संलेप्य वै ।
वज्री दुग्धकहिंगु हिंगुलसमैरेकत्र पिष्टीकृतैः ।
सत्यं संपुटके निधाय दशभिश्चैवं पुटैः कुक्कुटैः ।
पाच्यं हेम च रक्तगैरिकसमं संजायते निश्चितं ॥२१४॥
अेतत्स्वर्णभवं करोति च रजः सौन्दर्यतां वै सदा ।
रोगान् दैवकृतान् निहन्ति सकलान्येवं त्रिदोषोद्भवान् ।
यः सेवेत नरः समान् द्विदश कान् वृद्धः स नो जायते ।
दोषाश्चैव गरोद्भवा विषभवा आगन्तुका स्युर्न च ॥२१५॥

स्वर्णमाक्षिक भस्म (आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः ४)

स्वर्णाभं स्वर्णमाक्षीकं निष्कोणं गुरुतायुतं ।
कालिमां विकिरेत् तत्तु करे घृष्टं न संशयः ॥२१६॥
स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धमीषन्नीलच्छवि स्फुटं ।
कषे कनकवद् घृष्टं तद् वरं हेममाक्षिकं ॥२१७॥
शोधनं–माक्षिकस्य त्रयो भागा भागैकं सैंधवस्य च ।
मातुलुंगद्रवैर्वाथ जंबीरस्य द्रवैः पचेत् ॥२१८॥
चालयेल्लोहजे पात्रे यावत्पात्रं सुलोहितं ।
भवेत्ततस्तु संशुद्धं स्वर्णमाक्षिकमेव च ॥२१९॥
मारणं–माक्षिकस्य चतुर्थांशं दत्वा गंधं विमर्दयेत् ।
उरुवूकस्य तैलेन ततः कार्याथ चक्रिका ।
शरावसंपुटे धृत्वा पुटेद् गजपुटेन च ॥२२०

धान्यस्य तुषमूत्राधो दत्वा शीत समुद्धरेत् ।
सिन्दूराभं भवेद् भस्म माक्षिकस्य न संशयः ॥३२१॥
सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनं ।
चक्षुष्यं वस्तिहृत्कंठ पांडुमेहविषोदरं ॥३२२॥
अर्शः शोफं विष कंडुं त्रिदोषमपि नाशयेत् ।
अनुपानं वरा व्योषं वेल्लं साज्यं हि माक्षिके ॥३२३॥

संगे यशव भस्म (रसोद्धार तंत्र)

युनानी वैद्यके प्रोक्तं संगे यशव नामकं ।
द्रव्य चूर्णीकृतं नीलीगोक्षुरक्वाथभावित ॥३२४॥
बिल्वपत्ररसैरेतत् शुद्धं भवति निश्चितं ॥
समहिंगुल चूर्णेन घृष्टं निंबूकजैर्द्रवैः ॥३२५॥
कुक्कुटाख्यपुटे पक्वं त्रिंशदारण्यकोत्पलैः ॥
त्रिभिः पुटैर्भवेद्भस्मोपरसस्यास्य निश्चितं ॥३२६॥
रक्तिद्वयं च मधुना पयसा वा घृतेन च ॥
हृद्यं रुचिकरं शीतवीर्यं पित्तविनाशनं ॥
रक्तपित्तग्रहण्यर्शो गुदामयहरं परं ॥३२७॥

स्फाटिकमणि भस्म [रसोद्धार तंत्र]

व्याख्याः खंभाते गुजरातस्य खंडाः स्फाटिक संभवाः ।
प्राप्यंते शोधनानर्हा उज्ज्वलाः स्वल्पमूल्यतः ॥३२८॥
शोधनं; चूर्णीकृत्याग्निसंतप्ताः क्षिप्ता भूम्यामलीजले ॥
कुष्मांडक रसे क्षिप्ता शुध्यंति स्फटिका ध्रुवम् ॥३२९॥
मारण शतावर्यश्वगंधा च जटामांसी प्रियंगुकः ॥
प्रत्येकस्य रसैर्घृष्टं पुटेद् वाराहजे पुटे ॥३३०॥
नवनीत षोडशांशं दत्वा निंबूकवारिणा ॥
भावना त्रितयं दद्यात् स्फाटिक भस्म सिध्यति ॥३३१॥

गुणाः चतुर्गुञ्जं रक्तपित्ते दाहे शोषे मुखामये ॥
गलरोगेतिसारे च ग्रहण्यामर्शसां गदे ॥३३२॥
उराःक्षते गुदभ्रंशे पित्तरोगेषु दीयते ॥

हरताल भस्म (रसरत्न समुच्चये)

व्याख्या हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राद्यं पिंडसंज्ञितं ॥
स्वर्णपत्रं गुरु स्निग्धं तनुपत्रं च भासुरं ॥३३३॥
तत्पत्रतालकं प्रोक्तं बहुपत्रं रसायनं ॥
निष्पत्रं पिंडसदृशं स्वल्पपत्रं तथा गुरु ॥
स्त्रीपुष्पहरणं तत्तु गुणाल्पं पिण्डतालकं ॥३३४॥
शोधनं स्विन्नं कुष्मांडतोये वा तिलक्षारजलेपि वा ॥
तोये वा चूर्णसंयुक्ते दोलायंन्त्रेण शुद्धयति ॥३३५॥
मारणं १ मधुतुल्ये घनीभूते कषाये ब्रह्ममूलजे ॥
त्रिवारं तालकं भाव्य पिष्ट्वा मूत्रेथ माहिषे ॥३३६॥
उपलैर्दशभिर्देय पुटे रुद्ध्वाथ पेषयेत् ॥
एवं द्वादशधा पाच्य शुद्धं योगेषु योजयेत् ॥३३७॥
मारणं २ (वृहत योगतरंगिणी ४१ तरंगे) ॥
सदलं तालकं शुद्धं पौनर्नवरसेन तु ॥३३८॥
खल्वे विमर्दयेदेकदिनं पश्चाद्धि शोषयेत् ॥
संवेष्ट्य गोलकं पत्रैर्मृत्कर्पटं विशोषयेत् ॥३३९॥
ततः पुनर्नवाक्षारैः स्थाल्यर्धन्तु प्रपूरयेत् ॥
तत्र तद् गोळकं धृत्वा पुनस्तेनैव पुरयेत् ॥३४०॥
आकंठं पिठरं तस्य पिधानं धारयेन्मुखे ॥
स्थाली चुल्यां समारोप्य क्रमाद् वन्हिं विवर्धयेत् ॥३४१॥
दिनान्यन्तरशून्यानि पंच वन्हिं प्रदापचेत् ॥
एवं तु म्रियते मात्रा तस्यैकरक्तिका ॥३४२॥

अनुपानान्यनेकानि यथायोग्यं प्रयोजयेत् ॥
गुणाः हरिताल कटु स्निग्धं कषायोष्णं हरेद् विषं ॥२४३॥
कंडूकुष्ठास्यरोगास्त्रवातं पित्तकफव्रणान् ॥
तालकं हरते रोगान् कुष्ठ मृत्यु जरापहं ॥
रक्तं च शोधयेद् वीर्यं कांतिं वृद्धिं तथायुषः ॥२४४॥
हिंगुल रसम (आयुर्वेद प्रकाश अध्याय: २)
पर्यायार्था—हिंगुलं दरदं म्लेच्छं हिंगुलश्चूर्णपारदम् ॥
सुरंगं रसगर्भं च बर्बरं रक्तपण्यथ ॥२४५॥
गुणाः दरदस्त्रिविधः प्रोक्तश्चर्मारः शुकतुण्डकः ॥
हंसपादस्तृतीयः स्याद् गुणवानुत्तरोत्तरः ॥२४६॥
तिक्तं कषायं कटु हिंगुलं स्यान्नेत्रामयघ्नं कफपित्तहारि ॥
हृल्लासकुष्ठज्वर कामलाघ्न प्लीहामवातौ च गरं निहन्ति ॥२४७॥
शोधन—मेषीक्षीरेण हिंगुलं अम्लवर्गेण भावयेत् ॥
सप्तवारं प्रयत्नेन शुद्धिमाप्नोति निश्चितम् ॥२४८॥
मारण—हिंगुलं तन्तुमल्लकंचुक गतं कृत्वा पटरंजनक कन्य मध्यस्थं कृत्वा मृदा संवेष्ट्य पुटपाक विधानेन दग्धवनो पले पुटेत् एवं शतपुटानि । ततः शतपुटान्येवं वनसून्ता कस्य । ततःशतपुटान्येव मन्दारफलस्य । ततः शतपुटान्येवं इन्द्रवारुणिका फलस्य । ततः शतपुटान्येव अम्लवेतसफलस्य । ततः सिद्धो जातश्चारुणवर्णो भवति
रक्तिकैकाप्रस्य पर्णं खण्डेन त्रिगन्धादि
सुगन्धि द्रव्यैर्यथालाभं भक्षयेत् द्विगुणाभिः ॥
द्विगुणकामः कास श्वास क्षय ज्वरादिनाशश्च ॥२४९॥

⟵⟶[*]⟵⟶

रसायन वाजीकरण

अमृतात्सारदो व्याधिजरामृत्युहरो नृणां ।
अनल्पसी [illegible] पारदः सर्वसिद्धिदः ॥१॥
वलीपलितखलत्याद्याकल्पवाजी [illegible] परः ॥
भूयोभूयो नमस्तस्मै यो भूदिव्यरसायनम् ॥२॥
शुभे काले देहशुद्धि कृत्वा सेव्यं रसायनम् ॥
जरामृत्युविनाशाय इहामुत्रशुभाय च ॥३॥ रसोद्धार तंत्र.

वाजीकरण—और रसायन दोनोंको परस्पर संबंध रखता है इस लिये दोनो एक प्रकरण मे दिये गये है ।

आयुर्वेद के रसायन शास्त्रमे आयुष्य बढाने वाले रसायन औषधें छपे हुए ग्रंथोमे और हस्तलिखितोमे सेंकडो की संख्यामें विद्यमान है । श्री मदन मोहन मालवीयाजीने अपने शरीरपर यह प्रयोग करवाया तब सारे भूमंडल का ध्यान इस विषयको और गया और रसायन कायाकल्प यह कुछ शास्त्रीय विषय आयुर्वेदमें है ऐसा प्रदर्पण हुआ । शास्त्रमें कुटिप्रावेशिक और वातातपीय दो प्रकारके रसायन प्रयोग हैं । व्यवसाय प्रधान इस वर्तमान कालमें कुटि प्रावेशिक प्रयोग करना करवाना कठिन है । विधिहीन प्रयोग फल देता नहि और प्रयोगमें लिखी फलश्रुति प्रमाण न होनेसे शास्त्रपर श्रद्धा कम होती है । पं. मालवीयाजी पर किया हुआ प्रयोग निष्फळ हुआ इसका कारण यही है । स्नेहन स्वेदन वमन विरेचन किये प्राथमिक शरीर शुद्धि नहि करवायी । शास्त्रमे कहा है कि अविशुद्ध— शरीरे हि युक्तो रसायनो विधि ॥ वाजीकरो वा मलिने वस्त्रे रंग इवाफलः ॥ मलिन वस्त्रपर रंग नहि चढता इस प्रकार विना शुद्ध किये शरीरपर रसायन अथवा वाजीकर विधि निष्फल होता है । प्रयोग के पीछे चार वर्षमें मालवियाजी और प्रयोग करानेवाला वैद्य गुजर गये और जीवित रहे जब तक शरीर [illegible] उत्साह [illegible] और तेज कुछ नहि रहा । सामान्य मनुष्य भी ८०—९० और १०० वर्ष तक अच्छी तरह सर्वेन्द्रिय बळके साथ जीवित रहता है पर मालवीयाजी कम्मरसे झुक गये थे वृद्धावस्थाके चिन्होमे कोइ परिवर्तन नहि हुआ था । कायाकल्पके पहिले वर्तमान पत्रोमे किये गये प्रचारसे विश्वभरके लोगोंका ध्यान इस और [illegible] और अनेक विदेशी लोग उन्हे देखने हिंद आये थे वे निराश हुये । कारण यह था की प्रयोग विधिहीन कराया गया था । इसमे लिखा है कि एकादशाहे [illegible] [illegible] पतन्ति [illegible] दशना [illegible] ॥ अग्यारहवे दिन केश रोम दांत

नख गिर जाते है और पुनः नये निकलने लगते है ऐसा तो नहि हुआ लेकिन पूरे सोवर्ष तक नीरोगी दशामें जवित भी न रह सके। प्रयोग करानेके पूर्व एक व्यक्ति पर आधार न रख कर वैद्योंको सभा बुला कर वैद्य समितिकी देखभालमे कराया होता तो अच्छा परिणाम आनेका संभव था। कहनेका यह है कि शास्त्रीय क्रियाये बतायी हुई विधिसे करना चाहिये था।

वाजीकरणका अर्थ—वाजीकरण औषधोके सेवनसे पुरुष स्त्री संगके लिये अशक्त नहि होता, ध्वजभंग नहि होता, स्त्रीको संतुष्ट कर सकता है, वीर्यकी वृद्धि होकर विषम सेवनसे होनेवाली वीर्यकी क्षीणता नहि होती। शरीर भी कृश क्षीण नहि होता इंद्रियोंका बल बना रहता है, यथेष्ट संसार सुख भोग सकता है। संसारमे विषयवासनाकी तृप्ति चाहनेवालोने वाजीकर औषध सेवन करते रहना चाहिये।

अतितीक्ष्ण तीखा अति क्षार वाले लवणवाले बहुत खट्टे पदार्थ खानेसे उपदंशादि रोगासे वीर्यवाही शिराके छेदसे अति ब्रह्मचर्यसे इत्यादि कारणोसे पुरुष क्षीण वीर्य होता है। चिंता क्रोध लंघन वृद्धावस्था आदिसे पुरुष स्त्री संगके लिये अशक्त बनता है। वाजीकरण औषधको सेवन नहि करता और अतिविषय सेवन करता है वह भी क्षीण और नपुंसक जैसी दशाको प्राप्त होता है। अथवा पक्षघात जैसे दर्दका भोग बनता है। इस लिये विषय सुखकी इच्छावालेोने वाजीकर औषधका सेवन करना चाहिये।

वाजीकर औषध नहि सेवन करते हुये अतिविषय सुख भोगनसे वीर्य क्षीण पुरुषको सब इंद्रियोंकी रसरक्त वीर्यादिकी क्षीणता होती है, मन उदासी रहता है सांधोमे दर्द रहता है, शरीरके किसी अंगमें कंप होता है। सांधोमे दर्द रहता है, हरने फिरनेसे दम चढता है, पाचन कम होता है, मस्त कब्ज रहता है भिन्न भिन्न प्रकारका वातव्याधि उत्पन्न होता है और कभी नपुंसकत्व प्राप्त होता है।

पथ्यापथ्य—विविधप्रकारके घृत शक्कर मधुयुक्त भोजन उत्तम संगीत तांबूल मद्य सुगंधी पदार्थ मनको प्रसन्न रखनेवाले व्यवहार नवयौवन युक्त स्त्री विविध प्रकारके खानपान हितकारक पथ्य है। इसके विरुद्ध कुपथ्य है।

नपुंसकत्व का कारण—भिन्न भिन्न भावोंके साथ स्त्रीसंग करने की इच्छावाले पुरुष कामसें भंग होनेसे, अतिविषय सुख भोगनेपर वाजीकर औषध सेवन न करनेसे, उपदंश जैसे लिंगदोषके कारणसे, इन्द्रीय के शस्त्रकर्मसे, वीर्यवाहिनी

चादीका छेद होनेसे, अति ब्रह्मचर्य पालनसे हस्तदोष-मुष्टि मैथुनसे इस प्रकार अनेक कारणोंसे पुरुष नपुंसक बनता है अथवा नपुंसक जैसा कमजोर होता है।

आजकाल के जमानेमे सीनेमामें कामोत्तेजक द्रश्य देखनेसे चित्त विकृत बनकर विषय वासनाकी तृप्तिके लिये स्त्रीसंग की इच्छातृप्तिके लिये हस्तदोषकी कुटेव पडती है और पीछे यह हर हमेशकी बन जाती है। लडकोंका छोटी उम्रमें श्रम करनेसे अथवा रोगसे शरीर कमजोर होना संभव है परंतु उत्तम आहार-विहारसे वह कमजोरी हानीकारक नहि बनती लेकिन हस्तदोषसे जो कमजोरी होती है वह शरीरके प्रत्येक अंगको कमजोर बना देती है और जींदगी भर वह संसारसुखके लिये योग्य नहि रहता। हस्तदोषकी कुटेवके परिणाम गृहस्थाश्रममें पुरुष आता हैं तब मालुम पडता हैं। इससे वीर्य हमेशके लिये पतला पानी जैसा बन जाता हैं, दिमाग खाली होता हैं, मन बेचेन, हरने फिरने कामकाज करनेमे निरुत्साह, स्त्रीसंगमे अथवा स्त्रीके साथ बातचित करने मात्रमें वीर्य स्खलित होजाना, हाथपांवमे दर्द (कळतर तोड) हृदयमे कंप-धडका सिरमे दर्द इत्यादि चिन्ह होते है। आजकलके युवानोंमे से करीब ७० टका हस्तदोषकी कुटेवमें फसे हुवे हैं। इनका दिमाग इतना कमजोर हो जाता है कि मामुली बातमे दूसरोंका या अपने शरीरका हानि पहुंचाता है। अभ्यासमे नापास होनेसे अथवा नापास होनेके भयसे आपघात करता है इसका मूल कारण यह है। आगे वह गृहस्थाश्रममे पडता हैं तब हस्तदोषकी भूलके लिये उसे पश्चाताप होता है यथेष्ट संसारसुख भोग नहि सकता जबभी आपघात करनेको उद्यत होता है।

इस प्रकार स्त्रीयोंमें भी नपुंसकत्व होता है। जैसे कोई पुरुष जन्मसे हि नपुंसक होता है वैसे स्त्री भी जन्मसे अथवा हस्त दोषसे नपुंसक होती है। उसे विषय वासना पर तिरस्कार रहता है इच्छा नहि होती। नाटक सीनेमा के प्रयोगसे उत्पन्न कामवासनाकी तृप्ति किसी लिंगाकृति वस्तुसे करती हैं यह आदत पडनेसे भी स्त्री नपुंसक होती हैं। उस औरत का शरीर कृश बेचेन फीका रहता है। १६ वर्षकी उम्रमे लग्न कर देनेका इसी हेतुसे शास्त्रकारोंने लिखा है। जैसे कि वृक्षपर पका हुआ फल लेकर उसका उपयोग करनेसे उसका लाभ प्राप्त हो सकता हैं, यदि फल पक जाने पर भी नहि लिया तो वह सड जाता है या वृक्षसे गिरकर निकम्मा हो जाता हैं। यही दशा लडके लडकीयोंकी हैं। युवावस्था आजाना यह संसारमे आनेकी पक्व दशा हैं उस समय संसारमे पडनेसे शरीरको हानि नहि होती जो दूसरे विकारोंके आधीन बननेसे होती है।

वृद्धावस्था कैसे आती है ?

सर्वे शरीरदोषा भवन्ति ग्राम्याहाराद् अम्ललवणकटुकक्षार-शुष्कशाकमांसतिलपललपिष्टान्नभोजिनां विरूढनवशूकशमीधान्य-विरुद्धाऽसात्म्यरूक्षक्षाराभिष्यन्दिभोजिनां क्लिन्नगुरुपूतिपर्युषितभोजिनां विषमाध्यशनप्रायाणां दिवास्वप्नस्त्रीमद्यनित्यानां विषमातिमात्र-व्यायामसंक्षोभितशरीराणां भयक्रोधशोकलोभमोहायासबहुलानामतोनिमित्तं हि शिथिलीभवन्ति मांसानि, विमुच्यन्ते सन्धयः, विदह्यते रक्तम् विष्यन्दते चानल्पं मेदः न सन्धीयतेऽस्थिषु मज्जा, शुक्रं न प्रवर्त्तते, क्षयमुपैत्योजः स एवंभूतो ग्लायति सीदति निद्रा-तन्द्रालस्यसमन्वितोऽल्पमाशु चैव निरुत्साहः श्वसिति, असमर्थश्चेष्टानां शारीरमानसानाम्, नष्टस्मृतिबुद्धिच्छायो रोगाणामधिष्ठानभूतो न सर्वमायुरवाप्नोति तस्मादेतान् दोषानवेक्षमाणः सर्वान् यथोक्तानहितानपास्याऽऽहारविहारान् रसायनानि प्रयोक्तुमर्हतीत्युवाच भगवान् पुनर्वसुरात्रेय उवाच ॥

ग्राम्य हलके खुराक खट्टे लवणीय तीखे क्षारवाले सुखे शाक मांस तिल आटेकी चीजें नये धान्य प्रकृतिके अनुकूल न होनेवाले रूक्ष रूखे दाह करनेवाले पदार्थ खानेवाले, सडेहुए बिगडे हुए भारी गरिष्ठ चिकने रातवासी पदार्थ खानेवाले, अनियमित और अजीर्ण पर भोजन करनेवाले, दिनको निद्रा और रातको जागरण करनेवाले स्त्री मदिरा और विलास मे अधिक रत, व्यायामसे शरीरको शिथिल करनेवाले, भय क्रोध शोक लोभ और अधिक परिश्रम करने वाले मनुष्यों के मांस स्नायु संधी शिथिल ढीला होता है। खून जल जाता है चरबी बढती है, अस्थमें मज्जा भरती नहि, वीर्य बढता नहि, ओज क्षीण होता है। इस दशाको पहूंचा हुआ मनुष्य बेचेन रहता है कष्ट पाता है, निद्रा सुस्ती आलस्य के घोर जाता है। शरीर और मनका श्रम करनेके लिये अशक्त बनता है, स्मरणशक्ति बुद्धि कांति नष्ट होती है शरीर रोगका घर बनता है, पूर्ण आयुष्य भोग सकता नहि। इस कारण दीर्घ जीवन चाहने वालेने उपर कहे हुए दोषोंको और अवगुण करने वाले आहार विहारोंको छोडकर रसायन और वाजीकरण औषधोंका सेवन करना चाहिये।

रसायन औषध सेवन करने वालेने किस प्रकार का वर्तन करना इस बारे में भगवान आत्रेय लिखते हैं।

सत्यवादिनमक्रोधं निवृत्तं मद्यमैथुनात् ॥
अहिंसकमनायासं प्रशान्तं प्रियवादिनम् ॥
जपशौचपरं धीरं दाननित्यं तपस्विनम् ॥
देवगोब्राह्मणाचार्यगुरुवृद्धार्चने रतम् ॥
आनृशंस्यपरं नित्यं नित्यं करुणवेदिनम् ॥
समजागरणस्वप्नं नित्यं क्षीरघृताशिनम् ॥
देशकालप्रमाणज्ञं युक्तिज्ञमनहंकृतम् ॥
शस्ताचारमसंकीर्णमध्यात्मप्रवणेन्द्रियम् ॥
उपासितारं वृद्धानामास्तिकानां जितात्मनाम् ॥
धर्मशास्त्रपरं विद्यान्नरं नित्यरसायनम् ॥
गुणैरेतैः समुदितैः प्रयुङ्क्ते यो रसायनम् ॥
रसायनगुणान् सर्वान्युक्तान् स समश्नुते ॥

जो मनुष्य सत्यवादी हो, क्रोधी न हो मदिरा और मैथुनमें मर्यादित हो अहिंसक, परिश्रम व्यायाम नहि करनेवाला शांतचित्तवाला, प्रिय बोलनेवाला नित्य नैमित्तिक यज्ञ करनेवाला पवित्र धीर दाता तपस्वी देवता गाय ब्राह्मण आचार्य गुरु और वृद्धोंकी सेवा करनेवाला शांतचित्त दयालु निद्रा और जागरण में नियमित, घी दूधका सेवन करनेवाला देश कालको पहिचानेवाला युक्ति प्रयुक्ति समझने वाला, अहंकार नहि करने वाला शुद्ध आचरण वाला कुलीन तत्वज्ञानी वृद्धों आस्तिक और जितेन्द्रिय पुरुषोंकी सेवा करनेवाला, धर्मशास्त्रोंको मानने वाला ऐसा मनुष्य बिना रसायन सेवन हि रसायनगुण पाता हैं । अर्थात वह बहुत समय नीरोगी रहकर जीवित रह सकता है । और रसायन औषध सेवन करने वालेने भी उपर कहे सद्गुणोंका सेवन करना चाहिये ।

रसायन औषधके गुण वर्णन करते हुवे भगवान आत्रेय कहते हैं कि

दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः ॥
प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलं परम् ॥
वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात् ॥
अपत्यसंतानकरं यत्सद्यः संप्रहर्षणम् ॥
वाजीवातिबलो येन यात्यप्रतिहतः स्त्रियः ॥
भवत्यतिप्रियः स्त्रीणां येन येनोपचीयते ॥
जीर्यतोऽप्यक्षयं शुक्रं फलवद्येन दृश्यते ॥

दीर्घ आयुष्य उत्तम स्मरण शक्ति मेधा आरोग्य तरुणावस्था उज्ज्वल वर्ण कांति उत्तम स्वर शरीरका और एवं इंद्रियोंका बल वाणीकी सिद्धि नम्रता काम शक्ति संतान उत्पन्न करनेवाली शक्ति सब अवयवोंकी तृप्ति आदि रसायन औषध सेवनसे प्राप्त होते हैं। और अश्वकी तरह बलवान होकर स्त्रीयोंको प्रिय होता है और जीवनमें वीर्य अक्षय होता है यह नाजीकर है।

चरकाचार्य चरक चि स्था भा १.

रसायनानां द्विविधं प्रयोगमृषयो विदुः ॥
कुटीप्रावेशिकं चैव वातातपिकमेव च ॥
कुटीप्रावेशिकस्यादौ विधिः समुपदेक्ष्यते ॥
नृपवैद्यद्विजातीनां साधूनां पुण्यकर्मणाम् ॥
निवासे निर्भये शस्ते प्राप्योपकरणे पुरे ॥
दिशि पूर्वोत्तरस्यां तु सुभूमौ कारयेत् कुटीम् ॥
विस्तारोत्सेधसम्पन्नां त्रिगर्भां सूक्ष्मलोचनाम् ॥
घनभित्तिमृतुसुखां सुस्पष्टां मनसः प्रियाम् ॥
शब्दादीनामशस्तानामगम्यां स्त्रीविवर्जिताम् ॥
इष्टोपकरणोपेतां सज्जवैद्यौषधद्विजाम् ॥
अथोदगयने शुक्ले तिथिनक्षत्रपूजिते ॥
मुहूर्तकरणोपेते प्रशस्ते कृतवापनः ॥
धृतिस्मृतिबलं कृत्वा श्रद्दधानः समाहितः ॥
विधूय मानसान् दोषान् मैत्रीं भूतेषु चिन्तयन् ॥
देवताः पूजयित्वाग्रे द्विजातींश्च प्रदक्षिणम् ॥
देवगोब्राह्मणान् कृत्वा ततस्तां प्रविशेत् कुटीम् ॥
तस्यां संशोधनैः शुद्धः सुखी जातबलः पुनः ॥
रसायनं प्रयुंजीत .. .. ॥
वाग्भटाचार्य उत्तरस्थान अ. ३९

धूमातपरजोव्यालस्त्रीमूर्खाद्यविलंघितां ॥
सज्जवैद्योपकरणां सुमृष्टां कारयेत्कुटीम् ॥
अथ पुण्येऽह्नि संपूज्य पूज्यांस्तां प्रविशेच्छुचिः ॥
ब्रह्मचारी धृतियुतः श्रद्दधानो जितेन्द्रियः ॥
दानशीलदयासत्यव्रतधर्मपरायणः ॥

देवतानुस्मृतौ युक्तो युक्तस्वप्नप्रजागरः ॥
प्रियौषधः पेशलवाक् प्रारभेत रसायनम् ॥

आचार्योने रसायन सेवन के दो प्रकार कहे हैं। कुटीप्रावेशिक और वातातपिक। कुटीप्रावेशिक प्रयोग पूर्ण हो तब तक कोटडी मे रहकर और दूसरी बहार रहकर करनेका है।

कुटिप्रावेशिक–जिस प्रदेशमे राजा वैद्य ब्राह्मण साधुपुरुष पुण्यशाली मनुष्य निवास करते हो, जो स्थान निर्भय हो, प्रजामे प्रशंसा प्राप्त हो, जहां सब वस्तु तत्काल मिलती हो, शहर या ग्रामको नजदीक गांवसे बहार मनोहर भूमिमे कुटी करना। वह अच्छी तरह चौडी उंची तीनखंडवाली छोटी बारीयां जाली वाली अच्छी दिवालवाली ऋतुके परिवर्तनसे भी किसी प्रकार कष्ट न हो जिस जगहमें रहनेसे मन प्रसन्न हो ऐसी कुटी बनाना।

यह कुटि मिट्टीकी ईंटोसें मिट्टीसे बनाना। और उपर बहार मिट्टी चुपडकर सुंदर बनाना। वहां बहार के अप्रिय शब्द न सुना जाय, जहां स्त्रीओंका आना जाना न हो सब साधन सामग्री आवश्यक वस्तुओ तैयार रख वैद्य औषध और वेदपाठी ब्राह्मणको हाजर रखना। कोटडीकी दिवालो पर नीचे भूमिपर मिट्टीमें गोबर मिश्रकर अच्छी गार करना। कोटडीके एक कमरेमे मलमूत्र करना, दूसरे खंडमे चीज वस्तु रखना, तीसरे खंडमें रहना सोना बैठना।

कुटी प्रवेशके पहिले और पीछे के

नियम—काया कल्प करानेवाला साधक जब सूर्य उत्तरायणका हो शुक्ल पक्ष तिथि नक्षत्र करण शुभ हो ऐसी उत्तम दिन शुद्धि शुभ मुहूर्त देखकर मस्तक मुच्छ शरीरके सब बाल निकाल कर मुंडन कर कोटडीमे प्रवेश करे। कोटडीमे प्रवेश करनेके पहिले शरीरको स्नेहन– तैल मर्दन अभ्यंग विधिवत कराना पीछे औषधोंसे स्वेदन क्रिया कराना पीछे वमन विरेचन कर उदर कोठा शुद्ध कराना पीछे पंच जौका सक्तु (साथवा) खिलाना इससे पुराना मल निकल जायगा पीछे स्नानकर श्वेत सफेद धोती पहिनना श्वेत सफेद धोती शरीर पर ओढना और कुटीमे प्रवेश करना।

साधकने ब्रह्मचर्य पालन करना धैर्य रखना औषधीपर प्रीति रखना, मंद हास्यके साथ मधुर वाणी बोलना क्रोध करना नहि। राग द्वेष इर्षा काम क्रोध मद आदि मनका दोष छोड देना। प्राणी मात्र पर स्नेह भावना रखना ब्राह्मणोका पूजन कर कोटडीमे प्रवेश करना।

इस प्रकार शरीर करके भिन्न प्रकृतिके मनुष्यको जो रसायन औषध अनुकूल लाभप्रद होनेका हो वह सेवन कराना । अर्थात् प्रत्येक मनुष्यका शरीर कृश पुष्ट मध्यम कैसा है, स्वभाव आहार विहारादि कैसा भिन्न है, शरीरमे बात पित्त कफादिमें कौन दोष न्यूनाधिक है इत्यादि बातोंका ध्यानमें रखकर जिसके लिये जो रसायन औषध अनुकूल हो उसका सेवन कराना । यह बात पहलेसे निश्चित करके औषधकी तैयारी कर रखना ।

नीलकंठ रस पूर्णचंद्रोदय तोला ४, सुवर्ण भस्म तोला ४, अभ्रक भस्म लोह भस्म मुक्ता पिष्टि वैक्रांत भस्म प्रत्येक दो दो तोला, रौप्य भस्म प्रवाल पिष्टि स्वर्ण माक्षिक भस्म वंगभस्म प्रत्येक एक एक तोला जायफल जावत्री लवंग इलायची छोटी पीपल जीवक सोंठ काली मिरच कपुर सफेद मुसली प्रत्येक एक एक तोला सबको विधिवत् मिलाय जावती लख चित्रकमूल शतावरी विदारीकंद शाल्मलीमूल प्रत्येक के रस या कषायकी एक एक भावना देकर गोला बनाकर एरंड पत्र लपेट सूत्र बांध गेहूंकी कोठी में ३ दिन रखना । पीछे निकाल कर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । पान के साथ २ से ३ गोली खा कर दूध पीना । यह उत्तम रसायन गुणकारी है आयुष्य बढाता है सब रोगों की कमजोरी में औरतों के ऋतुदोष पुरुषोंके शुक्रदोष आदिमें उत्तम गुणकारी हैं वाजीकर वृष्य पौष्टिक है ।

पूर्णेन्दु वटी— पारद तोला ४ में सोनाका वर्क तोला १ मिलाना । पीछे उसमें गंधक तोला ८ मिलाकर कज्जली करना । पीछे उसमें रससिंदूर तो ४, लोह भस्म ४ तोला, अभ्रक भस्म ४ तोला रौप्य भस्म तोला २, वंग भस्म तोला ४, ताम्र भस्म कांस्य भस्म एक एक तोला, जायफल लवंग इलायची भांग जीरा भीमसेनी कपुर प्रियंगु नागरमोथ प्रत्येक तीनतीन तोला सब साथ विधिवत् मिलाकर पवारपाठाके रसकी एरंडके मूलके कषायकी द्राक्षके कषायकी भावना देकर गोला बनाना । उसपर एरंडके पत्र लपेट कर सूत्रसे बांध कर धान्यकी कोठीमें ३ दिन रखना पीछे गुंजा प्रमाण गोली बनाना । पानके साथ १ या २ खानेसे रसायन गुण करती है । आयुष्य बढता है । पौष्टिक वाजीकर है स्वप्नदोष प्रमेह बहुमूत्र मधुमेह ज्वर शूल संग्रहणी आदि रोगमें गुणकारी है ।

वृद्धोपि तरुणस्पर्धी स्त्रीणां च वल्लभो भवेत् ॥

लक्ष्मी विलास—अभ्रक भस्म तो ८, पारद तो ४ गंधक तो. ४, वंग भस्म तो २, रौप्य भस्म तोला १, स्वर्ण भस्म तो. १, ताम्र भस्म तो. ॥ कपूर तो ४, जायफल जावत्री भांग कुकुंभ विदारीकंद

छनकबीज प्रत्येक दो दो तोला सब साथ मिलाना। मात्रा २ से ३ रत्ती। गोली बनायी हो तो १ से २ गोली पानकी पट्टीके साथ खाकर उपर दूध पीना यह रसायन गुणकारी है। आयुष्य मेधा बुद्धि स्मरण शक्ति कांति वीर्य बढता है वृद्धावस्थामें भी युवान जैसा बल आता है। प्रमेह पिशाबके रोग स्त्रीका ऋतु दोष गर्भाशयका रोग खांसी क्षय श्वासरोग हृदयकी कमजोरी गलेका रोग संग्रहणी अतिसार अशक्ति सब रोगोंकी कमजोरी मस्तकके कानके नाकके मुखके रोग आदिमे उत्तम गुणकारी है।

त्रैलोक्य चिंतामणि पारद गंधक हीराभस्म सुवर्ण भस्म रौप्य भस्म लोह भस्म अभ्रक भस्म ताम्र भस्म मुक्ता पिष्टि शंखपिष्टि प्रवाल पिष्टि शुद्ध हरताल शुद्ध मैनशील प्रत्येक एक एक तोला लेना और पीली वराटिकाकी पिष्टि तोला २३ लेना विधिवत् मिलाकर चित्रकमूलके क्वाथकी ७ भावना, आकके दूधकी २ भावना निर्गुंडी रस, सूरणका रस और सेहुंडके दुधकी एकएक भावना देकर टिकीया करके शराव संपुटमे रखकर कपडमिट्टी कर वालुका यंत्रमे ४८ घंटा पकाना स्वांगशीत होनेपर निकाल कर पीसना। उसमें १० तोला पूर्ण चंद्रोदय द्विगुण गंधक जारित और वैक्रांत पिष्टी तोला ५ डालकर घोटकर सहंजनेकी छालके क्वाथकी ७ और चित्रकमूलके क्वाथकी ७ भावना देकर घोटकर रख छोडना। मात्रा १ से २ रत्ती शहद घृत मलाइ दुधसे देना। यह उत्तम रसायन है आयुष्य बढाता है। शरीरको नीरोगी रखता है। फुफ्फुस रोग हृदयरोग हृदयकी कमजोरी विद्रधि पांडुरोग अतिसार संग्रहणी बवासीर कुष्ठ आदि रोगोंमें भीउत्तम गुणकारी है।

अष्टावक्र रसः

पारद शुद्ध तोला १०, गंधक तोला २० लेना। पारदमें सोनाका वर्क तोला १ और चांदीका वर्क तोला १ मिलाकर पीछे उसमे गंधक डाल कज्जली करना। पीछे इसमे नागभस्म ताम्रभस्म यशद भस्म वंगभस्म प्रत्येक आधा आधा तोला डाल घोटकर वटांकुरके रसमे ३ घंटा घोटना। पीछे क्वारपाठा के रसमें घोटना सुखने पर काचकी शीशीमें डालकर वालुका यंत्रमे मंद मध्य तीव्र अग्निसे ३ दिन तक पकाना। शीशीके गलेपर जमा हुआ पूर्ण चंद्रोदय जैसा रस शीशी तोड कर निकाल लेना घोंट कर रखना। इसकी मात्रा १ से २ रत्ती और अनुपान चूर्ण ३ से ४ रत्ती पानकी पट्टीमे डालकर खाना साथ अनुपान चूर्ण ६ से ८ रत्ती मिलाना अथवा शहद और घृतके साथ लेना।

अनुपान चूर्ण—जायफळ लविंग जावत्री छेवलका गोंद सफेद मुसली पंजाबालम कालीमिरच भीमसेनी कपूर सब समभाग लेना। कूट कर रखना। उपर बादाम इलायची शक्कर केसर डालकर पकाया हुआ दूध पीना। यह उत्तम रसायन गुणकारी है वलीपलितको मिटाता है पौष्टिक शक्तिप्रद मेधा बुद्धि आयुष्यवर्धक उत्तम औषध है। अष्टांतक रस के साथ ६ से ८ रत्ती देना।

सारस्वतारिष्ट—ब्राह्मी पचांग १६४ तोला, शतावरी विदारी कंद हरड वाला सोंठ बड़ीसोंप तज इलायची छोटी पीपल कालीमीरच प्रत्येक बीस बीस तोला, पानी २ मन कच्चामे सब द्रव्य कूटकर डाल पकाना आधा पानी रहने पर कपडछान कर एक चीनाई मिट्टीकी बर्तनमें भर उसमे मधु तोला ८० शक्कर तोला २००, धाइके फूल तोला २०, प्रियंगु छोटी पीपल लवंग वच कुष्ठ अक्कलकरा असगंध बहेडा गीलोय इलायची मुसली जायफळ जावंत्री वायविडंग तज प्रत्येक दो दो तोला कूटकर डालना। इसमे सोनाका वर्क तोला १ मलमलके कपडेकी थैलीमे डाल मुख बंदकर उसमे डाल देना। १ मासके पीछे देखना उसमे स्वर्णपत्र पिघल कर आसवमें प्रवाही बनकर मिलगया होगा यदि कुछ बचा हो तो थैली आसवमे फिर डालना और १॥ से २ मास पीछे आसवको कपड छान कर रख छोडना। सोनाका वर्क कुछ बचा हो तो थैली आसवमे रख छोडना। एकाध मासमे सब पिघल जायगा।

मात्रा १ से ३ तोला दिनमें एक या दो बार पीनेसे उत्तम रसायन गुण करता है। बुद्धि मेधा स्मरण शक्ति प्रज्ञा आयुष्य बढता है। हृदयको बलवान करता है। आरोग्यको हानिकारक तत्वोंको नष्टकर शरीरको तंदुरस्त बनाता है। पुरुष स्त्री और बच्चे सबके लिये गुणकारी है। संगीतकारोंके लिये भी उत्तम लाभकारी है।

पूर्णचंद्रोदय द्विगुण गंधक जारित—(स्वर्ण घटित सिद्ध मकरध्वज) सोनाका वर्क १ तोला मे शुद्ध पारद ८ तोला डालकर घोटना मिल जाने पर शुद्ध गंधक तोला १६ मिलाकर कज्जली हो जानेसे कापूस के फूलको १ और क्वार पाठा के रस की १ भावना देकर सुख जाने पर कपडमाटी की हुयी शीशी मे डाल कर वालुकायन्त्र मे मंद मध्य तीव्र अग्निसे पकानेसे गंधक जलकर शीशी के गलेमे जमता हैं ओर नीचे चंद्रोदय लग जाता है। शीशी तोड कर निकाल लेना तलमें स्वर्ण भस्मरूप में जो कुछ रहा हो चंद्रोदय मे घोट मिलाकर कस्तुरी जलमें २४ घंटा घोट कर सुखाना इसको १ रती मात्रा में

अनुपान चूर्ण ३ रत्ती मिलाय शहद घृत से अथवा पानकी पट्टी के साथ खा कर उपर केसर इलायची घसकर मिलाकर पकाया हुआ दूध पीना।

पूर्णचंद्रोदय-का अनुपान चूर्ण—भीमसेनी कपूर जायफल कालीमिरच लवंग प्रत्येक चार चार तोला और कस्तुरी १ तोला मिलाकर घोंटकर रखना यह अनुपान चूर्ण द्विगुण षड्गुण षोडश गुण आदि पूर्णचंद्रोदय के साथ लिया जाता है। पूर्णचंद्रोदय का अनुपानचूर्णका नीचे दिया अन्य प्रकार भी है।

पूर्णचंद्रोदय अनुपान चूर्ण—रससिंदुर लोहभस्म सुवर्णमाक्षीक अभ्रक भस्म त्रिवंग भस्म सफेद मुसली पंजासालम विदारीकंद भूनाग गोरखुटी छोटी पीपल भांग के बीज इलायची रुद्र शोधके बीज अवलवरा प्रत्येक एक एक तोला कुलवर्ग अठद्रव्य मिलकर १६ तोला, जायफल जावत्री कालीमीरच भीमसेनी कपुर प्रत्येक आठ आठ तोला, कस्तुरी ४ तोला केसर ४ तोला सब साथ घोंटकर रखना। इसकी मात्रा १ से ६ रत्ती की है द्विगुण षडगुण षोडशगुण शतगुण कोइ भी पूर्णचंद्रोदय की १ रत्ती मात्रा मे यह अनुपान चूर्ण मिलाकर पानकी पट्टी के साथ खाना अथवा शहद घृतमे लेना उपर दूध पीना।

किसी भी कारण से पुरुष वा स्त्री कमजोर अशक्त हो गये हो, किसी भी रोगसे उत्पन्न हुयी निर्बलता मिटती है हृदय फेफडे दिमाग बलवान होता है कामशक्ति बढती है यह अनुपान चूर्ण अकेला लेने से

गर्वं श्लथयति: स्त्रीणां कामविह्वलचेतसां ॥
कामासक्तो मृगाक्षीणां प्रिय: स्यात् बलवान् पुमान् ॥१॥
वय:स्तंभनकृत्सर्वरोगाशक्तिनिवारण: ॥
रसायनगुणश्रेष्ठो वलीपलितनाशन: ॥२॥
क्षुधावृद्धिं च कुरुते मेधायु: कांतिवर्धन: ॥
सेवनात् सततं पुसां जरामरणनाशन: ॥३॥

पूर्णचंद्रोदय षडगुणगंधक जारित (स्वर्ण घटित सिद्धमकरध्वज) द्विगुण गंधक जारण किये हुऐ पूर्णचंद्रोदयमे पुन १६ तोला गंधक मिलाय कपासके फूल और कवारपाठाकी भावना देकर वालुका यंत्र मे पकाना इस प्रकार कुल तीन वख्त पकाने से षड्गुण गंधक जारित होता है। उसी प्रकार षोडशगुण और शतगुण गंधक जारण करनेसे भिन्न भिन्न प्रकारका पूर्णचन्द्रोदय बनाकर अनुपान चूर्ण के साथ सेवन किया जाता है।

पूर्णचंद्रोदयकी अनुपान मिश्र गोळी-घोटाहुआ चंद्रोदय लेने में कठिनाइ मालुम हो उनको गोली लेना अनुकूल रहता है। १० तोला पूर्ण चंद्रोदय मे ४० तोला अनुपान चूर्ण मिलाय शहद मे मुंग जैसी गोली बनायी जाती है मात्रा. ३ से ६ गोली दूध के साथ ली जाती है अथवा पानकी पाटी के साथ खाकर उपर दूध पिया जाता है। सब प्रकार के पूर्णचंद्रोदय की गोली इस प्रकार बनाकर सेवन की जाती हैं। सबरोग की कमजेरी में पुरुष और स्त्रीया सब ले सकते है।

इसके सेवनसे इच्छानुसार विषय सुखभोग सकता है ध्वजभंग नहि होता। स्त्रीओका गर्व खंडन करता है। सतत सेवन करनेसे वलीपलित मिटता हैं। वृद्धावस्था आती नहि युवावस्था जैसा बल बना रहता है। किसी भी रोग का भोग नहि बनता। स्त्रीयां भी शक्ति बढाने के लिये इसका सेवन कर सकती है सब प्रकारकी कमजोरी मिटती हैं।

शरीरकी क्षीणतासे अतिविषयसे हस्तदोष आदिसे हुआ शुक्र क्षय क्लीबता नपुंसक जैसी स्थिती को दूर कर शरीरको बलवान बनानेवाला यह औषध है।

श्री मन्मथाभ्र—अभ्रक भस्म तोला ८, पारद गंधक कपूर लोह भस्म प्रत्येक चार तोला, बंग भस्म तोला २, ताम्र भस्म समुद्रशोष बीज विदारी कंद शतावरी तालमखाना बलाबीज कौंचबीज अतिबला बीज जायफल जावंत्री लवंग भांगके बीज सफेद राळ अजमोद प्रत्येक एक एक तोला सब विधिवत् मिलाकर तीन दिन तक घोंट कर तैयार करना। मात्रा ३ से ६ रत्ती पानकी पट्टीके साथ अथवा शहदसे लेकर उपर दूध पीना।

न शिश्नस्य च शैथिल्यं सेवनादस्य जायते ॥
विषयासक्तचित्तस्य शुक्रे न क्षीयते बलं ॥१॥
रसायनगुणो बल्यो वृष्यो वाजीकरः परः ॥
मन्मथाभ्रो रसश्चायं शंकरेणोदितः स्वयं ॥२॥

सिद्ध सूत—द्विगुण गन्धक जारीत पूर्णचंद्रोदय तोला ५, मुक्ता पीष्टी सुवर्ण भस्म रौप्य भस्म प्रत्येक एक तोला सब साथ मिलाकर कमलके फूलके रसकी अथवा क्वाथकी भावना देकर रख छोडना मात्रा २ से ३ रत्ती सफेद मुशली चूर्ण, १ मासा मिलाय पानकी पट्टीके साथ अथवा शहद घृतसे लेकर उपर दूध पीना कामोत्तेजक पौष्टिक वाजीकर है। हृदय पौष्टिक रसायन है।

मोगपुरंदरी वटी—रसबिंदूर तज तमाल पत्र इलायची नागकेशर लवंग सोंठ चंदन जावंत्री केसर छोटीपीपल अकरकरा अफीम कस्तूरी कपूर प्रत्येक एक एक तोला, भांग १५ तोला नागर वेलके पत्तेके रसमे गोली रत्तीकी बनाना। १ से २ गोली दूधसे लेना। यह पौष्टिक कामोत्तेजक शक्ति वर्धक स्तंभन कर है।

कामिनी विद्रावण—रस सिंदूर, गंधक लोहभस्म कपूर लवंग केसर छोटी पीपल जायफल जावंत्री चंदन अकलकरा प्रत्येक एक एक तोला भांग २ तोला पानके रसमे गोली गुंजा प्रमाण बनाना। १ से २ गोली दुधके साथ लेना। पुष्ट पौष्टिक है।

मोफरत्वा-युनानी चाटन-अभ्रक सुवर्ण रौप्य नाग वंग लोह वैक्रांत प्रत्येककी भस्म, मुक्ता पिष्टी रससिंदूर भीमसेनी कपूर अगर पीपल जावंत्री वच नागकेसर मेथ छोटीपीपल कचुरा चिनीकबाला रूमीमस्तगी माजूफल जटामांसी सारीवा सेमल मूल कायफल धावके फूल गोखरू अकरकरा मेथीदाना शतावरी कौंच बीज तालमखाना काकोली कनकबीज कमलकंद केसर कुष्ठ मूलेठी मूल चंदन विदारीकंद मुशली कदलीकंद प्रियंगु बोरबुटी मूनाग सोंठ मरी हरड बहेडा आंवला इलायची तज धनिया चोपचीनी समुद्रशोष बीज अपामार्ग बीज अकलकरा बाला कस्तुरी प्रत्येक एक एक तोला, भांग १५ तोला और शक्कर ८० तोला सब मिलाय शहदमे मिलाय अवलेह बनाना। ०। से ०॥ तोला खाकर उपर दूध पीना बडा पौष्टिक कामोत्तेजक शक्तिप्रद है।

पुष्पधन्वा लघु—रससिंदूर, नाग लोह, अभ्रक वंग माक्षिक प्रत्येककी भस्म, कनक बीज, भांग, मूलेठी मूल, शेमलका मूल पानकी जड सब समान भाग लेकर विधिवत मिलाना। मात्रा २ से ४ रती मधुघृतके साथ लेकर दूध पीना काम शक्ति बढाने वाला और आयुष्य वर्धक रसायन है

पुष्प धन्वा वृहत् (स्वर्णयुक्त)—सोनाका वर्क तोला १, पूर्णचंद्रोदय तोला २, लोह भस्म तोला ३, माक्षीक भस्म तोला ४, जायफल जावत्री कमलकंद सेमलका गोंद पानकी जड लवंग भीमसेनी कपुर काली मीरच अकलकरा प्रत्येक चार चार तोला मिला कर २ रत्तीकी गोली बनाना। १ से २ गोली पानकी पट्टी के साथ खाकर उपर पकाया हुआ दुध अथवा रबडी पीना और दुधपाक जैसा पौष्टिक खुराक खाना। इसके सेवन से चमत्कार गुण होता है नपुंसक जैसी दशा मिटती है आयुष्य बढता है। रसायन गुण करता हैं। वीर्यकी वृद्धि और स्तंभन होता है।

मदनकाम देव रस- पारद तोला ८ मे सुवर्ण वर्क तोला १ मिलाकर पीछे उसमे गंधक तोला ८ मिलाकर कज्जली करना पीछे रौप्य भस्म वैक्रांत पिष्ठी मुक्ता पिष्टि लोह भस्म माक्षीक भस्म प्रत्येक चार चार तोला डाल मिलाय कवार पाठाके रस मे घोंट सुखा कर शराव संपुट में रख कपड मिट्टी कर सेंधानोन भरेहुए लवण यंत्रमे रख २४ घंटा पकाना। स्वागशीत होने पर संपुटखोलकर औषध निकाल लेना पीछे उसको घोंट कर उसमे पानके रसको भावना देकर असगंधा अष्टवर्ग कौंच मुसली तालमखाना चीनीकबाला सोंठ पीपल काली मिरच इलायची लवंग जायफल जावंत्री भीमसेनी कपुर सेमलका गोंद प्रत्येक दो दो तोला और कस्तुरी आधा तोला मिलाय शहदमे दो रत्ती प्रमाण गोळी बनाना। पानकी पट्टी के साथ दो तीन गोळी खा कर उपर बढा हुया दूध पीना यह बाजीकर वृष्य पौष्टिक है।

कामेश्वर रस-पूर्णचंद्रोदय जायफल जावंत्री अकलकरा बंगभस्म अभ्रक भस्म माक्षीक भस्म अफीम समभाग लेकर पोस्त के डोडे के क्वाथ मे घोंट कर रती प्रमाण गोळी करना। पानकी पट्टी के साथ एक दो गोली खा कर उपर बढाहुआ दूध पीना। यह बाजीकर स्तंभक पौष्टिक कामोत्तेजक संग्रहणी अतिसार प्रदर प्रमेह में गुणकारी हैं।

सिन्दुर भूषण रस-रस सिंदुर तोला ८ मे सोनाका वर्क तोला आधा मिलाना पीछे उसमे कनक बीज भांग तालखाना जायफल जावंत्री सहेजने का बीज अकलकरा लवंग चीनीकबाला सफेद मुसली पंजासालम समुद्रशोष बीज कपुर अफीम प्रत्येक दो दो तोला लेकर घोंट कर नागरवेल के पान के रसमे दो रती प्रमाण गोळी बनाना पानकी पट्टीमे १ या २ गोली खाकर उपर कढा हुआ दुध पीना। नपुंसक मनुष्य को भी काम जागृत होता है। वीर्यका स्तंभन होता हैं प्रमेह प्रदर अतिसार संग्रहणी जैसे रोग मिटते है।

वंगेश्वर बृहत रस- बंग रांग तोला ८ को पिघालकर उसमे पारा तोला ८ डालना पीछे पीसकर उसमे गंधक तोला ८ डालकर कपड माटी की हुइ आसी शीशी में भर वालुकायंत्र में पकाना। स्वांगशीत निकाल कर रसके घोंट यह रस तोला ८ और जायफल जावंत्री लवंग कालीमिरच केसर भीमसेनी प्रत्येक चार चार तोला मिलाकर रखना। उसकी २ से ३ रती मात्रामे अष्टवर्ग चूर्ण २ से ३ मासा मिलाकर शहद घृतसे खाकर उपर दूध पीना। शक्तिबल वीर्य वर्धक पौष्टिक है। प्रमेह मूत्ररोगमें गुणकारी हैं।

गोक्षुरादि चूर्ण—गोखरू तालमखाना सफेद मुशली शतावरी वाराही कंद कमलकंद छोटी पीपल मूलैठी मूल नागरमोथ आंवळो कौंच बीज अश्वगंधा सोंठ सम भाग कूट रखना । २ से ३ मासा में शहद मिलाय लेना उपर दूध पीना वाजीकर गुण होता है ।

वानरी बटी—कपिकच्छु कौंचाको दूधमे पकाना पीछे निकालकर उपरकी छिलको निकाल गिरी लेना यह गिरी तोला ८० को महीन पीसना, पीछे उसमे रससिंदूर लवंग काळो मिरच सोंठ जायफल अकलकरा इलायची शतावरी सफेद मुसली तालमखाना प्रत्येक दो दो तोलाका चूर्ण मिलाकर चार चार मासाका गोला बनाना पीछे उन गोलोंको घीमे पकाकर-तलकर शहद भरे बरतनमें डाल देना १५ दिनके पीछे दो चार गोला खाकर उपर दुध पीना पौष्टिक कामोत्तेजक है ।

पुनर्नवादि चूर्ण—श्वेत पुनर्नवाका मूल शतावरी गोखरु अश्वगंधा सफेद मुसली नागबला मूळ शालाली मुळ बबूलका गोंद अभ्रक सबसम भाग कूटकर रखना । २ से ४ मासा दुधके साथ सेवन करनेसे वाजीकर गुण होता है ।

केसरादि अवलेह—केसर तोला ८ को घोटकर तैयार करना पीछे रसविंदूर अभ्रक भस्म लोह भस्म वगभस्म प्रत्येक दो दो तोला लेना । तज तमाल नागकेसर इलायची सोंठ पीपल कालीमीरच लवंग अगर चंदन तालमखाना अकलकरा जायफळ शालपली गोंद बलाबीज मूलैठी मूल अश्वगधा गोखरु मुसली वायवदग समुद्रशोष बीज भांग प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूटकर सब साथ मिलाय शहदमे अवलेह जैसा बनाना । पीछे इसमे सोनाका वर्क तोला एक और चांदीका वर्क दो तोला मिलाना । मात्रा २ से ४ मासा खाकर उपर दूध पीना वाजीकर कामोत्तेजक पौष्टिक बुद्धिमेधा वर्धक रसायन है । इसके सेवनसे वृद्ध भी तरुण जैसा बळवान होता है । सब प्रकारके वातरोग सधिवात पक्षघात स्नायुवात उरुस्तंभ कटिग्रह कमजोरी रक्तस्राव आदिमे गुणकारी है ।

सुपारी पाक अवलेह—चिकनी दक्षीण देशकी लाल सोपारी तोला ८० लेकर कूट कर चूर्ण करना । उसको पका १० शेर दुधमे पकाकर खोवा-मावा बनाना पीछे उस मावाको घीमे पकाना बदामी रंग हो वहां तक धीमी आंचसे पकाना पीछे उतारकर ठंडा करना । पीछे उसमे नीचेके द्रव्योका चूर्ण डालना । तज तमाल नागकेसर इलायची जायफल जावंत्री बलामूल नागबला मूल मूलैठी मूल छोटी पीपल बंशलोचन सोंठ विदारीकंद शतावरी कौंचाबीजकी गीरी द्राक्ष तालमखाना गोखरु जीरा धनीया कलौजीजीरा अजवाइन जटामांसी मेथीदाना कचूरा कमल बीजकी गीरी सफेद मूसली प्रत्येक चार चार तोला कूटकर मिलाय

शक्कर शेर १०को चासनी कर सब द्रव्य इसमे डाल देना अवलेह जैसा बनाना १ से २ तोला खाकर उपर दूध पीना । पौष्टिक शक्तिप्रद रसायन है ।

महाचंदनादि तैल— चंदन, रक्तचंदन पतग कृष्णागरु देवदार सरल बीज पद्मकाष्ठ लाल सुपारी कपूर लताकस्तुरी छोमान केशर गोरोचन जायफल जावंत्री लवंग इलायची चीनीकबाला तज नागकेशर वाला जटामांसी मुरीछरीला नागरमोथ प्रियंगु गूगळ लाख नखला राळ धायके फूल अग्निपर्ण मजीठ तगर प्रत्येक चार चार तोला लेकर पानीमे कल्क कर तिलका तेल रतल २८ मे पकाना पीछे इसमे पानीका अंश जल जाय जब स्वांगशीत होनेपर कस्तूरीका अंत्तर अथवा हीनाका अत्तर तोला ४ और भीमसेनी कपूर पीस कर ४ तोला मिलाना । अच्छे कांचके वर्तनमें रख छोडना । बुच मजबुत लगाना । यह तेल शरीरपर मालीस करनेसे वृद्धके शरीरमें बलकांति शक्ति आती है वाजीकर है आयुष्य बढता है रसायन गुणकारी है ।

गुडूच्यादि रसायन—गिळोय शंखावली हरड बहेडा आंवळा मूलेठी मूल समभाग कूट कर भांगरेके रसको ३ भावना देना हमेशां प्रातःकाल २ मासा शहदसे लेकर दूध पीना ।

अश्वगंधा रसायन—असगंध काला तिल आंवला सम भाग लेकर भांगराके रसको ३ भावना देना प्रात १ से २ मासा दुधसे लेना ।

वचादि रसायन—वच हरड शतावरी सोठ गिळोय अपामार्ग मूल वायविडंग आवला शखावली जटामांसी समभाग लेकर भागराके रसको ३ भावना देना १ से २ मासा शहद घृतसे लेकर दुध पीना ।

वाजीकर भोजन—उडदकी दाल खंडेउडद इरवक्त खाना । वीर्यको वृद्धि कर्ता हैं । गेहूंकी रोटी चावल दूधकी खीर मुग चावलकी खीचडी में दूध मिलाकर भोजन पुरणपोळी उडदकालड्डू शीखंड दुधपाक १ शेर दूधमे १ तोला चावल डाल और ४ तोला शक्कर मिलाकर पकाकर बदाम इलायची पीस्ता डाल बनाया हुआ पायस दुधपाक, गेहूंका लड्डू इत्यादि भोजन पौष्टिक शक्ति वर्धक हैं ।

हरीतक्यादि अवलेह—हरड बहेडा आवळा चित्रक मूल गिळोय सोठ पीपल काली मिरच ब्राह्मी शतावरी मुशली बलामूल निगुंडी मूल हलदी दारुहलदी नागकेशर भांगरा तज इलायची मूलेठी मूल वायविडंग इंद्रजौ अतिविषा रतांजन चीत्रका गीरी प्रत्येक दश दस तोला लेकर कूटकर चूर्ण बनाना पीछे गुड तोला एक हजारको भागराके रसमे पकाकर घट होनेसे चूर्ण डाल अवलेहके रुपमे तैयार करना । हमेशां १ से २ तोला खाना दुधका खुराक रखना रसायन गुण करता है और हृदय रोग उदररोग गुल्म, अन्डवृद्धि अन्त्रवृद्धि सारणगांठ श्वासकास आदिमेभी गुण करता है ।

वाजीकर वटी युनानी—माये अरावी तोला ४, केसर तो १, अंबर तोला ०॥ कस्तूरी तो. ०॥ भींमसेनी कपूर तो. १, जायफळ जावत्री पानकी जड लवंग अकलकरा दंगा हालम प्रत्येक दो तोला साथ मिलाकर ब्रांडी दारु तोला २० मे घोटकर गोली प्रमाण गोली बनाना। दुधके साथ १ से २ गोली लेनेसे कामोत्तेजक गुण करती है।

नपुंसकत्वहर युनानी तिला—रींछकी इन्द्री तोला २॥, जुंदबेदस्तर तो २॥ खरातीन तो ५, बीरबुटी तो. ५ रेग महीन तो २॥, लोंक (कलो) तो. २॥, जायफल मालकांगणी बीज बनकबीज प्रत्येक ढाइ ढाइ तोला अक्कर करा तज कपूर शुद्ध सफेद मल्ल शुद्ध प्रत्येक सवा सवा तोला, मुरगीना के २० अंडोकी जरदी सोहूकी चरबी तोला ५, लेकर रींछकी इंद्री और जुंद बेदस्तर को बेचीमें बारीककर बारीक करना इसमे दूसरी चीजे मल्ल हींगुल घोट मिलाय चरबी और अंडाकी जरदी मिलाय सुपारी जैसा गोलाकर पातालयंत्र से तोला १ निकालना। पीछे इसमे कपूर तो. ०॥, कस्तूरी तो ०॥, ब्रांडी तोला १ मे घोंटकर मिलाय शीशीमे भरना। इसको इंद्रीपर मालीश करनेसे हस्तदोषसे हुआ नपुंसत्व इन्द्रीवाटे टापन बचता मिटकर इंद्री लंबी होती है। इंद्रीमे प्रबलता बढती है काम जागृत होता है।

स्त्री सगके पीछे क्या करना ऋतु के अनुसार और अपने शरीरको पथ्य हो वैसे गरम ठंडाया सम शीतोष्ण पानीसे न्हाना। शक्कर मिलाय दुध तैयार रखा हो वह पीना। मधुर फल खाना द्राक्षा सव जैसा आसव चार पांच तोला पीना। पखाका पवन लेना और नींद्रा करना सो जाना यह हित का है।

प्रयोग १ विदारीकंद शतावरी समभाग कुट कर ०। से ०॥ तोलो चूर्ण घी या मधमें चांटी ऊपर दुध पीना वाजीकर है।

२ हरे आंवळाको सुखाकर चूर्ण करना पीछे आंवलाकी मौसममे पके हुए हरे आंवलाको कुट कर रस निकाल उसको २ या ३ भावना देकर रखना। ०। तोला उस चूर्णमे शहद घृत मिलाकर खाना, ऊपर दूध पीना इससे वृद्धमे भी तरुण जैसा वल आता है।

३ कौवच की गीरी और तालमखाना समभाग कूट रखाना। दोनोके समान शक्कर मिलाना ०॥ से १ तोला मात्रा दुधसे देना तो वृद्धमे भी शक्ति आती है।

४ मूलेठी मूल विदारी कंद समभाग कूट ०॥ से १ तोला मधु घृतसे लेकर दूध पीवे उसका वीर्य क्षीण नहो काम शक्ति बढे।

५ विदारीकंद छोटी पीपल वंशलोचन मूलैठी मूल सब समभाग लेकर कूटकर शहदमे मिलाकर अच्छे बर्तनमे रखना १ मासके पीछे १ से २ तोला खा कर दूध पीना यह वृष्य वाजीकर वृहत् है ।

शिश्नवृद्धि लेप—छोटी कटहरी फल, तज कालो मीरच पीपल सेंधानीन शालपर्णी यव काले तील तिल सफेद सरसो अश्वगन्धा सब समभाग कूट कर रखना मिलाय शहद मिल यकाते रहेनेसे स्तन शिश्न आदिकी वृद्धि होकर पुष्ट होते हैं ।

शिश्नवृद्धि मलम—नागबला मूल बच असगंध गजपीपल करनेकी जड सब सम भाग लेकर पीसकर मख्खनमे मिलाय मलम बनाना हमेशां मर्दन करनेसे लिंग स्तन पुष्ट होते है ।

वीर्यस्तंभवटी—जायफल लवंग जावत्री केसर इलायची अफीम अकर-करा प्रत्येक एक एक तोला, कपूर ०। पांव तोला तांबूल पत्रके रससे गुंजा प्रमाण गोली बनाना । एकसे दो गोली लेनेसे वीर्यका स्तंभन करती है बल शक्ति बढाती है ।

कपिकच्छू अवलेह—कौचा कीगिरी तोला १२० को पीस कर चूर्णका दूध पक्का सेर ५ मे डालकर पकाना खोवा-मावा हो जानेसे उसमे घी शेर १ मे बदामी रंग होने दो शक्कर शेर ३ की चासनी कर उसमे नीचे लिखे द्रव्योका चूर्ण तैयार रखा हो डाल कर धीमी आंचसे पकाना अवलेह जैसा होनेसे ठंडा होने देना ।

प्रक्षेप द्रव्य जाय फळ सोंठ पीपल कालीमिरच तज तमालपत्र इलायची लवंग अकरकरा जावत्री तालखाना केसर पुनर्नवामूल प्रत्येक चार चार तोला, सफेद मुसली तोला ८ अफीम रससिंदूर लोह भस्म अभ्रक भस्म प्रत्येक दो दो तोला, डालना उपर लीखे कपिकच्छु अवलेहकी चासनीमे डाल बरतन मे भर देना । हमेंशा १ से २ तोला खाकर उपर कढा हुआ दूध पीना इससे वीर्य बल शक्ति बढती है कामोत्तेजक है ।

जातीफलादि गुटी—जायफल अकरकरा धतुराका बीज जावत्री अफीम नाग भस्म रससिंदुर सबसम भाग लेकर पोस्त के डोडे के क्वाथ में घोट कर गुंजा प्रमाण गोली बनाना । एक से दो गोली शक्कर प्राय तोला के साथ लेकर उपर दूध पीना वीर्य स्तभंन होता हैं कामोत्तेजक पौष्टिक है ।

शंखपुष्पी प्रयोग-शंखाहुली गिलोय अपामार्गमूल वायविडंग बच हरड सोंठ शतावरी समभाग कूट चूर्ण करना १ से २ मासा गाय के घी साथ लेने से मेधा स्मरण शक्ति वुद्धि आयुष्य बढना हैं ।

शतावर्यादि चूर्ण-असगंध कौच बीजकी गोरी सफेद मुसली गोखरु चाराहीकंद मुलैठी मूल जायफल समलका गोंद सममाग कुट कर पाव तोला चूर्ण शक्कर के साथ लेकर उपर दूध पीना पौष्टिक वीर्यवर्धक कामोत्तेजक है।

कामत्तेजक युनानी तिला-खेसान कोडीयो तोला २०, काले तिल तो ७५, सफेद सेमल तोला ११, वछनाग, धतुराकी बीज सफेद गुंआ कुचला अकरकरा जायफल मालकांगणी बीज लवंग तज प्रत्येक पाच पांच तोला लेकर पाताल यंत्रसे तेल निकालना। यह तेल तोला ५ मे कस्तुरी रती ६ केसर रती १२ भीमसेनी रती ६ मांढी दारु मासा (८ तोला १) सबसाथ मिलाकर शीशी मे भरना। इसको इन्द्रीपर मालीस करने से काम जाग्रत होता है नपुंसकत्व मिटता है स्तभन होता हैं।

॥ समाप्त ॥

रसशाला प्रेस-गोंडल.